MANUSCRIPT NO.	463
NAME OF MANUSCRIPT	Ashavmegh Parav Mahabharat
AUTHOR	N.A.
SUBJECT	Religion
LANGUAGE	Hindi
SCRIPT	Devnagiri
BRIEF EXPLANATORY NOTE	The story of Mahabharat – Ashavmedh Parav is a great epic.

भ॰ प्र॰
भा॰
१

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ अथ प्रथमेधस्कंधभाषालि
ख्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमेप्रणवौंगिरिजानंदन ॥ संकटहरनपगनविघ्नन
निकंदन ॥ लंबोदरइषहरसुषदायक ॥ एकरदनगजवदनविनाय
क ॥ बुद्धिसदनश्रद्धयोधविनासन ॥ मंगलरूपअमंगलनासन ॥ अ
सरनसरनसकलजगवंदन ॥ सेवकसुषनरसिंधुरवंदन ॥ श्रीभार
थकेअष्टपर्वदस ॥ तिनमैंप्रथमेधस्कधनरस ॥ कीजैकृपासरुह
दनपर ॥ संभ्रमनभाषावरनौंवर ॥ दोहा ॥ प्रथमेधभाषाकहौंमोम
नवहोसनेह ॥ श्रीगनपतिऔगुनरहितविमलबुद्धिवरदेह ॥ १ ॥ चौ
पाई ॥ नमोनमोकालिकाभवानी ॥ तवप्रसादवरनौंशुभवानी ॥ श्रीशंक
रप्रगटविधाता ॥ वंदनतीनलोकजगत्राता ॥ शिवविरंचमधुर
गुनगावत ॥ इंद्रादिकसनकादिकध्यावत ॥ करुनाकरकीजैविधाप
ति ॥ मोमतिमंदमोहिसरनागति ॥ रसनाअयकरोनिजवासा ॥ जोमो
हिकविनकरैउपहासा ॥ दूयकृतकथासंभ्रमकीजै ॥ दहकनदासु
सफलवरदीजै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ग्रंथमेधस्कंधग्रंथकीभाषारचौंवनाइ ॥ पू
रनकीजैकालिकादहकनसदासहाइ ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ वंदौंचरनकमल
नंदनंदन ॥ भारतभक्तनहरषनिकंदन ॥ पगनूपुरकिंकनिवलकाढ़ै
कटिपटपटुरंगकाछनीकाछै ॥ मुषमुरलिकाकुलितधुनमाछै ॥ मो
हैरीऊनषकैसभताकै ॥ उरविसालवनमालरहीफव ॥ गुंजनकै
छिजगमगतमहाछव ॥ कुंडलनीलकपोलनराजत ॥ कविरमा

सुभतिलकविराजत॥ मोरकिरीटसीसपरसोहै॥ पीतांबरत्रिभुव 2
नमनमोहै॥५॥ दो॰॥ नटवरतनअभरनवसनछविअंगअंगविसा
ल॥ रहकनहीयवसोसदाकृपासिंधुनंदलाल॥६॥ चौ॰ई॥ महाराजनरा
जनकेराजा॥ नायकअखिलभवनसिरताजा॥ दीनबंधुकरुनानिधस्वा
मी॥ सकलनिरंतरअंतरजामी॥ जोजैसीमनसाकरध्यावत॥ ततछि
नमनवांछतफलपावत॥ हितचितवप्योपरमअभिलाषा॥ अश्वमेधक
नवरनीभाषा॥ सोमतिअचलपदंपगुनसागर॥ संपूरनकीजैनटनागर॥
७॥ सो॰॥ दीनदयालकृपालश्रीनंदलालसुषधाम॥ करुनाकीजैकृष्ण
नेगुरुरखोंग्रंथअभिराम॥८॥ चौ॰ई॥ अश्वमेधकृतवढविस्तारा॥ अस्व
संसकृतअगमअपारा॥ अपनीमतराईसमजानों॥ ग्रंथसमुद्ररूपप
हिचानों॥ मरनकीजैबेगकृपानिध॥ सफलमनोरथकरहुसकलसिध
बरनोंकथासुधारसवानी॥ कहोंमथामतउकलकहानी॥ प्रथमैंसुर
भाषासुनलीनी॥ दोहासरसचौपईकीनी॥ कहुंकविमसोरठाकीगत
रहकनवरननकियोअचलयमन॥९॥ दो॰॥ संवतसतरहसतपत
सतअधिकवरषषटवीस॥ तिथतेरसीसुभावदवदिबुधवासरसुभ
दीस॥१०॥ चौ॰ई॥ सुभनछत्रसुभवरीसुहूरत॥ कहिहोंकथासुधारस
सूरत॥ तिकरतनहींगंगाजलपावन॥ अवनामतसुकृतउपजावन॥ त
पहोमधुनवेदविलासा॥ कषकरमगुनतउवपकासा॥ पंडितमपजा
धसेतिहमांही॥ सुफलसकसोंभरेतहांही॥११॥ सो॰॥ रतनषचित

म॰ अ॰ मंदिरकनककलसधुजाफहरात॥कुज्जाचौघंटीसुभगद्वारद्वारबद्ध
भा॰ भांत॥१२॥चौ॰ई॥कुरुकुलमंडनधर्मसहारन॥राजकरतजनमेजय
२ छितपत॥अतिशास्त्रसिम्रतषटकरमी॥गोब्राह्मणहितमहाब्रह्म
धरमी॥समावानपराक्रमभारी॥महाउदारविवेकविचारी॥भुजब
लचंडप्रचंडतेजअति॥दंडदेतजिहसभएषवीपति॥विसुभगलसत
संगसदाहित॥दानविधानदेतद्विजहरषत॥ज्ञानध्यानजपतपब्रत
रता॥सत्रवचनभाषतअतिसूरा॥१३॥दो॰हा॥परदुषमेंदुषधरमधुज्ज
श्रीगंजनपरिकाज॥प्रजाप्रोगहोगुननरणासरोककुराज॥१४॥चौ॰
ई॥एकदिवसराजाहरषतमन॥आपतभएतवहिमुनिजैमुन॥हमरा
ननमस्कारपभयो॥करुनाकरस्सासनतमदयो॥तमजगमहिवि
चरहुपरकाजा॥विनतीएकसुनहुरिषराजा॥पांडुसुतनकीकथासु
नावहु॥हमरेहृदेसंदेहमिटावहु॥१५॥जनमेजयप्रवाच॥दो॰हा॥धरम
मातअरुभीमपुनविजैनकुलसहदेव॥आपतभएप्रसन्नतामाकहकेसे
द्विजदेव॥१६॥चौ॰ई॥बांधवसहितयुधिष्ठिरराजा॥इयपकनकैसेंकि
योसमाजा॥नंदलालजिनसहासहायक॥संकटसमेहोतसुषदायक
ठौरअनेकपतजाराषी॥कहतप्रकारनिगमजगसाषी॥तुमतेंअव
रनउत्तमजानों॥आसरूपतुमकोंपहिचानों॥सकलस्नतानकहो
प्रभुमेरो॥होइप्रसन्नदासहममेरो॥१७॥दो॰हा॥कैसेंश्रीहरिकृपातें
जीतीहैदिसचार॥अश्वमेधकैसेंकियोकहोकथाविस्तार॥१८॥चौ॰

चौपई ॥ मैत्रे मुनिउवाच ॥ सुनहु नदिरम महावडभागी ॥ कुसभगवत हरिचित ५
अनुरागी ॥ कहौ कथा सुश्रवन सुनलीजै ॥ सावधान ग्रंथ अमृत रसपीजै ॥
भीषमादि द्रोणादिक रन नव ॥ प्राण तजे जेगये सुरगसब ॥ धरमना
नम्प्र कुलालनमोहवस ॥ दुष्ट सुत हमें पसोर सोकस ॥ महासोक चिंता
वसभयो ॥ नवहि आसन तनिहर सन ह्यो ॥ विवकरजोर हंड वतकीनो
सिंहासन तजआसनहीनो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सुनहु व्यास मुनिपरम गुरुह
मकीनोकुलघान ॥ जिह विधहह मारे ते सो ईकहहो बात ॥ ५ ॥ चौपई ॥
तुम प्रवीन सभ जगविख्याता ॥ प्रेरे गुनगनसों सभ ताता ॥ यह संसा मो
मनकोछीजै ॥ पावनकार ड ग्रभ मै पटदीजै ॥ जिह प्रकार यह सोक जाय म
न ॥ सोह बतावहु मोहित पोधन ॥ भीष्म द्रोण भ्रातजन नेहनबिन ॥ धृग
यह राजन वांछों इक छिन ॥ राजमोहि विखसरस सम जाना ॥ मनवच क
मकरम सत्न वषाना ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भीषम भ्रातुज द्रोण बिन धृग यह राजस
माज ॥ राजनीत विपरीत मुहि लागत है महाराज ॥ ७ ॥ चौपई ॥ निरषस
नमा भ्रातुज मंदिर ॥ जाकी दुति पर लज्जत पुरंदर ॥ जगपहोम नित स्फ
ति हि बषाना ॥ सो महह ग्रव लागत उ घाना ॥ महापराक्रम स्तरग्र तलव
ल ॥ भ्रात सु संघार करत नरत लमल ॥ जाको जस त्रैलोक बषानत ॥ कंचन
दानदेत सुष मानत ॥ कुसभगवत निधि गुनसागर ॥ तेजवान सुंदर
गुननागर ॥ हंदि जीतवहु विधप्रतापता ॥ जाकी सम मसरग्रबर नसता ॥
८ ॥ दोहा ॥ जिह मंदिर मंगल सुभ भगग्रवलागत दुषमूल ॥ हरन करत

5

गं॰ ग्रं॰ सुवतीनहांसयोजाननहिसल ॥ २४ ॥ चौपई ॥ दिनमणिहृतनछतिध
भा॰ रमउदारा ॥ प्राणरेनलागननहिवारा ॥ अगिनतदानहिजनजिनदी
२ ने ॥ माचकसभभूपनसमकीने ॥ देसदेसकेमांगधआवत ॥ ननछि
नमनबांछतफलपावत ॥ सुक्ष्मपानआनंदअबनहित ॥ रोमहरषत
नहोतमुदितचित ॥ तेजाचकअबनाननिरासा ॥ हदनकरतसीतलम
रस्वासा ॥ जोग्रहदानप्रत्रकरखरचित ॥ सोउअबदेषोंदानविवरजत ॥
२५ ॥ दोहरा ॥ पृगवहमैरोगजसुषकरत रहतरसभोग ॥ भीषमहोत
विनासकललागनदीरघरोग ॥ २६ ॥ चौपई ॥ लोचनहीनदेहकिहका
मा ॥ मैंभीषमभाजुजविनराजा ॥ अमितबुद्धिभीषमपरवाना ॥ महा
सरत्रैलोकनिधाना ॥ इंद्रियजीतजगतविष्याता ॥ निसदिनहरिपदचरन
मनराता ॥ उग्रतेजगुनग्याननसंपूरन ॥ वचनसमरअरिगनदलचूरन ॥
हरषतसवदपरमकीमूरत ॥ सिष्यादेतभगतरसपूरत ॥ जिहजगमी
तमसकैनहिकोऊ ॥ हमोपितामहभीषमसोऊ ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ ताकेदर
सनपरसतेंमिटैकोटअपराध ॥ ताकोबधकरराजसुषअबपजसबआप
उताप ॥ २८ ॥ चौपई ॥ द्विजद्रोणागुरूकोंहमहन्यो ॥ गुरूनगुरुसंघनमहि
गुन्यो ॥ अस्त्रशस्त्रविद्याजिनदीनी ॥ गुनसागरतेसमविधकीनी ॥ जिह
समगरोकोरवकुलमानत ॥ अनिमसरात्रैलोकवषानत ॥ महानिपुनसंग्रा
मनिधाना ॥ नानाभांतप्रहारनवाना ॥ विनेरूपरनकवहूनभागा ॥ नि
तप्रतिहरिचरननचितलागा ॥ जोइसराषगाहनजोगा ॥ तिहहनराज

महांदुषदोग्या ॥ २९ ॥ दो० ॥ भ्रात पितामह गुरु सुहृद सब हीहने
ग्रकाज ॥ गजपुर तजन पवन करहु भीम करो जगराज ॥ १० ॥ चौ० ॥ ई
सुनहु व्यास मुनि तत्व विचारी ॥ मैं कुल घात कियो अघ भारी ॥ गंगादि
क तीरथ इसनाना ॥ जप होम बहु विप्रन दाना ॥ सपन पनि तबत
कृत शास्त्र सब ॥ यहू न करस कत मुहि पावन अब ॥ इनसों अपना
कुसल न मानों ॥ होत पवित्र न जिय पहिचानो ॥ यह अपराध जात न हि
जियतें ॥ यह संसा मेटो मम हियतें ॥ नित प्रति होत इहां इम ईश्वर ॥ कर
हु वेग पावन मुरु भुवनपत ॥ ११ ॥ दो० ॥ सुनत मुनिंद्र वर कृपाकर कीजे
सो उपाइ ॥ जिहविधि कुल हत्या मिटै कहौ सुविधि समझाय ॥ १२ ॥ चौ० ॥ ई
सुन सुभ वचन धर्म के ताना ॥ भयनि नि करहु होहि कुसराता ॥ तुम कों
दोषन लागै कोई ॥ कहहु उपाय सु पावन होई ॥ गोत्र बंधु हम मानहि लागै ॥
इय करतु करहु सकल अघ भागै ॥ अश्वमेध कृत वर सुष दायक ॥ सुभ कहे ते
किल विषयन घाइक ॥ प्रथम इय कृत रघुपत कीना ॥ सो अश्व बहु मत सम
कों कहि दीना ॥ शीघ्र करो या की विधि पारथ ॥ भव जल उतर हु सिधि पर
मारथ ॥ १३ ॥ दो० ॥ अश्वमेध कृत वर सुफल वेग करहु कुरुराज ॥ पा
तक मिटहीं सकल हू क्रोध रहित नृप विराज ॥ १४ ॥ चौ० ॥ ई ॥ श्री गोपाल
नंदलाल कि पाति बलि यो राज तुम रिपुरन दलमल ॥ राजनीत जैसें
कृत कहई ॥ जो जीते सो नृपत उचरई ॥ छत्री धर्म सु फल तुम कीना ॥ स
त्रु जीत राज सुष कीना ॥ कत इहि राज स्मागवन जावहु ॥ धर्मराज करसु

ने॰ पु॰ जसबदावहु ॥ बांधनसकलसेवलमकरहीं ॥ हमरीआज्ञामा
भा॰ थेधरहीं ॥ जबलगयहसरीरकुसलाता ॥ हमकलकरहु धरमके
४ नाता ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ करहुधर्मकोराजन्दपप्रजाविवेकसुविचार ॥ प्राप
तहैहैसुरगसुषसंसेहहेनिवार ॥ ३६ ॥ नैमनिउवाच ॥ सोरठा ॥ धर्मराज
केतातसुनेसुधावचयासके ॥ पुनसकुलतैहैवातकुंतीसुतनसुनिराज
सों ॥ ३७ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ चौपई ॥ सुनमुनिईश्वरतत्वविचारी ॥ कृष्णरू
पमैंपरउपकारी ॥ हयकुलनकीतमयाज्ञाकीनी ॥ परमकृपालदया
बहुदीनी ॥ अश्वमेधकुलनवरोससमाजा ॥ विनबहुदरबसरतनहिकाजा
सोवहसंपतमोपैनाही ॥ जासोंदानपुन्नविधथांही ॥ प्रजादंडकरलि
योनजाई ॥ वैसेहयकुलबवनेगुसांई ॥ यहमोदुरजोधनकोधरमा ॥ दंड
अनीतइष्टमभकरमा ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ कुलकरभूपनसहतहनेदरबभ
मकेकाज ॥ मैंनहिवांकोंसवनेभुवकरकरमकुरुराज ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ न
हिहेयोंसंगवडेसहायक ॥ मरसमूहभएरनघायक ॥ थानथकुलभार
तसेयामा ॥ अबहुनतिनपायोविश्रामा ॥ मसहतानअवलोतिनकेतन
सोकवंतसुतनहनविभएरन ॥ तिनसोंककुभाषोनहिजाई ॥ लाजसमा
गनहिकसोंहिताई ॥ हमरेजियअैसीवनआई ॥ गजपुरतजोंवसोंवन
जाई ॥ उचितरहोरसोउकहोमुनीश्वर करोजथाविधकृपानपीश्वर ॥ ४० ॥
दोहरा ॥ करहुकृपाकरहूपानिधउचितजथाविधमोहि ॥ पावनकीजै
व्यासमुनितरनसरनहमतोहि ॥ ४१ ॥ व्यासउवाच ॥ चौपई ॥ महतनर

पतसुरधुतनकनकीने ॥ सुनसबहाइसुरगफलवीने ॥ कंचनरत
नरिपैवहुदाना ॥ रूपनभपहिजवरसुताना ॥ विधवतदानविरधहि
गयो ॥ एकएकतेंसोगुनभयो ॥ मनइछाजेतीसोईलीनो ॥ रघोत्तुधन
सोहिजनजहीनो ॥ पलोहिमांचलभूमवहीधन ॥ सोईधनलावहुल\
पहरखतमन ॥ ७२ ॥ दो ॥ रा ॥ वहुपुनीतधनपमसुविसुनइधरमके
नान ॥ त्यावहुवेगमहलकतमरवइननकुसलान ॥ ७३ ॥ युधिष्ठिर उ\
वाच ॥ चौपई ॥ धनसमरुतनरूपकिसोसकाना ॥ कियोजथाविधजतस\
माना ॥ जोविधकनिशास्त्रमहिकही ॥ तैसोजज्ञकियोनृपमही ॥ कं
चनरतनदानवहुदीने ॥ रूपनमानद्विजवरसवकीने ॥ तहभपहि
जकाइचलेधन ॥ सोरवनापोमोहिनपोधन ॥ ऐसेंववकनकहोपुनी
पत ॥ श्रवणासुननसंतापवढो अन ॥ अस्वमेधसलेइयकुलनकारहं ॥ निर
संदेहनरकमहिपरहूं ॥ ७४ ॥ दो ॥ रा ॥ निराकारहीसकलनरुपमहीप
ननमोहिजान ॥ अस्वमेधसलेकनकगौपावौनरकप्रमान ॥ ७५ ॥ चौपई ॥
अस्वमेधसमहिजिहरूपकीरत ॥ इषदाहतनिहूभईप्रहमन ॥ अस्व\
मेधसलेकरौंयतविध ॥ नरकवासहैनहीकछुसिध ॥ श्रतिउपहासक
रहिद्विजमोकौं ॥ कहेंजथाविधमुनिवरतोकौं ॥ धनइमगोहिजयेसें
कहई ॥ रेतनुपिछिस्रपनेकरई ॥ अस्वमेधसलेइयकुलनकीनो ॥ इमगाद
रवद्विजनकौदीनो ॥ निरतकरुकरमपहमुनिपत ॥ प्रथमेदोषवडे\
वांधवहनन ॥ ७६ ॥ दो ॥ रा ॥ गुरुवांधवहननश्रकुसुहदकियोसकलकुल

ग॰ग्र॰ भा॰ ५

ग्यान॥पुनपइदोषनकरसकों सुनऊपरासरग्यान॥४७॥चौपई॥
इकतोबहुपानककुलग्याना॥महादुषितनहिंछिनकुसलाना॥सोम्
पराधदरसननहिंहाला॥इमिपदोषपइहैहदेविचाला॥इकबहुवगी
लाजकुलग्यायो॥पुनहवरनबंसबनायो॥नहिसमर्थकोअंलाज
निवारन॥छिनधनदेनस्रजसकिहकारन॥माकोश्रपजसजगतव
पानै॥पगजीवननिश्चैंकरजानै॥सोइमंत्रमुनिजियधइहैरावडु॥पाव
नकरहुसभविधसमझावडु॥४८॥चा सुवाच॥दो हा॥धन्यधन्यश्रा
ईलरपधन्यतातलुवमान॥भाषेवचनसुविपभली हैकुलमरीक
सरान॥४९॥चौपई॥यहनहोइस्रबसंसनराधिप॥हियेहानयहहिम
नमरुननप॥मोककुउठायसबमोसोईलीनो॥राघोलकसोईछिजतन
दीनो॥बहुरोउनहूंकरीनश्रासा॥सोग्यवलोधनपसोनिरासा॥जिह
धनकोस्वामीनहिलहई॥सोधनछिनपतिकोफलिकहई॥प्रथमें
परसरामपहकीनी॥सबप्रथीसंकलरिषदीनी॥कश्यपनेंश्रहुर
नजीलीधर॥तिननेंपुननजीनीक्ष्नवच॥५०॥दोहा॥तिनहुंनप
नतेंलईधुवयश्रसुरनश्रनवलवान॥पुनलीनीछिनक्षत्रियननेक
करनभयेदान॥५१॥चौपई॥सुननननरिंदमनमांहिविचारडु॥श्रयश्रं
समोईनिरवारडु॥लियोउग्रायसोइउनकोधन॥राघोसोभयोहद्य
रपकोगन॥नमनोचक्रवर्तकोराजा॥लीजेधनकीजेपहकाजा॥
मनवचक्रमनिहवैंजियजानडु॥बहुरौंहदेसंदेहनश्रानडु॥नमरी

श्रुतिबिबेकउज्जलमति॥बेगकरहुकारजबिलंबकोकति॥सोचसंको
चतजहुदूरपनंदन॥सबहुजगपत्रघकोटनिकंदन॥५५॥युधिष्ठिरउवा
च॥दोहा॥ब्राह्मणभोजनदक्षिणाअश्वकवनरंगहोइ॥संख्याकहौबि
स्तारबितयत्नक्रियाविधजोइ॥५६॥व्यासउवाच॥चौपई॥तृनद्रव्यवनरे
विधबहुताना॥अश्वमेधकृतकरहुविधाना॥यत्नआदिलेहयकृत
कीजै॥बीससहस्रद्विजभोजनदीजै॥अतिकुलीनश्रुतिविप्रनिताहाना
शास्त्रवेदपुराननिधाना॥संध्यादिकसिमृतषटकरमी॥इंद्रीजीत
पवित्रस्वधरमी॥पुनयहदीनाइकइकद्विजवर॥इकगजइकरथपुन
इकहयवर॥गोसहस्रएककनकशुभवरनी॥रतनपंचधरतइषहरनी॥
५७॥दोहा॥कंचनदीजेभारइकएकएकद्विजजोग॥यत्नआदियह
विधकरहुमिटहिसकलविधसोग॥५८॥चौपई॥मत्तजोगचहियेअश्व
श्वेसो॥कह्योनिगमलीजैनृपतैसो॥श्वेतवरनगोरुश्वसमाना॥लक्ष्मन
शुभजुतउतमप्रमाना॥पीतपुच्छशुभसामश्रवनश्रुति॥सर्वअंगसुंदर
विचित्रगति॥अश्वमेधकृतनृपतनुकरहीं॥ताकोहयतेसेउद्धरहीं॥
चैत्रमासकीपूरनशुभदिन॥अश्वमेधकीजेनाहीछिन॥एकवरसर
क्षाहयकीजै॥सरवीरसेनासंगदीजै॥५९॥सोरठा॥सतनग्रहवाधाबंधव
सजनसेनापतिसंगहोइ॥सरवीरजोधावलीरक्षककीजेसोइ॥६०॥चौ
पई॥सेनासहरपठइहयसाथा॥करइजतननिजपुरनिजहाथा॥ब्रतनेम
सपन्नहियेंदृढधारहु॥जीतमदनइंद्रियकृतनव्रतसारहु॥सावधानह्वैबि

ज्ञ॰ सु॰ धस्तनलीजै ॥ इयकारजकोगहइरनकीजै ॥ अथमेधभोगवरषरक
भा॰ सेवइ ॥ रसीकोरिलरानननदेवइ ॥ एकनलपरारासंगसोवइ ॥ मन
९ मधजीनसंकलदुषषोवइ ॥ रितबिलासमहिविननहिदीजै ॥ नव
लगइयक्रनसिङनकीजै ॥ ५८ ॥ दो ॥ एकनलपपरपोदिपेरारास
हिनरिंद ॥ मैनमीनविधवनरहोमोपावइसषहेद ॥ ५९ ॥ चौ॰ ॥ ज
बलगवनतेंहयगइहयावै ॥ नवलगपइत्रनवेरवतावै ॥ विधसंपुक
ननननवइकरिये ॥ व्रनयमसपत्रसहदहियधरिये ॥ जहांहयमलधरी
षहिकरई ॥ नइयहक्रियालिगमअनुसरई ॥ ऐसीरक्षाकरीहमारी ॥
सोनहिरेषोनिकरमुरारी ॥ सुनहोभीमसेनबलवंडन ॥ कैसंननहो
रजसमंडन ॥ कैसंहोषमिदेकुलत्राना ॥ तुमहिविचारकहोपइवाना ॥
ननवीचहंविधनहोनअति ॥ मोनेंविकससोचमेरीमन ॥ ६० ॥ दो ॥ पा
नवीचउनपानवइकौंहैपुत्रप्रकास ॥ मोमषसिङनहोवईजग
नकैरेउपहास ॥ ६१ ॥ भी म से न उवाच ॥ चौ॰ ॥ सुनमसभवचनधरम
केनाना ॥ तुमरेजियउपजीपइवाना ॥ दर्वमोकयाघोहिपनेरे ॥ व
डरोंकघोकुलनहिनेरे ॥ पुनतमकह्योअसुनहिरेसा ॥ हयाविनय
हकरडुनरेसा ॥ मरासमीपतमकुलसुरावे ॥ जिनवडसंकरदहरे
हमारे ॥ सर्वसंपराकुलनिकरजब ॥ नामलेनकैपापहोनसब ॥ जां
केध्याननरनअघटलमल ॥ विद्यमाननहांहेतमहांफल ॥ ६२ ॥ दो ॥
रा ॥ तमकुलहोषनलगेककुकुलटरमनरपनेंद ॥ पानकमिटहि

12

अपार अनन्त पजै हरि अनंद ॥ ९३ ॥ चौपई ॥ बिन माधव मध सिद्धन
होई ॥ कोटन पाप करै जिन कोई ॥ पावन है कै है इय हत तन वही ॥ श्री ग्र
पाल अवै निज जन वही ॥ सदा हमारो पालक सोई ॥ रक्षा ना को करुकर
न जु ओई ॥ राजसूय मख अश्वमेध पूजन ॥ बिन हरि पावन करहि न रूप
जन ॥ नहीं समर्थ होत हम रंक छिन ॥ परम पुनीत भक्त नायक बिन
निसदिन हरि को सिमरन कीजै ॥ इय कहत साधसन्त मन जगली जै ॥ ९४ ॥
सोरठा ॥ हम करि हैं संग्राम कुल कृपा बल श्री हरि हि ॥ राज करउ इह
मधाम क्रोध निवारहु धर्म सुत ॥ ९५ ॥ सोरठा ॥ रक्षा को लपसु नि व्यासपै
यहां तुरंग महोर ॥ प्रथमें इय रहि आनियें उग्यम की जे सोइ ॥ ९६ ॥ जै
मिनि उवाच ॥ सुने सुभग वच भीम के धर्मराज को नाम ॥ पुन रक्षा को नृप
व्यास पै कहु तुरंग की बात ॥ ९७ ॥ व्यास उवाच ॥ चौपई ॥ धन्य पवन सुत
तुम बड भागी ॥ सुंदर वचन कहै अनुरागी ॥ महा बली पुरी है वाता ॥ जो
बना सन गरी को राजा ॥ रतन कमल रव इहु तन राजा के ॥ हंस ध्वज रणी चन्द्र
रता के ॥ निसदिन ताके राघव रहई ॥ इक छिन रहन रत उन करई ॥ इय
को वेग पवन तें आगर ॥ अति विचित्र सो गुन सागर ॥ जैसे राघव के रूप
गाम सुहाधन ॥ सौ राघव नहि यन्र पहर पवन मन ॥ ९८ ॥ सोरठा ॥ कवन यद
न बिहत तुरग को महा वेगवर जान ॥ महां पराक्रम मन्त्र इककर सिंह भीत
बलवान ॥ ९९ ॥ सोरठा ॥ इय कहत नयंण अन पभाषा करी मधा सरस ॥ छि
नकु कवि न के भूपर इह कन भल परी जहां ॥ १०० ॥ सोरठा ॥ इति श्री भारथप

न॰ भ्र॰
भा॰
७

ईश्वर मेघश्याम ध्यान ॥ प्रथम अथ रूपमधीज श्र म दान ।
प ॥ कवित ॥ मोरकी रसी सम्हु भ के सर तिलक माथे वेसर वनी
है नासा मोती झलकत है ॥ नगन जरत लोल कुंडल कपोलन प
र रसन रम कछु छवि कोर कवरन है ॥ बांसुरी अधर राजै उर वन
माल साजै कुटि हंस टिका कोइ निकहीन परत है ॥ नूपुर विसाल प
ग रहु कन पधुनेर लाल ऐसो ध्यान कोर कोर पातक हरत है ॥ १ ॥
मै ॥ सवैया छंद ॥ चौपई ॥ सुनि ववभीमसेन शुभ कहै ॥ हरष हास
कहि हृत चित नहु गहै ॥ बहुत रंग वेग गहि लाऊं ॥ भरा वनी एकलो
गाऊं ॥ ल्यावों श्रम सह तन दुख वीपत ॥ जीतों जो वनास सेना हत ॥
लमम संसय मिघ हरनि वारहु ॥ क्रोधर हित रहरि काज सवारहु ॥ प
थमे वाह रेवनि यधरो ॥ तापा के को अकार न करो ॥ जो नर किस
हि काम को जावै ॥ पहले हरि हिय ध्यान लगावै ॥ २ ॥ दोहरा ॥ सिद
मनोरथ सुफल फल प्रथ मे श्री हरि सेव ॥ सकल अमंगल नास
ही पुजन हि प्रसन रेव ॥ ३ ॥ चौपई ॥ बोल्यो भीमसेन यह हरऊं ॥ केवल
चोरन रक मति पर ऊं ॥ जो नहिव हुत रंग गहि ल्याऊं ॥ मात पिता ह
नकी रत पाऊं ॥ एक कूप पर सभ जल पीवै ॥ सगरो लोग अघ वन
हि जीवै ॥ जो पुरुषा वषनाश कति धन विन ॥ तिह पुरव सिये न हीए
क छिन ॥ ताको दोष मोहि को लागै ॥ जो सुक्ष तेह यको प्रण भागै ॥ स
तने वाक्य पोन सुतन कहे ॥ तिह पाछे मौन हु हो रहे ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर वाच

दोहा ॥ सुनहु भीम अति महांबल यह षीण की नौ नौहि ॥ अथ यह
णकी वृष्म ता महा चिंत जिय मोहि ॥ ५ ॥ चौपई ॥ सुनहो भीमसेन सु
राअति ॥ भुज बल जो वनास हुष बीपत ॥ महापराक्रमवान अतुल
बल ॥ सेना संग समग्र अश्व गज दल ॥ तुम तौ कयोप कलो जावौं ॥
कर संग्राम जीत हूय लावौं ॥ मातें महा सोक मेरे मन ॥ तैं कीनो यह हक
ठनवहोपन ॥ नंदलाल कहत नाबहु करई ॥ तव यह तेरो प्रण अनुस
रई ॥ अरि अनेक तुम एक महा दुति ॥ मह वच सुनन बोल्यो भानुन सुत
॥ ६ ॥ दोहा ॥ एक भीम सारो हमहि वेग बल हिहयकाज ॥ जोवना सदै
व मम तुम लावहि जन संसमाज ॥ ७ ॥ भीमसेन उवाच ॥ सोरठा ॥ सुनहु पुत्र
हम ला जत जा दिन तें भानुज हम्यो ॥ कीनो वडो अकाज तुम सुष आरत
चित सकहि ॥ ८ ॥ घटोत्कच उवाच ॥ चौपई ॥ तुम मंही किधो वडो उपकारा ॥
हम रोजन कवि कियो संघारा ॥ तुम मोकु त्रिय धरम संभार्यो ॥ उनके कु
टल करम कौ मार्यो ॥ दुरजोधन को दास वंश जिन ॥ जो लग रह्यो भूमि
मंडल पर ॥ लोभन कबहुं जिय तें गयो ॥ सदा धर्म को द्रोही भयो ॥ न
गन हो तद्रौपदी निहारी ॥ सभा मध्य कांपत डुष भारी ॥ तब तिन रक्षा
करी जवाकी ॥ अबलौं अपकीरत जगताकी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ मैं या हरी वरा
दपुर पुत्र तुम लइ कितनाउ ॥ महा अनुप मन करन को दुरजोधन को भा
उ ॥ १० ॥ चौपई ॥ जैसें को ऊ चिंत मगाहे वै ॥ वदले का चक्को दिकाले वै ॥ सो
पांडवन तज दुरजोधन हित ॥ लुकत मग लियो गहि दु:सासन ॥ जो कारह

जै॰ सु॰ केअंगनसुरनरु॥ ताकोघोरनपैवंसूलवरु॥ कुंतीसुतनतजइहुसहा
भा॰ रकु॥ भयोसकलपतनकोनारकु॥ पुनवहुतमहिह्रुमारथकीनो
८ हनिरणवीचसर्गफलदीनो॥ तमप्रमाटसुरपुरवहगयो॥ सुरजर्म
डलभेदतभयो॥ २१॥ दोहरा॥ ताकोदोषनिवारहोअबवयहतनसमाज
जोबनासमागरसुबलमथनकरोकुरुराज॥ २२॥ सोरठा॥ जाउलडा
रेसंगजोवनासनपजीनहीं॥ लावहिवेगतरंगश्रीगुपालकीकृपातें
२३॥ दोहरा॥ सुनतहुभवचहुषकेतकेभीमप्रलिंगनकीन॥ ठाढेनिक
टघ्रहेतनकचलियोतकोरचीन॥ २४॥ चौपई॥ सुनतहोमेघनादयहवा
ना॥ महासूरबलतमरेनाना॥ तिनश्रतिमहांपराक्रमकीने॥ दुष्टवठा
यर्वांडुसुतलीने॥ लेगोवेगगंधमारनपर॥ अवरनप्राक्रमकियेसूरन
र॥ तमहोतिनकेनामहाबर॥ कीजैरक्षानृपतनयुधिष्ठिर॥ हमसहघ
केतनांहिदयकाजा॥ पारथअरुतमरक्षकराजा॥ लावहिहमतरंग
कोजैलो॥ रसाकरहुधर्मसुतनतैलो॥ २५॥ दोहरा॥ बहुप्रकाररक्षाकर
हुनिसदिनकीजेसेव॥ यहीतुम्हारेपितामहयहीतुम्हारेदेव॥ २६॥ मेघ
रनादवा॥ चौपई॥ कहौंवेनतीसुनोपितामा॥ जुटोनकाजजनकसुहिना
मा॥ अगस्त्योतमसमीरअविकारी॥ तिनबहुकियेपराक्रमभारी॥ पवन
पुत्रतुमवहतमसासुत॥ करतनुहूसराकौंतकजुत॥ सौंनहोउऐसोबल
वाना॥ भीमसेनसततजगतबखाना॥ जैसेंनदीसमीरस्कोजल॥ नाइमिल
नप्रवाहगंगाबल॥ सोउगंगोरकप्रगटकहायो॥ नीरनामतिहजगनामि

हायो॥४७॥सो॰ठा॥मैं साधन को संग पाप समूह न ह्न करहिं॥सिला
राम पद स्पर्श गपरम भई पावन जगत॥४८॥चौ॰ई॥सुनो पिता यह वात क
हो मन॥हों संग चलों पुरी भद्रावत॥मैं इह पहर न करों न काल॥कौं लक
हि वराह सु रसाला॥पहुच वडा इतु रंग तिनाई॥सरवीर जोधेसु रकाई॥
सुमहह षकेन करो संग्रामा॥मीन इह जो वतास जिह नामा॥चल इवेग रूप
कों वंदन करु॥फिइ वेंचि मैं होइकी रतवरु॥तन विलंब कीजै यह काजा॥
हो इस्पर्स नत्र युधिष्ठिर राजा॥४९॥दो॰हा॥धन्य पुत्र तुम येवचन भाषे अतिर
मनीय॥तुम सह षके न सुसकल चहु तुम हि हिर षअति जीय॥५०॥सो॰ठा॥
तुम तीन इह इक गैर चलहि पुरी भद्रावती॥नहि विचार जिय भोर हम रीक
रहु सहाइ सुत॥५१॥चौ॰ई॥यह तिन हुं के वचन सुनत हि तब॥अति हरषत
कुरुराज भयो चित॥भाषों वचन भीम सुनली जै॥व्यास कह्यो सोई कारज
कीजै॥औ र विचार तन इह जिय अंतर॥कीजै इह पसुन वेग निरंतर॥करत वि
चार निसा वहु गई॥व्यास गवन की मनसा भई॥रिषन सहित उठ चले तपो
धन॥संप्रजित सुनिराज सुदित मन॥नव हि व्यास निज आश्रम गयो॥उ
ततर पम हांचिंत वस भयो॥५२॥दो॰हा॥ध्यान न सोंइ स्तिन वचन क है ईपर
म के तान॥द्वै द्वै के संश्रयष्ठ न न महां क ठन यह वात॥५३॥चौ॰ई॥सुन सै
कठन यह त्यागत रंग को॥महा इरगती न न अनंग को॥महा कठन आ
गमन विजै को॥दरसन नहीं यह सोक चितै को॥नही सुहद रसु को विय भारी
नही निकट श्री कलसु रारी॥जिम अनेक आपदा निवारी॥संकट समे हो

ग॰ग्र॰
भा॰
९

तसुभकारी॥ विनवसुदेवदेवकीनंदन॥ कोसमर्थ यहकष्टनकंद
न॥ भयोनिगमगोचरहमानिध॥ तिहतेंकाठकरहूरूपकूतसिध॥२७
सो॰ ९ ठा॥ लाजसमुद्रगंभीरदूवतराषीद्रोपदी॥ मोंराषद्दूवलवीरहें
हूओकुलग्यानतिध॥ ३५॥ चौ॰ ६॥ यहवचकहिपुनहरिगुनगावत॥
दीनबंधकनगहहरलगावत॥ दरसनदेहूवेगजाहोपत॥ पावनकर
हूसकलकिलविषहरन॥ श्रीपतग्रपनाविरदसंभारहू॥ संकटसम
नदासविसारहू॥ नाथग्रनाथजगतगुरुस्वामी॥ आवहूवेगगरुड
केगामी॥ सिमरनहूदेकरतनरपञ्जौलौ॥ आपलसहारपरतौलौ॥ व्या
पकवौरसर्वपरमापति॥ कहेसधावचहारपालप्रति॥ २८॥ श्री कृ
ष्ण वा॰ दो॰ १० रा॥ सुनहूद्वारपालकवचनकहूधर्मसुतजाइ॥ समैहोइ
मोमिलनकोतोपरसोंनरपांइ॥ २९॥ प्रती हार वाच॥ चौ॰ ९॥ विनतीक
रोंसुनोनंदलाला॥ तुमकोतीनलोकप्रतिपाला॥ सदासमैयहकोरस
त्यारी॥ यहतोतुमरेदासमुरारी॥ धर्मराजतुववचरनसदारति॥ जिहप्र
साददेंभईविमलमति॥ तहांठौरग्रपनीनहिमानहू॥ तहांसाधनिंद
कपहिचानहू॥ परधनपरदारानिहरुचिप्रति॥ तहांतुम्हारीठौरनश्री
पति॥ पांडुपुत्रहैंभगततुम्हारे॥ तुमतनकेसंकटसवटारे॥ ३०॥ दो॰ ११ रा
परविंदापरदरवसोंपरदारानहिदेत॥ धरमराजतुववचरनप्रतिबांध
वसभनसमेत॥ ३१॥ सो॰ १० ठा॥ पांडवमिलहूकहौसमसमरसमरविंद
वनकरन॥ नहिरककविहगोरसफलमनोरथकरहूजन॥ ३२॥ श्री

कृ॰ ष्ण उ वा च ॥ दो॰ हा॰ ॥ राजनीत ऐसें कहैं शास्त्र वेद पुरान ॥ आता होइ न
रिंद की जो करिये पहिचान ॥ २० ॥ चौ॰ पाई ॥ हरष न हाथ पाल उठ धायो ॥ प
में राज कों सीस निवायो ॥ आप कृस्न देवकी नंदन ॥ गाढे हार स कल ज
गवंदन ॥ सुनन बचन रूप हरष न भयो ॥ कृस्न नाम सुन सभ दुख गयो
तज आसन सन मुख उठ धायो ॥ भीमसा आदर यह बचन सुनायो ॥ कहे
पवरिया स्त्रीन र नागर ॥ द्वारे ठाढे जो नंदु जागर ॥ वेग चल हि दरसन
हरि कीजै ॥ चरन धोइ चरनोदक पीजै ॥ २१ ॥ सो॰ रठा ॥ दो॰ हरा ॥ मम
मन साध्र न करन अस्वमेध के काज ॥ अरध निसा आपन भए भक्त व
छल जदुराज ॥ २२ ॥ चौ॰ पाई ॥ पांडव अति आनंद न भए ॥ सुष समुद्र उप
जे दुष गए ॥ सभ न आइ हरि दरसन कीनो ॥ पुन कृपा रथ को फल दीनो
निरषें कृस्न युधिष्ठिर जब ही ॥ धाइ चरन लागो हरि तब ही ॥ रूप बिब
कर सों लियो उठाई ॥ चूमन भाल रंक निध पाई ॥ अंक पात आनंद द्रग
भरे ॥ ते कृस्न सीस पर धरे ॥ पुन आलिंगन कियो परस्पर ॥ प्रमुदित
हिय पायो अति सुष वर ॥ २४ ॥ दो॰ हरा ॥ भीमसा आदि लेपां दुस्न नस भ लागे
हरि पांइ ॥ ले आए प्रभ कों भवन सुजन नहैं चित चाइ ॥ २५ ॥ चौ॰ पाई ॥ विधव
न सुजन भए सुरारी ॥ रूपदी प आरती उतारी ॥ सुजा करम न अवरस
भए ॥ श्रीगुपाल कि हवि प्रगर ए ॥ पुसिक प्रणाम द्रौपदी कीनो ॥ आ
पमष करला सुबदीनो ॥ कहै द्रौपदी सुन कृतराई ॥ कलिको बम हूं बि
समतापाई ॥ कृस्न वेग आप पहिचांनो ॥ अब लग रहम हिम रमन हिआ

सो॥ इरवासानिहुम्राफमिराषो॥ पापोवेगगडरुनहिलापो॥ ३९॥ सो
रठा॥ इरजोधनमलिमैंदनगनकरनसुहिसभामहि॥ लाजकाजनं
दनंदवहषर्नरक्षाकरी॥ ३५॥ चौपई॥ आहिनवलककुलानमानको॥
नहींसहाइकसषाधानको॥ भीषमद्रोणकरनठाडेसभ॥ तिनहूनक
रीमोहिरक्षानव॥ भीमसेनअर्जुनसुरेवर॥ पउनसकेमोहिरक्षाकार
कोउनराषसकोसुहिलाजा॥ भईनिरासचेमोनडराजा॥ याहीकुस
लाजसुहिराषी॥ मानववीनलोकध्रुतिसाषी॥ जहांमहांसंकटहम
परी॥ ततछिनआपतिरक्षाकरी॥ ३६॥ दो॰॥ सोईहरिवैठोनिक
टतुमकहैहलीनडमान॥ महासहाइकरहुहुतसषाभाउजियमा
न॥ ३९॥ जैमनिउवाच॥ चौपई॥ अस्तुतकरीद्रोपदीअतिवर॥ तुनन
प्रसन्नभएगिरिवरधर॥ तिहपाञ्चेसुधर्मकोनाना॥ लागोकहहुनक
सप्रतिवाना॥ सुनहुकृपानिधअंतरजामी॥ तुमविनहमराकोन
प्रनामी॥ जहांजहांहमसंकटवनी॥ चक्रसुदरसनलेकरहनी॥ ४०॥
दो॰॥ सुफलकाजहमरेवनेहैंहैसुफलअपार॥ आपहोप्रभुकम
लकरचक्रसुदरसनधार॥ ४०॥ सो॰॥ इकुतहोंप्रभतोहिमोमन
साइयक्रतकरौ॥ करोसमर्थनुमोहिअसतालुमरीसुफलाक्रत॥ ४२॥
श्रीकृस्नउवाच॥ चौपई॥ सुनवकुरुनंदनवुद्धविसाला॥ कोसमर्थहैं
पक्रतयहकाला॥ पतवीचसंग्रामअपारा॥ सुरवीरवडहोंहिसंघा
रा॥ भीममंत्रलेहयक्रतकरहीं॥ भलोसुजसतसभजगउच्चरहीं॥ ३

नकेतोवहुनिसदिनग्रामा॥ अलपवुद्धिनहितावप्रकासा॥ अति
असथूलउदरहैताको॥ महामंदमतिमानहुताको॥ ताकेभवनदा
कसीवाला॥ महांकरूपवरनविकराला॥४३॥ दो॰हा॰॥ ताकीमतिरा
कसिहरीताकोकहांविचार॥ तिनहीश्रद्धोजन्तविधहेहैकौनप्रका
र॥४४॥ चौपई॥ हेहैजन्तसिहरहलोई॥ मंत्रीताहहकोदरहोई॥ अं
गभंगवधराकुसतोरत॥ तिनसोंमंत्रविचारहभूपत॥ ताकोमंत्र
नहीसुषदाइक॥ कहतमहापंडितकलिधाइक॥ कामीजहरही
जितमोनर॥ सोकैसेंछत्रीजीतेवर॥ जिनदेषेहूपरातसूपहुंते॥ भी
मसेनतेंआदरपतअंत॥ धर्मइहअलिसूरमहाबल॥ इंद्रीजीती
वचनप्रमाणअचल॥४५॥ दो॰हा॰॥ सोनहिदेषेभीमरूपवलगर्वतअ
भिमान॥ अरजनजानतसभरूपतिमैइपवधपहिचान॥४६॥ चौप
ई॥ पुनवोलेअनाघकेनाथा॥ मंत्रकरहुतरपहमरेसाथा॥ इपहुत
विधमनलीजेवाता॥ तोकीजेआरंभजमनाता॥ इपकीरक्षाकउन
महांअति॥ जीतेचहियेसभपृथवीपति॥ सर्वहिसावहूफिरेतरंगा॥
सरसमहहोहितिइसंगा॥ सुरनरगतगंधर्वनरेसा॥ वांधहिइपजो
प्रवलनरेसा॥ तेउनृपजीतितरंगमलीजे॥ वितअसपत्रप्रथमहरद
कीजै॥४७॥ दो॰हा॰॥ महाकठनविधअस्वकतहनतइंपाधिहिरकान
सकलसमर्थीचाहियेसरवीरवलवान॥४८॥ चौपई॥ प्रथमेहपहुं
तछिपोरामनव॥ कहांअलपविधहनोअवनसव॥ रछककहयके

नं॰ श्रु॰ अतिबलवाना॥ नामबंतअंगदहनुमाना॥ बांधवकछु दसंगमहांला
भा॰ इक॥ सत्रुहननलछमनदलनाइक॥ सोहयसक्रमनीपुरगयो॥ सुर
११ थनदपनतिहबांधनभयो॥ दुहंओरसंग्रामभयोअति॥ रघुवरकीसे
नाकीनीहत॥ मर्छतभयरनमरबीरसभ॥ तनीसकलविधरामचं
द्रजब॥ ४४॥ दो॰ हा॰॥ महाकठनसंग्रामकरलीनोहयमुकताय॥ महा
कठनविधजतकीमनवचक्रमअकरुराय॥ ४५॥ चौ॰ पा॰ ई॥ कहेंवचनसु
नदपनजुधिष्ठिर॥ देषहुहृदेविचारसुथिरवर॥ हयकीरछाओपारथक
रई॥ हमरोसषाभगतउचरई॥ भूतलपरनदपअतिबलवाना॥ हयको
बांधहिसमप्रमाना॥ जोअर्जुननहिहयमुकतावै॥ ताकीरछाकोनक
सिधावै॥ वांतेंअतिसंभ्रममनमेरे॥ कैसंपततहोरहवेरे॥ हमरेमित्र
विहचेनहिआवै॥ उमहयकहुनविनसांतनपावै॥ ४६॥ सो॰ रठा॥ अवब्रह्म
पुरकोअंतकलतुगआहिसुकठनमष॥ कह्योसकलविरतंतहृदेवि
चारोधर्मसुत॥ ४७॥ दो॰ हा॰॥ इतिषध्यायद्इकनमकविकह्योधर्मको
सार॥ तुलसयागमनवचनसुभउचरेविविधप्रकार॥ ४८॥ इतिश्री
भारथपर्वणेअस्वमेधकाब्याम॥ इतिषध्यायदरनमयोअस्वकथा
परमान॥ २॥ कवितकत॥ कवित॥ दीनबंधुदयासिंधुआरतहरतभा
री हौपरीउवारीनेंसैंमोहकोंउवारलै॥ गनकाउधारीगजसंकटनि
वारीप्रहलादहितकारीदुषहारीहनिवारलै॥ दहकनप्रधुनंदलाल
दीनघालभक्तपालकरुणाकृपाललालविरदकोंसंभारलै॥ कामक्रो

धन्नो भट्टं कों भगों है सहा न जग सकत है भारी भव सागर उतारलै ॥
३॥ मै ॥ नि उ ॥ च ॥ सो र ठा ॥ उग्र सो वचन गंभीर कल वंद के वचन सुन
भीम सेन मति धीर हस न कह लव व कुसप्रति ॥ ४ ॥ चौपई ॥ सुन हो ध
म कहि हो सब बाता ॥ जग समर्थ धर्म को ताता ॥ सुभग हु मेर मन गीय
परम बर ॥ सहा समीप प्रगट हर सहि हर ॥ हि परे बसन तिहारी म्रत
गर्भ नारि वीर न कर मरन ॥ मैं न पदी नो धर्म मंत्र अति ॥ तन हीं हरे विवा
रो सुधी पति ॥ ग्रति भ्रष्ट उदर मिह भारी ॥ तिस हि कहो मन मंत मुरारी
वहुर कहों तिन कें उद्ग्रासा ॥ तिन के कवन दुबुद्धि प्रकासा ॥ २ ॥ दोहरा
यह औगुन सब तुम बिधें देषहु हरे विचार ॥ अपने हृष तन अवर को क
ति को देहु मुरार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक सुर नर ॥ सिव ना सकल
सघन सागर बर ॥ एथ्वी है हरि सभ बनि अकासा ॥ यह सभ तुम रे उदर नि
वासा ॥ तव समान अति उदर न होई ॥ भ्रम विषम प्रगट न हि कोई ॥ पुन भा
घहु अति अंत्र अहारी ॥ लागन आवत तुम हि मुरारी ॥ तुम मनो भोगी सक
लसहु को ॥ तुम सम अवर न परे हषमो ॥ अपने हृषन आमल गाव हु
वृथा भाष सो भान हि पावहु ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ मम गृह बाला गाकसी सांच कयो
प्रभु मो हि ॥ रिक्ष नाना री भवन लागन आवत नो हि ॥ ६ ॥ चौपई ॥ जा दिन
मैं तुम मति गरह आनी ॥ भयो गुणा निधि सारंग पानी ॥ कुन सभो नम हि
हे तुम री रत ॥ हम कों दोष लगावत है कों कत ॥ मछ कछ सूकर अवतारा ॥
नरसिंह रूप वामन वपु धारा ॥ कहो जथा रघने कन र र कं ॥ तुम रे दोष ग्र

मं॰ श्री॰ गरसमकरऊं॥ नितप्रतितुमराजलमहिवासा॥ कामप्रुअतुम
भा॰ भवननिवासा॥ तुवसमश्रहीमितनहिकोई॥ सुरनरघोरहण्योय-
१२ इलोई॥१॥ दो॰ ॥ पारजाततरुसुरगतेंगृहल्यान्योतनकाल॥ सतभा-
माकेअंगनहिरोप्योश्रीनंदलाल॥२॥ चौ॰ ॥ सदाछीरनिधतुमरोवा
सा॥ सहसभवनमहिक्रियोनिवासा॥ तुमरेसमहछनपहिवासो॥ प्र
गटनकरोंत्रुराजिनमासो॥ नगपंतत्रुहिन्रपतनवनायो॥ कतितुमह
मकोंदोषलगायो॥ तुमभाखोन्रपभीमनदेषे॥ एनरूयमषककवइनपे
षे॥ तुमरीक्रपासहाइसदावल॥ इनेसमहभूपरनदलमल॥ जरासं
धनेंजारप्रवलन्रप॥ किंयेसंघारअपारनराधिप॥३॥ दो॰ ॥ प्रथमे
तुमरीक्रपातेंजीतेन्रपतअपार॥ तैसेंहीप्रवलीतिहैतुमरेवलहिस
वार॥४॥ चौ॰ ॥ जैसेंप्रभुप्रवभारउतासो॥ पुनजैसेंगिरवरकरधासो॥
तैसेंइमहपतलग्रवकीजै॥ धरमराजनिरभैपदवीजै॥ पहीचिंतन्रप
केजियनिसदिन॥ कैसेंमिटहोयमघइतिविन॥ सदातुम्हारेआगम
चितवत॥ एककलपकलपांनरवीतत॥ पांडवहैंप्रभुतुमरेदासा॥ तु
मविननहीआनकोअग्रासा॥ कासोंकहैंनपानेंदनेंदन॥ करहुसुफ
लमघकाहनिकंदन॥५॥ दो॰ ॥ जैसेंचात्रकजलदकोचितवतगी
पपिपास॥ तैसेंपांडवसामघनसरावरनकीआस॥६॥ चौ॰ ॥ जैसें
धेनुपंकमहिधसी॥ महासोकव्याकुलदषअसी॥ तैसेंन्रपकुलघात
कीचमैं॥ नघसिघलौवप्रवसोवीचमैं॥ निकसनसकहिमहांउछ-

मारी॥ तिह्नैंकाठलेदुगिरधारी॥ ज्ञमनतनहृषाकौनपैकहिये॥
विरहसमारलाजजियगहिये॥ तमहिविचारविरदकीलाजा॥ ना
रकअखिलभवनसिरताजा॥ रछ्याकीजैनृपतियुधिष्ठिर॥ दीनवंध
स्वामीकरुनाकर॥ ९३॥ जै॥ मि॥ विउ॥ च॥ दो॥ रा॥ भीमसेनकेवचनसुन
भयप्रसन्नभुपाल॥ हरषतह्वैपुनवचकहेनृपप्रतिश्रीनंदलाल॥ ९४
श्री॥ भ॥ ग॥ उ॥ वा॥ चौ॥ ई॥ हरषनतनसुप्रलिंगनकीनो॥ भीमसेनकौं
भुजभरलीनो॥ धन्यभीमसुभवचनतिहारे॥ सुनतभयोहियहरष
हमारे॥ पुनप्रकृतहरिनृपनसुयुधिष्ठिर॥ अतिसैतमविह्वलकि
हमेरुर॥ कुलहनकेपानकजियजान्यो॥ भीषमद्रोणाकरनवधमान्यो
तहृदसहोदरहनननकियेरन॥ लियोलगायदोषअपनेमन॥ सोसंक
लपमोहिकरहीजै॥ ह्वैहोअनघसकलदुषछीजै॥ ९५॥ दो॥ रा॥ किल
विषहीजैमोहिकरतोहिमलागहिपाप॥ हरषतहृजेनृपतमनत
जहुसोकसंतापु॥ ९६॥ श्री॥ भ॥ उ॥ वा॥ चौ॥ ई॥ कहैभीमहरियवचन
सुनीजै॥ कैसेंदुःखनतुमकरहीजै॥ तुमकरदियेबहुतापावै॥ पुन
पदारथसुजसवढावै॥ ९७॥ दो॥ रा॥ ज्ञातारीजैकृपाकरहोइसदार
कसंग॥ जौवनासनृपजीतकेल्यावहिसहिततरंग॥ ९८॥ चौ॥ ई॥ कहै
वेनतीनृपसुनलीजै॥ धर्मसुतनकीरछाकीजै॥ नृपतेंइपजहियबडु
सुकृतफल॥ सिधवनरछ्याकरहुमहाबल॥ विनसुहृतनजगजीव
नथैसें॥ राजभोगसुषविषसमनैसें॥ सकलजगतकोपुत्रविमा

म॰ अ॰ भा॰ १३

ला॥ सो संकल्प द्रुढ़ के गोपाला॥ धर्मराज फल जग्य न वांछा॥ तुम चर
नन बिन और न वांछा॥ कौरव हन न फल तुम रे हर मे॥ प्रभ सुष हरि
पद पंकज परसे॥ ४९॥ जै मै निउ अव दो रा॥ धर्मराज हि मधुरि लह
रि सुन सुभ वचन रसाल। अरधरै न वीनीज वहि कीनी सै न गुपाल
५०॥ चौ॰ ई॥ भई प्रभात उठे नंदनंदन॥ पांडु सुतन नकी योह रि वंदन॥
भीम करन सुत नमे घवरन सभ॥ आइ कियो हरि कों प्रणाम न व॥ कि
यो प्रणाम न रूप न के आगे॥ पुन कीनो कुंती पग लागे॥ प्रभ सष्ण पक
र लिये उठाई॥ चुमन सीस असीस मन पाई॥ दीने मोरक मिष्ट भीम कर
भीम दिये पुन मेघवरन कर॥ प्रणाम भन आर जवन कीनो॥ जिन हूं
असीर्वाद वहु दीनो॥ ५१॥ दो॰ रा॥ कियो अलिंगन पारथ हि पुन वच क
हे उचार॥ रक्षा कीजे धर्मसुत अर्जुन विविध प्रकार॥ ५२॥ चौ॰ ई॥ सेवा
करहु हि जन की पारथ॥ सिद्ध होइ स्वारथ परमारथ॥ हमको वेग रहां
प हिचानहु॥ लाव हि हय निज मिय जानहु॥ महाप्रसन्न कहन सुहि भ
ए॥ मन संतुष्ट सकल दुख गए॥ हरि सुमरन पातक सभ नास हि॥ मि
त्र मिले निज कष्ट विनास हि॥ कर्न सुतन मेघवर्न संग मम॥ निहसै सल्ला
वहि तुरंग हम॥ सो वना स मेना स मेल सव॥ हरि सुकृपा वल लै आव
हि अव॥ ५३॥ जै मै निउ अव दो रा॥ भीमसेन यह वचन कहि गवन
कीन न तनकाल॥ मेघवरन दृष्वकेतु संग सुमरन श्री नंदलाल॥ ५४॥ चौ
॰ ई॥ मारग वीच रहि वसव रु लागे॥ पड़ वे निकट पुरी अनुरागे॥ दष

परीभद्रावतिनगरी॥ सकलभांतिकरसोभाअगरी॥ सुभरस
रोवरसीतअमलजल॥ बहुप्रकारप्रफलनअंबुजदल॥ हंससर
सुषंभाखवर्नके॥ नगमणिबचितअनेककरनके॥ मनहोगकोय
मनिकरअति॥ रछनपरनचलतमारगगति॥ २५॥ दो॰॥ निगम
बोधसुरतनगरहोतधनुषटंकार॥ अवनतसुनियेकहोबचनित
प्रतिपहुंचोद्वार॥ २६॥ चौ॰॥ मंदरमनआगननअपारा॥ कलसधु
जाकंचनविस्तारा॥ तुंगपौलहटलोरणाराजत॥ उचसिगढपारष
दवराजत॥ निरषतभएअरितमनदीनो॥ ननहोमपावनसरवी
नो॥ निरखोएकभीमसुंदरवन॥ फलदलफूलरुचिरभावतमन॥ रं
भाफलकोमलरसपूरन॥ नमितसैनमानसंपूरन॥ दीरघसरसना
लिकेरद्रुम॥ महासघनवनछाइरह्योभुम॥ २६॥ सोरठा॥ करतस
वदगंभीरनिसदिनतररछकसुवन॥ फलदलकीअतिभीरप्रग
टेद्रुमपरकाजहित॥ २५॥ चौ॰॥ निरखोभीमविटपअनुरागे॥ तो
तेअधकेहेनफललागे॥ सर्वअंगपूरनद्रुमभारी॥ निरखतभीम
प्रभाविस्तारी॥ कनकबृछदषरंगरंगअति॥ फलसमहलागेअर
भुतगति॥ सचनअंकुफलरसपूरनवर॥ निरषैनेनसंतापजानर
र॥ बीजनकरदाडिमविदीरसुन॥ सुकसमहहसेवतहरितनमन
नारंगीअतिरुचिरुपनावन॥ करतनकनलहरषपिकगावन॥ २९॥
होरा॥ बहुप्रकारकेषगानहसेवतवनअनुराग॥ जैसेंसाधनकों

नै॰ भ्र॰
भा॰
२४

महाकुसलवरनचितलागा॥२०॥चौपाई॥निकटएकवहतसीतलजलपा
वन॥त्रिपतकरतमनसुषउपजावन॥पथिकपथकतपावतविश्रामा
अवधतजलछायाअभिरामा॥अवरहतसुंदरवहुराजत॥वीरपुरजं
भीरविराजत॥जांवुनिंवरकदंवविसाला॥अषरोटवड़ीफलरिसाला
वढ़रअंवराचिंचणीसुभन॥सुभगअसोकचंपकासुमन॥गजकेसर
पुंनागवकुलसुन॥अवनपारलानागवेलगुन॥२१॥दोहरा॥सतपत्री
मालीजुहीवेलसिरीपहिचान॥राइवेलअभिकेतकीअलिगुंजतगरुवि
मान॥२२॥चौपाई॥निरषतवनमगकोश्रमगयो॥भानुजसुतहिहि
षावतभयो॥सुंदरनगरीहेषविमोहित॥लाढिगएकसरोवरसोहत
नगनछविनसमरोपसिलाजुत॥निरमलजलसीतलअतिअदभुत
इयजलपानपाहिमरकरहीं॥रक्तकमलरनेकनहिडरहीं॥तिहसर
माहिजलजंतअपारा॥मोंहहिउदरलीनसंसारा॥कछुहमषकेतसुउ
धिअभरामा॥भीमसेनरहैसुषधामा॥२३॥सो०॥मध्याह्नकेका
लआवनहैजलपानकों॥रक्तकमलविसालवीरपुत्रसंग्राममहि॥२४
चौपाई॥वहुतेसषवीरहयसंगा॥निमषएकनहितजतनरंगा॥जैसें
रूपनअपनपनराषहि॥तैसेंसरअषअभिलाषहि॥मनमहियहवि
चारसुफकीनो॥गिरपरधारचढहिहमनीनो॥हलसमस्महसद्यनव
नजापर॥तिष्ठतिहांहिवेगहमनापर॥वैठरहैंगिरपरहमजोलो॥त
रागनआवेंसरपरजोलो॥नवहीवहजंगंगकोंलहहीं॥तिहसंसेता

कोहमगहहीं॥२५॥ दो॰॥ प्रथमे मैं रनमध है गरजो संवरगंभीर
पिछसहार कनभरोस भानुजनमनरनधीर॥२६॥ सो॰॥ पहलसवरार
कमंत्र सुफलकालकीरनविमल॥ भीमवाकगंभीररसनाकैहैप्रकास
तहू॥२०॥ दो॰॥ इतिश्री भा॰ पर्वले॰ अश्वमे॰ प॰ प्रथमाध्याय॥ इतिनियपथापथ
रनभयो॥ मै मनकरहि मन॥२॥॥ मै मनिउ कच॥ चौपई॥ भीमवचनसुन
भानुजनंदन॥ उचरेवचनसकलनिनकंदन॥ सुनहुपवनसुतहमरीवा
मा॥ जिहमैं होइसकलकुसलाला॥ सेनाप्रबलरूपनकेकइहीं॥ संभार
सकोइहातिउचरहीं॥ तिनमैं वंकुकहोंरूपसंगा॥ कंकुकरनाकरहि
तुरंगा॥ तुमभुजबलसमसरनकोई॥ नामसुनततरलस्रुतिभयहोई॥
निषुलनाहिकोऊतुमआगे॥ जौंसुरसरीकूलअवभागे॥२७॥ दो॰॥ न
वलगभेअनिगरलकोपरसकियोनहिंईस॥ नवलगहरसुमरनन
हींतौलौकालहिंसीस॥२८॥ चौपई॥ नवलगतानप्रकासनहींहरि॥ नव
लगकालकूटकोअलिरर॥ श्रावागवनहोनजगतौलौ॥ कसनामसुम
स्योनहिंजौलौ॥ नवलगपित्ररनरकमहिररहहीं॥ जोसुनगयापिंडनहि
भरहीं॥ नवलगसूरवीरवलवाना॥ नवलगनहीं हकोदरजाना॥ धर्म
राजकेकाजसुफलकर॥ पुनप्रसन्नकीजहिगिरवरधर॥ अश्वथरहनम
मसंधमहावर॥ वेगकाजकीजेपहहुअवसर॥२९॥ दो॰॥ एतनेपरदेषत
हुरहस्रावनसरकीओर॥ मरिमोकलअलिगुंजरनिहसंइचपलफक
ओर॥३०॥ चौपई॥ कनलवरनतंगपरवतसे॥ चलतभंगरगनअनिगा

सं. श्री. भा. १५

वैनसे ॥ आपहीरससरोवरकेवल ॥ पीवतसोसुखभयोरमलजल
कवहूंजलजुतलकवूनिकसत ॥ मलकलोलकरतीसंगविगसत
जैसेंकेलकरतदंपतिजन ॥ छिरकतनीरपरसपरहितमन ॥ हरन
सिंधुरपरतजलमांही ॥ हरषतअतिजलजंतनमहांही ॥ ततजगएम
धुपजानगंडुस्थल ॥ उठवैठेसौरभअंबुनस्थल ॥ ५ ॥ दो ॥ रा ॥ हस्तीयुवि
तनारिनसहितकरपतिकमलमृनाल ॥ देतअलिगनमधाकर
जैसेंसंतकृपाल ॥ ६ ॥ चौ ॥ ६ ॥ अतिसैहरषमीनजलधावहिं ॥ जैसें
अधनमहाधनपावहिं ॥ नाभकुंभतेंसौरभहरहीं ॥ मुदितमत्तसो
अभक्तनकरहीं ॥ चक्रवाकचकवीहितधरत ॥ निरषभीमसरछवि
संधरत ॥ नाहींकिनआगमनतुरंगा ॥ महारथीरहेवहुसंगा ॥ उठी
धूरगगनंतरछाए ॥ निरखोभीमतुरंगमआए ॥ खेतचरनगोछीर
प्रभासत ॥ आवतहयसमहंसरपरअत ॥ ५ ॥ दो ॥ रा ॥ वहुवर्नेतुरवा
ननसवरतमलरछोभरघर ॥ वीरधीरमंडलसहितसंगराजत
वहुसूर ॥ ७ ॥ चौ ॥ ६ ॥ जोवनासनंदपआपतहोई ॥ इयसमाजमैंनि
श्चैसोई ॥ हितिपतसत्रुनसकलसुभसाजा ॥ निश्चैंहोरसफलय
हकाजा ॥ श्रीपतिकीआज्ञाइमआए ॥ सिद्धहोंहिकारजमनभाए ॥
धरममनोरथधरमराइके ॥ मरनकरिहैंहरिरघुराइके ॥ ९ ॥ दो ॥ रा
भानुजसुतनयहवचनसुभकहेभीमप्रतिभाव ॥ तवलगहयआप
नअपनलयअवचनअभिलाव ॥ ८ ॥ चौ ॥ ६ ॥ मध्याहनहयआपनअपन

नानावरननिरषहुषगण॥इकइकहयकेतीनसूरसंग॥रक्षाकरहि
हथारहिअंग॥श्रुतिविविचित्रनभमगतिजाकी॥नाचननरथरगतिऊ
विताकी॥पवनवेगकुरिवदनप्रकासन॥जैसैंहितपदपंकजसुषभा
वन॥चलनचालअपनीअपनीजन॥इकतीमरइकमोरनकूलगन॥
॥॥दोहरा॥होतिनभगननकेंठलौकरनमधुरजलपान॥इकआवनर
कजानपरिनिरषनभीमसहजान॥२॥सुननसभवचहयकेनकेभीमसे
नवलबीर॥उचनभयोककुकहनकोकरनजमप्रतिमतिधीर॥३॥भी
मसेनअथाव॥चौपई॥शापनभयसकलइयसरपर॥हपछनपसोअथहं
टरबर॥जिहनिमित्तआपहमतीनो॥सोइयअवलोटछनचीनो॥कैव
हूनपवंधोहयसाला॥आवनजलनिहठौरविसाला॥जिहकारनहम
श्रुतिश्रमदीनो॥लषीनपरनकहांविधकीनो॥हरिबिनहमराकौनस
हाई॥कोटकछुआपदामिटाई॥श्रीगुपालधरकसत्रुरारी॥रक्षाकीजै
वेगहमारी॥४॥दोहरा॥देसविदेसजहांतहांरक्षाकरीअपार॥धरमरा
महयकाजहितरक्षाकरकरतार॥५॥चौपई॥जौंसंतननबिनस्वर्गन
पावहि॥ज्योंहयबिनगजपुरनहिंजावहि॥जैसेंसंकपतानपुरवैआसा
ब्रह्मचर्यसंगमबिननासा॥ज्योंइस्त्रीजिनबांधवहीना॥मंत्रीहीनरा
जविपरीना॥पुत्रहीनकेमीतनहोई॥जौंपरनिंदकसतधनहिकोई॥कू
सभगनबिनमोक्षनपावै॥बिनसुतकुलनहिंसुजसबढावै॥यहबिवा
रउपजोमनमांही॥इयबिनहमगजपुरनहिंमांही॥६॥जैमनिउवाच

जै॰ प्र॰
भा॰
१९

दो॰ ॥ भीमवचनसुनकरनसुत भाष्यो चाइनवैन ॥ नवलतुरंगआ
पतभयो हरषत निरष्यो नैन ॥ ७ ॥ चौ॰ ॥ चलतुरंगनीचमूहयसंगा ॥
चामरपुंजझलकत बहुरंगा ॥ सेतछत्रसीसपरराजत ॥ कुहचंदि
काग्रीवविराजत ॥ चंदनादिकुंकुमचरचततन ॥ तरुनीकरविकसित
भावतिमन ॥ अतिविसालमाला उरसोहै ॥ निरषतछविमनमथम
नमोहै ॥ भूपगहेकरअंगसुधारत ॥ जैजैमंगलसबदउचारत ॥ कु
लअगरधूपतिहआगे ॥ चलेवेगगुरपुमनलागे ॥ ८ ॥ दो॰ ॥ बाजत
मंगलसकारबहुगरजतबीरअपार ॥ सिंहारहिअसगाजतहांबहुकौं
तकविस्तार ॥ ९ ॥ चौ॰ ॥ महम्भीसतरेनिहसंगा ॥ बहुविधरक्षा
करहितुरंगा ॥ मेचवरनअपनेजियपास्यो ॥ अबग्रहनकोमंत्रविचा
र्यो ॥ हरषतबरनतानकोलयो ॥ तबयहवचनहकोदरकयो ॥ सुन
सुतलोरक्षामनतेरे ॥ कहोसत्रवचआगेमेरे ॥ जोतुममनमैंमन
साकीनी ॥ बरनविलोकसकलसुहिचीनी ॥ वचनकहनकोंउदि
तभयो ॥ मनकोमंत्रसकलकहिदयो ॥ १० ॥ मे॰ब॰र॰उ॰वा॰च ॥ दो॰ ॥ भी
मसेनआग्याकरउवोसोवेगतुरंग ॥ बनसरीतगहिगिरचढ्योवां
ध्योतरवरसंग ॥ ११ ॥ चौ॰ ॥ जोतुमरीआपणावरणाऊं ॥ अबहीबहि
तुरंगगहिल्याऊं ॥ सरवीरसभटेषतरहहीं ॥ याकुलहोहिककुनहि
कहहीं ॥ बांधल्याउनपकोंसतसाषा ॥ अबहींगहिरेहैंतमहाषा ॥ जो
तमजियमैंसंसाआनहु ॥ मानापहराकसीप्रमानहु ॥ जोतुमरीआग्या॰

अवपाऊं ।। क्षत्रियधर्मजीतकैलाऊं ।। जोतुमकहोसोइअवकरहूं ।। ते
रोवचनसुभाषेपरहूं ।। ११ ।। दो ० ।। ।। जोहयवहसेवकनिकटप्रणमैति
हसंग्राम ।। आतारीजेमोहिकोंतुमकरहोविश्राम ।। १२ चौ ० ई ।। तुमआ
णमोंहरषतअंगा ।। अवखगहोंबांधनरवरसंगा ।। लेआगपावरबुद्धवि
साला ।। भूधरचढकूघोतनकाला ।। एकसमापाकोप्रगरायो ।। दहदि
सअंधकारउपजायो ।। जैसेंप्रलैकालकेवादर ।। इमकनिकूरभयेसम
कादर ।। सिंहनादकोसवउवासो ।। सुरवीरयाकुलकरउसो ।। दहदि
सअंधकारनहिसुझे ।। भायोवचनकाहुनहिबूझे ।। १३ ।। दो ० ।। ।। सुरन
रअसुरउघीसकलअंधकारनभमांहि ।। भमैविमानसहतअमरर
स्थितपावतनाहि ।। १४ ।। चौ ० ई ।। तिहअवसरसुनजरइकआयो ।। वचन
सकप्रतिभावसुनायो ।। सुनउसरेससदासुषसाने ।। तुअपनेसुभ
अरुभनजाने ।। दानवएकप्रगटनभपो ।। तिहलोगनकोअतिदुष
दयो ।। अपनीमायावडविलारी ।। नामकरनकीमनसाधारी ।। तुमको
सभलोकनसुषदाइक ।। वेगकरोदानवकोघाइक ।। यहसुनरेसक्रोध
जियआन्यो ।। सवविद्युधनप्रतिवचनवषान्यो ।। १५ ।। दो ० ।। ।। दानवएक
सुप्रगटियोनिरषहुताकोजाय ।। सकलोगनदुषदेतहैमायारचीवना
य ।। १६ ।। चौ ० ई ।। वहुतदेवदेषनतिहआए ।। चढविमानकौतकओधा
ए ।। मेघवरनकोंदेष्योआई ।। हलएकमहदियोपठाई ।। दलवेगआयो
तिहपासा ।। कसोजसारपवचनप्रकासा ।। तुंहैकवनकहांतेआयो

मे॰ स्व॰ भा॰ ९

तुव तें सभ देवन दुष पायो ॥ कवन मनोरथ तुव हिय अंतर ॥ सत्त क
हो पहु वचन निरंतर ॥ हम कों तुम पहिं इंद्र पठायो ॥ कहो न मुष कि
ह कारन आयो ॥ २५ ॥ दो० ॥ गा ॥ मे तुव वंश उ० ॥ च० ॥ अश्वमेध के काज हि नृप को
युधिष्ठिर मोह ॥ परम राज हय लेन कों कहो जग्य आरंभनो ह ॥ २६ ॥ चौ० ॥ ई
मेघवरन सुहि नाम पठानउ ॥ भीम पुत्र निहचें जिय जानउ ॥ वे इंद्र वर
सत मोहि उचरहीं ॥ इनु जदेव सुफ तें सभ डरहीं ॥ हम कों पठ्यो मत्त के
काजा ॥ धर्म युधिष्ठिर है वह राजा ॥ सो कनास सरूप को हय लेअं ॥ सुवर
विचारन रिदे हमारे ॥ कहो इंद्र प्रति सो कनिवारे ॥ इतने वचन सुनत दूर
षत भए ॥ उत्तर लिषें सक्र पहि गए ॥ २७ ॥ सो० ॥ गा ॥ भाष्यो सकल हवा
ल देव सभा मध इंद्र प्रति ॥ सुनत अमर हरषंत चढ विमान कौं तक
चले ॥ २८ ॥ चौ० ॥ ई ॥ तिह पाछे पहकौं तक भयो ॥ मेघवरन हय की ढिग ग
यो ॥ आयो तहां न हां वह बाजा ॥ मायाश्च हय कियो समाजा ॥ मोहे सुर
वीर सेना वह ॥ महापवन सों गिरे धरन तह ॥ गजा सभु ह अंध प्रगट
ए ॥ सुभट वीर विहूल है गए ॥ पाछे सिला ह छुवइ कीनी ॥ सभ सेना
आकुल करदीनी ॥ सिंहनाद बह सबद उचारो ॥ अंबर तें धरनी पग
धारो ॥ २९ ॥ सो० ॥ गा ॥ तत छिन हलो तुरंग नेकन संका धरी चित ॥ अति
से कवि चितवंत गगन दिश काम सुस्थित भयो ॥ ३० ॥ दो० ॥ गा ॥ नील मेघ स
म वरन तन सीस मुकुट छवि भीर ॥ भुजन करत अंगत मकर मेघवरन
बलबीर ॥ ३१ ॥ चौ० ॥ ई ॥ हाहाकार करत कम हि भयो ॥ अव हि कोन हय

ए विचार हम रहे पचेक

हसि लै गयो॥ सुरचनुर ईस हूं तन लागे॥ को ऐसो जु रंग लै भागे॥ प-
करहु ताहि वेग इह न कीजै॥ रिपकों छेद लु रंग मलीजै॥ चक्र लभ एस
भनबल हास्यो॥ नव अकास की ओर निहास्यो॥ देष्यो इय सम्मेत नभ जा
को॥ मेघवरन सुरा वल गाढो॥ त्रिभुवन कुल महइ अनि कीनी॥ सब
न असीरवाद वड दीनी॥ २४॥ दो॰॥ धमधम वैउं वहत नम हन लव डल
मकीन॥ धमभीम लव सारषा जिहू गरइ पत्र पवीन॥ २५॥ चौ॰॥ कौंन हो
रजगय वरदारक॥ जिस संग तुम से सुर सहारक॥ ह्व प्रसन्न सुर सभम
प॥ देन असीस सुरग कों गए॥ मेघनाद तन मन विकसयो॥ गहि तुरं
ग नभ ठाढो भयो॥ निरष भीम हय केत हरष अनि॥ सिंहनाद स्वर तसुर
भुत गति॥ सेना बीच कष्ट उपजायो॥ नवं ही वेत रंग ले गयो॥ अवलस सले
रनउ न भागे॥ आइ पुकार हरनन रप आगे॥ २६॥ दो॰॥ जो वनास कों सरर
कंक हो हनां न सुनाइ॥ हतस मेत विसमय भयो वोल्यो वचन रिसाइ॥ २७
चौ॰॥ हय को हरन अवन न्रप सुन्यो॥ अति सपइ घन सीस कर धुन्यो॥
महा क्रोध उपज्यो जिय भारी॥ भाख्यो ऐसें वचन उचारी॥ जिन मेरो यह
हय हर लीनो॥ तिह अस्थान जमपुरी कीनो॥ मन क्रम वच निश्चै जियना
गो॥ ताकी आयुबल क्षय पहिचानो॥ हरनर असुर रहइ सो जिहवा जा॥ तिहह
नपकों पुरी जमराजा॥ व्याकुल महां क्रोध जिय धास्यो॥ कालांतक रघ
वेग इकाल्यो॥ २८॥ दो॰॥ महारथी सुरेस वल लीने सकल बुलाइ॥ कर
प्रीता मति इ वचन कहिया तादीजे राइ॥ २९॥ सो॰॥ कतवर भागा नार

म॰ भ्र॰ लेतुरंगकोसुनइनरष॥ हननकरहितिह धाइ अव हयकोंसुकनाव
भा॰ हीं॥ ८४॥ चौ॰ पई॥ सुनइसरनरहवानमिरंतर॥ हयकोंलेआवोपलअंतर
१८ आतालेकृदेसरेसभ॥ रोक्योमेघवरनमारगनभ॥ लागेसकलप्रहार
मवाना॥ छायोश्रमरसरनबलवाना॥ मेघनादबोल्योसरनप्रत॥ कंत
नमकरोशाणाअपनेहत॥ अबनमकोंजमलोकपठावों॥ करनकरोंग
हहनहिलावों॥ ८५॥ दो॰ हा॥ मेघवरनयहवचनकहिलागोकरनप्रहा
र॥ नालसुघनीक्रनअसुरसेनाकरीसंहार॥ ८६॥ चौ॰ पई॥ पाकेसेलमे
घवरसायो॥ तिहसोंसकलवमकोंघायो॥ करनबडूनकरीसबसेना॥
सोगनकहीपरनननहिवैना॥ नेतजप्रानस्वर्गसभगयो॥ जनमजनम
कोपापमिटयो॥ करनिरमथनचमूनबधायो॥ भीमसेनकरनजबहि
आयो॥ नबलगजौबनासकीसेना॥ आवनवडूननिहारीनैना॥ मेघवर
ननबहहेविचारी॥ भीमसेनप्रतिवचनउचारी॥ ८७॥ दो॰ हा॥ नमरीआ
सासफलहमकरीपवनकेपूत॥ गहितुरंगनमवांधियोहचमलसंध
न॥ ८८॥ चौ॰ पई॥ हौंसभसेनाकेमध्यगयो॥ सरवीरहेषनइपलयो॥ सोम
रवरसौंवांध्योगिरपर॥ नाकीरक्षाकरहुभीमवर॥ बनसरीनगहिलयो
तुरंगा॥ महारथीसरेतिहसंगा॥ तिहहयकीरक्षानुमकीजै॥ नुहकरों
आताअबरीजै॥ आतालेरणसनमुखधायो॥ कियोनुदसरनसुरक्षायो
करीलघोरपघोरवमसव॥ गिरचढगयोनुरंगनिकटनव॥ ८९॥ दो॰ हा
कियोभयानकसबदयहमेघवरनरणधीर॥ सेनासकलपलगयोवहीं

ध्वनि करवल वीर॥५५॥ चौपई॥ हाहाकार करत सेना सब॥ पहराकस कों
वेग हनहु अब॥ कहां भयो अो कहां पुकारहि॥ जिन हय पहस्यो वेगनि हमा
रहि॥ भागा कहां जाइ बहहू हम सों॥ कोनो क्रूर करम जिन मम सों॥ जिहहू म
रोकत रंग हू रिलीनो॥ तिहहू जमपुरी मनोरथ कीनो॥ सर परस रकरहि वि
दारा॥ सकल करक महि भयो विथारा॥ सत्रु सनह बहु सम भए॥ बहुरों
सुहृद करन कोंगए॥५६॥ दोहा॥ मेघवरन निरषो गगन ठाढो महां उतंग
धनुष वदाइसन सुष भए काटहि अरिन निषंग॥५७॥ चौपई॥ लागे निक
रवला वन बाना॥ महां सरजो धे बलवाना॥ तन छिन रह हरि सरोकतम
ए॥ सरन सम हक्ष्या इन भल ए॥ मेघवर्न विहारा मर्दयो॥ गगनंतरतें धर
नगिरायो॥ देख्यो गिरत कर ननंदन वहो॥ भीमसेन प्रति वचकहि सवही
धन यह मेघनाद राकस वल॥ जिन वहु करी चमू रन दलमल॥ पुण मेव ह
नुरंग हरलायो॥ तमलनु ह कौनक हिषरायो॥५८॥ दोहा॥ धमधमय
हसरवल भीमसेन त्रिय जान॥ पहकत न पाई ते कैसे अवरन कोउ समान
५९॥ चौपई॥ निरषहु भीमसेन निज नैना॥ रनसम हचतुरंग निसैना॥ रि
छिपत न सूर महां वलगाढे॥ होइ सनह कवहू रन ठाढे॥ तिन सों मैं करिहों सं
ग्रामा॥ तिह संसे पठवों जमधामा॥ यह वच भाष धनुष कर लीना॥ मन मैं
ध्यान हस को कीना॥ जैसें अग्नि पवन धनु करहि पो॥ दानव सकल संघार
न भयो॥ तैसें यह कर धनुष उठायो॥ सभ सेना के सनमुष आयो॥६०॥ दो
हा॥ तिहछन भाग्यो वचन सुष सरन प्रति हषकेन॥ भाग जाइ रन भूमतें

म.भ्र.
भा.
१९

धानतनमड्कि इहेत ॥५३॥ चौ॰ ई॥ भानुजमहतकेवचनसुरसुन ॥ प्रफु
लतनैनसरोजअतिहियन ॥ लागेकहनपरसुसरवाना ॥ कोवहवीरक
वनकोनाना ॥ भयोहमारेसिरपरइस्थित ॥ बोलनवचनकठोरकाल
वत ॥ यहकहिलागेअस्त्रप्रहारन ॥ महाजोरसरहृदेविदारन ॥ करनउ
ककोंअैसेंकीनो ॥ ओंदनगगनअछादनलीनो ॥ तबहुषकेतमहावल
धारयो ॥ तीछनसरलेधनुषसंभारयो ॥५४॥ दो॰ ॥ सरसमूहअवत
तितकियोधनुषटंकार ॥ टूकटूकसभकोंकियोतीछनवानप्रहार ॥५५
चौ॰ ई॥ खंडखंडवाननकोंकीनो ॥ एकैसरसोंसभसरछीनो ॥ कंधपरसिं
हमहाभुजभारी ॥ सिंहनादपुनकियोउचारी ॥ काढेतीछनवाननिषंगा
वेधेसरनकेअंगअंगा ॥ गजरथवाजिपदातिसेनवर ॥ सकलसंघारी
गिरीधरनपर ॥ वाननकोजलधरवरसायो ॥ रुधिरनकेकुनसकलरुल
कायो ॥ रथसारथीतुरंगसवारा ॥ हनेसभनकोकियोप्रहारा ॥५६॥ दो॰ ॥ ना
सेनासकलीभगनकरयोंभानुजनकेतात ॥ जैसेंश्रीहरिनामतेंपापनास
हैजात ॥५७॥ चौ॰ ई॥ भानुजमहतसेनावडुमारी ॥ सेषवचेगएनगरमं
झारी ॥ तिनकहिहनुमानकथाजनुपआगे ॥ प्रथमेवडहुकारंगलेभागे ॥ पुन
सेनाकोंवडउदुखदीनो ॥ इसससहज्ञजोधाहतकीनो ॥ गजतुरंगवाहन
वहुमारे ॥ प्रवलनुहकरसकलसंघारे ॥ महाभयानकसवटककरतहै
महावीरनहिनेकडरतहै ॥ तिनकोगतनककुकहीनजावै ॥ नैननसोंदेखो
वनआवै ॥५८॥ सो॰ ॥ जोवनासकरवाइहतननवचनजिसमैंभयो

हिय रैं क्रोध अति पाय धूर रह्यो अंग अंग ग्रति ॥ ५७ ॥ दो० ॥ महारथी अ
ति रथी रथ संग सूर बलवान ॥ सज सेना चल रंग नी चल्यो बनाइ विसा
न ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ औ बनास धुन भरू नभ रन ॥ कह्यो सु विधउन की संभरन
केतक कहै बहु बीर महाबल ॥ जिन की नी सेना रन दलमल ॥ केतक बल
तिन के सो ई भाषहु ॥ सम कहो अंबर न हिय राषहु ॥ नृपत बचन सुनत उमर
हीनो ॥ तीन पुरुष बैठो न हि थीनो ॥ तिहि ने रोलू रंग हरलीनो ॥ ताहि निबा
सगागनम हि कीनो ॥ हमो तरुन महाबल भारी ॥ जिन तमरीस भसेन सं
घारी ॥ ५९ ॥ दो० ॥ तीजो इस्थिन तें घिय तेज सीव बलवान ॥ यहै अब स्था
तिन हू की सुन हो नृपत सुजान ॥ ६० ॥ चौपई ॥ कहै राय तिहि वेंजि यजान
हू ॥ आप लीनो रेष प्रमानहू ॥ अश्वा चिलु महेस देव बर ॥ हम सो इ यह रन
ही लीनो हर ॥ कहां सकल मानव की होई ॥ हम सो इ यह रन समकै न कोई ॥ मा
न सन्ने यह होइ न काजा ॥ नहीं समर्थ इहु रन सु हि बाजा ॥ दीनो देव वेग र
थ ताबों ॥ रणसु षबीच गह रन हिलाबों ॥ पवन वेग रथ शीघ्र चलायो ॥
रंग भूम सेनाम हि आयो ॥ ६१ ॥ सो० ॥ यह वच भाषे राउ रंग भूम प्राप
त भयो ॥ प्रथमे निरख्यो धाइ भीमसेन को दरस नृप ॥ ६२ ॥ चौपई ॥ तिहि पा
छे हष भधन देख्यो ॥ इस्थित नुहु बीच अवरेष्यो ॥ धनु धनु बालक अति
कह्यो ॥ इमहि हिदे हरण इस्थित रह्यो ॥ हरे बीच कक कुभैन दिष्यायो ॥ मुक
कों निरख त्रास न हिमान्यो ॥ महासिंघ बलनि रखै गाढो ॥ ते जवान तौ र
बल गाढो ॥ जिम सजो गी मल भय न हिय राई ॥ तिम बालक रण मैं न हि

न॰ म्र॰
भा॰
२॰

इरई॥ वहुरपकलौ रताविहीन पुन॥ देखइमरमहावलके गुन॥१९
सो॰रा॥ जौवनासरूपयइवचनभाखेसरनसंग॥ सुइकरनउपमकि
पोहरषतहियेउमंग॥१९॥ चौ॰ ई॥ निरखोभीमरूपतनमवआयो॥ वेग
गहागहिमनसुषधायो॥ कहकसरवीरकोंमासो॥ भानुजसहनप्रति
वचनउचासो॥ मैंकरिहोंरूपसोंसंग्रामा॥ लमरइकछिनकीनेविश्रा
मा॥ वोलोभानुजननेंदमहावल॥ लमरेसुइसमर्थनरहइदल॥ जीनलो
कसेनासुरिआवे॥ सोननसुइकरतमत्रिपतावे॥ यहसेनावललछुटि
पावे॥ कैसेंलमरीहछश्रघावे॥१९॥ सो॰रा॥ प्रथमेसेनासुहिवरीभी
मसेनसुहिमान॥ जीतदेउलमरेकरननहिंसंसैयहमान॥१९॥ चौ॰प
ई॥ पवनपुत्रतमसहनइमहांवल॥ इकछिनकरोंचमूरनदलमल॥
लमरेषतनयहकारनकरों॥ विधनाविनकाहूनहिंडरों॥ विषमानह
मरेलमलाना॥ कहरहिसुइकैहैकुसलाना॥ माजगमेंरहिनककुना
ही॥ नरनारीनेउपिरनरहांही॥ पिरकीरतयहजगतपवनसुत॥ स्व
वरधरमविपरीतसुकलपुन॥ कलिसिमनकविनननसभकाइही॥
कीरतवानसदाथिररहही॥१९॥ सो॰रा॥ धातुवयवहुविधचलरगो
धेमरसुपार॥ जोनरजीतहितादिवलहुनमसवरतसंसार॥२०॥ चौ
पई॥ यहसेनाहैवयुइमारी॥ भईदसनुषापिताउमारी॥ नाकेकरोंव
कस्थलखंडन॥ सहससरूपीनषनप्रचंडन॥ ममसुषसेनासुषसन
मुषगन॥ लमकोनिरषविमुषनाहीछिन॥ रसफुरहितसुधरनक

40

विकाजै॥ सोमुषसमहिहिषावमलाजै॥ करुनाकरश्रीनाथुहिहीजै
क्रोधनिवारहूरुषिनकीजै श्रीपतकोहियध्यानलगाऊं॥ रुपनजीत
सेनासंगस्याऊं॥३८॥ भीमसेन उवाच॥ दोहा॥ गवनकरहुहषकेननमप्र
घमेसनमुषधाइ॥ सेनाश्रविचलरंगनीसरवीरहिषराइ॥३९॥ सो॰॥
रिपुदलजुरेश्रपारलमएकलोमगमनकर॥ विनरथतुहिउदारमोम
नमांननश्रावही॥४०॥ चौपई॥ नापाकेरुपजनमेजयसुन॥ करीभीमकी
परहकुनषन॥ धलोश्रानहरिचलोचमप्रति॥ श्ररुननेत्रकरिपुकषकर
मवति॥ श्रागेश्रवलाचमूवरनवर॥ मगमरमलैकरुरवासमर॥ सोमम
हैगजकुंभपयोधर॥ भेरनचलोचमलीकनसर॥ छंवविहंवनसभमरर
नकर॥ हनमलघेरपघेरनगजधर जोधवीरवीरावहुमारे॥ हरषभीम
निहगेरनिहारे॥४१॥ दोहा॥ वहुसेनामरदनकरीभानुजसहनरणधीर॥ ह
यगजरथपैदलहनेनहिविपमोवलवीर॥४२॥ चौपई॥ सुरवीरजोपेहन
लए॥ रकधारलरकमर्कनभए॥ कहूंकवंधकहूंसिरपरे॥ कहूंभुजनमं
षुचरननरफरे॥ श्रमहूनउनजियक्रोधनिवारयो॥ शत्रुभाउहियतेंनहि
टारयो॥ पहजियमानवहूररनगयो॥ सेनानिकरसंहारतभयो॥ वहूनर
पनकेसीसउतारे॥ तिनकेरुधसगंधवहेंहारे॥ श्रौंमलहीनमलीनकम
लडुत॥ त्यौंछेदेसिरपरेधरनहुत॥४३॥ दोहा॥ हननमहांगजसीसथहूम
कनाचरेविसाल॥ करनप्रउपहरतभयेवीनवीनउरमाल॥४४॥ चौपई॥
जोवनासनिनचमूनिहारी॥ भानुजनंदनसकलसिंहारी॥ सेनानिरषक्रो

म॰ अ॰ धमनभयो॥ अबमसबसरधनुकरलयो॥ भयोयुद्धद्वपगजअपर
भा॰ करनजद्धलिभाजोउमभूपर॥ लीजेरथकीजेसंग्रामा॥ यहप्रसलप्र\
२१ नकोकामा॥ उमधरमीपरहमअसवारा॥ ऐसेंवचननजुद्धहमारा॥
मगअमसहितवडरथपरदेसा॥ किधोजुद्धपुनभयोकलेसा॥ ८॥ दोहा॥
वडमहारनप्रतिजुद्धअतिरथविहीनउमवाल॥ देहोंरथयदीजेमहभटरच
इजुद्धनलकाल॥ ४९॥ चौपई॥ मैंनहिजानोंनामउन्हारा॥ कवनगोत्र\
कोपिताउन्हारा॥ कवनदेसकामोंउमआवहु॥ समवचनकहिहम\
समझावहु॥ जैसेंविमलगोत्रनहिंजाननं॥ सकलजुगतनिरनैनव
खानन॥ अपनोकुलमोकहिकैदीजे॥ हरषतहोइजुद्धतनकीजे॥ धम
धमवालकरनधीरा॥ मोमतिलोसमअवरनवीरा॥ धरमउदारवुध
हज्ञाना॥ महासरत्रैलोकनिधाना॥ ८॥ दोहा॥ कहइहलांतहमैसक
लसमवचनजियजान॥ करोंजुद्धलोसोंसुभटकुलनिरनैपहचान॥
८१॥ इहविकेनउवाच॥ चौपई॥ कश्यपगोत्रहमाराजानहु॥ सुरजमोहिपि\
तामहमानहु॥ करनतातलिहुसभजगजाननं॥ नाममोरहंषकेनव
खानन॥ पितामोरहंसनअतिकीना॥ नगनकरनहौपहिकोंचीना॥
इरजोधनकोअतिहितकारी॥ धर्मराइअतिभयोविकारी॥ अर्जुनपर
ममजुत्रहकियो॥ रनमहिकेइरमभयपरहयो॥ मोवनासनिश्चेजिय\
जानहु॥ करनपुत्रमोकोंपहिचानहु॥ ८२॥ दोहा॥ रथपनजुधिष्ठिरजन
तहितपकोमोहहयकाज॥ यहनमितआपहमहिहलोउन्हारोवा

न॥८८३॥सोरठा॥संकल्पनमनमांहिलमरारपलेवोंनहीं॥स्नुरगा
कोप्रगनानाहिंनोप्रुनइचलनत्रुहमुहि॥८४॥दोहा॥आयचलवोंसेट
रसरुषभधजसंग्राम॥जोवनासकीचमूमहिंकीचरुधरम्नुरुचाम
८५॥स्तुतिश्रीभारथपर्व॥ऐरास्त्रमेधकोआगा॥कविरहकनपरनमणो
ध्यापचरुर्धमान॥८॥जोवनानरुकीब॥सोरठा॥धम्नकरनम्नुत
म्नरप्रथमैंबानप्रहारलं॥चंचलसिम्नप्रगाणरपहलेमैंक्काहेंनसर॥
हेपकेनरुवाच॥चौपई॥म्नुनहोजोवनामन्रुपबाना॥तुमग्रतिम्नुमप
बहुताना॥बहुरोंपहस्नुरुनननहिंचीना॥कुसचंदकोहरसनकीना
जनमग्रमोलकवारगवायो॥श्रीपनकोतमरस्रनपायो॥याहीतेह
मग्रतिबलवाना॥कुसरसकरमननरुपनाना॥सहानरुनहमनरार
हिंतनन॥ग्रवलोकेगिरधरहंदरगन॥हियोग्रनलबलहमहिंतपा
कर॥तुमरावलनहिंहमरेसमसर॥२॥कवित्त॥जाकेध्यानधरेपगन
रगिरलंघजातजाकीकृपाहोतमतिमंदकविभारपी॥गिरवरधारी
गर्वदंदकोप्रहारीकुलकौरवसंहारीभयोग्रर्जुनकोसारथी॥ददहका
नग्रप्रुनंदलालहीनवंधुभक्तपालकरुनाकृपालम्नपरमप्ररथारथी
तिनबलहियोमोकोसांचकहोंनरुपतोकोंजीतहोंसमेनमम्नरवीरग्रोम
हारथी॥२॥जैमनिउवाच॥चौपई॥पहवचम्नुनकैजोवनासन्रुपहंसि
ककुकरगियकोधनरायिप॥तनक्षिनन्रुपनधनुषटंकारे॥म्नमसर
म्नुषमधनवोंमारे॥ग्रावनसरम्नुषकेननिहारे॥पकैसरमोंसकल

म॰ श्री॰ बिडारे ॥ इक इक बानन्ह कन्नप कीने ॥ मगमैं छेदन पट्ट चनदीने ॥ ब
भा॰ ङ्कुरतीन सरहने करनसुत ॥ बे ओजो बनास संग रंगत ॥ पैने सरन्ह पध
२२ रनि गिरायो ॥ यहै कौन कदृष केन दिषायो ॥ ५ ॥ दो ॥ हा ॥ जैसें झुंडी सा
षतें पितर अधोगत जात ॥ सोंइ षभधजबानतें रिपुदल भाग बिलात
५ ॥ चौ ॥ ई ॥ पुनमरघुअर्धचंद करयासो ॥ औबनासकी गेरयहासो ॥ ध
नुन्हपकोषंड नकरदीना ॥ गनसमेत सै नासब कीना ॥ बद्ध रसीस तें
छुत्र गिरायो ॥ चामर धुजधर नीलपग्यो ॥ जैसें बचकठोर प्रीतम प्र
ति ॥ हुतन विनास होत गुन ग्रर बत ॥ सौं भातुजसुत नुग्रा सुगमासो
छत्रधनुषमन छेदर बिरासो ॥ एक बानसों घई बल कीना ॥ जो बनास
कों बद्ध दुषदीना ॥ ६ ॥ दो ॥ हा ॥ अवरधनुष करलियो नृप गुन बढाय
बलवान ॥ साठबानन्ह षकेनकों हने निसंक न नाम ॥ ७ ॥ चौ ॥ ई ॥ साठ
बानबालक उरलागे ॥ उमसो रुधरसकल अंग रागे ॥ पीरन भयो म
हाँ दुषभारी ॥ तीछनबानलगे दुषकारी ॥ पीवनबान रुधिर कों ऐसें ॥
सरमगृह उरगन जलजैसें ॥ बद्धरकरन छतन उपमकीना ॥ क्रोधसहि
तकर धरसरलीना ॥ बारबान पठहने तुरंगा ॥ सिरसारथी गिरयो निह
संगा ॥ क्रोध नलीछन सरबरसावै ॥ जो बनासन्हप दछन आवै ॥ ७ ॥ दो
हा ॥ दछन आवैन्हपक हुं बरषहिबान अपार ॥ जो बनासन्हप हतभ
योरनमहि पर्ई प्रकार ॥ ८ ॥ चौ ॥ ई ॥ अंधकार न्हप बानन छायो ॥ अगन
बानन्ह षकेन चलायो ॥ मंत्रसकत नकारकियो प्रकासा ॥ जो बनासन्हप

रहृस्त्र भाला ॥ जरत चमू न पैनै न निहारी ॥ वरुणास्त्र कर लियो
सम्हारी ॥ मंत्रित वेग प्रहारण कीनो ॥ पावक वान शांति कर लीनो ॥ व
ड्र रौं पर्वत अस्त्र चलायो ॥ सिलाअस्त्र संघ मेघ वरसायो ॥ नाणा छेनी छन
सरमारे ॥ करन पुत्र के हृदै विदारे ॥ ८ ॥ दो० ॥ नीकन वान चलाइ न प
मूर्छ्यो वृषकेत ॥ रहृन आवन कर नहृन विहृवल भयो अचेत ॥ ९ ॥
चौ० ६ ॥ कमल नु हृदा हृणा अति भयो ॥ सूर वीर मोधे रण छयो ॥ करन
पुत्र गावन न मुरछायो ॥ भीमसेन की रहृन आयो ॥ कोप्यो भीम महा बल
भारी ॥ धायो शीघ्र गदा कर धारी ॥ मुकतावन को भानु जनु बंटन ॥ आ
यो भीम सह रिपु दल खंडन ॥ हाहाकार करत भय भीनो ॥ सिमरन हृदै कै
सको कीनो ॥ आवत भीम चमू सब देख्यो ॥ गदा लियें कर रन अवरेख्यो
१२ ॥ दो० ॥ कोप्यो भीम महाबली विना बली अपार ॥ कर्नज विन हलन
पुरी अैहैं होइ धिकार ॥ १३ ॥ चौ० ६ ॥ जो कर्नज विन गजपुरि जाऊं ॥ सक
ल जगत महि अपजस पाऊं ॥ धर्मराज सौं कहां कहौं जब ॥ मनज रुष
केत जाउ गजपुर जब ॥ महां कलेस बढ्यो उर अंतर ॥ दुष समुद्र महि
परयो निरंतर ॥ माथा धुनै सीत भर स्वासा ॥ भीजन नहाय भयो उपहासा
फल ध्यान कर हृदै विचारो ॥ हनौं न रिपु जिह कर्नज मारो ॥ पुत्र सोक
जिय क्रोध बढायो ॥ कर गहि गदा समर महि आयो ॥ १४ ॥ दो० ॥ हाथ
गदा गहि रन परयो हय गज हने अपार ॥ रथ पाइक कर तल मल विथि पंथौं
पावक रण जार ॥ १५ ॥ चौ० ६ ॥ हय गज रथ पाइक सिर मांही ॥ परेग

जै॰ भ॰ राघुरनहेंकमांही॥ जैसेंखेतीपरपकहोई॥ काटनचारनलागैकोई
भा॰ गदाकोरकरतुडप्रकासा॥ गजहयनरगाहपठियअकासा॥ महावे
२३ गसोंभीमचलोजब॥ तुगलवानतेपचेपुगटतब॥ जिहसमीरतेउवे
जोमगन॥ इयरथपाइकध्रमतगगनलगन॥ गजपरगजमारेभूत
लपर॥ सेनाध्रमनफिरतइतउतअंबर॥ ४८॥ दो॰ हा॥ जैसेंनरहरिभक्ति
विनवेगअधोगतजात॥ यौंरनसेनागतभईऊईंपाइतनचात॥ ४९॥ चौ
पई॥ जोकहुभीमहापमहिआवै॥ इयगजरथनरगगनपठावै॥ सेना
भ्रमनअकासअपारा॥ इस्थितपवनचक्रकीधारा॥ जोजैसेंकरपकोल
तेसें॥ सिरतलपगऊपरनभजैसें॥ केउउलरतनभ्रमतगगनमधि॥ के
ऊऊधकेऊहूकमधेसुध॥ कोऊटेढेकोऊसिरनहिसाखा॥ भ्रमनरोम
पवपेतिमहाषा॥ जैसेंकागलेतमकरीनभ॥ तैसेंभ्रमनअकासचमस
भ॥ ५०॥ दो॰ हा॥ हरे भीमबालकरहरटमंत्रीपकरीधाइ॥ करगहितिस
हिभ्रमाइबहरिसोंअकासपठाइ॥ ५१॥ चौ॰ पै॥ अंगभंगवहुसुरापरेरन॥
लुटतअधोमुखरुधिरबहुतनतन॥ कहुअसवारमहाघनपरे॥ बरन
मलीनरुधिरतनभरे॥ राजपुत्ररनपरेबरीरन॥ श्रवतिरुधिरसुखअंग
अंगनबीरन॥ रकयमगिरतगगनतेंभूतल॥ शोणितचलतप्रवाहमहाब
ल॥ तबमनवेगरणाग्रामपतभयो॥ भीमसेनकेसनमुषगयो॥ नरपसुनकों
धवचनमुखकहई॥ रथतेंउत्तरगदाकरगहई॥ ५२॥ दो॰ हा॥ तिष्ठसुदकर
साथपुनकोहिनकोहेंबीर॥ हमरीसेनाहतकरीकोहिहनोंरणधीर॥

४१ ॥ चौपई ॥ जोवनासस्तनमोकोंजानहु ॥ महाबलीमोकोंपहिचानहु
नामसुवेगजानलीजैमुझ ॥ करोंबदारनअंगअंगतुझ ॥ यहइवचभाषग
दाकरलीनी ॥ भीमसेनकोंताडनकीनी ॥ लगीसीसपरअतिदुखदीनो ॥ स
कलवक्षस्थलखंडनकीनो ॥ बहुरसुकोदरगदासम्हारी ॥ हृदकरगहिंसु
वेगतनमारी ॥ लगेपरसपरगदाप्रहारन ॥ परतबज्रसमअंगविदारन ॥ ४२
दोहरा ॥ मर्छिततधरनगिरेदोऊमहांसूरबलवान ॥ बहुरउठेफ्रेभलेदोऊ
एकसमान ॥ ४३ ॥ चौपई ॥ पुनसुवेगकोंभीमउठायो ॥ करसोंगहिसोवेर
भ्रमायो ॥ झकझोरतपरकोधरऊपर ॥ लुटततफिरतव्याकुलतनभूपर ॥
भयोसुचेतउठततताहीछिन ॥ इमजोक्रोधमहांनृपमनमन ॥ एकसोभी
मसेनकोंबलकर ॥ मरदनकरगदाकोधरनीपर ॥ बहुरभीमकरगदासंभा
री ॥ हृदसुवेगकेहृदैप्रहारी ॥ पुनिसुवेगअतिक्रोधतभयो ॥ गदादंडभीम
हिअतिरयो ॥ ४४ ॥ दोहरा ॥ पुष्टसुदृढअतिमलकरगिरेदोऊरणमांहि ॥ म
र्छिततहैधरनीपरेतनसंभारककुनाहि ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ भीमपलोमुरछाय
सुवासुवासेनाकेहै ॥ दुंदुभिसबदबजाइजोवनासनृपहरषचित ॥ ४६ ॥ चौ
पई ॥ मर्छापराइलोहषकेता ॥ जाग्योबालकभयोसुचेता ॥ दुंदुभिसबदधरे
बहुकाना ॥ सुवाभीमसबचमनवषाना ॥ सुनततवचनआतुरहैधायो ॥ प्रथ
मेभीमसेनपहिआयो ॥ पलोमरछाभीमधरनपर ॥ निरषदहिंयोंतबमन
कहूंदुर ॥ बजेनिसाननृपनंदनगाजा ॥ हरषतसेनासुबरसमाजा ॥ भीमसेन
वानवनननमरन ॥ वैंचनिकारेमरमसंमरन ॥ ४७ ॥ दोहरा ॥ कर्नपुत्रक्रोधत

ग॰ग्रं॰ भयो गयो वेग रणमांहि॥ कोप्यो धनुष टंकार कर हनन लग्यो रिपु रक्तों हि
भा॰ २१॥ चौ॰ ई॥ सुष भय जननि मही पग धार्यो॥ कालरूप जुवनास निहार्यो॥
२५ गर्भ वाल सन सुष ह्वै गाढो॥ सिंह स्वरूप महां वल गाढो॥ शिरष स्वरूप न
जिय क्रोध वढायो॥ जिह हन भीमसेन पुरक्कायो॥ पहलो भयो सुर को रा
जा॥ सुर वीर संग वडे समाजा॥ पाके महां पराक्रम कहिये॥ वान तेज समी
पाको वहिये॥ तेन जुधिष्ठिर सम ठहरायो॥ कस्न ध्यान धर वान चलायो
२२॥ दो॰ ह॥ श्रीपत को जिय ध्यान धर मुकनायो कर वान॥ काटन भए
श्रसंख सस्त्र लगे श्रृंगराजान॥ २३॥ चौ॰ प॰ ई॥ हलीम हलनि गिलोर पधरनी॥ म
न कभयो गमनानन वरनी॥ वडहों सेना सकल सिंगारी॥ कर्न पुत्र प्रति
भुज वल भारी॥ रुप त सम ते न वारक सम धायो॥ हरषत भीमसेन पहि आजो
हरें हरें कर पवन फुलावन॥ मों मों भीमसेन हु षणावन॥ मर्च्छा कुरी वै
न वरषोले॥ क्रोध समेत नह को हरवोले॥ जो वनास को भयो न ताता॥ जि
न हन कियो कर्न को नाता॥ २४॥ दो॰ ह॥ कर्न पुत्र हन भए की विंता श्रति म
न मांहि॥ सो श्रुभि लाष लिषें ठठे मुवोन पत किधों नाहि॥ २५॥ चौ॰ प॰ ई॥ मर्च्छा
कुरी भीम वर भारी॥ उहरे हगत विंमास भयारी॥ निरख्यो नैन कारन कों नं
दन॥ सुषउपमो हुष भए निकंदन॥ पवन फुलावन श्रति सुष दीनो॥ उठ
कै भीम श्रलिंगन कीनो॥ रमन सुष सुष श्रंकन सम वल॥ निरष सुहित
सन कंठ लगावन॥ शकुन जो वनास की वाता॥ कहहु हनां न सकल सुरु
नाता॥ हर्षन कर्न न वचन उचार्यो॥ जो वनास न्रप कों प्रजमार्यो॥ २६॥ दो

सोरा ॥ जो बनवास इहं कियो सुकृत में नास हित नृपाल ॥ मन बच क्रम निय
मानिये कृपा करी नंदलाल ॥ १४ ॥ चौपई ॥ सुनन कै भीम अनंदन भयो ॥ दुष
संताप सभ भ्रम मिटि गयो ॥ धन्य धन्य कर्नन प्रतिकहइउ ॥ रिपु रन जीत न
रंगम गहउ ॥ बेग चल इह सुन नपुर रेसा ॥ जहां कृष्ण सुत धर्मन रेसा ॥ यह
बच सुन बोले हष भयउ ॥ देषइ हृदै विचार महां पुन ॥ कारन सुधिष्टिरय
सधरम हित ॥ अश्व इस्तोहम पुत्र जान चित ॥ जीव दया सों अनिकलाना
हम तो हमो महां बल बाना ॥ १५ ॥ दो॰ सोरा ॥ जो बनवास रूप सुत सहित सेना
हती अपार ॥ हयपालोइ नजिहृ निमित सोहम हृस्तो विचार ॥ १६ ॥ चौपई ॥
मोरन सूरवीर रहन भए ॥ तिनकी नार दुषित सुष गए ॥ ते लागहि भरतार
नकेगर ॥ साधहि गीमरही अगन हिजर ॥ इन ने जीव गात करमावइ ॥ कै
सेंज सपुन्य फल पावइ ॥ कहि आयो गजपुर रपइ बाना ॥ तस सुधिष्टिर कोत
मताला ॥ रपहय सहत बम्ह संग लावों ॥ भीमसेन तब नाम कहावों ॥ मिटने
पकोंपित मसंभारइ ॥ सुरन करइ विवेक विचारइ ॥ १७ ॥ दो॰ सोरा ॥ नृम हिय
रा क्रम बइ कि पसावधान रपहोइ ॥ जो पइ राजा रनम रेकीरन करैन को
इ ॥ १८ ॥ चौपई ॥ इम हि पराक्रम महां हिय कारथ ॥ राजा सुयेसरेन हिलारथ ॥ इ
मम बल को वर्णि सुनावै ॥ जो राजा म्हनिक गत पावै ॥ जो जीवन नरपकों तेजा
बहि ॥ तोहम महां सुजस जग पावहि ॥ इम मजो किये पराक्रम भारी ॥ रपवह
तोतसम कहे मुरारी ॥ मेरो बनेतिह म्रवस रष्यो ॥ अश्व गगान तें भूपरल्ला
यो ॥ तिनहु यही मंत्र कहराना ॥ जीवइ नृप सुतन सबस्रुताना ॥ १९ ॥ दो॰ सोरा

नै० ग्रं० कहिआयोहैप्रगटउहांकुसलजुधिष्ठिरराइ॥जोवनबासदुषसबसोंग
भा० पुरलावोंधाइ॥७०॥चौ० १॥सुनवचनदुषकेनकहनहैं॥रुपनीवे
२५ नवलाजरहतहैं॥लेआवहिंजोनरुपदुस्तनपुर॥कहैपराक्रमसकलयु
धिष्ठिर॥पुनवरनैंश्रीपतमोवाता॥धमकहेहरिलमकोंनाता॥धर्मसभा
महिंजोप्रगटलीनो॥सोप्रगटभीमसंभरनकीनो॥दुर्षभीमयहसभविधवी
ती॥भाजुनसुनकोंआनारीनी॥सुनलेहमबातवनसुषकेना॥जोवनासकों
करइसुचेता॥७१॥दो० ८॥आनालेकरकरनसुनवलआयोनरुपपास॥
भीससराषकेगोरसैंपवनकुलावननास॥७२॥चौ० १॥लियोउरककरके
रनसुनहिंलव॥संकलणोइगिरिरससपवनसव॥जलशास्त्रोनरुपकेसुषमाहीं
नीग्रतभयोनरेहनहांहीं॥सुनसेनानवजायतभए॥आनंदभयोसोकसभ
गए॥उक्तोरुपनलागाचरननतिह॥गएप्रानहीनेनरुपकोंजिह॥हरषनलो
गकरनलैकारा॥नहांवेरधुनमंगलचारा॥जोवनवासयुक्तनवहकीनी॥श्री
पुरत्रानमोहिलमरीनी॥७३॥दो० ८॥जीकरानतमरियोसुहिंकियोआप
नोदास॥उचननहींश्रवनुद्रपुरकहैंइनगत्रपहास॥७४॥चौ० १॥कृत्रिधर्म
अपनापुकराषा॥जोसनस्कतिसिसनकीसाषा॥कियोनुद्दजोलगहरप्रा
ना॥दुविरनपुनजिपमोहताना॥श्रवपुहिरासमानतीजेमन॥परसावइ
परकुलसमामहुन॥वइसजुधिष्ठिरकोंमुघरेवों॥सुफलजननमयुपनाक
रलेवों॥७५॥दो० ८॥ननअरंभकियोलमहिपरकारजनकेइन॥हमजैसहइ
रिसुषनिरषकोंरघुकनफललेन॥७६॥चौ० १॥करोंवेनलोग्रवनसुनी

जै॥ मोपरपरमअनुग्रहकीजै॥ चलहुपुरीअपनीपगधारहु॥ भरथ
नीलोकनिस्तारहु॥ तुमहमकोंलेचलोतहांही॥ कसनुपिछिरूपनज
हांही॥ चलेपुरीकोंमुदितमहामन॥ बाजनबजंतभेरिदुंदुभिगन॥ नृपअरु
भीमहिरथअसवारा॥ सेनबर्नगजनसोभअपारा॥ कर्नजसहिनमहवेग
अरुहन॥ सकलबर्नगजकंचनझरत॥५७॥ दो०॥ मेलवर्नरत्नाकर
नहंसकरंगमसंग॥ रथबैठेहरिआनधरिपुरहकोंचलेउमंग॥५८॥ चौ
पई॥ नृपनप्रजाकोंआग्यादीजी॥ सकलपुरीकोंपरसधकीजी॥ हाटबाट
मगसुभगबनावहु॥ कंचनकलसधुजागृहछावहु॥ चंदनअगरअ
र्गजाबासा॥ छिरकावहुमगसकलसुवासा॥ नरनारिहिमगरहिसिंगा
र॥ ठाढहिअपनेअपनेद्वारा॥ भीमसेनकोंभेटदेहिनर॥ आरतिवारन
करहिनारिनर॥ ऐसेंनृपबचभाषसुनाए॥ हेतपुरलोगअनंदबढाए॥५९
दो०॥ नगरनिकटआपनबहिनृपनबेननीकीन॥ आनतारीजेमोहिकों
आगेजाउप्रवीन॥६०॥ चौपई॥ लेआपानृपनगरसिधारा॥ प्रभावती
प्रतिबचनउचारा॥ सजइआरतीलेइभेरबर॥ मनिमुक्ताइलनिकरथा
रभर॥ अप्रुनासकलनकलोनसनाथो॥ रानीसुनतमहासुषपायो॥ कियसिं
गारसुबनितनिसमसाथा॥ ५पटीपआरतिनिजहाथा॥ कुंकुममृगमदअ
रुघनसारा॥ चंदनअगरसुगंधअपारा॥ प्रमुदितचलीनृपनकेसंगा॥ स
सिबदनीसुभनैनकुरंगा॥६१॥ दो०॥ चलआईतिनकेनिकटरानीसहिम
रमार॥ कारग्रहक्षगाचरनलगअलनकरीअपार॥६२॥ चौपई॥ ५पटीप

जै.भू. आरतीउतारी॥ अक्षतथीफलरुचिरसुधारी॥ मनिमुक्ताभेटांबहु
भा. दीनी॥ सचिवनसहितनृपसीसाकीनी॥ तुफलजनमसत्रवभयोहमारा
२९ पावनदरसनकियोतुम्हारा॥ दानपुत्रसभसुफलेभए॥ तुमकरुनाते
सभदुषगए॥ तुमरीकृपाकुसलपगपरसहि॥ नृपतिनुपिछिरकामुष
सरसहि॥ धन्यधन्यपहुभाग्युजनाना॥ श्रानहिएन्नृपकोंरनग्याना॥ ४४॥ दो
हा॥ कर्नवचोरानीकहैंतीनलोकविष्यात॥ ताकोसुतलहषवेलतुमभ
योषानकोरान॥ ५४॥ चौपई॥ पतिविनसुवतीकिसहिनकाजा॥ धनजो
वनभूगसकलसमाजा॥ कंठसूत्रमेरेजोवनासा॥ दियेषानतुमकियोप्र
कासा॥ जोकदाचतुमनृपनजिवावत॥ मैंसुपनोमनमुगानजरावत॥ या
दुषतेंमुझकोंसुकनायो॥ नृपसेनासुतसहितजिवायो॥ निसदिनतुम
कोंकरोंअसीसा॥ चिरचिरजीवहुलाषवरीसा॥ यहवचप्रभावतीकहि
रए॥ सुषसबनीलोमनभए॥ ५५॥ दोहा॥ लेआयोपुनभेटनृपसकलप्र
जालिएसंग॥ वंदीजननजसगावहीपुलकततहदेउमंग॥ ५६॥ चौपई॥ जोव
नासमेटयहदीनी॥ सावधानतिनहूंकीकीनी॥ एकएककोंरतनोदीनो
रुकरुकमसहसगदेरप्रवीनो॥ कंचनरतनभारसंपूरन॥ एकावनहयम
ततनपूरन॥ रुकरुकसहसभलोरथदियो॥ मनिमुक्ताभरपूरनकियो॥
एकएकगजसेतदियोसंग॥ महावतसंगसोभितसुंदरसुरंग॥ रुकरुक
सहसभलोरथसंवर॥ पहरेतिनहूंतनषसिषअंबर॥ ५७॥ दोहा॥ तीनोम
धमसुमनकीनोपुरीप्रवेस॥ आगननतवाजनवाजहीहरषहियेपरमे

स।५१।।चौपई।।कंन्याइक्कीपरस्रसवारा।।गावतभावतमंगलचारा।
लाआहाथीएवरसावहिं।।हारहारपरनुवतीगावहिं।करहिआरती
निजनिजहाथा।।भेटदेहिनरनारिनसाथा।।द्विजसमहइस्कानिकरमउचा
ए।।गृहगृहआनंदबधोअपारा।।उतरेआइराजकेद्वारे।।हरषनरूपके
भवनसिधारे।।सिंघासनपरबैठेजाई।।जुधिष्ठिरकोअमसमुदवडाई।।५
२।।दोहा।।कृस्नचंदकीकथाकहिपाछेभोजनकीन।।पौढ़ेएपरअनेक
परतीनोमहांप्रवीन।।५३।।चौपई।।भएप्रातजागेबलवाना।।कृस्सनाम
सुखरहतमहजाना।।हरषवनरूपतसभामहिगए।।सकललोककउछाहे
भए।।करीवेनतीगोवनासपुन।।महापराक्रमभीमसेनगहन।।परहरष
केतमहांबलभारी।।मत्तभएतेंभुजफलियोउबारी।।अबबहमदासतहसा
गाभूषो।।सबसर्वसजुधिष्ठिरदयो।।पुत्रकलत्रसीसअपनोलऊ।।सकल
समपौकृस्नकहोतुऊ।।५४।।दोहा।।तनमनधनसर्वससकलकृस्नधर्मके
हेत।।गुहिहीनोहैसकलघहपुत्रकलत्रसमेत।।५५।।चौपई।।बहुरोपहरष
रीसअपनोअन।।हयकृतकाजतिराजंनुधरत।।आज्ञाकरतभएपोराजाते
व।।हेऊंहंसोसापुरीवीचसब।।चारवरननरनारसकलजनन।।बालकहरू
नकनहर्षतमन।।सकलबलहिहलनउरकोंगव।।अलंकारतनसाज
महांक्व।।हयगजरथसाजऊसभसेना।।अस्रसस्रसंगबहुविधलेना
रवपहेबरस्रतनअपारा।।हीरामणिमुक्ताहलसारा।।५६।।दोहा।।सक
लसमाजकरतभएपुरीप्रजासभलोक।।इहइमातजुवनासकीकीयोना

ज॰ म॰ भा॰ ५२

रतिहहमोग॥ ६४॥ चौपई॥ पक्षोन्रपतह्लवेगमहाबल॥ कछोमो
हिजननीगजपुरचल॥ आपालेहवेगउठधायो॥ हरषतनपहववभा
षहनायो॥ चलहुहमारेसंगकृपाकर॥ दर्सनकीजैकृसानुधिछिर॥
चलहैंसकलनगरनरनारी॥ राजाप्रजामुदितहितधारी॥ चलहुवेग
हरिदर्सनकीजै॥ अपनाजनमसफलकरलीजै॥ कीजेश्रीगंगाइसना
ना॥ दानपुत्रबहुकरहुविधाना॥ ६५॥ दोहरा॥ मैंनचलोंगीसंगतुम
मनवचक्रमजियजान॥ सुफलहुनीहैलछबहुकाइनजैहोंआन॥ ६६
चौपई॥ जबतेंपतिपरोषसुरभयो॥ बहुतलछसुफकोंटगयो॥ सोधन
दियोउधारसुरूसभ॥ सोवहुकैसेंकाइजाहुअब॥ इतनीठोरनवास
हमारा॥ जहांहोतधननिगमउचारा॥ जहांनजाउनहांहरिसेवा॥ परसें
नाहिनदेवीदेवा॥ जहांकथाहरिकोगुनगावहि॥ जतहोमहिजभोजन
पावहि॥ जहांहोतपुत्रबहुदाना॥ गंगादिकतीरथइसनाना॥ ६७॥ दोहरा॥
मैंजाऊंनहिठोरइनतुमकोंआज्ञातात॥ धनअपनोकाढेनहींमसक
होयहवात॥ ६८॥ चौपई॥ जहांहिजबरउपदेसवनावहि॥ सोकूपरप
रपंचमिटावहि॥ मैंतोरहोंघरधारादेऊं॥ कबकपदकरहिगनालेऊं॥ पद
जियजानधर्मनहिकरऊं॥ उत्रकियेमतश्रीत्रहिमरऊं॥ कलवहूधर्मसु
नोनहिश्रवनन॥ लोभमोहललचानोमोमन॥ मातपितासुकृधर्मन
कीनो॥ पतिकोपुन्यदगननहिदीनो॥ अबहौंहहभरहौंताता॥ धर्मकि
येकैसेंकुसलाता॥ ६९॥ दोहरा॥ जाउनतुमरेसंगमतनकहोन्रपतकोंजा

३॥ जीवन धन का हेत नहीं कछु पितन कों मम आप ॥११॥ चौपई ॥ यह वच सु
नत वेग फिर आयो ॥ सकल कहत तव नरेस सुनायो ॥ यह वच सुनत नरप
न मुसकायो ॥ सुतन समेत जननी पहि आयो ॥ जुग कर जोर नरप तब वच क
हई ॥ पुन पुन चरनन मात न केग हई ॥ चलहु मात नरेस न हरि कीजै ॥ इं.कल
माग सुकृत वरनीजै ॥ मेरो वच मानै मात जव ॥ वेग चढो रथ के ऊपर स्य
व ॥ सुनहो भोली मात रयानी ॥ दर्स विलोकहु मात रंगपानी ॥१२॥ दोहरा ॥ क
सनुधिष्ठिर जपन करि दर्सन पर्सन होव ॥ पह समान देषे नहीं जीव सुभा
गी सो ३ ॥१३॥ चौपई ॥ पुन मदु वचन रूप भाष सुनावै ॥ मत जननी मिय हित
उपजावै ॥ चमर वरन नर नार महाजन ॥ सकल विलोकन चले सामघ
न ॥ ककम निसुआइ सकल तिप पावन ॥ दर्स पर्स अवलोक हिरावन ॥ मेरो
ववन मान ले माता ॥ अंतें होइ सकल कुसलाता ॥ वेग चलहु अव गहर न
लावहु ॥ कोर पटारथ को फल पावहु ॥१४॥ दोहरा ॥ जननी राजा सों कहै मैं न
जाहु तिह मांहि ॥ वहुने धन कों लेव हीं फिर देने कछु नाहि ॥१५॥ चौपई ॥ तुम
सुत राजन का उरकत जावहु ॥ अपने पुर वैठे सुष पावहु ॥ वहु धन लाव अप
नी गकुराई ॥ यह विभ्रत कतिकों तजमाई ॥ मैं तुम संग चलों नहि रामा ॥
नहिं काजें परिपक अनाजा ॥ लेनाटे ना लोगन तें पुरु ॥ सो नहिं काजें सांच
कहे तिजु ॥ मेरे गृह हनव निधहि अपारा ॥ हरि लेवहि सम दास हमारा ॥१६॥
दोहरा ॥ कौन काम हम कू सलें अव युधिष्ठिर राइ ॥ तम घुरतन जकितन स
न हो मसर्व लोग दुष पाइ ॥१७॥ चौपई ॥ यह वच सुनत नके जोवना सनरप ॥ गहि

ज. ग्र.
भा.
२९

उसीरघवीचनराधिप॥ बांधीबहुप्रकारजननकर॥ रतनविला
पकरतहगजलभर॥ कप्रोहमांनहकोटरआगे॥ रवैचरिवइसनस
वलागे॥ जैसेंरूपनागमुइहिनकोरानी॥ ग्रीवपांउधरलेनहुजानी॥ मोंध
इचलीपतिनकीमाता॥ सीसधुननननहिलनकुसलाता॥ पांचदिवसभ
इवनिमांही॥ हरषतपांडवबसेनहांही॥ ५५॥ दो ६ रा॥ मेरकुसलनपधर्म
कोंजोवनाससंगलीन॥ हरिभेरामननमें धरीप्रगटसुधिछिरकीन॥ ५५॥
चौ ५ ई॥ जोवनासनरपअतिवलभारी॥ हुटेभेरवहुकरीमुरारी॥ धर्मरा
नभेटासबधाना॥ वर्नहुनावेंसकलविधाना॥ वारअगुत्तहस्तीमरमा
ते॥ सेतवरनमरष्वंधतुचाते॥ अयुतपचासभरेरथमुरन॥ दिअपरंव
ररतनसंपरन॥ रसकोहस्तीचमूचलरंगा॥ प्रमाग्रसंषचलीनरपसंगा
तिनप्यारीवहुभेटउगाई॥ कुलनिमित्रचलेहुरखाई॥ ५६॥ दो ६ रा॥ ग्रवदे
नअरुरसहटेवकोंनकुलभेरजियजान॥ प्यारीप्यारीलेचलोजोवनास
राजान॥ ५६॥ चौ ५ ई॥ प्रभावतीरानीहरषितमन॥ संगवधूरसमहसहदि
ननन॥ भेटउगाईविविधप्रकारा॥ रतननमिकरगजमोतनहारा॥ हीरा
मणिगणचीरअपारा॥ आभरनकनकवहुतविस्तारा॥ तिनपरअरु
भुतचित्रबनाए॥ नकसारकपिकमोरलिषाए॥ चात्रकहंसचकोरम
विरषग॥ लिषेषचित्रपुनतिहतिनगमग॥ रुकमनितुपरसुताकुंती
हित॥ प्रभावतीलेचलिनमुदितचित॥ ५७॥ दो ६ रा॥ पद्दरपकरजनीसहो
आलाकीनीसाज॥ हयगजरथरकप्रवहिचलअहोसकलदलसाज॥ ८८

चौपई॥बाजहिंदुंदुभिभेरिनिसाना॥नभमलसबहरषेबरषहिबाना॥व
लसुहृदतनचलेमुदितमन॥महाबलीगजहूपुरसोंजन॥बहुतनरिविम
मारगचलगए॥समैपायकरप्रापतभए॥जोजनवीसतुरहतुररहो।
भीमसेननृपसोंवचकह्यो॥सुनहुनृपवचनतोहिसुनावों॥अबआ
गेगजपुरहोंधावों॥भीमसेनआगेउठधायो॥निमषएकगजपुरगहि
आयो॥कुलचंदरअपनेमंदरतव॥प्रापतभयोपवनकोतनजव॥वर
नविलोकचरनकलपरानो॥मुदितरंकनिधपावतमानो॥बहुरयुधिष्ठि
रकेपगलागा॥दरसनदेषसकलश्रमभागा॥अर्जुनअरुसहदेवनकुल
नन॥हरषनकियोआलिंगनसभनन॥यहहवालोंनसमभाषसुनायो॥जोव
नासेनासंगलआयो॥२१॥दोहरा॥आओहैसेनासहितजोवनासराजान
पुत्रकलत्रप्रजासहितकुलदरसतविमान॥२४॥चौपई॥कुलचंदरनमरे
दरसनकी॥जोवनासरुविपगपरसनकी॥प्रभावतीताकीवरनारी॥
सषिपनसहितकियेंहितधारी॥दरसदेवकीकुंतीरुकमन॥उपरख
नाअविलोकनकोमन॥नमरीकपाहमहिक्रमलाला॥महाबलीभा
उगकोतालाला॥जीमोजोवनासजोधनबल॥सेनासकलकरीरनदल
मल॥बलकृपाकरनृपकेआगे॥नमदरसनकोंअतिअनुरागे॥न
होहरा॥पवनपुत्रयहहवचनकहिअधिकहियेंधरभाउ॥अश्वमेधके
पतकोयहपांचमोप्रभाउ॥८८॥इतिश्रीभारथपर्वतेअश्वमेधपकाध्याय
भीमगमनरहकनकहूंपंचमध्यायसमाप्त॥५॥दोहरा॥जोवनासआ

म॰अ॰ गमल्ह्योमुदितजुधिष्ठिरराइ॥ भीमसेनप्रतिवचकहै मनवांछित
भा॰ ल्हषपाइ॥१॥ सो॰ ॥ भीमसेनतुमजाइ द्रुपदसुतासोंकहुवचन॥ आ
२९ गेमिलहैआइ जोवनवासनृपनारिकों॥५॥ चौ॰ ई॥ नृपवचसुनतभीम
उठधायो॥ द्रुपदसुताकेमंदरआयो॥ प्रथमेकुंतीपगलपटानो॥ कु
सलप्रश्नतनमनलपटानो॥ पाछेद्रुपदसुतापहिंगयो॥ विरहभीम
कोंअतिदुषभयो॥ आदरकरनिजआसनदीनो॥ श्रीपतिआज्ञअनुग्र
हकीनो॥ भीमसेनकोगातनिहारो॥ अहत्यास्वच्छानीगहिमारो॥ ग
दाघातवद्भसुष्टप्रहारा॥ अंगअंगघतिलगेअपारा॥२॥ दो॰ ॥ मेसुबर्न
दृष्टकेतनकोकीनोकुसलसरीर॥ कैकैकीनाजुद्दनमकहुहततौनरगं
धीर॥५॥ चौ॰ ई॥ सुनद्रोपदीजहांसंग्रामा॥ तहांनहोतनेकविश्रामा॥ र
नमहिअस्वसाहवद्भगाता॥ होतप्रहारविदारनगाता॥ हमप्रहारक
रिहैंमरनतन॥ सत्रापुनिद्रुमकोंप्रहारवन॥ तमरीकहनाकुसलहमा
रे॥ कुसलकृपाकारनअनुसारे॥ त्यागहैंहमजीनतरंगा॥ जोवनासमेना
सुतसंगा॥ प्रभावतीनारीनृपकीवर॥ तुमदरसनकीप्यासहियेधर॥
५॥ दो॰ ॥ सुतकलत्रसेनासहितप्रजासुरंगमसाथ॥ जोवनासत्रा
योनिमिनदर्सपर्सतउनाथ॥५९॥ चौ॰ ई॥ प्रभावतीकोंआदरदीजै॥ कु
रसिंगारआगेह्वेलीजै॥ तुमकोंलाईभेटमहांवर॥ हीरामणीरतनप
टंवर॥ अभरनरत्नगजमोतिनहारा॥ सकलसमयीवह्रविस्तारा॥ मंदि
नरसमसहसनषियनसुत॥ प्रभावतीरानीसुंदरदुत॥ ताकोमिलिहे

सभसिंगारसजन॥ चलियेवेगग्रबहिबिलंबनजा॥ बरनुवनीलीजेनि
गसंगा॥ पहिरेचीरविविधबहुरंगा॥४॥ दो॥ कैसेंबनेसिंगारहमक
सबंरगहहोइ॥ तहांनजेयेभीमहून गहहरीभक्तनकोइ॥५॥ चौपई॥ बि
षईजनसोंनहिहमकामा॥ तहांनहोइकुसलविश्रामा॥ जोश्रीपतिकीग्राग्या
होई॥ भीमसेनकीजेकुनसोई॥ तिहग्रवसरग्रापनंदलाला॥ द्रुपदसुना
केगहनलकाला॥ पवनपूतचर्नैनहरिलागा॥ दर्सैविलोकसकलदुख
भागा॥ हरिकोमुखदखलोनसुनाये॥ तुमरीकृपाजीतहयसाये॥ जोवना
सहदयसेनसमेता॥ ग्रानोजोतीनधमध्वजकेता॥६॥ दो॥ तिनकोग्रादर
कीनियेमिलिपेग्रागेजाइ॥ जोवनासलभराभगनवेगहिदर्सदिखाइ॥१॥
चौ॥ ई॥ हेपहिलाकोग्रानारीनै॥ प्रभावतीकोग्रादरकीजै॥ नवबसनसाज
सकलभुवनीजन॥ रूपनारीकोंमिलहिमुदितमन॥ श्रीपतिकह्योसुदुप
दसुताकों॥ ग्रबग्रादरदीजैचलनाकों॥ पहरहुभूषनवस्त्रविविधरंगा॥
ग्रागेजाइमिलोसखियनसंग॥ तबहिसिंगारद्रोपदीकीना॥ कुसलचंदवै
केसमभवीना॥ कुंतीग्रादसकलहरषतचित॥ मिलनचलीसभप्रभावती
हित॥ ॥१॥ दो॥ कुसलचंदग्ररुपचननसुतग्रापधर्मजपास॥ प्रजासहित
ग्रागेचलहुमिलहिनृपतिजोवनास॥१२॥ चौ॥ ई॥ चलोजुधिष्ठिरग्रोप
तिसंगा॥ ग्रातननसहितलवकुसनसंगा॥ सकलकुटुंबग्रबन्नानरनारी॥ ब
लेमुदितमननगिरवरधारी॥ बाजनहैंबहुभेरिनिसाना॥ हयगजरथपा
रकचलवाना॥ ग्रावनलहननधर्मजनंदलाला॥ ग्रागेकियोग्रबथनलकाला

हषभधनश्रग्रनकरलीनो॥ जिहप्रसादहरिदर्सनकीनो॥ जिह
पाछेरूपभयोधरनपर॥ कैरंप्रणामकमलकोंउररइय॥३॥ दोहा॥ हय
कर्नेजश्रागेकियोयहविचाररूपजान॥ मारिजिवायोकृपाकररहर
सायोभगवान॥४॥ चौपई॥ जिहनिरषेपरकारनहोई॥ सोरवज्ञलघु
कहैनकोई॥ यहबालकप्राननकोराना॥ जिहप्रसादनिरख्योजगना
ना॥ कोरमुकलफलदर्सगुपाला॥ दर्सीयाइहमनतनिहकाला॥ कर्नेज
तीनलोकविख्याता॥ मारजिवायोपुरुषविधाता॥ ताहीतेश्रागेकर
लीनो॥ हंसनरंगमसाथप्रवीनो॥५॥ दोहा॥ हयनिमित्तहरिभक्तव
पश्चापकिरणधार॥ श्रवनहोतामुकुटदिपछिकैसंमिलनमुराय॥६
चौपई॥ जिहमुषकोंब्रह्माशिवनरसै॥ इंद्रादिकसपनेनदिररसै॥
सोऊदर्संसहजमुहिभयो॥ हयमिसकरुनाकरिइषगयो॥ पुलकुलहै
देखपतश्रनुरागा॥ श्रीपतिकोंश्रंगुलपगलागा॥ पुनहरिरूपकोंकंठ
लगायो॥ कोरमुकुटफलछिनमहिपायो॥ अफलनमुदितभयोमनरा
जा॥ श्रंकमर्सिहरिशिरनकाजा॥ हरिरूपधर्मजचरनलगायो॥ जोवना
सतनमनसुषपायो॥७॥ दोहा॥ सुनमुषेमाकोंरूपनलेशसोचरन
धुरार॥ धुनिलायोधर्मजचरनमनक्रमवचदिनधार॥८॥ चौपई॥ जोव
नासकोरूपनिजुधिष्ठिर॥ कियोश्रलिंगनश्रतिकरुनाकर॥ पुनजोव
नासविनतीकीनी॥ मनकरभेरकमलकोंलीनी॥ नमरीकृपाकृतारूयम
यो॥ करुनाकरिहरिदर्सनरयो॥ वइरोंदईभेरधर्मजवर॥ हयसमे

नरपहिरहमारभरु॥ अर्जुननकुलहमतिसहदेवा॥ दीनीमेरकरी
निजसेवा॥ पुनपुननरपतिकुसपगपरई॥ वारंवारदंडवतकरई॥ ए
दोहा॥ धन्यजननमहैआजहमपरसेचरनमुरार॥ जिहचरननकों
लक्षमीचांपतिवारंवार॥ ३१॥ चौपई॥ मुकुंदनपालोहयपइराजा॥ र
षोपुत्रहितयत्तसमाजा॥ मणिरतननकरलयोनजाई॥ सोमुकरर
सोनतछिनआई॥ तांमेंवहुविधधन्यतरंगा॥ हमकोंतातोजिमहि
प्रसंगा॥ जिहप्रसादपांडवसवदेषे॥ जनमहुफलहमआजतिनलेषे
धन्यभीममेचवरनस्तुति॥ धन्यकर्नगमुहिप्रानहिएरन॥ ३२॥ दोह
ा॥ महाबलीयहकर्नहितत्रयवरनसरससमान॥ ऐसोहोहरनप्राक्रमी
विनककरुणाभगवान॥ ३३॥ चौपई॥ कर्नपुत्रसमसरनहोई॥ भक्तभवि
छत्रवहिनहिकोई॥ जोक्षत्रीकेधर्मकहहनसभ॥ सोतपभधजमहिरे
छेत्रव॥ धन्यधन्यपांडवकुलश्रुतिवर॥ क्षत्रीधर्मगह्योहढतरवर॥
लगाव्रंगमपाकेजाऊं॥ यथासकलरनवलरिषुराऊं॥ ३४॥ दोहा॥
क्षत्रिधर्मरनजोमरहिहरपुरप्रापतहोइ॥ गोव्राह्मणहितजकरहीं
हरिपदपावैसोइ॥ ३५॥ चौपई॥ नृपकरतयहकुलरूपाकर॥ सुजसरे
नहरिन्दपनजुधिष्टिर॥ कोसमर्थहरिकोइपगहई॥ जोनरपगहैमुक्ति
फललहई॥ यहहरनमांहिजोउमरतपावहि॥ तिनकेहाथपरोऊफलश्री
वहि॥ क्षत्रिनवीचसुजसवढहोई॥ हरपरमुक्तिलहैफलसोई॥ हरिश्र
मत्रभोओवनासपर॥ मसलकहाथधरोकरुनाकर॥ पुनधर्मजके

चरनलगायो॥ नृपहर्षितनननमनसुखपायो॥ २७॥ दो॥ धर्मउव
ड्ढ्यारदहियोत्रोवनासहुनवान॥ चारधामतृगागेयुकैतमपांचयोस
ध्यान॥ २८॥ चौ॥ मैसीकुंलिहमारीमाला॥ मौंतमजानहुनृपविशाला
हमराजमरासर्वसगिरधर॥ सदासहाइकहोंतकृपाकर॥ पुनमहवेग
हरिचरननलागा॥ कर्नजनसभाषनअनुरागा॥ पहहघकेतमहाव
लवाना॥ अवरसहरनहिपाहिसमाना॥ नृपसुतननवसुलतनवडुकीनी
कुलचंदअवननसुतनलीनी॥ कर्नपुअइरिकंकलगायो॥ हियमहिय
हविचारगहायो॥ २९॥ दो॥ मोवनासममभक्रकोरनमहिलियोजि
याइ॥ वहहहरिनृपकोंसाथलेचर्नलगायोआइ॥ ३०॥ चौ॥ कुवियधर्मसा
भोरहवालहि॥ नांलेकंगकियोनंदलालहि॥ कृपाकरीउथकेनवलीव
र॥ कियोनुरथअमहरसुंकभर॥ वसैवनंतअनेकप्रकारा॥ आपहुलन
पुरीमंझारा॥ एकमासहरिवसेडरदपुर॥ निइपाछेहरिकह्यो युधिष्ठिर
चैत्रमासषुरगिामाजोई॥ असमुक्रतोहीरिनहोई॥ सोतोवीनीअववेसा
खा॥ मासरकाटसवीवअभासा॥ ३१॥ दो॥ तोलगईहोंहारापुरीमैहों
सुनहुनरेस॥ करस्कऊइंवद्दिसहिनलैफिरअैहोतमदेस॥ ३२॥ चौ॥ ई
अवतमहमनिमित्रनगणकीनो॥ मनवचक्रमसंसपनहिचीनो॥ हारा
वमिपुरकीनरनारी॥ चारवर्नसावोंहितधारी॥ तमघरहमोवनासमे
नासव॥ रसाकरहतरंगमकीअव॥ हरनकीजैहहश्यगोचर॥ मनको
उक्कलैरवहानवनर॥ प्रनिपालहहयकोंनृपनिसदिन॥ पतनहोइति

उपदेहदयचिन ॥ बहुरवेननमीकरीजुधिष्ठिर ॥ अबहौंकहौंकरोकरु
नाकर ॥ जबलगचैत्रमासपुनआवत ॥ कैसीकिरपाकरोप्रभावत ॥ २१
श्री ॥ छं ॥ सउ ॥ बच ॥ दो ॥ रा ॥ करुणोकुलमहनधर्मसुनरक्षाकीनेवाज ॥ बहुज
ननकरराविधिगोजिनसोंपत्रसमाज ॥ २२ ॥ चौपई ॥ सकलसमग्रीमध
कीकीजै ॥ प्रथमेवालस्वनारनलीजै ॥ कंचनअभरननिकरखरावहु ॥
पात्रसुकरवहुबहुबनावहु ॥ कुंकरदोइरचामरमाला ॥ पहिरावनकोंस
वभूपाला ॥ रतनबचितमनिनरहितविसाला ॥ रचरावहुधर्मजनकका
ला ॥ सुरभीकेभूखनहैंजैसें ॥ सिंगपीठसुरकीनदैनेसें ॥ मोककुकिय
वहियेतिहवेरे ॥ सभकरराखहुधर्मसबेरे ॥ २३ ॥ दो ॥ रा ॥ मोवनासममभ
मकोअलिआरसोंराष ॥ वर्नसर्वगुनिआसकीशक्तपुन्यरसराख ॥ २४ ॥
चौ ॥ पई ॥ पइवातेंकहिकसिधारा ॥ तिहपाछेधर्मजप्रणाधारा ॥ तीनको
सभुघरआेप्रमाना ॥ वारकुंइतिरूपकसमाना ॥ अबाकोरहविरक्तिभा
री ॥ रतकमहासरवलधारी ॥ ब्रह्मचारीहंसतरंगा ॥ नामहिविचरेअ
भुतरंगा ॥ जलभोजनइच्छानिजलेई ॥ ठाढेपवनतुलावहिकेई ॥ बहुप्रका
ररहाइयकरहीं ॥ तिहकरसभकाउजपहनुसरहीं ॥ २५ ॥ दो ॥ रा ॥ धर्मआस
सतुलाइकरचनेनलाग्योपार ॥ बहुप्रकारश्रमाकरीयहइवचकहेबनार
२६ ॥ चौपई ॥ भुगकरजेरभयोनपछाना ॥ शक्तोंकथाकहोहितवाना ॥ वर्न
धर्मसबमोहिसुनावहु ॥ श्रीगुषवेदव्यासप्रगरावहु ॥ इयपहन्नकीआग्या
नमकीनी ॥ सोतोहमनाथेधरलीनी ॥ अबमेधकतकउनसमाजा ॥ कै

म॰ आ॰
भा॰
६२

सें इरन है है काजा ॥ मरुतनरपत हूपम षकीनो जव ॥ पाक्षुधिवलाक्र
लमें आएतव ॥ आचार जनम षके ग्रहु भए ॥ अक्षमे धकर पुरनगए ॥ ३७ ॥
दो॰ ॥ परिनालन करत बहु तनवहु दीनो अग्नि अहार ॥ भयो अजीरण पा
वकहि दिपमहि कियो विचार ॥ ३८ ॥ चौ॰ ॥ पावक अक्षण वैद्य धनंतर ॥ ति
ह भाषो षांडव वन अंतर ॥ नाम दिष्यौषध विविध प्रकारा ॥ तिसहि जरा
वहु कुसल निहारा ॥ पावक षवनहि जरावन भयो ॥ इंद्र हि पै वहु विधदुष
दयो ॥ वर्षा पोषन गगन भैकारी ॥ ततछिन पावक कलिपोनिवारी ॥ अग
नि हार विद्दल अलि भयो ॥ नहां कहूं पार पघअगट यो ॥ द्रुतनुक
श्रीर वेनतीकीनी ॥ अर्जुन कों सम विधकहि दीनी ॥ ३९ ॥ दो॰ ॥ अ
र्जुन क्रापो धनसर निहोरनपोन प्रवेस ॥ परसत नकीनो वृंदरच कनि
रषत भए प्रसुरेस ॥ ४० ॥ चौ॰ ॥ मनवचक्रम हठवाजिय जाम्यो ॥ पा
वककोरषनन हिमान्यो ॥ अर्जुन षांडव वन कों जाल्यो ॥ नवकार द
वेरनिषधाल्यो ॥ तो तें संसारि रेद्रमारे ॥ मनमनवा वहु वैर विचारे ॥ जों
करधिषण हम हिन हिआवे ॥ वैसे वासत गय जस पावै ॥ वहु रोंवर्भिरहा
रहहसन ॥ उन विनकों वनि हैमुनरह यरुत ॥ महाहरी नव चक हैयुधि
ष्टिर ॥ हमें आसतु निमुन हो रपवर ॥ ४१ ॥ दो॰ ॥ मनवच क्रम जिय जा
नरूप मम वचनरूप मोहि ॥ कोर दंड पनिजो पुरुष सहास हायक तोहि
४२ ॥ चौ॰ ॥ सहजहि हिआवै समहहिरिरसन ॥ श्रीपतिके पंकज पगपर
सन ॥ कलाकपाश्रुतिलम परराजा ॥ तो तें होइ सफल सम काजा ॥ वच

नमानहियचिंतनिवारइ॥ कलचंरचरननचितधारइ॥ नुमरानत
करतनसरुनाथा॥ मधमिसकिलनेकोरमनाथा॥ श्वासिरमनहोवङस
विधाना॥ वरनधर्मसुनहोहेकाना॥ ब्राह्मनछत्रीवैश्यसूद्रपुन॥ तिन
केलछनकहोधर्मसुन॥ ४३॥ दोहरा॥ प्रथमेब्राह्मनधर्महसुनसमर
थीपुनिसाधु॥ सभजननिर्वैसाधुकरजानेकौनअसाध॥ ४४॥ चौपई
धर्मशास्त्रविनितहविपविश्रप्रति॥ हरिसिमरनकोंसदासुहितचित
परनिंदापरधनुपरदारा॥ इंद्रियनिग्रहरहतविकारा॥ ज्ञानध्यानसा
नाषटकरमी॥ साधेजोगअष्टांगसुधरमी॥ दानविधानरतउरधारी
महासंतसीतलविचारी॥ वङरसुनइछत्रीकेधर्मा॥ ऐसोनिगमब
नावहिकर्मा॥ तेजवानसराअतिराना॥ ग्रामजीतिकीरतविख्याता॥ ४५
दोहरा॥ पीठनदेहिरनविषेहरिसिमरनचितलीन॥ गोब्राह्मनहितरघ्या
वितछत्रीधर्मप्रवीन॥ ४६॥ चौपई॥ वैश्यधर्मअबसुनहुनरेसा॥ मैसेसंछति
शास्त्रउपदेसा॥ निरछोहीहियपरधावससनलिन॥ सत्यवचनव्यवहारधर
महिन॥ अपनेधर्मविषेसविधाना॥ गोब्राह्मणसेवेहविमाना॥ परदुखस
हिनसकैउरअंतर॥ वैश्यधर्मयहसुनहुनिरंतर॥ सूद्रधर्मलछनसुनका
ना॥ षतीबोवहिकर्मकसाना॥ गोब्राह्मणकीप्रजाकरही॥ कलप्रीनसुब
सच्चउचरही॥ ४७॥ सभवर्ननतेंउत्तमसोई॥ कमलापतिकोसुमरहिजो
ई॥ त्रिगुनसहितभनिग्रानमवाना॥ भक्तिअनन्यभजहिभगवाना॥ तिहि
समाननरअवरनकोई॥ जाकेहियेंकुलरतनहोई॥ तिनकीगतिमनतस

म॰ श्रं
भा॰
३३

भजैं न्यारी॥ जिन मन वच क्रम भज्यो मुरारी॥ कंचन लोह एक सम मा
ना॥ पुन्य पाप जिह एक समाना॥ मित्र कहू कसम लाभ हरावै॥ वैरी मी
त एक कर राखवै॥ ७५॥ दोहरा॥ ज्ञानी ध्यानी ब्रह्म रत नर जिन सिमरे भगवा
न॥ तिन समान नहि अवर को पापोपर निरवान॥ ७६॥ चौपई॥ अवर
सील लछन उचरई॥ जो भरता सों प्रीत न करई॥ सत्य धर्म महि तन न पर
नोई॥ पति सेवा बिन निहफल सोई॥ जद्यपि हरि सिमरन बिन लावै॥ की
र्तन कथा सदा मन भावै॥ दान पुन्य पूजा बहु सेवा॥ सदा अराधै देवी दे
वा॥ गंगादिक तीरथ इसनाना॥ धर्म नेम ब्रत करै विधाना॥ पति सेवा
बिन सकल निरारथ॥ कबहू न सिद्ध होत परमारथ॥ ७७॥ दोहरा॥ बि
न सेवा भरतार की धुंधेन रुकइ वार॥ बिरी जनम पुन पावई सकर स्वान स्र
गाल॥ ७८॥ चौपई॥ पुन बहु त्रिया मन लखन पावै॥ बहु तन जनम धर्म बहु दु
खपावै॥ हरि किरपा पुन पतिब्रत होई॥ तौ बहु दोष मिटावै सोई॥ पतिब्र
तनि यके लछन ऐसे॥ कहो निगम सुन नीकै जैसें॥ प्रथमे सील सम
रहावै॥ उठ प्रात गोविंद गुन गावै॥ पुन मे प्रभु भरता को दरसै॥ चांपै च
रन कमल निज पर सै॥ दासी भाउ टहल सभ करई॥ मर्दन मंजन बिध
श्रुतु सरई॥ ७९॥ दोहरा॥ जब लग पति रस नान न करै सुमरन करत गुपा
ल॥ तब लग भोजन न वरस कल सिद्ध करै न न काल॥ ८०॥ चौपई॥ चर
न पखार पीय जल कौं हावि॥ दान करावै जग पास मस्तुचि॥ स्नति स्नात रु
सौं अंगुनि बावै॥ सिंचन गंध पवन कपड़ावै॥ मंद मंद कर पवन झुला

वै॥३ठेपुरुषबनबनमलभरलावै॥बहुतफूलफललैलपटावै॥निसपु
निपावककवित्रबनावै॥५७॥दो॰॥पारब्रमातदप्रजंकपरपोढैपतिम
नभाइ॥वर्नैचापक्षीराकरैपतिकोंसुषदपजाइ॥५५॥चौ॰॥ईस्त्रीताका
रीरहैरैनदिन॥हमरनकरैकंतकोछिनछिन॥सोभरतापरदेससिधा
वै॥तौनितपनिसदिनपतिगुनगावै॥यहकोंतनपरहारनजावै॥भूषन
बसनअंगनबनावै॥काहूसोंनकरैकछुहासा॥कानरनैननअंगनहवा
सा॥मआइनकोंभोजनलेवै॥हिपरेआनसदापनिसेवै॥तजाउतनपर
पुरुषनरससै॥तेलफुलेलअंगनहिपरसै॥५६॥दो॰॥विभचारनसोंहि
ननहींससबचनसुषभाष॥पहविधपावैसुकृतफलपुनिहिमनअभिलाष
५७॥चौ॰॥कोटदानजनतपतिकराई॥दुराचाररस्त्रीयहधरई॥ताकोसुक
नकछुनलागे॥सकलकर्मतिहरेषतभागे॥जिहगृहनारपतिव्रतहोई॥
धर्मसंप्रनमानहुसोई॥पतिकोसकलपापतपहारै॥जिहगृहहैऐसीजुव
तीसोई॥धर्मसतीहैसोपतिनारी॥स्वर्गभोगवैअतिसुषकारी॥तनसोमा
बलिगननतनुआवै॥जिनकेनेमसुषसुस्वर्गसुषपावै॥५८॥दो॰॥ब्यासबच
नश्रुसंकाहैधर्मजनसोंप्रगटाइ॥जनमेजयपश्रबननमुनदकहौंकथासुब
पाइ॥५९॥इतिश्रीआरण्यपर्वतिखण्डभेदध्याय॥वर्नधर्मपुनब्यासकहि
षष्ठध्याय॥प्रमान॥१८॥नओनमगणेशाय॥चौ॰॥अबविधवाकोधर्मबतावै॥
धर्मजनकोपुनिव्यासबतावै॥बहुतजतनविधवातनराषै॥पुरुषनसोंक
बहूनहिभाषै॥होइसतीकुलगुरुउतमकराई॥नितसुमरनहरिकोंचितु

66

न॰भ॰ सरई॥संग्रहकरैनधनकीकांछा॥विनहरिभगतअवरनहिवांछा
भा॰ मराकंनहियआनलगावै॥वसेपितागृहलाजवढावै॥करेनमंज
३५ नवहुभूषन॥सकलसिंगारतजेकरदूषन॥ ॥दो॰हा॰॥दानकरैनि
तसन्तकोप्रेमहृदेपरभाउ॥विधवनतपनाग्रजनकरैविनवेसुमकउपाउ
॥चौ॰पई॥गवनकरेतीरथइसनाना॥चंद्रायनव्रतधरेप्रमाना॥नाभार
मलभरहिनयगृहरैवै॥दलफलसहितसीनकरसेवै॥हरिविसंध्याहम
नपहिचानै॥परनरपितापानसमजानै॥हरिमंदिरदरसननितजा
वै॥श्रीपतिसुमरेधर्मदृढावै॥कीर्तनकथासुनेमनहरषत॥दानक
रेसभवस्तपतिनिमित॥मारनजेइंद्रियनिग्रहतन॥मनसाधेविध
वातिपलवन॥३॥दो॰हा॰॥सदाजगावैआपकोंगगनसतीजिमहोत
ताकोदुषहैएककछिनयाकोनितउयोत॥४॥चौ॰पई॥नहनितुवति
विधवानवहोई॥रसवसपतिसंगजरेनसोई॥चंचलमनअनेगरस
सारा॥हियलालचपरपुरषविचारा॥पतिसंगसतीनभईअभागी
परमारपतनमगअनुरागी॥परघरभ्रमनछिनठहरावै॥सदाकुछ
मनलोगहसावै॥वारवारभ्रमेपरसितसुष॥भ्रमेअनेकजन्ममनमनी
दुष॥५॥दो॰हा॰॥ऐसीविधवानारहैपरनरनिसोंप्रीत॥सानजनमभो
गेनरककठुटिलनतनभयभीत॥६॥चौ॰पई॥जोनिसदिनीकीपुनिपावै॥पु
नितुनिजोनिअनेकधमावै॥इपजैविनसैस्यावेजाई॥पापानसामहां
दुषपाई॥जोनियघरनलकनत्तुतहोई॥ताकोभूलनत्याहोकोई॥रसना

स्याम स्याम नाम जिद ॥ अंगुलि चरन धरन परस हित निह ॥ याहू तहीप
तिको सघ करहीं ॥ बहु रोग इके सभ मष हरहीं ॥ तालिय को विसवास
न कीजै ॥ मन वच क्रम सुवनन मुन लीजै ॥ ५ ॥ दो० ॥ भली होन कों अनुस
रै चहै विना परजाइ ॥ तज प्रतीत न कीजिये त्रियाचरित मन लाइ ॥ ५ ॥ चौ
पई ॥ विभचारन त्रिय के लषु न सुन ॥ पर नर हे विदु सन न गावन गुन ॥ कं
डु कै रै श्रवनन न जंभावै ॥ नीवी सिथल उदर दिषरावै ॥ कंवहिं ठां पक
ववदन उघारति ॥ रति इत्तास मनु मोन विचारति ॥ बिन कारज पर हार
फिरै नित ॥ सैरंधी मालवी कै रैहित ॥ नरी सतिका हत कर्मी जिन ॥ विस
हित प्रीति करै ह चित्र सों तिन ॥ पुन विधवा दासी संग प्रीता ॥ तिह तिय की
नहि करहु प्रतीता ॥ ५ ॥ दो० ॥ तारति समै सुनार कों पुरुष नरे रित दान ॥
महा नरक सो पावई उचरन वेद पुरान ॥ ५ ॥ चौपई ॥ ताजनीत यह नरप मन
लीजै ॥ रन को संग न कवहूं कीजै ॥ निंदक चुगल गुवारी जानहु ॥ नसकर
मदपानी पहचानहु ॥ इनके कहे नरपत जो लागे ॥ ताकी जाति जाति पुर
भागे ॥ राजा इष्ट मंत्र मन होई ॥ प्रजा नास नहि षल है न कोई ॥ महा प्रसन्न
धिष्टिर भयो ॥ व्यास वचन सुनन सभ दुष गयो ॥ पुनि नरप वचन व्यास सप्रति
कहई ॥ कमला किह विध थिर रहई ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहइ व्यास मुनि धर्म
गृहस्थी के सें थिर होइ ॥ निह विध थिरत पावहीं कहहु कृपा कर सोइ
॥ ५ ॥ चौपई ॥ कहै व्यास सुनि सुनन उनु धिष्टिर ॥ इह प्रकार कमला रहइ थिर
र ॥ जो नर धर्म दया नित करई ॥ ब्रह्मचर्ज मन वचन उचारई ॥ तुराभलास

नं॰श्री
भा॰
३५

मनमेंहरिध्यावै ॥ संध्यादिकसबमनचितलावै ॥ सुचिसंजमसुभाहरि
सेवा ॥ सदाभुरापैसेवीरेवा ॥ सबैपितामातवरधाता ॥ भ्राताख्यजमूलैकु
सलाता ॥ परधनपरदारादिकत्यागी ॥ नहींकुरोरहरवसहाअनुरागी ॥ ४३ ॥
दोहरा ॥ जहांकथाभगवानकीकीर्तनकथाविचार ॥ तहांनिवासरमाह
थिरजहांकलमनससार ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ जिहग्रहइमिपापनिवतनहोई ॥ तिह
केभवनलछथिरहोई ॥ जोउपकारकियापहिचानै ॥ क्रितीसाधनसुषद
बषानै ॥ पितरयाहविधहविसोंकरई ॥ रनसनमुषतनतजतनजरर
ई ॥ सुरावैवापीकूपतडागा ॥ गृहद्विजदानकरैअनुरागा ॥ गोरीव्याह
करावैहविसों ॥ वेदपुरानमुनैहितमहचिसों ॥ नितप्रतिदानकरेहर्ष
तमन ॥ सेवैस्मभागतपावनतन ॥ ४५ ॥ दोहरा ॥ संध्यारीपकउटेकरघु
हधनादिसंगहोइ ॥ नितप्रतिकमलाकोंकरद्विनमस्कारथिरहोइ ॥ ४६ ॥
सो० ॥ इहप्रकारथिरहोइरमातहांहरिकोभजन ॥ अबववर्नतहांसो
रमिहविधकमलानासई ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ अबवपहलछनकहोंप्रकासा ॥
जिहतेहोइलछकोनासा ॥ दुष्टातमापिसुनसहगलग्रति ॥ निसदिन
जिसद्विरुगोररमैंरति ॥ चोपरषेलकपटजिहआसा ॥ जिहकरकौर
वभएविनासा ॥ पुनपरंरवसनश्रुतिदुषपावे ॥ हारसवर्षश्रुपतलगा
वाधे ॥ परनरभोजनमदरापानी ॥ जीवघाततिनरपानस्वानी ॥ तिंरक
साधकरतग्रहभंजन ॥ कंचनहरिपरतियमनरंजन ॥ ४८ ॥ दोहरा ॥ रस
धानपलकहरद्विशाकाष्टसफलफूल ॥ अबमासासंक्रांतनहिदाम

करनतइषमूल॥१९॥चौपई॥जबहीअपनेमनलेंटरई॥कुछबोलन
लोभमिलकरई॥देषनसकेंचौरकीसंपत॥निसदिनलालचबसमन
गलंपत॥गर्वक्रोधबसहारिहीअति॥रहहिनारकुचीलअष्टमति॥
भवनकुचीलमलीनदिषावै॥असुचिकलहगृहसोकबढावै॥पति
कीआज्ञानारिनमानै॥कबहुनहरिकोनामबषानै॥लिषविनकागअ
मेपरहावै॥कुरेकेसकुचसांरुसबावे॥२०॥दोहरा॥विभचारनलछन
सभैनीचनारिसंगप्रीत॥मालननाइनमिलापनीहासिनसोंरसरीत॥
२१॥चौपई॥जहांवैवेतहांघोरेधरनी॥पगनपषारैकुटिलकुवरनी॥अति
मवककवलगलोरेनिमहाषा॥बसनमलीनरहषीअतिमाषा॥बार
निद्रासंध्याकोसोवै॥सूरजउदेउठेधनषोवै॥वैठरसोईऊपरहसे॥पुनऐसीमुव
करेलछमीतिहनसे॥जिनपुरुषनमहियहगुनहोहीं॥जिनमहियहलछनपरका
मीग्रहसोंहीं॥तहांलछनहिकरेनिवासा॥सुनकमला
सा॥२२॥दोहरा॥ऐसीकथासुनावतेवीनमपदसमास॥मरुतनरुपतमधकीनाजैसें
विधभलीधर्मजमोषेआस॥२३॥चौपई॥विधवत
वर्नेसुनावहुमुनिवरतैसें॥हयपरकृतनिरानवेहुरनकीने॥इंद्रभयोअतिसो
दानदिजनकोंदीने॥बहुरकियोक्रतकोअरंभजब॥तुमहिविचारोगुरुमनमांही
कहियेंतब॥आयोधावकबहुरुसतिपांहीं॥ताकोजारनिवा
जैसेंपतमहांअजुसरई॥निश्चैसुर्गराजबहुकरई॥तबहिहहसत
रनकीजै॥यहहमराकारजकरदीजै॥२४॥दोहरा॥

नं.श्रं
भा.
३९

आरयो मकूलनरूपन केपास॥ कियो निवारण पत्र नेंक हि वहु कथा प्रका
स॥ ४५॥ चौ० ई॥ जिह विधि मष नराम नेकीने॥ सो विधि सुन नरूप वहु प्रवी
ने॥ जोजन तीन रचीमषसाला॥ भूगन कुंड मधि रचो विसाला॥ जोजन
ईट प्रमाण कियो है॥ धृत जौ तिल आहुती दियो है॥ निगम वेद मन धृत
जौ तिल समं॥ नित्य प्रति होम करत नि हसंभ्रम॥ इह्वी सहित महा
तविपावन॥ यज्ञ करत सुकृत उपजावन॥ कायो इह विधि वंत नसु
वाजा॥ पावैं वस्तु समस्त हस्ति वाजा॥ ४६॥ दो० ॥ लघु पुरी वन इहइ यक
रै नइह करत न पर्व चार॥ लाषा कूत नहरैं तनहैं विधि विवत नहि जनन विचार॥ ४७
चौ० ई॥ इत नेंत मराहू तवर है ई॥ आव हि मष जोगी हरि सो ई॥ पत्री लिष
इ पव इ निजि भ्राता॥ ल्याव इ वेग कुल कुसलाता॥ वचन सुनत धर्म नृप
अ राणा॥ तो वो आस चरन वइभागा॥ कह्यो भीम प्रति वचन उचारी॥ जा
इ हारका तहां श्रुरारी॥ सम परिवार सहित नंदलाला॥ चार वर्न संग
ज्ञाति विसाला॥ ताकंरव सभ सेना चतुरंगनि॥ सह तदेव की सुत नारकन॥
४८॥ दो० ॥ ननरपहूय पावक प्रबल लाव इ सहित गुपाल॥ पतिपा
लिष दीनी रघन अलो भीम तत काल॥ ४९॥ चौ० ई॥ पाति चलत मनमें
यह वांछा॥ रपन करन हे ही जिय कांछा॥ समा रमो ईको जिय धारौ॥ च
लो वेग हिय मंत्र विचारो॥ तो कहु भीम हरष हि आयो॥ हरि भुवन ला
मीसभजायो॥ पुरी प्रवेस भीम की नो जब॥ कास वंद मन मह हिंजायो
तब॥ श्रीपति जिय मैं सी अभिलाषा॥ हासी करों भीम के साषा॥ ५०॥ दो०

रा ॥ घनि हारी सों हरि कह्यो हारे देहु किवार ॥ भीम जान कु आरयो हां 72
सी रची सुपार ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ विनवत भीमसेन भगनी ने ॥ समार सोई को
निज वीने ॥ यह निय जान डनावल धावन ॥ मन आगे हरि भोजन पाव
न ॥ श्रीगुपाल त्रिभुवन संपिजावन ॥ भीम हहे की विधपहि चावन ॥ क
मोदे व की कों व चश्री हरि ॥ सिहर सोई की जो निज कर ॥ इक पंकन आ
लणावै जाए ॥ इनिय पांन जार चव हहराए ॥ अनिय पांन गइ हके मानस सव
सविप विर लागन अरचुन कुव ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ कनक थार रतनन नषचि
न लर्न करी राभूषि ॥ नाम धर्व्यंजन विविध वर भरराषे भरपूर ॥ ८३ ॥ चौ
पई ॥ भोजन व्यंजन विविध प्रकारा ॥ षटरस पूर अनेक प्रचारा ॥ षरन
श्राहक श्वरू हंडाका ॥ निंबू आदि साक सब हाका ॥ बहु प्रकार कीय रवनी
वर ॥ हिंगुल गाइ लवंग धूप कर ॥ धनियां जीरा हलदी अदरषुन ॥ जो जिह
नोग करी तिह संजुत ॥ कवि रचाह मिल इलाइची पुन ॥ जावत्री हरि
रसुरवा डुगुन ॥ पापर हेव रसुषन तलेवी ॥ भरराषी ढिग कनकरि
केवी ॥ ८४ ॥ दोहरा ॥ दाडिम रस आवरेस रस गोरे रस इक ठौर ॥ मिश्रर
धमिमरी सहित फेली अलि सिरमौर ॥ ८५ ॥ चौपई ॥ बरे अनेक प्रकार
वनाए ॥ कडुक तेल रविकांजी पाए ॥ कोज दाडिम रस वीच मिगाए ॥ को
कमगार धमहिल पटाए ॥ पेठे पाकं विविध विध साजे ॥ सुंदर षुतनस
मग्रमत विराजे ॥ संदर सोही घृत मिसरी जुत ॥ आभा कुंदर हंड वर्तलड
ने ॥ सोहालिका कपूर कक डइति ॥ मोहन भोग कचौरी विधवत ॥ कीरपा

73

जं·भ्र· कवरविविधप्रकारा॥सिषरनलाडूसुगंधअपारा॥२४॥सो॰॥छीर
भा· सिलापुलषककरपाकसिद्धसभसान॥बडेकटाहनमहिरचीअचवन
६७ हितजडुराज॥२५॥चौ॰६॥बहुप्रकारषोवामिसरीयुत॥नालिकेररमे
वासंगयुत॥षुरमाकसिद्धकीनेघृतअंतर॥लोनमिरचनिंबूरसभी
नर॥नारंगीकेलासुंदरफल॥अतिमुषवासकरनकलसीटल॥थेजन
अवरअनेकप्रकारा॥वर्ननवादेग्रंथअपारा॥निर्मलजलवनसारसु
वासा॥अचवनमिटतजननमकीप्यासा॥जलअचमनजलसीतलअति
कोकविवर्नसकतअसीतल॥२६॥सो॰॥बहुप्रकारबंजनवनेसिष
रनिषटरसआर॥रचेकमलदिनदेवकीजिह्वाजनतअपार॥२७॥चौ॰ई
करेकमलप्रतिवचसतभामा॥आजकिवाबहारकिहकामा॥षट्रुचविंज
मैंकबहुननदेषो॥भोजनसमैकिवारनपेषो॥कहोकमलहरिसनभा
माहन॥समेरसोईसिद्धपाकयुनि॥तुराभलाकोभीउनआवै॥तांतेभो
जनसोभनपावै॥बैठीहैंदेवकीपाकपर॥टहलकरतपटरानीहरिवर
नामवतीसतभामारुकमनि॥अरुलछमनाविभषनअभरन॥२८॥सो॰
॥धजनकरहिअमरदरदिश्रीपतिकोंसिपचार॥करकंकनकल
धुनकरतपगनपरभनकार॥२९॥चौ॰ई॥चारनाइकासजसिंगारा॥
अभरनचीरअनेकप्रकारा॥आएतिइअवसभहारेपर॥भीमसेनव
लवंरमहाबर॥कहेहारकिवारविचारे॥पवनपुत्रतवबचनउचारे॥हु
मतनकोइनउतरकहै॥आनाकमलमैंनहैकरहै॥श्रीपतिवचनउचर

गहावै॥कहैअरवरअतिभीमसनावै॥आनअनूपवनीसिषरनअत॥
सुधासमानस्वादअरुभुगत॥७३॥दो॰॥श्रीपतिसिषअत्रवचकहैअव
इवेगरसोइ॥पुनपुनभीमपुकारहैउभरहेतनकोइ॥७४॥चौ॰॥अति
सुंदरहैवहुपकवाना॥षांवअरुचारनअवरसमाना॥कवहूनअैसेपाक
वनेरुचि॥अैसेसवंजननपायवनेहच॥पवनपरसपरहरिप्रगटावै॥कहै
अरवरकोंभीमसनावै॥कवहूंहरिमुषकोंचविराजै॥सवनसनभीममहां
रिसपावै॥सतभामाइहविधपहिचानी॥कसनकोहरहांसीवानी॥अव
हांकरोंकसनसोंहांसी॥यहतोहैगोकलकोवासी॥७५॥दो॰॥हरिसोंस
तेभामाकह्योसनवचनसनमोहि॥अनहूंहछुमिटीनहीवालपनकी
मोहि॥७६॥चौ॰॥अवगोकलननसरागहरहहतै॥सनहरिचरितलाज
पुअकहहै॥माषनचोरहूपटपिछौरा॥ग्वालनसंगचरावनवाका॥नि
सहितप्रमलनिकुंजनवामा॥नेकनपावतसहषविश्रामा॥नसमनमयक
रहैतनमाषन॥चोरीकरतनकाहूदपिताविन॥सोवतनलगसाहिनरा
मी॥ग्वालनवछनवमसरासंहानी॥७७॥दो॰॥औरउठोरसननमोलमरि
परयोअवरकेहाथ॥माषनचोरनिहारकैवांध्योजघलसाय॥७८॥चौ॰॥
बालपनेमैंअमितदुषपायो॥वैनभावनीतमविसरायो॥भीमसेनहारेवर
आयो॥कतिकोतमहिकिवाररहिवायो॥अवलौभषीरहसहसारी॥नय
पिपायोराजमुरारी॥नंदभवननतमरूपनाकडैया॥काकउरावनतमगल
मनमैया॥जोतमहोतेपरमउदारा॥गहीभीमसोंकरतकिवारा॥नितय

ज॰ ग्रं॰ भा॰ २८

तिन्हुबनितनकोमगरोकन॥मांगतहानमटकियाफोरन॥४८॥कुछक
भातन्हमरोभोजननन्व॥पुहिनहोनपावनमाषनजव॥अवदेवकीन्ह
त्यारीमाता॥षटरसभुंजनइअनिकुसलाता॥बालपनेतुमकुपतामहां
श्रति॥अवलोगईतिन्हत्यारीवहमति॥सांचाम्रुषकरभोजनपावहु॥आ
वनभीमकिवाररिवावहु॥अवतुमराजरीनजडुराई॥बालचरित्रहिये
विसराई॥जवतेंभेगोन्दपतिगुपिछिर॥तवतेंसीखोराजरीतवर॥४९॥
दो॰॥आपषानहोपेटभरहमकोंदेननकाहि॥हमकाडीजननतक
रहिसेवातुमरीमाहि॥५०॥जै मनउवाच॥ चौ॰ पुई॥जैसुतनकहैहतनोजन
पेजा॥अगनतकरहनसकोतेजा॥तिहअवसरविहसेहतनस्यामा॥वाल
चरित्रकहेसतभामा॥वालपनपौंगयोकिसोरा॥षेलक्रियोव्रजजननसि
रमोरा॥जोचरित्रयहहतनेहनावै॥मुकहोइतननहरिपरपावै॥सतभा
माकेवचनहतनेसभ॥भएप्रसन्ननेंदननेंदनतव॥कहिमुसकावचसतभ
मापति॥हमहूंहुभकर्मकियोजसमति॥५१॥दो॰॥कहेवचनपुनदेव
कीहतनसतभामावात॥कौरीअैसेवचकवनभाषतहमरेतात॥५२॥
चौ॰ पुई॥कतिकोवचनकठोरउचारहु॥विधमानहमरेनविचारहु॥मा
तपितानाकोसविधाना॥सोतिहचिंनसराकसाना॥जोरिनगोकलमें
हरिवीते॥सोहमषविसरतनाहिनजीते॥नमहुपावहतनकरीप्रनपाला
हननहिविसरतगिरधरलाला॥नदपितहांराजसुषविलसत॥वृंदा
वनसिषकवहुनविसरत॥अजाहिकसनकाहिकधावत॥करतकव

मनपगनमहिपावन ॥५३॥ दो० ॥ सुनसनभामावचनयहहोतमधुव
नकोतात ॥ नारायनसाथाकोंकहैंयहीभएसात्यात ॥५४॥ चौ० ॥ यहीउ
रुघपुरनभगवाना ॥ ताकाआटसंतनहिआना ॥ लोककुवचनकहेरन
संतरा ॥ श्रवनसनेसभभीमनिरंतर ॥ मैंहांसीपुनकरोंगुपालहि ॥ कहों
चरित्रप्रगटनेंदलालहि ॥ यहविचारमनमेंठहराथो ॥ हासकरोंहियहर्ष
वठाथो ॥ श्रीगिरिधरजियकीसभजानै ॥ भीमसेनजोहियमनकानै ॥ स
मदूकथाजनमेजयपाई ॥ अश्वमेधकृतसभमध्याई ॥५५॥ दो० ॥ त्रि
श्रीभारतपर्वलोआश्वमेधजाना ॥ आयसपरमोहासरसदहकन
दरनस्थान ॥ ॥ जनमेजयपडाच ॥ चौ० ॥ सुनरूपजनमेजासुविधाना ॥ स
मेभामापुनिवचनवखाना ॥ सुनदूरेवकीहेविवकाना ॥ जोभाषनहैवेद
पुराना ॥ यहीकृष्णहेपुरुषपुरातम ॥ विश्वरूपविश्वपरमातम ॥ पूरनब्र
समकसमात्याता ॥ ताकोतुमकहतीममताना ॥ प्रथमैलमयहवचनस
नाथो ॥ पाकेकृसनअत्यठहराथो ॥ तमतोवचनसुखकरपाथो ॥ त्रिभुवन
पतिहरिसुनकरमामो ॥५६॥ दो० ॥ आपैकरनकरतनसकलहैअलिमनि
हकाम ॥ भवनचतुर्दशसरमरमोयहीजगतमाराम ॥५७॥ चौ० ॥ यहलोलीम
लोककोताता ॥ पाकोकोऊनाहिपितुमाता ॥ व्यापकसर्वसर्वतेंन्यारा ॥ अ
गमअगोचरस्वपरअपारा ॥ धुवभीभारउतारनकेहित ॥ जनमति
घोलमहंदूर्वलचित ॥ भक्तउधारनसुषदपमावन ॥ कोउपततनकीने
हलिपावन ॥ हमवचभएपसनमुरारी ॥ ततभामामापरकहणाधारी

ग॰ अ॰
भा॰
३५

कुंआरथहै हारपवनसुत ॥ ठाढो सुनेवचनसभअवहधुन ॥ २ ॥ दो० ॥
कहै देवकी सुनवचसतभामा कहि नोहि ॥ हारे काहे पवनसुत नअब नि-
अवर्जे जियमोहि ॥ १४ ॥ चौ० ॥ ई ॥ ताहाभीमहारइषपावत ॥ कुंआरथी
घकिनमगधावत ॥ करुनाकरिहरि भवनबुलावइ ॥ षटरसभोजनन
देतरुपलावइ ॥ सुनवचकसमौनगहरहई ॥ काहू सोमनभेदनकहई ॥
तापरलेरसननषरकावै ॥ सुनसुनभीममहांरिसपावै ॥ परेपकोरे अ-
रुपकवाना ॥ हरकी भरहिमिष्टपकवाना ॥ जिहभोजननतैं सबदहोनअ-
ति ॥ भीमहिसुनायपावननइपति ॥ ५ ॥ सो० ॥ स्वादुलिपुनपाइए
वरिभीमसुनारकै ॥ दहीह धतरकापपुनहरिभोजनमसकरत ॥ ५ ॥ चौ-
पा ई ॥ ताहाभीमहारसुकलीनी ॥ षहहांसीसुजसोंहरिकीनी ॥ जेउतठीती
कौंपंकननव ॥ षटरसभोजननरुपतभषसभ ॥ नवहहरिकहोकोनहारेप
र ॥ छोलकिवारउहारइदगमर ॥ देष्योभीमसेनकौं श्रीपति ॥ किथोंअ-
लिंगनहरिहियदइधन ॥ पश्चानापकियोनवगिरधर ॥ अबहमउवेस-
कलभोजनकर ॥ जोइककिनरुपआगेआवत ॥ तोअहारमनबांछन-
पावत ॥ ४ ॥ दो० ॥ यंजनवनेअनेकविधअवही कियोअहार ॥ विनआघ
ननहिपाईयषटरसविविधप्रकार ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ पीछे काढरहीवहमारी
सोनहिलाइकभीमनिहारी ॥ देवइभाईभीनहमारे ॥ अबहीं भोजन-
लियोसकारे ॥ जोतुमरो मनहोइकाकपरा ॥ कीजेपानभीमकरुनाकर
जोधरसकइधीरनिजपाना ॥ पुनिप्रभातमधुंनइपकवाना ॥ सुनिहरी

वचन भीम निय धारी ॥ मोसों हांसी करी पुरारी ॥ मैं भी हांसी करों हलसा
ति ॥ ताको कहैं निगम त्रिभुवन पति ॥ ४ ॥ भीमसेन उवाच ॥ दो० ॥ हरि तुम
अपनो पेट भरहु मत कुआर पनो नाहि ॥ हार महं भोजन कियो सत तक लग
रहु मोहि ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ सब सब हार किवार निहारो ॥ वार वार हर रुषी
त्र तु कारो ॥ आगे किम हिन उभ रहीनो ॥ इहै विचार तब हि हम कीनो ॥
कैलस ही माला हुलन भई ॥ कैलक मनि जम पुर को गई ॥ कैधो भयो प्रघुप्र
काल वस ॥ कै प्रनि हहम महापी अवस ॥ वसुधा देन न देत प्रमाना ॥ कि
धौं तजीव रणा हर राजा ॥ जे तुम भरी संत तम तपाई ॥ महाराक सन उद
रसमाई ॥ ६ ॥ दो० ॥ तां तें हियो किवार यह लियो इकउ अहार ॥ तलक
मांगो उह विषें की तो पहो विचार ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ यह निपजान किवारदि
वायो ॥ कुआरपो भीम तुन आयो ॥ छाइ माइ मन सकल अहारा ॥ वड
उदर तुम मोहि निहारा ॥ तां तें हम को नाहि बुलायो ॥ अपना उदर भलें
लपनायो ॥ उदर लोहि अहांड समाना ॥ कहत हैं सब वेद पुराना ॥ तां तें त
मन हि ने कछु खावत ॥ तीन लोक जे पेट समावत ॥ वड रोंकी मीरां इमंडा
रन ॥ ताको है अब भोग अहारन ॥ ८ ॥ दो० ॥ कं उदर रलम यावत आपहि
कियो अहार ॥ कव हूं लपन न होत तम तो भुं वहु सौ वार ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ भोन
हि दें है लपन न हारी ॥ भक्तन कर हम मोहि गिरधारी ॥ भक्तन कर ले वार
न लागै ॥ ये विचार कर मो को लागै ॥ मोर हरी रुच वडी दिखावै ॥ मन में रन
हि उदर समावै ॥ वल कर भाजन के र पु फरयां तर ॥ तसो मो हिय हल्लान ति

म॰भा॰
भा॰
८॰

रंतर ॥ तुमराउ हरस्वनंतप्रकारा ॥ जिन्हतें उपज्यो सभसंसारा ॥ विश्वसक
लनिकसीजिन्हमांही ॥ पुनिसभलयमेरहहरसमांही ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ भक्तनकी
योमोहिकोंहूदेविचास्नोपद ॥ कुंतीसुतनिजयजानकैंहुंदीकैइसनेह ॥ ५६ ॥
चौ॰ ॥ भक्तनकियोमोहिपहजियधर ॥ तुमराद्रुषपावैकुंतीकर ॥ नहि
सहिसक्योहुभहाकोदुष ॥ तांतेंमोहिउचारदियोसुष ॥ हुंदीवहहनभीम
हितसुनहीं ॥ महादुषितहैसिरकरधुनहीं ॥ तिनकोंदुषितजानसुहिरा
यो ॥ भक्तनकियोनहिनअभिलाष्यो ॥ इकतमजानकियोपहकाजा ॥
इकवहहैदिषिसुधिष्टिरराजा ॥ पितापांडुतवभयोकालवस ॥ हमबाल
कथनपालेघरस ॥ ५७ ॥ दो॰ ॥ बहीकियोप्रतिपालसुफरइकवहुधर्म
मराइ ॥ इकतमहारकिवारहेभोजनकियोअघाइ ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ सोतुम
वैसेधर्मदृहावहु ॥ भोजनसमेकपारचढावहु ॥ अभ्यागतकाकेगृहंह
मावै ॥ दीनअधीनभीषनहिपावै ॥ जोपैतुमसेदेहिकिवार ॥ कैसंचलैन
गतव्यवहार ॥ लोगकहैंगेग्रीषमिधेसं ॥ जोहरिकहैहैकरैहमतैसं ॥ लोग
करनैकहांपहिचानै ॥ जोअभ्यागतसमनहिमानै ॥ तुमतोकहहतेदीन
दियाला ॥ कृपताकर्मकिनकियोगुपाला ॥ ५९ ॥ दो॰ ॥ कैजलसकग
योसकलकैइर्षिकृस्नजान ॥ कहेहारनिसदिनरहतकंतसंदेमहाराज
६० ॥ चौ॰ ॥ वचसुनभयप्रसन्नमुरारी ॥ भीमसेनपरकरुनाधारी ॥ पवन
पुत्रकोंकंठलगायो ॥ हदकरुनाजलसोंनपनायो ॥ हसकरवीनोभ
सनाथा ॥ त्रिभुवनपतिअनाथकोनाथा ॥ विदगईतनपतनहकोररकीस

भा॥ हरि करुनाकर संक भलो भव॥ आदर करि हरि वचन उचारे॥ भीम
सेन तुम सगा हमारे॥ अर्जुन हलधर को वहु गोई॥ लागत भ्रात न्हारो सो सो
ई॥ २५॥ दो॰हा॥ हांसी करत प्रसन्न कुरु वहुरों हम तुम मीत॥ मन वच क्रम
निश्चय सदा हमरी तुम सों प्रीत॥ २६॥ चौ॰ई॥ अव उठ सीजै पाक कृपाकर
भोजन कीजे हिये भाउ धर॥ वहुरों भीम वेनती कीनी॥ त्रिपत भयो अपदो
समभक्षीनी॥ करुणा जल सों सिंच अघायो॥ जाग्यो वहर सभोजन पायो
श्रीतामान गयो रसोइ पर॥ जेवन अंजन सकल अंवन वर॥ अतिसुंदर
वहु विधि पकवाना॥ धरो परोस भीम सविधाना॥ पवन पुत्र आदर लप
तापो॥ कृस्न कृपाकर सव वस्तु पायो॥ २७॥ दो॰हा॥ मन भावत भोजन कि
यो लियो अधार अहार॥ तोष भयो जिय भीम के करुणा करी मुरार॥ २८॥
चौ॰ई॥ नाम कृस्न अरु भीम वैठे सभ॥ पतिया पठी युधिष्ठिर की तव॥
धर्म राइ के सुने संदेसा॥ हर्षित भयो त्रिलोक नरेसा॥ सभा मध्य भीम को
आन्यो॥ उग्रसेन जादव सभ जायो॥ नवग्री कृस्न अक्रूर वुलायो॥ उन्हस
वरकर वचन सुनायो॥ जादव कुल महि जे उग्र श्रेष्ठ वर॥ ते सभ भले दुहं का
रकपाकर॥ आता लेत अक्रूर सिधायो॥ उत्तम जदुकुल के सव ल्यायो
२९॥ दो॰हा॥ सभ जादव इकठे भए पतिया वांचत भाइ॥ हाथ जोर विनती
लिखी सभ नम्र युधिष्ठिर राइ॥ ३०॥ चौ॰ई॥ पतिया लिखी युधिष्ठिर जैसें॥ वाच
न भए सभा मध तैसें॥ जदुपति मो पर करुणा कीजै॥ हय करुनातह फलक
रइ हरघरी जै॥ सकल कुटुंव सहित परवारा॥ जादव कुल महा अरुवार

म॰ भा॰
५९

राजा प्रजा वर्णी ब्रह्मचारी ॥ करुणाकर गजपुर पग धारे ॥ चल्ल रंग नी
सेन लिय साथा ॥ आवइ वेग अनाथन नाथा ॥ कूल बरषा सों कहो रमा
पत ॥ अब हि नगर राकर इ विमल मत ॥ २२ ॥ दोहरा ॥ आता फेर इ नगर
महि चल इ सकल नर नार ॥ प्रजा लोग सेना सकल चल हि वर्न संग चा
र ॥ २८ ॥ चौपई ॥ गजपुर धर्मराज कुल साला ॥ चलहि सकल द्विज बुद्धि
विसाला ॥ समदर्सी त्रिकाल गउ वासी ॥ हृदय पावन षट कर्म प्रकासी
क्षत्री चल हि सर बल वंते ॥ टेहिन पीवे समर अनुरक्ते ॥ वैश्य चल हि ध
न पत्र महा वर ॥ मन चहिये विन नर पति रजु धिष्ठिर ॥ वहुरों चल हिं शू
द्र सभ साथा ॥ तीन वर्ण सेव हि निज हाथा ॥ जिह विध आग्या करी रमा
पत ॥ चले सकल नारद मन हर्षत ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ हल पर अग्रह व बहुरे
व कों आता करी गुपाल ॥ रहां रहो तुम हारका रक्षा करइ भुपाल ॥ ३०
चौपई ॥ पुनि यह आग्या करी मुरारी ॥ जो कक्कु रथ है मैं लक्क हमारी ॥ गज
रथ अंर रत्न सभ भर भारा ॥ ले संग चलि ये हर्व अपारा ॥ दान निमित्त अ
युधिष्ठिर राजा ॥ मन चाहै धन जन समाजा ॥ पुन आग्या कीनी नंद नंदन
चलहि वर्न चारों अभ वकंदन ॥ मिर कों चहिये एक कुसमाना ॥ सो धन ले
वै मो हि धजाना ॥ जो कक्कु वसत चाहिये ताकों ॥ दीजे मो हि भंडारे ताको ॥
३१ ॥ दोहरा ॥ गज रथ हय पय अरु मखु धन चाहै ले वै सो इ ॥ पसन वसन चा
गों वरन नो मिर मन सा होइ ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ लें वसु अरु कलाम शम्याने ॥ म
पमल नील कवन रंग वाने ॥ भांत भांत के रंग इ कूला ॥ वां रहिये स॰

भत्रिभुवनमूला॥ इतेअनेकप्रकारभंडारा॥ कोरिदियेनिहसमे-
मुपारा॥ संख्यावर्नेसकेनहिकोई॥जोजिहचहियेलेवैसोई॥वांटदि-
योसभलोगघनाना॥जोजिहजोगदियोपहिचाना॥ग्रभरनग्रघरथ
हिरदधनुषबर॥बांटदियोसभकोंननछिनहरि॥३३॥दो॰॥सुप
नकोटजातदबनारे चलेसकलदलसाज॥रचसेनाचलरंगनीमुरदसु
नवभ्योसमाज॥३४॥चौपई॥हेरापत्योगोमतीतटपर॥सजसेनाजुगन
ननिकसाहरि॥आपोअपनीकुलकीसेना॥वानककहीपरनतहिवै
ना॥नैमुनकहैसनदकुरुराना॥चलीसकलसंगकसमाना॥आ
यागाकजीधइवैयपुन॥कायपवलीयेभामईसमुन॥चलेसराफव
जारसहनारे॥भवसालीसंगभरेभंडारे॥चलेपसारीअहगठपारा वेल
दारघनजेज्ञहारा॥३५॥दो॰॥बाठीदारहमासकीअहतेलीजुनि-
कास॥धोबीअहरंगरेजपुन मोचीहटेदलास॥३६॥चौपई॥पनवाईकुं-
भरेमुकेरी॥सभकलीधनुसाजपिजेरी॥मगरकककगरुवाजदारपु-
न॥इलवाईमनियारभांडपुन॥कांचीगरनाऊसभजाता॥हरिसंगच
लीसमलसहनाता॥अहजोहरीलालवनजारे॥नहुवेगायनगुननननभा
रे॥चलेवजंत्रवनावनहारे॥तंनविलतसरीवनपारे॥कंदीजनजाचक
नवनारी॥हरषतचलेसंगगिरधारी॥३७॥दो॰॥पंडितज्ञानिपाध-
कचलतग्रहमानकेसाथ॥वेदजोतकीसकलगुनिचलेमुदितनर
नाथ॥३८॥चौपई॥राजनीतजैसेंचलआई॥चिहरालियोकटकजदरा

ज॰ पु॰ ई॥ संगचलो दससअयुतमहांवर॥ हंगहिरदमुकताजिनसिरपर॥
भा॰ रथअस्वकरभयेकनहिंपारा॥ चलेरंगनिसेगारदलभारा॥ जाइवकुल
८२ कीगनतनआवै॥ निरषैनैनहरिहरषबढावै॥ किनहूंगजपरलछव
माना॥ किनहूंपरअसवावसमाना॥ इकगजधजापताकनिसानै॥ ई
कअंबारनिसोंछवछानै॥ ४४॥ दोहा॥ किनहूं सिषरनिसानधुनकि
नहूंपरपचलंर॥ त्वनैअभूषनहंरिकासोभितकुंअसिंधर॥ ४५॥ चौपई
हयभलाषकितनेनहिंगनती॥ गर्धवभारभरेविधवनती॥ कितने
हैंतहंगजरथसंगा॥ जिनपरविलसनसरउमंगा॥ तरियनषिनिग
मधरिउराई॥ लखोसुरनहिंटेतहिंछाई॥ धरनअकासएकसमला
गे॥ निरषतकल्महियेंअनुरागे॥ फौजफौजकेवजनहिंनिसाना॥ महास
रजाइववलवाना॥ जहांगिरधरनहांसेनअपारा॥ मनवांछतफलदे
वनहारा॥ ४६॥ दोहा॥ पंथचलननिसकोंसकलउतरपरतदिनजार
हयकउपरअसवारहैभीमसेनजदुराइ॥ ४७॥ चौपई॥ समेपंथकेचल
तनिहारी॥ सवरीएकमहापरीहुभारी॥ निरषतभएअसहगुपाला॥ क
रभवहाइलईततकाला॥ भीमसेनकोंआग्याकीनी॥ वेगवहाइकरभ
परलीनी॥ पुनगिरपरीकरभतेंभूपर॥ महासंतापभयोतिहहूसर॥
रू॰ घोकरभपलोवनमांहीं॥ हियेंविवेककह्योवचमांहीं॥ हमतेंगिर
तउठीततविनपुन॥ लोगहसकहतवचनमोहिसन॥ ४८॥ दोहा॥ हा
सकरहुमिनकोंसदाजिनतनहियेंविलास॥ प्रथमकरनहरिकीभग

नकिरविषयनरसफास ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ भक्तमागजोऊगहैविषयरस
ग्रहीस्वारस्वारलालचवस ॥ मैंतोगिरौंकरमतेंभूपर ॥ गिरहिभगतनलि
तिनकैमीगत ॥ तेनरकबहूनहींगनपावहि ॥ भक्तिभागजिपतेंकिनरा
वहि ॥ जिनकेभक्तनहींजियमांही ॥ तिनकोंठोरहूंजगनाहीं ॥ वचनसुन
भएप्रसन्नगुपाला ॥ आगेचलनभएततकाला ॥ बहुरफूलेलीसौंचव
तीवर ॥ बोलीदीनवचनसुनमनोहर ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ सुनश्रीपतनहोंमगवि
घेघकनभईहौंनाथ ॥ तुमरेनमिनफुलेलसुफसीसढाघोसाथ ॥ ५६
चौपाई ॥ मगमहिमहांनपनगुनिग्रामा ॥ भरनपगनहींछिनविश्रामा ॥
करनफुलेलचल्योवहभूपर ॥ कीनेहरिकरुणाजुऊपर ॥ महांसुगंध
उठायोतमहित ॥ अंगीकारकरइहर्षतचित ॥ अर्घोमैंतहिविषेसुरा
री ॥ उतरपरेहिनकरगिरधारी ॥ लीनीग्रांणसरीरलगायो ॥ कोरसुक
नफलसुवलीपायो ॥ हिनकामनिकामानिहियेहरि ॥ बोलतभएवच
नकरुणाकर ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ वरमांगनतैसुफकोंप्रापतहोहैतोहि
यनविषेपरनकरोंसुनहनपारषमोहि ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ रथवनसुधिषि
रवीकनमाला ॥ सभनसुकिफलदेनविसाला ॥ चलेभाउधरनहनर
नारी ॥ सभकोंदेउप्रभैपरभारी ॥ बहुरचलीआगेसभसेना ॥ चलनतरक
उउरनकुरिनैना ॥ गिरतहूएकएककेऊपर ॥ महाभीरचलसकनन
भूपर ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ उनतेंहुलोंतनआपनकहोंफूलउठायेमोहि ॥ नानावि
धमालारचीपहरावनकोंतोहि ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ फूलमालकमलानना

जै॰ श्री॰ तसब॥ अंगीकारकरइपहरोसब॥ मनमहुगंधरवनकीबिदजावै॥ गा
भा॰ तबिनाबड्डजिपसहुषपावै॥ वनमालनकेवचनसुनतनहरि॥ ऊतरपरे
५१ गजहुंतेभूपर॥ सिंगारनानाकंठवनाये॥ भीमसेनकेउरलगाये॥
तोषमघोमालनिजिपमांही॥ कछोकलसंसयककुनाही॥ तुमकों
फलदेअंउहिकाला॥ नृपनजुधिष्ठिरकीमषमाला॥ ५५॥ दो॰॥ वड
रफलेलननारदकवचनकरेहप्रगटाइ॥ हमततनजारतवामततमक्ष
रकाहमहराइ॥ ५६॥ चौ॰॥ सवरीवंपेलनिवनमालनि॥ तीनोसहव
हसतवंटलालनि॥ वडइकहेवचनजुवतिनसोंइहि॥ करइहासतमषा
पहकोदर॥ नैमुनकहेमुनोराजाना॥ कहुमवचनसुनिजुवतिनकोना
थंवरगाहो भीमकोतनछिन॥ हमतीनोंकोंवड्डरिपववनतिव॥ हमरहै
हमईतमनैसें॥ तुमकोंवरहिमानजिपवैसें॥ हमतीनोहमकोंपतिबि
षा॥ मनवांछतभरताहरिदिषा॥ ५७॥ दो॰॥ वंपेलनिवनमालनीसव
रीजुवतीतीन॥ अंवरपकस्नोभीमकोहमकोंवरइपवीन॥ ५८॥ चौ॰॥
भीमसेनअपनेजियजानो॥ हमसोंहासवडइरहहिडिंवासो॥ वोल्योभीम
सेनइहीनारी हमतोरकवनवतीअनधारी॥ अंवरतनइवानसुनका
नइ॥ मोहरनारीपतिवनजानइ॥ हैराकसीरूपविकराला॥ मुजकोंव
रतीनानिहिकाला॥ जोवहहमरहवांतेसुनपावै॥ भीमअवरहडींगइहला
वै॥ ततछिनतिनकोंभतनकरई॥ मेकनकाहूतेवहहरई॥ ५९॥ दो॰॥
मानतच्यारेहतनहितसीषदईभगवान॥ जोतमतुजकोंपतिकरइस

नपावहु रूपहि चाव ॥५८॥ चौपई ॥ आगे एक नार गृह होई ॥ तिपद समरि लै
आवै कोई ॥ ताके गृह दिन रैन कलेसा ॥ सुष नासहि जिय सदा अंदेसा ॥ सो
तिभाव जियकों धव दावहि ॥ वैर कर हि मन मैं उपजावहि ॥ एक कहै हे द
सरी करैहित ॥ महां दुषित निस दिन ताकौ पत ॥ सो रती न जुवती जाके घर
झगरत रैन विहाय तिस दिन र ॥ जिह गृह ह एक नार ताकौ सुष ॥ वह इस्त्री
पत होत महां दुष ॥५९॥ सो॰ ॥ एक नार जिह पुरष के सदा सुषी तिह गेह
हंपति सुष विलसत सदा निस दिन वढत सनेह ॥६०॥ चौपई ॥ व रिष अैसे उ
सुष विचारी ॥ आगे जिह गृह दुहो तन नारी ॥ कै पतिकी सेव दुज वती जिह
सदा संतोष रहत तिय मन तिह ॥ पुरुष पट तन दुग हों वेदलाला ॥ जिह गृ
ह वुहती वढत विसाला ॥ सो तां सह इस एकसौ आता ॥ तिसकों मात सम
न की धारा ॥ गिरवरधरकों भरता कीजै ॥ श्रैचरग हो पुरुकन फल लीजै ॥ उ
नके गृह सम हि सकल समावइ ॥ रिद्धि सहत तासौं रतन हि पावइ ॥६१॥ सो॰ ॥
कृसम वरी रिद्धि राजकी कंन्या हटे विचार ॥ सो तन मम भक्तन ना करै रताकै सु
राय ॥६९॥ चौपई ॥ जो तन मकों वह भक्त न कराई ॥ पुरु पंच तन महरि सुत सर्ई
संवती सुव तिन की हरि लाजा ॥ करहि सुश्रा री गल अजराजा ॥ हमरे गृह
राक्षसी महांडर ॥ तमकों भक्तन करै कोप कर ॥ हम तो नहीं समर्थ देनगत
तमकी जे कमला पत कों पत ॥ जे सुन कहै सुन इक रूराई ॥ सुन वच इसत
घले सुक कराई ॥ सुने कथा ह द हृदय रमाउ ॥ इ पल तकों अश्वमेध प्रभाउ ॥८०॥
होय ॥ इति श्री भारथ पर्वणि अस्वमेध पर्वनि भाषा ॥ ध्याय अस्वमेधो पद कैसो ८

न.श्री. हंकनमनमुनमन ॥ ८ ॥ जै मनउपमा ॥ चौपई ॥ जैसे पुन कहै सुनउ कुरुरा

भा. जा ॥ जो चरित्र कीने मउ राजा ॥ हतउ आइ कस प्रतिभाषो ॥ आनत महाउ

५५ गहमपायो ॥ कहूं दृष्टि आवै नहि पानी ॥ कहो सु कीजै सारंगपानी ॥ आ

ताकरी नंदके लाला ॥ जहं जल तहां चलउ ततकाला ॥ है दिन पंथ पनहां

गलनीको ॥ करनिसान पुन चलहि तईको ॥ तादिन लोगन अतउ षपा

यो ॥ एक भकारी वचन सुनायो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ हृषभ चढी असवार सग

निरावरन पुकार ॥ भीतन मान इराजकी गोकल बछरे चार ॥ १० ॥ चौपई ॥

अंत अहीर भयो अब राजा ॥ गोप ग्वार तिन राज समाजा ॥ छाक भात भोज

नपदि वाने ॥ धेनु चरावन की गत मानै ॥ लोग मरत नमगमहि अति श्राम

कहूं न करत नेक विश्रामा ॥ जिह नरपा को राज दियो है ॥ तिह न हिदै हरे वि

चार कियो है ॥ ग्वाल भेष रषि रूप वरायो ॥ ताको सिंघासन बैठायो ॥ तिंह के

रत जल मगपइ चीजव ॥ हृषभ पीठ परलाग रहीतब ॥ ११ ॥ दोहा ॥ सकहि

गत रनदि सब भटेंमतन करए के लोग ॥ वकत नहै ताते सकल तिहतिय के

जियसोग ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तिह छांव रहत लोग नुरगण ॥ हास करत सभ वाहे

भए ॥ वचन कहत तिह सों सभ कोई ॥ जिह पति कर हुइ तारै सोई ॥ जो सेमा

महिहो नेपारथ ॥ वेग उतारत पुरवत सारथ ॥ श्रवसे नाम हि भीपवली

श्रुति ॥ तुकहिं डकारे कारहि तिमसहिपति ॥ आगे दुलो महाउष भारी ॥ पुनश्र

पहास विथो नरनारी ॥ दहन करत न्याकूल है गई ॥ अपने हृदे विचारत

भई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ मगमहि विंदावनकी करो मोहि निपजान ॥ तांतें इव

पापोअधिकमनलागीपछतान॥४॥चौ०१६॥मनवचक्रमयहग्यानवि
चारी॥निंदाकियेंभयोदुखभारी॥लोगकहेंनिश्चैपहचाना॥हरिदुषन
कैसेंकुसलाना॥नाहिंघोरअगरेनेंरनंदन॥भीमसहितत्रिभुवनदुषकं
दन॥निरषतकियोप्रणामनारी॥तिहिं॥लागरहोनतनहषभयोतनिहं॥
रोवतभईअधिकउछियारी॥पुत्रकोंराषलेहुगिरधारी॥महिमातुमरी
अपरअपारा॥मैंनहिंजान्योमरमतिहारा॥५॥दो०॥१०॥दीनदयालकृपाल
तुमप्रभुअनाथकेनाथ॥तीनभुवनरक्षककमीतंहीरोसकिहसाथ
१॥चौ०॥१७॥तीनज्ञानहमरीप्रभुकीनी॥नैमीतुहदमानलियरीनी॥हमरी
निंदाहिरेनधारहु॥करुनाकरिहरिमोहितवारहु॥तीनज्ञानसुषभला
वभाषे॥हरिलोहेतनहियअभिलाषे॥जैसावासनरयोसुरारी॥नैमीव
सुताहिमहिहारी॥जेहिवरेनिकसेसुषतैसे॥तीवकुलनकोहैमनजैसे
उत्तमममधमअधमनीचहै॥कुलसुभाउकरजबनीवहै॥५॥दो०॥११॥शत्रु
मीतसमएकसेहर्षसोगसमतोहि॥दीनानाथकृपाकरहुदेवगउवार
हिमोहि॥१॥चौ०॥१८॥श्रीपतिअपनाविरदसंभारहु॥उतरहमारोकछुनि
वारहु॥अधिकारीसुतकोंपहिचानहु॥पाइसकलमारवकीजानहु॥याद
वकुलजनमतसुतहाथा॥लेहुपछानसुतहिजहनाथा॥तुमएतनम
भयोअधरानाता॥सुतसधकरीनतसमरीमाता॥सोउहिसमैदेवतीतुमप्रभु
कनिकोंअवपावतीमहांदुष॥तुमहरिहमकोंधारश्रमानहु॥१॥सुछडसतक
ललोगततमानहु॥१॥दो०॥१२॥सुतहिपछानततोनहींहाथनजन

मोमोहि॥नानतजइकुलसकलमुक्रमानपितापुननतोहि॥१४॥चौ
पई॥सावलेइहमकोंवनवारी॥बरनसरनश्रीकृस्नउस्यारी॥भयेप्र
सन्नकृस्नतनकाला॥भीमसेनसोंकहिनंदलाला॥वेगउतारलेहुधा
कोश्रव॥रथवदाइदुघह्लीनकरइमव॥जैमुनकहैसुनइहिउराजा
लईउतारभीमकियोकाजा॥आइगएवसुदेवतादिछिन॥कृस्नकह्यो
हनपितामोवचन॥तुमहलधरदोउरहोहारवति॥रुक्माकीजइउग्र
सेनमुनि॥१५॥सो॰रा॥पुनिपुरकीरछ्याकरहुवचनकहेभगवान॥
तजवियोगफिरजाऊंतुममनातसमकरमान॥१६॥चौपई॥जैसेवच
कतनकहेजगतपति॥इमकैसेंजाहोंहारावति॥कैसेंहोरमोहिकल्ला
नो॥तुमपरसैनविनमागऊंप्राना॥जैसेंरसमरथपरथपनभईगत॥प्रानत
नेविकुरेजवरगुपत॥लोककहैसरवनकेश्रापा॥भवासमरघुवरसं
मागा॥भयोकालवसरामवियोगा॥मैंमनतमोंतुमसारेसोगा॥मयपि
तुमरमरानतनसाघइ॥महारथीपुरकोंश्रपिलाषइ॥१७॥सो॰रा॥जैसें
सियरघुनाथविनसकेवरवनसरीर॥तैसेंइमतुमविनइहीसहिनस
कतनपरफीर॥१८॥चौपई॥करुनाकरहरिधर्मनिधाना॥पितवसुदेव
रमायोताना॥हरेतोषकरधीरजदीना॥सुधावचनकहिसभइबकी
ना॥पुनवसुदेवबचनउचराई॥नाततजानहरिसिकाकराई॥रनकासं
गनकबद्दनहिकीजे॥इमरीसीषश्रवनसुनलीजे॥गोआल्पतारोदीन
रपानी॥वरनुवतीरतसिंदकपानी॥कपाहीनकीनमघराना॥इन

कासंग तजहु भगवाना ॥८॥ दोहरा ॥ हरीसों भोजन करे एक पाउके
वीच ॥ सलहु रेग्रह वासा करै न तजहु संगति इनी व ॥१९॥ चौ॰ई॥ मातपिता
भ्रातबंधुलसागे ॥ गुणनी बसनि सहित अनुरागे ॥ मनक्रम बचरखनहार
न करई ॥ निरदोषी कों दुषदाइ रई ॥ हूजे इह सैइ सावें मनकों ॥ सबे रतउ
निसांनन यन कों ॥ अप्यागत इह सिलोग सुनावे ॥ निंदत साधभक्त नहि
भावै ॥ अतिथ पसुनी न रंभ हिपुलावे ॥ छलन करमाशानाहि तुगावै ॥१९॥ दो
हरा ॥ कंचनादि समधाल कों जो नर लेहि चुराइ ॥ सनइ षुन को संगनन
मन वच क्रम मन इराइ ॥२०॥ चौ॰ई॥ जीन रहे वय नयनसरई ॥ जीवसंघा
रवहु तनिन करई ॥ हूजी पाष साधपर हैवै ॥ नीरघजा रहु संगनसेवै
गाहेवर रसे लिहि कोराना ॥ मागी वस्त गहे मनमाना ॥ लोगन धन जैसेंव
वभावै ॥ पापपुण्य कहु भेद न पावै ॥ कहिहै सुर्ग नर्क अति सही ॥ आगेकी
सुध किन हुन लही ॥ देषन सकहि अवर की सोभा ॥ निसदिन परतिय पर
धनलोभा ॥२१॥ दोहरा ॥ अवही यह निरधन हुतो यह धन पायो काहि ॥ पा
को धन कवमाये है यह वांके मन मांहि ॥२२॥ चौ॰ई॥ जिह नर अपनी होरे
धहृमत ॥ करकर लेवै औरन की गत ॥ वेदरीत न नहं भरि हावै ॥ धर्मपष
इलोग पविधावै ॥ पतिव्रतन तियको धर्म कुरावै ॥ इवे गर्व ते वलहि वरावै
मिन गुरु हमन के घै मेल कवन ॥ ताको संग न करहु सामहजन ॥ सीनलस
मै चलहु मारग वल ॥ इन रहु नहां जहां मीतल जल ॥ अक्रतिमि पानजा
सुपाग घरकरमी ॥ देहदान दिन जोतिह धरमी ॥२३॥ दोहरा ॥ घरकरमी

नै॰ मं॰ परसीहुषीसालावेरपुरान ॥ ईरीजिनसतसीलजुतहीनगुहिजनि
भा॰ हरान ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥ जे पुनकैहैसुनोहिनराई ॥ पितावचनकुनिसुनेक
५९ ढाई ॥ भीमसेननबवचनउचारे ॥ समबचनबहुदेवनुग्रारे ॥ विमुख
नकोइहरिसंगनकरई ॥ भक्तिहीननरतिनतेंडरई ॥ पक्षतुदिनिवकेम
नमांही ॥ तिनसौंसंगकरतनहरिमांही ॥ सदाकर्मभगवनसौंप्रीता ॥ भक्त
वकुलगिरधरकीरीता ॥ उनउचरेबचनसुपिताप्रति ॥ सुमहलधरकि
रसाकुहारवति ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ उग्रसेनरसाकरहुपुरीहारकामांहि ॥ गरु
गरहैकेवसुदेवहगभरभरजलवहुताहि ॥ २६ ॥ चौ॰ ॥ कालपिताकोकंव
लगायो ॥ विकुरेनहीविरहविरमायो ॥ लागरहोहरिकेउरमांही ॥ कुल
वंदकौंकाटनमांही ॥ जेपुनकैहैसुनोराजाहित ॥ हरिपदवसनहियेंवि
नकेनिन ॥ सुषमागरहरिअवलोकोजिन ॥ कवनहोनरकहिनविकु
रतनिन ॥ रूपारहुकरसीलनकीका ॥ हापलोरकैंरह्योअधीना ॥ आहा
लेवहुरेवश्रवरवलि ॥ चलेहारकाकौंनगरहरिरल ॥ २७ ॥ दो॰ ॥ हाराव
मिकौंनवचलेगजपुरकौंनेंदलाल ॥ टइकनपर्मजनतहितचलतम
पनतकाल ॥ २८ ॥ चौ॰ ॥ वलनतकसमसरवरपरआप ॥ हंदरसमरथ्रंउज
मनभाए ॥ हंदरठौरहेवसबपायो ॥ गुंजतअलिकलधुनग्रागपायो ॥ हं
सबकौंरमोरवाउवनवर ॥ कोकिलकलनकपोतहुविसर ॥ पानकरन
मनकौसमहृगन ॥ वरस्मानेश्रुतिगीवकंदसन ॥ रेवहुकमनीकोंनेंदनें
दए ॥ भाउनमपुरवचनउवकंदन ॥ विरचहुकवनीपरश्रुरबनरन ॥ सि

लजभईकुमरनितनसमसपन॥२४॥दो॰हा॥नहरहेपलवसकलपरसु
रखनाककजोर॥मधुपनसोंबिहरनमुदितसमपनटीनोछोर॥२०॥चौ॰प
ई॥नहपरेरनकोसबपाना॥परपुरुषनरनपइकुसलाना॥सौंमुबकी
पतिनरसोंप्रीता॥महाबिलजनगनपरतीना॥चंचलमनमुवनीरति
भाई॥बिहूचेनरखजनकोंपाई॥भईटीमपुनिबचनजकोरे॥नहपरेप
लवबहूओरे॥चंरउहेकीसमैपकानी॥कंपतहरमनमैंपकनानी॥देख
पहमनीकीगतअैसी॥ससीउदितहरफूलनजैसी॥२५॥दो॰हा॥जैसें
चंचलनारिकोंजबभर्तीगहमांहि॥नवहरपैमिपलाजबहूपरपुरख
नरलनाहि॥२२॥चौ॰पई॥जबहीपतिपरदेससिधावे॥परपिपजीयम
नेरबहावे॥औंपरमनीदिवसकोंअलिरन॥निसकोंहरपतनिर्षचंद
पन॥तुरमलीनहेनसौंनारी॥परपुरखनसोंरमतविकारी॥जिहलिप
जिनभरलाग्रहहोई॥लाजकरैरडरपैबहूसोई॥बोलीसुनरुकमनिपरत
नी॥बिलजबचनरइसारंगपानी॥तुमकोंकहनलाजनहिआवै॥तन
मनमोनिपअतिडषपावै॥२२॥दो॰हा॥कुमरनिकोपनचंदहैहंसचक
अलिनाय॥लाजकरतवैवनउठनगिरनपरमनीमानन॥२४॥चौ॰पई॥चक
बाहंसचकोरमधुपपुनि॥पहनहोपकबहूंपतिपरमनि॥इनमहिदख
परनहुनतछिन॥रूपपोधरदेखिनभऊन॥जिहमुवतीसंततनवहहो
ई॥अलनपानकरावैसोई॥कोऊपुत्रमालालिहलोरै॥कोउपुत्रअंगिनाउ
कजोरै॥कोउगहैअमरनकोउगहैकेसा॥जिहबहूसंततसोरहभेसा॥२५

गे॰ श्रं॰ दोहा॥ परमनिकोपनचंद्रमा उदै समै सुषपाइ॥ मौंलियपनिपरदेस
भा॰ तैंगुदितहूंनिग्रहंआइ॥२९॥ चौपई॥ ससिवियोग कुमुदनि दुषपावत॥
८० गहैंहोतनिसुसुषउपजावत॥ दिनकोरनकापनिग्रहनाहीं॥ पुत्रनसों
मिलकेलकरांहीं॥ तिहतैंपानहूंरमेलपरहीं॥ सुतनवषिलावतदिन
अनुसरहीं॥ ससिवियोगअहिदुषीविनावत॥ छुटेसमैप्रफुलतविगसा
वन॥ कतिकोंपरमनिरोषलगावत॥ पुत्रनकोकरपतिदिषरावत॥ कु
मुदनिकोंससिसोंअतिप्रीता॥ प्रफुलितचंदनिरषपहितीता॥२५॥ दोहा॥ ग
हैंलकुतोमनससिवसैपरमनिकोभरतार॥ रघपिमेवहराममहांदेतदर्स
रकआर॥२६॥ चौपई॥ समयेलेहूंनमोंहमनजाषा॥ किपेकेतिनसुमनके
लाषा॥ ताकोहषनकोंनलगावे॥ वचनकहतहांसीपुरुआवे॥ सतनवच
ढकमनिदुरिसुमकाने॥ अतरपोसरपरसुषपावे॥ संध्यासमैभईरविछिन
सभ॥ कनकवर्णीसोंकह्योकमलनव॥ लगुनिसानसरनाइवनावत॥ सथसे
गाकेंसुषउपजावत॥ रकनिसदिनहरिसरपररहे॥ कोहाकरीसकल
सुषसहे॥२७॥ दोहा॥ वलेनहांतैंकुचकरवतैंनिसानअपार॥ पारग
चलतअनंदसोंहोतसवरतैकार॥२८॥ चौपई॥ प्रफुलतवननिर्मलमल
महां॥ कोहाकरतदिगुदितहरीतहां॥ भीमककेघोमतनतिरवरधारी॥ निव
दनश्रेसपंचगुतारी॥ वेगचलहिंहतिकामनहोई॥ आसकहैंआपदिनमोई
कीतुवचलहररथिनतदिषीनैं॥ पर्वरानकोधूलिसुषदीनैं॥ नवलमइहों
माहूनहरहानां॥ नवदिअुंभकारहिमषसाना॥ करोअवेदहसभवनमांही

रहूविधगनतुरछुहूवननाही॥४१॥दोहा॥सहांभलेवनदेषिहोसहांलम
वहूबार॥निसदिनकरहूशिकारतुमग्रहजलकेलविहार॥४२॥चौपई॥
सहजजउनरथदेखनमांही॥हूलनतुरपौंपहूचननांही॥तुमरामगधर्मम
वितचितनवन॥एककलपन्यपचुगसमविनवन॥मैंआयोहेग्रहहरतुम
सहन॥निःसारयपरभातनिजभवन॥इहसेहलसतनभीमवचनसव॥ते
मभषाआयोधावननव॥समैरसोईकौनकआयो॥तांतेंघटरसभोजन
पायो॥हमरेनहींभूषकीआसा॥जलविहारक्रीडावनआसा॥४३॥दोहा
भोजननकीचिंतातुमहिहमकोंचिंतनकाइ॥तुमकोंदिनबीतेवहुतमन
राकसीतिसाइ॥४४॥चौपई॥तुमरेजितपतितपकीअभिलाषा॥वहुतदिवस
धीरजलतुमराषा॥तुमबजितयमैंकीडारनिवांछा॥इहांवहुतनितपपुरवोकां
का॥हविरोरएकांतनहींइउ॥हेउमंगाइजुवतिसंरववर॥भीमकहोत
नेश्रीभगवाना॥तुमजितपतितपप्रतिसांझविहाना॥तजुवतिनकीलालसा
तजहिमन॥तपगजोररमनीघसामुचन॥रनवातनकीभूषनतुम्हा
रे॥तुमकरुनाजितपशांतहमारे॥४५॥दोहा॥तुमरेरुइहजुवतीवहूतन
गरमांहितुमहीन॥सुयवनमैंतुमवसपरीसभद्दैरहीअधीन॥४६॥सो
रठा॥तुमतियकीनहिआसहसिबोलेहरीभीमप्रति॥जिदेनतुमरीणा
सकुधालरजियरैनदिन॥४७॥चौपई॥कलवुलाररसोइभंडारी॥इहुन
भोजनभीमविचारी॥अतिअल्पफलउदरहैताको॥परनहहैअहारवड़
लाको॥करतउतावलिअतिकुधारयो॥वडूभोजननेदेप्रवडूसारयो॥इ

रीवचनसुनभीमउचारे॥हमकोंभषनहींतुमहारे॥आपनभषनहहे
विचारो॥औरनकेप्रभुहोपसहारो॥तुममनोहरिप्रभुतुमअवनासी॥स
कलसृष्टिउतपतिउदरप्रकासी॥४९॥सो॰ना॰॥तीनलोकचौदहभवनउदरसु
सारेमांह॥प्रगटाउषिनमहिसकलपुनतुमबीचसमाहि॥४९॥चौ॰ई॥
तुमसारषाउदरनहिंदेखो॥आरंभअंतकहूंनिगमनपेखो॥प्रलैकालन
लेउदरसमावै॥तोतुमरामसरीरलुपतावै॥तिहअवसरमहिंबीचवइ
नहिन॥इरयोप्रभुभक्तउतुमपरहरिछिन॥प्रतिहर्षतुमनहसेरमोहर॥
वचनकेहतुमसमकहकोरर॥वइरोंभीमकछोनइराई॥ऐसेंसपंपनति
बहिगुसांई॥करनचलेहोतुमभवनवासा॥टेरसमैपुनहारसमासा॥५०॥
श्रीभगवानुवाच॥दो॰ना॰॥रकुमाचारीनोवलहिंछिनमहिंपइवेमाइ॥पा
रहिहेविनचलनकोचिंतनकीमइपाइ॥५१॥चौ॰ई॥अथप्रतिछाकीच
वहूतरिन॥हमआगेपइवहिंहमनउर॥पततुमआराकरोंसंपूरन॥पा
नइभीमसमअरुचूरन॥तिहअवसरहरीहियेंविचारो॥मकोकुरुछे
नचलननिपधामो॥नसमनंरआरहनवासी॥मिलेसभनकोंहरेछ
भासी॥तीरथपदानपुणअसनाना॥ननगीसोंहरिवचनवषाना॥तुम
ककमनिसभलाइनागउर॥पारमइहसेंनरपतिजुधिष्ठिर॥पा॥सो॰ना॰
भीमतुमारेसंगहैमावइसभनतनेकाल॥पैंधीअहिंफिरआरहोंवचन
कहेंनंरलाल॥५१॥चौ॰ई॥ननवोलीहकमनिवरनारी॥ऐसेंवचकनक
होगुणी॥हमआगेनेहैंकनकाना॥तुमननहिंननइंदुनहरहनमाना॥

नीरघधर्मेपुन्यबहुदाना॥ जपहोमसुभकरनविधाना॥ रस्त्रीसंगबहु
हसुतिहोई॥ नुवतीविनबहकौरेनकोई॥ निमषनकाइहिनमरोसमा
सोलहुसहसनारबरअंगा॥ रुकमनिकह्योकुलसबतिनसें॥ कहहनभई
हरिसमभतिपतीसें॥ ५४॥ दो०॥ लमनमनहमनैंइनहीहलनपुरकिह
कान॥ संगबसारेबलहिगीसकलतियागडराम॥ ५५॥ चौ०॥ श्री॥ लख
वी वा॥ ससकहहनहैंनवयहवाल॥ हकरहस्तीपतिकोंकुसलाला॥ भरनेग्रा
तालेमहिहोई॥ जोपतिकहैमानिहैसोई॥ रोहमीनहीअपरअपारा॥ होत
नहीरहनतेंकुहकारा॥ प्रसकियोजननमेनयछिनपति॥ हियेंभाउकरिजै
मनमुनिप्रति॥ कलिकोंबरमीहीहरिनारी॥ कारनकौनकहोसबकारी॥
मेमुनककहैसनहकुकराई॥ पबवोगोकुलदनकराई॥ ५६॥ दो०॥ पवी
लिषरीनीकसबजवासनकीग्रोर॥ वंदनसोधेलोगबहुमबलग्राबढ
रहकौर॥ ५७॥ चौ०॥ यहलिपमाननहिंलिपसावन॥ गोपभेसधरव
मरहिराबन॥ मनसामाइनरेखिलनाई॥ तिपवरमीयहनावकनाई॥
वरजीमहीरहीसबवाला॥ आईसकलसंगनंदलाला॥ यहलिपमानस
महकुरुनंदन॥ हियेंविचारकियोमधुसूदन॥ मनमेंलाजकरीमधुना
सन॥ होइएकलोमिलोंब्रजवासन॥ ५८॥ दो०॥ आगेजाइमिलोसबन
गेरजसोधेग्वाल॥ सामाजीकोदरसहै॥ यहमनकियोगुपाल॥ ५९॥ चौ०
ई॥ जोलगपाछेपडुचलसेना॥ जोलगगोपविहारोंनैना॥ कुसलसंदे
सपदकुसमबाला॥ विदाकरोंगोपनकुसलाला॥ यहकहिमएगारुड्स

जै॰ अ॰ भा॰ ५५

सवारा॥ रथवाही प्रति वचन उचारा॥ मेरमेर रथ हांक चलावहु॥ ही
लइहोर लिये कर आवहु॥ वहुर जे वरीहार चुलायो॥ मनल चलन को
मंत्र चलायो॥ गडे चार रतना वहुरावहु॥ हीलहिमा पहुचि लमलगाव
हु॥ ९८॥ दो॰॥ हीलहिमा पहुनेवरी मोल्लागहि दिन चार॥ जिहू विधव
हुता पंच है मैं चलि पजिय धार॥ ९९॥ चौ॰॥ श्रेसें वचन कहे हितकारी
गहर अरूठ भए वनवारी॥ गाढो अनुराग करजो रहु कोरय॥ आता रहु करें
गैसेंहर॥ तवश्री वचन सु कहे भीम प्रति॥ तुमकों आज्ञा यही विमल म
ति॥ सेना लियें उतावल आवहु॥ वेग न चले लिसेहर पावहु॥ हूसे भीम व
चक हे उचारी॥ कौं श्रेसें छल करहु मुरारी॥ मेवरिहार समाय न सुभटानो॥
सुनो मोहि मन सम पहिचानो॥ १००॥ दो॰॥ वहु रांगु फकों कहत हो कु
रहु कमाइ लजाइ॥ मेवरिहार सहत न वचन और कसो सम जाइ॥ १०१॥ चौ
पई॥ तुम मनो होइ हरि रछ्याचारी॥ हमकों आज्ञा देहु मुरारी॥ मैं आगे हूल
शपुर जाऊं॥ धर्मन सकल वृकोन समनाऊं॥ तुमरे दर्सन विन अति आ
रतें॥ धर्मराज तुम पंथ निहारत॥ ताको मारु कहो हरि आए॥ रूपन सु
(यु)धिष्ठिर सुनन सुष पाए॥ तुम बोले हरि भीमसेन प्रति॥ पलाक यो तुम
भीमसेन प्रति॥ आगे ना वडु कहो सहे मा॥ प्रति सुष पावे धर्म नरेसा
१०२॥ दो॰॥ ले आगम आगम नगुर वले भीमसेन तेन काल॥ हरषत हैकु
रछेन कों वेग चले नंदलाल॥ १०३॥ चौ॰॥ श्रीकृ गयो भीम हलन गुर॥
हर्षन लामो चर्न युधिष्ठिर॥ रूपन लेको रर कंठ लगायो॥ गदगद सक

लहुषधमुनिह्लषपायो॥ श्रीपतिको सभकहे संदेसा॥ हरिकीनो कुरुरुष्ठे
नप्रवेसा॥ प्रफुलन धर्मन सुंकन मावन॥ मैसें रंकमहा निपपावन॥ कि
धोउपमकुरुषेन वलनको॥ श्रीपतिपर सुंतुन परसनको॥ सभाचला
ईमंगपुहितकर॥ ग्राम्रग्गसाला वेदमहांवर॥ ९२॥ दो० १॥ छरकरमी
धरमीगुनीपंडितनवडेमहंत॥ हरिदर्सनहूंको चलो धर्मजजिधहर्षत
९३॥ चौपई॥ पुरुषनरहियेप्रभ मांथा॥ जिननहि किपोदानतिजहा
था॥ कामी चोर कपट विलासी॥ वडे पतितगृहहि नवडंग्रासी॥ पनग्र
हणो मनकरत प्रमाना॥ चारवर्नको लेइनु दाना॥ कृपाहो नत्रपकाम
निसाधहि॥ इंद्रीवसन हिकुलसुराधहि॥ केत्यारदवेलेहन हित्रासा॥ पर
धनपरत्रियकी नियआसा॥ यनरेतनरकरहहि निवारन॥ प्रछकर्म
नितजीयप्रहारन॥ ९४॥ दो० १॥ पहनरतनिकरधर्महत सर्वसभा
लियसाथ॥ मनहर्षतकुरुषेतकों चलो मिलन मदुनाथ॥ ९५॥ चौपई॥
ग्रवसरतहोस्नतरकग्रायो॥ पातीदेवंरलालपठायो॥ लीनीहाथजनु
धिष्ठिरपतियां॥ वाचतभयो महांसुषहुतियां॥ लिख्यो कृष्णनेमर
हांनग्रावहू॥ मैंग्रावोंतुमकततुमपावहू॥ ग्रापोकरन सहाइत्यो
री॥ मौहुरवासाश्रापनिवारी॥ राषीद्रुपदसुताकीलाजा॥ तैसेंसिह
करोंतुमकाजा॥ हरिकीपतियापठीनरेसा॥ फिरगजपुरमहिकि
घोप्रवेसा॥ ९६॥ दो० १॥ पतियापठीग्रनंदसोंफिरपुरकियोप्रवेस॥
समासारस्रीकमलकेपृछतभीमनरेस॥ ९७॥ चौपई॥ हरिकीकथाम

नावहुमोकों ॥ केसेंमिलोभीमप्रभुनोकों ॥ पंचवीचकैसेंबलआप ॥१
श्रीपतिसोंकेसैंमुषपाप ॥ गुरुकोंसकलहलोनमहनावहु ॥ हरिजस
कहतनमनरूपनावहु ॥ बोलेभीमसुनहुकुरुराजा ॥ कहलौवरौंकु
मसोंहामीअतिकीनी ॥ भीमसेनसभविपकहिदीनी ॥ ३५ ॥ दो ॥ रा ॥ ह
ससमाना ॥ गजपुरतेंहारावतिगयो ॥ सभैरसोईआपकभयो ॥ हरिह
सोनृपिष्टिरसुदिनमनभीमसेनकीवात ॥ हरिजसमसोंहांसीकरीक
हहुसकलविधान ॥ ३६ ॥ चौ ॥ ई ॥ कहेभीमसुनतृपअभिरामा ॥ हरिसों
वचनकहेसतभामा ॥ वहुरोंवचनदेवकीभाषे ॥ सुनसुनकलहदेम
दिराषे ॥ तमरीपतिषापदीहूर्षमन ॥ निकसोसजसेनाहरिनतछि
न ॥ पगमहिवलवसुदेवउलाप ॥ विराकियेहारकापताप ॥ विरहव
वनवसुदेवउचारे ॥ करुणाकरसवसोकनिवारे ॥ सवरीवनमालन
सोंहासा ॥ वंपेलनसोंकिएविलासा ॥ ३७ ॥ दो ॥ रा ॥ वहुरभकारीसोंहसे
हरषतहियगोपाल ॥ हांसकियोहकमनिसहितसरपरश्रीनंदलाल
३८ ॥ चौ ॥ ई ॥ करतनखेरहमवनआवत ॥ श्रुतनाइकासोंसुषपावत ॥
कहेसभगमलकेलकरतहै ॥ रंटरसनसबकोरहरतहै ॥ प्रभुकोंला
महोनअतिनिनप्रति ॥ सदारमैरेषोत्रिभुवनपति ॥ मोसोंकरतस
गहहरिहासा ॥ जाकोतेजकोटरविभासा ॥ वहुरवलेकुरुषेतरमापत
किपेपरमसरववचनसुवतिप्रति ॥ पुनिहरिअंगनारुइश्रुमसवारा ॥ किरा
कियोतनकिनसुइमारा ॥ ३९ ॥ दो ॥ रा ॥ गजपुरकोंमोकोंपठयोआप

गपकुरुषेत ॥ वचनभीमकेसुननरपतगदगदभयोप्रचेत ॥ ७७ ॥ चौप
ई ॥ बोल्योधर्मजभीमसेनप्रति ॥ धन्यधन्यतुमभीमविमलमति ॥ जो
सुषतुम्हस्रवलोसोमगमैं ॥ सोसंपदानहीसोजगमैं ॥ जोहोतेवरआगड़
मारे ॥ हमहीहोतेसंगतिहारे ॥ काहेतुमपदहेषतनआये ॥ कतिकुरु
षतनसंगसिधाए ॥ प्रथमकीनजनमेजपछितपति ॥ कहोकथामैसुनम
नहरषत ॥ समभकुरुषेतनहनीतसुनावडु ॥ हजबासिनहरिमिलेवनाव
डु ॥ ७५ ॥ दो० ॥ बहुरवविचतेईकिहोगजपुरकरिहैमेहि ॥ कौंकरजनतक
रायहैकहोकथाकरतेहि ॥ ७६ ॥ नृपसुनप्रतिश्रुकेनृपतजनमेजयचितचा
उ ॥ अश्वमेधकृतग्रंथकोरहकृतनवमोध्याउ ॥ ८० ॥ इतिश्री भारथपर्वणि
अश्वमेधपर्वणि आन ॥ धर्मभीमसंवादइयहन नवमोध्याय प्रमान ॥ ९ ॥ चौपई ॥
कैहैकथामैसुनहर्षितमन ॥ सुनतनरपतजनमेजयश्रवनन ॥ धन्यधम
नृपकोंमुनिकहई ॥ कुसलकथानिसदिनचितचहई ॥ हरिपदपंकजसोंश्रुति
पीता ॥ पदहमरेकुलकीरसरीता ॥ सुधासरसयेकथासुनीजै ॥ सावधान
दैदिनचितदीजै ॥ नवकुरुषेतगएनंदलाला ॥ नहीआइनिसदिनब्रजवा
ला ॥ आपनभएकीतरेदिनतब ॥ नंदजसोदागोपवधूसब ॥ ७९ ॥ दो० ॥ गोप
ग्वालगोपीसकलजसुमतनंदसमेत ॥ सुषसस्रवलोकनस्यामघनवलश्रा
पकुरुषेत ॥ ८० ॥ चौपई ॥ गोपभेसधासोवनवारी ॥ पीतांबरमुरलीमुषधारी
लकुटीहाथमुकुटमाथेपर ॥ गुंजमालवनमालवनीवर ॥ चक्रतभए
सिगोपाला ॥ लोगकहतनृपयहहलोग्वाला ॥ जोसवरूपव्रजमेंहमदेषो

गं॰ भ्र॰ सोइरूपसुखनैननपेष्यौ॥ यहतोहमरेवहीकन्हैया॥ माखनचोरजसो
भा॰ धैमैया॥ १६॥ दो॰ ६१॥ कमलनैनतनस्यामघनकुंजनचरावतधेन॥ कालिं
५१ दीतटअधरधरमधुरवजावतवैन॥ ५॥ चौ॰ ९६॥ वहतोभएहारिकान्ह
पा॥ वहुरंगनिसेनाछमसाथा॥ यहकोउअबवरभेसधरआयो॥ योंही
नह्मननंदवुलायो॥ निश्चैकियोहंसकीकोहन॥ प्रभुदिनभएगोपछि
तवनतडन॥ भेटइतीवनलोगसंगाथा॥ समदीनीजसुरेकेहाथा॥ श्रीफ
लग्रहनश्रीनतहपारी॥ श्वकतकसामहीहभकारी॥ सानआरतीचंद
नसोमत॥ कंठलगायलियोकमलापत॥ ५॥ दो॰ ६१॥ सुखचमनतगरहगर
भएनंदनसोधेमान॥ वैगयेहरिगोरसमहिंग्रानंदउरनसमान॥ ८॥ चौ॰ ९६
नह्नेनंदरशकेकुसलाला॥ लागेकहनपरसमग्वाला॥ मिलआयेहरिसखा
ग्वालनव॥ करलकुटीकमरीगेहेसम॥ निरखकहोयहतोहैग्वाला॥ लो
गकहहनभएरूपनंदलाला॥ किधौप्रणामचरनसभलागे॥ हर्षविलोकसु
दिनअनुरागे॥ लागेवचनकहनतिगिरधरप्रति॥ कमरीनलेविछावदश्री
पति॥ काकभावभोजनसुखकीनै॥ कीजहाकरइहमहिंसुखदीनै॥ ८॥ से
६१॥ नुमकूपरकमरीकरीश्रुतिहरषनविनकाकद॥ गोपिनसोंमिलपर
सरकाकभावकियोपान॥ ५॥ चौ॰ ९६॥ भोजनकरतनपरसपरग्वाला॥ निम
करकौरदेतसुखलाला॥ रकहहरिसोंहितहासवढावति॥ कवररिषारघु
पनसुखपावति॥ एकएककरकीननयासा॥ कीजहाकरनहोनसुनिहासा
मैसंवलकियोहंसावन॥ बालापनकेसमेमामवन॥ मैसेंहीपुनवेलव

नाए॥गोपमंडलीसमहृषपाए॥श्रीपतिभूषनवस्त्रमंगाए॥दीनीभेंट
गोपपहुंराए॥४९॥दो॰॥नंदनंदनसोंपाकोंदईभेंटबहुतनंदलाल॥गोपप्रसन्न
भएसकलहरषतगोपीग्वाल॥५०॥चौ॰॥पुनतुनववचनननकहनपरसर
हंडुभसवदपभएतिहअवसर॥वजहिवजंत्रअनंतनिसाना॥चमूसहित
प्रद्युम्नतुलाना॥एकओरअनिरुद्धमहाबल॥संगसेनाचतुरंगलियेंदल
श्रवपुनगनअनेगढुवकाजे॥महासूरसूंदरदुतिराजे॥एकओरतेंसमे
कुलसहन॥आएतभएसकलसेनापुन॥एकओरतेंकुनवरमापुन॥श्री
योवाजनअतिदुंदुभिधुन॥५१॥दो॰॥कुपनकोरमारबनुरेवनहिम
हुंपचलूर॥वालकहीहनिपेंनहीसवररयोनभपूर॥५२॥चौ॰॥मारवकु
लकीसेनाअगनित॥गनीनजानमहांकविवर्नंत॥वजहिवजंत्रअनंतअ
पारा॥चमकहिषडगधनुषटंकारा॥भूरहीधूनधरनअकासा॥हनगो
पनउपनोजियत्रासा॥हजवासिनप्रभोबंदनंदन॥यहभयपतिहैकोदुष
कंदन॥इनलोकनतेंहमइरपत्तअत॥आनादीनेहमहिरमापत॥महर
मकोलेमांहिविगारा॥ग्रासकरासुरकरहिपनिहारा॥५३॥दो॰॥कुलक
छोडरजितकरहुयहहसभइसमेरलोग॥हमवैठेनहिकहिसकहिडुरावच
नत्रमजोग॥५४॥चौ॰॥नवसेनासमहृदमुरगई॥वरतपरसविगताहीभ
ई॥महासुरजोधवलवाना॥तेनवलतैलोकविधाना॥देवकिहकमनिग्रह
सभवारी॥देष्योआगरगुवर्धनधारी॥गोपमंडलीमेंरसभीनो॥अपनाभेस
गोपकोकीनो॥नवकसकमनिग्रुषवचनउचारे॥देषेहैंहरिभेषतलाए॥द

भ॰ श्री॰ मकोंदियोबिसारमुरारी ॥ अरुमानादेवकीबिसारी ॥ ५५ ॥ सो॰रठा ॥ हम
भा॰ तेजअगेगेउठचलोबीतेहैंदिनतीन ॥ पहरायेहैंकैंवसनजिनकेभयेअधीन
५२ ५६ ॥ चौपई ॥ पुनबोलीसतभामानारी ॥ नवकेलमविकुरेगिरधारी ॥ हम
रेअनबसनतुममांही ॥ तुमहमरीचिंतवतककुनांही ॥ नहिचिंतक
रीदेवकीमाता ॥ वड्रोंकरीहकमनीवाता ॥ जिनमोतमरोहितहजना
या ॥ मिलवैठेहोतिनकेसाथा ॥ हकमनिप्रतिहरिबचनउचारे ॥ यहब्रज
बासीप्राणहमारे ॥ मुहिअतिपालबडाइनकियो ॥ अबलेहाथनत्यारेदियो
५७ ॥ सो॰रठा ॥ मादिननहोंजनमतभयोमथुरामेंनंदहमान ॥ ताहीछिनगोक
लेगयोवसुदेवकअधरातन ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ नतहमननंदभवनलेराखो ॥ यहहे
तोंतकिनहूंनहिभाखो ॥ इनअतिपालहमारीकरी ॥ दियोमहांसुखअपरा
हरी ॥ वडभयातवआपसंभालो ॥ सुष्टुजुहककरकसबिसरालो ॥ गोपनरख्या
करीहमारी ॥ इष्टकंसतेंलियोउबारी ॥ जोयहरख्याकरततननिसदिन ॥ कं
समोहिमारतनताहीछिन ॥ ब्रजलोगनदीनेसुहिदाना ॥ नहिबिसरतमुक
सांकविहाना ॥ ५९ ॥ सो॰रठा ॥ अग्रकियोहकमनिबिबइरकहोकसमभफारह ॥
तीनअवस्थातुमरेहैहजनमहिमोहितवना ३ ॥ ६० ॥ चौपई ॥ तीनअवस्थाले
मथुरनरहे ॥ कीनेकेलिनगनसभकरे ॥ प्रथमकिसोरऔगंडकुमारा ॥ ले
मगोकलमहिकियेबिहारा ॥ पांचबरषकोबालकहोई ॥ कहेकिसोर
अवस्थासोई ॥ तिहआगेपौगंडबरषदस ॥ बरषपंचदसलोकुमारदस ॥ ब
मनीनोब्रजमांहिबिनाई ॥ इकदिनहममेमनमहियाई ॥ ब्रजकीविधजा

मनवलमाना॥ तिह्सों प्रभु लेहु सभ बाला॥२१॥ सो॰ रा॥ उपजत तप की क
वमन विषे हृछु लेहु विध माम॥ मो चरित्र हत मो किये हम नो कथा भ्रमि
राम॥२२॥ चौ॰ ई॥ प्रवसभ एक न भये प्रा री॥ हरही वात कहो गिरधारी॥
मैसें मन वल्लुम कत निह्व न भ्रवनन॥ आवत है हम लान सामठन॥ तुम च
रित्र की ने भ्रम मैसें॥ वर्नत्तु नावद मो कों नैसें॥ हृनो ह्व कहो उरानदि मा
गऊ॥ अपना ग्वाल भेस पहिचान दू॥ नवल मक्नज हो ते यहू न लमन॥ मा
घन ह्वा छुराय वत मित भ्रत॥ छुप कर भोजन न करत कछ्रैपा॥ मत भ्रवलो
कै जत मन भैपा॥२३॥ सो॰ रा॥ इक दिन जसमत मोहु कों मघन करन गृ
हमाहि॥ तुम आए चपप पा नहीं दियो बिलोवन नाहि॥२४॥ चौ॰ ई॥ जसमत
कर्यो बिबिध बिलमद समति॥ मन माघन मिलनाइ ह्वा छुतन॥ नव भ्रलन
तुम रेसु घ दीना॥ मन मनकी मदहि ते पन कीना॥ कह तत हृध ढकु लो अनक
पर॥ वद्यो मान रेसो पय भूपर॥ तुम कों रास जसो मन भाई॥ नवत्तु मरउ
कीनी लंगराई॥ दधि भौजन फोस्यो नत काला॥ बांद दियो माघन कछु गिवा
ला॥ जसमत निधाइ हृथ भ्रवरेख्यो॥ उछुप सोस भभप रपेख्यो॥२५॥ सो॰ रा
हृधउधकर धरनी पसोज सुमतन निरखो धाइ॥ पुन रेष मटकी दही सभ फोरी
जडु राइ॥२६॥ चौ॰ ई॥ दध माघन मटकी कक जोरी॥ लकुरी मार सकल र
पटोरी॥ बकत न भय जस पेरानी॥ किन फोरी मटकी दधमानी॥ तुम रेक
रपर माषन रेख्यो॥ दृष न सम भउ भम हि भ्रवरेख्यो॥ लै दो रीदाम रिनि जहा
घा॥ गहि वांध्यो सम उघल साथा॥ जसमति प्रति कहि है सभ ग्वारन॥ व

म॰ ग्रं॰ हमाषनकोचोरउकारन॥ छाछहूपथनदहीचुरावत॥ निनलंगर
भा॰ हमरेग्रहश्रावत॥ २४॥ सो॰ ९ रा॥ लाजहोतनिहसमेतुमकहुनेवचनन
५२ नाइ॥ कृतीकहतियग्वारनीतुमहिजसोधेमाइ॥ २५॥ चौ॰ ६॥ गहगहदेइ
तुमवचनउचारत॥ यहग्वारनिनिलजघतिउजमारत॥ तवतुमकर
मतोनरीवातें॥ परनरपानसहमननजियमांनें॥ यहग्वारनमोकोंपक
रतनित॥ चिवुककपोलनचूमनकरहिन॥ निनघनइषसुहिरेंतनवि
फावत॥ उलटीवहुरउकारनश्रावत॥ मैंइरपोंनुफककहांनमाना॥ ष
हसभरुववनावतवाला॥ तुममिसकरश्रांसउपजावत॥ जननीपु
लकलमहिउरलावत॥ २६॥ सो॰ ९ रा॥ इनकोंवर्जनकोधंसोंरुउकार
इग्याइ॥ पुनरुगरावनग्वारनीतुमसोंहिषमुषपाइ॥ २७॥ चौ॰ ९॥ हिषरा
वइवहमानतसोंमन॥ निहनिरषेंसेसुषमितघति॥ पुनिहरिहिंव
हग्वारनकेसी॥ कौउाकरतसाषतुमऐसी॥ ऐसेकियेचरित्रअपारा॥ न
वैश्रवस्थावालकुमारा॥ पांचवरषलौपहहेतनकौनी॥ हुनेनिजपालैसे
कहिहैनी॥ पुनिपैगंडश्रवस्थाभई॥ कहांननकवइकीसुनलई॥ कैसे
वनमैंवकुचरावत॥ ग्वालमंडलीकेसंगधावत॥ २८॥ सो॰ ९ रा॥ छाछभात
भोजनकरतहमकेग्वालनमाष॥ कौनलेनषेपरसाएकएककेहाथ
२९॥ चौ॰ ९॥ सोलुमग्वालदिषावइसुफकों॥ कूठेग्रासदियेजिनतफकों
जिनसोंषेलकियेवनवासा॥ कालिंदीतरहासविलासा॥ कियेकेलवइ
विविधप्रकारा॥ वरननसंननपारावारा॥ वइरश्रवस्थाकहोकिसोरा

जामहिकियेकेलिनिसभोरा ॥ मदनभाउउपजीरससरीता ॥ करीरसके
राधासंगप्रीता ॥ कुसुमकलीसुनसेजबनावत ॥ तिहपरस्यामकोंपौढ
वत ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ जिहमारगस्यामाचलतफूलबिछावतजात ॥ हंदावन
बालीवरहिनपुनातरकुसलात ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ जिहसंगरासमंडलीषेले
कुंजकुंजकीवीनपसैले ॥ मैनमनायोविविधप्रकारा ॥ पुनउठायकांधे
लेतुपारा ॥ जिनतुमकोंश्रैसेंबसकियो ॥ स्यामानामदियावडुलियो ॥ जिह
जोवनसुषलियासुनाई ॥ तुहमयाहमदियोकन्हाई ॥ जोवनसमैसंगजि
हराष्यो ॥ हहमयाहमकोंप्रमलाष्यो ॥ काहदियोगहहतेजिनमोही ॥ सोस्या
मारिषरावहमोही ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ तीनप्रवस्यालषकियेप्रवतुमतजेतु
रारी ॥ पुनिहमकोंलज्जाभईहहलियोसिरधार ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ जिनतुम
रीकिसोरवपभोगी ॥ हहमयोगनकियोवियोगी ॥ जिहकिसोरभोग्यप्र
षवाला ॥ सोप्रहिदिषरावहनेंरलाला ॥ यहवचनसूपश्रीकमललाने ॥
पुरतहिंयेंद्दरषतमुसकाने ॥ रुकमनश्रारसहहसषाइसतिय ॥ सकल
हसीमहहासप्रदितजिय ॥ हीनीपरमसमस्याश्रीपत ॥ लषपाइरुकम
विराधागत ॥ जमहेनेंरगोपरिषराय ॥ इनहमहुंप्रतिपालकराय ॥ ३७ ॥
दोहरा ॥ नमस्कारहहकमनिकियोस्यामाकोंकरजोर ॥ धन्यतुममेगिरधर्म
कीनितचितनवनितमप्रेर ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ तुमवसकीयोश्रीनंदनंदन ॥ जा
कोकरतनीनगवंदन ॥ धन्यतुमहिवडभागतुहारे ॥ श्ररनप्रभकि
येतमभारे ॥ बालचरित्रसकलतुमदेष्यो ॥ वहुरकिसोरसमेसुषपेष्यो

न॰ स्रु॰ तुमतोधन्यसकलब्रजवाला॥ नंदनंदसोंमनलगोपगुवाला॥ कुंजकुंजप्र
भा॰ तिकरीकलोलै॥ वृंदावनवंसीवरडोलै॥ होंबलिहारीतुमपरजाऊं॥ ब
५८ डेहूडभागीगोकुलगाऊं॥ ५४॥ दो॰ मि॰॥ राजसमग्रीदेषकेमृगचरनभरगु
वार॥ यहसंपतपाईकहांकहोकुसलबलिहार॥ ५५॥ चौपाई॥ तुमतोहोहरि
वहीगुवाला॥ हमसोंषेलकियेनंदलाला॥ यहविभवकैसेंतुमपाई॥ हम
सोंयहविधकहोकन्हाई॥ गजरथहयपाइकनहिपारा॥ राजसमग्रीवहु
विलारा॥ वहुरोंरकववचकहिरकग्वालहि॥ नवलागीभयगुललागुपाल
हि॥ नवकोहिजकोचरनलगोनन॥ नवकीसंपतनवङ्नसामडन॥ विध
परमातिमपोपहराजा॥ अगनितसैनावडेसमाजा॥ ५६॥ दो॰ मि॰॥ ग्वालन
मैसंववकहेहलननमनमेमनपराइ॥ पुनगोकलेवीग्वारनीहरिपहिआईआ
इ॥ ५७॥ चौपाई॥ नवव्रजमेंहरिकीसुधपाई॥ आपहैंकुरुषेतककाई॥ भ्रव
ननपलोकुलकोनामा॥ विसरगयेग्रहकेसभकामा॥ सुनपतिननव
लीननकाला॥ अभरनचीरविसरगएवाला॥ इकलिपपपआवतस्तन
लागे॥ गवनलिपकपककेआगे॥ इकआधोसिंगारवलीतन॥ पगनपर
पहरेग्रीवासन॥ कारपोंचनलेपगनवनाई॥ अलिआकुलआबरउ३०धा
ई॥ ५८॥ दो॰ मि॰॥ पकनगहलेपननजेरकननजेरसनाव॥ इकलिपकरहे
हननमीरहेवनधाईकाक्र॥ ५९॥ चौपाई॥ रनलपटीपीननइकग्वारन॥ ति
हलिपकोरकलगीलिक्षरव॥ रहस्यवमरनहिहरिगुघरसइ॥ देहस
हकीरत्रीपनिपरसइ॥ बोलीग्वारनस्रुनमनहीनी॥ इषवृहतुमकों\

किहूहीकी ॥ जबसुरूकुलचरनहूहियारे ॥ कोरजननमग्रहमैलउ
लारे ॥ अंतहूकरलसहुहैक्जाई ॥ जबहीहरसनहोइककाई ॥ चलिणाव
गनिधिरसेगुरारी ॥ निरषहोइसचरहहमारी ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ मुदित
वलीसभहूजवधकनकणारलियहाथ ॥ तिनमैंदीपकक्तुहमरथ
माछनसुकुलसाथ ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ परसोआइवेगनंदनंदन ॥ निरषन
भयोविरहदुषकंदन ॥ विकसनवदनभईमनहरषन ॥ उमारीआरती
रमापन ॥ मिसरीमाषनरेलगुपालहि ॥ छाबहुमषरीजैहूजबालहि
कौनलेनघाननवनबनीना ॥ सुबहमरेलहाथकाइीना ॥ हमकोंहियो
विसारमुरारी ॥ आकुलविरहदुषीब्रजनारी ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ रासविहार
विसारगएषेलकिपेहमसाथ ॥ अबआवनहैलाजसनभएहारिकाना
थ ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ करनकेलसमकालिंदीतट ॥ बछुचरावनतिहवंसी
वट ॥ तेदिनतुमकोंचितनआवत ॥ अबतुमभएनृपतहारावत ॥ बा
लचरित्रहनेसभभूपिपत ॥ उपनीहियेंप्रीतत्रिभुवनपत ॥ सोलहसह
सहूनीवरनारी ॥ तेसबविसरगईगिरधारी ॥ विसरीमातपितासेना
मव ॥ देवेगोकलकीग्वारनजब ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥ हमबासिनकोंभेटहेतु
हितमएनेहलाल ॥ जोजिहलायककहोतहैहेतनभएतनकाल ॥ ६० ॥ चौपा
ई ॥ कुसलसहश्कीआनंदभए ॥ मिलेपरसपरसभडुषगए ॥ वचनक
हेपुनिनंदजसोमत ॥ हितहुलपाकरषुवनजगतपत ॥ हमकोंहर
समेडुषहपो ॥ प्रथमेहुषहरेकेतनजगपो ॥ वहिपेपुत्रसदासुषकारी

ज·श्र· मातपिताकोआज्ञाकारी॥ कहुसमेपितुधर्महढावै॥ सेवाकरैम
भा· हासुखपावै॥ तुमहरिअपहारकाराजा॥ दियोविसारसकलसुखसा
५५ जा॥ ५१॥ सो॰रा॥ तुमराजामहारावतीविलसनहोरसभोग॥ महादुखी
हमलोगहतआपतविरहवियोग॥ ५२॥ चौ॰ई॥ कहलकहैसुननंर
जसोमन॥ पुत्रभावजियतनदूविमलमन॥ सुनतइसनेहहतनजदूसुकमं
ही॥ हमरामातपिताकोउनाही॥ शत्रुमित्रसुखएकसमाना॥ सीतउस
समतापदहिवाना॥ नसहरेनेरकमलवचमने॥ दुषितवियोगसीसकर
धुने॥ गदगदभएसोगतनमेंअत॥ दुषसमुद्रवहेजनहिनिकसत॥ जो
कंकुभेरकमलकीलीनी॥ सोसमभयेरगुपालहिरीकी॥ ५३॥ सो॰रा॥ विं
तावहीअपारअलिनिंरमसोयेगवाल॥ नवरेवकीविहारकेवचनके
हतनिहकाल॥ ५४॥ चौ॰ई॥ सुनतजनमनपहवचनहमारा॥ यहस्रु
वनासीअगमअपारा॥ रनकानहीकोउपितुमाता॥ अलषपुरुषहुषय
हजगविधाता॥ भक्तअधीनदीनकेनाथा॥ सदासहाइकरनजनसा
या॥ पाकीगतनलषसकैनकोई॥ आदिनअंतपुरुषपहसोई॥ यह
मियंमानमनदूतमसोगा॥ कनतदुषपावदुविरहवियोगा॥ भक्त
नकेवसमसरागुरारी॥ निहचेमानहवानहमारी॥ ५५॥ सो॰रा॥ अंत
रध्यानधरोसदायेअविनासीप्रीत॥ कुरहहविरहदुषहंरतेंभमसदजो
गकीरीत॥ ५६॥ चौ॰ई॥ नवभाषवचनसुमनराखी॥ जोगजीतहम
सुनीनजानी॥ जोगध्यानधरजोफलपावत॥ अगमअगोचरनिरा

मवनावन॥ सोसरूपहमनिनषनरेषहि॥ परसाकोगहिहैनननिमे
षहि॥ कमलनैननपीतांवरधारे॥ सुषमरलीकुंजलहुंतुरारे॥ कमलकु
टीगुंजाविवषवनन॥ वैजंतीमालाधारेनन॥ मोरकिरीटसीसपर
सोहै॥ उपमाकहिनसकतकविकोहै॥ ५०॥ दोहरा॥ पगनपुरकटिकिं
कनीकुंजनवरावनधेन॥ कोरजोगवारनकरों यहहमषनिरषोनेन॥ ५१
चौपई॥ जोगकियेंफलआवैहाथा॥ सोफलसदाहमारेसाथा॥ श्रीहंरा
बनचंदसंगसुरू॥ जोगसरूपनआपनहैसुरू॥ श्रुंदावननगनलेमगरल
वनावहू॥ हमनजोगकेरूपमहिपावहू॥ सुहपनामस्वरूफलकोसा
दा॥ निहनजसकउरजहिरसवारा॥ षोरनमहकोमलनिरारष॥ सि
हूनहोतकोउपरमारष॥ भक्ताउनहिहियेंवसावन॥ जेनरमनमन
नमहुषपावन॥ ५२॥ दोहरा॥ एतेववचनसुमनकेहपरेहेवकोकान
हूदेविचासोकहलतवरनकेउपजोतान॥ ५३॥ चौपई॥ मायाहरूकरी
गिरधारी॥ हजवासिनहगोरविनासी॥ समनकहोहरिप्रगटारी
जै॥ करूनाकरहु सकलदुषछीजै॥ महमनकोंराषोलिहसोमर॥
औरसभनकोंविरहकियेंहरि॥ निहपाछेंहरिसुषकियेअति॥ हीनी
हसमहसगोविधवन॥ पंचसहंसरहियेसरंगा॥ सहसअठाईसेनम
नंगा॥ अरुपातपाहंबरधारी॥ दानकियेतुरुषेतसुरारी॥ दा॥ श्रीरूल
उ०व॥ दोहरा॥ देवकिजनसुमनरोहलीहकमनहसनसुरूवान॥ सक
लकुहंवतुलाइकेकहोजगानकेनात॥ ५४॥ चौपई॥ हलानपुरमहि

स॰ प्र॰ हपहलनकीजै ॥ कुंतीकीआग्यापुनलीजै ॥ सेवाकरहुभावजियहर
भा॰ षत ॥ करहुप्रसन्नवहुरअर्जुनसुत ॥ पांडवहैंसभममकहुमारे ॥ हित
५८ कारीसुहिसमतेंप्यारे ॥ महाप्रतापकरनहोंइनको ॥ रखकहोंसुसदा
निसदिनको ॥ गजपुरमहमंगलअतिभारी ॥ दससहंसगावलवर
नारी ॥ वहुप्रकारकेअरदुनगीता ॥ कुंतीआदरसुवनिकरप्रीता ॥ ६३
दोहरा ॥ सभसुवनितिनकरधरलिपकंचनपात्रअपार ॥ तिनमहिहीरी
पकचौसुखेनगनमोनदुजिपात्र ॥ ६४ ॥ चौपई ॥ चंदनअक्षतफलम
हांवर ॥ सोभनपात्रसुवनिलीधेंकर ॥ नहांरहोतुमआज्ञाकारी ॥ कुंती
हैंहमरीमहतारी ॥ मोहसभरावहनजानजिय ॥ ताकीसेवाकरहुस
कलनिध ॥ जैसुनकहेहनहभूपाला ॥ ऐसेवचनकहेनंदलाला ॥ पु
नश्रीअइमनकोसुतुलायो ॥ सकलकडुंवनिकरवैवायो ॥ सुनहो
नानसकलसेनावर ॥ प्रजाकरियेनृपसयुधिष्ठिर ॥ ६५ ॥ दोहरा ॥ रक्षा
कीजैअश्वकीनहांसुरेवहुसर ॥ महापराक्रमजोरातुमनववानहि
पचनर ॥ ६६ ॥ चौपई ॥ तिहंगांवालवुहनहिकीजै ॥ हैरागाअयपीव
गहिटीजै ॥ जोतुमपीवदेहुसंग्रामा ॥ लखनसकलजादवकुलतामा
लोककहेंतवगीरधरकोसुत ॥ रनतेंभाजोसभसेनासुन ॥ जोतुमक
रहुपराक्रमभारी ॥ जादवकुलवीरनउजियारी ॥ तुमपरावलअर्व
ननहिरेखो ॥ महावलीपांडवतुमपेखो ॥ आगेतुमआयोनहिगज
पुर ॥ परमोनाहिननृपननुयुधिष्ठिर ॥ ६७ ॥ दोहरा ॥ जोआगेआयोहु

मो गजपुर मैं इक बार ॥ भीषम धर्म दुहावन बैठि जिय सुखद अपार ॥ २५ ॥ चौ
पई ॥ भीषम तन तजन सरवर तुरगायो ॥ दुख उतन दुद्ध मग सुलिन सम भयो ॥ सब
गजपुर समहि धर्मराज सुत ॥ सुम बचन भाषत सुधर्म युत ॥ कौन भेस बावि
विध प्रकारा ॥ मानली जिये वचन हमारा ॥ जैसे मैं करि हौं तप सेवा ॥ जैसें
तुम पूजहु गुरुदेवा ॥ मन तुम तप इह सुपने जिय ध्यानहु ॥ सभ तें बडा सु के
पहिचानहु ॥ तुम राव सु धर्म युधिष्ठिर राजा ॥ हम राभ गात न करहु तिह काजा
२६ ॥ दो० ॥ धर्मसुत नम मय भक्त महि मयार है सविधान ॥ मैं अधीन ताको
सदा मानहु सम सप्रमान ॥ २७ ॥ चौपई ॥ जिन हं मोहि भक्त करतो को ॥ किसो
अधीन मोहि सब लोको ॥ उचत तुम महि प्रियघुम्न सरवर ॥ इहू लक्कीजि
पे राइ युधिष्ठिर ॥ जैसु न कहे है सुन नृप पाला ॥ ऐसे बचन कहत नंदला
ला ॥ रूप तम युधिष्ठिर भक्त हमारा ॥ सेवन सुफ कौं विविध प्रकारा ॥ ताकी
सेवक रहु सभ सेना ॥ हृदय धार ली जहु सुफ बेना ॥ मैं आगे जे हौं हसत नपुर
इरसन परसौं तप इह धन उर ॥ २८ ॥ दो० ॥ पाछे सभ सेना सहत तुम आव
हु तम काल ॥ सुफ बिन इक पल कलप सम बीतत धर्मसुवाल ॥ २९ ॥ चौपई
पहकहि वेग भए असवारा ॥ हेतत रंग पचढे सुरारा ॥ तन सेना एकलो
सिधायो ॥ तिम बउक महि गजपुर आयो ॥ बैठे ईहं हि जिन धर्मसुवालहि ॥ मग
महि आइ मिले नंदलालहि ॥ पगरे आइ कमल पग लागे ॥ कीरत करत नहि
पे अनुरागे ॥ दुर्लभ भक्त समदर्सन भगवाना ॥ सहज जे भयो धर्म राजाना ॥ हम
हैं तुम रे विप्र भिखारी ॥ तुम नहु अब बनवे नती हमारी ॥ ३० ॥ दो० ॥ यतक

सं॰ग्रं॰ रतहैंजोनरपतहहेकामनाधार॥तेपावतफलस्वर्गतघकर्नेनतहे 113
भा॰ विचार॥२४॥चौ॰ई॥पुन्यभोगपुनपहमगआवत॥पुनपुनगर्भजो
५८ निदुषपावत॥राजसगुणमेंजगपकरतहै॥स्वर्गभोगगिरधरनपरत
है॥तमहीहोकरतानुगजोमी॥तमहीअवहहरताकृतभोगी॥लेनदेन
हारोतममहीप्रभ॥तमकृपालमषसिद्धहोतसभ॥सफलजनततिनजोत
मजानत॥अफलजनतमोतुफलपछानत॥अगनहोउकरतेजगमांही
धमहोतनहफलकछुनाही॥२५॥दो॰ना॥करतअहेकतहियविषेज
गकिरैहैंमोहि॥तेपावतहैंस्वर्गतघदेषतनाहिनमोहि॥२६॥चौ॰ई
उरफलककफलतमहिविसारत॥नरपुरतेगिरधरनीपारत॥जततुम
नहितुककोंअरपत॥हरेभाउधरतमहिनचरचत॥अग्रहोउधमरिष
करते॥बांछतस्वर्गवहुरागिरपरते॥जगपकरतहैंहिजकुसलाता॥लागे
कहनपरमरवाना॥अग्रहोउफलजगपुणवर॥सभहिजनहिसंकलह
सकर॥हरपुरकीजियतजियेआसा॥भुगमिलेपुनहरिपुरवासा॥२७॥दो
हरा॥तमविचारीपुरुषवेजगपकरतबहुदान॥करतनवेदनहरविषे
पावनसुकमप्रमान॥२८॥चौ॰ई॥पहउपरांतजगपफलदाना॥संकलपहिवे
हलप्रमाना॥तनवचभपयसत्रसुरारी॥हिपेसुकमफलहिमनविचारी
तिरअवसरसंन्यासीआवे॥मुनिवरहेषिबुद्धतसुषपावे॥नमसकारक
रतौवमये॥हर्षसनपर्वसकलइषगए॥लागेअसतजनकारनरमापत॥आ
दिनरातमातमतिभुवनपत॥अविनासीतमसुरषसुरातन॥भक्तहेत

सुषबतारधसोनन॥८२॥दो॰चि॰रा॥आद्यमुनीपुरुषनमलीनोनरअव
मार॥जगतउधारनभक्तहितमहीउतारनभार॥८३॥चौ॰ई॥भगतअधी
नरीनबांधबहरि॥बलिद्यायोहितनृपतिजुधिष्ठिर॥कृपानिधानसा
मह्लषहाई॥भक्तबछलसुषदहरनकर्लाई॥नरसरीरधरकमहितआ
पो॥पुगवहपुरुषहपाजगआयो॥चौरासीलक्षजनतनवीकर॥तिन
महिमानसजनममहांवर॥पावनसीढीचारमुष्टकी॥साधनसभवि
धन्नोगजुगनकी॥मारगमुकतभवननकीमाई॥मानसबमसीढीच
दिखाई॥८४॥दो॰चि॰रा॥जिननममरासिमरनकियोमहरबढ्योसुधाइ॥जिन
हेनामबिसारियोमरजनमहिदुषपाइ॥८५॥चौ॰ई॥मानरदसमसीढीते
गिरई॥पावहिनरकबनबहुफिरई॥सरपहारणकोहासमहरि॥नहिसि
मसोनरदेहधारकरि॥यहसभबचनमुनीश्वरकहे॥पमलकरहरके
पगगहे॥कृपाकरोतुमधमसुनीश्वर॥नारायणकोरूपतपीश्वर॥पर
महंससभरूपतुम्हारा॥मानसरोवरदेहहमारा॥बिचरनभगतहंसकी
माई॥होतसरोवरछबिअधिकाई॥८६॥दो॰चि॰रा॥मानसरोवरदेहममअमे
हंसकेरूप॥तिनबिचरनहैंपानकरउपजनकांतिअनूप॥८७॥चौ॰ई॥मे
नरमोहिभक्तमहिरहही॥तिनप्रतिमुक्तसोसोभनकरहीं॥भक्तिजुपि
छिरसाइकरनहै॥सोभाहरिकीदेहधरनहै॥इनकेदर्सनकीमुक्तआस
मुऊबिनउनकेश्रवरनआसा॥संध्यापरतनाइतनकाला॥बिदाकिये
मुनिबरनंदलाला॥बलआयहरिनगरहिद्वारे॥देषाअद्भुतमनसाजिप

भ॰ प्र॰ धारे॥ कलसुकेलोहेषहसीइक॥ कयोसबीसोंवचवानीपिक॥८५॥
भा॰ दो॰ह॰॥ मोललियोहैभगवनहितधर्मसुतराजान। चलआयोनिजएक
५८ लोसेनानजनतिसान॥८६॥ चौ॰पाई॥ निरषकमलरविकोरसकासा। जुव
मनकरनपरसरहासा॥ सोलहसहसभवनमहमारी॥ रूपननहोन
हियेंगिरधारी॥ अवलोहेषनअवरनिषनकों॥ कवहूनसोंनहोनहैम
नकों॥ एककहैंसषियोंनहिभावहु॥ एकरुषपुरानतनपहअभिलाषहु
निराकारभगवननहितकारी॥ तातेमानसकोवपुधारी। एककहैंजोपु
रुषपुरानन॥ कतिउपजावतपुत्रपौत्रगन॥८७॥ दो॰ह॰॥ एककहैंहमजा
निहोंयहमोहमीमीन॥ सतभामाहितइहतेलियोकलपतरुजीत॥८८॥
चौ॰पाई॥ एककहैंउमसहिनकोवालक॥ वशकियोजसमनमथतणालक॥ क
हैपरसपरवचनउचारी॥ निरषतरूपविपतनहिहारी॥ नियवचसुनन
हसेनंदनंदन॥ आगेचलनतभएजगवंदन॥ पुनपुरकेओसनजुआए
निरषनकमलसभनसुषपाये॥ हमराजनमकजारूपभयो। करुनाकर
हरिदर्सनदयो॥ करप्रनामअसुलनवहुकरई। वारंवारकमलपगपरई
८९॥ दो॰ह॰॥ नमनगपवनतसफलेभएपतहोमयअरुतान॥ आयेहरिजीमया
करजिहमुनिवरनिमधान॥९०॥ चौ॰पाई॥ वटलरंगएकलोआयो॥ रूपन
प्रसादरदर्सहमपायो॥ कियोकनारषसभहलनपुर॥ धम्यधम्यहिजकहै
मुधिष्टिर॥ उधसोआपलोगनिसालो॥ निहहितहरिगजपुरपगधारो
मैमुनकहैहमनोजनमेजा॥ सुरतकोरकमलकोतेजा॥ कहोंकथासुनहित

116

विनलाई ॥ अश्वमेधहूनहशमो ध्याई ॥ २१ ॥ दो० हरा ॥ इति श्री भा० द० प० लो

अश्वमेध ध्यान ॥ ३६ ॥ दशम ध्याय कदि दि कनक वन व न ॥ ७० ॥ श्री म वउ

व ॥ चौपई ॥ जे सुनके है मनद्रकुरताई ॥ गजपुरकिये चरित्रिक काई ॥ जे

सबके हों श्रवन सुनतीजे ॥ हलकथा संत्रन रसपीजे ॥ जो बहिजनकर

चलेगुपाला ॥ तमरी गन करि हों ननकाला ॥ मागधमारवइ तन्तुरिआए

परतेक विनकसमन भाये ॥ अस्तनकरनअनेकप्रकारा ॥ श्रीपति को म

सअगमअपारा ॥ धर्मराजके जगयकाजहित ॥ आये हो हरि महा सुदित चि

त ॥ दो० हरा ॥ बहुप्रकार कीरनसुनी श्रीपति भए कृपाल ॥ कंठमाल गज

मुतिन की दई उनार गुपाल ॥ ५ ॥ चौपई ॥ पुन आगे कों चले मुरारा ॥ आए ह

स्लनपुर के हारा ॥ तहां नरी नदुवे वदूआए ॥ पहहू भरवनतनह विरवनाए

रिखलान गनरेहु विचारत ॥ गावनजे व आवन मनिरतत ॥ कहलवंददेख

ततिहमए ॥ नदी करा कवं कदगदये ॥ भेरमाउनै सी हिवरावन ॥ लाननरं

गरंग उपजावत ॥ नदी के है मन श्रीनंदनंदन ॥ तमनो मीनलोग जगवंद

न ॥ ५ ॥ दो० हरा ॥ तमलो भेष्ठ फलैन पर त्रिभुवनपति भगवान ॥ भवर भए

हैं हग लमहि मो सुख कमल समान ॥ ५ ॥ चौपई ॥ बने हलचक्र भगवाना

सोउ चक्र हं हरायुन सामा ॥ पक चक्र सों जगमुरकानो ॥ मोहित समैन

सुलपकानो ॥ है पग नुपर कालिन रसाला ॥ है कर कमल निविध विसा

ला ॥ जो हमरे चक्रन को निरखत ॥ मुर्छित देह करहग चितवत ॥ जैसे

तुम अवरे चलभाने ॥ ताहे हो लाल चलल ललचावे ॥ तमकर चक्र सुदर्सन

117

अ०अ० सोहै॥ याभाकोरसर समजो है॥४॥ दो०॥ हमरे चारों चक्र इत्रीक
भा० भए भगवान॥ ग्रवै ब्रह्मा रे चक्र सों पावैं मुक्ति प्रमान॥१॥ चौ०॥ चक्र सु
५१ दर्सन की धारा वर॥ जाको लगे सर्व दुष लिह नर॥ आपन होइ कुल को
लोका॥ किलविषन कर मिटहि नहि सोका॥ सोलष हमकों ग्रव ही दी
नै॥ कृपानाथ करुना प्रुहि कीनै॥ भए प्रसन्न हर से गिरधारी॥ करी कृतार
थ नस्त्री नारी॥ मुक्त होइ पुन गर्भ निवासा॥ कोहि वचन पर ह हाल प्रकासा
जो कोऊ निर्नै करे मुऊ आगे॥ हरषन कै पन गन ग्रुत रागे॥५॥ दो०॥ हम
रे आगे फिर न जो करे सुदिन मन भाय॥ ताकों देहों मुक्ति वर गर्भ जोनि न
हि पार॥६॥ चौ०॥ सो नर मन वांछत फल पावै॥ निर्नै करे हमरे गुन गा
वै॥ मगन होइ प्रुऊ मैं आन मरनि॥ मुक्ति होइ पावै मुक्ति निज धनि॥ जैमु
न कहै सुनो भूपाला॥ ग्रव आगे पहह कथा रसाला॥ मिली आइ पांडे की से
ना॥ संज्ञा कही परत न हि वैना॥ हरि स्राप दसन धर्मज राजा॥ सभा सहित
हर्षित सुष साजा॥१॥ सो०॥ सेनापती ग्रपार सभा सहित तह सिलोक कों
मनवांछत सुष सार ग्रापत भयो जुधिष्टरहि॥ ॥१॥ चौ०॥ हुइ भोरि नि
सान बजावहि॥ विविध प्रकार तमंगल गावहि॥ मुदित चले सभ कुला
लेन कों॥ सुषसागर नगर मनु मोरे नकों॥ चित मह चार तनसन से पंडित॥ पा
ठ करत नहि नवपत्रांध दिन॥ कंन्या हली पर ग्रुसवारा॥ गावत गीत सुमं
गल चारा॥ निह पाछे मस पटन भार वा॥ गान करत गंधर्व महांसुर॥
निरत करत ग्रप्सरा ग्रपारा॥ ताल मृदंग संभ कनकारा॥ ॥१॥ सो०॥ वा

118

मनेहैंपवनतरपुनसंखसतसखरअपार॥ जोवजंत्रसभजगविषेवरनत
अनेकप्रकार॥ ११॥ चौपई॥ पांचतमगिरधरकरधाते॥ अधरतधाधरस
वरउचाते॥ जैसेकारककरनसभलागे॥ वर्षनअउतमसअमरअउरागे॥
हलनपुरमहिजोनरनारी॥ देषनधाएसभगिरधारी॥ जोजैसीमनसाक
रआयो॥ तिहतैसोदर्सनदरसायो॥ तवविचारीअधिअभरामा॥ तेकहि
हैंपहआतनमरामा॥ कामनिकामरूपअवरेषो॥ प्रनामहांसचीपतपेखो॥
१२॥ दोहरा॥ विबुधनिरषअलतनकरहिवर्षहिकसमअपार॥ गजपुरम
हिमंगलभयोआएजवहिमुरार॥ १३॥ चौपई॥ अतिआनंदपुरीमहिभयो॥
हरसविलोकसकलदषगयो॥ जैसेमंगलपुरिरघुराजा॥ तैसेआनंदव
ड्योसमाजा॥ कैंतककहोनभयोजोरघुपुर॥ तैसोसुषभयोपुरीजुधिष्टिर
पुनजनमेजयप्रश्नकियोनव॥ जैमुनकहोकथारघुकीसव॥ कैसेरघुपु
रआनंदभयोअति॥ भाषहुसकलहलालतमुनीपत॥ जैमुनकहैहेसनदकु
रूनंदन॥ कहहुकथाअवश्रोतनिकंदन॥ १४॥ दोहरा॥ आत्मगानतनविद्या
रथीगुरुपहपठिनासोइ॥ वियासंभ्रमनपढीग्रंथनराषेकोइ॥ १५॥ चौप
ई॥ हाथजोरतवतोगुरुआगे॥ बोलतवचनदीनअनुरागे॥ श्रीगुरदेवकृ
पागुरुकीजे॥ पथासक्रमुहिरकुनालीजै॥ तुमतोसततगुरुमहांप्रवीना
हमतोहैमितिवक्रअतिहीना॥ गुरुबोलेहनशिष्यहमारे॥ तुमअतिदीव
नलघुबयारे॥ जायकरहुअपनीप्रतपाला॥ हमरीआज्ञाताहुमसनवा
ला॥ शिष्यकहोगुरुतवचरनलीजै॥ विद्यासोहिसफलकरीजै॥ १६॥ दो

सं॰ग्रं॰
भा॰
६९

दोहा ॥ सुनगुरुसीबिनदछिनाबिद्यासफलनमोहि ॥ यथासमर्थ्याता
करोअज्ञाकरिहोंमोहि ॥ ६ चौपई ॥ गुरुबिचारदेख्योमनमांही ॥ इनके
नोसंपतकछुनाही ॥ बहुप्रकारकहिकहिसमझावै ॥ ताकेहृदेनकछु
टहरावै ॥ पुनपुनगुरुप्रतिबचनउचारै ॥ कहहुदछनाप्रभूहमारै ॥ को
प्योगुरुदछनासुनलीजै ॥ एकभारकंचनगुजरीजै ॥ सुनसेवकचिंता
वसभयो ॥ तबगुरुबचनश्रवनसुनलयो ॥ मगमहिइकतरवरश्रमि
तमा ॥ जिहतनरुवैगकियोबिश्रामा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तिहअवसरइकसाधु
मनआयोभयोकृपाल ॥ लिपोउठायजगाइकैसौंचिंतातुमबाल ॥ ८ ॥
चौपई ॥ तबश्रवणतेसुनबचनउचारे ॥ आज्ञाकीनीगुरुहमारे ॥ मांग्योकं
चनकोइकभारा ॥ तातेंमुझमनकेचिंतअपारा ॥ इतनोइहमकहांतेंल्याऊं
जिहकरगुरुकोंतोखरिझाऊं ॥ संतकह्योबालकसुनलीजै ॥ पुरवैआस
चिंतजिनकीजै ॥ अतिबरजतउहांरघुराजा ॥ तहांजाइदरसनहैकाजा ॥
इतरदछनासवाभारभर ॥ कंचनसोनहिजनआदरकरै ॥ २१ ॥ दोहा ॥ प्र
थमहिवसहिनमानतहृथदरसदेतरसोइ ॥
तहैसमझकोइ ॥ २२ ॥ चौपई ॥ यहप्रथमेदिनदेतहिजनकों ॥ नागरपानरसवर्नकेपाव
निमंत्रितजिनकों ॥ भोजनकरदछनाहिमलेही ॥ बहुरोंकरवि
हीं ॥ सुनहिचलोबालकतनकाला ॥ सवाभारकंचनकोरहे
मांहिदमोरघुराजा ॥ प्रकटनहिजमआयोनिजकाजा ॥ आनंदरूपीभुइबिसाला ॥ जिहपुर
मनपाहि ॥ मततहमांतहियोसमपनिजकहि ॥ प्रकोआयणाकाहू
होइरयोमघहिवसकाल

को॥सुननवरीअतिविंनबालको॥२३॥दो॰॥तबद्विजआयोनग
रमहिकीनोहारप्रवेस॥देषअप्रसबविप्रकोंकियोप्रणामनरेस॥२४
चौ॰ई॥द्विजकोंठौरदेहनपभाषो॥आदरसहितविप्रकोंराषो॥बहुबि
धद्विजकोंपठोअनाजा॥माटीपात्रपगहियेराजा॥सोकबढ्योद्विजकों
मनहूंतें॥माटीपात्रविलोकनहूंते॥जिनरहीनेवासनअप्रुकअैसे॥सबाभा
रकेंचनदेकेसें॥विंताबसत्राभ्रमणाकोबालक॥खुराजाआयोनिहकाँ
लक॥हायमोरबालहेद्विजआगे॥भाषतबचननरूपनअनुरागे॥२५दि
मसुनकेहसुनहुरघुराजा॥हमतोपैआयेकिहकाजा॥गुरुमांग्योकंच
नकोभारा॥नोतेंचलआयोतुमहारा॥जबलगगुरुदछनानहिदेहों॥समझान
नवलगमलभोजननहिलेहों॥यहजियप्रणाम्रुकअपनेधारा॥प्रथमेकविकरभोजनकी
रूपबचनहमारा॥कह्योराइबालकसुनलीजे॥ऐसेबचनकहेब्रह्मणकों॥२६॥दो॰॥रा
मे॥दुरनहोइमनोरथमनकौ॥सबाभारकंचनद्विजहिअबहीं॥
मेसतिबबुलाइकैकह्योहलोनबषान॥हमरेगृहहकंचननहिरयो॥
हीमैअन॥२७॥चौ॰ई॥राजेसोंमंत्रीबचकह्यो॥सोसभलुमहीनोहिजदाना॥देकएकनहिहेमपं
स्वर्नभरेयंरारषजाना॥राजाकहैसविवसुनलीजे॥हमकोंवेच
शारे॥सममानरूपबचनहमारे॥हमकोंवेचहिलेवेकोऊ॥मं
कनकद्विजरहीजे॥राजाअरुरानीहमरोऊ॥२८॥दो॰॥राजाभा
अीकहेसुनहराजाना॥यहविधिरेषीहतीनकाना॥मंत्रकहइनहेंएककनलकरतिहमनोरथ
नीमोलकरलेनसमर्थनकोइ॥

ग·ग्र· होइ ॥ २९ ॥ चौपई ॥ महा धनाढ कुवेर भंडारी ॥ तिह पर करइ वेग अस-
भा· वारी ॥ ताकों जीत सकल धन लीजै ॥ तजइ विलंब यही छिन कीजै ॥ उ-
८१ धम कियो गुरु कों तन छिन ॥ पठो हत तिह गेर नहीं दिन ॥ हतन हलोन
कुवेर हनायो ॥ हनन कुवेर ग्राम जिय पायो ॥ इमरा बलन हि राजसमा-
ना ॥ पदचावों धनुहि पैंइ राना ॥ मेघ रीन कंचन वरषायो ॥ रघुपुर महि
आनंद वढायो ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ उठ प्रभात देषत भए कंचन भयो अपार ॥ पू-
रह्यो सभ नगर महि आंगन गली वजार ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ दिज सभन बोल-
लियो रघुराज हि ॥ कंचन वरषो तुमरे काज हि ॥ यह सभ धन तुमरा
दिज देवा ॥ लीजै सकल करइ गुरु सेवा ॥ आनंदन रूप दिज पग लागा
महां प्रसन्न हि पंच अनुरागा ॥ आत्मा कह्यो धर्म रघु भूपत ॥ तुम ब्रह्म-
लम सैव धर्म रत ॥ जिन नो धन मांग्यो गुरु समुझते ॥ जिन नो है मलेकन-
पम कर्ते ॥ औरन कंचन हमरे कामा ॥ सम मान जिय परम अभिरामा
३२ ॥ दोहरा ॥ तुमरे बल धन पनइ सो कंचन वर्षा कीन ॥ लियो जन महां-
भार इक सो गुरु कह्यो प्रवीन ॥ ३३ ॥ चौपई ॥ एक भार कंचन भर लीनो ॥
अवर सकल रूप कों तन दीनो ॥ बालक पउले गुरु तै पै आयो ॥ हरई हकन
जिय सम धपायो ॥ भयो अनंद पुरी रघुरामा ॥ कहि न हि परत सुष सुष घट-
समाना ॥ वांट दियो कंचन नृप लोगा ॥ वस्यो अनंद रह्यो नहि सोगा ॥ वे-
सो मंगल गन पुर भयो ॥ कमल विलोक सकल दुष गयो ॥ जै सुन कहै-
मन दइ करताई ॥ वहुर कह हत हां कथा कहाई ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ रूपा सरस

अरभुतनकथासुनहुश्रवनकुरुराइ॥गजपुरकियेपैचरित्रहरिकहों
सकलप्रगटाइ॥२५॥चौ०ई॥हस्तनपुरमहिकियोप्रवेसा॥सुनप्रफुलित
भयोधर्मनरेसा॥सकलपुरीमहिआनंदभयो॥गृहगृहमंगलतुरहरि
गयो॥सोभनभयोनगरकुचवअरपुन॥हृष्टपरनलागनकंचनद्दन॥धुमा
मलीनहुलोजोउमंदर॥सबलागननोउभवनउपरंदर॥कृपाकराकुचिसो
पुरलोकोंहरु॥सोभनभयोस्वर्गतेंअतिवर॥पुनरक्षाकीनीजियगिरधर॥
माऊंसकलमिलाऊंजुधिष्ठिर॥२६॥दो०॥समभउहुंवसेनासकलपाके
कारगुपाल॥आपएकलाउठचलोहृदयपरचढमंदरलाल॥२७॥चौ०ई॥वे
गजाइहरिआयनभए॥पांडवदनकमलविगसए॥प्रथममिलेधनरा
हृदकोंहरि॥नोघकियोपुनलियोअंकभरि॥निहपाछेहरिविदरभक्तको
कंठलगाइमिलेअतिरुचिसों॥पुनहरिधर्मसुतकेपगलागे॥रूपहरीअंकभ
सोअनुरागे॥मनकवमननरपहरिहितसों॥आनंदआंसगिरनअमित
सों॥सोमदरनपरलहरिमुखपर॥हरिजाननतदियअर्जुनजुधिष्ठिर॥२८॥
दो०॥निहपाछेकुंतीचरनलागेश्रीनंदलाल॥हितसोंलियोलगाइउर
सुदिनभईतिहकाल॥२९॥चौ०ई॥हरिपगदुपदसुतापुनलागी॥परसत
चरनचिंतसभभागी॥पुनअर्जुनहरिपगलपटानो॥सुदिनसंकनिधपाव
नमानो॥मेटववरनबषकेनलरवर॥धाइपरेचरनांजुगनश्रीहरु॥पुनपग
लगेनकुलसहदेवा॥कृष्णचंदरेनकोदेवा॥वढुराजजुधिष्ठिरवचनउचा
रे॥करुणाकरहरिजनतिलाते॥नारदबकुलसमगरोसंगआनो॥कृपाक

मं॰ भ्र॰
भा॰
८२

रीअस्तुनाकरजाम्यो॥४७॥दोहरा॥प्रजासकलचारोंवरनलायकहोय
भसाथ॥मोपरकरुणाबहुकरीजुममअस्नाथकोनाथ॥४८॥चौपई॥ह-
रिसोंवचनकहतयुधिष्ठिर॥आयेजोवनासनिहिअबसर॥आवत
हौहरिपगलपटानो॥सफलजनममअबअपनाजाम्यो॥प्रभावकीश्रव
नेहतमसाथा॥हमसबरनपरराखोमाथा॥वचनकहेहरिहितनरपति
नउर॥लेआपहमसंगसकलपुर॥मोदवढ्यौकुलपुनचारवरनअब॥ला
पौतमरेमवनिमिमसम॥उग्रसेनआनकोइंदुभवलि॥तीनोरहेहार
काश्यपल॥४९॥दोहरा॥गंगाकेतरकाउसमझआगेआयोमोहि॥वढ्त
दिवसकीचाहचितनरमैनरेखोमोहि॥५०॥चौपई॥राजाश्रुतिसूकानेहरनम
को॥धौलभवनहरस्रमसनरपो॥कुसमभकरोबारबोहतविरवर॥वैताप
तिहवीचरपनहर॥माजमारनीहेपदिमाथा॥प्रजाकरजोबेअसनाथा॥
श्रातालेनयुधिष्ठिरराजा॥मिलनचलोजाहवह्वभसाजा॥अवनगनवाअव
मंडअपारा॥हयगजरथपायककरलभारा॥मोवनासराजाप्रलकनसंग॥
प्रभावतीरानीलीनीसंग॥५१॥दोहरा॥रसमसहसमसुवनीसभगप्रभाव
तीकेसंग॥देखनरुकमनदेवकीहरषवढचलीउमंग॥५२॥चौपई॥प्रस्तुहिव
प्रजासकलनरनारी॥चलेसकलआनंदनिपधारी॥चलेलेनमइकुलकों
श्रागे॥विकसतवदनसकलअनुरागे॥रुकमनिआदसबहपटरानी॥सो
लासहसमअबरहमानी॥तिनकोंमिलनचलीसुवनीसब॥इंदुभिमसबरहे
नग्रहपनकुव॥पिलेजाइसमगंगाजनरपर॥देखोनइकुलसरमहांवर॥

124

पुनचंडोलदेवकीनिहारा॥मणिमुक्ताहलजरतअपारा॥४९॥दो॰हा॥ग
ंगीसोभनकनककीहीरामणिगकिलाल॥मुक्ताफालरचहूंदिसजग
मगजोतअपार॥५०॥चौ॰पाई॥भांतभांतकोवनेचंडोला॥रतनषचितअ
तिअमलअमोला॥राजावरनदेवकीलाग्या॥करीहीनलाहियअनुरागा
ग्याजरिवसवरभागहमारे॥भएहुलारचरसत्लयारे॥कोटजनमफलपा
पतभयो॥करनाकरनमरदसनदयो॥कंतीवरनदेवकीलागी॥क्रमस्रु
षपुनपुनअनुरागी॥बहुदेहीपरीअरुगुवनीमह॥लागीवरनदेवकी
केतव॥५१॥दो॰हा॥पवनपुत्रअर्जुननकुलअरुसमहदेवप्रवीन॥वरनप
रेदेवकीकेअत्तनकुरतअधीन॥५२॥सो॰रठा॥मेत्रवरनअनिषकेतवरन
देवकीकेलगे॥नमस्कारकियोहेतआरतकमनीसभनकों॥५३॥चौ॰पाई॥आप
आपनीभेटदिहिरीनी॥महाप्रसनदेवकीकीनी॥जोवनासराजापुनआयो॥
सुतनदारासंगपगलपदायो॥दसमहसप्रभावतीसंग॥सभनप्रणामकि
योहरषतअंग॥दीनीभेटप्रभावतिरानी॥एकअपुतनरचवरभरआनी॥
वसनअभूषनगरगनअपारा॥हीरामणिमुक्ताहलहारा॥प्रद्युमभेटदेव
किकेआगे॥करतभएदंपतअनुरागे॥५४॥दो॰हा॥वसनअभूषनरतनम
तिवहुविधमुक्ताहार॥रुकमणिसतभामाभईभेटप्रभावतिनार॥५५॥चौ
पाई॥अष्टनाइकाआदिसकललिय॥जोजिहजोगसमसतबांटदिय॥जेतकहैं
जदुकुलकेलोगा॥दीनीभेटरुकमनीजिहिजोगा॥कुंतीदुपदसुतावरनारी॥
सोभहाइदुकुलउजियारी॥तिहिवहुदीनीभेटप्रभावति॥भूषनवसन

भै॰ भ्र॰
भा॰
९३

रतनमणिअगनन॥कुसलचंदकोसभपरवारा॥पुत्रपौत्रनहिपा
रावारा॥सभमिलधर्मराइपगलागे॥कुसलप्रस्नमनतनअनुरागे॥
५३॥दो॰हा॥महासुरवरप्रद्युमनअरुअनिरुद्धकुमार॥वरनपरेन
पधर्मकेआनंदवढ्योअपार॥५४॥चौ॰ई॥अछनारदकाआदिसकलरि
ष॥गावतमंगलचारसुदिनजिय॥रतनेंदुपदसुतानारिनसंग॥जो
वनासकीमारहरषअंग॥गानकरतमनभावतगीता॥हसतपरस
रउपजतप्रीता॥सतभामाअपनेजियधारो॥हरकमनिसोंमिलमंदवि
वासो॥करहिद्रौपदीसोंदुमहासा॥उपजावहिरसविविधविलासा॥वो
लीसतभामावरनारी॥सुनहुद्रौपदीवानहमारी॥५५॥सो॰रठा॥हारागु
रतेंचलतनहीमनमेंउपजीमोहि॥गिरधारदुसंसयपहियेंप्रस्नतहोंअव
मोहि॥५६॥चौ॰ई॥नमितहासरसकेसतभामा॥वचनवनायककहेअभि
रामा॥सोलहसहसअठोतरसोतिय॥नाहिसमनकोइककगिरधरपिय
परानीतेंआदिजुवतिसव॥वसतकियोकिहिविधिरधरकोमन॥तुम
रमोहैपांचभतारा॥कैसेंवसकीनेइकवारा॥सोउपाइरहहमहिवता
को॥कहमहोरवसविधममफावो॥जिहविधप्रेमकीनेवसपांवो॥कह
दसलांनसकलवचसांचो॥५७॥दो॰हा॥सुनहोसतभामावचनत्रम
राचिमनहिठौर॥मोतेंवसनहिहोतहैंनागरनंदकिसोर॥५८॥चौ॰ई॥
तमहोवड़ेतनीपअपमानी॥काहेकोरिसकरहुअपानी॥पककहैंहरि
उननिपपासा॥हमसोंकवहूनकरतविलासा॥पककहैंरतनसोंहरिह

126

सै॥ हमसौंकबैनहिपतैंविकसै॥ एककहैंहरिदैननिरादर॥ हमसौंबैर
अवरसौंआदर। करहोआपसमैंरिसनिसदिन॥ बसनहोनतोमैंहरि\
इकछिन॥ ४४॥ दोहरा॥ बहुरिनचेताकरऊहियवारदरिषकीबान॥\
हरखरतैंआमोऊसमदीमोत्रिभुवननाथ॥ ४५॥ चौपई॥ जोहीपोफलरुक
मनिकोहर॥ तुमसौंनारदकह्योआनकर॥ तुमजियक्रोधकरयोगिरधर
सैं॥ यठतोस्वर्गनाहिंछिनहरको॥ सापोपारजातगहिबरपत॥ बोयोआ
नहारतुमरेघन॥ पुननारदतुमसौंयौंकह्यौ॥ जिनककुरावरियोमिन
लयो॥ उत्तमगोरदानजेदेवहि॥ सहसगुनाआपनकरलेवहि॥ भलीव\
लरीजेहिंजरताना॥ वहहोनवहूसमप्रमाना॥ ४६॥ दोहरा॥ पारजातआ\
हहस्मकौंदानरीजियेमोहि॥ मनवचक्रमनिश्चैतहाप्रीतकरहिहरिलो\
हि॥ ४७॥ चौपई॥ ललचैंदसुरूपारिजातनमरू॥ संकलपहूहीबाहमरेकर\
हिनबाढैबहूतमहिपारसर॥ नवतमलेहुफेरमुक्तैहर॥ तुमपहवा
नसत्वकरमानी॥ नारदकीवतिपनपतिपानी॥ नवतुमनललीबोनि
महापा॥ मनमहिपोरिषकौंहमनापा॥ हरिबोलेवालोनारदमुनि॥ नव\
तुमकह्योवचननारदसुन॥ गिरवरधरहिफेरमुकरीजै॥ कृपारूपक
दाममुक्रकीजै॥ ४८॥ दोहरा॥ जेसंकलपनदानहिंजफिरलेवैकोनाहि॥
सेहिमोलरेहिनमसौंनोपविवजगमांहि॥ ४९॥ चौपई॥ जोतुमफेरिले\
हिहरिमुक्रतैं॥ लेउमोलमुक्ताफलमणिकतैं॥ एककोरदरातौनवहरी॥ तोल
लेकूहीरामणिसमकर॥ ललभामामहपनवहूलाई॥ तोलेपारजातनव\

जं·भ्र·
भा·
९४

डराई॥भूखनहोहिंमलमलसमाना॥नवलमनिपषहमनरहराना॥सो
लहंसहंसकुलकीनारी॥समकेअभरनलिपेउमारी॥मणिमुक्ताहल
रतनअपारा॥तेसमकवहूनहोंहिंमुरारा॥९५॥दो०॥भूखनहोंहिंव
कुलसमअभरनचतुरअनेक॥कैसेंहरिसमहोतपहतुमनहिंकियोवि
वेक॥९६॥चौ०ई॥विंतानरतमकोंहरिदेख्यो॥महाकष्टतुमहियअवरे
ख्यो॥मुदितनकीआज्ञानंदलाला॥तमतुलसीदलत्यागनकाला॥तुमत
नछिनतुलसीदलआने॥पाछेंहरहिंपेहरिमाने॥अतिसैभारदलनको
भयो॥मणिमुक्ताउतारतमलयो॥रह्योएककलसीदलपाछें॥तिहसंग
तोलभयेहरिआछें॥सोदलनारदकेकरदीनो॥सुरमनहुअरुहरिफिरि
तुमलीनो॥९७॥दो०॥पुनतुमनेनारदप्रतिकह्यो॥तुमहिंभुलायोमो
हि॥गवनकरहुउठभवनतेंरहोंठौरनहिंतोहि॥९८॥चौ०ई॥पुनतुम
ववनकहेनारदप्रति॥हरहुकरायोपुमममहीपत॥जीवनपलशानको
ज्ञाना॥सोमेंकल्पकरायोदाना॥ऐसीप्रीतनहहकेकाज॥लेसंगचलन
भयोगडराजा॥अवतुलसीदललेसिरधारहू॥उगाहूअवरकोवेगासि
धारहू॥मदुमुसकायरैवतिषचलो॥जिनमुक्ताहलपुनिकलो॥तुम
रेजियऐसीगहराई॥लियामोलरिषतेंमहराई॥९९॥दो०॥कहेहोपटी
ववनपहमनसतभामावाम॥मोललियासिरभारतुमनानहुविधव
नमान॥१००॥चौ०ई॥भाउसहितनहरिहिंपेंनधारहू॥तुमयाभिमानमान
विलारहू॥पहउवारहरिवसनहिंहोई॥कोरउपाउकरैजिनकोई॥त

म हम सों यह वचन उचारे ॥ वस कीने हैं कृष्ण हमारे ॥ प्रेम सहित निहि धरे
गुरु धारे ॥ हमरे सकल दोष को टनि वारे ॥ नव बोली रुकमन पटरानी ॥ १
सुन हो पदी बात रसमानी ॥ हमरे कृष्ण हृदे धर राषे ॥ सो नृप राधा नाम
न भाषे ॥ ५७ ॥ दो० ॥ कृष्ण नृप सोर ध्यान से नृप राधा तोरि रहमो दि ॥ क्रीडा क
र भरतार सों लज्जा आवत नाहि ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ काम रूप गान की नन यध
काई ॥ टीवी है नृप को नडराई ॥ नृप को लाज नेक नहि आवे ॥ पांच कंत
तेल पत नपावे ॥ काम रूप पांचो सरवर ॥ ते नृप वस कीने के से वर ॥ ते
ष करत न पांचों को कैसें ॥ सांच कहो मुकुटो मुकुटें से ॥ एक कृष्ण तें हम सब
नारी ॥ रूप नर है जिस हित हित कारी ॥ पांच पुरुष नृप रक्षक वस कीने ॥ नि
स हित नृप मेरे हरष भीने ॥ ५९ ॥ दो० ॥ कह्यो द्रोपदी वचन सुन रुकमन
हिये लगाई ॥ सम वचन उमर कह्यो सकल हमतें न सुनाई ॥ ६० ॥ चौ० ॥ भी
षम सुता सुन दु कुसला ला ॥ को नसं भार दु यपनी वाला ॥ ध्यान दियो नृप म
कों सिसुपाल हि ॥ नृप हि विचार कियो न न काल हि ॥ एवं काम की शाक
जा हि नर ॥ सो नृप नाय न सके सों न कर ॥ कोर मैं नकी शाकि मइ वर ॥ पर
जियत मान कियो पति गिरधर ॥ एक पुरुष तें नृप मन जागी ॥ तो तें आहे सा
रंग पानी ॥ हम कों भाव दू पांच भतारा ॥ कोर पुरुष सम कंत न नृप सारा ॥ ६१ ॥
दो० ॥ कहि रुकमनि सुन नहि पदरी पांचों नृप रे नोहि ॥ कंत नृप मैं हिय पावि
यागि सवर धर पति मोहि ॥ ६२ ॥ चौ० ॥ टोना टापन कियो ध्यान को ॥ लीनो
वम का जगत नात को ॥ हमरी विनव नक रनन इक ढिन ॥ ढाढो रहनहा

अ॰ ग्र॰ रहमनिसदिन॥ मनहरलियोलमहिनंदलाला॥ पांइवकुलहिश्च
भा॰ धीनगुपाला॥ कहैहैंपदीलनरुकमनहिन॥ पांचोमहीकामहम
६४ रेकन॥ धर्मराजमुजकोंहालोजव॥ रीमीहाघइमासनकेलव॥ सभा
मांहिमोकोंलेगए॥ निरषलोगसभश्रचरनभए॥ ७७॥ दो॰॥ दुरजोध
नश्रागाकरीनगनकरदइंरहगात॥ पांचोंहांदेरषहीकहनसकतकोंवा
न॥ ७८॥ चौ॰॥ जैसेंराहुचंदमाकोंग्रसि॥ तैसेकीनोउनमुजकोंवस॥ म
वमुक्रसिमलोकंतलयारा॥ ततछिनसंकटकयोहमारा॥ विरहसं
भारतवहिनंदनंदन॥ वसनश्रपारदियेदुषकंदन॥ ठाडेश्रापगगनके
थंतर॥ राषलाजइषकियोलपंकर॥ तवभरतारलाजमुहिराषी॥ जान
नमगतनिगमसभसाषी॥ जहांमहांश्रपताहमपरी॥ तवपतिवेगति
वारनकरी॥ ७९॥ दो॰॥ मातपितासुतनवंधसवसषासहोइरलोग॥ ग्रह
सभपारथकेसगाहलसभगतविनसोग॥ ८०॥ सो॰॥ सतभामावरनार
हकमनिडुपदसुतासहित॥ किधोहामरसमारसुनेपढेनिहकामवर
८१॥ चौ॰॥ जैसुनकहैंसुनहूनंदनक्रत॥ सभनसथवेसकियोहसलनपुत॥
श्रापजहांडुलेगिरधारी॥ सभनसमाममकियोहिमकारी॥ जासुकपटमुष
गपहराए॥ श्रश्वरथगजरकमासुपाए॥ श्रतनानंदस्तुतिहिरभयो॥ जो
जिहमुषमांग्योतिहहरयो॥ रंकमहलपरनेकमहावर॥ कुसमकरोगा
राजनहवकर॥ नापरकमलचंदहवैगाए॥ कविरहकनजरपसभसहपाए
८२॥ दो॰॥ मालश्रावरनीहैंपरीश्रानकरीसविधान॥ श्रुतिमसमलहषित

भए श्रीपति कृपा निधान ॥ ८३ ॥ चौ० ॥ ई ॥ सभ मनु बतीसं गहि मिलगावहि
विहस परसपर अनंद बढावहि ॥ कृपन को रमा रवर ल काए ॥ रिषी अने
क आ सत्तु निआए ॥ सभ आए गिरधर के दरसन ॥ श्री पत के पद पंकज न
परसन ॥ उग्र प्रबोध इह प्रश्न जुधिष्टिर ॥ कहो कृपाकर आस सु गीध्र र ॥ म
हन राजस कन कृपा सुनावहु ॥ हमरे हृदे संदेह मिटावहु ॥ महजन पन के
संग मख कीनो ॥ किह विध दान रच्छ नारी नो ॥ दो० ॥ अश्वमेध को जग्य जिम
महजन पन न कीन ॥ सो विध मो हि सुनाइ सभ मुनि पत आस प्रबीन ॥
८४ ॥ चौ० ॥ ई ॥ कहे आस मुनि सन जुधिष्टिर ॥ महजन राज विधि जतन महांब
र ॥ हृदे भान्तु सो गुरि जन कर तन कृत ॥ सु नित्र सालप सरा उजलमन ॥ गो सह
स इक दान करत नित ॥ विधि वत देत द्विजन हरष छन चित ॥ जन किये नं
द लाल निवेदन ॥ कर ता अग्य न होवत बहु नित धन ॥ सत्त्यावती का हिय हहना
री ॥ सेवक रत पति की हि तकारी ॥ ता की महिमा कही न आवै ॥ सहा भक्ति र
तिअ तिन रूप बनावै ॥ ८५ ॥ दो० ॥ अगन कुंड प्रथम के कियो जो सन नप कथ प्रमान
पर नाल न कर यज्ञ न रिपो मुख वै संत रमान ॥ ८६ ॥ चौ० ॥ ई ॥ या चार सन सुरगु
रु लिह भए ॥ विधिवत जनन सुफल कर गए ॥ बांझो जिम हीन पत सो संगा ॥
पुक ताथे करि नु हृदय संगा ॥ सत्रु पुरी वक रै जिह बाजा ॥ तहां रचहि बर जे
स समाजा ॥ एक लाख गौरे तहि जन को ॥ सहसप्र तासी पुत्र रिषन को ॥
हेत रछ गार करइ कहि जन बर ॥ जान रूप के आठ भार भर ॥ सु रेत हां चढ़ रि
सके राजा ॥ होमो बैसंतर मन हि बाजा ॥ ८७ ॥ दो० ॥ इह बिध जतन दान बे

ब्र॰ पु॰ भा॰ ९८

मरुतनृपतसबकीन॥ बहुरसुरंभोपकनबसुरपतभयोसुप्रीन॥ ९९

चौ॰॥ ई॥ नवहिंशक्रसुरपुरमहिंगयो॥ हायमोरकेठाहभयो॥ करोंवे

ननीभुवनहनीजै॥ यहहमराकारजकरदीजै॥ मरुतनृपतकोपत

निवारहु॥ सौंमानोमोंवेगसुधारहु॥ जोपहमजनकरैसुभमाना॥ सोपा

वैसुरपुरकोराजा॥ ताकोमारवेगसमतावहु॥ हमरेहृदैअनंदबढा

वहु॥ ततछिनगयोपिछाणकनमाला॥ बरजतकियोमरुतनवका

ला॥ ९५॥ दो॰॥ मरुतनृपतइइविधकियेसुअसुमेधमखसाज॥ चित

राखइइहसकलविधमनइजुधिष्ठिरराज॥ ९६॥ चौ॰॥ ई॥ आसवचनसु

नधर्मराजमन॥ चक्रतभयोमहाचिंताप्रत॥ कृष्णचंदकेपगलपराना

गस्वमेधविधिमनतइराना॥ महाकठनहयपकरनजइराई॥ होंअनाथपत

मरीसरनाई॥ कीनैहंसुकलबसुपारा॥ गोइमसकलकोकियोसंहारा॥

ज्ञायणमुआदिवर्नैसुनवारे॥ करसंग्रामसकलमेंमारे॥ भीषमद्रोणआरट

सरवर॥ तीनलोककोपतमानेउर॥ ९७॥ दो॰॥ रा॥ तिनकोंमारविहारिप

सभकोरवकुलमोहि॥ नासभ्रगारांकोहाति कियोवधाम्योतोहि॥ ९८॥ चौ

ई॥ भाखोगुरअसुरातालमहयपकन॥ सोअतिवलनमहांकमलापत॥ य

नमहिउपनितविंनमुपारा॥ करुणाकरइकपालसुराता॥ हमवनलेइ

रनारहमारे॥ पालककिकरमहांअठभारे॥ पापप्रबलअरुजततकरन

श्रति॥ सेनेंकठनबनीत्रिभुवनपत॥ गरसमदहोइहीनबचकहई॥ सु

निगुनिचरनकमलकेगहई॥ कारइइपरहरषश्रीनंदलाला॥ दहकन

दीननबंधुक्रपाला ॥२४॥ दो० ॥ कवहु दर्वावनहोहदेश्रापहरिसवि
धान ॥ सिद्धकरहिकारजसकल निश्चैसमप्रमान ॥२५॥ चौ० ॥ ३ स्रावा\
दीह्रमत्रिभुवनपत ॥ लषीपरतनाहीत्रमरीगत ॥ त्रमहीकारनकरावन
हारा ॥ करुणाकरदुषहरइहमारा ॥ नवबहुभयेप्रसन्नपुरारी ॥ रक्षाहर
नकरहुतुम्हारी ॥ चिंताहरकरहुमहराजा ॥ हृपकरकरहुसंधररनकाजा
मैंभगतनकोंसंगकीन्हाई ॥ मोललियोप्रभुफकोंबिनलाई ॥ दासरहलहम
रीसविधाना ॥ काहिसेवउनहाथविकाना ॥२६॥ दो० ॥ एकमत्रवरप्रभुनि
राषईकोउमहीनेदार ॥ रहलकरेनहिभावसोंलेनेकोंसनिधार ॥२७॥ चौ
० ॥ जिसदिनवहुरहजीनहिपावै ॥ विनप्रश्नेनतविनउठजावै ॥ मोल
लियाजिहदासनुहोई ॥ रहलकरेउनिहरपेसोई ॥ मनविगरेसाहिबकोका
मा ॥ क्रोधहोप्रभुफअपरराजा ॥ मनमुषकहेनवचनप्रकामा ॥ अपनाअ
परहेकरदासा ॥ आज्ञाकारीरहेसदावस ॥ सोंसउत्रपंडितकुलकोनस
मोंहमभक्तनहाथविकान्यो ॥ भक्तमोलदेप्रभुफहिपकान्यो ॥२८॥ दो० ॥ गाम
फकरीत्रमधर्मप्रभुत्रमोललियोहेमोहि ॥ दासरीतजिसदिनसदारहल
करतहोंमोहि ॥२९॥ चौ० ॥ मोंतेंचिंताहरकरहुअब ॥ चक्रफअरसनह
वीचप्रसव ॥ इवैमनोरथममजियग्रैसें ॥ कियोसंघरनभारथतैसें ॥
हरमहिराषहुभक्तइमारी ॥ मनसाहरमहोइनिहारी ॥ डरउपहीदैहैके
त्याना ॥ सदाधरहुजियरहमरोध्याना ॥ हरिप्रभुवैनसुनेकृकुराई ॥ प्रफुल
नग्यानंदउरनसमाई ॥ प्रनाकरीनपतगिरधरकी ॥ भईक्रपाअतिराधा

जै॰ ग्रं॰ भा॰ ६२ वरकी ॥ ११ ॥ दो० ॥ सतभामा श्री कृष्ण प्रति कह्यो वचन कृष्णमान ॥ वा 133
हरकोटो ग्रंथको पूजा करहि विधान ॥ १ ॥ चौ० ॥ सतभामा के आगणका
री ॥ मानत है सब बचन मुरारी ॥ जैसें रुषमी जिन न रहोई ॥ आपणा मे रस कैं न
हि कोई ॥ वडे लोगा जे होत नारवस ॥ नहीं सुनावत श्रवरन यह रस ॥ हरि
नहि लियो नाम सतभामा ॥ कह्यो जुधिष्ठिर सों सतभामा ॥ ऐसें कह
ने देवकी माता ॥ सभ न्नु बतिन के मन पह वाता ॥ वाहर काढ हूं हूं सत
रंगा ॥ पूजा करहि नियाम भूरंगा ॥ २ ॥ दो० ॥ जन मैं जे प्रतिवचक है जे
सुनरिष विलब्धात्र ॥ धर्मराज ऐसें कह्यो औं आज्ञा जइ राय ॥ ३ ॥ चौ० ॥ सुन
हरकह्यो सुनहू भूपाला ॥ सुजवाले हूसेन तनेकाला ॥ यह सुभ वचन क
इन हरि भए ॥ सुन यह हु परह्मना के गए ॥ धर्मराज हषके न बुलायो ॥ नकु
लसमेन मंत्र समकायो ॥ चिराले हू सकल सेना भव ॥ संख्या लिषहि
वराव हू सुफमव ॥ विहराले न चले रोऊ भ्राता ॥ धर्मकाज सेना बुसलाला
प्रथमे रषी चमन जुधिष्ठिर ॥ पुनरा लियो लिषो कागरपर ॥ ४ ॥ दो० ॥ ध
र्मराजकी चमूकी संख्या लिषी प्रमान ॥ महासमर जो धवली हासस सुपुनग
मान ॥ ५ ॥ चौ० ॥ एकलाष वर प्रबल तुरंगा ॥ तिहपर चढे सरस बल सुरंगा
पुनपरा तबहरो हसमहवर ॥ पांचलष पुनगज प्रवंड ॥ भयपर ॥ रथ सुरक
रथ संनन नहि पारा ॥ हंइ भये रनिमान अपारा ॥ यह संख्या धर्मजकी सेना ॥
वानिक कही परत न नहि वैना ॥ सेनाप कभी मअर्जुनकी ॥ भ्रमदूंगनजी
करीन जनकी ॥ जो वना सकल सतनहि समेना ॥ सोनहिगमोनकुलहषके

मा॥४॥दो॰रा॥मिलिलिछिलापपत्रमहिकह्योजुधिष्ठिरयाइ॥धर्म
राजआग्याकरीहिवरावहुजहराइ॥५॥चौ॰ई॥गएलहांदेवोंनलका
ला॥तुपदहतताकेगृहहनेरलाला॥हनतमसबरहहरिवाहरआयो॥कन
कपत्रंककैवेहहवपायो॥विहरेयजजुधिष्ठिरहाथा॥सकलवचायोश्री
गरुनाथा॥वांचतहृसभलाकरमाना॥पुनआग्याकीनीभगवाना॥दे
वकिहकमनिअरुसभनारी॥हनाकरहुअबसबपकारी॥आतामानस
कलनुवबीतन॥हजनवलीनरंगगुहितमन॥५॥दो॰रा॥हरषततहिय
मुवनीचलीकनकपात्रकरधार॥श्रुतिआनंदवधोतहांगावतमंगल
चार॥६॥चौ॰ई॥पहरचलीतिपपटभूषनवर॥तुपदहताकेकनकपा
त्रकर॥तामहिसोभनदीपप्रकासा॥धूपकरतमलयागरवासा॥गंधा
दिनतुहकुंकुमलीने॥सजआरतीमुहितमनकीने॥देवकिकुंतीआदि
सबतिमन॥हकमनतुपदहताहुविअनगन॥कह्योहृससेनासबली
ने॥पहरसंजोइकवचबहुंगारीजै॥अबसबसहकरलेहुसंभारा॥हैसविधा
नरहोहलसारा॥१०॥दो॰रा॥पहप्रकारआग्याकरीहृसजुधिष्ठिरराइ॥
आगेगजपाछेरगसहृलबमूचितलाइ॥११॥चौ॰ई॥पहरेकवचबनेर
केलाला॥तिरषतभएचकलनभपाला॥अजहंअबभवनमहिगाढा॥कौं
नकमहांवीररसबाढा॥वाहरनिकसेप्रथममुरारी॥सकलकुईंबस
हतगिरधारी॥धातनमहहनजुधिष्ठिरराजा॥काढोजाइभवननैबाजा
बहरिससेनाजुरीअपारा॥प्रजाहितठाढेनरनारा॥तिनतकरतअंग

अ॰ मे॰ अंगमुदितकर॥ अतिविचित्रसुंदरतरंगवर॥ ७॥ दो॰॥ कोऊचौ
भा॰ रमिरहारही कोउलेगाठेनीर॥ भोजनमेलहिकेउसुषनिरषमिटत
९८ समपीर॥ ८॥ चौ॰ ई॥ इकताबेकरलेसीतलजल॥ इकआचारीसुष
महांबल॥ आतिरूपनृपरपगमोहे॥ अगमतिषविलसीतमनमोहे॥
बहुओरसुकृतिकालरहुव॥ सुंदरअंगरहेभूषनफव॥ बंदनचर्चित
अंगसुवासा॥ अतिउजलवसनप्रमप्रकासा॥ बाजतबजंत्रअनेकप्रकारा
मधुरमधुरधुनिरनफुनकारा॥ सरसहनाइमृदंगगनवाजन॥ सुरम
मानतुरंगमनाचत॥ ९॥ दो॰॥ इन्नालेबाढेसकलसेनाचतुरीअपा
र॥ निरतकरतवाजीतुदितकरतलोगजैकार॥ १०॥ चौ॰ ई॥ आतकी
नीश्रीनंदलाला॥ इनाअश्वकरइततनकाला॥ तिहअवसरदानवअ
तुसाला॥ आयोनभसंगचमकविसाला॥ लायोसेनापंचप्रकासा॥ ति
रषभृमउपमोजिपत्रासा॥ हैतकहेसुनकुलयुधिष्ठिर॥ लेजाहोहय
केंधरहअवसर॥ सुनहीसभवाहीयहसेना॥ हरोंतुरंगमरेकोंनैना॥
प्रगटअश्वकोंलियेंजानहीं॥ सुनइअश्वनहेसमवानकों॥ ११॥ दो॰
ता॥ जोउसेनामहिमरवरआइकुरावोवान॥ प्रगटकहोकैधीधरम
मनइन्रयुधिष्ठिरराजन॥ १२॥ चौ॰ ई॥ मनकोकसरवीरसौभाषै॥ सुषतु
गाइलियोअभलाषै॥ लियेजानहीं प्रगटतुरंगा॥ मैंतौवैरहककेसंगा
जिनहनकीनाहमराघाता॥ तालेनामसभजनगविष्याता॥ ताकोवैर
लेउयहअवसर॥ सुहकगौतमसौं अतिहचकर॥ हैसबचनसुनमछ

करीहूरि॥सोचकरतमनजिमयुसकानर॥हूपकोंवांधहहूपरली
नो॥वचनउचारसरयलिकीनो॥१९॥दोहरा॥हैकोउयेसोसुरवलिहू
पमुक्तावैआइ॥हरकेइनुवतुरंगकोनभमहिगहोनाइ॥२०॥चौपई
गहोहैमगगनकेअंतर॥कहतवचनपतिवचननिरंतर॥सवकाल
कमासोमोभाला॥तुमरेहियेंवडूतकुसलाला॥ताकोतिलयैंनुलीन
देऊं॥अवयहदैवेरतमनेलेऊं॥प्रथमेयहहमरेमनआई॥चढिके
गोकलतहोंजाई॥मुफकोंवरसराषनिजलोगा॥वहहग्रहीरनहितु
मरेजोगा॥गोकलवासीवहनहिराजा॥नहीसापकोक्रमभूपसमाजा
२१॥दोहरा॥माषनचोरग्रहीरवइतमतोमहानरेस॥वरननरहापोलो
गमुकहीजोपहउपदेस॥२२॥चौपई॥आपसारषाजोनरहोई॥तिहसंग
मुहकियेंजसहोई॥यहजियजाननगोकलधारी॥तमसोंजुइनकि
योमुरारी॥अवतमभयेनपतजदुराई॥करीजुधिष्ठिरसंगसमाई॥अ
श्वमेधहितजगतसुरआयो॥तनमुक्तसमाभलायहपायो॥तांतेंहयलो
तुरंगमआई॥कोहेसरकुसलेनाई॥तमरेजियउपज्योअतिडाया॥
क्रोधमागहेरहेउहासा॥२३॥दोहरा॥क्रोधवतजेरनकोंनहीकछीक
हियेंनाहि॥पतकरहितेईपुरुषजेअतिवलप्रगटाहि॥२४॥चौपई॥कौं
नहिहयपमुक्तेंमुक्तावइ॥यहवलसोंजगनाथकहावइ॥कतिग्रं
भइयकतनमकीना॥प्रथमेग्रपनावलनहिचीन्हा॥महांवलीजग
पृथ्वीपाला॥तेवांधहिहयकोंततकाला॥कैसेंउनसोंलेहितुरंगा॥पु

ज॰भ॰ हनकरङहमारेसंगा॥सत्तवांधठाढेहैरहे॥उनदानववलोंकञन
भा॰ कहे॥सेनासभासहितभगवाना॥तिनहितमुषवेतेवचनवषाना
९९ २४॥दो॰हा॥जेमुनकहितनहोनरपनमुनवोलेअनुसाल॥कहो
कलप्रतिपौत्रहतनसंगआनेरहकाल॥२५॥चौ॰पई॥अवहरिआप
होरणमाही॥अवहमउनकौंकाजैंनाही॥तमरेनमितरहांचलिआ
पो॥काजैंनहीतननकरपायो॥सनमुषदैसंग्रामकरङहहरि॥कैधी
धर्मसंभारङगिरधर॥भागाकहांजाइअवप्रभुफतें॥लेउंवैरधाताका
तकतें॥तासमानसेनातेरीसभ॥एकपलकमैंनासकरोंअव॥ले
मकोंजीतजगतजसपाऊं॥मरोंतोगर्भततनहिआऊं॥२६॥दो॰हा॥
हमकोंजीतेजगतजसहारेंअतिकल्यान॥मोतहमरेकरतेंमरोंपावोंपु
मेप्रमान॥२७॥चौ॰पई॥एहवचनहरिचितेंप्रकामा॥निरषैंहैंमंडप
मोतिमिपशामा॥सांधोधनुषवानअनुसाला॥फिरआपभूपरनेंरनाला
हेषलोगचिंतावसभयो॥दानवकुलसीमितिनहितलयो॥सकलकहेह
रिदानववनेंहर॥फिरआपनभनेंधरनीपर॥जेमुनकहेहेतनङ्ककहतनेंर
न॥कलककथाअवठश्रीहरिकंदन॥तिनहितनिततहविकारपरभाउ॥
अश्वमेधप्यारहेअश्राउ॥२८॥दो॰हा॥इतिश्रीभारथपर्वसभाअवअप
आवान॥कवि८हकगहरनकियोगारहेधाइप्रमान॥१॥जेमनउ
दाव॥चौ॰पई॥जेमुनकहेंतनइभूपाला॥पुनएहवचनकहेअनुसा
ला॥अतिनिर्विनधरमीभूआला॥एहववदैंसककेतनकाला॥कहे

बचन सुनत राइ जुधिष्ठिर ॥ जग्य रचौ जु मनि हि प्रताप हरि ॥ मष धु
रंधर मनि हैं के बल कीना ॥ सो सुत सन सुष भयो अधीना ॥ सौं कर को इ दु
गे जु मचाजा ॥ कैसें जीत इंदु गे सभ राजा ॥ सो तुम मोहि सु रषल वाना ॥ १
गुरु कर सुत सौं सब धाना ॥ १ दो० ॥ भारथ महि तें ई लर रहि जो ब
लि सूर प्रवीन ॥ दीन भए तुम सुहि निरष सभ न भयो बल हीन ॥ २ चौ
पई ॥ तुम जी तौ भारथ हरि केवल ॥ करी गोत्र हत्या कुल दल मल
जान बूझ तुम न मित राजके ॥ नास कियो कुल गुरु समाज के ॥ बड़ र
लगाई हमा ननको ॥ किषो प्रबोध न अपने मन को ॥ हत्या को उपचा
र कियो चित ॥ पुरश्चरण हैं यग्य अश्वमेध कृत ॥ कउन प्रायश्चित मनाको
साधन ॥ सो कत पाप कियो तुम राजन ॥ गोत्र मार संतो उपजायो ॥ रा
मह्रे तनि म कलंक लगायो ॥ ३ दो० ॥ राजन अपने गोत्र बिन अब तना
हिन काम ॥ सो अब होते च सुम हि थान करत न जिहि नाम ॥ ४ ॥ चौ पई ॥
मीन बंध धाता तुम मारे ॥ गुरु पितामह सकल संघारे ॥ सो बहु सराह
ते रहे अब सर ॥ कलि च ह आवत हारा बलि हर ॥ न मित राजके मैं न
हि आयो ॥ राजन रकत पत्र महि पायो ॥ हत्या कर हमा तुम लीनी ॥ आ
ते भगत अजह न हि चीनी ॥ राजा धर्म धरायो नामा ॥ भाष हि लोग सषा
तन स्यामा ॥ तुम गुपाल प्रति सैं सें भाषा ॥ सुत कौं नहीं राज अभलाषा
५ ॥ दो० ॥ तुम गुपाल प्रति यौं कह्यो राजन बांछो मोहि ॥ कोटक लंक
जिहि नाम के चरन सरन अब तोहि ॥ ६ ॥ चौपई ॥ नहि जानो तुम मरम

अं॰ अ॰ मुरारी॥महिमाचरनकमलगिरधारी॥जोतुमधारचरनकी
भा॰ आसा॥तोनकरनअपनाकुलनासा॥कुलविनासकरकहोनजै
८॰ सें॥तुममारेसभश्रीपतकैसें॥कहोननगपकरनकिहकामा॥
मिरहिकोदरसदरसनसामा॥तमतानततमरेमिरगपे॥अहंमे
वनियअनिकरभपो॥इलाअपनेसिरधरलीनी॥विद्यमानहरि
हयकृतकीनी॥५॥दो॰रा॰॥इलोतत्याराअस्यप्रभुपइनमित्र
तनराज॥चक्रसुदर्शनसोंमरोंप्रभुककरहिनइराज॥६॥चौ॰ई॥
नवहरिहमरेसनसुखपाप॥तवप्रभुकोटपहारयपाप॥चक्र
सुदर्सनसोंअवमारहि॥करुणासिंधुमोहिनिसतारहि॥प्रभुकों
पापीतानबद्ररहरि॥तजनभवेगगपधरनीपर॥भलेप्रकारर
सेनहिदीना॥यहअबबसरप्रभुमनकीना॥मनकाहूकेमिघय
हआयो॥हरिकोंधरअनुसालगिरायो॥रथसमेनगिरघसोगुप
ला॥अपनीरक्षासोंनेदलाला॥५॥दो॰रा॰॥मैंचलआयोराजनतज
हिंयेप्रभुकीआस॥चक्रसुदर्सनमोंमरोंगर्भनपावोंवास॥९॥चौ
ई॥इकतुमकुलहमासिरधारी॥मोंतेंभयोराजअधिकारी॥अघ
तिहमरोहैतनुहमन॥किमोनविचारसोचअपनेतन॥राजभोग
लषविषवनजाना॥होहिकतारधनिपमनतजाना॥चक्रसुदर्सनकी
धारावर॥प्रभुकहेइलागेनिहसिरपर॥अवतोप्रभुकोंहरिलजग
९॥बद्दरभमपरठाढेभए॥अवकनहैतुमसोंसंग्रामा॥तुमराइ

षनसहतसुनस्यामा ॥ ११ ॥ दो० रा० ॥ मोहमकोंइषदेइगोआवहिंगेभ
गवान ॥ भगतनसहाइकहोंहिंगेअपनाविरदपक्कान ॥ १२ ॥ चौ० ॥ अ
गतनकेइषइषीहोतहूरि ॥ करतसहाइसदाहितरुचिकरि ॥ अवत
मकोंतहितजोंजुधिष्टिर ॥ हेऊमहांइषसाहकरकर ॥ तुमराइषस
हिसकततआपन ॥ तोतेंआइकरेमुफकोंहत ॥ तबहैहैमरनसुफ
आसा ॥ वचनकहेअनुसालप्रकासा ॥ यहवचसुनतनभईसेनासव
महाचिंतवसधर्मभयोतव ॥ केसेंहपआवेहमहाथा ॥ सिमरनक
रोंहियेजदुनाथा ॥ १३ ॥ दो० रा० ॥ जनमेजयपरछेववहुरमैमुनभाषत
नाथ ॥ अथहियोअनुसालकोंकहोंकथासमझा ॥ १४ ॥ चौ० ॥ मैनु
नकहेतनदूष्यवीपत ॥ निरघ्योकसमजुधिष्टिरसुषप्रति ॥ चिंता
तुरनाम्योभूपाला ॥ सहितसकोइषभगतनुपाला ॥ तबबोलेनंदनं
दकृपाकरि ॥ कतिसमचिंताकरहूजुधिष्ठर ॥ आवहिपकरवेग
अनुसाला ॥ सइतस्यंगमहत्तनइभुवाला ॥ लेहारहितुमरेवरनन
पर ॥ कोंतकइमराहेषइगनभर ॥ ऐसेवचनकहेतवगिरधर ॥ मि
लआपवलवानसूरवर ॥ १५ ॥ दो० रा० ॥ सकलचमूधीरजभयोवचन
कहेनंदलाल ॥ मिलआयेसूरेसकलआपनपहितिहकाल ॥ १६ ॥ चौ
पई ॥ भीमसेनप्रद्युमनकरनसुत ॥ जोवनासराजातनसंयुत ॥ सूर
वीरजोधवकुआए ॥ आपतितिकरसकलवहराए ॥ पानवीरका
लिपोकसकर ॥ हेकोउइमसहिइजाइसरवर ॥ सकलकरहिभय

जिपथ्यनुसाला ॥ वीगालेनसकहिननकाला ॥ धीरजहियेंकोउनहि
आनै ॥ महाबलीसानवपहिचानै ॥ कठनवीरकागहनहाथहूर ॥ आ
गेआहामहांसरवर ॥ ७ ॥ सो॰ ६ ॥ हैकोऊऐसेसरपानगहेसुरूपान
नें ॥ सानवअतिबलधरताकोंजीतेपुहकर ॥ ८ ॥ चौ॰ ई ॥ एकमहूर
रतपानकसकर ॥ सकेनकोउउठायरैमरय ॥ महीसमर्थकोउतिह
काला ॥ करिहैंनुहसाथअनुसाला ॥ लियेप्रघुम्नपानहरिहाथा ॥ पु
हकरोंहमरानवसाथा ॥ करधूणामनंदनंदनकोतव ॥ रथपरभयो
महांअरूढछव ॥ पुनपइवचनकहेगिरधरप्रति ॥ तुमहहरिपुरनपु
रुषनगनपति ॥ तोमुककहोप्रघुम्नगुपाला ॥ मीतोंअसमसहिनअनु
साला ॥ ९ ॥ दो॰ ६ ॥ मघपिरानवअतिवलीतोनहिमोहिसमान ॥ बहूर
हमारेअसरथपवनवेगभगवान ॥ १० ॥ चौ॰ ई ॥ मौंपंछीउरचलेअका
सा ॥ मौनरंगरथमहांप्रकासा ॥ महचिनवोंननविनपदकावहि ॥
वनहिपवनगगनगहरनलावहि ॥ मौंवारखवदहदरानिवासा ॥ तेसंग्र
तिरलमोहअभासा ॥ हरिनमनिरूपीभगवाना ॥ महावलिहत्रिलोक
निधाना ॥ करआक्रममारोंरिपुसेना ॥ तिघमानहेषदहहरिसैना ॥ यहि
वचकहतशत्रुरिसधायो ॥ पाकेंहरिधीरजनहिलायो ॥ ११ ॥ दो॰ ६ ॥
वीराअवरसंगारकैलिपाकमपुनहाथ ॥ लेवैसरउठारकैमावैम
मतनसाथ ॥ १२ ॥ चौ॰ ई ॥ वीरालियोकर्नकेनंदन ॥ करिपरनामम
लैसलनगवंदन ॥ बचनकहेरुपकेनकमप्रति ॥ तुमरीकहतातें

त्रिभुवनपति॥ अघमममेतरैसअनुसाला॥ गहिहरसोंलमचर्नगुपा
ला॥ जोनकरोंकारनपहहैतैसें॥ आपनहोहिपापपुरुषेसें॥ गवनत्र
त्र्यलीछ्वीकरई। तिलबंमीमियकोंपरहरई॥ आइनिविंत्रलआत्य
णाहोई॥ करैनारसंगमैपुनसोई॥२३॥ दो०॥ आसाकरकोउआवई
मोतिसपठेनिरास॥ तिनपुरुषनकोंहोतहैनरकघोरमहिवास॥२४
चौ०॥ सोअघमोहिलगहिनेरलाला॥ जोनलाउहृपसंगअनुसाला
पहप्रणाकरनशीघ्रउठपायो॥ आगेनहींप्रघुम्नसिधायो॥ ननमेंमै
हृष्ठनमैपुनप्रति॥ उत्तरदेहमोहियहपुनपति॥ कलियकत्रपहृप
ढेनहोऊ॥ कहहुहमांनमुनीश्वरसोऊ॥ जैमुनकहैहैनहराजाना॥
होनयप्रघुम्नहियेंअभिमाना॥ हसचंदकोपुत्रकहावन॥ तोलेंमन
बहुगर्ववढावन॥२५॥ दो०॥ हासभाउहषकेनहियहरिवर्नतसोंप्री
ने॥ हसमगलरतधर्ममतपावनपरमपुनीत॥२६॥ चौ०॥ अहंमेव
नजबसोकर्नहत॥ हरिहितपाछेसरमहांइत॥ समकेअंतरजामी
श्रीहरि॥ आगेपाछेपठेपहीकरि॥ प्रघमेजाइप्रघुम्नबलाम्यो॥ नि
रषैसपहवचनवषाम्यो॥ सुनहुप्रघुम्नकहेअनुसाला॥ तुमपुरु
परवहिआयोवाला॥ कलिनहिमुपनाआपपछाने॥ कियोविचारन
कालइआने॥ तुमप्रघुम्नकामअवतारा॥ जानोंसमेंहमांनतसारा॥
२७॥ दो०॥ पुरुसनसुषआयोवहूरइकलोअवरनसाथ॥ कियोवि
चारनकामयहठमहिमानहेजनाथ॥२८॥ चौ०॥ कैसेंपुरुसनसु

म.ग्र. षतमहोई॥बालकबृद्धकरीतमसोई॥हमरेस्वामीतकहिज्ञना
भा. पो॥तमडरिक्षलडरमहिश्रापो॥छत्रीसरधर्मसंग्रामा॥सोश्र
२२ नंगतमरोनहिकामा॥एकबारभाग्योरनमांही॥तमसोंनुरुहोत
श्रवनांही॥तकहिकिपोसरजीतमुरारी॥करुनासिंधुरघाउरधा
री॥मोसोंनुरुदनकामतल्यारा॥तमकोंजोगवसपुरीहारा॥४॥
दोहरा॥बालकबेलननहोररहहरहांगुरुसंजोग॥रहांकाममतमरा
नहींतमहारापुरिजोग॥२॥चौपाई॥तममनबाकेग्राताकारी॥म
हातपीत्रकेवतहारी॥इंदकहांउनकेतपसाधन॥मतरहहोत
सर्गकामामन॥संगश्रुपसमांकोहिपठावत॥तमउनकेमनकोंप
रमावत॥तमहिकरतउनकोश्रतभंग॥हदेत्रासनहिकरहृश्रवंगा
पुनहिपवमदपतिश्रतनारी॥मनविचलाहेदेदूमनहारी॥उपज्ञा
वडतिहिनिपरसरीना॥सोतिपकरहिप्रपुर्षप्रवीना॥२॥दोहरा॥
प्रैसीकैरतिवासलमनुरुदनतमराकाम॥श्रववचनश्रापोमोहपर
करदेवहूसंग्राम॥२४॥चौपाई॥जोनहिकैमैंनुरुतमसोंश्रव॥वैसें
कहैंलोकमोसोंसव॥महावलीप्यासतननेरलाला॥डरतननुरुहू
किपोश्रतुसाला॥मांनेप्रपपेवानचलावड॥मतपाकेमनहोप
कनावड॥वडरोंचोटनश्रावैहापा॥करडनुरुपितसेवकसाप्या
घरहवचमतनतप्रपुर्षक्रोधश्रुति॥पांचवमनपठएहानवप्रति॥पे
सीधनाश्रवरसपसारप॥लगेकाननहिमवेनिरारप॥३॥दोहरा

उठके मासो बानर कहहै सेहै मग्रनुमाल ॥ सानइ कनिहिवानके
कीये हैं निहिकाल ॥ २७ ॥ चौपई ॥ पुनको पोहा नव ग्रनुसाला ॥ नीकुन
बानकाहननकाला ॥ छाइदियो सर अतिभैकारी ॥ लागो हरेनान
गिरधारी ॥ लग्यो बान उडगयो ग्रकासा ॥ मौं वपारतें उडनकपासा
ध्रमनध्रमन गिरपस्यो धरनपर ॥ देष्यो यह बरित्र सभ गिरधर ॥ ग्र
वरजभई देष सेनासभ ॥ चिंतावस भूपाल भयो तब ॥ परसो ग्रारश्री
पनके ग्रागे ॥ सकल लोग रेषन लिहिलागे ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ वचककोर
गिरधरक है देषप्रगुप्रसिाइ ॥ भला भयो तुम कुसल सों फिर ग्रायो
ग्ररिधाइ ॥ २९ ॥ चौपई ॥ भला कहैं गे लोक सकल गुरु ॥ सुरनमहिल
जिनकीनी गुरु ॥ लोक कहैं गिरधरको नाना ॥ ग्रायो नीलसबड करे
ज्ञाना ॥ रेकायरल जिनकियो मोकों ॥ सकल सुरपग करहो तोकों
कुवीधरम तुमहि कगमागा ॥ भयो पलायन रननें भागा ॥ नरनारी क
हैं पुत्र गुपालहि ॥ मह छिन कियो है मग्रनुसालहि ॥ एक कहैं गे कुव
लगायो ॥ विमुष होइ दानवनें ग्रायो ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ कुवी पर्मलनार
कनरणनें भाग्यो लाल ॥ कनपग ग्रोह मरे भवनकौं नगर भ गिरना
न ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ कलिकौ शोधुन लफहि विशसो ॥ छाइदियो तुमकों
ग्रपुजासो ॥ यह न मिम नइकुल हिलजावन ॥ विमुष भयो रनइ
घउपजावन ॥ कायरजान ई सनुममाग्यो ॥ हीनपराक्रम रणतें भा
ग्यो ॥ पग नीव न जग मांहि हलसारा ॥ नइकुल लज्जित कियो हमा

म॰ पु॰ रा॥ होरअतीतवेगवनजावइ॥ वैरागीह्वैमुंडमुंडावइ॥ जोसनमुष
भा॰ दैलरनगिरलमन॥ ब्रह्मलोकभोगहिसद्वहन॥४९॥ दो॰हरा॥ ब्रह्मलो
७३ गतेंभोगहीवानमाररनमांहि॥ नेभाषहिगेकलमहनरहांगौरतम
मोंहि॥५०॥ चौपई॥ महलेहिसनमुषह्वैवाना॥ नेपावहिगतमसमश्रमा
गा॥ तमनलोभयोनरकअधिकारी॥ कुबुधर्मतमनमोविकारी॥ जोकु
रीहैरणतेंभागै॥ पावैनर्कअनमसलगजागै॥ कतितमअपनावस
नसंभासो॥ वीरालेतननतुकहिविचासो॥ यतकिपोरहुवरवैलल
ग॥ डारहियोकुधीरकहतभुग॥ भयोपलायनरननतजश्रयो॥ निरह
कोंरामअगनमहिपायो॥७०॥ दो॰हरा॥ पठयोसैरवनरकतिहितम
हलनकेहाथ॥ रेकायरकैसेंवहूरवैठइमरनसाथ॥५१॥ सोरठा॥
भीमसेनवलवानसुनेवचनसभहलके॥ महांइनेभगवानविष
मानकाहेभयो॥७१॥ भीमसेनउवाच॥ चौपई॥ कतिमधुघुरूगकार
कारइहथि॥ पटहमोवालकसमश्रीतिरधरि॥ तेमकुलजरासंधतें
भागे॥ भयेपलायनहारनवद्यागे॥ श्रीपतिमिषपनेहहैविचारइ॥ क
नइनइनसुतनकोंधिनकारइ॥ नहांहोतनतुइहिसंग्रामा॥ भीतहा
इस्त्रनकोकामा॥ पुनवोलेहरिरेववकोदर॥ कर्णद्रववहषकेलसर
वर॥ हमरपहप्रघप्रविप्रवरन॥ मटकिलपरासंभारनहीतन॥७२॥
दो॰हरा॥ वीरालेकरकहिवलोकरोंमहांसंग्राम॥ एककवानलगइदर
गयोकिवोश्रकीरनकाम॥७३॥ भीमसेनउवाच॥ चौपई॥ भीमसेनप

नवचनवषाना॥ सुनहुभुवनत्रैलोकनिधाना॥ संकरवरदानवश्र
नुसाला॥ बालकहेसनरेहठुपाला॥ अबहरिहमकोंआग्यादीजै॥ सुरू
करोंकरुणामुहिकीजै॥ देखजीतनसुमचरनलगावों॥ हारनेवरीगर
गहिलावों॥ आग्यादीजैश्रीगिरधारी॥ क्रोधवतभीमगदाकरधारी॥
लियोउठायसंगहरिलाला॥ हरिपहकहीभीमसोंवाता॥ ४४॥ दो॰ ॥
कुसलकहोसुनपवनसुत आगेहैहमषेत॥ अबरसुरसंगलेउरतम
उहांवहोसंकेत॥ ४५॥ चौपई॥ मेहवनेपुनिचलोतालहहर॥ जोवना
सरानासुलसरवर॥ जैपुनकहेहनडभपाला॥ सुरगईवडसेनाश्र
नुसाला॥ कहीनपरनहेसेनाकुव॥ कंचनचरनशृंगजोधमव॥ गज
रथअश्वपदातनअपारा॥ क्रोधसहितताहोरनभारा॥ यहहरिसमैयह
पांचसुरवल॥ सनमुषताटेभपजहांदल॥ भयोजुद्धहरिसमभपका
री॥ क्रोधवतभीमगदाकरधारी॥ ४६॥ दो॰ ॥ जोंवरवानलघासकों
लेतपलकमहिजार॥ भीमसेनत्योंअसुरकीसेनाकरीसंघार॥ ४७॥ चौ
पई॥ जैसेहैंसृगालकीतारा॥ हूटननाहिनलागेवारा॥ सोंगजरथहय
पायकमोर॥ भीमगदासोंसकलसंघारे॥ चूरनकरसुरनगुरकावे॥ य
हांक्रोधजियपवनतनआवे॥ रथविहीनरनमांहिपछारा॥ सपतनसु
हपवनकेलाला॥ क्रोधवढोचितरथहनठायो॥ हरिविधुश्रवचसुन
नरिसायो॥ शंषचरनसोंपकरउठावे॥ गजहयपरपनभपंषपठावे॥
५०॥ दो॰ ॥ मारेहस्तीरथउपरारथसोंहनेपदात॥ हयककपरहय

अ·प्र·
भा·
७५

मारईकरीचमत्रुअरिज्ञान॥५१॥चौ०ई॥पवनपुत्रसेनासभमारी॥पु
नआयोकर्ननवलधारी॥जैसेंखेतीपरिपकहोई॥काटनवारनला
गेसोई॥तैसेंसभसेनाअत्रुसाला॥भीमसंघारकरीतिहिकाला॥दो
रलपरेसतरनोधरन॥अतिविचित्रसोभतकंचननतन॥सतरनरुधर
अंगकछविऐसे॥चरचनकुंकुमसिंधुरजैसे॥एकमहीनाकियोजुद्द
मव॥विहवलहैकैविथकहीभीमसभ॥५२॥दो०रा॥कह्योभीमहषके
तहनअतिअचर्जमिपहोइ॥तिनसमसतसेनाहनोंवहुरनुवचेन
कोइ॥५३॥चौ०ई॥तिनसवसेनाहनोंविसाला॥वाकीरहेएकअत्रुमा
ला॥रैनकरोंमनसाजिपऐसें॥हनोंरैनकोंजैसेंतैसें॥प्रातकाल\
माइरनहेषों॥सारीसेनातैसेंपेषों॥तिनप्रतिकपंचप्रसमभवाना॥
जीवतपुनअवलोकोंप्राता॥पुनवोलोअषकेतपितासुन॥देमन
कोगुरुहरेवअक्रमसुन॥जोसेनानितप्रतितुममारत॥विद्यावलभृगु\
तिनहिसुधारत॥५४॥दो०रा॥सोआचारजहैमहनलीनोसंगउकार
विद्यापढेसंजीवनीमंत्रकलेतजिवाइ॥५५॥चौ०ई॥कहेभीमसुत\
हरेविचारहु॥शुक्रविप्रतिनकोंमतमारहु॥निगमकहतऐसेंसम\
भलोका॥ब्राह्मणकोंमारननहिजोगा॥कहेकारनसुतनसुतनउपि\
नाशक॥एकउपाउवताववहोंतक॥जिहप्रकारपुनउठेनसैना॥
सोविधकरहुसुनोप्रभुकैना॥अरधनिसाएकलासिधावों॥बार
समेतप्रभुअंगगहिलावों॥करुणाकरप्रभुअज्ञाकारीजे॥अपयमेपह

कारजकरलीजै॥५६॥दो॰॥प्र॰॥आसालेनिसअईकौंगयोदैमहलमां
हि॥हंठनपायोसुक्रकौंसेनकियाघाजाहि॥५७॥चौ॰॥ई॥घोरसमेत
दैत्यगुरुचायो॥लेहघकेनपयालसिधायो॥समहतांनकहिभीम
हनायो॥अबकारजकरिहोमनभायो॥जोलगआवनसुक्रपयाल
हि॥तौलगहमजीतनहिअनुसालहि॥नासकरहिदानवकीसेना॥सु
कनरनकौंदेषतनैना॥जोआगेकरतेइहकामा॥मारेउनेदैत्यसंग्रामा
५८॥दो॰॥प्र॰॥यहउयमआगेकरतहोतनैमसभनास॥दिनमरतेनिस
जीवतेवीनगयोइकमास॥५९॥चौ॰॥ई॥जहांमहांतमसंधपयाला॥पं
यनहींअतिनीरविसाला॥सुक्रउहांतेआवनजोलग॥नासकरहि
सैनाअरितौलग॥आनारीजैमोहिपिताअब॥नासकरोंदानवसै
नासव॥मैंकरिहोंइनसोंसंग्रामा॥अबलमपिताकरोविश्रामा॥यह
जोचमूसापअनुसालहि॥ताकौंवेगकरोंवसकालहि॥सेनासक
लबिलावनमोकों॥इनसोंतुहजोगनहितोकों॥६०॥दो॰॥प्र॰॥लोगह
मैंगेपितालऊपुत्रषिलावनमोर॥जोगनहोतोभीमकोंनासकरेहैं
मोइ॥६१॥चौ॰॥ई॥वहइगढोरनमैंअनुसाला॥मैंजीतोंइसकोंततकाला
इनकोबलनहितोहिसमाना॥वचनकहतहोंसतप्रमाना॥जोअत्र
सालकोरनुरआवहि॥तोसुमरेबलतेंइरणावहि॥तोतेंतुमविश्रा
मकरहुसब॥सेनविनासकरोंदानवसब॥हमएकलोसभनकों
मारों॥निमषएकसभसत्रसंहारों॥इनमैंदषनआवनमोकों॥सुतक

म॰ भु॰ रैतपना वैनो कों ॥८२॥ सोरठा ॥ कहैं इक ओर करन सुत पहुंन सूर को का
भा॰ म ॥ लोग कहैंगे है मनें भाग्यो भीम संग्राम ॥८३॥ चौपई ॥ तातें मैं करिहों
७५ संग्रामा ॥ अब सुत नहीं तुम्हारो कामा ॥ कानी रहै न भ्रगुकी बान ॥ अब
हीं होत प्रगट विग्यान ॥ प्रथमे जुद्ध करन दे मुझ कों ॥ मन वच क्रम क
हिहों सुत न तुझ कों ॥ भीमसेन सुषके न परसार ॥ कहते वचन समान सूर
वर ॥ तिहँ अवसर आयो अनुसाला ॥ लागे जुद्ध करन तिह काला ॥ प्रथ
मे भीम चार सर मारे ॥ पांच बान अनुसाल प्रहारे ॥८४॥ सोरठा ॥ खंडित
कीने भीम के चार बान अनुसाल ॥ सत अपना गहहार इक सर मास्यो
विकराल ॥८५॥ चौपई ॥ एक बान सों भीम उडायो ॥ भ्रमत पस्यो धरनी
मुरछायो ॥ भीम गिरत सुष केतन निहारो ॥ सनमुष भयो क्रोध जिय
धायो ॥ बालक देषकप्यो अनुसाला ॥ तुम षोडस बरस हि के बाला ॥ रि
षियत सर क्रांत न तुझ मांही ॥ हक छपायो है तुझ पांही ॥ सांच कहो
बालक बलबाना ॥ वचन यथारथ सम भ्रमाना ॥ हम राजकुल के कहां
कपायो ॥ कैसें सहित प्रसंग कठायो ॥८६॥ सोरठा ॥ मुझरायो है अनु
कों डरों नहीं बलतो हि ॥ है मस संभार हद आपकों आवन है समर मोहि ॥८७
चौपई ॥ तीन बान मारे लषकेता ॥ केतो रथ सारथि सुरकेता ॥ पुन अ
नुसाल अब बिरथ गामी ॥ धम धम बालक कहि बघामी ॥ है मन सों क
हियौं अनुसाल रहि ॥ लरइ मर इन ररर इरह कालहि ॥ प्रेत कर मम
भंक हौं करऊं ॥ गया नार पिंग हरिक भरऊं ॥ सात बान अनुसाल चली

प॥रथपक्केपोत्हषकेलननथाए॥पुनइकवानपकोश्रनुसाला॥अति
नीबनसरअतिबिकराला॥९५॥दो॰॥निहसुरसाथोकरनसत
एकमहूरतजोग॥पुनषग्रुपुम्नमूर्छितकियोमेघवरनसंजोग॥९९
चौ॰॥पुनमर्छायोजोवनासकों॥सभनदियोदुषमहांत्रासकों॥
भयोसहुचेतनभीमचढिआयो॥सेनाकोनभपंथउडायो॥पाछैरथोप
कअत्रसाला॥उडगईचमूसकलननकाला॥अस्तनकरनतैमस
विसाला॥धनधनभानजकेवाला॥मातपितामकुलधन्यअसारा॥
महासूरतमतुहउदारा॥मूर्छितपरीडइंदिरसेना॥बाइलकही
पवनतनहिवेना॥५०॥दो॰॥युद्धप्रहारनकीरचीसंसेकरेनकोइ॥
यौंमारतगिरपरसपरइंदवनजिमहोइ॥५१॥चौ॰॥देसवानधि
वशामचलायो॥निहसरसोंहषकेनउडायो॥पवनवानषेंअति\
वलवाना॥संकरदियोदैसमनमाना॥निहसरकरननधर्मगिरायो
अतिअधीनविहवलसुरछायो॥देषोगिरतनकरनकेवालहि॥वि
नाभईमहाधुविपालहि॥मूर्छितदेषसूरवलवाना॥अचरजमहोत
हृदेभगवाना॥कुसलकह्योतनरपतनयुधिष्ठिर॥भीमआदिसभस
रगिरेधर॥५४॥दो॰॥कुसलजुधिष्ठिरकोंकह्योचलरोऊरनमांहि
गुरुकरोहमरैमसोंचिंतकरोतुमनाहि॥५५॥चौ॰॥नैसुनकहै\
सुनइभूपाला॥हांकेरथधर्मजनंदलाला॥रतनषचितरथपनगा
मगानक्षव॥धजानतुरंगमहांसुंदरसव॥पवनवेगरथगरूडसम

गं.अ माना॥मन सा मंहीनं हीं कहुराना॥इन तें कसल युधिष्ठिर गयो॥उन तें
भा. दान वसन सुष भयो॥इन महि गाढे नाइ गुपाला॥हरि सों वचन कहे अनु
७९ साला॥तुम मनोहर सुरूप रच ढ आय॥गाढे रहो भले कर पाय॥७६॥दो
हा॥तुम सब पकी नाथ आन सुरूप मड्डांवली रन साल॥जो सुध पहो नी मोहि
कों चब्योइ को तनन काल॥७७॥चौपई॥निहच अवसर सुध भई न मोसों॥ले
न वैर हम नवंही तोसों॥ताते होइ कसस सुरूप आगे॥कहां जाइ अब बसु
फतैं भागे॥संग आमो हैं रपत युधिष्ठिर॥सुरूप वल सकले इसन तें हर
सकइ मेव वरन हषकेता॥जौ वनास पुत भीम समेता॥जिन षाप
हैं वान हमारे॥सकले इव हसर न मारे॥अपने सर सकनंदलाला
गुह करइ शन संग अनुसाला॥७८॥दोहा॥पांच वान शिव सुरूप रिपे
ने तुम करों प्रहार॥नगर हार काहू रहै भागइ कहां सुरार॥७९॥चौ
पई॥न वही मारों शिव के वाना॥नव मानो भे सुरूप भगवाना॥कहां कु
पइ गे सहित युधिष्ठिर॥अब हरि हर रसो हारापुर॥जहां कपो तुम
मार सुरारी॥मानी सुरूप वह ठौर सुसारी॥भगवन के हिरदे तुम वा
मा॥और ठौर नहि करइ निवासा॥मो तुम रे भगवन नइ धराई॥नि
न के हरे न वसइ कक्काई॥समता भाउ नहीं हरि नेरे॥पकन नेजइ
वसइ रकने रे॥८०॥दोहा॥मैं सुन कहि मन हो रपन यह ववकहि
अनुमाल॥पहरकव व आप अभ संग धर्म भुपाल॥८१॥चौपई॥भग
पवालनें आपन भयो॥निरषन अमहरन को इ घगयो॥वर्गै रनकी

सकलजिवाई॥सह्यपइरवाढोरनआई॥करतविचारहियेंअत्त
साला॥सनमुषगरेहह्रिभुवपाला॥आपकरूनाकरनंदनंदन॥जो
गुरूहनहिकरहिअघकंदन॥ठाढेआइमुमकेदाना॥कृपाकरीमु
रूत्रिभुवननाला॥मनवचक्रमजियआनंदपायो॥सत्रुअहगहिस
नमुषआयो॥८८॥दोहा॥धर्मराजकरधनुषगहिआजालेभगवान॥
क्रोधमहैअत्रसालकोंमासोंनीकनवान॥८९॥चौपई॥जरगईअस्त
रवमूनिहकाला॥पाछेरथोपकअनुसाला॥रथसारथीनरंगगि
रेधर॥देषहगनअनुसालरैमवर॥करत्रणामजियत्रिभुवनपनकों
दैमचलायोवानरूपनकों॥जोजनचारगयोरथपाछे॥मासोवानरै
सकसथाछें॥छेगोरथसारथीगिरायो॥सरसहरिधर्मजमुकनायो
गाषलियोनरूपकोंनंदलाला॥दानवसरवलअतिविकराला॥९०॥दो
हा॥पुनयनवहसबचकेहसनटयवननंदलाल॥कवहूनहारोंअ
ह्मोंशिवसेवकअनुसाल॥९१॥चौपई॥मैंसेवकशिवकोनंदलाला॥
मुरूवलसमनहिधर्मभुवाला॥जोशिवकीसेवाजियधारै॥सोनरर
नमहिकवहूनहारै॥भीमसेनप्रद्युमनपरेधर॥मेघवरनहषकेत
सूरवर॥जौवनासमारथेगिराये॥धर्मजमुकमोंवलहिषराय॥पांच
वानसंकरमुकहिए॥तेसरमोहिप्रहारनकिए॥जोवहसरनमहि
प्रगटांही॥दैहैप्रलैकालजगमांही॥९२॥दोहा॥हमआयोसंगावम
लैयहमनसाजियधार॥मुककरढमगुरूरनहनटचक्रसहर्मनधार

ज॰सु॰ ८७॥ चौ॰ ई॥ अबरनकोउप्रभुकोरागा॥ मोहिउधारलेउअगनागा
भा॰ कृपासिंधुकरुणाअबकीजै॥ प्रभुकोमारगअभैपददीजै॥ बहुरोंय
७७ हअबसरनहिपावौं॥ तुमकरसमरौंमननहिआवौं॥ कछुधर्मनन
मौंगुपाला॥ प्रभुहकरौंतुमसौंनंदलाला॥ हमसिरपकसंभुपहिना
पो॥ ज्ञानगौरनहिचितविरमापो॥ शिवअर्पौनिरमायुलहोई॥
फिरवहकाहूदेतनकोई॥ ८८॥ दो॰ ना॥ प्रभुनिस्तनायहैनिगमनैर
हविपविभुवननान॥ चक्रसुदर्सनजोमरैविस्नुपुरीसोजान॥ ८९॥
चौ॰ ई॥ ब्रह्मादिकरुद्रादिकसबै॥ होउप्रसन्नदेहरघुरनबै॥ तुमवि
नसुअकेतननहिकोई॥ मेतुमभजेकृतारथहोई॥ तुमजोशास्त्रलेउ
नहिहाथा॥ यहविचारतुमजियजनुनाथा॥ प्रभुमनकरोंहैमअप
राधी॥ यहजियजानमौनतुमसाधी॥ होररहेहमसुकनसुरारी॥
दरसनपरसोगिरवरधारी॥ कतितुमशाह्लेउनहिनिजकर॥ सु
फकौंहनदीमियेसुकनवर॥ ९०॥ दो॰ ना॥ पहवचकहिअनुसाल
रनआरभयोसबिधान॥ निरखैस्मकोंरदशनैगुपनभयभगवान॥ ९१॥
चौ॰ ई॥ श्रुतिअवर्मजियदानवभयो॥ अबहींकस्लककहांइरगयो॥ सी
मधुनतमीजनतवडहाथा॥ पुनकैसेंपावोजनाथा॥ दीनबचन
सुघरैमउसारे॥ श्रीगिरधरहमरासतुसारे॥ कतिअरिषसुफलें
होहोहरि॥ हमरेध्योमनमैंविचारकरि॥ भयोनकोउपापसुफलेंअ
व॥ इरेकहांसुफलैंभायोसभ॥ अंतरजामीतुमहिसुरारी॥ यहहवि

पजानइरेगिरधारी॥ ९२॥ दोहा॥ हमविचारदेष्योहियेंकियो
नहीकोउपाप॥ जोकोऊअघसुरूपरभयोकहिदीनेहरिआप॥ ९३॥
चौपाई॥ कैकोऊवसोपातकीसुरूपर॥ तातेंभएअघदुष्ठकसदुर॥ कै
सुरूपरब्राह्मभयोघाता॥ कैकंन्यामारीपितमाता॥ काहूसुरूपरमहि
रीनइघायो॥ कैकाहूपरसर्नेचुरायो॥ कैकिहवेरीधनलियोसुर
महि॥ तिहअघहहरिइरगयो॥ तरतसुहि॥ ९४॥ दोहा॥ विनहूधन
नारीननैजिहयहइचुवनीहोइ॥ करैएकसोंहियेंहितहूजीसोंहितहो
इ॥ ९५॥ चौपाई॥ सहूनभईरजस्वलनैंलिय॥ तिहसंगसुरतकरे
हर्षतहिय॥ अपवाहमेरेघरकाहूनर॥ भोजनकियोरजस्वलके
कर॥ गुरूतलपीहमरेसुरभयो॥ यातेंहरिसुरूकोंतजगयो॥ आ
ताभंगकरीपितुमाता॥ कैकाहूदीनाइषधाता॥ धर्मआपनेकुल
कीमागी॥ कोविधवासंगहितअनुरागी॥ काहूकरीवत्रकीहाना
इनकोअघहहरिसतप्रमाना॥ ९६॥ दोहा॥ जाननहोंसुरूनगरम
हिभयोकोऊअपराध॥ जिहिकरमोसोंइरिरहेकरुणासिंधुअगा
ध॥ ९७॥ चौपाई॥ सुनवचनकहैहैतमयअनुसाला॥ सुरूपरसुत्रदियेनं
दलाला॥ जोहमरेसुरहितकनकीज्ञाताकोफलहमहरिकोंदीना॥
दर्सनदेउमोहिगिरधारी॥ हरनमनसाकरउहमारी॥ जैसुनकै
हिनउनतनमेना॥ अगगोकसकोरयविलेना॥ अवरहिअरणाप
रवहुआप॥ निरषैतजियअनेदवहाय॥ दानववचनकहेगिर

नं॰श्री॰ भा॰ २८

परस्रुति॥ कहितुमसुकतेंडुरेरमापति॥ ९८॥ दो॰ रा॥ प्रगटभएहो
आरतुमरनमहिश्रीभगवान॥ दोऊकरजुसमारनिजआवननहे
मुफवान॥ ९९॥ चौ॰ ई॥ काढ्योनीकनसरग्रतमालहि॥ कियोप्र\
हारवेगनंदलालहि॥ लग्योवक्षस्थलबानमुरारी॥ मुर्छितपरेधर
नगिरधारी॥ हैमनहीहरिकोंमुरछायो॥ दीनबचनकहिकस्र\
रिझायो॥ दानवमनवचक्रमहितहरसों॥ तांतेमुरछायोगिरध
रकों॥ मुर्छितहरिसारथीनिहारसो॥ ततछिनलेरथऊपरजासो॥
लेगोजहांजुधिष्ठिरवाहो॥ हरिकोंनिरखिभूपतिदुषबाढो॥ १००
दो॰ रा॥ शलिचिंताबसभूपभयोनिरखकंसकीओर॥ जुवतीक
रहिबिलापबहुपलोचभूमहिसोर॥ १॥ चौ॰ ई॥ मुर्छितभयोनंर
नंदनसव॥ भागेसकललोगसेनानव॥ पुत्रपिताकोनाहिसंभारे
पितानहीसुतमोंहितधारे॥ जोजगरक्षककत्रिलोकनिधाना॥ मुर्छि
तभयेतेऊभगवाना॥ रुकमनिसतभामादोऊतिय॥ ऊपरवाही
भईकसतिय॥ भलीभांतहरिओरनिहारो॥ नहिमुर्छितमनमां
हिविचारसो॥ प्रेमवानसोंहरिमुर्छायो॥ भगतहेततनधर्मगिरा
यो॥ २॥ दो॰ रा॥ तवसतभामावचकहेसुनऊश्रवननंदलाल॥ ले
मकोंरनमुर्छितकियोमहांबलीमनुसाल॥ ३॥ चौ॰ ई॥ महांसर\
धनवग्रतमाला॥ तुमकोंमुर्छितकियोगुपाला॥ कनग्रुग्रक
रनधरगकारा॥ वहलोपाहरिपुत्रलक्षारा॥ आपसंभारहश्रीभग

वीना॥ तुमतोश्रनश्रयसमाना॥ अवनासीतुमअगमअपारा॥
सदाअलिप्तरहोसंसारा॥ जलवूडेनहिंअगननजारै॥ पवननसोष
तनुफहिंसुरारै॥ सस्त्रनवेधिसकहिंप्रभुतुमको॥ अवरननेदेषदेष
त्रिपयतुफको॥ ४॥ दो॰ हरा॥ काहेधरनीगिरपरयो तुमतोसमस्तरूप
आज्ञादीजेमोहिकोंधरोंचंडिकारूप॥ ५॥ चौपई॥ गहिलावोंघनव\
अत्रसाला॥ इरोंनतुमचरननतेंटलाला॥ करोंसंघाररैतमकीसेना
कहिहेंसमजधारथवैना॥ रानवलावोंसहिततुरंगा॥ होरनधर्म
सूनअतनभंगा॥ आशारेकूंश्रुफेजइनाथा॥ लावोंदैततुरंगमसाथा॥
तुमपरमातमपुरषअनंता॥ उग्रकृपाकरश्रीभगवंता॥ कहिसत
भामावचधरभाउ॥ रहकनयहहारसोंधिधाउ॥ ९॥ ॥ दो॰ रा॥ इति
श्रीभारथपर्वलेअश्वमेधजागान॥ कविछहकतपूरनभयोद्वादसधा\
पथमान॥ १२॥ ॥ अथ नउवांध॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनमेजराजाना॥
हसेहरिसहोपेमविधाना॥ सतभामाकेवचनसुनेसभ॥ उठेकृस्नर
थपरबैठेतब॥ कह्योसारथीकोनंदलालहिं॥ हांकचलावहुरथ\
ततकालहिं॥ मूर्छाकुरीकर्नकेनंदन॥ वहुरायोनाकेढिगसंदन॥
पांचबानहयकेतचलाए॥ रथसारथीहैतकेघाए॥ अश्वधजाहनध
नेगिराई॥ सतनसुतचलोसिंहकीनाई॥ १॥ दो॰ हरा॥ आगेतेअनुसाल\
पुनकछाइदियेरसबान॥ एकविसकसोंकर्नसुतनषंडतकिपप्रमा
न॥ २॥ चौपई॥ वहुआयोरथअवररविसाला॥ नाहीछिनदानवअ\

नं॰ ग्रं॰
भा॰
७९

त्रुसाला॥ करलजुद्धदोऊसमरणरसमर॥ करहिप्रहारघोरतीक्षनस
र॥ प्रलैकालवर्षाजिमहोई॥ सोंसरचलहिबूंदजिमसोई॥ हनीबहुत
सेनाअसुरनकी॥ देषनअत्रुसालहिरिसभरकी॥ महांक्रोधकरवा
नचलायो॥ तिहसरकरनैनकोंमुरछायो॥ फिरआपभगवानआप
चलि॥ देषचलोअत्रुसालमहाबलि॥ २॥ दो॰॥ मनमहिकियोप्र
णामपुनिवचनकहेअत्रुसाल॥ सुफहिसनाथनकर्लैहोकिहहृष\
नंदलाल॥ ४॥ चौ॰ १॥ पुनअसरणप्रभुमोहिबनावहु॥ करुनाकर
मननतनत्रिपतावहु॥ सुफविनअवरनकोउधारै॥ सुफसेपापीकों
निसारै॥ तुमरेभगतनकोरनिसारहि॥ दर्सनदेअवकोदनिकारहि
सोतुमठाढेत्रिभुवननाला॥ कोरसुरआभाविषाना॥ पुनअसरणमो
कोंकहिदीनै॥ हमराजनमसफलअवकीनै॥ करुणाकरबोलेभग
वाना॥ करआवहुपहकररसनाना॥ ५॥ दो॰॥ हरिवचसुनआनं
दभयोचलोहैमततनकाल॥ मंजनकरप्रापनभयताहीछिनअत्रुसा
ल॥ ९॥ चौ॰ १॥ पुनवचकहेहैमअत्रुसाला॥ सुनइहवचनदषीनैर\
लाला॥ कलिजमप्रभुफहिनशस्त्रचलायो॥ मतछिनगिरधरनीसुर
कायो॥ पहविचारकीआमनमांही॥ दानवइहविलोकोंनांही॥ प
हनियजानधरनलपरायो॥ जाग्योलोगसकलभनिआयो॥ लोगकहैं
दानवबलवाना॥ मर्कोपोत्रैलोकनिधाना॥ जिहकरतुमरनतिरै
सुरारी॥ सुफजानीसभवातनउत्यारी॥ ७॥ दो॰॥ महाकलमषीप्र

158

फकियोकौनहिवानघट्टार॥ तबप्रभुहिअपनेहियेमहिंऐसेंकियो
विचार॥८॥सोरठा॥ यहविचारमियज्ञानप्रभुफप्रगुरदेषायोघटघटमन॥
सहिनसकहिभगवानसुतनदुषमांनेप्रभुफहनहि॥९॥चौपई॥प्रभुफउ
घघ्रकोंअतिदुषदीना॥ तोतुनिबमकरमसहनलीना॥प्रभुफअपनेम
नमांहिविचारयो॥पवितजानप्रभुहिइरिनघहारयो॥पुनहषकेतभी
मग्नरषायो॥तोलमधर्मसाधरनआयो॥प्रथमेंप्रभुफपहवानविचा
री॥भगतनदुषनसहेगिरधारी॥ सुतनदुषदेषनआधजनायो॥भग
तदुषीतनछिनरणआयो॥तमआयेधर्मजनलेसाथा॥नीकनसह
गहेनिजहाथा॥१०॥दोहरा॥तमकोंसनप्रभुषदेषकेमोमनभयोअनंद
भगतनकोदुषदेषकेरनआयोनंदनंद॥११॥चौपई॥अबनहिबडतन
दीनताकरउं॥रनमहिइकबिधर्मतेडरउं॥तौतेंजीतकरउंप्रभुफदास
बिनजीतेमिलनाउपहासा॥मैंजीतेबिनसिरननिवावों॥नाहिनकबी
धर्मलजावों॥गुरुजीनकीयोअपनालेक॥साधोपरमारथसारथ
प्रभु॥बचसतनभयप्रसन्नमुरारी॥ठाडेहैतनकरगिरधारी॥बोलेके
शसतनडूअनुसाला॥यहठाडेसभसुरबिसाला॥१२॥दोहरा॥गुरुदेके
रडूमिडसरसोंसोप्रभुफकडूप्रगटाय॥सोर तमरेसनप्रभुषकरोंगुरु
करदूरनआर॥१३॥चौपई॥सुनबोलेदानवअनुसाला॥जोप्रभुफउच
तकहोनंदलाला॥तमसतनप्रभुफउठावोहाथा॥पुनतहीलरोंगुधि
षिरसाथा॥तमराभगतधर्मकोनंदन॥सोमोहिजोगकरोंनिहचं

गं·श्र·
भा·
८·

दन॥करनउवअतिसूरमहांवर॥निहसोंजुद्धकरोंजिपरुविप
र॥अंत्रनदषकरीगिरधारी॥उठेसूरसभअतिवलधारी॥कर्नेउ
त्रकोंकह्योगुपालहि॥जुद्धकरहुतुमसंगअतुसालहि॥४॥दोहरा
ग्रातारेहषकेनकोंपुनवोलेनंदलाल॥पांचवाननृपकहिवहिये
नेकोरहहुअनुसाल॥५॥चौपई॥हरिवचसुननतअवनअतुसाला॥
कारिपशिवसरननकाला॥धर्नअकासअंधहैगयो॥सकललो
कयाकुलदुषभयो॥मानोप्रलैकालकीवारा॥आपउओशिवकर
नेसंहारा॥कांपैतीनलोकअंबरधर॥कंससुरदर्सनचक्रलियोकर
होतभयोतबमहाप्रकासा॥किलविषमेरअभैपरभासा॥६॥दो
हरा॥सुमपसारप्रापतभयोहर्सनथीनंदलाल॥धमनसुखाराकुल
सकलवालकवुद्धिविसाल॥७॥चौपई॥वाननेजइरिगयोअकासा
चक्रसुदर्सननेजप्रकासा॥तवहषकेतभयपसविधाना॥काटेमरनि
बंगनेवाना॥८॥दोहरा॥पांचवाननृपकेतनवमारेहैसरिसार॥पै
नेउरपंषोंसहितपसोअसुरसुरकार॥९॥चौपई॥अवरवाननृपके
ननिकारे॥दानवकीकानीकसमारे॥अतिविहवलननरैभयोज
व॥कूरसयोरपकरनउवनव॥गावेगहिदानवअतुमाला॥पर
क्रोधरनिउपरननकाला॥मूर्छितनननआकुलहैरह्यो॥ऐसोव
वनभीममनवकह्यो॥कर्नजमसुनदवातमनरीजै॥सीसकाटदरान
वकालीनै॥१०॥दोहरा॥कहेकर्नसुतनसुनपितामहावलीअनुसा\

ल॥ऐसेसरनकोंहननजोगनहींइहकाल॥२१॥चौपई॥ऐसें
सरमहांबलवाना॥चहियेवकुलधर्मराजाना॥ऐसेसुभटहोहि
रहसंग॥तोकोंउबांधनसकैतुरंगा॥करनपुत्रकरपवनकु
लागो॥करहुचेतहइरिचरनलगापो॥कइकर्नछुतहनडगुणा
ला॥तुमप्रसादजीमोगजतुमाला॥इनहिहसोधर्मजकोबाना॥
ग्रामोमोहिजीतहजराजा॥मुजअपनाप्रणपूरनकीना॥रान
वजीनहाथतुमरीना॥२२॥दोहरा॥तुमरीकरुणातेंप्रभूसफल
किपोप्रणामोहि॥प्रभुसहनहानवपकरचरनलगापोनोहि॥२३
चौपई॥महाप्रसन्नभयेगिरधारी॥कर्नपुत्रपरकरुणाधारी॥प
यधन्यतुमरापितुमाता॥यहकारजकीनाकुसलाता॥तुमअप
नामस्रणप्रणाकीना॥जीमोसुहरसुजमसजगलीना॥जैमुनकहैं
हनदुभपाला॥ऐसेवचनकहेनंदलाला॥पुनदानवस्रीपनिप
गलागा॥बोलनवचनहियेंअनुरागा॥सुफलजन्मस्रवभयोहमा
रा॥इरसमनपरसोकुसलक्ष्यारा॥२४॥दोहरा॥धनधन्यतुमकर्न
हनजिनकीनाउपकार॥गहिहिसोतुमचरनपरभवतेंलियोउ
वार॥२५॥चौपई॥यहबालकप्राननकोदाता॥जिहकरपरसोवि
भुवनलाला॥कोरजनमकीअघानिवारी॥दिघरायोमुजगिरव
रधारी॥बालकसमप्रभुजसूरनदेष्यो॥परउपकारीयहप्रभुहिपेष्यो
ऐसोमीतननदेष्योकोई॥दुषहरीजेहुषप्रापतहोई॥प्रभुजबालक

जै॰ग्रं॰ कौंप्रतिदुषदीना॥तिहपुनमोहिकनारपकीना॥शत्रुभाउन-
भा॰ हिहियेंसंभास्यो॥करुनाकरप्रभुककौंनिसनास्यो॥४८॥दो॰॥वा-
८१ लककोजसविमलवरप्रभुषमांग्योनहिमान॥ज्ञानदानप्रभुककौं
हियेरसहिकरनकेमान॥४९॥चौ॰१६॥कहेकर्नैसुनसुनप्रभुसा
ला॥रुकपरसेपगश्रीनंदलाला॥जिहपगकोनारदसनका-
दिक॥धरनध्यानहियशिवब्रह्मादिक॥रिपप्रभुनितपीजननक
रध्यावत॥कोटजनममसिमरनकरपावत॥लेपदपंकजलमस
विधाना॥हरसनकरेंजनमविपताना॥पुनवोल्योदानवप्रभुसा
ला॥धमकर्नैसुनवाङ्कविसाला॥लमप्रसादहरिदर्सनकीना॥
किलविषमेटिप्रभैपदहीना॥५१॥दो॰॥सा॥लमप्रसादप्रापनम
परसनश्रीनंदलाल॥धमलत्यागकुलसकलबालकव्रुद्धवि-
साल॥५२॥चौ॰१६॥हनलषकेनकहेप्रभुसाला॥अवलोकोमैंश्री
नंदलाला॥इकसौएकपिनरममताल्यो॥हरिदर्सनतेस्वर्गसि
धाल्यो॥महांअतुलबलश्रीभगवाना॥मोरकीर्तिहिनरनस्वर्का
ना॥धमकवकुलअंतरजामीहरि॥कियोमनोरथसिद्धकृपाकरि
दासभावप्रभुजमैंपहिचाना॥अविनासीत्रैलोकनिधाना॥समज
नलोगवैरभाउअंग॥तुहकरनआपोदानवसंग॥५३॥दो॰॥सा॥-
लोगकहैंनजनभलेकस्समाप्यअतुसाल॥अंतहकर्नपद्धान
केगनदीनीजनकाल॥५४॥चौ॰१॥रामभाउजिनकेनिपदगदर

162

मुक्रहेतसिद्धकृतनिरंतर॥अपनाद्दुषनविचारतश्रीहरि॥रे
नसुजसजनकोंकरुनाकरि॥वचनसुनभएप्रसनकृपाजव।के
तलगायलियोरानवनलव॥कोरजनमकेकलुषनिवारे॥कृपा
करीहानवनिलारे॥कारगहिहानवहरिअनुसाला॥गलोलैच
रननभूपाला॥अनिआरस्सोंनृपतजुधिष्ठिर॥भुजभरलियोहै
मअतिरुचकार॥२४॥दो॰रा॥अस्वनिरषआनंदभयोअतिजीत्योअ
नुसाल॥धन्यधन्यसुषतेंकहैश्रीपतिकोंभूपाल॥२४॥चौ॰ई॥कृपा
कुसलनहोमहाराजा॥यहअनुसालसहिततुमवाजा॥महांसर
वरअतिअभिरामा॥सिद्धकरेतुमरेवहुकामा॥जैसुनकहैहु
नउकुरुराई॥ऐसेवचनकहेजउराई॥कृपाकरीत्रिभुवनसिर
नाजा॥कियोधर्मराजनकोराजा॥पुनश्रीपतिमनमांहिविचारे
मुकुरनकेवहुकामसवारे॥पुनइनकियोअरंभयतवर॥मुकुआ
मालेनृपतजुधिष्ठिर॥२५॥दो॰रा॥सिद्धमततइनकाकरोंजीनरेउ
हिसचार॥महावलीराजेसकलसेवहिधर्मद्वार॥२५॥चौ॰ई॥प
मैंनरेसतनवनिकरवतावों॥सभएकद्वीपतचरनलगावों॥प्रथमैंह
मयधर्मजपगलागों॥भक्तउनापकरोंनहिमागों॥गाढारहोंभगत
केआगे॥सभभक्तनकरोंहियेंअनुरागे॥इकइकनृपतधर्मपगला
ठौं॥सभराजनकेनामवतावों॥अमुकीनगरीकायहराजा॥आ
योतुमरेयतसमाजा॥अस्वमेधकृतनहेहैमरन॥पाकेयहविध

करौंसंभरन ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ मनकरावौंभक्तिनेंभरनकरौंसमा
न ॥ नृपजुधिष्टिरकोंकरौंसभराजनसिरताज ॥ २५ ॥ जैपनइका
च ॥ चौपई ॥ पुनअनुसालअम्हरसतावर ॥ लीनोकंठलगाइजुधि
ष्टिर ॥ धर्मजनकहैहनइअनुसाला ॥ महाबलीनमतुइविसाला ॥
वारधानआगेसतरसुत ॥ मैंपांचमोंप्रमानजानतुक ॥ करइस
हारअधकेपाके ॥ मनक्रमवचकूफइतमआके ॥ इहप्रकारत
पवचनवषाने ॥ समअनुसालसमकरमाने ॥ २६ ॥ दोहरा ॥ हरष
नहीयेंवचकहैहनइधर्मभूपाल ॥ सतनसमहषकेनकेमहाप
राक्रमवाल ॥ २७ ॥ चौपई ॥ कर्नसुनहिअतिसरमहाबर ॥ अबर
बलीयाकेनहिसमसर ॥ समप्रतिताअपनीकीनी ॥ सपथकरी
तसफलकरलीनी ॥ महांपराक्रमसत्यअतुलबल ॥ सभसेनाकी
नीरनरलमल ॥ रनअपनाप्रणपूरनकिये ॥ छत्रीधर्मसुजगत्र-
मतिये ॥ मुकेरेषतकीनापहकाजा ॥ जीतअसुरगरहैसापोवा
मा ॥ जैसुनकहैसुनइक्रुतनेंरन ॥ पहवचनकहैकसजगवंरन ॥
ङ॰ ॥ दोहरा ॥ वचनकहैअनुसालपुनसुनहोश्रीभगवान ॥ बहन-
मिनसनमुषतुफहिमोहिप्रहारेवान ॥ ८ ॥ चौपई ॥ प्रथमेसुफल
नमांहिविचासो ॥ नौलयमनमुषवानप्रहासो ॥ कमलापतिकों
रिसउपमावों ॥ चक्रसुदर्सनसोंपतपावों ॥ अबरनइतोककसु
हिकाजा ॥ समसकहतहैंश्रीजदुराजा ॥ हमसेवकशिवकोंनेरनं

164

रन॥ नवनहिंकीनातुमकोंवंदन॥ अपनासीसईसकोंदीना॥ और
ठौरनिरमाइलकीना॥ गुरुसिरआनठौरनहिंदयो॥ फिवहीनोनि
रमाइलभयो॥४२॥ दो॰॥ निरमाइलसभसीसथाजववहहोने
शान॥ अबमुहिमारजिवाइयोकरनहलनहिंवलवान॥४३॥ चौपई॥
हिपेकर्नेसुननेनोतननघाणा॥ तुमकरुनातेंश्रीभगवाना॥ सबहींसि
वकोंतनकरआवन॥ सकलजगतमहिंअपजसपावन॥ गुरुतज
औरठौरसिरनावै॥ सोनरघोरनरकगतपावै॥ तौतनतजनमइमारा
भयो॥ तुमकरुनातेंसबदुखगयो॥ मारजिवाइप्राणदीनेजिन॥ कि
योहासअपनासुतकोंतिन॥ वारंवारकुसपगलागे॥ भयोहरुतार
पसभअसुभभागे॥४४॥ दो॰॥ भयप्रसन्नगुपालनवमिट्योरेमको
भाइ॥ हेवजनमपापनभयोमनपायोवहुराइ॥४५॥ चौपई॥ मलकहा
घधारनेरलालहिं॥ अपनादासकियोअनुसालहिं॥ पुनअनुसाल
चर्नेलपटानो॥ असुनकरतनप्राणअघानो॥ मनवचकर्मकरितो
बकियोहरि॥ पुनआयोचलनिकटजुधिष्टर॥ हरषतभेटनपतकों
दीनी॥ हाथजोरविनतीवहुकीनी॥ एकलाषगजदियोसंपूरन॥ कुं
भस्थलमुकताकरपूरन॥ दियेतुरंगलाषइकवीसा॥ प्रगटपूर्नेर
थअयुतपचीसा॥४६॥ दो॰॥ सातअयुतरथकनकभरमणिमुका
हलप्रत॥ भेटदईनृपधर्मकोंदानवकुलहजन॥४७॥ चौपई॥ पुनप
हवचनकहेअनुसाला॥ हमआयोतुमदरसगुपाला॥ अरुपुनिम

न॰पु॰ रनलहारेहाथा॥चक्रसुदर्सनकारेमाथा॥आपोइहांसुक्रकेका
भा॰ जा॥वांछतफलपायोजइराजा॥सकलमनोरथपूरनभए॥कोट
८३ गनमकेसंकटगए॥तुमभगवनकेहाथविकाने॥वलिकेद्वारपा
लजगजाने॥छत्रिधर्मतुमजगतदृढायो॥धरमुवनारसुरप्रगटा
यो॥४८॥दोहरा॥सुक्रनमितररसवकोंहैंआयोभगवान॥छत्रि
धर्मअरूधर्मपददोऊभएप्रमान॥४९॥चौपई॥हमोमोहिवैकुंठ
मांहिनर॥सकलचतुर्भुजरूपहौंहिहर॥छत्रीधर्मउहांनहिहोई
हैंनहिवांछतहोंप्रभुसोई॥मोहिनरेकउवासहरिलहां॥छत्रीधर्म
नदैहैमहां॥मांगनहोंतुमसोंगिरधारी॥जुगजुगछत्रिपधर्ममुरा
सी॥पहवरमोहिसुफलहरिदीजै॥करुणासिंधुकृपामोहिकीजै॥
सदाहोइमनकमलचरनरति॥हरिजससुनोंसदाउअलमति॥प
दोहरा॥सुनेवचनअतुमालकेश्रीपतनभएकृपाल॥करधनुगहि
दानवकुलनाशोचरनप्रवाल॥५०॥चौपई॥गहीजहांवसुम्रतु
सालहि॥फिरहयपकोनहांनेहलालहि॥रथचढनहांप्रङ्ग्रसि
धायो॥सैनाजीतअश्वगहलायो॥अस्तनकरीधर्मकेनेरन॥पम
कुलखनअरिदलकंरन॥प्रथमेहरिधिगकारकियोहतन॥नोते
हरिभएनहीअस्तुन॥प्रुकोबलेवजाइनिमाना॥गंगातीरकरर
कठहराना॥सकलसुरमहिहिनिरषतभए॥नगरप्रवेसकियोउ
वगए॥५१॥दोहरा॥आपोअपनीऔरसभकरतभएविश्राम॥वी

नगपतिनवीसनवकुश्रोनपनकोंसाम॥ ५३॥ श्रीराम उवाच
चौपई॥ कहेकल्याननहोमहराजा॥ दिनधरेकीजेयहकाजा
चैत्रपूर्णमासीइकीसदिन॥ उपमकरहूनविलमइकछिन
आज्ञाकरीनंदकेलाला॥ दीजेदानद्विजनभुपाला॥ सभराजन
कोंभोजनदीजै॥ सभनतोषआदरबहुकीजे॥ छीरपाकनेआद
षष्टरस॥ व्यंजनसकलवनायेअतिरस॥ ततछिनरूपकारज
यहकीना॥ विधवतदानद्विजनकोंदीना॥ ५४ दोहा॥ प्रथमे
भोजनद्विजनकोंदियोपरमहितमान॥ दानदछनादेसकलपु
जाकरीविधान॥ ५५॥ चौपई॥ पुनिसभराजनदियोअहारा॥ पह
राये भुखाहलहारा॥ हयगजरथअभरनपहरीने॥ छत्रसत्र
राजासभकीने॥ तिनप्रतियहविधकरतनरूपनसभ॥ वीनगण
इकवीसदिवसतब॥ देवरिषीसुरइंद्रसहितसुन॥ नवग्रह
गणगंधर्वमहांमुन॥ सावित्रीसंगब्रह्माआयो॥ संकरगौरांसहि
तबुलायो॥ इंद्राणीसंगइंद्रहर्षमन॥ तीनलोकआएहरिदर्सन
५६ दोहा॥ चारोदिसकेलोकसभपृथ्वीपतनरनार॥ चलआ
एगजपुरीसभदरसनकरनमुरार॥ ५७॥ चौपई॥ वैस्यदेवनतन
छिनहिंबुलायो॥ मरतवंसनहांचलआयो॥ हयपकोरनकाउच
मकीना॥ इपदसुताकोंसंगचरलीना॥ वांधोलस्मणयुधिष्ठिरसा
ण्या॥ ततकंकनावांधोहाथा॥ हयपकनहरिआपनेकरकीनी॥

ज॰अ॰ आनंदहृदयआग्याप्रभुदीनी॥लेआएहरिवेगनवरंगा॥करी
भा॰ प्रतिष्ठाहियेउमंगा॥गावनगीतमुदितनरनारा॥बाजनहैं
८४ पवनरवअपारा॥५८॥दो॰रा॥रंभाआदिकअपसरांनाचनरा
मडुवार॥ग्रहग्रहमहिआनंदभयोगावनमंगलचार॥५९॥चौ
पई॥हंसनवरंगमकीप्रजावर॥विधवनकीनीनृपनजुधिष्ठि
र॥निगमउचारकरनद्विजहरषत॥कुंकुमारिसोंकरहपच
रचत॥करतप्रणामदेवमुनिवाना॥पूजाकरनअनेदनराजा
धोउसमहसअगोमरसोतिय॥गावनमंगलचारमुदितहिय
देवकिअरुरोहणीजसोमत॥गिरषसमाजवढीमनअतिरत
अरुंधतीसचसिषनारमुनि॥अतिहर्षतमनतनगावनगुन॥६०॥
ये॰रा॥पूजाकरहिनवरंगकीकूलनजुधिष्ठिरराइ॥कुंकुमचर
चनपरसरवेदमंत्रकेभाइ॥६१॥चौपई॥करनप्रतिष्ठाविविप्र
कारा॥नषसिषकुंकुमलेपहपारा॥आरतिहरिलीनीनिज
हाथा॥हयअवंगप्रजाविधमाणा॥कंचनमुकरमंगापतिको
हरि॥नापरलिषोप्रतापनृपजुधिष्ठिर॥धर्मजननपसकारनकुन
वाना॥भएसहायकपीनइराजा॥जोउराजापदहगहेनवरंगा॥
ताकोंभीनकरहिहयसंगा॥महासमरजोधेवलवाना॥ताकोंकी
नकरहिवमसथाना॥६२॥दो॰रा॥मैरहेहिउवसंगचलहंसनवरं
गमहार॥सेनापनअर्जुनवलीनिरमितलहनहियार॥६३॥चौ

पई॥ अश्वसहाइरूपतस्तरेवर॥ सुकृतकियेहूपरपतजुधिष्ठिर
धर्मजजतनकरनकेकाजा॥ जीनरूपतकीयोकनवाजा॥ यहविध
लिषराषोमलकपर॥ अनिलिविचित्रबांध्योवलिहूविकर॥ वीरजी
नकंचनकोसोहै॥ रतननजटमनिरषतमनमोहै॥ हीरामनिमुक्ता
हललागे॥ निरषनैननमनअनुरागे॥ कुंदनजंरकाकंनविराजै
पगतुंत्रुरूमधरधुनछाजै॥ ४४॥ दो०॥ अंगअंगभूषनवनेसोभा
बढीअपार॥ रिषअभिमंत्रतअश्वकोसंषधुनितउचार॥ ४५॥ चौपई
पूजाअश्वकरहिविधसाषा॥ रूपतजुधिष्ठिरअरुहजनाषा॥ दु
पदहूनाआरतीलियेकर॥ धूपदीपसोभतहूगंधवर॥ जवलिन
सहूतमहारिषराजा॥ पूजाकरहिहर्षमनवाजा॥ अर्जुनप्रतिश्री
कृस्नकह्योतब॥ अश्वसहाइचलोपारथअब॥ धर्मजअर्जुनओर
निहारो॥ हाथजोरसुषवचनउचारो॥ करोंवेनतीसुनसुकृपा
मा॥ करहिजतनपूरनजगताला॥ ४६॥ अश्वसहाइरमहागिरधारी॥
सहायापराहरहिहमारी॥ जोवनासअनुसालसरवर॥ लैसंग
चलहुविलंबनअबकर॥ कुसलघरननिसदिनहिपराषहू॥ जप
हरिनाममहधारसवाषहू॥ चेतनमसहारहोसविधाना॥ रक्षाअश्व
करहुविधनाना॥ जतनवीचहैहारससमासा॥ चितराषहुपदहि
येंउलासा॥ सकलचमूकेतुमसेनापत॥ रक्षककरतमरेहैत्रिभुव
नपत॥ ४७॥ दो०॥ हमकरकंकनबांधियोकरुनाकरनंदलाल

म॰ग्रं॰ वड्डरसंदीपनकरइ प्रभुक्रूवैगायामघमाल ॥ ९८ ॥ चौ॰ ई ॥ भीमन
भा॰ कुलसहदेवसंरवर ॥ गजपुररहेकरहिसेवाहरि ॥ जग्यकरमहें
८५ करेंसकलनित ॥ नेमधरइकारजकरइपरमहित ॥ जहांआघरा
वनेकठनश्रुति ॥ सिमरइतहांहृदेकमलापति ॥ ऐसोवचनकहे
भूपाला ॥ पहरायोअर्जुनभूपाला ॥ अपनेकरइहतिसस्त्रलियेतनव
कांधेपारथकरवनायसब ॥ फूलमालउरकीहरिदीनी ॥ अर्जुनप्र
रिनकंठधरलीनी ॥ ९९ ॥ दो॰रा ॥ गजमोतनकीमालरूपधर्मजर
ईइनाय ॥ कंचकसीपारथनवहिअतिअनंदजियधार ॥ [illegible] ॥ चौ॰
ई ॥ अक्कतलेअभिषेककियोतन ॥ नृपतयुधिष्ठिरअतिहर्षतम
न ॥ मत्तकहाथधारजगदीसा ॥ धर्मराजवइकरीअसीसा ॥ आसा
दीनीश्रीवेदनंदन ॥ पारथवलोअरिहनिकंदन ॥ पुनएतराछ
रकेचर्ननलग ॥ गंधारीकेपांइपरसोपग ॥ भीमनकुलसहदेवग्रा
नसों ॥ विदाकरनपुनचलेमातसों ॥ कुंतीपगलागोहितधारी ॥
रूपाकरइअवविदाहमारी ॥ [illegible] ॥ दो॰रा ॥ हरिहमकोंआताकरी
गुरुधर्मजभूपाल ॥ अवसमहारकप्रभुकियोरेसंगसरवविसाल ॥ ५
चौ॰ ई ॥ निरषनकुंतीभईरिपाला ॥ हर्षनहिपनमनसुनभाला ॥
कौनकोनसंगसरलसारे ॥ तेसभभाषइनाजहमारे ॥ कैसेवली
तस्यारेसाथा ॥ दीनेधर्मजअहनइनाथा ॥ तेसभप्रभुकोंभावह
नावइ ॥ हमरेहृदेअनंदवहावइ ॥ पुनवोलेपारथसुनमाता ॥ सा

प्रद्युम्न कृस्न को ताता॥ तिनकों हरि अपना बल दीना॥ इंसत रंग
सहाइक कीना॥२३॥ दोहा॥ तिनकों भाख्यो श्री कृस्न तिन दुअ वचन दे
वाल॥ अर्जुन हम में जानै ईं भान धर्म भूपाल॥२४॥ चौपई॥ पारथ की
रछ्या अब कीजै॥ हम रास धाम हां सुष दीजै॥ सदा रहो तुम आग्या
कारी॥ सेवा करहु परम हित धारी॥ जैसें तुम मम तुझ कों कर जानहु॥
तैसें अर्जुन कों पहिचानहु॥ जैसें सेवक हम भूपाला॥ तैसें तुम हम मक
ल्यो गुपाला॥ जो नर पवां पे धर्म तुरंगा॥ प्रथमे तुम मम कृत हि संगा॥
हम रैनै न थान कुंती सुत॥ ताको करहु प्रसन्न कृपा जुत॥२५॥ दोहा
ऐसें कहि सम भाइयो तिन कों त्रिभुवन तात॥ पारथ की सेवा करहु
है तुम रो कुसलात॥२६॥ चौपई॥ पुन तुझ संग करन को ताता॥ महां
सूर वर जग विधाता॥ तिन समेत नृप जो वनवास पुन॥ अरु अब तुम सा
लम हां सदा गुन॥ सात कसूतन वरमाजा दब सभ॥ सर अनेक दिये पे
झ संग प्रभ॥ मत्त कहा प राष तुझ गिरधर॥ भये कृपाल हरि पाल मो
हि हर॥ तीन लोक सरे तुझ साषा॥ जो सहार मोहि जदुनाथा॥ तिन
कुंती आनंद तन भई॥ पारथ वच तिन चिंता गई॥२७॥ सोरठा॥ आनंद
ते अभिमान वचन कहे तिन फालगुन॥ आता त्रिभुवन तात तुम हू
जे सेनापती॥२८॥ चौपई॥ द्वैदै सिह जी नगर हि आवहु॥ पहकार जन
हि विलम लगावहु॥ जो तुम संग करन को नंदन॥ कृस्न कृपा करि
कै रैनिकंदन॥ वालक नाम पसोम वकानन॥ कुंती भयो महां सुष

अ॰ श्व॰
भा॰
८६

171

प्रानन॥पुनमाताबचकहेनिरंतर॥कह्मबरनराषहुउरअंतर
कोटसूरसेनाकिहकाजा॥संगसहाइकलमञ्जराजा॥बहुअसी
सहीनीमहइनारी॥लागोबहुरचनेगिरधारी॥७९॥दो॰ रा॰॥पुनअर्जु
नकोंकसजीइसोपगभूपाल॥तुमराहोरप्रतापरनयौंसुषक
होगुपाल॥८०॥चौ॰ ई॰॥पुनयहबचनसुकहेसुरारा॥हैहैधर्मजन्न
नेकारा॥पुनअर्जुनदेवकिचरननलग॥पलोरोहनीकेसहमन
पग॥अश्रुपातकुंतीरगहारे॥देअसीससभसोकनिवारे॥पुनिरु
कमनिद्रोपदीविदाकर॥जैजैकारभयोतिहअवसर॥पुनपारथ
प्रतिकह्योसुधिष्ठिर॥करनयुद्धहैकुवरसरवर॥पुहमसमेरक्षा
तिहकीजै॥बालबहिक्रमपहमसुषरीजै॥८१॥दो॰ रा॰॥चैत्रसरमा
माकेदिवसमध्याहनकेकाल॥रजाकरइपक्षारिपोलेआजाने
रलाल॥८२॥चौ॰ ई॰॥जैपुनकहैहनइककुराजा॥सुकनभयोधर्म
गेकोबाजा॥श्रीपतिढिगपारथचलआयो॥करगांडीवधनुषकु
वक्षायो॥पुनपुनकरेइंरबनइरिकों॥महाप्रमत्रकियोगिरधर
कों॥पुनअर्जुनप्रनकसोप्रचारी॥कर्नसुननहिबालकबलभारी॥पा
कीरक्षानिसदिनकीजै॥पुहवीचबहुसबरनरीजै॥परहष
केनसरसिरताजा॥सिहकारेतुमरेबहुकाजा॥८३॥दो॰ रा॰॥श्र
र्वैनामहषकेनकोंहनइकहोंप्रगहाय॥शिवकोबारहनहष
भईनिसदिनबारेसहाय॥८४॥चौ॰ ई॰॥अर्पणमनइहषभजना

मा॥ सिववाहनसिंहधुजविश्रामा॥ वाहननामकहतनंदीगन
रक्षाकरनकरनसुतकेतन॥ संकरवाहनकर्नजधुजपर॥ सि
वप्रतापरनहोतविजयकर॥ तातैंयहरनकेवंदनभागा॥ निस
दिनमुकचरननचितलागा॥ याकीरक्षाकीजैपारथ॥ सिद्धहो
इस्वारथपरमारथ॥ विदाकियोघनभानुजनंदन॥ प्रथमेचवंप
सोजगवंदन॥ ८५॥ सो॰रा॥ पुनलागोकुंतीचरनवहुरदेवकीपां\
इ॥ रुकमनद्रुपदसुतावरनहर्षतलागोपाइ॥ ८६॥ चौ॰ई॥ पुनक\
र्नैजरद्रौपदिहिगयो॥ वचनकहनहर्षतमनभयो॥ सुनहुश्रवन
भरावतिनारी॥ पुत्रकोंआग्याकरीमुरारी॥ पठहैमोहिस्रबके\
साथा॥ धर्मराजगुरुमुनीनडुनाथा॥ तुमतितनप्रतिरहियोसवि
धाना॥ टहलजतकीकरहुविधाना॥ मनमहिराषहुध्यानहमारा
होइपतिव्रतसुफलतुमारा॥ सेवाकरहुदेवकीमाता॥ जनमसु
तारयहैकुसलाता॥ ८७॥ भुजंगीछंद॥ सो॰रा॥ सुनभरताप्रभु
वेनतीमनहमराखहुसंग॥ दासीपरकरुनाकरहुपतिव्रतहोइ
नभंग॥ ८८॥ चौ॰ई॥ कहरवेनतीसुनहुहमारी॥ सभजगकीरतक\
रतिहारी॥ जोनृपबांधहिहयध्रुवपाला॥ तिहसोंकीजैजुद्धवि\
साला॥ करसंग्रामपीठनहिदीजै॥ होरप्रतापसुजससजगलीजै॥
जोतुमरनमहिपीठदिषावहु॥ सभसरनमहिअपजसपावहु
पुनिमुकहसहिकुलकीनारी॥ रुकमनसतभामासुषकारी॥ पु

अ॰श्री
भा॰
८

नसभलोगकरहिंधृगकारा॥ भाषैंरनहिंकरनमनहारा॥८९
दोहरा॥ पुनमुनकन्हुवनीयौंकहैंतुमकर्नजनकीनार॥ छत्रीधर्मल
मारकैंभागचलोरणहार॥९०॥ चौपाई॥ जैमुनकहैंहनेउरामान
व॥ सेनावचहमषकेनहनेसव॥ कहेवचनहमभानुजमाना॥ सुन
भद्रावतिहमरीवाला॥ हमअतिवलीसुनउनृपसेना॥ कहेवच
नहिंयअपनेवैना॥ छत्रीधर्मसहहवभुजमोही॥ गुरुकरौंभागौंर
लनाही॥ जद्यपितीनलोकजुरिआवहिं॥ धर्मराजकोहूपअटका
वहिं॥ सुरहिसकलदहहरिसकेराजा॥ गहिवांधहिंधर्मजको
वाजा॥ ९१॥ दोहरा॥ प्रलैकरौंछिनमैंसकलकलकपावलधार
अश्वनक्षांगधर्मकोसुनभद्रावतिनार॥ ९२॥ चौपाई॥ देउगिराप
सकलदलसंग॥ छिनमहिंप्रलैकरौंनवषंड॥ तीनलोकमैंनाहि
नकोई॥ धर्मतुरंगमराषेजोई॥ हमरेहैंसहायरघुनंदन॥ छिनम
हिंअरिगनकरतनिकंदन॥ भगतअधीनदीनदुषभंजन॥ भग
वंतअरिदलगनगंजन॥ जिनहिंकरापोजनसतसंगा॥ सोमुहि
पवनअससकेसंगा॥ जोहैंरनतेंभागपलानो॥ यहवातेंमिथ्यास
भजानो॥ ९३॥ दोहरा॥ जोरनतेंदेउपीठहमनोमिथ्यायहवात॥
वेदवचनअस्यारचनगयापिंडमिथ्यान॥ ९४॥ चौपाई॥ निफलत्रि
वेनीमंजनहोई॥ गंगाकिलविषकटेनकोई॥ हरिसमरनतेंस
वनहिंलहई॥ पश्चिमदिसासागरमरीवहई॥ जोपहहोहिनिफ

लसभकामा॥ तोहमपीठदेहिसंग्रामा॥ जोरनमागपलायनहो
वहि॥ कुंतीधर्मलाजसबषोवहि॥ भागाहोइसोइरनभागे॥ सूरारन
कबहूंनहिभागे॥ जैमनकहेहनऊभूपाला॥ यहबचककहेकर्नके
वाला॥ ९५॥ दोहा॥ विरालईनवनारसौंसूरकर्नकेबाल॥ हरेध्यान
धरकालकोचललनभयोननकाल॥ ९६॥ सोरठा॥ ननभूषनपहराइ
बांध्योसुकरदलरंगसिर॥ अस्वयुधिष्ठिरराइहरिआनालेकाढियो
९७॥ चौपई॥ फिरेविराकरकुलसयुधिष्ठिर॥ भीमनकुलसहदेवस
रवर॥ आपनहांमहांमषसाला॥ हरषतमनगिरधरभूपाला॥ व
लोतरंगचमूकेआगे॥ रपतजोहिपीछेनिहलागे॥ सभसेनाको
मर्जुनलारथ॥ सेनापतिकीयोहरिपारथ॥ महाबलीनरपहयके
संगा॥ कुलसहासरकहसतरंगा॥ रक्षाचारीगवनतिवाजा॥ पीछे
चलेजांहिसभराजा॥ ९८॥ दोहा॥ अस्वचलोउमरहिसाअपनेसह
महभार॥ लत्तुपुरीषजहांहूपकरैजनतकरहिसुखपार॥ ९९॥ चौप
ई॥ गोइकलाघरेहिद्विजदाना॥ विधवतप्रजाकरहिविधाना॥ उम
रहिसाफिलोवहूवाजा॥ वांधनसकोकोउनिहराजा॥ देवांगनानरं
गनिहारो॥ एककोरमिलमंत्रविचारो॥ लाबसहसकोमानुरग
ई॥ कामबानलेसनमुषभई॥ बेसोकरकसकलबऊरिससों॥ प
कसोआइलरंगमसिससों॥ जोजोधासनमुषचलआवै॥ निरषब
हूपसकलसुरकावै॥ १००॥ दोहा॥ हगकराकसरमरनहनमोर्ह

न.श्रृं. सभवलवान॥कमलवरनअलकैंमधुपभौंहनवंककमान
भा. ॥५॥चौपई॥भौंहधनुषसरपलककवलावहि॥अधरसपरअलिअ
८८ रुनदिषावहि॥मुसकनसोंमुरकोंहिसरजव॥चंपकलीनासि
कामहांछव॥वेसरमुक्ताअतिसंहरवर॥गनचंचललरकनअ
धरनपर॥मुषनंबोलमदुबोलदसनदुति॥वदनकमलछवनी
रनसंजुत॥चिवुकचारुउरमालरहीफव॥उपमानिनकीकहिनस
कनकव॥कुचचकोरउरउननविसाला॥षोडसवरषचढिक्रमवा
ला॥२॥दोहा॥संकीरनभूषनपहरसोलहकिएसिंगार॥काजर
नैनकुरंगसजमकैंसरश्रपाम॥२॥चौपई॥रूपसवनमनमधते
श्रागर॥गजगमनचलहिहिकीनकरिनागर॥मुहनवानमोहिनस
भभए॥नवतिनअपमननभावनकिए॥गहिलेचलीनरंगमसा
षा॥किनहूनसरउरापोहाषा॥अनंनाहिसबमोहिनसैना॥ले
ननरंगहिदेषननैना॥आपनभयेकर्नकोनंदन॥सिमलोरूमक
लेसनिकंदन॥३॥दोहा॥रूसधानपरकर्नसतनसानषंडगकर
लीन॥हाउभाउकरवहुरूपकीभपोनवालसुधीन॥४॥चौपई॥अ
हांतानतहांकामकवनहै॥वालकधीररषीकवरनहै॥तिनमति
मुषजोनिरषविषातना॥लागीकहनपरस्परवाता॥हमतोमोहन
कियेवहनर॥यहतोमोमनवानअवरनर॥कामवानहनकोन
हिलागे॥हमकोंदेषनमनअनुरागे॥मानषंडगलेसनमुषदाहा

हावभावयामननहिवाढा॥ रेवांगनामध्यहषकेना॥ कुसधा
नधरन्नानसुवेना॥ ५॥ दोहरा॥ कविरहकननिनकेहियेंसदावस
हिंनंदलाल॥ तिनकोमोहनसकहिमनकोरंभासीवाल॥ ९॥ चौपई
॥ गाहीतियमहिवालसिमरहर॥ महापराक्रमतानधरगाकर॥
परसनकरहिकामकेवाना॥ करनस्तनहिहरिभगनहजाना॥ को
धनहियेंवानकरलीना॥ नुवतिनकोंलाडनवडकीना॥ भागचली
रूकधरमुरकांही॥ भाग्योतियदलरहहिसमांही॥ जेसेंहैंमरणाल
कीतारा॥ टूटनताहिनलागेवारा॥ तैसीकरीतियनकीसेना॥ मू
र्छितपरीनभाषतवेना॥ ५॥ सोरठा॥ कोऊभागनिजपुरगईकोऊ
परीरनमांहि॥ करनस्तनहिकारजकियोमहासरकिनमोहि॥
६॥ चौपई॥ भूषनवसनपरेधरनीपर॥ टूटपरेसिंगारमहावर॥ क
रहिहीनताबिनपअपारा॥ मुमकरहवालकहमरारा॥ वारवार
विनतीजिनकीनी॥ तेसभकाइकर्नहतरीनी॥ जेतकपीकन्य
काकुमारी॥ कछुनकछोलिहनिवलविचारी॥ रीनीकाइदसमह
रिसगई॥ तेउरहीरनविहवलभई॥ ग्रेष्ठसुपीसभमोंरकनारी
गहिलीनीवालकपुनभारी॥ ७॥ दोहरा॥ पुष्पकामनीजवगही
सभनवद्योजियसोग॥ कहतभईहषकेनको यहतुमकोंनहि
जोग॥ ८॥ चौपई॥ यहनहोहसूरनकोकामा॥ तुहकरहिजीनहि
रणवामा॥ जोतुमकरहुतियनरननासा॥ तोतुमहोहरनगन

म.भ्र. उपहासा॥ मोछकरइअवसभनुवतीजन॥ कीरतहोइतस्या
भा. रीत्रिभुवन॥ चलइकरइहमरेपुरवासा॥ नहांकरइतुमभो
८९ गविलासा॥ उमररिसावसहिहमसभतिय॥ चलइतनहांहम
सुषपावहितिय॥११॥ दो॰रा॥ वरनतहैसभजगतमहिअंब्रत
तीनप्रकार॥ एकरंइकेस्वर्गसुषहितियश्रमनफलसार॥१२॥
चौपई॥ तीजोअंब्रतअपरहमारे॥ पीवतहोतअमरमनवारे॥
देवांगनाआनतीजोहम॥ सुनइअवनरेसांचकहतमम॥ जै
सो अंब्रतलेइहरषमन॥ ननइसोकरनसुषहीतैतन॥ वइ
सुषतमकोंभोगनजोगा॥ तमसेसरनरहउहिलोगा॥ हमसी
दासीआज्ञाकारी॥ निसदिनप्रज्ञाकरहितत्यारी॥ कहौधर्म
स्वर्गसुषरोई॥ वलइसंगप्रापनतमहोई॥१३॥ दो॰रा॥ सुषरि
षरावहिश्रमितनजकौनेसुषसंग्राम॥ कनकशारीरकोंभ्रम
करइमदनरूपअभिराम॥१४॥ चौपई॥ निपमनसुषवालक
नहिवोले॥ हमसनहीहगपलकनषोले॥ श्रेषमसुषहेनीजोईन
री॥ करगहिभुजरथउपरडारी॥ एकन्रपुतरथतियभरलीनी
गजपुरकोंकर्नजपवरीनी॥ टहलकरइतुमधर्मराजकी॥ दे
षइकेनसालासमानकी॥ हसतनपुरत्रियप्रापतभई॥ स्त्रीकस
न्रपविप्रिरहृकोंदई॥ देषइकरनसुनतहिवलधारी॥ पमषपमसु
षकरहतमुरारी॥१५॥ दो॰रा॥ उमररिसकोंमीनकैचलोतुरंग

सुभाइ ॥ पूरवदिसमहिषापुरी जहांनीलधुजराइ ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तहां
तुरंगमप्रापतभयो ॥ अपनीइछातेंचलगयो ॥ महिषापुरीअनूप
विराजै ॥ महाउतंगगिरऊपरराजै ॥ महांसुदृढगढसिषरविसाला
नृपदानरीधर्मकीसाला ॥ ताऊपरप्रफुलतग्रंथुमरल ॥ गुंजक
रतनिनपरसोभतथल ॥ वनउपवनफलदलसंपूरन ॥ वरनवर
नकुसुममनकरषरन ॥ नृपतहंआपगयोइसनाना ॥ मीवनसुके
नकरहिविधाना ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ गायत्रीषटकर्मजुतवेदविषेसवि
थान ॥ कुवीसरउरासअतिदेतहिजनकोंदान ॥ १० ॥ चौपई ॥ नृपस
नप्रियावर्नलिइकाला ॥ क्रीडाकरतनफिरतसंगवाला ॥ सषीसह
ससंगसुभलाके ॥ ससिवदनीचंचलदृगनाके ॥ फूलनकेहिंडोल
वनावन ॥ प्रियावर्नकोप्रियाकुलावन ॥ समफूलनकेकरहिसिं
गारा ॥ पुहुपकंचुकीचौसरहारा ॥ करतकेलवनविविधप्रकारा ॥
मदनमंजरीताकीनारा ॥ अतिसुकुमारअंगअभिरामा ॥ तांतें
मदनमंजरीनामा ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ भूषनतहांप्रापतभयोतनविचित्र
मनभाइ ॥ निरषतुरंगमकोगह्योमदनमंजरीधाइ ॥ १२ ॥ चौपई ॥
प्रियावर्नकुविनिरषतुरंगा ॥ अतिसुंदररहपकेसभअंगा ॥ वर्न
नगातसकलकंकमजुत ॥ मुकटसीसराजतविसालइत ॥ मैं
मनकहैंसनइककराजा ॥ सेतवर्नउजलअतिबाजा ॥ ससिया
भाइतिइगाधसमाना ॥ भूषनअंगअंगबनेविधनाना ॥ कर्नतेअग्र

म॰अ॰ भा॰ ६॰

त्रिसाममहाछव॥कहूंकहूंरंगपीनरहाफव॥निरषतसुरंगग्र
नंदनभए॥इंपनिहरषहियेंविगसए॥२२॥दो॰॥मुकुटसुरंगम
भालपरपटिदेशोनपताल॥अषसुधिष्ठिरराइकोहससघा
जिहभाल॥२३॥चौ॰॥सेनापतअर्जुनजिहसंगा॥सरथअनेकचमू
चतुरंगा॥सवहनांनपटिहदेविचारा॥ताहीछिनरकहरतहका
रा॥तिहकोसमभहनांनसमझापो॥वेगपिनाकीओरपगायो॥क
हुसंदेसनीलधजराजा॥मैंपकराधर्मजकोवाजा॥मैसंग्राम
रीश्याताहोई॥करहुविचारकरैंहमसोई॥लैसंदेसहनउगयो
माइहतांनसमैकहदयो॥२४॥दो॰॥वेगनीलधजकोंतहांस
कलहतांनसनार॥त्रिपावर्तगहवांधियोअषसुधिष्ठिरराउ॥रथ
रपनीलधजवचनकरेनव॥त्रिपावर्तकोंहतकहोअव॥लेआव
इसुहिपासतुरंगा॥नुहकारकनुमअर्जुनसंगा॥कुंतीपर्मसुतह
मनकीजे॥करसंग्रामसुतनसनगलीजे॥उमरहेवसीठफिरआयो
सवहतांनरपतानसुनापो॥आज्ञाकरीनीलधजराजा॥कीजैनु
हनरीजैवाजा॥त्रिपावर्तहुनहर्षितभयो॥सवियनकोनिजउ
रपवहयो॥२५॥दो॰॥अवसमसहसंजोइननपहरेसकलवना
र॥सेनालेसनसुषभयोत्रिपावर्तचितचार॥२६॥चौ॰॥अवतपि
ताकीजेरपवहायो॥वमनोरमनसुषचवआयो॥अर्जुनप्रतिव
वकरेकोधनुत॥इमहैंरपतनीलधजकोहतत॥त्रिपावर्तइमरा

हैनामा॥ मैंबाधोपहहहयअभिरामा॥ मैंनोरूपननीलधुजता
ना॥ तुमरीचमूकरोंसभग्याता॥ सकलसूरधरनीसुरछावो॥ त्रि
पावर्नतबनामकहावो॥ पारथहसेबचनसुनअवनन॥ उग्रम
नउक्किपोहर्षतमन॥ ८॥ दोहा॥ सुनतबचनजहकेतहांपरे
महानेत्राउ॥ सूरनमनआनंदहहरषलागेसभैबनाउ॥ ९९॥ ॥ इति
श्रीभारथपर्वलोअश्वमेधआख्यान॥ कविटहकत्रपरत्रकियोत्रोट
साध्यायप्रथान॥ ९८॥ ॥ जैमनउवाच॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनहु
भूपाला॥ जुरेहोउदलसूरबिसाला॥ जुद्धकरनकोउग्रमकीना॥
करगांडीवधनंजयलीना॥ सनमुषआयोसेनसमेता॥ आपतम
घोतबहिहरषकेता॥ बिनयबचनबोलेअभिरामा॥ प्रथमहेमक
रिहोंसंग्रामा॥ महाबाहुकोबर्जरहायो॥ आतालेहरषकेतसिधायो
धनुषबानलेसनमुषगयो॥ कर्नसुनतहिनिपक्रोधतभयो॥ २॥ दो
हा॥ क्रोधबचनसुषकेतकहि त्रिपावर्तसुनकान॥ तुमसमायोहै
मोरदलमहांसूरबलवान॥ २॥ चौपई॥ हमकोंजानकर्नकोंमेंदन
क्षिनमहिकरोंचमूसभकंदन॥ त्रिपावर्तसुनक्रोधबढ्योअत॥ २
ससरक्षाइरियेकर्नजप्रत॥ आवतसरहषकेतनिहारे॥ एकबा
नसोंसकलबिडारे॥ त्रिपावर्तधुनहनेपांचसर॥ रथसारथीध
ठोजमकेदर॥ चारबानसोंचारतुरंगा॥ जमपुरपठेसारथीसं
गा॥ रूपतनीलधजसुनतहरायो॥ त्रिपावर्तइकबानचलायो

अ॰ क्षे॰ भा॰ ९९

३॥ दोहरा ॥ कुटन नहीं अगन न भय लगे कर्न स्त्रवन माइ ॥ सागन हीं वि
हवल भयो परुयो धरन मुरछाइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ पुन सुन सुष अनुमा
न सिधायो ॥ छाइ दियो रसवान रिसायो ॥ त्रिपावर्त को गगन उडा
यो ॥ रथ समेत पुन धरन गिरायो ॥ टूक टूक रथ को कर डारो ॥ ह
यन समेत सारथी मारो ॥ मूर्छित भयो नील धुज को सुत ॥ पुन है
बरी उको ग्राप्त पयुन ॥ तीन बान त्रिपवर्त निकारे ॥ गहि अनुसाल
हियै कसमारे ॥ रथ समेत निहओमपठायो ॥ भ्रम भ्रम धरनी गिरो
मुरछायो ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ तब पारथ की चमू सभ सुन सुष भई रिसाइ
बहु रिस बर्षा हूं भई गगन रह्यो सभ छाइ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ त्रिपावर्त र
सवान काटन व ॥ अन पुरकै ठहरार अग्र सब ॥ छाइ दिए पमूर्छीस
भसेना ॥ कौन क कहो परत न हि बैना ॥ मूर्छा कुटी उओ अनुसाला
कर गहि धनुष धलियो तन काला ॥ कुरु सयान धर बान चलायो ॥ त्रि
पावर्त को गगन उडायो ॥ भ्रमत भ्रमत पुन गिरो धरन पर ॥
गहि परको पुन भ्रम सर वर ॥ मूर्छित भयो नील धुज ताला ॥ पु
रम हि सुनी नृपत पहु बाला ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ सुत मूर्छा सुन अवनन
बर नृपत चढ्यो कर क्रोध ॥ तीन को हरषी चमू संग अहं सर अति
जोध ॥ ८ ॥ चौपई ॥ नृपत नील धुज रण महि आयो ॥ सुत को मूर्छि
त देष रिसायो ॥ संग सुभट पावक बल बाना ॥ महावली त्रैलोक
निधाना ॥ प्रथमे निरष्यो रन अनुसालहि ॥ छाइ दियो रसमसर तन

कालहि ॥ लागेसरअर्जुनसालहियेंसब ॥ पसोजाइसमरमपया
लनब ॥ जोवनासराजारनगयो ॥ एकबानसोंमूर्छितभयो ॥ के
नवरमासाल्विकपुनआए ॥ एकएकसरसोंमुरछाए ॥ ९ ॥ दोहरा
एकबानसोंचमूसबमूर्छितकरीरिसाइ ॥ नबअर्जुनकरधनु
षलेसनमुषठाढोआइ ॥ १० ॥ चौपई ॥ नबपारथपटसबानप्रहारे ॥ न
पनएकसरसोंकटडारे ॥ सुनकेउषहियअधिकरिसायो ॥ पारथ
कोकसबानचलायो ॥ इमोसारथीसहितनतुरंगा ॥ नबअर्जुनको
धोअंगअंगा ॥ एकबानरिससोंकसिमारयो ॥ हयगजपाइकसी
सउनासो ॥ नृपतनीलधुजनिरषीसैना ॥ सीसरहितअबलोकी
सैना ॥ क्रोधतसातबानकरलीने ॥ अर्जुनबानप्रहारनकीने ॥ ११
दोहरा ॥ अर्जुनचक्राकारसरछाइदियेतिहकाल ॥ सातबानषंड
नकिये महाघोरविकराल ॥ १२ ॥ चौपई ॥ मर्छनजनहषकेनउको
नब ॥ नीछनसरनजहनीचमूसब ॥ जेउबरीपारथतेंसेना ॥ सो
हयकेनहनीसरपैना ॥ गजतुरंगपाइकसभमारे ॥ रथसमूहष
डनकरडारे ॥ ऐसेंसिसबारूकोटउसारहि ॥ नाहीसमैनासकर
गरहि ॥ ऐसेंसेनाकरीसिंघारा ॥ रकछिनमहिलागीनहिवारा
पाछेरह्योनीलधुजपावक ॥ चक्रतहैजैसेंमृगसावक ॥ १३ ॥
पावकनृपतनीलधुजदेष्यो ॥ महासोकवनतुषअवरेष्यो ॥ त
बपावकमनमांहिबिचारयो ॥ मुकतादेनीलधुजहारयो ॥ धिया

म.शु. वर्तेसत्रुसालमूर्छधर॥ वमूरूपनकीनासकरीसुर॥ चिंताउ
भा. पित्तभयोअतिराजा॥ हमबड़रोंइनकेकिहकाजा॥ पुत्रनमाना
९२ समसरहोई॥ पुनजगनागनागनैनकोई॥ प्रलैकरोंपारथकीसे
ना॥ सहरैमनउपजावोंचैना॥ ६॥ दो॰ रा॥ फूंकदियोमुषको
धसोंनिकसीअगनअपार॥ सैनापारथकीजरीलगाओंभरईन
वार॥ ७॥ चौ॰ ई॥ जहांतहांज्वालाहैगई॥ पारथकीसेनाहहलभ
ई॥ जरनलग्रेवारिदीपकीमाई॥ पुनआपनाकाजरीवुफाई॥ गज
तुरंगपररथअरूहनर॥ निमषएकमहिसकलउडेवर॥ वह
जरहिकंसनसंजोरसब॥ करभतुरंगगंइरजरहिसब॥ चक्र
रिसपावककियोप्रवेसा॥ जरहिसारथीभागनरेसा॥ सकल
वहिलरथभसमभएनर॥ जरहिअस्त्रअरुसस्त्रधनुषसर॥ १९॥
दो॰ रा॥ वहुरसुरमेरपनसमभइरहिवसनउतार॥ एकएका
रहिकछमनरीनेअगनप्रजार॥ ७॥ चौ॰ ई॥ एकपुरुषनकेके
सजरहिनन॥ सहुगिरपरहिसरउरेमन॥ एकमुपेरकथर
सुरकाने॥ रकभयतेरनमागपलाने॥ पारथसकलनिहारी
सेना॥ मूर्छितनसरनबोलनवैना॥ करनहतनसारथपरेरन॥
जोवनासरानामूर्छितनन॥ पुनसत्रुसालप्रगुणसरवर॥
जोवनासहनजोथपरेपर॥ समसेनाकोंपावककाजालो॥ ने
वपारथमननमांहिविचारयो॥ १०॥ दो॰ रा॥ हरेविचारतपंडु

हनजोकाहेंजलवान॥ थंडनपावककोकरेंनिश्चेसमप्रमान
४९॥ चौ० ई॥ मेघवानश्रवहीकसमारें॥ पावकतेजसहसकल
निवारें॥ इरपनकोंजिनक्रोधकरेमन॥ जनरखोइमइसहीके
षन॥ सनमुषजोगनवानचलावन॥ पावकसोंसंग्रामभचा
वन॥ मनवहमनमेंबैरजनावै॥ हमरेजनतसमैनहिआवै॥ पुन
फनभाषतसुषभगवाना॥ ताकोंदुहनउचनप्रमाना॥ रनसों
हैहमराबडकाजा॥ सिहकरेंहमरोमघवाजा॥ ५०॥ दो० ॥ बैर
करैमनजनमेंनाहीआइनलेहू॥ तांतेंरनसोंवेनतीकिएवे
नतीलेहु॥ ५१॥ चौ० ई॥ यहविचारपारथजियकीना॥ धनुषवान
करतेंतजदीना॥ सनमुषहूपावकपहिंगयो॥ हाथजोरकेठा
ढभयो॥ प्रथमेंपारथवचनवषाना॥ पावकसुनकोंनहीप
छाना॥ थांइवबनकीवानविनारइ॥ हमश्रीकृष्णनतुमक्रोधनि
वारइ॥ तुमरेसमहैंएकसमाना॥ निगमकहैंतुमसुषभगवा
ना॥ तुमरेवैरभाउनाहिहोई॥ सत्रमीततुमरेनहिकोई॥ ५२॥ दो० ॥
रा॥ तुमप्रसिद्धसभजगतमहिंतुमसमभ्रोरनदेव॥ तीनलोक
चौरहभवनकारहितुम्हारीसेव॥ ५३॥ चौ० ई॥ अतनरखोवरधर्म
नवाजा॥ विद्यमानठाढोजहराजा॥ तीनलोककेदेवबुलाए॥ मु
नीरिषीश्वरसभचलआए॥ जतनकरतहैंश्रीनंदलाला॥ सोभारे
तधर्मभूपाला॥ हमकोंपठयोसाथप्रसंगा॥ सूरवीरद्दीनेवडसं

गा॥ सोतुमलेहुछिनाइबाजकों॥ विचरनपरनृपश्रीकुसलकाज-
कौं॥ नगरओहरिनिमितत्तुमारे॥ सफलकरहुतुममीतहमा-
रे॥२४॥ दो॰हा॰॥ सोतुमचाहतहोलियोहमतेंअश्वछिनाइ॥ हम
फिरजैहोंगजपुरीकहैंकुसलकोजाइ॥२५॥ चौ॰पाई॥ हयपश्चावैगा-
तुमरेकाना॥ देहिअश्वतुममहींकोबाजा॥ सभपृथ्वीपरफिरे-
अश्वजब॥ लेजावहिगेमखसालातब॥ उनतुमफिरविछेनिवेरनहो-
ई॥ द्वैहैमनतसंशयरनसोई॥ सोतुमरेनृपपहचनआई॥ अबहींभ-
छनकरोउठाई॥ आगेपाछेभोगतुमारा॥ यहसोंकछुनकाज
हमारा॥ तुमरामुखश्रुरुक्मीभगवाना॥ दोऊकहैंक्षतिएकम-
माना॥२६॥ दो॰हा॰॥ हमकोंविनानाहिकछुविघमाननेंरलाल
मनतमूलकाटेमहांपावनपुंजगुपाल॥२७॥ चौ॰पाई॥ हमरेमोसह
रनंरनंरन॥ विनमहिकरतकोरअबवंदन॥ कहोनुककुतुम
रेमननमांही॥ रैनतरंगमहोकिधौंनांही॥ कहोयपारथवानक
पाकर॥ जिहप्रकारहमजारकहैंइति॥ यहनोहैगिरधरकोवा-
मा॥ इनसोंहमसोंकछुनकाजा॥ कौरजनतफलहमसविधाना॥
निनपरसहिरसनभगवाना॥ पारथववपावकसहनकाना॥
भयोप्रसन्नकोपविसराना॥२८॥ दो॰हा॰॥ नवेवेसंनरक्रोधतज
मिलोधनंजनपधार॥ कुसलप्रश्नकहर्षितभयोवचनकहेउगहा-
२९॥ चौ॰पाई॥ अर्जुनहमतुमकोंनपकाजो॥ तुमहीनामकहो

नवज्ञाम्यो ॥ तुमकोंनमस्कारहमरीअव ॥ क्षमाकरोहमरेदू
कृनसव ॥ तुमतोकहीजपारथवाता ॥ जहांहेंदित्रिभुवनकेला
ला ॥ कोरजतफलदर्सननाको ॥ जितअवलोकतहोमुखताको ॥
धर्मराइकोसदासहाइक ॥ संकरहरनअमितसुषदाइक ॥ रूप
तनुधिछिरअरुदुहिमाहीं ॥ भेदभाउअंतरककुनाही ॥ ३० ॥ दोहरा
साचकहोअर्जुनतुमहिपतमूलभगवान ॥ नामलियेंअघको
टमिटेसोगावेदसविधान ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ जहांसावधानहरिहोई ॥ को
टयग्यफलसहजतसोई ॥ जतनकराचनजिमितहमारे ॥ वेदवचन
कीगतअनुसारे ॥ सुषअपनेतेवेदनिकासे ॥ नानाविधजगधर्म
प्रकासे ॥ लिएतुराइनिगमदानवजव ॥ मछरूपधारआनेसव
किपोजगतमहिविभोइमारा ॥ प्रजाकरनसकलसंसारा ॥ जोप
हुवेदनप्रगटहोतजग ॥ नहहोततवसकलधर्ममग ॥ ३२ ॥ दोहरा
जिहप्रगटाएधर्मजगहेकृततविविधप्रकार ॥ सोहरिहैतुमरोस
षाकीरततअगमअपार ॥ ३३ ॥ चौपई ॥ पावकअगनसांतकरलीनी
सावधानसेनाकरदीनी ॥ मीनभाउकरवोलनलागे ॥ पारथपाव
कमूनअनुरागे ॥ प्रभुकियोजनमेनयछितपत ॥ यहहमोंनमु
क्यौमेसुनपत ॥ हमरेहृदेसंदेहमिटावहु ॥ करुनाकरयहकथा
सुनावहु ॥ कैसेंकियोनीलधुजराजा ॥ कन्याकोपावकसोंकाजा
किहनिमित्तपुत्रीरुपदई ॥ पावकसाथसगाईभई ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥

186

जै॰ अं॰
भा॰
९८

औरउरूष त्रैलोकमहि कहंन पायो कोइ ॥ कंमाश्रंगीकार
कों भरता कीनो सोइ ॥ २५ ॥ चौपई ॥ देह जरत नजिन के निरखे सु
ष ॥ पर्स किये औ होत न नारसुष ॥ लाजन भई नीलधज राजा ॥
पावक सों पुत्री को काजा ॥ यही कथा कहि मोहि सुनावहु ॥ के
सें आह भयो समझावहु ॥ कै कंमार स्वावर लीना ॥ कै यह ध्यात
पिता वर दीना ॥ उत्तर देहु कृपाकर मोकों ॥ जै मन सुनि श्रछत
होतो कों ॥ मुनिपत मो पर करुणा कीजै ॥ सकल वृतांत मोहि
कह दीजै ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ इति श्री भारथपर्वणि ग्रंथ मे धआ
ध्यान ॥ कविटहक अभरत किये ध्यपचठ ईशा मान ॥ ७ ॥ ॥ जै
मुनउवाच ॥ चौपई ॥ जैमुन कहै सुनहु भूपतवर ॥ सुनहु कथा
दे श्रवन हृदे धर ॥ पावक कथा आइ हम ओह म जैसें ॥ वैसे सुनावत
होंरूप वैसे ॥ महिषापुरि को नृपत नीलधज ॥ महाबली सूराग्र
मानधुन ॥ तिह दर हनुवती ज्वाला नामा ॥ नृपम भगवत हरि को
तिह कामा ॥ पुत्री जनमी पवक रूप तिचर ॥ महातेज सुंदर रम्या
भावर ॥ साहाशाषा नाम सुता को ॥ अति विविद्ध विप्र वश्रम
नाको ॥ १ ॥ दोहरा ॥ पांच वर्ष की भई जब तो रूप कियो विचार ॥
फ्कन आता है सुता कों दीजे श्रद्ध भतार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ नृपत नील
धज विप्र बुलायो ॥ कहि हसनांन हिज कों समझायो ॥ पुत्र पुत्री
कों श्रद्ध दनाई ॥ ओपति कहै हरे उत्तुलाई ॥ ततछिन हिजसा

हाथ हि गयो ॥ वचन कहत लज्जित जिय भयो । सुत कों पठो
तो हि पहि भूपत । मन वांछत तुम मांग लेउ भूपत ॥ जो तुम क
हो तुम तातों भूपत ॥ उत्तर कह्यो विप्र कों नृपत्र ॥ ४ ॥ दो ॥ हा ॥ तुव
लज्जित कंन्या भई कहि पठयो पितु जोग ॥ बाल दसा हम री सु
वहि नहि चाहों रस भोग ॥ ५ ॥ चौ ॥ ई ॥ वहुर हु तीन वर्ष बीते जब
आठ वर्ष की हुता भई तब ॥ करी संभार वहुर निय भूपत ॥ कंन्या
बड़ी भई है कंपत ॥ दस वर्ष ठहु परां तहुता हुव ॥ मात पिता तह
होत पतित नव ॥ जो रजस्वला हुता निहारे ॥ ताके मात पिता हत्या
रे ॥ चारों वेद कहत विधि ऐसें ॥ क्षत्री धर्म की जियत ऐसें ॥ पुत नृप
व्र सुत आवेग पठायो ॥ द्विज कंन्या प्रति भाष सुनायो ॥ ५ ॥ दो ॥ हा ॥ म
न वांछत पत ती जियत पिता कहत है तोहि ॥ वेद वचन प्रतपा
लिये उत्तर दीजे मोहि ॥ ६ ॥ चौ ॥ ई ॥ विप्र वचन सा हाम सुन कांना ॥
उत्तम तासों यहु वचन बषाना ॥ आज्ञा करी पिता सुहि ऐसें ॥ स
त्य प्रमान करों हम तैसें ॥ हरषत विप्र नृपति पहि गयो ॥ कंन्या को
हतांत कहि दयो ॥ द्विज वच सुनत नृप मन भयो ॥ ताही छिन पुत्री
पहि गयो ॥ कंन्या कों लज्जा अति भई ॥ पिता निरष मन महि सकुच
ई ॥ पुत्री प्रति नृप वचन वषान्यो ॥ जगत कार जोरन मन सकुचा
न्यो ॥ ७ ॥ दो ॥ हा ॥ सुनहु हमारी कुनि वचन जो कत तुम आवत ला
ज ॥ इच्छा चारी पन करहि जे कंन्या रिषराज ॥ ८ ॥ चौ ॥ ई ॥ सुरनर

सुताराजकंन्यासव॥मनवांछतपतलेतसकलअव॥वेहव\
वननिहचेंजियधारहु॥तीनलोककीरतविलारहु॥जिहवर\
कीइछामनहोई॥लेहुमंगारकरहुपतिसोई॥मांगलेहुपुत्री
पितनेवर॥जैसेंजगतरीतनेसंकर॥नववोलीसाहाहतनमा
ता॥तुमकोंकहनउचितनहिंवाता॥महाकामवसआन्तरको
ऊ॥मांगतकंतपितापहिंसोऊ॥९॥दोहरा॥तीनलोकचौरह\
भवनजीतेसकलअनंग॥रहकनकोरनमैंकोऊववोसाधके
संग॥१०॥चौपई॥ब्रह्मासवईशहरिदेवसव॥सकलअधीनकि
येमनमथअव॥निजप्रतिउतपतकरतपितामा॥संकरव
सगौरीअभिरामा॥गौतमरिषितियपसकलभाषो॥भेसअव
रधरकुलकरआपो॥सुष्यदेवतापईकहावहि॥तीनलोकप्र\
तावहुपावहि॥तेऊमोहमहांवसकीने॥त्रिभुवनजनसभम\
रतअधीने॥तिनसभकेपतिश्रीगिरधारी॥वसकीनेगोकल
कीनारी॥११॥दोहरा॥करतवेवनेकीपगपरतनिनप्रतिचरवन
गात॥निनप्रतिरोकतग्वारनीलेनमहीकोरान॥१२॥चौपई॥ग्वा
रतसोंरसरामसवनापो॥कोटसर्गसुषनाहिहिपापो॥कांपेलई
वरारतातिवर॥धेलकिवेनिसदिननिनमोंहरि॥दिनमेंग्वारत
वीरवुराए॥हविमोंदुधहरिमाधनवाप॥श्रीशकरीअनेकप्र
कारा॥मोतलियेगोकलकीरारा॥भयमरतवसमसमप्रमाना॥

आहि कहैं सुरज्ञ भगवाना ।। सुनइ नाम न जाऊं कलहारी ।। यह मो
सकल मैं न बस कारी ।।२३।। दो० ।। जीव न लोक महि जो पुरुष एक
निय सों रत होइ ।। नहीं असमंत मरन विषै मैं करि हों पत सों र ।।२४।।
चौ० ।। यह तो सबै काम बस आतुर ।। हैं न हि चाइत निय श्रैसोव
र ।। सो मन नहीं मरन की आसा ।। नहि वांछत हिय भोग विलासा
हम करि हैं अपनो पत सोई ।। आरंभ न सुरुसा पत होई ।। जीवन
मरन एक पति संगा ।। कबहु न होइ पतिव्रत भंगा ।। जीवत संग
मोइ पति हरसे ।। सुषे होय भोगे तन न परसे ।। तांते पावक करसों भला
रा ।। होइ सुजस सबै लोक हमारा ।।२५।। दो० ।। जीवत भोगै और पत
सुषे भोग वै और ।। पावक पति सम भलै भला मोहि दीनि लिह गौर ।।
२६ ।। चौ० ।। है है पति भुगवै जग हारा ।। तिन नहि हिय पै विवेक वि
चारा ।। देहु पिता सुत कों पावक पति ।। यह कारज कीजे मन रह
र्घन ।। सुनत नीलधुज विसमैं भयो ।। चिंता बस विकल है गयो ।।
कं मा सुषेन कहां निकास्यो ।। पावक नैन सुनहीं विचास्यो ।। करो
नीलधुज सुन पुत्री सुरू ।। ऐसो सो भरता जोग नहीं तरू ।। निंदा करे
सकल संसारा ।। नग महि अपजस होइ हमारा ।।२७।। दो० ।। कंमा
एक मुषी रई सुपने हु षन हि जोग ।। यह कहत कीना नीलधुज
मोहि हसहि गे लोग ।।२८।। चौ० ।। अति सैं सामवरन तन नाको ।।
भक्तन सर्व सांन नहि ताको ।। देत महा दुष जगत मरावन ।। निर्षे

म.अ.
भा.
९८

महांतपतउपजावत॥तुरूसोंहांसिकरहिकंमासम॥साहा
किपोभलारअग्निअव॥पर्सकियेभोजारेगाला॥निहवरसों\
कैसीकुमलाला॥जिहरेषेकांबेतनइरई॥कोऊज्ञानअमोप
नकरई॥तुमकोजोगमहीपतअैसो॥लेहोअवरमांगजियजै
सो॥९९॥दोहा॥पावकवरनहिकीजियेअवरकहोतुमकोर
तीनलोकमैंजोकहोपुरुषमांगवोसोइ॥१०॥चौपई॥पुनसाहा\
रुषवचनउचारे॥तनइअवनरेपितारहमारे॥मनवचक्रम
पावकपतकीना॥रेइसमर्थितिसहिमुकरीना॥एकअग्नीक
लहैभरतारा॥एकपितामातनजगसारा॥पाहीपतितेंहम
कुसलाला॥अवरसकलमिथ्याहैबाना॥कलितुमपावकनिं
रइलाला॥वहतोतीनलोकविधाना॥महांतहांवहरंभोसमा\
ई॥समहतीजगकोहषदाई॥१॥दोहा॥भवनचतुर्दससमुभ\
जोमगपहोमतपवान॥सिरइकरतहैमंत्रसबप्रजाकरतवि
धावन॥२॥चौपई॥सर्वभक्षनकोंतुमकहइह॥पांचमतमसही
मदिरहइह॥धीरसंइअरुरावसपारी॥श्रीफलषरसमसरा
अहारी॥तुमपितुकहोसर्गकेरामा॥श्रीमेषतइमरेकिहका
मा॥नतरानतपजपचरकरई॥तिनकोअवगंछइनजियधरई
विघनकरावहिविविधप्रकारा॥पचहिअपसरारेसगवारा
वंदितकरततनपसातिनकी॥हरनसर्गजिनदैहैहरनकी॥२३

दोहा॥ यह पंचीन हि निरों करि करों अगन भरतार॥ मै सुनज
न मेजनय कहे हु सुनहु कथा विस्तार॥४५॥ चौपाई॥ यह कहि साहा
उठी सुहित मन॥ लाइ किपो गंगा मंजन तन॥ पहिरे नौतन नवस
न सुअंगा॥ भूषन सकल सुधारे सुअंगा॥ अग्नि कुंड तिहि गौरव
नापो॥ चंदन काष्ट अगर मंगापो॥ गो घृतन की रस कल पानर
भर॥ ताम पिली गलाइ चीजाफर॥ जायत्री अघरोर सुपारी॥ मे
वा सकल भोग सुषकारी॥ सकल सुगंध सधूप दीपवर॥ होम
समग्री साव धान कर॥४६॥ दोहा॥ विधवत नहि होम किपो नहीं सा
हाजिय धर भाउ॥ किपो अवाहन ध्यान धर पावक कहु फुव रआ
उ॥४९॥ चौपाई॥ यह विध कर साहा उआई॥ नहीं पितात हि याप
नभई॥ सुनहु तात यह वचन हमारा॥ सुफ कीना पावक भरता
रा॥ अपमेरिषी अगन रूप नावहि॥ तिहकर सकल देव सुष
पावहि॥ तिन तोषे तेव रषा होई॥ रण अनाज उपजे बहु लोई॥ रा
जा प्रजा सकल सुष उपजत॥ जीव जंत मन होत सुरत अत॥
कतिन्ह मपिता अगन धिगकारइ॥ अपने हृदे न तात विचारइ
२२॥ दोहा॥ सुन भूपत चिंता भई साहा की चो ध्यान॥ इवै लहिन
को भेस धर अनल भयो सविधान॥२४॥ चौपाई॥ द्विजन कों नमस्का
र रूप कीना॥ सिंहासन तन असन दीना॥ आदर कर रूप वच
न उचारे॥ भपरूतार पधर सीस लाये॥ किह कारन आइ कहो रूपा

नै॰ञ्जा॰ भा॰ ९७

कर॥ आयेहोहमरेगृहद्विजवर॥ तवपावकवोलेनृपनग
र॥ कंन्यामुक्तीजैहर्षतचित॥ उनमनमैंभरतामुक्तकीना
तनमुक्तवीचअर्पकरदीना॥ द्वियेंध्यानधरमोहिवुलायो॥
तिहकारनहममहमगृहआयो॥२९॥दो॰॥ सुनराजाहर्ष
तभयोउत्तरदीनाएह॥ हैकंन्याहमरेभवनजोइभावैसोरले
ह॥२०॥चौपई॥ पावककहैराइसुनलीजै॥ स्वाहानामसुका
मुदिदीजै॥ पुनवोलेराजासुनब्राह्मण॥ स्वाहापावकपति
कीनामन॥ सोइपावकद्विजमोकौंजानऊ॥ निहसंसेजिय
समप्रमानऊ॥ तुमरीकंन्याध्यानलगायो॥ कियोमुवाहन
मोहिवुलायो॥ देहसमर्पदईउनमोकौं॥ समझानवचकहि
होंतोकों॥ सचिवप्रधाननरिंदमंगायो॥ सभामध्यअतिभा
षसुनायो॥२१॥दो॰॥ मंत्रीसोंनृपभाषियोसभहतांतसमझा
इ॥ सुनप्रधानहमरीसुतापावकलियोवुलाइ॥२२॥चौपई॥
कहैप्रधाननृपतसुनलीजै॥ पावककोंकंन्यानहिदीजै॥ स
भ्रमुषीपुनस्यामवरनजिह॥ अपजसहोइजुटेढसुतानिरह॥
पहब्राह्मणपावकनहिहोई॥ यहतोपरपंचीहैकोई॥ सभग
गकरहितोद्विधगकारा॥ कंन्यादीनअग्निभरतारा॥ सुनकैअ
ग्निक्रोधनिसधासो॥ पुनअपनेमनमांहिविचासो॥ सबसुरपि
तारोउपकसमाना॥ वेदवचनयहसत्यप्रमाना॥२३॥दो॰॥

नृपकोंदोषकछुनहींपावककियोविचार॥ मंत्रीसभासमेत
पहनपविनदेउप्रजार॥३४॥ चौ० ॥ क्रोधवंतह्वैपावकनृपकोमु
ष॥ लागीसभाजरनयहनदुष॥ दैगयानृपमंत्रीजहां॥ अग्नि
प्रवेसकियोचलनहां॥ दीपकज्योंपरजरहिप्रधाना॥ प्रथमैपा
गनरीझुषमाना॥ डाढीमूछकेससभजारे॥ वसनभसकरभू
परडारे॥ लागाजरनसचिवकोमाथा॥ महादुषितपरकनसुष
हाथा॥ पावककीनावहुविस्तारा॥ मंदरपरसकियोतिहवारा॥३
५॥ दो० ॥ डारेजेवरिग्रीवमहिंचरनपसोलपराइ॥ कुमाभईन
वग्रन्थिकोंलियोप्रधानवचाइ॥३६॥ चौ० ॥ नवपावकजिपको
पनिवासो॥ मंत्रीनरनप्रधानउवासो॥ देषप्रजनगणाकोंभूपाला॥
आहग्रस्तंभकियोनककाला॥ प्रापतभईभूपसालीनव॥ नृपभा
षोतिहकोंचेतानसभ॥ नारिकाहैयहअग्निनहोई॥ यहपरपंच
कपटकछलकोई॥ साहाकीग्रस्तनहनआयो॥ छलकरपावकना
मकहायो॥ तमहूंअपनेहिरदेविचारहु॥ कलिकोपुत्रीकोअबनदा
रहु॥३७॥ दो० ॥ रसकोंदीजेसापसुफकरोंप्रजनानाइ॥ सोंचहू
उपहिचानकैनफहिकहांगीआइ॥३८॥ चौ० ॥ पावककोंनृपक
ह्योभाउधर॥ रनजुवतीसंगजाउहुपाकर॥ अगनचलीताकेउ
उसंगा॥ नारनकोंतियकेसभअंगा॥ पावककोंलेगृहह्वैआयो॥
मनमुषदैयहवचनसुनायो॥ कलितवमरहांकपटकरआयो॥

जं॰ ग्रं॰ भा ९८

कलंकरपावकनामधरायो॥ भ्रमतोग्रनलरूपनहिहोई॥ क
रपरपंचहिपावहूलोई॥ सुनपावकजियक्रोधनभयो॥ मुषतें
अग्रतेजनिकसयो॥ ६९॥ दोहरा॥ अगनदहनतियकोभयोदा
रेवसननराइ॥ महाक्रोधपावकभयोमंदरलाग्योजाइ॥ ७०॥ चौ
पई॥ नरतभवनतियनैननिहारे॥ नगनभईतनवसनउता
रे॥ धायग्रग्रकेचर्नपरीतव॥ करीवेनतीक्रमाकरहुग्रव॥ पु
नपावकतियदेहजराई॥ भागीनारस्रूपतपहिग्राई॥ भूपतग्रा
गेकरीपुकारा॥ पावकजासोभवनहमारा॥ ताकोजाइनिवार
नकीजै॥ ज्वालातेजसांतकरलीजै॥ वचनसुनतराजाउठधायो
वहूवेनतिकरग्रगनक्रपायो॥ ७१॥ दोहरा॥ चरनलागविनती
करीपावकतोग्रोराइ॥ तापाछैंग्रायोभवनलीनामीतबुलाइ
७२॥ चौपई॥ नामविनोदसमानमीतको॥ तासोंकह्योसुनतलचि
भको॥ पावककीकहिकथासुनाई॥ कहूसोकरोंमीतसुषदाई
कहैविनोदसुजानसुनहूरूप॥ यहपावकनहिहोरनसाधिप
कपरसूपकलंकरकोक्रमायो॥ मंत्रसमककारलोगनरायो॥ चल
रानानिहइषहिमाई॥ गएसभामहिहरिपोचलाई॥ कहैविनोदसु
नहूरेहिमवर॥ पावकनामकहोकनकलंकर॥ ७३॥ दोहरा॥ क
हिविनोदश्रवनसुनहुअगनकेहावहूश्राप॥ नारेहैंवहूलो
गतेमंत्रगाकपरतापु॥ ७४॥ चौपई॥ सुनपावकपुनिकोपकि

षोमन॥ सुष तें ज्वाला प्रगट करी तुव॥ प्रथम मैं ही विनोद कोंप
सो॥ हाहीमूढ जानि सब मम सो॥ नरति करो षेद तहां भ्रुरारी॥ दर
हिस भ्रुगन किरन विसारी॥ निरषि लोग सब विह्वल भए॥
प्रजा सकल राजा पहि गए॥ कर इत्तु लार नोषर न को नरप॥ हम
रीरक्षा करहु नराधिप॥ रा रवे नमी करी अपारा॥ वैस्वानर कों
विविध प्रकारा॥ ५५॥ दोहा॥ सभा सहित नरप नील धज बात हैं
करजोर॥ सुमरे व त्रैलोक तुम कृपा करहु हम ओर॥ ५६॥ चौपई
तव ज्वाला मिपको पनि वासो॥ पावक प्रति नरप वचन उचासो॥
सो तुम अग्नि देव सोन गरी सुत॥ तौ स्वाहा पुत्री आहो तुअ॥ हम रेश
त्रु नरपत बलभारी॥ तिनतें रक्षा करहु हमारी॥ तुम सार षाव
ली पुरहोई॥ हमकों विघन न लागे कोई॥ पावक वचन समक
रमान्यो॥ तुम रे नगर वसों प्रमानो॥ नव ही नरपत बोल हिन
लीनो॥ आह लिषार अगन करहीनो॥ ५७॥ दोहा॥ वैसंनर कोन
पकह्यो ल्याव बरात बनाइ॥ जितनी संख्या तुम कहो करो सम
रीजाइ॥ ५८॥ चौपई॥ तब पावक सुष वचन वषाना॥ घर सहस
को करहु समाना॥ अबर लोग आवन तब उनहां॥ मंगल ब्याह हो
तहै जहां॥ रूप आप आपाले अगन सिधायो॥ पाछें नरपत अवरंभ रचा
यो॥ हस सहस्र को कियो पाक तव॥ षटरस भोजन अरु ब्यंजन
सब॥ लगन समै पावक तहां आयो॥ हरषत माये सुकर वनाये॥

नं·ग्रं· संगनकोउबरानील्यायो॥ सुनराजाआगेंउठधायो॥ ५४॥ दोह
भा· रा॥ सभासहितराजाचलोमिलोअग्निकोंजाइ॥ कुसलप्रश्नकरिआ
९९ दरकियोआनंदहृनअतिराइ॥ ५५॥ चौपई॥ रूपउनरूपनहृष्टभर
देष्यो॥ संगबरानीकोउनपेष्यो॥ पावकप्रतिनृपवचनबषानो
सापबरानीकोउनआयो॥ नृपऊबरानकोकियोसमाना॥ जैसें
नमस्रुषवचनबषाना॥ षटसहस्रकीनृमसिषदीनी॥ तिहतें
हिगनसमग्रीकीनी॥ कहोनानसामग्रीकैसें॥ सुणपावककीने
हमऐसें॥ पावककह्योसकलआवहिगे॥ भोजननृपरासबषा
वहिगे॥ ५५॥ दोहरा॥ कहैनृपनपावकसुनहूउनकोंलेउहकार
कहिपठहोसभकोंआवहिंयहीकृपाकरधार॥ ५६॥ सोरठा॥ बज
हिबजंत्रअपारपावककियोप्रवेसपुर॥ मंगलगावतनारम
हिषाप्रगीअनंदभो॥ ५७॥ चौपई॥ पावकनृपतिभवनमहि
ल्यायो॥ दिनकरसुभगगौरबैठायो॥ अगनभूपप्रतिबचन
उचारा॥ हमभूषावककुकसेंअहारा॥ नृपनरसोईदारबुलायो
ताकोकहिसमौनसमझायो॥ पावककोलेजाहुरसोई॥ जोक
कुमांगैदीजैसोई॥ ऊनभुगकोंलेसायसिधायो॥ षटरसभोज
नसकलनिवायो॥ जोकछुपाकरसोईमांही॥ सभभछ्नकी
ताछिननाही॥ ५८॥ दोहरा॥ पाकरह्योनपावककछुविपन॥
नपावककीन॥ अधभूषापुनउठचलोत्रिभुवनदेवप्रवीन

५५॥ चौपाई॥ चक्रन निरषे रसोई दारा॥ पावक लीना सकल गुहा
रा॥ भूपन पास पुकारा आई॥ पावक की कहि बात सुनाई॥ पुत्री दे
रेन नगर निकारहु॥ हमरा वचन श्रवन न्रप धारहु॥ नित प्रति
कैरे रसोई ऐसें॥ कहो भूप पद होइ है कैसें॥ तब हम परसा न्रूचर
आवहि॥ तब पावक को वेग बुलावहि॥ हम पर चढ आवै न हि को
ई॥ पावक नित तड घर रकहो ई॥ ५६॥ दोहा॥ पुत्री देहु विवाहि के
वेद उकत परमान॥ कंचन रथ गज वाजि दै कारज करहु विधान
५७॥ चौपाई॥ पुन राजा मुष वचन उचारे॥ सुन पावक तुम लाल ह
मारे॥ हम को संकट है है जब हीं॥ तुमरा करहि सहाइ न तब हीं॥
तब तुम आवहु वेग क्रपाकर॥ प्रनाम रणा कीने करुणाकर॥
तब भूपन वर विप्र बुलायो॥ कन्या पावक तन कि न चलायो॥ वे
द मंत्र पढ कारज भयो॥ विप्रन दान न्रपति द्विज दयो॥ पावक अ
पने भवन सिधायो॥ सो हाले आनंद जिय पायो॥ ५८॥ दोहा॥ जै
मुन मुनि भूपाल कों कही कथा समझाइ॥ अश्वमेध कुल ग्रंथ को
पंचद सो पढ अध्याइ॥ ५९॥ ॥ इति श्री भारथ पर्व ते अश्वमेध पर्व व्याख्यान
कवि ८ हैकन पुरन भयो ध्या पपंच दश मान॥ ५॥ ॥ जैमन उवाच॥
सोरठा॥ अरु वकथा है तांत जे मुन कहि हुन हो न्रपत॥ जनमेज
य हरषात चरन परसो मुनि राज के॥ १॥ चौपाई॥ जैमुन कहै सुन न
भूपाला॥ अरु व कथा कहों सुविसाला॥ पावक अर्जुन सों हित की

म॰ अ॰ ना॥नवहिप्रबोधसमरकोंदीना॥तुमबांध्योधर्मजनकोबाजा॥
भा॰ जोगनहींनीलधुजराजा॥लेततुरंगमिलहोतुमपारथ॥सिद्धहो
१०० रस्वारथपरमारथ॥सदासहाईनंदनंदननिह॥तीनलोकनहि
जीतसकैतिह॥जगपरयोपइश्रीगिरधारी॥तिनसोंजुद्धनसक
नतुम्हारी॥२॥सो॰॥रहिसिमहननचलहोनरांइलनपुरिअस्थान
मैतुमकरतहैधर्मसुननरसंडश्रीभगवान॥३॥चौ॰॥रहस्रीपवडु\
वेगइलनपुर॥करैरहलमषरपतजुधिष्ठिर॥हमतुममचल\
हिअस्वकेसाथा॥पुनररसहिहरिहोंहिसनाथा॥पइकारजकों
गहरनकीजै॥सावडहूपमर्जुनकरसीजै॥बडुरनीलधुजबच\
नउचारसो॥धमभगनपइमंत्रविचारो॥प्रथमेतुमपारथप\
हिगावद॥कहिबनांतनिजकुमाकरावद॥इमभलाबहिनिजप
रसेंगाजा॥भेटसमग्रीसकलसमाजा॥४॥सो॰॥पावककोंआ
गेपकोपारथपहीभुपाल॥अग्गनहमांतसभैकसोअर्जुनभयो\
कृपाल॥५॥चौ॰॥महिषापुरीनीलधुजगयो॥अपनेमंहिरदा
पतभयो॥बालातिपकोमंत्रसुनायो॥हमतोलेनतुरंगमआयो
अर्जुनसमझाभगवाना॥नासोंजुद्धनउचनप्रमाना॥सुनरहो
जिपकोपतभई॥बचनसुनतविसमैहैगई॥तपकोंवचनककै
एवारे॥सवनामकरमिस्रोहमारे॥पुनतुमरीसनावदुहाई॥\
मिलहुनाहितुमलाजनआई॥६॥सो॰॥नगोंअपजसहोरहैलो

200

गकैंरथिगकाजु॥सुनतमरालअरिकोंमिलोनृपतनीलधुजरा
र॥२॥चौपई॥सकलकुटुंबमरालमिलोजब॥निंदकरहिगेहसम
राजनसब॥छत्रिधर्मकीरहैनलाजा॥हृदेविचारनीलधुजरा
जा॥अइसमानगिनहिसुहिराजन॥सुनतकाइषनविचारकिये
मन॥बहुरोंछत्रिधर्मनहिराओ॥जीवनअस्थिरनसुषभाओ॥इ
यलैमिलोनधर्मविचारो॥कहिरनवीवनीलधुजहारो॥वचन
कहैछत्रिपविविधप्रकारा॥बहुरनीलधुजधनुषसंभारा॥५॥दोहा॥प
नारिवचनसुनक्रोधकरचलोनीलधुजराज॥अर्जुनकेसनसु
षभयोबहुररचमरदलसाज॥६॥चौपई॥अर्जुनदेषीआवतसेना
क्रोधतनकयोअगनसोंवैना॥जुडुमंचलेमससरसिवायो॥रहो
इमाराक्रोधकमायो॥सेननिरषिकोप्योहषकेना॥धनुषवान
गहिभयोसुवेना॥तीनवाननीकनकंसमारे॥इयगजरथवहुस
रविडारे॥चमूनरीवाननकेतेजा॥भैसुनकहैसुनइजनमेजा
प्रनकर्नअरकवानचलायो॥नृपतनीलधुजगगनउडायो॥१०॥दो
हा॥धमनगगनतेंगिरपरोविकलभयोमुरछाय॥पावककअर
चंडेलमहिलेगयोसहरउठाय॥११॥चौपई॥मरकीकुरीसुवेनम
घोरथ॥किपोअगनपगकारमराधिप॥बहुरोंनरपमनमैंप
कुनायो॥लेनलंगगनगरघुनिआयो॥पकोनाहिमाइपनिति
घसों॥लपोकोरहरयहहरघनहिपसों॥बहुतभेरदीनीइपसापा

दीनो अश्व धनंजय हाथा ॥ पुनि अर्जुन के पग लपटायो ॥ बहु अ
स्तुति कर रोष छमायो ॥ गज रथ हय प्रभु कला बहु दीने ॥ सुपसत्र
पारथ नृप कीने ॥ ९२ ॥ दो॰ ॥ कंठ लगायो नील धुज अर्जुन प्र
निहि मान ॥ सहस्र अमाता संग चले हय सहाइ बलवान ॥ ९३ ॥ चौ
पई ॥ कुशग्राल रंग चलन तुरन भयो ॥ रक्षक नरि साजे र चल गयो ॥ र
क्षाचारी चले ले रंगा ॥ चली जाइ सेना सभ संगा ॥ तापाकें ज्वाला
परकीनो ॥ आपन यह तब हीं न नहीनो ॥ नरपत नील धुज कों ध
गकारा ॥ पुत्र नास कर संग सिधारा ॥ महां सोक उपजो मन मांही
सुतन दुष जिय तें बिसरे नाही ॥ भै पों आगे नाइ पुकारी ॥ इपाव
नैको अर्जुन मारी ॥ ९४ ॥ दो॰ ॥ अर्जुन इम सो छल इमो चमकरी
मवहात ॥ हारि मिलो नरप नील धुज कही परतन हि वात ॥ ९५ ॥ चौ
पई ॥ सुनि यो मन तम भात हमारे ॥ बहु सुष भोगे राज तुम्हारे ॥ ए
इकारज की बिल मन कीजे ॥ हय छिनाइ पारथ तें लीजे ॥ बहुत
कालका वेरली जिये ॥ अर्जुन नाइ संचार कीजिये ॥ इमरा कछु बि
वारइ मन मैं ॥ पांडव वचम महार इ रन मैं ॥ छत्री धर्म सफल क
रथाला ॥ मान लेइ हमरी पइ बामा ॥ उरम कहै बहुत सुन का
ना ॥ तुम रापन इम बैं बल वाना ॥ १६ ॥ दो॰ ॥ जीतन सको न हिनी
नधन इम बलन तुक्ष समान ॥ अश्वत्व रक्षक माना है संग सेना ब
लवान ॥ १७ ॥ चौ पई ॥ उनइ मकों काकुइ षन हि हीना ॥ बहु अनिव

लीइ मह्हि बलहीना॥ हमकों जोग नहीं यह कामा॥ वह इय जीत
हे रन संग्रामा॥ कुवी धर्म सराहे नाह॥ जो न देत ग्रथ मेइ षकाह
हम अति दीन न जीत सकाहि तिहि॥ सांच जान सुरू वचय पन
नहि॥ यह उपाध नहि हम तें होई॥ मांगइ अवर देउ मत्र जसो ई॥ को
धन हैरउ ठवली अधीरा॥ पढ़ची जाइ स्ह रसरी तीरा॥ ५५॥ दो॥ ना॥ वे
धर पति माषो वचन सुरू हि उतारो पार॥ निकरला उत्त मनाउ कों
हम चढि हों पग धार॥ ५१॥ चौ॥ ई॥ षेवर कहै प्रथम जल पैठो॥ पुन
तुम नौका पर चढ बैठो॥ सुन जाला को धन वच कहै॥ यह गंगा ह
सिपारी वहै॥ इनका जल धर्म न नहि जोगा॥ मंजन करन नैक उपन
लोगा॥ षेवर वचन सुन विसमै भयो॥ नवइ गंगा रस नहयो॥ जा
लाकों ह रसरी कयो नव॥ कन तेम षे से वचन कहै अब॥ असन
वचन कन कहेउ चारी॥ महामंद गन कुरल नह्यारी॥ ५२॥ दो॥ ना॥
पावन हों हि सधर्म सुरू महां धनि नजग मांहि॥ कनि तेम हमारी
कहो सांच कहो सुरू पांहि॥ ५३॥ सो॥ ठा॥ वेग रहे उगी आप जो अस
समो सों कहो॥ हद विचार हू आप कहो नयारथ बान सुरू॥ ५४॥ चौ
पई॥ जाला कहो सुन हू वच गंगा॥ सांच कहों चित कर हू न भंगा
भीषम तम सत जग विख्याता॥ धर्मवान अति सिमल ताता॥ या
रथ महि पार यह न कीना॥ अवलोन तम सत न बैरन लीना॥ इहनें
हमा वशी न काई॥ पुत्र वैर हीना विसराई॥ सत उघ सुन नमह क

म॰ भ्र॰ रही॥लोकलाजतजनिसरिनवही॥ममसारथीमहांवलवा 203
भा॰ ना॥सुतसन्नहिहमोपकाना॥२३॥दो॰॥रा॥तांतेंगुनवकुहैनव
१०२ कग्रपराधनतिपमान॥अर्जुनतमरासुतहमोलिपोनवैरपका
न॥२४॥चौ॰॥ई॥श्रीगंगाज्वालावचसुने॥सुतसंतापसीसकरधुने
महांक्रोधउपज्योअतिमनकों॥हियोआपनवपहअर्जुनकों॥
मौंसुतनसुफकीनारणघाला॥मौंकेदेपारथनिजबाला॥रणमेंसी
सकारलैमावै॥हमराआपसमवनआवै॥अर्जुनआपसहरसरी
रीना॥सुतनज्वालाअनेरमनकीना॥सुतकोवैरवेगसुफपापो॥गं
गातेंयहआपदिवापो॥२५॥दो॰॥रा॥हमहैंहोंओहीघहगजिहसों
पारथकाल॥मेरोंयहीमनचिंतकैविचारचीनतकाल॥२६॥चौ
पई॥अगनअरतनिपमनसाधारी॥दैहोंसतमहाभयकारी॥जि
हसोंपारथकोहनहोई॥सुफकोशाहकरइहरमोई॥इउविनाके
करेसंहारा॥सीसकाटरनकरेप्रहारा॥सोरसतसुफकरजगना
पा॥अर्जुनसीसतिरेनिहहापा॥यहकहितनकोंअगनअरायो
भईसत्रवांछनफलपावो॥ज्वालायहप्रकारअलतकीना॥क्रोध
तिवारअगनतनतसीना॥२७॥दो॰॥रा॥यहसनतांवरतईभयोउत
हयवलोसभार॥दकनहिसमहिगवनकियवमृचलीसंगना
र॥२८॥चौ॰॥ई॥अर्जुनआदिअवरवइताना॥सराअनेकसंगनि
हिवाना॥कसलतानपगुपगुअलतवल॥संगसेनाअगनगनआरव

दल ॥ सात किछुन वरमा दल मारा ॥ तिह संग सेना अमित अ
पारा ॥ पुनि अनिरुद्ध महा दल साजै ॥ महा सूर संग रद्द निराजै ॥ औ
व ना सम्ह नसैन समेता ॥ पुन संग सूर महा वृषकेता ॥ मेघवर्न अ
रु साल नील धुज ॥ पावक नेक नरेस महा भुज ॥ २९ ॥ दो० ॥ सूरवी
र नृप अनि बली निकर चमू चतुरंग ॥ पाछे लागे जाहि सम आगे
च लोल तुरंग ॥ ३० ॥ चौ० ॥ बाजहि वजन अनेक प्रकारा ॥ इंद इमि मे
ति विमान अपारा ॥ चतुरंग निसेना अगनित वल ॥ चूरन होत
पहार चरन तल ॥ घंटन घलेहीं द्विवन सिगरे ॥ जिह मग चमू
धनंजय डगरे ॥ धूर जनेन हष्टन हि आवै ॥ धूर उडै गगनंतर छा
वै ॥ भ्रमो सकल दृष्टन हि सवाजा ॥ और न वांध सकै को राजा
सिला एक मग आपत भई ॥ तासों पीठ तुरंग म दई ॥ ३१ ॥ सो० ॥ ग
उपजी घसर तुरंग पीठ अजा वन सिलासों ॥ तागर हो तिह सं
ग जतन करत छूटै नहीं ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ दीरघ सिला एक जोज
न पर ॥ दस कोस द्विपरता को विसतर ॥ तिह को परस कियो हय सं
गा ॥ छूटै नहीं रहो लग अंगा ॥ सेना सकल भई भय कारी ॥ कोट
उपाय जतन कर हारी ॥ पारथ वली चिंत मन मोही ॥ यह मोठोर
नु छूकी नांही ॥ औं जल हीन कमल कुम्हलावै ॥ सौं सेना हय भ
य विललावै ॥ विसमय भये सकल मन अपने ॥ नहि देख्यो यह कौं
नक सुपने ॥ ३३ ॥ दो० ॥ पारथ आदिक नृप सकल चिंत करैं मन

ज॰ श्रु॰ मांहि ॥ पासोंकेसेंजीनहैं गौरजुइकीनाहि ॥ २४ ॥ चौपई ॥ नव
भा॰ अर्जुनमनहरूससंभारा ॥ सिलाचरनर्हिसओरनिहारा ॥ महास
९१ घनबनदृष्टपरेसब ॥ मनमहिंयहविचारकीनातब ॥ मनको
महोदरहांतपसीमुन ॥ नासोंलेहुसिलाहनतांनसुन ॥ यहनि
पधारवलोउवपारथ ॥ मनकोऊमिलोभगतपरमारथ ॥ की
नसरलीनेनिजसाथा ॥ करनसकुतुअसुरुहतनजइनाथा ॥ जोव
नामसरामासंगलीना ॥ वनकीओरगवननवकीना ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ रा
सिंनालरचारोंचलेगहिवभ्रवनकीओर ॥ रिषमुनीसरसतेनके
ईमतपावहिरहहौर ॥ २६ ॥ चौपई ॥ मगमहिंकरतपरसपरवा
तैं ॥ महोकष्टघहचम्योकहांतें ॥ अनमलपहहंसखरंगा ॥ सोल
गरह्योसिलाकेसंगा ॥ सिलाहनतांनकोउहमकहई ॥ मोहमराका
रनिरवहई ॥ दृष्टपरेद्रुमनिकरसफलगति ॥ चलेवेगचारों
मनहर्षति ॥ निहचैंरहांकोऊमुनिहोई ॥ सकलहनतांनकहैयह
सोई ॥ शीघ्रवागमहिंआपतभए ॥ सोभानिरषसकलइछगए
२७ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ बहुप्रकारकेद्रुमतहांनमितफलनकेभार ॥ मेवा
सकलसुधासरसमहांविपनविसतार ॥ २८ ॥ चौपई ॥ गहवर
वनफलरलविस्तारा ॥ पछपंछीतिहंबीचअपारा ॥ मित्रभाउस
भजीपकलोंलैं ॥ गोमृगसिंघपकवैठेलैं ॥ कोधरहिंनसभजी
वसुरितमन ॥ सराामसमूहसबचरतफिरतवन ॥ ग्रजाग्राग्रर

कहैहैकचरई ॥ बैरभाउहरिदैनहिधरई ॥ आगेचलतभएपुन\
चारे ॥ गजतुरंगरथबहुतनिहारे ॥ रतननषचितबहिलरथ
गाढे ॥ निरषैनैनआनंदचितबाढे ॥ ३९ ॥ दो० ॥ पुनदेषोइक
मठतहांमनमैंभयोहुलास ॥ देषोएकमनुषतहंप्रकाशव\
चनप्रकास ॥ ४० ॥ चौ० ॥ कहोसाधजनमोहिकृपाकर ॥ कहो\
नामपहमठकाकोवर ॥ ततछिनउतरतिहदीनापुन ॥ सौरभ
रिषपहठौरश्रवनसुन ॥ तपसीमहांपुनीतसुपावन ॥ सुखना
सीसुकृतउपजावन ॥ बिसुभगतरिषतपअभिरामा ॥ सुचि
संजमीभगतनिहकामा ॥ सुनतबचनहरषतचितभए ॥ सु
षसमूहउपजेदुषगए ॥ सिलाहतोंतसकलहमकहई ॥ इहपसु
कलापसकलइषगहई ॥ ४१ ॥ दो० ॥ चलआगेजबदेषहीजल
सौंभरेतलाउ ॥ बडीकंदरासुभगुफाअरुअतबमोप्रभाउ ॥ ४२ ॥
चौ० ॥ बडीगुफाकंदराअपारा ॥ तपीकरहितपबिबिधप्रका
रा ॥ मुनिजनतहांअपारअनेका ॥ षटकरमीरिषबसेमहंता ॥
चारोंनिरषमुदितमनभए ॥ दरसनपरसहरेबिगसए ॥ सौरभ\
रिषबैठेहैंजहां ॥ नेकमुनीश्वरसहतनहितहां ॥ ठाढेबहुसेवक\
तिहआगे ॥ पारषपैवचश्रवनलागे ॥ अर्जुनअपनानामबता
वो ॥ चारहुकोरिषढिगबैठायो ॥ ४३ ॥ दो० ॥ कह्योहलांतनआ
तनसकलसौरभरिषकोंनाइ ॥ चारसरअर्जुनमहतहारेबा

म॰ग्रं॰ देख्याइ॥ ७४॥ चौपई॥ सुनहौरभरिषसुजानंदपाए॥ चारौंभीतर 207
भा॰ बेगतुलाए॥ रिषकौंदेषदंडवतकीना॥ आगेआइरहीरिषदी
२॰४ ना॥ तबसौरभरिषबचप्रगटाए॥ कवननामकासौंतुमआए
अपनेकुलकानामसुनावहु॥ कौनअर्थआयेसमझावहु॥
सकलहतांतमोहिकहदीजै॥ समवचनफिरउमरलीजै॥
आपनभएरहौतुमकैसे॥ कहोयथारथहैमनजैसे॥ ७५॥ दो
हा॥ पारथवचनकहैतहां सुनसौरभरिषजान॥ हमपां
डवहैंदासहरिअर्जुनमोहिपछान॥ ७६॥ चौपई॥ छितिपघइ
भ्रकूसकोनाना॥ नतिपकर्नेसुतजगविख्याता॥ वैघोमोव
नासराजावर॥ हमचारोंहैंदासभगनहर॥ पतअरंभधमेह
नकीना॥ अश्वमेधजक्तमहाप्रवीना॥ आगपाकीनीगिरवरधा
री॥ काधोहदपधर्मजभुजभारी॥ मुक्तकोपकोकुसहदपसंग्रा
टीनीसापचमुचलतुरंगा॥ सेनापतकियमुफतिरधारी॥ क
घोलतुरंगकिरख्याकारी॥ ७७॥ दोहा॥ अपमेकुशोतुरंगत
बगहोकंमकारेव॥ नहदभुक्खापोकरनसुतजेसानृपबहुगहरि
सेव॥ ७८॥ चौपई॥ बलतभयोआगेपुनबाजा॥ सांध्योबहुरवी
लधुनराजा॥ भयोतुदसरनवइतायो॥ कोटनतननकरहप
मुकतायो॥ पुनआगेकोंचलोतुरंगा॥ अरकोआइसिलाके
सगा॥ कूटतनाहिसिलासोंबाजा॥ बलकरहाररहेसभराजा

सभ चिंतावस बिह्वल भए ॥ खान पान सभ नाना गए ॥ तिहि
निमित्र हम तुम पहि आए ॥ दरस परस निय सभ दुख गए ॥ ४९ ॥
दोहरा ॥ करुणा कीजै कृपाकर दीजै दुख कनाथ ॥ तिह मनोर
थ कीजिये जनु नृप छिद्र रसराइ ॥ ५० ॥ चौपई ॥ बोले सौरभ सुनहु कृ
सहित ॥ खो जनतनु मकौ नहाय छित ॥ सो दुखन कहि मो हि ह
नाबहु ॥ सकल दहतां तइ मदिसम झावहु ॥ बिबक दजो रकहो
पारथ तब ॥ हन रिषराजनक दंतलां नसब ॥ भारथम हि इम कु
लहतकीना ॥ सो दुखन माथे धरलीना ॥ मीन कुपी को हली अठा
सां ॥ कौरवनु रुजे अपर अपारा ॥ गुरु पिता मा बंधु सुत हरसभ ॥ ना
तकियो रन हम हि गोत्र सब ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ भाई सह हरे मात ले
कर्न विकर्न विदुर ॥ सह सत रुन बालक सकल हम कुल कियो
संघार ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ लीनी मान गोत्र हमा तब ॥ अपना कुल संघार
कियो सब ॥ गुरु ब्राह्मण नीरप परमाने ॥ लिये लगारौ दश्रद
भारे ॥ इक्काषी गिरधर की पांड़ी ॥ उपजाई हमरे मन मांही ॥ हम
कुल हमा हो खलगायो ॥ पुन स्वर्ग पहकुल वनायो ॥ अश्वमेध कर
सम स्रवह दरई ॥ मषकीजे हमा कुल दरई ॥ हरि को वचन मान हम
लीना ॥ जज्ञ अरंभ ताहि छिन कीना ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ उपजाई मन य
हं कृतहमा लई सगाइ ॥ वचन कहे सुख गर्व के हम मारे सभ जा
इ ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ संसय उपज परयो जिय भारी ॥ पुर स्वर्ग पहक

209

नं॰ श्री सोसुरारी॥ अश्वमेधकृतकउनविधाना॥ सोइफलपायोश्रीभ
भा॰ गवाना॥ पुनमौरभरिषवचनउचारे॥ पुनअवरणाहरिपहीवि
९८ चारे॥ अवतुमछोराभूपरवाजा॥ ताकोवांधहिंगवडूराजा॥
तहांहोइसंग्रामअपारा॥ कोरजीवपुनिहोइसंघारा॥ सोअपरा
धमिटावहुकैसें॥ वचनकहहुतहोबालकजैसें॥ ५५॥ दो॰॥ रा॰॥ रु
मनरुद्रगेअश्वपरहोइचमूवद्धबाल॥ ताकापुन्मकवनकर
हुकरहुपथारथवान॥ ५६॥ चौ॰॥ ई॥ तुमश्रीपतिकेसलोकइाव
हु॥ ज्ञानविचारनमनसमझावहु॥ कलितुमकुलहुतहोषल
गायो॥ तत्वविचारनमनगहराखो॥ विद्यमानजाकेहरिहोई॥
निहकोंअवलगसकैनकोई॥ जाकेनामलियेंअघनासहिं॥ ध्या
नधरेगनपुरुषप्रकासहिं॥ सोतुमरेनिसदिनसविधाना॥ कोर
पुकतफलश्रीभगवाना॥ पातककोउनलागेतहां॥ कृपानि
वासहोइनितमहो॥ ५७॥ सो॰॥ रा॰॥ एकबारजिहनामलेंहोहिंको
रमघनास॥ सोसमीपतुमरेसदाऔरविकोटप्रकास॥ ५८॥
चौ॰॥ ई॥ करनकरावनहाररमापत॥ जोतुमहरिमहिहिसक
लसमर्पन॥ उतपतप्रतपालककछपकरता॥ आपोआपआप
हीहरता॥ मानसमंत्रवमावनहारा॥ व्यापकसर्वसभनतेंन्या
रा॥ पापपुन्मसभनेंहरिहारत॥ जोतवऐसेंहहरेविचारत॥ न
वतमपापनलागनकोई॥ सकलसमर्पणहरिमहिहोई॥ न

वतुमरेजियमहियहआवत ॥ कुलरनहनकोदोषनपावत
५९ ॥ दो० ॥ जोतुमयहविधकहतलवहुमहैंदीनअनाथ ॥
कोइकलषनयपिकरहितोतुमदरसैसनाथ ॥ ६० ॥ चौ० ॥ न
वतुमहृदैनज्ञानविचारा ॥ करीग्रहंकृततततवविसारा ॥ तुम
रेहासमारथीभए ॥ जहांकसोतहांरथलेगए ॥ तुमश्रीपति
कोमर्मनजाना ॥ करिअभिमानकुसलपहचाना ॥ हमामानलई
अपनेपर ॥ कारनरूपनहींजान्योहर ॥ नवतुमनिजकोदोष
लगायो ॥ पुनअर्जुनेवहकुसलबतायो ॥ कुलहमारतुममानलईम
न ॥ तांतेंवध्योसंतापमहांतन ॥ ६१ ॥ दो० ॥ ताकेध्यानधरैंमि
टतकोटकलषछिनमांहि ॥ मानलईहमात्तमहिहृदैविचारोसो
मांहि ॥ ६२ ॥ श्रीअर्जुनउवाच ॥ चौ० ॥ तवपारथप्रभुषवचनउचारे
समवचनरिषसकलउचारे ॥ महांप्रवलमायाश्रीपतिकी ॥
ज्ञानहरायलेतसवमनकी ॥ तवतानननहिभयोहमारे ॥ हरिश्र
षमहिसभमसरनिहारे ॥ गजरथहयपायकअश्ववरेषे ॥ सीसरह
ततवसभहमदेषे ॥ यहचरित्रजुकुसलदिषायो ॥ अहंमेवपुन
जियउपजायो ॥ जैसीइछाश्रीत्रिभुवनपत ॥ तैसीउपजावतम
नमैंमत ॥ ६३ ॥ दो० ॥ हमरेमनमैंअहंकृतउपजाईभगवान
जोइछानंदलालकीसोइकरावतजान ॥ ६४ ॥ चौ० ॥ करनक
रावनश्रीगोपाला ॥ महासवलमायानंदलाला ॥ इछासोंभार

स.भ्र. घप्रगटायो॥ श्रुठरमक्षोहगीनासकरायो॥ पुनमनमैंसंभव
भा. उपजायो॥ हलामानलईकुलछायो॥ हियेंग्रहंकुनभाउजगा\
१०६ यो॥ हरिमायामनज्ञानहिरायो॥ हमरेरथवाहकभगवाना॥ ग्या
ताविषेसदासविधाना॥ निहइरिकोमुकमानसनामो॥ शरनअ
थनंहीपहिचान्यो॥ ९७॥ दो॰ रा॥ मानवकरहरिजानियोवहमो\
समस्वरूप॥ भूनभविश्वप्रवर्नेजगरहकनग्यानमरूप॥ ९८॥ चौ
पई॥ पारसपारशरकरहीना॥ भीवत्तुरुभ्रमतमनचीना॥ चिंता
मणिकोंकंचनकीना॥ उरमैंकाचधारहमलीना॥ कामधेनन\
निमिनगुपाला॥ श्रनपनग्रलेकरननंदलाला॥ सकलसरछि
नमहिउपजावन॥ वहुरतिसीकेउहरसमावन॥ सकलसरछि
किनइनपाई॥ सकलकौरवमरहोकजाई॥ ग्यारश्रंनगत
कमाहोरहरिनैसीमनउपजाई॥ प्रगटायोग्रभिमानजियलीनोजा
नहराइ॥ ९९॥ चौपई॥ श्रीपतिकीगनअगमग्रपारा॥ किनइनपा
रसकोनहिपारा॥ प्रथमेभुकहितानउपजायो॥ धनुषहाथमें
धरनगिरायो॥ पुनग्रहंकाररिपोमनमांही॥ नफकरायोइन्दर\
णमांही॥ सीमरहनसभमैनेहिपाई॥ मुषमुपनेमहिश्रीनइरा
ई॥ पुनहमनेंसंग्रामकरायो॥ कौरवकुलसगरोहमघायो॥ पु
नमनमहिश्रैसीउपजाई॥ कुलहमाहमग्रापलगाई॥ १००॥ दो॰

रा॥ छत्रिधर्मकुलनासकरहुसालीनीमान॥ हममारेसुषनेंव
कहिहुहरिहरलीनोज्ञान॥१०॥ चौपई॥ हमरेसुषतेंपहीकहायो
हमागोत्रहोषहुमलायो॥ करौहुनौश्रीनंदनंदन॥ कियेहुमा
रेशत्रुनिकंदन॥ उपजायोहमजियअभिमाना॥ ममताबढी
ज्ञानविसराना॥ भाषहिसभकौरवहुममारे॥ प्रवलसुरुद्दकर
सकलसंघारे॥ मारनहारकंसनहिजान्यो॥ कुलहुमाहूषनसि
नमान्यो॥ यत्तकरावनकीरच्छाहरि॥ यहुमनठीनीरपनसुधि
छिर॥११॥ सो० रा॥ जोरच्छानंदलालकीमोरकरावेकाज॥ मानी
कुलहुमाहमहिहुयकुलनरषोसमाज॥१२॥ चौपई॥ गाढेहैनिर
लेपआपहरि॥ सुषदवकापोरपतसुधिछिर॥ हूषनहमसत्रा
पकोंलगायो॥ ऐसोहमनेंकंसकहायो॥ कुलहतकीचिंताह
मभई॥ ज्ञानकलानिषलेंइरगई॥ निरषहकृपालभएनंदला
ला॥ पुनश्चरनयहकह्योगुपाला॥ अश्वमेधकृतहमहिवतायो
रक्षासोंहरिपत्तरचायो॥ जोककुभावनठीनहरिपाला॥ सोइ
करावनहैननकाला॥१३॥ सो० रा॥ सोरभरिषकीजेकृपारीजै
हयमुकनाथ॥ अश्वसिलासोंलगरह्योकहेकरदुसहार॥१४॥
चौपई॥ सोरभरिषमनहरषतभयो॥ सिलाहतांतसकलक
हिरयो॥ सुनलेकथासिलाकीपारष॥ सिद्धहोइस्वारषपरमा
रष॥ छनअर्जुनयहसिलानहोई॥ नारउदालकरिषकीसोई॥

न॰ग्रं॰ भा॰ १०८

पतिकेश्रापसिलापहभई॥ कहहुंकथामैसंतनलई॥ नामउ
दालकएकरिषीश्वर॥ इंद्रिजीतविग्याननतपीश्वर॥ एकदिवस
रिषसुतनसनश्रायो॥ श्राश्रमचारधर्मसनभायो॥ ७७॥ दो॰॥ ब्र
ह्मचर्जग्रहबानप्रस्थहं उधारसुनग्यान॥ सुनग्रहस्तसभलैंभ
लोश्राश्रमचारप्रमान॥ ७८॥ चौपई॥ सतमानश्रानाहुतलीनी॥
रस्त्रीकीरछ्छारिषकीनी॥ चंडीमेंरिषव्याहकियोनव॥ पाणिग्र
हनकोंसमोभयोनव॥ सोरिषमाथेपैधरलई॥ विप्रनरिषकों
श्राग्यादई॥ भावरितुमलेहुनरिषवरी॥ पाछेफिरहुनतिय
हितकरी॥ रिषनहिफिरेनारिकेपाछे॥ ज्ञानविचारकियोमन
श्राछे॥ पुनप्रछननननमेजपराना॥ कहहुकथाकरसुनिसिर
नाना॥ कतिरिषतियपाछेनहिभयो॥ वेदवचनकनमाननलयो
७९॥ दो॰॥ मैसुनकहिहमनहोरपननननमेजपसविधान॥ रिष
तियपाछेंफिरेलोनहिकहिहोंकथाविधान॥ ८०॥ चौपई॥ सुनर
पकाजसमैनवहोई॥ मज्जनकरहिपुरुषतियपरोई॥ पाणिग्रह
णाईपतिनहकरई॥ वेरमंत्रब्राह्मणउचरई॥ नाहीसमैश्रपसरा
श्रावत॥ नाकेलछनरिहेलगावत॥ सोतियकेपाछेनरलागहि॥
तिनकोंनिरषश्रपसराभागहि॥ पाछेफिरेलोभभयोरस्त्रीजित॥ तिह
कोंगौरनस्वर्गलोककहित॥ सोनरतियकोश्राग्याकारी॥ होननक
वैस्वर्गश्रधिकारी॥ ८१॥ दो॰॥ पुरषारथतनजहोतहैंश्रुवतिन

के आधीन ॥ कबहुंन पावत स्वर्ग ते निसदिन तुछ मलीन ॥ ८० ॥
चौपई ॥ पिय आगे है है तिय पाछे ॥ सो न रहे षपावत मन वांछे ॥
तिह न रहे रघुरशा पत होई ॥ करहि अपस राभरता सोई ॥ ताकें
वेग स्वर्ग ले जां ही ॥ मन वच क्रम संसय कछु नांही ॥ यह विचार
रिष निय उहरायो ॥ तिय पाछे न हिं आप फिरायो ॥ सो तिय के पा
छे पग धारों ॥ रहों अधीन जन न मन गहारों ॥ यह जिय जान न पाछे
भयो ॥ उपज्यो ज्ञान मोह मिट गयो ॥ ८१ ॥ सोरठा ॥ जैसु न कहि नि
हहीं समै चंडी कियो विचार ॥ हम री आज्ञा मैं न हीं यह केसो भर
तार ॥ ८२ ॥ चौपई ॥ चंडी निय विचार कीना तब ॥ हों पति पाछे फि
रों नहीं अब ॥ कहि कों है है आज्ञाकारी ॥ पाछे फिरा न यह मन
धारी ॥ वचन कठोर कहै चंडी अब ॥ हम तो पाछे फिरों नहीं अब
सुन तउ दालक हिये विचारा ॥ चंडी नार हठ देह उधारा ॥ अरथी रि
षमन मैं यह इ चाम्यो ॥ क्रोध रहित नमु ष बचन वषाम्यो ॥ हठ तज
कार फिर दु मुरु आगे ॥ पाछे हों फिर हों प्रण सागे ॥ ८३ ॥ सोरठा ॥ सु
न चंडी रिस सों कह्यो वचन न मानों तोहि ॥ रस हीमुष तें अब तम
हि कहै वचन कटु मोहि ॥ ८४ ॥ चौपई ॥ अब ही तुम भाष्यो प्रकार के ॥
पाछे लाग न फिरौं नार के ॥ अब उस ही मुष भाष द्यों ऐसे ॥ पाछे
फिरों वेद विध जैसें ॥ प्रगट प्रकार कहों सुन नार सब ॥ तो तुम रे आ
गे लागों अब ॥ सुन विप्रन मुष बचन उचारे ॥ सो ई भलो रिषि समे

न॰ अ॰ विचारे ॥ जो नियक है सो इक्षन कीजै ॥ अपना ब्याह सिद्ध कर
भा॰ लीजै ॥ नव ही रिषपी छे उव लागा ॥ चंद्री हि न अपना प्रण मागा
१०८ ८५ ॥ दो॰ ॥ आगया कारी नारि कै कह्यो उदालक ज्ञान ॥ चंद्री कों

लायो भवन महाहठी पहिचान ॥ ८६ ॥ चौ॰ ॥ चंद्री को रिष गृह
ले आयो ॥ आश्रम बीच आन बैठायो ॥ कलह करै चंद्री हठ ठानै ॥
पति को वचन कह्यो न हि मानै ॥ जब देवी का वचन विचारै ॥ महां
क्रोध अपने जिय धारै ॥ दूसर है उत्तर न हि देई ॥ पति को कवहु
न आदर लेई ॥ गारी देत रहै पति कों नित ॥ कवहु न करै उदाल
क सों हित ॥ कौल सों हित कवहु न लावै ॥ निस दिन हियें क्रोध
उपजावै ॥ ८७ ॥ दो॰ ॥ रिष समझत निज आपने घर बालक अ
ज्ञान ॥ अब लौं इसके जिय नहीं रति सुष की पहिचान ॥ ८८ ॥ चौ॰
ई ॥ रैन समै रिष तिय पहि जावै ॥ चंद्री निरष क्रोध उपजावै ॥ नि
ठुर वचन रिष कों मुष कहई ॥ सुन रिष महा मौन गहि रहई ॥ जो
तम रिषी निकट सुहि आवहु ॥ तौ तम पसु जे अति श्रम पावहु ॥ रे
उ महां दुष करों प्रहारा ॥ जो तम परसहु अंग हमारा ॥ सो
ककंत न हि परसै ॥ कवहु न हित सों पति मुष हरसै ॥ सो वै प्रघ
ने अति इरषावै ॥ विंना उसक कछु जियन सुष पावै ॥ ८९ ॥ दो॰ ॥
रहकारन सम भरिष करै चंद्री करै न कोर ॥ रिष चंद्री
को महाहठी तिय मोर ॥ ९० ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ वचन न मानै कंत
हों मति मित जो ति लमांगै रि

215

216

ष॥ ताको बचन लगै रिष को विष॥ ल्यावै सो धन षिद्ध अनाजा
हियें विरोध करै नहि काजा॥ छल मांगै मुनि वर लिपतें जब॥ अज्ञा
सुत ल्याव हि चंडी तब॥ जो मांगै रिष क्रुसा कर्म हि तिन॥ देत क्रुचील
घास सरोस चित॥ रिष विचार कीनो अपने जिय॥ भूषन बसन दे
त नैतन लिय॥ होइ प्रसन्न अंग नंद वढावै॥ आगम मान रहे ल चित
लावै॥ ५१॥ दो॰॥ परभूषन वहु विध दियो जु वनी कों जिय आन
विइ करको धित अधिक भौ चंडी मन अभिमान॥ ५२॥ चौ॰॥ बहु
रउदालक हृदै विचारा॥ यह बालक नहि ज्ञान संभारा॥ जब याके
सेतनक कुहोई॥ बुरा का मन बकरै न कोई॥ यही मंत्र रिष मन ठ
हरायो॥ समै पाय चंडी सुतन जायो॥ चंडी को अधिक दुन करई
लोक लाज तें नेक न डरई॥ रिष के को उअति धन व आवै॥ ताही सों
अति कलह वढावै॥ अभ्यागत को दान न देई॥ लकन इछ करै स
मतेई॥ ५३॥ दो॰॥ आधला हरिनको धमन करे कलह उपजाइ
जिनको रिष आदर करै तिन हि डरावै धाइ॥ ५४॥ चौ॰॥ वहै मह
न रिषी गृह आवहि॥ मन संतोष कवहू न हि पावहि॥ निरादर त
जांहि रिष की सभ॥ दैहै महा चिंत वस रिष तब॥ सुत रिष को अ
तिआज्ञाकारी॥ रिष की सेव करै हित धारी॥ रिषी पुत्र कों ज्ञान
दृढावै॥ अति शास्त्र की विध समझावै॥ चंडी निरष को धउप
मै चित॥ बालक करइ न हीं रिष सों हित॥ जब सिष्ठ कह्यो सुनो री

ज·ग्र·
भा·
१९

माता॥ पितुकीसेवकियेंकुसलाना॥ २५॥ दोहरा॥ अतिशास्त
रसिमरतनकहतनसेवाकीजिपनात॥ स्वारथपरमारथसरैहैंम
ननकुसलात॥ २६॥ चौपई॥ तिहअवसरविरंचहलतआयो॥
नीरथपरसहरसदिषरायो॥ नामकुंरंजमहाअतितानी॥ देख
रिषआश्रमआनंदजानी॥ भौनउदालकशापतभयो॥ थोनिर
षरिषआदरदयो॥ कुसलप्रश्नआसनबैठायो॥ मननतनमुदित
रंकधनपायो॥ चरननलागरंउवनकीना॥ हरषतमनआदर
बहुदीना॥ भोजनविविधप्रकारबनाए॥ पितापुत्ररुषिसोंजु
जिवाए॥ चंडीमलभोजननहिलेई॥ बालककहैंगारीप्रुषदेई॥ २७
दोहरा॥ रूसरहीवंशीतवद्विजकोउदालककलात॥ लागेचरनम
हंतकेलावहुअपनीमात॥ २८॥ चौपई॥ पुत्रमाइजननीसोंकहि
यो॥ हाथजोरठाढाहैरहियो॥ वचनकहैबालकहनमाता॥ रि
षपहिचलहुहोरकुसलाता॥ चतुराननहतचनेनलागहू॥
हर्षतहियेंकोधनिपमागहू॥ मिरहिरोषसभसाधहरसतें॥
होइहमपावनचरनपरसतें॥ ठनवंशीमनकोधतभई॥ महाडी
समनसुषचलगई॥ निलनवचनसुषतेंकहवोले॥ पहलोमा
धउररहितनतेले॥ २९॥ दोहरा॥ ऐसेवहुतमहंतसुतजेंदेषेविवि
धप्रकार॥ निमसदिनसोईउदरहितधमतफिरहिसभहार॥ १००
चौपई॥ वंशीववउत्पनहतनहते॥ मौनतहाप्रसीमवहुधने॥

नवहिंउरालकठोरनिहारा॥ चिंतानरचितवचनउचारा॥ कहे
हवांनउरालकसुरुकों॥ महासोकवसनिरषोनरुकों॥ कहैरि
षीजियकीनमनानइ॥ गुपतप्रगटसभविधपहिचानइ॥ नम
रसनतेंजोनमिटहिदुष॥ ओरसमर्थकोनदेवेसुष॥ नमरेदर
सपरसकल्याना॥ साधुअरुहरपकसमाना॥ २ दो॰ ॥ जोपैवेद
नवचमिटहिमिथ्यावचभगवान॥ तोसाधकेदर्सनतेंहोरनहींक
ल्यान॥ १॥ चौ॰ ॥ साधुकृपातेंसभसुषहोई॥ कोटकष्टअवरहैन
कोई॥ जोहमराडुषजाइनरुफलें॥ देहैअवरकवनसुषमुफकों
वहुतअधकचिंताजियमेरे॥ पासोंपिताआइनिहवेरे॥ आइस
मगीगुरुकोंचहिये॥ रहइचंडीनियकासोंकहिये॥ भलीवत्तव
हियेलिहुअवसर॥ सोषकियोचहियेसभहिगवर॥ इरपतहि
मननिमंत्रनकरउं॥ निसदिनलियचंडीनेउरउं॥ ३॥ दो॰ ॥ कु
सोकरैगीएनहींहमराकछुनवसाइ॥ भलीवत्तहमयोगिहैं
इलरअछलेआय॥ ४॥ चौ॰ ॥ तांतेंगुरुचिंताजियछिनछिन
पिताआइसमहिअंतरहैदिन॥ भयोअधीनरीनमनमोही॥ पिता
आइसजिनगाररुपाही॥ वचहीनपुरवैनहिसारथ॥ पिताआइज
वसाइनिरारथ॥ पितरकर्ममहिहानहोइजव॥ पालकमिटहि
नकोरजनमनव॥ मुनिकरुनाकरधर्मदिनावइ॥ इषसमुइतें
पारलंनावइ॥ ओप्रसन्नब्रह्माहतनरिषवर॥ धर्मोपमरिषीश

रसुपवर ॥ ५ ॥ सो रठा ॥ कहिउहाल कभाषक करुणाकीजेग्र
सम्रन ॥ लीजेइ षनेंराषकरइउपायविचारचित ॥ ९ ॥ दो हा
रिषतुमरीरक्षाकरहिश्रीपतिसदासहाइ ॥ कविरहकतम्र
रनभएग्रहरपोग्रध्याय ॥ ७ ॥ ॥ इति श्री भारत पर्व लोग्रष्टमे
धर्याध्याय ॥ लोरभ रिषग्रर्जुनसहत ईम नहमान ॥ २६
कवित ॥ पटोनेंहीग्रापनहिसमोहैकहांविसनलिषोवा
ववाचग्रागणकारीतमकालिका ॥ ग्रश्वमेधवेग्रेग्रगपायोहै
नजामैंकपाग्रगनतगिग्रोनजारसनसगुपालका ॥ राईसम
मेरीमनग्रंथमहासिंधुवतरहकनभरोसोहियेंपकनेंरला
लका ॥ लीजियेउमारपारकीजियेकपाग्रपारविरहकोसभा
रतोहिनामरीनपालका ॥ ९ ॥ जैमनउवाच ॥ चौपई ॥ ग्रेसुनक
हैसनरुराजाना ॥ वहुरवचनसुनविरंचवषाना ॥ कतिग्या
हीरिषग्रैसीवामा ॥ महारीवेंग्रीसिइनामा ॥ तातेंतुमर
मराचिंतमन ॥ वचनकहनहींसरारेग्रवन ॥ ग्रादपिताका
दैहैगैसें ॥ हमरीसीषसनरुतमनैसे ॥ ग्रश्वसमांगरुवेग्री
प्रते ॥ त्मावेगीवहसवपावनग्रत ॥ मोतमकाहरुसवहन
हिकरई ॥ सधीतेंउलटीग्रतुसरई ॥ २ ॥ दोहा ॥ रैनसमैसिष
प्रश्नोंवचनकहैमुनिवाल ॥ कालपिताकाग्राइसुकौन
करेतेंनाल ॥ ३ ॥ चौपई ॥ पुत्रमनमहिउपजतपहचाना ॥ ग्रह

विधश्राद्धकरोंकुसलाता॥ अंगहीनब्राह्मणकुवीलसूति॥
करोंनिमंत्रणभ्रष्टमंदमति॥ मलिनसुनानबनाउरसोई॥ कुट
अन्नलावहिहमसोई॥ मद्यरचणाककेवरेवनाऊं॥ श्रजाहूध
कीषीरकरावों॥ तैलपाकहूनमलिनकारके॥ करहोंसकल
कुटिलअहारजे॥ दक्षाएकहिजदक्षनादैहों॥ पुनसुषवानलहक
कुनकरैहों॥ ४॥ दो० ॥ श्राद्धकरोंगाहीनविधब्राह्मणसाउम
लीन॥ कृपारहितकामीकुटिलजननमकरमकेदीन॥ ५॥ चौ० ई
लावोंहिजअधरमअज्ञानी॥ मत्रिकवरनयरूमदपानी॥ जिन
केहिंसामासअहारी॥ कुष्टीकरनीहीनविकारी॥ सकलसमग्री
भ्रष्टमंगावों॥ पावनवस्तुएकनहिलावों॥ नहींप्रमारोंदीपकरु
चिकर॥ एकहूपारीधरोंपिंडपर॥ नीलवस्त्रहिजआगेधरऊं
पिताश्राद्धविधवत्रनहिकरऊं॥ यहवचसुनतसोंकहेरिषीश्वर
चंडीतियसभसुनेश्रवनधर॥ ६॥ दो० ॥ चंडीबोलीक्रोधकरह
नियेंपतिअरुनान॥ मंत्रकियोनमयपरसरचुहिसमझीयहबान
७॥ चौ० ई॥ वचनतुमारेहृदेनधरऊं॥ श्राद्धसहूरकाविधवनकर
ऊं॥ सकलसमग्रीवेदविधाना॥ ल्यावोंगीब्राह्मणविधवाना॥ तुम
भावेहिजसाउभ्रष्ट॥ हमआनोंगीविप्रविमलस्रुति॥ फलिसिष्ट
नहानाषटकरमी॥ ऐसेहिजवरल्याउसुधरमी॥ गोपयकोसभ
दहींसमावों॥ गोहूपहिंषीरमंगावों॥ तुमभाषेसुघतैलपाकस
की

ज॰ स्व॰ म॥ मैं करिहों छ्न पाक सकल षब॥८॥ दोहा॥ वरे वनक केत
भा॰ मकहे मैं नकरों जिपजान॥ सोंठ मिरच पुन करोंगी उरट वरे रुव
४४। मान॥९॥ चौपई॥ श्रगाद्द पथी रतुम कही॥ भाषी वङ्गरव्युजा पयर
ही॥ हौं गोहूधहि सकल वनावों॥ पुन दूधको मागा करवावों॥ क
सो पिंड पर पकतु पारी॥ मैं रावोंगी श्रीफल भारी॥ तुम कहि देव
नीलपट द्विजवर॥ मैं देवोंगी तुभ गपरं वर॥ रकार कनाल मथा
सोमन॥ कनक मुहर देवोंगी ब्राह्मण॥ गोपीचंदन तुम भाकोंनर
सावोंगी देवन चंदन वर॥१०॥ दोहा॥ तिलक तंबोल सुवास सुष
फूलमाल पहिराउ॥ ससुर ग्राहु विधवन करों तुमरे वचन मिल
३॥११॥ चौपई॥ वंशी के वच सुने रिषीश्वर॥ भयो मुदित मन मोहित
वीश्वर॥ कह्यो उदालक सुन सुनवाला॥ विधवत ग्राह करत तुम
माला॥ वंशी वचन कहे मुष जैसें॥ कीनो ससुर ग्राह विधनैसें॥ सं
मोषे ब्राह्मण प्रनाकर॥ दीयो दान नरक नाभाउधर॥ पूरन ग्राद्द
भयो नव विधवत॥ नबह सबोले रिष चंदी प्रत॥ विसरगई रिष
गलटीवाला॥ हिपको वचन कहैं कमसलाना॥१२॥ सोरठा॥ चंदीसों
रिषवच कहे पितुर पिंड ले माहि॥ पावन गंगा जल विषे देकुन
हों परवाहि॥१३॥ चौपई॥ सुनकै चंदी इठी क्रोध धर॥ ननद्धिव पिं
डउठाइ लिपो कर॥ कुल्लतौर विछा कीनहां॥ पिंड समसर के शरे
नहां॥ पिंड शर वंशी फिर आई॥ सभ विध रिष सों भाष हनाई॥ श्रेसी

गौरषिंड मोहि डारे ॥ वसहिं नर्कमहि पितर तुह्मारे ॥ सुनहि रिषमहां
क्रोधसिधभयो ॥ तवहि श्राप चंडी कों दयो ॥ सिला वज्र की होइ दुष्ट
मत ॥ रीरहतनन नतछिन धारहु ग्रन ॥ ४४ ॥ दो० ॥ सुन चंडी विस
मै भई डाडी विथ कर जोर ॥ मुकत वतावो कृपाकर निरषहु हमकी
ओर ॥ ४५ ॥ रि० उ०वा० ॥ चौ० ॥ भाष्यो वचन उदालक रिषि तव ॥
द्वापर जुग को अंत होइ जव ॥ तव ही होइ कृष्ण अवतारा ॥ पांडव क
रि हैं गोत्र संघारा ॥ हयमामान धर्मसुत लेई ॥ अश्वमेध मष करि है सो
ई ॥ धर्म ताल को वांध व पारष ॥ द्वैगो वही अश्व को सारष ॥ सिला रूप
तुम परी जहां ही ॥ चल आवेगा अश्व तहां ही ॥ परस करेगा तुम ही अं
गा ॥ लाग रहेगा तुमरे संगा ॥ ४६ ॥ दो० ॥ शत्रुघ्न हनारक करे तवहि अर्जु
न तुमरे गात ॥ मुक्त तुह्मारी होइ तव श्राप मिटे कुसलात ॥ ४७ ॥ जै० ॥ उ
वा० ॥ चौ० ॥ जैमुन कहै सुन इ राजा पुत्र ॥ ऐसे वचन कहै सो रमपु
न ॥ द्वै कृपाल सम विथ कहि दीनी ॥ पारष रिषि तें आग्या लीनी ॥ ह
रष तहि येंकर दृकम हि आप ॥ सकल चमू आने रउ पजाप ॥ आवत
अर्जुन शत्रुघ्न हारी ॥ हय प्रभुका पो सिला उवारी ॥ चंडी परी विजै के
चर्नन ॥ दिवा देह धर चली सुदित मन ॥ आगे चलत भयो पुनि वाजा
पाछे पांडव अरु सभ राजा ॥ ४८ ॥ दो० ॥ अर्जुन शत्रुघ्न हारके मन उप
ज्यो अभिमान ॥ हय प्रभुकलापो सिला सों मैं हो अति वलवान ॥ ४९ ॥
चौ० ॥ हम एक लोक करें दृष काजा ॥ कनिकों लिये फिरें सभ राजा

न॰ श्र॰ छिनमहिजीतसकलनृपसाऊं॥ पर्मितानपहिसलकराऊं॥ तीन
११२ लोककेसुरनरहिजव॥ निमषएकमहिजीतलेऊंसव॥ जैसुनकै
हनकुराजाना॥ अर्जुनमनउपमोग्रभमाना॥ चंपावतीपुरीचलग
ए॥ नगरहंसधुजशापनभए॥ कंचागढकंचनकोमंदर॥ कविजग
मगपरलजनतञ्चरंदर॥ २॰॥ दो॰॥ मंदरकनककरतननषचतजग
मगात अतिजोत॥ चंपावतीपुरीनिरषचकचौंधीजियहोत॥ २१॥ चौ
पाई॥ कहिजेमनहनजनमेजपनृप॥ वर्नतचंपाव
तीनराधिप॥ कंचनकलसग्रहनपरसोहे॥ जटतजरावकोटरवि
कोहे॥ धुजापताकाशुराग्रहारी॥ विडुमषचतपवरशुभकारी॥ वि
सभगतवसिहंसभलोगा॥ ग्रहग्रहकुसकपानिहसोगा॥ सालिग्रा
मसेवासभकरहीं॥ छिनसोहरिहरनामउचरहीं॥ ग्रालनसलनपा
वकषटकरमी॥ छत्रीसरेतहांसधरमी॥ २२॥ दो॰॥ छत्रीरनस
रेसवलसनमुषकरहिप्रहार॥ जीतहिरिपुसंग्रामकरकवहुन
शावहिहार॥ २३॥ सो॰॥ हतहनिरख्योशउविरचितहपपुर
केनिकर॥ वचनकहेप्रगटाउनतछिनश्रापनृपतपहि॥ २४॥ चौ
पाई॥ सुनकुलवचनहंसधुजराजा॥ तुमरेपुरश्रापनभयोवाजा॥
अतिविचित्रसुंदरभटधुनगाति॥ कनककोटसिरजरतनगनग्र
न॥ सोभतकनककपञ्चतिहभाला॥ तापरलिख्योहतोमधुवाला॥
रषनअलंकारसोभततन॥ चंदनचर्चितअंगसुदितमन॥ सेना

न्रृपन्रपनवङ्रपाछे ॥ दिषिपनग्रषजनतकोंग्राछे ॥ सुनपह
वचनभूपमनभायो ॥ सचिवसुदिनकोंवेगवुलायो ॥ २५ ॥ दोह
रा ॥ न्रपनहंसधुजसुदिनमननहिसमानहुषश्रंग ॥ मंत्रीकोंग्रा
ग्याकरीश्रामोपकरनरंग ॥ २६ ॥ चौपई ॥ न्रपग्रचर्जभयोनिरष
नरंगा ॥ नषसिषननविचित्रहभग्रंगा ॥ आग्याकरनभयोभूपाला
पठङ्रपत्रिकाकोंननकाला ॥ सभामिलीसूरेरणमहां ॥ लागे
पठनपत्रिकानहां ॥ हैनुरंगवरन्रपतिजुधिष्ठिर ॥ जनतग्रंरंभकि
योहसनपुर ॥ भएसहाइकग्रीनंदनंदन ॥ पारथसारथिशत्रुनि
कंदन ॥ चतुरंगनीसेनन्रपग्रनगन ॥ सूरवीररणधीरसुदितम
न ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ सोवांधेन्रपग्रश्वकोजोन्रपग्रतिवलवान ॥ जीत
हिगेतिहन्रपतिकोंकरिसंग्रामविधान ॥ २८ ॥ चौपई ॥ सोनहि
न्रफसकहिभुयपाला ॥ ग्राइमिलेहमकोंननकाला ॥ ककुनक
हैंगेहमनिहराजा ॥ ग्रातामानफिरेसंगवाजा ॥ छत्रिधर्महिवरावै
कोई ॥ हमकोंप्रियलागेन्रपसोई ॥ औरप्रतापलिषोमधजैसें ॥
पढोसनाइपत्रिकाजैसें ॥ न्रपनहंसधुजहियहर्षनग्रन ॥ लिषो
सुलाइसचिवग्रपारमन ॥ वङ्रवुलाइलिपेन्रपनाना ॥ कहीउ
चारन्रपनयहवाना ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ सुनङ्रसचिवग्रहनानग्रनिसे
नाकेसिरताज ॥ ग्राताजमकोंहमकरीकरङ्नुरकोमाज ॥ ३० ॥
चौपई ॥ वोलोवङ्ररहंसधुजराजा ॥ सुनङ्रसभापकसोसुहिवा

नं॰ श्रु॰
भा॰
११२

मा ॥ तौंतैंहोइपरमकल्याना ॥ दोनौंबालनलाभप्रुहिजाना ॥ ओह
मचीतौंहारइपारथ ॥ आवहिकृसभगतकेसारथ ॥ अर्जुनका
उषसहनसकैहरि ॥ हमदर्सनपरसैतिहअवसर ॥ अरुजोरनम
हिहमहिहरायो ॥ सोपुनमोहिपरमपदपायो ॥ तवहमफिरौंग्रथ
केसाथा ॥ मषसालापरसोंजगनाथा ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ जिहभगत
नकेदरसकोंषोजतशिवब्रह्मादि ॥ ताकोदरसनहोइगाग्रुककों
अधप्रसाद ॥ २२ ॥ चौ॰ ॥ जिहदरसनकीनिसदिनआसा ॥ लागी
रहतहृदैमैंत्रासा ॥ विधनाओइवनीयहवाता ॥ निहवेंदरसहोउ
जगताता ॥ अस्वसाथप्रभुमनतातहरि ॥ अरुसारथिपारथसुरा
वर ॥ सहिनसकतहरिनिमषभगतदुष ॥ आरतहरनहरतेनिभ
यसुष ॥ अर्जुनसेवकश्रीनंदलालको ॥ सषाकहावतषट्गुपा
लको ॥ भारथमहिसारथीभयप्रभु ॥ तौतैंजीतहियेकौरवस
भ ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ अर्जुनइषहीहेउगारनमहिकरसंग्राम ॥ पां
रव ॥ पांडवश्रीनपकानकेआवहिगेत्रनसाम ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥ हर
वैठेहैंहैहरिदरसन ॥ श्रीपतिचरनकमलकोंपरसन ॥ सेनाप
तिभाष्याध्रुवपालक ॥ उघमनुरकरौंतनकालक ॥ हारेंजीतेमो
हिवकल्याना ॥ हरमनहैहैस्त्रीभगवाना ॥ अश्वपसोपहहायहमा
रे ॥ मांतैंग्रुफवरभागविचारे ॥ कविधर्मपुत्रनदर्सप्रगारी ॥ दोनों
वालमहांप्रभकारी ॥ जैमुनकहेहमीरपभुवनन ॥ नृपतिहंस

धजकहिंयहबचनन॥ २५॥ दो॰ ॥ सैनासमभप्रस्तुहितभईहु
नेन्त्रपतिकेबैन॥ उघमकीनोगुरुकोसभसूरनमनचैन॥ २६
चौ॰ ॥ न्त्रपतहंसधुजसचिवबुलायो॥ ताकोसभहतांतसम
झायो॥ विहरावस्रलेहुननछिनअब॥ लिषसावोकागदहु
परसब॥ दुंदभिभेरनिसानबजावहु॥ सूरनमनअनंदउपजा
वहु॥ भैसीआज्ञाताकरीन्त्रपतसब॥ हरसदीनसेनासमलतव॥ श्रप
सेनापकसातसेनपत॥ तेनिकसेसेनासंगअगिनत॥ एकएक
नाइककेसंगा॥ संख्याकहौंचमूचतुरंगा॥ २७॥ दो॰ ॥ सहसर
कीसगयंदवर इकइकनाइकसंग॥ तुकतासीसविराजहीमदमा
तेहुभरंग॥ २८॥ चौ॰ ॥ इकइकलाषतुरंगमहांवर॥ सूरसक
लअसवारतिनऊपर॥ एकलाषरथहुभगविराजत॥ तापरच
हेजोधछविछाजत॥ पाइकगनेनजांहिअपारा॥ इकइकनाइक
पहिविसतारा॥ इकइकसोंदुंदभिसेमाला॥ बाजतअबननहुनिध
नवाला॥ सातोंनाइकइसहिप्रकारा॥ सकलचढचलेकियोनगारा
पांचोसहतहैपांचभुवाला॥ आपचढतेऊततकाला॥ २९॥ दो॰ ॥
नामकहौंतिहसातकेप्रथमसुरथजिपजान॥ दूजोसुरतसुजान
तिहमहासूरबलवान॥ ३०॥ चौ॰ ॥ तीजोनामसुधन्वाजाको॥
विष्णुभगतसरणागतताको॥ चौथोचंद्रभानुहंदरदुति॥ चंद्रसे
नपांचमोरूपतसुतन॥ पोतसन्तपपुरंजनानामा॥ महाबलिकरसु

ज॰ग्रं॰ राग्रभिरामा॥ पुनप्रसेनहूसरहूज्ञानहो॥ महाबलीसूराप
भा॰ हिचानहो॥ इकइकसहुतसंगचमूअपारा॥ सहसचलीसदुरद
११८ मतवारा॥ पुनइकइकसौंलाषतुरंगा॥ साठसहसरथइकइक
संगा॥४१॥ दो॰ रा॰॥ लाषकसूरअपारहैपएकएकसहुतसाथ॥
द्वैहैलाषपदातिवरएकएकसंगाथ॥४२॥ चौ॰ प॰ ई॰॥ केउअगनि
धरकेउधनुषधर॥ चलेगुरुकोंदरसनिमितहरि॥ अस्त्रसस्त्रप
हरेवनाघतन॥ अगनितचतुरंगनीचमूगन॥ रथहस्तीकंचन
केभरे॥ कवचसंजोइसाथवङ्करे॥ इकइकसहुतसंगसहस
नगारा॥ सुरसरनाइवजेंअपारा॥ चारोंसहतहिपोइरोसाथा॥
नाथोसभनन्रपनकोसाथा॥ बोलोभूपसहनइरेमाना॥ कहांसुध
भारतविष्याता॥४३॥ मं॰ श्री॰ उ॰ वा॰ च॥ दो॰ रा॰॥ मंत्रीकयोप्रणामक
रसुनइहैसभजनपह॥ सुनअवेधरधेरनगयोसरसुधप्यालेह॥४४
चौ॰ प॰ ई॰॥ नहींसुधप्याकोंअैसीसुध॥ अश्वगह्याअरुन्रपउघमजुध
आज्ञाकरीहैसभनराना॥ नृमसोचलजूसरसिरनाना॥ भाइसुध
भातुमरेघाके॥ विलुभगतसरारतवांके॥ अैसीआज्ञाकरीन्रपन
जव॥ चलेश्रपनघरविदाकरनसव॥ मातपिताकेपांइनलागे॥ प
रेगुरुचरनहियअनुरागे॥ इष्टदेवकीपूजाकीनी॥ तिलकतंबोलर
कनारीनी॥४५॥ दो॰ रा॰॥ एकनकेसुरनइष्टदुर्गासेवतएक॥ प
कगतोसमुराधहीमनवचक्रमनियटेक॥४६॥ चौ॰ प॰ ई॰॥ एकन

केसंकरकीसेवा॥ एकअराधहिदेवीदेवा ॥श्रद्धाकरमांगत
वरदाना॥ हमकोंदर्सहोऊभगवाना॥ इष्टदेवहूजिपेकृपाला
हमपरपर्सहिथीनंदलाला॥ पहरससरमोतनउरमाला॥ दिन
मणिकिरणजोधविकराला॥ वस्त्रपटंबरपहरअनूपा॥ अति
विचित्रतनमहांसरूपा॥ अपनेअपनेगृहतेंसुरा॥ चलेविदाके
रणकेपुरा॥४७॥ दो॰ रा॥ सहुबांधनिकसेसकलअंगसंजो
रसिंगार॥ श्रीफलअक्षततिलकसुषकीयोभेषअपार॥४८॥ चौ
पा ई॥ हियेअसिर्वादवहुतप्रकारी॥ आवहुवेगजीतगिरधारी॥
ज्ञमतोचलेनिमितदर्सनहरि॥ अहसंग्रामकरनजीतनहरि॥ आ
गेधारणअतिवलवाना॥ जाकोंनितसहाइभगवाना॥ तुमहुजी
रणधर्मसंभारहु॥ जीतहुहरिसभसत्रुसंघारहु॥ जोभागोजगहार
धृकारा॥ लाजेकुलकीधर्मकुधारा॥ कायरहोइअरणमेंभागे॥ ताके
कुलकालषअुषलागे॥४९॥ दो॰ रा॥ क्षत्रिधर्मसनमुषलरहुइरहु
नमागतप्रान॥ न्रपतिकरहुवाननसहितप्रनामश्रीभगवान॥५०॥
चौ पा ई॥ हरिकोंसावहुजीततुहुकार॥ तुमप्रसादतेंहमदर्सनहर
श्रीफलअक्षतहरिदसांवरी॥ दधिकुंकुमचरच्योसभतनपर॥ अउ
पितुमहहरिभगतविमलमति॥ सावहुवेगजीतपरमापति॥ दई
असीससभनकोंद्विजजन॥ दर्सहुकलसअवरजीतहुरण॥ पुनसुव
तीजनवचनउचारा॥ विष्णुभगतवरभूपतहुधारा॥ तुमप्रनिभग

न॰ श्र॰ नसकलनुरिलोगा ॥ न्हूफऊरणसनसुषनिहसोगा ॥ ५१ ॥ दो
भा॰ हा ॥ तमपहधारीहृदेमहिजीनहिगेहरिजोग ॥ आपनरहि
११५ गेकुलसहितनारहिगेसभलोग ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ जेउपुरुषज
गपरउपकारी ॥ तिनकासंगहोतसुभकारी ॥ आपसहलीओ
रनसुषदेई ॥ दुषियानिरषपीरहरलेई ॥ जैसुनकहेहनेऊभुव
पाला ॥ पतिकोंधर्मदृढावनवाला ॥ कहिहृदालभतारसुनाव
न ॥ परकारजकोंहुनसवढावन ॥ जलमहितपसाधतरकरि
षवर ॥ परमापतिकेहियेंध्यानधर ॥ एकनिसाझीवरजलमां
ही ॥ आनपसासोजालनहांही ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मीनपरेवहुजा
लमहिरिषफांसोतिहमांह ॥ झीवरषेंओभारवहुजतननिका
सोनाहि ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ झीवरकाढोजालजतनकर ॥ मीनअ
नेकसाथरकरिषिवर ॥ झीवरकहोवचनरिषकोंतब ॥ मुक
तहोउरिषजाहुनिकसअव ॥ झीवरप्रतिरिषवचनउचारे ॥ झी
वरवाकासुनतनउहमारे ॥ मोउमससभनजिपनउकलावहु ॥ जै
हमकोंनिकसनावलावहु ॥ जोइनवातकरउहमसाथा ॥ जोका
सैनोइनहिसंगाषा ॥ झोरेझीवररिषअरुमीना ॥ वचेमीनसंगसा
धप्रवीना ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ मौनतमपरउपकाररहितपहधारीमन
मांहि ॥ ररमावोहरिनागरोसारणप्रपनेनाहि ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ ह
मैनिमित्रहंसधनराना ॥ घरकाधोधर्मनेकोवाजा ॥ लोगनगर

केटर्सेकरहिहहरि॥रुपतकियोउपकारप्रजापरि॥पुरतेंनि\
कसीचमुजोरकर॥मनमहिहमरगणेसदेववर॥कोउभये\
गजपरग्रसवारा॥कोचटचलेतुरंगग्रपारा॥कोउग्ररूटभये
रथऊपर॥कोनरचलेसहगहभूपर॥वाजेवजहिग्रपारनिसा
ना॥हरहरनाइसिषरविधनाना॥५४॥दो०हा॥सेनाचलीरके
रहैइंडुभिसवदवजाइ॥ग्रसमेधकेयज्ञकोसम्नदशोघहध्यार
५८॥इतिश्रीभारथपर्वणिग्रसमेधपर्वाध्याने॥कविटहकेन्र स्र
नकियोग्रनरत्ध्यायप्रमान॥१०॥॥ जैमनउवाच॥दोहरा॥
जैमुनकहिहनहोनरुपनजनमेजयसविधान॥कथाग्रुथावत
मिहुश्रतिकरलीजेश्कतिपान॥१॥चौपई॥कंपमानत्रैलोकभयोहि
न॥भयोमहाभारपहूजोपुन॥चलेसूरसिरचवरफुलावत॥ब\
विजगमगसभभूपदिषावत॥मंत्रीरुपकोहचितद्रवीनो॥सक\
लकटककोचिहरालीनो॥ग्राताकरीहसधुजरुपनव॥तनविलं
वृसभसैनचलऊग्रव॥ग्रस्मणग्रहवानियानहोई॥ग्रवरचलेरण
कोसमकोई॥गोकोपुरीरहेगुहनपाऊं॥कुलसमेतनिहभीतचिना
ऊं॥२॥दोहरा॥तपतकराहेतेलकेभूपतदिपेचढाइ॥गोनरपुरीर
हैकोऊताकोदेउजराइ॥३॥चौपई॥ग्रासीतेलकढाहवीचग्रत
मनइकीसपरमानसंतपत॥ग्राताकयीहंसधुजजेसें॥करतभ
योमंत्रीकननेसें॥भाष्योरुपनरहेजोऊपाछे॥ताकोग्रगनग्रजा

ने० यु०
भा०
११८

रहुआके ॥ सतग्रपबापोउनमुफहोई ॥ पाछेरहेनराऊसोई ॥
सपनकरीअतिकवनभुवाला ॥ दंडदिखरायोपहविकराला
मैसुनकहेसुनहुकुरुराजा ॥ सभचढचलेसूरसिरताजा ॥ ५
दोहा ॥ चलीसकलसेनासुभटरथयोगगनरजभूर ॥ हाथहि
हाथनसफईदृषपरतनहिसूर ॥ ५ ॥ चौपई ॥ चढदेषतमंदिर
परपुवमन ॥ दर्सहिपतिहैहैहरषतमन ॥ करहिअसीसजीत
लावऊहर ॥ बालकहतसभनुवतिपरसर ॥ निरषहिहितिअप
नेभरताकी ॥ जीतहिरहसेनासुराविकी ॥ जीतकसलावहिपुर
मांही ॥ हरसहिमीहरिसमयनाही ॥ सकलपुरीदरसनहरिहोई
मांतेकिलविसरहैनकोई ॥ एकतियकहिहरिपुरआवहिनव ॥
लागोंचरनसुकलमांगेतनव ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एकचतुवतीअसेंसकहेन
बआवहिभगवान ॥ लेवहिमीवरमांगसुतनहोइपरमकल्यान ॥
चौपई ॥ एकतियकहिहरिपुरआवहिनव ॥ मांगलेउगीधनसम्
हनव ॥ कोउतियकहैवसनभूषनवर ॥ मांगलेउगीपुरआवहिहि
र ॥ एककहैंसुतपतिकल्याना ॥ मांगहिमीहरिपैवहदाना ॥ एकउ
सीरतपुरुषहमारे ॥ कोतेंलावहिमीतसुरारे ॥ वहुप्रकारतियरे
हिअसीसा ॥ हमरेपतिजीनहिजगरीसा ॥ पुरतेंनिकसचलीसभते
ना ॥ बालककहीपरतनहिवैना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सजसंजोइसेनाचली
पुरुषरथोनहिकोउ ॥ लिहहयवसरआपतभयोमतरथपआमोइ ॥ ९

चौपई ॥ देषसुपथ्याम गोचकितमन ॥ सेनादुष्टपरीअतिअन
गन ॥ जाम्नोअवरकोऊपहराजा ॥ हमपरचढआयोदलसाजा
यहीविचारकरतमनमांही ॥ मिल्योनृपतकोसचिवतहांही ॥ वि
हृयालियोसचिवसेनासब ॥ मिल्योहुधञ्यामारगमहितब ॥ १
क्रोभकिसमतिमंत्रीप्रन ॥ उयमयुद्धकियोकतभूपत ॥ कहिहै
तांतसभमोहिबतावऊ ॥ हमरेहूदेसंदेहमिटावऊ ॥ ८॥ मंत्रीउवाच
दोहरा ॥ सुनऊभक्तमंत्रीकहैअबयुधिष्ठिरराइ ॥ नृपनहंसधुन
बांधियोजिहभगवानसहाइ ॥ ९॥ चौपई ॥ पारथसारथअतिबल
वाना ॥ अबसहाईश्रीभगवाना ॥ जीतलेहिंगेवेगतुरंगा ॥ अर्जुनस
हतनृपतबऊसंगा ॥ दिषतावैंहमउषअर्जुनतन ॥ आवहिंगेनतनकाल
स्यामघन ॥ पांडवकोउषसहनसकनहहिं ॥ कृपाकरीआवहिंगेगिर
धर ॥ जोहमकोंजीतैअर्जुनअब ॥ हरिदरसहिंगेगजडरमहितब ॥ दो
उवातमैंलाभजानन्प ॥ तांतैबांध्योअश्वनराधिप ॥ १०॥ नृपउवाच
दोहरा ॥ जेप्रभुनकहिहनहोन्पतभक्तहनीपहवान ॥ प्रेममगनग
स्गरभयोहरषतपुलककमगात ॥ १२॥ चौपई ॥ वडूरहपथ्यावचनउचा
रे ॥ सुनऊहुचितलमहितहमारे ॥ पारथकोंजीतैंतनकाला ॥ नघ
पितिहसहारनंदलाला ॥ ऐसैंतीछनवानचलावों ॥ प्रलैकालकोस
मोहिषावों ॥ अर्जुननिजसेवकप्रतिपालहित ॥ अंगसंगजाकेगिरधर
नित ॥ ताकोंवाननसोंरपतावों ॥ तापाछैंश्रीकृष्णसत्रुलावों ॥ पकरहि

ज॰अ॰
भा॰
११२

गेहरिधनुषबानकर॥ सुफकोंकरहिसनाथकृपाकर॥१४॥ दोहा
रा॥ मर्जुनअरुस्त्रीकुलमहिभेदनकछुजियजान॥ जहांहोतहेतं
डुहततहगोपालपछान॥१५॥ चौपई॥ कहेहुपञ्चाहुनदूहवि
नवर॥ अवहमजाउनहींअपनेबर॥ अश्वशाहरहहगौरमंगावों॥
सजसंजोइरणासनमुषजावों॥ पुरमहिपुरषनरहेकोइअव॥ क्रू
सहरसहितरणआपसव॥ कहोजथारषवानहुचितसुफि॥ पुर
प्रवेसनहिकरोंउचितमुक॥ पुनमंत्रीबोल्योतिहअवसर॥ धनसुप
आतमहिभगतनहर॥ प्रथमेसुमरहमाइकृपाकर॥ सिरधारहु
पितमातचरनपर॥१६॥ दोहरा॥ लेसुसीसपितमातकीलागवह
नकेपांइ॥ वहुरसुवनितिकोंमोषकैआउनगहरलगाउ॥१७॥ चौपई॥
मानलेहुहमरोउपदेसा॥ जाइपुरीहरकरहुप्रवेसा॥ विलमनकर
हुवेगफिरआवहु॥ विलमकरहुनतवअतिश्रमपावहु॥ सपथकरी
भपनयहमाकें॥ तिसहिजगाइरहेमोपाकें॥ नेलकरहमाहितिह
डारहु॥ मोकायपरतिहअगनप्रजारहु॥ इकदिनअग्रहरमेवुनियैंवि
न॥ निसहिजगाइरहेउररकहिन॥ आतांकरीहंसधुननैसें॥ लो
मकोंभाषसुनाईतैसें॥१८॥ जैमनउवाच॥ दोहरा॥ जैमुनकहिसुन
होन्रपतमंत्रीसुतनउपदेस॥ वलोसुधन्वापुरथपथमपितहहकि
योप्रवेस॥१९॥ चौपई॥ प्रथमेभगतपितापहिगयो॥ करप्रणाम
हिगवाढाभयो॥ सुनहुसुधन्वाकहोहंसधुज॥ अनहुनरणसम

गयोमहाधुज ॥ सुनसुतहमरेपुत्रउदैयन ॥ दर्सहिगेदर्सनत्रि
भुवनपत ॥ जीनहारहमरोकल्याना ॥ इहविधदरसदिगेभग
वाना ॥ कृविधर्महमरोदरसहरि ॥ हमरेभागभएइहअवसर ॥
अैसोअवपरयोहमहाथा ॥ जिहप्रसादपुरहोइसनाथा ॥ २० ॥ सु
यो ॥ का ॥ दो ॥ हा ॥ कहैसुधआसनपितासमहोइआभूप ॥ कृविध
र्मसंग्रामपुनदरसहिहुलसरूप ॥ २१ ॥ चौ ॥ ई ॥ करहिनकृविधर्म
इहअवसर ॥ सुनवचनतेंविपुषतेउनर ॥ कियोप्रसन्नहंसपुनकों
नव ॥ चलिगोभगनसुमाननिकटनव ॥ विनतीकरीहियेंअनु
रागा ॥ प्रभुदिनहुंदैमानपगलागा ॥ जननीकयोसुनऊवचनाल
आगेविजैसुरविशाला ॥ भेदनहीककुअर्जुनहरी ॥ पारथजीतन
कठनसुरवरि ॥ जिनकेसदासहाइरमापत ॥ तिनकोंजीतनमहा
विकटअत ॥ २२ ॥ दो ॥ हा ॥ सुनजीतनहिकोसकैसुनऊपुत्रयहकाज
प्रथमेजीतऊविजैकोमोदरसऊजइराज ॥ २३ ॥ चौ ॥ ई ॥ जीतनसाउ
सुतपुरमहिगिरधर ॥ हमकोंदरसदिखाइवेगहर ॥ जोतमहमरे
आगयाकारी ॥ हमकोंदरसावऊगिरधारी ॥ तुमप्रसाददहरिदर्सन
होई ॥ होइसनाथपुरीसवकोई ॥ जोदरसनब्रह्मादिकदुर्लभ ॥ सो
जनशिवमघवासनकादिक ॥ अैसादर्सनमुऊहिकरावऊ ॥ जोह
मरेमनपुत्रकहावऊ ॥ तीनदंडसुतपरविनमाला ॥ मनऊनहम
हिउआरेलाला ॥ इकरिषदंडहमरोदेवा ॥ पिन्हदंडनीसरोअभेवा

ज॰ मु॰ सुतरिषदंउउतारेतवहीं ॥ तीरथपितुपरसावैजवहीं ॥ नित
भा॰ प्रतिहरिजसकथासुनावै ॥ हरिसंतनकोदरसकरावै ॥ संतस
११८ मागमसदासुषपावै ॥ संतनकीमहिमानितगावै ॥ सोईचारपदा
र्थप्रदचरना ॥ यहसंसारसागरभयहरना ॥ देवदंउसुततवहि
उतारे ॥ मातपिताआज्ञामनधारे ॥ दानकराइपितापहिनितव्रत
मत्तहोमशुभाहिजविधवत ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ पितादंउतीसरेपुनि
गयापिंडभरतात ॥ तीनोकरिहैपुत्रजवरिनउतरैपितुमात ॥ २५
चौपई ॥ तीनदंउतमसुतनेश्रवनधर ॥ मातादंउएककहैसुतपर ॥ मा
ताकोंकिरारलैजावै ॥ वद्रीनाथदर्सपरसावै ॥ तीनवेरवद्रीवहुआ
वै ॥ सुतमातापहिदानकरावै ॥ नारीतेनरहोइप्रमाना ॥ समवच
नयहवेदविधाना ॥ यहसभदंउनतुकहिउतारे ॥ तेसभपरनहोहि
तह्यारे ॥ कलसदसहमकोदिषरावहु ॥ करसंग्रामजीतगुरलाव
हु ॥ २६ ॥ दोहरा ॥ सुतनप्रापतकोंमानमनकरतउपायअनेक ॥ से
वतवड़तमहंतरिषकिपोनजापविवेक ॥ २७ ॥ चौपई ॥ हमवांछत
श्रीररसगुपाला ॥ भयोनसुफवीतेवहुकाला ॥ सोचरवैठेहीवल
शावे ॥ सहनेस्पनअवअवरकायो ॥ तममीनढ़अतिकरसंग्रामा ॥
तीनविमैरसदसनस्वामा ॥ सोकायरकैरननैभागो ॥ ताकोहमसहि
लोगडुघलागे ॥ निहतननीकोंकरहिप्रकारा ॥ मौंनगयोसुतनग
भैमंकारा ॥ जिहमहंतकेवचनकहेसत ॥ प्रगटभयोयहप्रथमे

हमन ॥ १९ ॥ दो० ॥ निंदहिनिसहिमहंतनकोजिहअसीसभोताम ॥ र
णकोंघरयापनभयोमुदितलगाईमाल ॥ २९ ॥ चौ० ॥ बहुरोंबचन
कहनभईमाला ॥ सुनहुसुपच्छाहमरीबाला ॥ ऐसाकीजैरणसंग्रा
मा ॥ अगमहिसुजनसहोइअभिरामा ॥ नहींथकारमहांतिहहोई ॥ ज
ननीकोंधगकहैनकोई ॥ बाननकीपूजाकीजैरन ॥ पारघनीनङस
हनसामघन ॥ जीतहुसकोंपुरमहिलावहु ॥ सभलोगनकोंहरसक
रावहु ॥ हंडहमारेतुमरेसिरपर ॥ सभउतरेहमकोंहिथाउहर ॥ ३० ॥ छ
पच्छाउवाच ॥ दो० ॥ बहुरसहुपच्छावचकहैमालासोंप्रगराइ ॥ मन
वांछतफलपाइहोहरसहोइजङराइ ॥ ३१ ॥ चौ० ॥ कहेहुधच्छावच
सुनमाला ॥ सोतुमजननीहमतुमताला ॥ जोपितुमातकुसलहरसाव
ऊ ॥ अरुपुरलोगनहरिदरसावहु ॥ तुमकेरुनालेपूरनकाजा ॥ निह
वैंदरसहोइजङराजा ॥ हमरेमनमहिनिसदिनउपजत ॥ कैसेंदरस
होइपरमापन ॥ सुतरोउबातसुनीपहअवसर ॥ बुधिधर्मगुनिरर
सहोरहर ॥ धर्मजअसपसोइमहाथा ॥ सहजेंदर्सहोइजङनाथा ॥
२२ ॥ मैं मनउवाच ॥ दो० ॥ सुनननननभेजयमातपगपसोहधच्छासी
स ॥ दर्सहोइहरिरनविजैमातादईअसीस ॥ ३२ ॥ चौ० ॥ दधिअक्ष
नचयौंहितमाला ॥ श्रीफलदियोमुदितकरलाला ॥ तुमरीविजैहो
रणमांही ॥ जीतहुहरिसंसपकडुनाही ॥ मातानोषनचलोभ
गनजय ॥ मातादईअसीसहितनव ॥ कुंकुमहरदकुसादधिसा

रा॰ मु॰ पा॥ वरचितकियोभगतकोमाया॥ वडुरोंवहनकहीपहवाला॥
भा॰ हमकोंतहांहियोत्नमभ्राता॥ वेदवचनमगहीनमोहिपत॥ देवरम
११९ हांक्रुचीलमंदमत॥३४॥दो॰ ९ रा॥ सत्हरमात्हकहुववकहेसदात्ह्या
रीनिंद॥ भ्रष्टसकलपरवारतिहकोउनभक्तगुविंद॥३५॥चौ॰ ९ ई॥
त्वमनहफहइगेरणाश्रुनप्रति॥ तिनकेसदासहाइरमापत॥ मतर
णमोहिलजावडुभाता॥ कीजैविनैनुडकुसलाना॥ वडुरत्हधझाव
वनउबारे॥ सत्नवचनसभवहनत्वझारे॥ त्वनसहोदरीत्नमप्रसाद
कर॥ जीतलाउपुरमहिअर्जुनहर॥ सकलनगरकोंदर्सकरावों॥
त्वमसन्हरेकोंहरदरसावों॥ त्वमपतिश्रवरकहुंवसहितसव॥ पर
सावोंदरसनहरिकोंश्रव॥३६॥दो॰ ९ रा॥ त्वमसखराकेकुलसकलद
रसावोंभगवान॥ होइपवित्रसभनरहिहोइपरमकल्यान॥ ३७॥
चौ॰ ९ ई॥ पालोभगनवहनपगसीसा॥ मनक्रमवचनत्हकरीअ
सीसा॥ चल्योभगनअपनेग्रहआपो॥ प्रभावतीकोंवचनत्हनापो॥
शात्हसंतोषदीजियेमोकों॥ विदाहोनआयोहमतोसों॥ आरवनो
हरिसोंसंग्रामा॥ आत्रुधरेइकवेगसुहिवामा॥ पतिकोंशावदपसो
श्रवननजव॥ आईवाहरप्रभावतीतव॥ मंजनकरत्हगंधचर्चोतन
पहरेवसनकुसुंभमुदितमन॥३८॥दो॰ ९ रा॥ सकलवरनअलिक
नमधुपनैननखंजननदीन॥ खंजनकंजनहीनइतितिनिरघलनमद
गमीन॥३९॥चौ॰ ९ ई॥ विदुमअधरमहांकविकाने॥ विववधरकक्त

सुमइनिलाजै॥कुचकठोरउरउननिहारवर॥जनुगिरतेंसुरस
रीधसीधर॥भूषनअलंकारसाजेसब॥सोइसवर्षवहिक्रमअतिछ
व॥कंचनवर्नअंगगइजलअति॥सजसिंगारगहीसनमुषपत॥मधु
रहासकरवचनउचारे॥कहांचलेतुमप्रभूहमारे॥हमोमोहितुम
चलेटर्सहर॥मोरभगननितियउचनवामकर॥४०॥दो॰॥दानपुन्यह
रिदर्सपुनतीरथपरसनजार॥नहाअरधंगीचाहियेदानफलेअध
कार॥४१॥चौ॰॥जततहोमसकलकीवेरे॥वामांगीचहियेतिहनेरे
हमकोंतजतुमजाउकंतकित॥वेदवचनधनपालकरउपत॥ता
नस्वरूपीजलतुमरेतन॥तिसहितहोइलेउहरषनमन॥सकलज
गतमहिज्ञानप्रकासन॥ज्ञानरहतअंधिपारअभासन॥जिनकेजिय
नहिज्ञानविचारा॥तेनरपसुअज्ञानअधारा॥ज्ञानसरूपीपुत्रज्ञान
जिय॥सोतुमरेतनमहिभाष्योतिय॥४२॥दो॰॥सुतदेहैतवहीसुफ
लज्ञानसहितपरमान॥पतिव्रततियअरुपुरुषजिहएकयुवतिर
तिमान॥४३॥चौ॰॥असेनरतियतेंउपजनसुत॥ज्ञानविवेकविचार
महांइत॥तिहतियकेजियपरनरवांछा॥मनमथकेलकरनकीकां
छा॥पुनतिहतियकेपतिपरतियरत॥तिहतेंपुत्रतेतेऊउपजत॥म
हाधृष्टअतिदुष्टमंदमत॥नजतवेदमतचलतनिंदमत॥तांतेंहम
हैंपतव्रतनारी॥तुमपुनएकनारव्रतधारी॥हमतुमतेंउपजेसोउ
नाना॥ज्ञानवंतसराविषाला॥४४॥दो॰॥सोऊज्ञानजलतुमवि

मे॰ श्री॰ षेंअरपङ्कुकरुणाधार॥ज्ञानसूतउपजेभगवतलेवेकुलहिउधार
भा॰ ७४॥चौपई॥आईहौंमनसाधरजैसी॥श्रवनकरहुभगवततुमतै
१२॰ सी॥ज्ञानस्वरूपीजललहुपांही॥करुणाकरअरपोसुक्रमांही॥जै
सुनकहैसुनहुभूपाला॥यहबचकहेप्रभावतिबाला॥बहुरसुध
येवचनउचारा॥हमकोंकहेसुनहुहोदारा॥ऐसेंवचनकहेरहहु
वसर॥देषहुनहीहृदेविचारकर॥कैसेंरेहूतोहिरिझहाना॥मैंतो
वलोदर्सभगवाना॥करौंनहींवीरनअपराधा॥जिहतेंउपजेआध
उपाधा॥७६॥दोहरा॥जाजाजातेकिसीकोंबरजरहावैकोइ॥ब्राह्म
णाकोंशुभकर्मतेंकरतनिवारेजोइ॥७७॥चौपई॥पुनजोकोउकिस
हिपहआवै॥ताकोकहिकहिबरजरहाहै॥कथासुननकोंआइको
उनर॥ताकोबरजेदुशभाउधर॥साधुसंगतरसनभगवाना॥रव
तैंबरजनतेअधमजाना॥तिनकीहोततनहींकवहूंगत॥परकारजक
रनेकोउबरजनते॥आपनआरभईपहकालहि॥विधनपारउहिहर
मउपालहि॥लोगकरहिसभलोहिपिकारा॥कीजेअपनेहृदेविचा
रा॥७८॥जैमुनउवाच॥दोहरा॥गैमुनकहिसुनहोरपनभगवतकहे
ववसार॥वोलीवहुरप्रभावतीकरीवहुतमनुहार॥७९॥चौपई॥
नुवलीविनतीकरीअपारा॥हापनोरकीनीमनुहारा॥तुमहमकों
ननजाइनिरासा॥जौमैंहोरनसानप्रकासा॥उपजतहैंजबहींम
नताना॥जबप्रभमेंहोतविधनाना॥प्रथमेहरिजनतानरहाव

240

त॥ जाया ताके विषै और न भावत॥ सुद्ध शरीर होत पायेनाहीं॥ उपज
त ज्ञान हृदै तें नाहीं॥ यह जो पुत्र कहे हम जेसें॥ होत न ज्ञान विना पहु
के ऐसें॥ ५०॥ दो॰॥ ज्ञान रहत नर पशु जानम सभ नृप उपजत नाहि॥ प्र
गट न किसहीं पुरुष ज्ञान लाष र रस इक मांहि॥ ५१॥ चौ॰॥ प्रथमे प्र
गट होत है तन जब॥ ताके ज्ञान प्रकास होत न तब॥ ज्ञान स्वरूपी निश्चे
जाना॥ सभ मान लीजे मुहि वाला॥ तांते ज्ञान स्वरूप पुत्र बिन॥ देव पित
र जहि तो षहि इक छिन॥ सुन ते श्रवर होत है वडगुन॥ सोर ज्ञान मल
मेरे तन सुन॥ ज्ञान रूप वीरज तन मपांही॥ करुणाकर धार डम सुफ मांही
५२॥ दो॰॥ ज्ञान स्वरूपी जल सुफ हि आज ही जिये दान॥ मान लीजिये
वचन मम सुफ है तम परो कल्यान॥ ५३॥ चौ॰॥ सुद्ध भई अब वदे हम मारी
देह ज्ञान मल सुफ हि धारी॥ वेग देह सुफ कों रिमदाना॥ काहें नहीं
भगत न भगवाना॥ जै मुन कहे सुन हम भपाला॥ यह वच कहे प्रभाव तिवा
ला॥ भगत न को नु वनी यह श्रवसर॥ का इक मोहि हरस परस कह हरि
हम ही श्राता मान लीजिये॥ मन वच क्रम कर विराधी जिये॥ यह वच
कहे भगत प्रगराइ॥ दूर न भये श्रगार ह श्राइ॥ ५४॥ दो॰॥ रविश्री
भारथ पर्ब ले [illegible] सभ मेध आपबाना॥ कवित्त [illegible] पग
र हमान॥ ६९॥ जै [illegible] वच॥ दो॰॥ जै मुन कहि सुन होन पत जन
मे जै मत विधान॥ जै कर कुकहि है वचन तिय सुनो भगत रेकान॥ ६०॥ स
[illegible] व॥ चौ॰॥ कहै सुपच्या सुन हन्त वतिवर॥ प्रथमे उच न तरस

न॰ च॰ भा॰ १२१

करिहौंहर॥ तुमकाहेअनिकरनविलापा॥ हमकोंउपजावतसंता
पा॥ हीनकरहुजिनवचनहमारा॥ तुमअपनेमनकरहुविचारा
छत्रिधर्मपरहैवेरअचारा॥ रनसहनकरेधनुषटंकारा॥ रनसनमुष
नफ़ेमनहरषत॥ प्रानतिस्महिहोइवलअगनत॥ छत्रिधर्मअपवैं
रनकरई॥ पाछेअवरकाजअनुसरई॥ ५॥ दोहरा॥ रनमहिकायर
होहिंतेंजिनमहिहोतनग्यान॥ सनमुषरनमहिनूकहींग्यानवंत
वलवान॥ १॥ चौपई॥ जिनकेमनमहिहोतनग्याना॥ रनरेषतकांप
नतिहग्याना॥ नैनरकाधरनगउपहासा॥ जिनकोहोतनग्यानअका
सा॥ मोरग्यानतुममांगतसुझमों॥ तिपाप्ग्यानकहांकहांतुझमों
रनमहितुरहकरौंकिहकेवल॥ मोत्रुझकहेंहोंइहांग्याननमल॥ रनम
हिनफ़ुननेवलवाना॥ जिनकेहदेप्रकासनग्याना॥ मोत्रुझकहेउग्यान
मलकोंअव॥ कैसेंपारपसोनफ़ोनव॥ ४॥ दोहरा॥ अर्जुनसनमु
घनानहींजिहसहायरनइयार॥ ताकोंजीतोंगानवहिसनकेवानव
लाई॥ ५॥ चौपई॥ जोनरत्नुवनीसोंक्रीड़ाकर॥ सुरहकरनहारेतिह
अवसर॥ निगमकहतनथैसेंउपदेसा॥ सुरहनिमितअपुष्पापरहेसा
निसकोंब्रह्मचर्जमहिरहई॥ प्रानहिकाननुहनिरवहई॥ ब्रह्मचर्ज
शुभलगनरेषनर॥ सुरहकैरस्नजीतनआरहवर॥ तोतैंहमकोंविरा
रेहलिय॥ वचनकहोरकधारलेहलिप॥ जकोंगाअर्जुनकेसाथा
पांचदीनलेहोंनिनहाथा॥ ६॥ दोहरा॥ जोजीतोंसरपांचसोंषको

सरनचलाउ॥ जोसुफलनमहिहानवलजीतफालगुनला
उ॥७॥ जै म नउठ च॥ चौ० ई॥ जैसुनकहेहनऊपृथवीपत॥ कत
नकहैवहभगतनुवनिप्रत॥ पुनप्रभावतीवचनकहेतव॥ सुघ
नोरकेहनऊभगतअव॥ वेदकाइतग्रपराधमाहिकिय॥ जोत
रइतिविनभोगकरततिय॥ जोपतिविनरतिकरतकामरस॥
रनमहिजुरहहोततिइअपजस॥ रितवंतीजिहहोतअवतिय
ह॥ तिहतनरनमहिलरेअजसतिह॥ अपवागवनकरेपरदे
सा॥ अतिइषपारनिगमउपदेसा॥५॥ दो० रा॥ असेंभाषतवेद
ववसमकहेंभरतार॥ अतइकारसीहोइतो अपवासुभदिन
वार॥ ६॥ चौ० ई॥ सभैदेषरितराननदेई॥ होरनरकगतपावेते
ई॥ वहूरहुपञेवचनवषाना॥ हनप्रभावतीतियअपाना॥ कं
तिकोंअसेंववचप्रगटावऊ॥ हमरररसतेंवरजरहावऊ॥ तुम
रकाअसीतिपधारी॥ जोसुहिइसतनरपतवलकारी॥ सुक
कोसकलकहैंरहअवसर॥ कहैहधञाकपोविनेरर॥ तातें
सभजगकरैधिकारा॥ अपजसतेंवरमरनहमारा॥१०॥ दो० रा
जेईप्रहषसुफकहतपेवलीहधआसर॥ तेउकहैंगेररसो
मववानहिपवनर॥११॥ चौ० ई॥ जोराजाजेहैरनमाही॥ एकहि
गेसभलूरतहांही॥ जद्यपिरपवचकहेवनाई॥ नहीहधञेरह
हधपाई॥ अपगहनअरुसपनहमारी॥ यहहधनहीभगत

ने॰ भ्रु॰ जिपधारी ॥ नरपिसुरमुद्रिकरहिधिकारा ॥ रहोकामरसनि
भा॰ ससंगधारा ॥ पुनत्वमरीजगरहेनलाजा ॥ कहेनिलज्जअनसन
१२२ मुषराजा ॥ जोहमरहोंरहोंनिसवाला ॥ अनमुषहैहोकोपधवा
ला ॥ २ ॥ दो॰ ग ॥ तुमराकारजकछनअतिहोननहीतनकालव
दिनवीतेजवहोइनिसवेरवचनप्रतिपाल ॥ १३ ॥ चौ॰ ई ॥ तुम
वेलादीजेरिछदाना ॥ मांतेंहोरपरमकल्याना ॥ आपनहोतभ
लेफलनातें ॥ पुत्रसपुत्रतकीरतपातें ॥ मनहकठोरहोतहैंजे
वही ॥ परकारजकरिपतहैंनवही ॥ अबमोजानरेढरनमा
नऊ ॥ कछुनकहोतियसमोपछानऊ ॥ अबयपहसलेनहीरिव
राना ॥ रेढविरारसहिभगवाना ॥ हमराधर्मराषरहकाला
अपनामनठहरावोवाला ॥ १४ ॥ दो॰ ग ॥ अबमनमुषअर्जुनच
सोनिरहहरिचरनउपास ॥ रेढविरासभरसैहैपरोमनकीआ
स ॥ १५ ॥ चौ॰ प ॥ नैमुनकहैहनहभपतलव ॥ अैसेंवचउचरेव
भगतनव ॥ पुनबोलीप्रभावतीनारा ॥ रमक्रलिकहहतमुन
दभरनारा ॥ रानरिपैंरलिधर्मननासै ॥ उपजैनानमधर्मप्रका
सै ॥ निहरिनयाइहपिताग्रहहोई ॥ अपवाकाइपुत्ररिनकोई ॥ व
दसोंकथाहमलकेररमन ॥ पुनकाहूकीरपवरपरमन ॥ अपवा
कारनकोउतमपकाजा ॥ जलतेहोमअवनमेंनमससाना ॥ १६ ॥ दो॰ ग ॥
गहरिनवंतीनारनिहरेननाइरिनहान ॥ महानरकमोरभोग

ईवेदवचनपरमान ॥ ७ ॥ चौ ० ई ॥ तांतेंतुमननजोभरतारा ॥
अनमुषहोतनवेदउचारा ॥ जननअनेकउपाइकरेजव ॥ इ
मनहिछाडेंगीतुमकोंअव ॥ चलहुसमकरनिगमवचनज
न ॥ विजैहोइजीतहुतनवअर्जुन ॥ वहुरकहधर्मवचनउचारा ॥
मानहुतुमआज्ञाभरतारा ॥ तुमतोहमरेनासककरनहित ॥ य
हमनसाधारीअपनेचित ॥ सपनकरीयहपिताहमारे ॥ पुनीर
हेतिहअगनपजारे ॥ ९ ॥ अवतिधअैसोप्रगतमधारा ॥ जोप
तिसरेकरहिविधिकारा ॥ हमकोंलोगहसावनकेहित ॥ यहविका
रउपजोतुमरेचित ॥ यहप्रकारहमहंसोअकारथ ॥ जेरोंतहा
वैवीचनिरारथ ॥ छत्रिधर्मकरजोनरमरई ॥ सारथपरमारथ
अनुसरई ॥ पुनतियकोतोहनमसअपारा ॥ छत्रिधर्मनिहतरभ
तारा ॥ इकइस्त्रीपतितानहरावन ॥ छत्रधर्मपतिगुरुवनावन ॥
९९ ॥ दो ० हा ॥ इरइनपियसनमुषलरइ छत्रिधर्मउरधार ॥ ओरन
भागहूपीवहेतियजगकरहिप्रकार ॥ १० ॥ चौ ० ई ॥ जेतिकपरथ
होतपुरमांही ॥ सभछाडेरनभूमनहांही ॥ तिनकोंआपोआपनि
दारा ॥ पठएतानहरावनतारा ॥ इकवडअनुवतीतानअपारा ॥ दे
कतुमहरयनकरहुविचारा ॥ पुनपितुआज्ञातेंमुकुरारहु ॥ तांतें
छोरनरकमुकुरारहु ॥ जोइपिताप्रणामिथ्याकरई ॥ परेअधोगत
निगमउचरई ॥ परसरामआज्ञापितुमानी ॥ मारीजिनमातानि

गं॰ ग्रं॰ नपानी ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ रा॰ ॥ बड्डर जिवाई मांगवर सत्य वचन कियो
भा॰ मान ॥ तुम हम कौं पित्र वचन तें कर होत निपमिथ्यान ॥ २२ ॥ चौ॰ ॥
१२२ ई ॥ पुन प्रभु कछ्छी धर्म निवारन ॥ तपन भ्रगन मों मोहि प्रनारन ॥
तुमरास भजन गकरैध कारा ॥ मोरन तें वरजड्ड मुकनारा ॥ जो
देहो भ्रातारन प्रभु कौं ॥ मम भज्जग धन्य धन्य कहि तुक कौं ॥ जै प्रन
कहै हन इरानन भ्रव ॥ बड्ड प्रभावनी वचन कहै तव ॥ तुम कौं
कहहों वचन तान के ॥ लोप होत हैं कवन वान तें ॥ नरक जातन
हितान नरेसा ॥ हन लीजे प्रभु तकों उपदेसा ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ रा॰ ॥ जिम
हिमने प्रतिलक मुषकछ्छी धर्म कहार ॥ निगम वाकान हिमान हीं
मन को मन वहराउ ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ जो नरक महि सो नरपरई
मोष्कति भाषे वचनन करई ॥ वेद कहन विन रलरियपयरा ॥ र
नमहि नुहन हीं जे कारा ॥ पुन तुम करड्ड पिनाको त्रासा ॥ तुमपि
तके जिय तान प्रकासा ॥ जो नर पहने बान पहकाना ॥ रघोत्तु धञ्जा
रिनहि नराना ॥ तौं तुम कों नहि कैरेध कारा ॥ करि प्रपने मनता
न विचारा ॥ जो नर पकृति वचहदे विचारे ॥ तुम कों भ्रगन मों हले
हारे ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ रा॰ ॥ भ्रगनन नारस के तुमहि भ्राता तांषी भगवान ॥
तुम नो प्रनपाले सकल वेद वचन परमान ॥ २६ ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ मोरुप
मैं नग वेद वलावन ॥ तुम प्रतिपाल कियो मन भावन ॥ जिमहि
वेद को पुत्र प्रपारा ॥ कारन सकैत कुम भ्रगन प्रनारा ॥ प्रकिति कै प्रम

सह्यो रहस्यारे ॥ तांतें तोहि अगनन हिजारे ॥ इन माने अकृति
के उपदेसा ॥ करे नलमन तन अगन प्रवेसा ॥ सम वचन कृत
के करतांतें ॥ मान लेहु लम हम री बाते ॥ तन छिन की जे बेद
उचारा ॥ जगमहि तुम सहो रमेकारा ॥ २४ ॥ जै ॥ न उ च ॥ दो
हा ॥ जैसुन कहि तुन होन परन वचन प्रभाव तिनार ॥ कहेतु
पक्षे भगत प्रन वेद वचन सुभसार ॥ २५ ॥ तु प जाउ च ॥ चौप
ई ॥ वहुर सुपक्षे वचन उचारा ॥ तुन होय वचन प्रभाव तिनारा ॥
प्रथमे लम पहु वचन वषाना ॥ जहां करे पतिवि पवलदाना ॥
जनहोम दरसन जगनाथा ॥ पतिकों उचन नहु वतिसंगाथा ॥
सम करों वहु वचन तुसारे ॥ अवर यच ठ चल साप हमारे ॥
लमपतिव्रता सदा सिमरन मन ॥ लम न हित जों चल डु सुरु
संगरत ॥ सुकहो दुहरस दुहरिरसन ॥ होइ कृता रण हरिप
गपरसन ॥ २६ ॥ दो ॥ हा ॥ नहहरि रसेन सुभकरम नत हो मगो
दान ॥ नह अपरधं गी चाहि येवेद वचन परमान ॥ २७ ॥ चौपई ॥ बा
म अंग चाहीन वदारा ॥ पुन्य वद त अति होत अपारा ॥ दान कर
न अति कृति अधारसों ॥ फल पापन है अरधनारकों ॥ जो है
है अति पतिव्रत नारी ॥ नव है अपध पुत्र अपकारी ॥ अरु जो पु
रुष करे रति पर कोई ॥ आधा फल पापन तिह होई ॥ अरु जो नुवती
है विभचारन ॥ करे दान हि नरेहु उधारन ॥ है है आधा पुन्न प

जं॰ श्री॰
भा॰
१२५

लिप्रापत॥ पापकरतलिपलेपनहींपत॥ २१॥ दो॰हा॥ पुम
गुवलिकाअरधपत पापलिपतनहिहोइ॥ वेदवचनअैसेंक
हतलुरूपतिभाषेसोइ॥ २२॥ चौ॰प॰ई॥ जोतियपतिआज्ञानहि
मानै॥ ताकीपहगनवेदवषानै॥ कैरैजुकछुछुकृतनवनवा
को॥ तियकोफलप्रापतननहिताको॥ अरुजोकरेकंनकोउपा
पा॥ ताकोफललियहोतसंतापा॥ तमतोमहांपतिव्रतदारा॥
लानवानगुनरूपअपारा॥ अरधंगीचहियेअवसाणा॥ कोर
ततदरसननइताया॥ कृसदरसकरहोइकृतारथ॥ सि
रुहोहिसारथपरमारथ॥ २३॥ दो॰र॰॥ तांतेंरथचदवेगवि
लेबिलमनकीनैनार॥ भरलेइकरदहरितिनिमितकसरदरसने
कार॥ २४॥ सो॰र॰का॥ भगतनकेहेवचसारहुतनतनमेंजपनरप
नवर॥ वहुरप्रभावतिनारवचनकेहेहरिभगतसों॥ २५॥ चौ
ई॥ पतिसोंवहुरप्रभावतिनारा॥ हाथजोरसुषवचनउचारा
मीरपरदनकरनकोउनावै॥ धनपुत्रकरफिरघरआवै॥ अ
रुजेनाइकसकेररसन॥ निःकामीपरपंकजपरसन॥ रर
सपरसताकिनगनिपैहै॥ सोफिरवकुरिभवननहिंयेहैं॥ त
नपरहोतप्रमवग्रपाला॥ पठवनलमुकवेगवनंरलाला॥ भ
वसागरनैंकाढलेनरर॥ देनपरमगातफिरपववतनवर॥
२६॥ दो॰र॰ता॥ मनममरनेनैंरहनहैं हरहोतसंतापा॥ फेरआ

वंहीभवनमहिहरिदरसनपरताप ॥ ३७ ॥ सो ॥ जो ॥ व ॥ चौपई
कहेहुधन्नाहुनकुजुवतिसुक ॥ जोपहवानहिपेंसमानल्यक ॥
चलहहरिर्हैसवेगकीजैयव ॥ जन्ममरनदुषकरपरहितव ॥ प
ठवतहहरिवैकुंठहृपाकर ॥ ग्रावागोमनिवारलेनहर ॥ तांतेंगठ
चलदरसनकीजै ॥ मनलेकुसलचरनमहिदीजै ॥ चलतिपटदर्स
करहिनतकाला ॥ ततछिनगनदेहैनंदलाला ॥ ग्रानंदकरहि
स्कचनहांही ॥ धुननपठहिभवसागरमांही ॥ ३८ ॥ प्र भा व ती ज द्वा
च ॥ दो ॥ हा ॥ वेदकहेगृहहुनउचनपाछेपिरभराय ॥ श्रादपित
रप्रतिपालईनिगमवचनठहराइ ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ हीनधर्मजिह
गृहनहिताता ॥ हुतविनधगकहिपतपित्रमाता ॥ मातपिता
गतपाइनताके ॥ पाछेहोतनसंततजाके ॥ धनमंदरसर्वसत
जजावहि ॥ हुतविनग्रवरलोगतिइषावहि ॥ तांतेंसभजगके
रहिधकारा ॥ संततविनाजनमगापद्वारा ॥ गतग्रवगतसुधको
उनगानै ॥ जसग्रपजसजगकहेसुमानै ॥ देहकरमकरजीवभ
योजव ॥ सुतविनभयोनिरासजनमसव ॥ ४० ॥ दो ॥ हा ॥ कहेप्रभा
वतिसुनडपतहमत्रमगतिकोपाउ ॥ पाछेजगमहिसुतविन
कोउनलेवैनाउ ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ तियकोनामलेतनहिकोई ॥ पति
कोनामलेतसभलोई ॥ तुमतेप्रगटहोहिजोताता ॥ मातरवि
मतसुतलविज्ञाता ॥ विष्णुभगतत्रैलोकनिधाना ॥ महापवित्र

उ॰अ॰ सुधीगुननाना॥त्रिगुणअतीतनजीतइंद्रीसब॥जनमरहनजो
भा॰ गिंद्रमहाछब॥महाअचलसमाधअतिजोगी॥वनमहिआनर
१२५ हेनिहसोगी॥प्रगट्योजैसेंसुकृतगृह्यासा॥जैसेंजनमसुतनहोइप्र
कासा॥५२॥दो॰॥जोसुषसुकश्रापतभयेनहिंदेष्येदृगआस
जैसोसुतनलमरेभवनउपजेतानप्रकास॥५३॥चौ॰॥कहैप्रभा
वतिसुनेभगनहरि॥सुतविनधगआवनरहमगपर॥पुत्रमा
नपितकोकुलनारे॥अवरवहुरसुकृतअनुसारे॥पुत्रसपुत्रहो
नषवजैसें॥राजनलसुरसिषरपरजैसें॥सुतनसपूतकरैहरिसि
मरन॥निरषिनमातकरैजगधनधन॥पुत्रहेतवहुदुषपितुमा
ना॥आरुकाहूकरिहैकुसलाला॥रनजुतलोककरैतसुतअनिसु
ष॥सुतपनापइरिमानसकलदुष॥५४॥दो॰॥कोउअैसासुक
नकरोकुलरकीसकोंनार॥अवरलोगनिसारईकरिहरसिमर
नसार॥५५॥चौ॰॥सुतजैसाश्रापनदेहैनव॥उअलतानहरे
उपजनमनव॥सोइनाननिरमलउरमहिलअ॥सोइकृपाकरदे
द्रानमुक॥तमनोचलेकरनसंग्यामा॥होहिंजीवनसरनको
कामा॥तमनऊदपारवसनसुषरन॥नाहिंनलषीपरनग
नभगवन॥जीवनमरनतेरोइसंग्यामा॥कैरेनककुरकाजगना
पा॥पाछेगहृहचढिपनहैलाला॥सारथपरमारथकुसलाला
५८॥दो॰॥जोजैपुनपुनमांगिहोंमोहिंरीनिरितरान॥सुनउ

पजेतवह्मपातेंगतपठवतभगवान ॥ ४७ ॥ चौ० ॥ ई ॥ नैमुनक
हैमुनदूष्यवीपत ॥ यहवचपतिसोंकहैप्रभावत ॥ वेदवचन
सुनकैतिहअवसर ॥ काकुवनचलेउपाउभगतहर ॥ वडुरसुध
अवचनवषाना ॥ सुनप्रभावतीप्रतिसुताना ॥ अवमुझकवन
वनीपहवाना ॥ द्वैहैलोपसपतमुहिताता ॥ कुसलदरसकीचाहह
मारे ॥ अवउपमोयहतानलसारे ॥ पुरमद्विपुरुषरह्योकोउनांही
ठाटेसुरसकलरनमांही ॥ ४८ ॥ दो० ॥ १ ॥ जोहमजाननतलमहदेउ\
पजनयहउपदेस ॥ तवहीजातसंग्राममकोंपुरीनकरनप्रवेस
४९ ॥ चौ० ॥ ८ ॥ ऐसीउपजीहृदैसुसारे ॥ कौनकारनहोतुम्हमारे
पुनप्रभावतीवचनवषाना ॥ सुनदेश्रवनवचनभगवाना ॥ तौ
नधर्मयहजगपसमाना ॥ रनसंग्रामकम्मकाराना ॥ सभतेंवरनी
सरोदानरति ॥ मनवचक्रमनिश्चैजानहुपति ॥ छत्रीधर्मसंग्राम
होतनव ॥ रतितेंउपजतसुतप्रथमेंजव ॥ कंन्याहोतप्रगटतव
जगपर ॥ प्रथमदानरतिदेतसुवतिनर ॥ ५० ॥ दो० ॥ १ ॥ तीनधर्म\
यहजगपसमलोलेंउममकीन ॥ प्रगटभयेरतिदानमैंयाहीतेंपर
वीन ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ ई ॥ तवहीसुवनीकोंरितआवै ॥ जोनइंदुवरषावरसा
वै ॥ परेनरकमहिहृदयवालव ॥ कहोंसमपहवेदवचनसव
वरषाकरतोघलजवधरनी ॥ होतऔषधीजगसुषकरनी ॥ अरु
पुनप्रगरवडुतगुनहोई ॥ फलदलमूलअनंतदलोई ॥ प्रगटत

रसअनेकविधनाना॥ जबहींलेतसुधीरिसदाना॥ राजाप्रजा
चिंतजिमघोई॥ पसुषगसुषपावैजियसोई॥५२॥ दो॰॥ रा॥ श्रे
द्धरितीबीजसुनअतिवरदैहैसोइ॥ हीयोवहजलदानरति
उत्तमउतपतहोइ॥५३॥ चौ॰ई॥ जैसाबीरजहोइनिवासा॥ जैसी
संततकरतप्रकासा॥ सभतैंउत्तमजानदानरति॥ तिहूनसोष
नियमिहइवदेसपति॥ अरुजुहोइपतिरोगग्रसोतन॥ रतिहूअ
ननलगततताकेमन॥ सुतउतपतकेहितदशरथभूप॥ किए
अपरमितपुंननराधिप॥ तिहतैंउपजेसुतरघुनंदन॥ सुरन
व्रतकलेसनिकंदन॥ देहभईअतिसिहदृढमारी॥ रानदेहपति
रतिहिंहितधारी॥५४॥ दो॰॥ रा॥ हमतसमतैंहितप्रगटईसमकुल
कोनैकार॥ औरनसुषउपजावईतानविवेकविचार॥५५॥ चौ
ई॥ करहुनिषेधनवेदवचनकों॥ कीजेरतिहीजेसुषमनकों॥
कोरउपारमननकरिहोलव॥ आजनकाजोंगीलमकोंलव॥
वेदवचनकोंकरप्रमानपन॥ हेहृकृपाकरमोहिदानरत॥
पढवचककहिनियउद्यमकीनो॥ गहिहरषतैंउतारपनचीनो॥
सोकहूकैसिप्रभाववतिनारा॥ अतिसिंहररगुनरूपअपारा॥ पुनअ
भावतीकरिअसनाना॥ अंगसुगंधलावविधनाना॥५६॥ दो
रा॥ पतिसनसुषगादीभईषोरसकिएसिंगार॥ ससिवदनी
मृगलोचनीअंजननैनसुधार॥५७॥ चौ॰ई॥ नासाचंपककली

सीसोहै ॥ तापर वेसर थतिमन मोहै ॥ अरुन अधर विद्रुम ब
धूक छवि ॥ निरखत उपमा कहत सकल कवि ॥ ग्रीवा कंठमा
ल छवि छाजत ॥ कुच पर मुकता हार विराजत ॥ कुटि छुद्रिका
कटि नूपुर पग ॥ भुज भुंग रंग गजरा कर जिगमग ॥ भूषन भरी
कंचुकी ग्रीवा ॥ कुंतल मधुप रूप की सींवा ॥ पहिरे रुच कर कं
हं भवसन तन ॥ गजगत गावनी अलि भावत मन ॥ ४८ ॥ दो० ॥ रा
अंगि पाके बंध कोर के सुख भरषा एपान ॥ दिव्य सरूप बना
र कै गाटीष तिसवधान ॥ ४९ ॥ चौ० ॥ षोरस वर्ष बहि क्रम बा
ला ॥ मदन बान अंग अंग बिसाला ॥ पकरयो धाइ कंत कों हरषत
भुज भरि अंग लगाइ लियो पत ॥ भीतर चली गही कर सों कर ॥
लाई जहां वचित्र गेर र ॥ वेर वचन प्रन करवे हित लाई प
तिकों भवन सुरित चित ॥ नवल भवरी सुहू रतन नाना ॥ दियो भ
गत तियकों तिन राना ॥ रजनी एक वही तन हांई ॥ षेलत हस त
सुरित मन मांही ॥ ५० ॥ दो० ॥ रा ॥ उग प्रभाव तीमजन किय सिम
र व कति नंद लाल ॥ रान दियो पुन हि जन को विप व तन सुव
पाल ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ विहरे ति नि मित हंसधुज भुव पत ॥ पुरबाहर
गहो भो हरषत ॥ नगर लियो सेना को राजन ॥ कयो सुपञ्चा
वहि आयो रन ॥ उत्तर दियो हत न रूप पांही ॥ वसो सुधञ्चानिस
गृह मांही ॥ सुन हंसधुज अति कोप्यो मन ॥ आसा करी हम कों

253

न.अ. ततछिन ॥ ग्राता कीनी भंग हमारी ॥ ताको कीजै महा दुखारी
भा. प्रथमे पाग उतारडू ताकी ॥ कस बांधो रोनो भुज वाकी ॥ ९२॥
१२२ दो ॥ चरन जेवरी शर कै सावडू षैंच कपूत ॥ शरोंगा लिहू
ग्रगन महि कायर की करतूत ॥ ९३ ॥ चौ ॥ भयो विमुष स
वहति रसन तें ॥ रसो भवन कत उरयारन तें ॥ कहां विचा
सो उन पहमन मैं ॥ तमो छत्र ग्रापो नहि रन मैं ॥ ऐसें ग्राता
करी भुवाला ॥ हनन हूत गवने ततकाला ॥ हनत डूतार भग
तकों देषो ॥ रथ ग्ररूढ स्रू रन इति पेषो ॥ कंचन रथ मनिग
न चमकारा ॥ मुकता झालर बनी ग्रपारा ॥ पवन वेग रथम
झांहद टवल ॥ नहमनमातहहमारवेगवल ॥ पवन वेग रथम
त संग वाला ॥ ग्रति ग्रनंद मन भगत गुपाला ॥ हरषत पान षा
तिय कों विरासह करतन वरन कों मन सा धार ॥ ९४ ॥ दो ॥
पत भपहूत तन रूप तके हार ॥ ९५ ॥ चौ ॥ ताही छिन ग्रा
यें तब ॥ रहतो राजपुत्र संदर रछव ॥ महाजो धसरा वल धारी
कैसें बांध हि भगत मुरारी ॥ इहां नूप तनें डूर हि ग्रपारा ॥ कहहू
कहां नियकर हि विचारा ॥ इहां तेज श्री नूपको ताला ॥ दोनोंव
नीक वन पहवाना ॥ हनद किपो व णाम भगत ग्रति ॥ मुषनैंक
छकदो जियहर पति ॥ हनहतांत भगत समको हि प ॥ लोकछु
वातडू मीर हनन निय ॥ ९६ ॥ दो ॥ सभहलांत ता मोभगतह

तहहेकीवात ॥ आज्ञासुकदुषदेनकीपठेहोंहिगेतात ॥ ८७ ॥ चौ
॥ ई ॥ कहेसुपपञ्चावचनहनवति ॥ करहोतुमरेमनरुरपनक
नि ॥ मोआज्ञाकीनीसुफतात ॥ सुफसोकहइइनपारथवाना ॥ वो
लेहनुमनइविधजैसें ॥ आज्ञाकरीहंसधुजथैसें ॥ त्यावइभगत
पकरगहिकेसा ॥ वांधइहनकोंकहोनरेसा ॥ मगमहिवढतक
छरिषरावढ ॥ पागउतारवेगगहित्यावढ ॥ थैसेंआग्याकरीसुवा
ला ॥ हनइसुपपञ्चाभगतगुपाला ॥ ८८ ॥ सो ॥ रा ॥ हनहरिभगत
हम्हरितनहियमानीआज्ञापावाप ॥ केसहियेकरहतकेउतसोरथ
मैंआप ॥ ८९ ॥ चौ ॥ ई ॥ हनुनकेजियत्रासभयोजव ॥ भक्तकेसक
रमहिपकरेनव ॥ क्वाउहियेकरतेंकुंतलउन ॥ वैठापोरथकेऊप
रपुन ॥ लेगएविद्यमानराजाना ॥ प्रथमभगतनरपपगतलपराना ॥
हनकोंनिरषहंसधुजभूपत ॥ क्रोधनहैवचकहेमानमत ॥ पापा
नमाहुष्टमततेरी ॥ आज्ञाभंगकरीकतमेरी ॥ कुसदर्सतेंविसुषभ
योनव ॥ त्रगनकडाहनराउतोहिग्रव ॥ ९० ॥ सो ॥ रा ॥ वहुरसुधपञ्च
वचकहेपितआज्ञापरमान ॥ हनइनपतनवचटवसोरताकों
सत्यप्रमान ॥ ९१ ॥ चौ ॥ ई ॥ निहग्रवसरत्नमरासीममतिय ॥ अंचर
गहिकरयहीजननकिय ॥ कहैहेइसुफकोंरितराना ॥ वेरवचन
कीजहिपरवाना ॥ वेदवाकानहिकियोलोपपुन ॥ तांतेंपाकेरमोन्द
पतसुन ॥ वोसोवइरहंसधुजभूपत ॥ तुमरीलोहनभईइष्टमत

रा·प्र·
भा·
१२८

तुमतलोइरघबीजीतनहीडगनि॥ विमुखभयोदर्शनतेंश्रीपति॥
रनमहिंग्रायोसुनकेपारथ॥ वेगभयोतुरतअवुरथारथ॥ ११
दो ६ रा॥ सपनहमारीतुमसुनीमनमहिंकियोनत्रास॥ हरि
सुनग्रायोपुरसकलतुमगृहकियोनिवास॥ १७॥ चौ ५६॥
ग्रर्जुननेसेसरमहांवर॥ चलग्रारहमपहिंरहग्रवसर॥ नु
वलीदीयोग्रनसग्रपारा॥ हरेरहायोग्रवरविचारा॥ तुमल
जितकियोगोत्रहमारा॥ भवभईमततोहिंगवारा॥ जानेमा
पारथनियग्रसें॥ मुकतेंइसोसुधग्राकेसें॥ कडीधर्महिंघाउग्र
घमजव॥ नुवतीकोंरतिसानदेतलव॥ तुम्हजितकियोग्रापकों
लाला॥ वदुरलजायोकुलपितमाता॥ २०॥ दो ६ रा॥ ग्रातहह
रीलोपकरसपतनमानीलाल॥ सभमगतोहिंधिकारहैग्रन
सरिपोपितमान॥ १५॥ चौ ५६॥ पारथभाषेगाग्रपनेमन॥ ग्रप
तरंसधुनकोग्रसमसधन॥ लोपकरीग्रालासुतताकी॥ रनमहिं
नीतहोतनहिंलाकी॥ रखलभष्टहसमतानी॥ रर्शनकियो
नमारंगपानी॥ तुमकहिंकहतजगभगतमुरारी॥ निंदकरम
पहकियोविकारी॥ तियरसमंपतुरहविवरानी॥ सवहमरीग्रा
सानहिंमानी॥ भलीवस्तग्रर्पणहरिजोगा॥ तुमवलहसोकाम
रसभोगा॥ २८॥ दो ६ रा॥ वलग्रपनारेंग्रवलिकोंपुनग्रायोरण
मांहि॥ वलविनग्रुरदनहोतनहैपनतविवासोनाहि॥ २२॥ चौ ५६॥

नमउच्चनअवरनसंग्रामा ॥ कीजैअगनवीचविश्रामा ॥ भयोहं
सधुजक्रोधमानमन ॥ श्रोहनलिपोबुलारननहछिन ॥ तिनअ
रुसेषनामनलाकेपह ॥ होवोंढाढेआइनपनपह ॥ तिनकोंग्रानान
पकीनीनव ॥ डारहुभगतनकउडहवीचअव ॥ श्रोहनकेहेमनङन
पवाला ॥ महाधहहगनमरोनाना ॥ वडरोनपश्चनिहगनमरी
मन ॥ वडरोइसहिनहनकीनोकन ॥ ७८ ॥ दोहरा ॥ भंगवचनन
मराकियोहरिहरसनननहिकीन ॥ पुननमसनसुषवचकेहपा
पीवुहमलीन ॥ ७९ ॥ चौपई ॥ श्रोहनदोउउठेननकाला ॥ वांधलियो
हठसहनअवपाला ॥ गहिल्यायेनपसहनकोंनहां ॥ नपनकउडहने
लकोनहां ॥ अनिअवरायपनेलनइअवसर ॥ ठाढोकियोभगतनकों
तिहपर ॥ चीवाप्रजंननेलतिइदीनो ॥ तिरषभगानहरिसिमरन
कीनो ॥ भगतसहधञ्राहदेविचारै ॥ पइइक्कापीजीयहमारे ॥ स
रवलाउगासनसुषपारष ॥ दइसोंगाअर्जुनकोमारष ॥ ८० ॥ दोह
रा ॥ सनसुषवानचलाउगापनुषहदढगहिहाष ॥ तोषलेउगा
गुरुकरविनैसहितनउनाष ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ माताकरीपिताअवथै
सें ॥ इक्काहरिदेहेअवनैसें ॥ ठाढाभयोभगतकठाइपर ॥ सभउ
रलोगनुरेतिहअवसर ॥ हाहाकारकरहिसभलोगा ॥ ठाढोभग
नहियेंनिहसोगा ॥ हमतिनामसंचीनुवपाला ॥ ठाढोआपनिक
दतिहकाला ॥ सचिवभगतकीओरनिहालो ॥ दयापरीमुषवच

257

जै॰ स॰ नउचासो ॥ मंत्रीवचनकहेप्रगटाई ॥ सुरनभयोउनीसअथाई
भा॰ ८२ ॥ दोहरा ॥ इतिश्रीभरथदर्वेलोअश्रमेधयाध्यान ॥ कविटह
१२९ कनभरनमयोध्यायउरीसोमन ॥ १९ ॥ अथमनीयउगवचौपाई
जैमुनकहेसुनजनमेजपाला ॥ कहिहौंसुरदभुतकथारसाला ॥ १
सचिवसुमतिपुनवचनउचारे ॥ सुनउसुधन्वाहिलसुहमारे ॥
हमतोतुमरक्षाकेकाजा ॥ विनतीकरीवहुतनपहिराजा ॥ न
हिमाननतस्पवचनहमारे ॥ यहहोनीजोहहतहमारे ॥ कहैनृप
नसौंसुननहिआरा ॥ सभनगतुमकोंकरनप्रकारा ॥ यहवच
करेप्रथमतुमकोंसुक ॥ विलमकरोतवकछुरहितजक ॥ १ ॥ दो
हरा ॥ हमरीसीषनमनपरीकियोनहृदयविचार ॥ तांतेप्र
गननरायनफवदटनलगाईवार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वहुरसुधन्वेवच
नउचारा ॥ सुनदसुमितनमपबुद्धिअपारा ॥ जोआज्ञाकीनीमु
रुनाला ॥ हममानीमाचेरुमसलाला ॥ ऐसीरक्षापीहमरेमन
मुदकरोंगापारपमोरन ॥ वानलेउगासनमुषमुषपर ॥ रहीं
गाहरमनगिरवरधर ॥ अवपहवातववनीरहमअवसर ॥ ताहो
होकरीहपरतिहपर ॥ जैसेंसाधनिरषपापीजन ॥ अविसेउ
घीहोतअपनेमन ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ जैसेंभगतनिहारकेतेलमहा
श्रकुलाइ ॥ सीतलतामाकोंपावईसागैतपतलहभाउ ॥ ४ ॥ चौपाई ॥
लोगनकोंचिंतावहुभई ॥ तिनकोंभगतपीरवहुदई ॥ जोहम

रे पित आज्ञा टीनी ॥ मुरुअमान नमा येधर लीनी ॥ पिता वचन माने
रघुनाथा ॥ सेवो वन तिय बांधव साथा ॥ गुरु कों आग्या करी नरेसा
अवहि अगन महि करें प्रवेसा ॥ यह हषन सुहि अगन प्रजारति ॥
मुवली कों निसदिये रासन रति ॥ नरहरि रसन कों न हिआये ॥ तां
तें रूप घह दं रबनायो ॥ ५ ॥ दो ० ॥ तातें धगह मनार धगकियो न
सम यविचार ॥ हनकै आगम हरि विजै तिय लीनी उरधार ॥ ६ ॥ चौ
० ॥ तिह अपराध हत मुहि जारहि ॥ मन मुष हरतें भयो विचार
हि ॥ हैं कस विमुष तें जोई ॥ तिह नर की अैसी गत होई ॥ तिहम
नही नो कस चरन सों ॥ तिह गत पाई हरषत मन सों ॥ हरितजमि
तन न मन दियो टारहि ॥ पावै सुरु गत अगन प्रजारहि ॥ अंतसमे
की वेर जो ऊन र ॥ सिमरन करत सुरति मन गिरधर ॥ ताको हस
हेत अपनी गत ॥ मनमम रनतें रहत विमल मत ॥ ७ ॥ दो ० ॥ अं
तसमे अब सुरु भई सिमरन हों गोपाल ॥ अपनी गत देवहि मुरु
करुना सिंधु नंदलाल ॥ ८ ॥ चौ ० ॥ गत अबगत को कोन हि जाने ॥
जो जग टेषे सो र वषाने ॥ लोग कहैं गेहम विसासो ॥ तातें अगन
सरीर प्रजासो ॥ सो रक्षा पी मुरु मन मांही ॥ नुरद करों गामाषवि
जैहो ॥ सरवलाइ तो बों गा गिरधर ॥ होरि प्रसन्न वचन मन क्रम
कर ॥ नहि सेनाउ न हनो हमारी ॥ यह चिंता मैं प्रथम विचारी ॥ अै
मुनकै हैतन रूभूपतनवर ॥ मन कोउ जानै भगतन हरे उन ॥ ९ ॥ दो ०

ज॰ श्र॰
भा॰
१३॰

रा॥ मनऐसोकोऊज्ञाननहीं भगतकरतनिपयत्रास॥ नहीसुपच्छे\
हृदइस्वरनकमलकीआस॥ १०॥ चौ॰ ई॥ ऐसीइच्छाऊजीभगत\
मन॥ प्रजोंगगावाननसोंभगवन॥ सनमुषलेवोंगाआवनसर॥ है
प्रसन्नदेवहिंगेगतहर॥ पारथकरगांडीवलियेंकर॥ त्रिपताव\
हिगानिसहिंजुइकर॥ ऐसीषीलालसाहमारी॥ तोतेंलाजहोत\
गिरधारी॥ हमरेहृदेइतीअभिलाषा॥ जेइकरोंगापारथसाथा॥
महांमरोंगाहोइसफलगत॥ इसीहोइगाप्रभुफत्रिभुवनपत॥ १०॥ हे
९ रा॥ कामअर्थहमअहबसोतोतेंकोप्योराइ॥ समकियेप्रभुफवे\
दवबलियपलोषीसबपारइ॥ १२॥ चौ॰ ई॥ जैप्रभुनकैहैहनहइभूपतब
र॥ सुमनसुनेवचकहैभगतहर॥ वहरसमिनप्रभुषवचनवषाना
सोअबकहोहनोरेकाना॥ सविवभगतप्रतिवचभाषैतब॥ ज्युर\
गाढेपुरलोगमहांसब॥ सविरकहैहनभगतमुरारे॥ प्रभुगांवहै
देहलत्यारे॥ मोतेंअगनकरैनहिभोगा॥ तुमहरिभगतमसरा\
निहसोगा॥ मजनकियोभगततिहअवसर॥ हारसतिलकव
मापतनपर॥ १३॥ दो॰ रा॥ तुलसीपतवरीवकरविंकोचक्रतन\
लार॥ ढाढाभयोकराहपरभगतमुपझ्याआइ॥ १४॥ चौ॰ ई॥ भयो\
संखतिलकेविरमाना॥ उनहृतनप्रतिवचनवषाना॥ उरइम्रा
नकराहभगतको॥ उरहनविलमकरतहोकतको॥ उसोप\
करकराहवीचतब॥ परमततेलभयोसीतलसब॥ तुलसीप

ब्रजरननहिकायो ॥ भगवंतप्रतापसबीकुलहिकायो ॥ गाढेदेष\
नहैंसभलोगा ॥ देषेभगतकेहर्षनसोगा ॥ करतभयेसभजे\
जैकारा ॥ उपजोहियेंअनंदअपारा ॥ ५ ॥ दो० ॥ हननकहि\
राजानप्रतउवसोलमरानान ॥ भगनजराइनसकोतिहय\
हअबचरजकीबात ॥ ९ ॥ चौ० ॥ पुनप्रोहितकोंनृपनककोनव
भात्तालमरीसोरकरोंअब ॥ वडूरसंषतिलवचनउचारे ॥ स
नहुअबननजनमानहमारे ॥ भगनजरवेकेतिहकाला ॥ हमन
इनेतिहठौरभुवाला ॥ सेवककहनेतहांतिहअवसर ॥ नहींजरा
योतिहविधवलकर ॥ दयापरीउनकेजियमांही ॥ करीबडन\
ननजरयोनांही ॥ जोआपनसमहिप्रणकीजे ॥ तोपुनहमकों\
आगपाहीजे ॥ ६ ॥ दो० ॥ जोतमप्रणपरनकरदहमआत्तादेराज ॥
सपतल्यारीहदकरहिहोइसभरनकाज ॥ १० ॥ चौ० ॥ प्रति\
पालोप्रणवलिभूपाला ॥ ननछिनभीपनभयोहियाला ॥ स
मकियोवचनसहहरिचंदनृप ॥ वेच्योपुत्रकलत्रनराधिप ॥ प्रति
पालेववभीषमरनपर ॥ सहगहापश्रीपतिकेकर ॥ परसराम
मारीनिजमाना ॥ परनवचनकरनभयोनाना ॥ परनवचनन
हींषिरजाके ॥ सफलननासनहैसभलाके ॥ प्रगतिहपुरुषजन
मजगलीनो ॥ तिहप्रणकोपरमानहिकीनो ॥ ७ ॥ दो० ॥ वचन
हीनतिहपुरुषकेकनडननतिहकुसलात ॥ प्रथमप्रकारहि\

रा॰ अ॰ पितामुनिगल्योगर्भनहिमाल ॥२०॥ चौ॰ ६ ॥ श्रीहनकहैहन
भा॰ ऊभूपाला ॥ कीजैवचननकीप्रतपाला ॥ लोपनकरिहोवचन
१३१ नमाना ॥ किपोचहनहोसमप्रमाना ॥ बहुरहंसपुजनपकोहि
नकों ॥ किपोलोषकहिवचननमलिसों ॥ श्रीहनप्रभिन्नपवच
नकहेतव ॥ कारजकीजैजननसोंश्रव ॥ पहकारनहैत्रमरे
सिरपर ॥ समवचनमुक्ककरइक्रपाकर ॥ श्रातालेश्रीहनवउ
पाप ॥ जहांकशहनहांचलश्राप ॥२१॥ दो॰ हि रा॰ ॥ श्रवरनेलनौनन
नहांलीनोवङ्गनमंगारु ॥ रंधनश्रामोसकदभरमननमहिश्रध
करिमारु ॥२२॥ चौ॰ ६ ॥ श्रीहनलिपोनैलश्रपनेकर ॥ मेल्योने
लकशहमननकर ॥ भगनहपश्राहरिगुनगावन ॥ निरभ
पहैश्रानंदवहावन ॥ श्रगननजरनकोभैनकरनविन ॥ मन
महिसिमरनकरनक्रमसहित ॥ भगनवङ्गरकीनोइसनाना
लापविक्रचक्रननाना ॥ कंवपहरललसीकीमाला ॥ सिम
रनकिपोहरेनंरलाला ॥ लोगननगरकेमिलेश्रपारा ॥ ऊपररे
वकरैनैकारा ॥२३॥ दो॰ हि रा॰ ॥ ठाढाभगनकेशहपरमपेक्कसनि
हसोग ॥ रेरहिश्रसीसाभावधरगहगरहैपुरलोग ॥२४॥ चौ॰ ६
पुरलोगनकोंभगनकह्योहसि ॥ नृपकाहेनिपहोनसोकवस
कहुनहीकक्रूरेरहमारी ॥ हमरेरक्ककगिरवरधारी ॥ जैसु
नकहैहनहभपनवर ॥ पहवचकहेभगनतिहश्रवसर ॥ स

बरभयोतहजैसेकारा॥ सोहतक्रोधतभयोअपारा॥ पुनहर
भगतकह्योसुनलोगा॥ तुमकतकरउहहेमहिसोगा॥ तेलत
पतकाभैनहिमानहु॥ ताकहुगंगानीरप्रमानहु॥ ४७॥ दो० ॥
हमआपहुरिहरसकोंचाहोंसुद्धशरीर॥ पावनकैहोंमनन\
करतेलगंगकोनीर॥ ४८॥ चौ० ॥ तिनकीनेगंगाइसनाना॥ इ
सनहोतनाहिइमजाना॥ तेलभयोगंगाकोनीर॥ मंजनकरि\
कैसुद्धशरीर॥ तीनवेरमंजनकीजेजब॥ देहीहोतपवित्रसुद्ध
तब॥ सुनेभगतकेवचनप्रोहतन॥ ततछिनउठेदोउक्रोधत
मन॥ उसासोभगतकउठहवीचपुन॥ मनमहिकछुनहयाधारी
उन॥ बैठोवीचककउहभगतहरि॥ जान्योगंगाजललिहुअवसर
४९॥ दो० ॥ सवहभयोजैकारतवसभजियभयोअनंद॥ तिल
संघक्रोधतकहेधन्यभगतनेंदनंद॥ ५०॥ चौ० ॥ हतगयेपुनर
पकेआगे॥ सकलहतोंतहुनावनलागे॥ भगततनजसोहसरी
वारा॥ होतभयोतहांअतिजैकारा॥ पुनप्रोहतकोंनृपतकह्यो\
तब॥ आग्याकरोकरोंतैसेंअब॥ कहीप्रोहतननृपसोंवाता॥ मं
उसकतकरतुमरोताता॥ तांमेंतिहकोंअगननजारैत॥ केवा
वनवंदनउरधारत॥ भूपतवचनकहेप्रोहतन॥ अवआसा
कैसीतुमकोंपुन॥ ५१॥ दो० ॥ प्रोहतकहितनहोनृपतबढुर\
तीसरीवार॥ अवराखहिवडतेलकोंलेवहिभगतप्रजार॥ ५२॥\

न॰ भु॰
भा॰
१३२

चौ॰ ६ ॥ ञारदहिंअवनाकेंसंगश्रीफल ॥ कैसनकैअसनंअगाढ 262-A
होइकल ॥ ञारनश्रीफलफूरजाहिंजव ॥ दोसअगनकोंकक्
नहींलव ॥ अरुजोश्रीफलजरैननैसें ॥ मंत्रसकलजानहुजिय
ऐसें ॥ पुनभूपनसुषवचनउचारा ॥ प्रोहनकीजेहृदैविचारा ॥
होइवेरहषटियाभगनकों ॥ ञारानेलकडाहनपनमों ॥ जोडन
केरहषनहोलोमन ॥ जरवरछिनमहिहोनभसमनन ॥ ३१ ॥ दो
हरा ॥ कहिप्रोहनराजासुनइतनमपहकियोविचार ॥ असमक
रतनहोंसपननिजकरेजजगधगकार ॥ ३२ ॥ चौ॰ ६ ॥ प्रोहनकेहे
हनइभूपाला ॥ जोनकरीतुमवचप्रनपाला ॥ मोहमप्रोहन
नहींन्रपनलछ ॥ तुमसोकछुप्रोजनननाहिनमुरु ॥ हमकोंअव
रवइननमनमाना ॥ काप्रोहमनतुमरावहुदाना ॥ हनन्रपपुण
प्रतापनलछारे ॥ गजनतुरंगरथवइनहमारे ॥ वैचकरहिअपनी
प्रनपाला ॥ तुमरेवचननहिपिरभूपाला ॥ परतुमरेवसहीजोउ
लोगा ॥ धगनिहजननमइहंजगलोगा ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ जिहन्रप
केनहिमसवचनिइअस्तननहिजोग ॥ मोनिइन्रपकेपुरवस
हिनेडविसुषधगलोग ॥ ३४ ॥ चौ॰ ६ ॥ क्रोधमानप्रोहनकेहोऊ
चलेरिसाइन्रपननैसोऊ ॥ न्रपअस्वसाणइवोनिइअवसर ॥ लि
पमोवप्रोतिनपांइनपर ॥ जौंजानोतैसंकरलीजै ॥ पुनहरिभग
नअगनमहिरीजै ॥ श्रानालेनचलेप्रोहनपुन ॥ जौननलेलव

डूमंगाइउन॥दीनोउगरकउगहैबीचसब॥जैसेंतरपरग्रवदायो 262-B
नव॥मनपचीसकाहादसरयो॥आरहिभगतप्रोहतनकयो।
दूध॥दोहरा॥भगतसुधन्नासुहितमनपुनकीनोग्रसनान।विष्ण
चक्रहेसिमरियोनरहरमंत्रप्रमान॥२८॥चौपई॥उरपहरीतुल
सीकीमाला॥केसरतिलकदियोपुनभाला॥बड्डरतीसरीबेर
भगतको॥डारोबीचकडाहतपनको॥सिमरनकियोभगततिं
हग्रवसर॥श्रीगुपालहमरीरछाकर॥पावककोंसीतलकर
लीजै॥ग्रपनेदासग्रभैपददीजै॥जैसेंतुमप्रहलादकुदायो॥ग्रं
बरीककोवचनरहायो॥दुषकाटेपांडवहूतजैसें॥भक्तनायो
गईदकोंजैसें॥२९॥दोहरा॥ग्रनामलजमहततेंराषलियोभगवा
न॥राषेग्रवरग्रनेकषलकोकहिसकैप्रमान॥३०॥चौपई॥प्रभनी
होतमदीवरपाला॥भगततनकेतुमहोप्रतपाला॥प्रभुतैंतारेग्र
नकपतनगत॥ग्रबमैंतुमबरननसरनागत॥तारीमहाकष्टदु
परहुता॥प्रभुतुमउधरयोगजग्राहता॥तुमसरनागतगहीद्रु
गनका॥प्रभुतारेव्याधीपतजनका॥तैसेंलाजराषहुषकारी॥द
षकष्टदैहैंग्रतिभारी॥ग्रबहैमोहितीसरीवारी॥चरनसरनहैगि
रवरधारी॥३१॥दोहरा॥ग्रबप्रभुहैममलाजतुमकरुंग्रौंमौंराषहु
गार॥ग्रैसीबिरियांग्रबरनहिलेतिरभुवनविहार॥३२॥चौपई॥
तपनतेलकियोनीरगंगको॥नहींजसलोइकरोमग्रंगको॥बीच

त॰स्क॰ कह्यो हम भगतन हरषत मन ॥ हम हम सजपैत हांही भगवन ॥ निर
भा॰ षसंषनिल हृदे विचारा ॥ मन यह है कोउ मंत्र प्रकारा ॥ देषहि वी
१३३ चश्रकेश्रीफल ॥ मन इन किधो होइ कछु छल बल ॥ जो श्रीफल
को श्रगन जरावै ॥ तो प्रतीत हमरे मन श्रावै ॥ नेल बीच श्रीफल
लै डारो ॥ परस करत नहीं श्रगन प्रजारो ॥ ४१ ॥ दो॰ ॥ नरश्रीफ
ल है हूँ कहै वाहर निकसो धाइ ॥ श्रापा निल सुष जाइ जर श्राधा
लियो बचाइ ॥ ४२ ॥ चौ॰ ॥ श्रौं भारी बर्त्तं सिल पर पर ॥ परन उ
ठन भय भीन सब रकर ॥ तैसें गिरे संषनिल धरनी ॥ महां दुषित
गति श्राइ न बरनी ॥ टोनों का सभ मुष नर गयो ॥ श्रति कुरूप सो
टरसन बगो ॥ धगधग करहि ताहि सभ लोगा ॥ श्रैसे पतन को
डुष षल जोगा ॥ भगत बतसल है हरी नदियाला ॥ सभ डुष हरन नं
दकै लाला ॥ जैसै कारस बर श्रति भयो ॥ सकल लोक को डुष डुर
गयो ॥ सेना श्रपनी महि पारपतव ॥ हमो हपच्छा को हलतसव
पारप श्रस्तन करी श्रपारा ॥ धमधम करहि वारंबारा ॥ उचतन हो
महं सधन राजा ॥ किधो सहप श्रैसों रह काना ॥ ४३ ॥ दो॰ ॥ श्रैसे सह
लको डुष रियो यह हन उचतन रप जोग ॥ भगतन हपच्छा महाबली
वैस वगो विंदलोग ॥ ४४ ॥ चौ॰ ॥ श्रैसे वचन कहे पारपतव ॥
हमन श्राइ कहे नरप सोंसव ॥ कहिहै मै सुन महन नरपत महाधुन
उरपलना नानी हृंसधुन ॥ राष लियो निज भगत रमापन ॥ स

तश्रुत्तनहतसुतनमनहूरषत॥वलश्रापोनरपमतछिनतहां॥
तेलकगहहाहेतोजहां॥सुषवाकुरउरतुलसीमाला॥मनहर
षतछवबरनविसाला॥निरषप्रणामकियोसुषजोगा॥भगत
हूहेमहिहरषतसोगा॥५५॥दो॰॥श्रुतनकीनीसुश्रकीवहुत
हूसधुजराइ॥वीचकगहूउठाइकैलीनोकंठलगाइ॥५६॥चौ॰॥
रपहतकोजसकियोश्रपारा॥करप्रणामकीनीमनुहारा॥सु
फश्रपराधमहांश्रवभारी॥छिमाकीजियेभगतमुरारी॥हतकों
रणश्रंवरपहराए॥श्रव्रसत्तसभश्रंगवनाए॥हमहतनतमकोंकि
यसेनापति॥सनमुषपारषनुइकरइश्रति॥छत्रिधर्मकोरह
जियधारइ॥रनसनमुषहैवानप्रहारइ॥जैसेंश्रर्जुनतोषहोर
मन॥तैसेंमारइवानसूररन॥५७॥दो॰॥स्रुगावानतकीकर
इरनमहिपारषजोग॥छत्रिधर्मप्रतिपालियेहुजसकरहिसभ
लोग॥५८॥चौ॰॥सभकंचनरथजरतरतनमणि॥तिनपरश्र
हलवनेकविश्रनगन॥श्रनेकरोषाविविधप्रकारा॥षचतनील
मणनगनश्रपारा॥मोतिनझालरवनीश्रनूपा॥रिनमणिक्रांत
महाश्रुतिरूपा॥चारश्रश्वरथपरकररकसाथा॥नपुरवंदवनारसं
गाथा॥षनुरंगनिसेनाइलसाजा॥वलोभगतहरसतनजइरा
जा॥चहूंश्रोरसेनाश्रनुकरीसव॥वीचहुधजाश्रापमहांछव॥५९
दो॰॥वीचसभनकेहरभगतचहूंश्रोरदिगपाल॥सजसेना

गं॰ग्रं॰ चलुरंगनीआगेनाउकसाल ॥५०॥ चौपई ॥ एकओररणहांकचला
भा॰ वहि ॥ एकदिसागजफूलनआवहि ॥ बीचकियोपाइकदललभारा
१३८ निहपाछेआवतअसवारा ॥ सभकेबीचसुपञ्चाहूरषन ॥ सेना
कमलकरनकोंकीगन ॥ अथिनलवलनकुलानिहवेरा ॥ सेना
भईपत्रचहूफेरा ॥ चलाकमलद्वैपहीहूदेधर ॥ कमलचढतनज
वकसचंटपर ॥ मांतेंसीपतअतिसुषमानन ॥ माकोनिजसेव
कपहिचानत ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ आपचढावनकेनिमितचल्योकम
लकेभार ॥ नलनचढायेहेनधरसुषमाननतनउराउ ॥ ५२ ॥ चौपई
मैसुनकैहैतनइतननमेजा ॥ चल्योभगतकोटकारविनेजा ॥ कं
वनरणमतिगनचमकारा ॥ गवनतिहोनचंरफनकारा ॥ जो
मनतीनवीचरनठाना ॥ मधगैरराबीमैराना ॥ मुरकरहिस
रेकलवाना ॥ आगुपहापलिपेंविधनाना ॥ भगतसाधसेनाच
तरंगन ॥ महावलीजोधेअतियुनगन ॥ पाकेरपतहंसधनआ
घो ॥ सेनाअमिसमरहसंगलाघो ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ घावहिपानकषर
सोंपीकअमतनभुवुहार ॥ रतनविछावधरनपरमानोंविविध
प्रकार ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ कुलरीवंरनहिपोभाला ॥ जापरगुंजनति
भवरसाला ॥ सहबांधकरिसनसंजोरनन ॥ गातललारप्र
सेरसुरितनमन ॥ लागतमगामहिविनलपवनतन ॥ सषपा
वहिहियसकलसुरनव ॥ वडरहधआउठतिहअवसर ॥

गुंजत आवत भवर वास पर ॥ लाग पवन सों उठी सुवासा ॥ र-
पट्टची स्वर्गलोक सुष रासा ॥ महा सुगंध भ्रमर तिपतात ॥ च-
ढ विमान कौं न कहि जात ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ चमतकार बहु षड-
ग के लागत सुर समान ॥ ऐसे काल की समय तन हुस्तर भय सवि-
धान ॥ ५६ ॥ चौ॰ ॥ सुरन के उर फूलन माला ॥ सुंदर रूप सुनैन-
रिसाला ॥ पुन फुलेल बर विविध प्रकारा ॥ मरदन कीनो गगन
अपारा ॥ गिर सम मतंग महा मद माते ॥ मस्तक ते मद अंबु चुचाते
गवन तिभू मनी च है आई ॥ हय रज सों पुनि है सम नाई ॥ रथ हां-
कत हैं सुर रथी जब ॥ उठत चक्र धुन अरु धुन गगन तब ॥ रन महि ग-
र्जहि जो पशु पारा ॥ सब र मेघ जिम अति भै कारा ॥ ५७ ॥ दो॰ ॥ मोत-
न हार हू रहि गिर रहि पर मी पर हि अपार ॥ ऐसी सोभा पाइ जिम उड-
गन गगन मझार ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ बाजन पंच म रज अपारा ॥ अनक-
ब जंत्र अंत न हि पारा ॥ सभ सुरन के सबल सनकर ॥ तन संजोर
सो भत अति रहवर ॥ जै सुन कहै हन दुभपाला ॥ से न है सधुन
महा विसाला ॥ भगत ह धन्य के के चरित्र यह ॥ जो न रहन हे सुनार-
अरध कह ॥ नहि आवे दावानल भय तिह ॥ सुनै श्रवन रुचि सो हरि-
त यह ॥ तिह कों सत धन प्रापत होई ॥ वेग स्वर्ग गत पावै सोई ॥ ५९ ॥
दो॰ ॥ सभ सुष पावत होइ तिह अरु मष को फल पाइ ॥ भगत सु-
धन्य के की कथा पढे सुने चित लाइ ॥ ६० ॥ चौ॰ ॥ जै सुन कहै हन दुभ-

पतवर॥ पहीसुधन्वाभगतवडोहर॥ अगनजरतराछो
त्रिभुवनपत॥ मनवचक्रमजिपज्ञाननिजभगत॥ तीनलो
कमहि सुजसवढायो॥ अपनभगतकोसुषउपजायो॥ तीन
वेरणवकहीनो॥ करुनाकरराषसुहरलीनो॥ जैसुनकहैम
नहूरथवीपत॥ वढ्योसुधन्वेकोप्रतापअत॥ सतसुषविजैम
योधरधाऊं॥ अरतभयोवीसमोध्याऊ॥८॥दो॰ हा॰॥ इति श्रीभा
रथपर्वलेअस्वमेधआष्यान॥ कविदइकन्तमरतनभयोध्याउवि
शमोजान॥२०॥चौपई॥ जनमेजाप्रश्नतजैमनप्रति॥ अरतक
पासुनाइसुधावत॥ मिलेसुधन्वापारथकैसें॥ पुनसंग्रामक
रतभयजैसें॥ जैसुनकहैसुनहुभूपतवर॥ कहहुकपासुनले
हुअवनधर॥ जवहिसुधन्वारनमहिगयो॥ पारथनिरषविस
महियभयो॥ सेनाभगतकीवडूदेषीरन॥ भयोफालगुनकंप
मानमन॥ देषीविजैभगतसेनासम॥ प्रलैकालकीसमैभईत
व॥१॥दो॰ हा॰॥ चषुभगतकीदेषिकैअर्जुनअतिभयभीत॥ रत
केसरसमहमनहीवलकरसकोनजीत॥२॥चौपई॥ वहुरोंअ
र्जुनअपनीसेना॥ सकलसूरअवलोकेनेना॥ जिमआसामहि
लोनसमाई॥ तिमअपनीसेनाठहराई॥ धनुषहाथलेतिसोधर
नपर॥ विंजामानकांपजियथरहर॥ वहुरप्रश्नकोजैमन
प्रति॥ हरषतजनमेजाप्रथीपत॥ हमरेहृदेसंदेहमिटावहू

करुनाकरयहविधसमभावक॥ कनिकोंपारथभयोविस
ममन॥ देषसुधर्मकीसेनारन॥ ३॥ दो॰ ६ रा॰॥ पारथसेनाअध
कषीकौंउरआोमनमांहि॥ जैमनकरुनाकरकहोसंसैराषोना
हि॥ ४॥ चौ॰ ६॥ जैमनकहैसुनकुरराजाना॥ पारथकेजियअति
अभमाना॥ अश्वसिलासोंसुकनकिपोजब॥ गर्वभयोअर्जुनहि
यमोंतब॥ सुष्टप्रहारसिलासुफकीनो॥ इयसुकायवेगइमली
नो॥ सुजसारषावलीनहिहोई॥ तीनलोकमैंनाहिनकोई॥ इन
नेभूपकहांकरकाजा॥ हमएकलोपिरावोंवाजा॥ धर्मराजतेंय
तकरावों॥ इहहरिसजीतअश्वगहलावों॥ ५॥ दो॰ ६ रा॰॥ घोरेकार
नकेनिमित्तसंगरतनेकाराज॥ हमएकलोकराइहोंयज्ञयुधि
ष्टिरराज॥ ६॥ चौ॰ ६॥ तिसीगर्वतेंअर्जुनकोंरन॥ दृष्टधमाइलई
श्रीभगवन॥ पारथहृदेज्ञामउपजायो॥ धनुषहाथतेंधरनगिरा
यो॥ ऐसीदृष्टपरीनिजनैना॥ पारथनिरषभगतकीसेना॥ सिंह
मृगनपरआवतजैसें॥ डरपतपारथकोमनतैसें॥ जोअर्जुन
सेनानिजदेषे॥ तामहिजोधाकोउनपेषे॥ जोऊभगतकेसन
मुषजावै॥ करसंग्रामतिसहिरपतावै॥ ७॥ दो॰ ६ रा॰॥ जैमुनक
हिसुनहोनरपतपारथडरहियमांहि॥ ततछिनआयोहांकर
पभगमसुधनातातहि॥ ८॥ चौ॰ ६॥ कियोहथधनेसीसकमलकि
म॥ पारथकोजाग्योजियहरिनिम॥ कमलवदनगिरिधरऊप

ग॰ भु॰ रनव ॥ महाप्रसन्नहोतश्रीपतलव ॥ रथतैंउतरभगतभोधपर
भा॰ ग्रह्योसीसविजैपगऊपर ॥ पुनअरूढरथभयोमुदितमन ॥ साव
१३९ धानठाढेहोऊरन ॥ पांडवनिरषह्रुधज्जैकीउत ॥ मनमहिंकर
तभयोचइक्रस्तवन ॥ विजैभगतप्रतिवचनउचारा ॥ युद्धकीजियै
कवनप्रकारा ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ ज्यौंतुमरीइच्छाभगतसौंकीजैसंग्रा
म ॥ वचनकह्योश्रगरायगुरुतैसेंकीजैकाम ॥ १० ॥ चौपई ॥ कहै
हृधज्जैवचहर्षतमन ॥ रहप्रकारकीजैपारथरन ॥ प्रथमेत
मनरुऊङ्गमुऊसाथा ॥ सेनानरूसेनसंगाथा ॥ नाइकसोंनाइक
जुरलरई ॥ हस्तीसोंहस्तीरनकरई ॥ अश्वसौंअश्वरथनिसोंरथपु
नि ॥ पाइकसोंपाइकअर्जुनसुनि ॥ प्रथमनिकारेनाइकपारथ
महाबलिष्टसरपरस्वारथ ॥ एकएकमनअतिबलवाना ॥ पुनि
हनोअत्रुरुद्रप्रमाना ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ तीनोपुनिहषकेतअरुचौ
थोसालिकमान ॥ पुनिअनुसालसहपांचवोमहासुरबलवान
१२ ॥ चौपई ॥ कृतवरमाकृतवोविष्याला ॥ जौबनासनाइकही
साथा ॥ यहनाइककाढेअर्जुनतुन ॥ नाइकमानभगतकेव
डधन ॥ भयमनहर्षहसवधाना ॥ चौंकहिनाइकअतिबलवा
मा ॥ कंचनरेहवरनवारिनजिम ॥ महासुरअतिक्रोधकिये
तिम ॥ एकएकसोंजुरिगयेतैसें ॥ कपोसुधज्जैपारथतैसें ॥ पा
रथनिरषभगतकीसेना ॥ विसमैभयोगयोमनचैना ॥ १३ ॥ दो

रा ॥ पारथमनअपनेकहैं पइजीतेनहिंजांहिं ॥ अगनतजहां
वसंतरहैं चलतरंगनिरखलमांहिं ॥ ५ ॥ चौ० ॥ दुंदुंभभेरिगगनपरि
बाजहिं ॥ करनाईहयराधुनरानहिं ॥ बहुबजंत्रधुनिविविधप्रका
रा ॥ बाजततहैंपवनतरअपारा ॥ रनसिंहैवाजहिंनानागत ॥ संघस
वदलमसान भएअति ॥ कमलसवदराहलाअतिभयो ॥ धरनअ
कासएकहैगयो ॥ पारथनिरखभयोविसमैमन ॥ भाख्योसक
लसुतांनप्रघुमन ॥ नहींजुडकासमाइमारा ॥ सायभगतकेब
मअपारा ॥ ५ ॥ दो० ॥ रा ॥ हमरनसोंजीतहिनहींजुडकरहिनहिंअ
नें ॥ गजपरसंघवजारकैकयोइंसधुनराजन ॥ १० ॥ सो० ॥ हमरे
घोंनहिंआजजीतोंकरिसंग्रामइन ॥ लरऊचितजडराजनसोंसम
अपनाहोरवल ॥ १२ ॥ चौ० ॥ कहिपउमनहनऊवचपारथ ॥ अ
मसेजोधनजहिंपुरषारथ ॥ इसोहहेरलदेखअपारा ॥ क्रोधनमो
रलछत्रविसारा ॥ रथहांकनहषकेतसिधायो ॥ पारथजहांतहां
वलआयो ॥ हनहषकेतपुनवचनउचारे ॥ अर्जुनरहनहिंउचत
तस्यारे ॥ भागतरहांछाडरकैवाजा ॥ जगपकरायोधर्मनराजा ॥ तांतें
अपनाठौररावमन ॥ नद्धकरहिंगेहमउनसोंरन ॥ ९ ॥ दो० ॥ रा ॥
साधसतधर्मेवमभ्रजोसगरीधरनिगिराउ ॥ तोसमपतहमकरन
कोस्रोणानसिंधुवहांउ ॥ १८ ॥ चौ० ॥ अबकुरुराइलेउततकाला ॥
यत्तकराउधर्मभूपाला ॥ पारथकोंटेपीरकरनसहन ॥ चल्यो

ग॰अ॰ बब्रुरभगतनसुकरनजप्रति॥ बालकरनहोवालनुरुकत॥ सु
भा॰ नोवचनमोनं हुकरनहत॥ हमसंग्रामकरहिंअर्जुनसों॥ प्र
१३२ थमेवचनकियोहमउनसों॥ भयोनसनमुषविमैइस्योचित
मुरुकौंपकोमरावनकेहित॥ २०॥ दो॰ ना॥ देषीयतहोसुरतम
पुनरणमहांविसाल॥ कहोपराक्रमआपनाकवनवंसकुलवा
ल॥ २१॥ सो॰ ना॥ कहोपिताकोनामबब्रुरनामअपनाकहो॥ वा
लकअतिअभिरामकहोहमतोंतसुनाइप्रति॥ २२॥ हषकेनउका
व॥ चौ॰ प६॥ करनेंहुतपुनिवचनउचारे॥ प्रथमअनुरहतमसा
पहमारे॥ तोहैंभगतकरनकोनंस्न॥ तुमरीसेनाकरोंनिकं
रन॥ वाननकीवरषावरषावों॥ अपनपराक्रमतोहिंदिषावों॥
अैसेंवचकहिंधनुषलियोकर॥ करननातवलवानसुरवर॥ छो
इदियेसरअतिविकराला॥ अंधकालभोमहांविसाला॥ अतिभ
पभीतनपवरभोजासा॥ मिरगोसभअवरजमाप्रकासा॥ २३॥ दो॰ ना
वाननसोंछारनकियोभगतनहपंचासर॥ महांवलीवालककहे
भरकरननातनघातापर॥ २४॥ चौ॰ प६॥ निरषभगतअतिकोपमको
मन॥ पवनवानमासोकसनतछिन॥ अंधकाररहइदिसकरउ
रा॥ नमभिरगयोभयोउजियारा॥ पुनहषकेतनीनसरमारे॥
अतिविकरालमहांभयकारे॥ एकवानमासारथीप्रहारे॥ सरहस
रअवहिंकरडारे॥ विक्रमतीमसेनाहनयरी॥ बब्रुरहपछेपउ

272

षलिघोकर॥तीनवानतीछनमारेतव॥कंपमानत्रैलोकभ
एसव॥२५॥दोहरा॥रथसमेतहयकेतकोटीनोगगनउडाइ
कपरभ्रमभ्रमहीपरतोगिरतोधरनभुरझाइ॥२६॥चौपई॥महा
पराक्रमटेषिभगवानन॥पारथचकतभयोविसमयमन॥क
नैजगिरतप्रभुप्रनिहारतो॥चलतोरिसायक्रोधउरधारतो॥भा
योहृथनसेकेसविधाना॥मारेटेकसीसभरवाना॥उठ्योसव
रतवयतिभैकारी॥लेगइसारथिकोजमद्वारी॥स्रषहनेउ
निधुनागिराई॥कियोमहांवलहतनजडराई॥कुप्योहृथधन्वावा
नचलायो॥रथसोंहरिहतगगनउडायो॥२७॥दोहरा॥नभभ्र
माइउतरोधरनवहूडपपायोजोध॥वहुरउठ्योकरधनुषलै
कुसमानधरक्रोध॥२८॥चौपई॥सानवाणमधलगानिकारे॥
भगवतहृथनसेकोंकसमारे॥कालस्वरूपीसरविकराला॥सेना
रथफेरेतनकाला॥चम्रमारसरहतनप्रभुषपाए॥रथसमेतस
रभगवतउडाए॥तीसपत्रुषरपपाछेकसो॥भगवतउलटप्रभुथप
रतीपरतो॥वहुरभगवतजियक्रोधवढ्योअति॥वारवानमारेप्र
उमनप्रति॥पैठ्योरथवीचपताला॥नौसेजतनप्रमानहरि
वाला॥२९॥दोहरा॥कर्नजनकीप्रुरछाकुटीभयोतहासविधान
तनप्रभुथाधोभगवतकेमहांसुरवलवान॥३०॥चौपई॥महाक्रो
प्रहृथकेतभयोमन॥सानवानषटएसनप्रभुषरन॥रथफोसो

गो·ग्रं· सारथीबिडारा॥ मुकरसहूकहूककरडारा॥ अनगनसेनानास
भा· करीजब॥ निरषिक्रोधमनभगनबद्योतब॥ तीनबानछाडेबि
१३८ कराला॥ बांधलियेकर्नजनतकाला॥ बांधेजेवरिनिमहघके
ता॥ दियोकषबहुकियोअचेता॥ पुनमारेगनअसपराता॥ सेन
समूहकरनभोत्राता॥ ३१॥ दोहा॥ रथसारथीबिडारबहुसेना
करअनिवार॥ मुकतापोहैजेवरीआपकरनकेताल॥ ३२॥ चौप
ई॥ लेकरधनुषभयोसनमुषदल॥ सूरसहधक्केअरगयोचल॥
करनहतनहअनिक्रोधहियेंपर॥ चारबानछाडेतिहुअबसर
सेनाबहुतप्रहारकरोसर॥ धुजापताकागिरीधरनपर॥ फोरे
रथसारथीबिडारे॥ गजतुरंगपाइककरिडारे॥ सूरबहुतध
रथरेउलरमुष॥ चलतरंगनीचमहीनोडुष॥ फिरगयोसूरजको
प्रतापतब॥ करनहतनहिमारीसेनासब॥ ३३॥ दोहा॥ करनता
तअलिकोपकैबहुरहधक्केओर॥ एकबानपवनेजसोंपुनरथ
डास्योतोर॥ ३४॥ चौपई॥ पुनरथअवरमंगाइभगनहर॥ लाघव
भयोअरूढसूरवर॥ तीनबानछाडेतनकाला॥ महाक्रांतती
छनविकराला॥ एकबानसघकेतनउडायो॥ लेसरगागनबीच
बहरायो॥ इतिपवानसारथीबिडारे॥ रतिपवानपाइककबहु
मारे॥ प्रलैकालकीसमैहोतनिस॥ सेनाछानकरीरनमैंनिस
अमथमपस्योकरनतनरनमें॥ अनिबिहवलककुसुपन

हिमनमैं ॥ २५ ॥ दोहरा ॥ आतालेअनुसालपुनिचढिआघोन\
नकाल ॥ पुनशापलभयोक्रूससतनपकोन्हहनतपपाल ॥ २६
चौपई ॥ तीछनसरवहूहनअनुसाला ॥ नासकरीसेनाततकाला
रणसमहलनभजेरउठाए ॥ सभलेगगनवीचठहराए ॥ धमअ
कासहरिभगतपसोधर ॥ कछोधमअनुसालसुरवर ॥ जैसुन
कहैहनडूष्टपवीपत ॥ डाढोरनकेवीचहरिभगत ॥ सुरवीरजो
पेमुरछावै ॥ क्रोधनहिपसरपैनचलावै ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ गजप\
चासपाकेंगयोरणसारणअनुसाल ॥ रणतजभाहाभयोरनस
नमुषहतननंदलाल ॥ २९ ॥ चौपई ॥ भगतनतपजैकेसनमुषचल
भोमसविधानअघुघमहाबल ॥ सुहृप्रहारपरसरकरहीं ॥ सुरन
छडगजमधरसोंलरहीं ॥ तमलतुरकीनानिदकाला ॥ ननवि\
हवलभयोलालगुपाला ॥ जैसुनकहैहनडूजननमेजा ॥ भगतअ
लापकोटरवतेजा ॥ पुनपघुमनभयोहचेतमन ॥ सनमुषभग
लमयोडाढारन ॥ भगतनहपजैपुनसांधोसर ॥ तेनआपनावीच
धारकर ॥ ३९ ॥ दोहरा ॥ हेकसीसमारोविसकभगतनहिपेंधरको
ध ॥ रणसंनुक्रपमालपुनपकोप्रउमनजोध ॥ ४० ॥ चौपई ॥ जोरे
वेरनमहिअनुसाला ॥ रनहरिहतनकोंपकोपिपाला ॥ रणहांके
नसनमुषचलआगो ॥ महांक्रोधकरधनुषउठायो ॥ पलोकरटक
महिलकोकोरटल ॥ रयोनमलसंग्राममहांबल ॥ छिनमहि

जै॰ अ॰
भा॰
१३५

प्रलैकरीसमसेना॥ सोगतकहीपरतनहिवैना॥ भैकारी
अतसवरभयोतव॥ भयोएकसमधुवअकासमव॥ रहहरि
समग्गगनउगीअतिज्वाला॥ ह्वैगोअंधकारतिहकाला॥ ४९॥ सो
रठा॥ चरनारेनाभूपरअगनमहाभयानकतेह॥ रनमहिरछ
नआवहीएकहूसरेदेह॥ ५०॥ चौपई॥ पुनअमुसालगुरजली
नीकर॥ पलोकूरकमहिहियेंक्रोधधर॥ भगतसुपत्रेकीसे
नासव॥ लखाजैंलीनीजारसकलतव॥ त्रुइकरनकोंअनपु
लकोतन॥ निरषिसुपत्रेकोपभयोमन॥ वीनवानमारेअनु
सालहि॥ मर्दितकरउसोतनकालहि॥ जैसुनकहैसुनइए
षवीपत॥ जयपिपारथसेनावलअन॥ सकलभगतरहहरि
सकरउरी॥ पुनआईपारथकीजारी॥ ५३॥ सोरठा॥ पारथअ
तिहिपक्रोधकरहोतभयोसवधान॥ भगतनिहासोविजेको
रथवैकोवलवान॥ ५४॥ चौपई॥ गादाऊतोविजैरनजहां॥ हांक
भगतरथपहूच्योतहां॥ भगतकहेइहसवचअर्जुनसों॥ कुत्रीध
र्भकहाईअपसों॥ ताबेहोरनमहिकरक्रोधा॥ आपकहावमघे
वउजोधा॥ सुनकोंपोपारथरथमांही॥ रथौनुरथअतिभैरनहां
ही॥ पांचवानपांरवकसमारे॥ महाबेजसीअतिभैकारे॥ भग
तहरैलागेजनवाना॥ ह्वैगयेविमषअसंषअमाना॥ ५५॥ सो
रठा॥ जैसेंतनकोंशत्रुभैकारहरारियेकेर॥ निमसरलागेवि

मैके भगत नहियें निह हे बेर ॥ ७८ ॥ चौ० ॥ ई ॥ बहु राछस पछेहि येंको
धकर ॥ बानअरंभ्यो लियो धनुष कर ॥ कालग्यो विसककचांपलें
अवही ॥ गरजपसो सेनामहि तवही ॥ गजदल अश्वपैदल व
डुमारे ॥ रथकाटे सुभकुंभ विदारे ॥ रथसंजुत अश्व गुंन तन काल
हि ॥ धसग धोइ कसौ धनुष घघालहि ॥ कलवर मासान कयु
नधाव ॥ होनीं जो धाइ कवे आप ॥ इतउत ते सेना जुरगई ॥ इह
रिसजुद्ध भयानकभई ॥ ७९ ॥ दो० ॥ रा ॥ मैबना सन्द पछन सरि
नवहुत मिले बलवान ॥ पारथ परसागरा जुधिल रहि हो इस
विधान ॥ ७९ ॥ चौ० ॥ ई ॥ क्रूरहि क्रुहकवाणहथियारा ॥ पसरध
मरज मिथ्यो उजारा ॥ इतउत क्रूरहि बान अपारा ॥ गराविश्रूलअ
नेकप्रकारा ॥ अहमहम भई सेनसंधारा ॥ चतुरंग निरदल थंतन
पारा ॥ राहना जुद्ध भयो विकराला ॥ सरिता रुधिर भई तिह का
ला ॥ बहे मों हि गन के कवंध श्रुति ॥ हयपदात रथ श्रुतिविवि
ध गति ॥ चलरमासकी सरितानै सें ॥ रणाजुम बहन चलेसंग
नैसें ॥ ७९ ॥ दो० ॥ रा ॥ मौं कवंध सिर अश्वरथ बहिहैं श्रोणित मांहि
चलरमासकी नदी जिम मानो संसैनाहि ॥ ८० ॥ चौ० ॥ ई ॥ कापरहे
धगगिरज अकासा ॥ भक्षन करन सूरके मासा ॥ बहुरथ पछे
फिरथी सेना ॥ स्तनक भई अवलोकी नैना ॥ उन मारे लीछुन दो
वाना ॥ महातेजसी प्रलेसमाना ॥ सानककसनवरमा रोकजोधा ॥

म॰ अ॰ पंडेगुरुकासभगतनसरक्रोधा ॥ जोवनासम्हतसहितगिरायो ॥
भा॰ समसूरनकोरनगुरुरक्ष्यो ॥ अवरवानमास्योरिमाइकर ॥ पार
१७॰ थविनगुरुरक्षापसनधर ॥ ५० ॥ दोहरा ॥ गहासंघवजावहींगु
रिनहंसधुजराइ ॥ अश्वमेधकेयत्नकोभोइकीसमोध्याइ ॥ ५२ ॥
इति श्रीभारथ पर्वले अश्वमेधयाध्यान ॥ कविटहकमहरनभयो
ध्यायर कीसोमान ॥ २१ ॥॥ सोरठा ॥ कहिमैगुनभूपालसुनहु
कथासविधानहै ॥ पारथहुतोपपालआयोनिजगुरुकनाइर
न ॥ ५ ॥ चौपई ॥ सेनाटेषीविजैसीसधुन ॥ पाछेरमोनकोऊजो
धपुन ॥ अतिचिंताउपजीपारथमन ॥ कहीभलेरक्षातुमभ
गवन ॥ हरपतवेगजीतनगुरुफलीनो ॥ रुद्रजीतनगुरुफकियोअ
धीनो ॥ भारथजीतेवडराजाना ॥ करनसारथेअतिवलवाना
भीषमद्रोणाचारजसेहन ॥ कृपाद्रोणसुतनगुरुफजीतेरण ॥
नासकरीकोहराणीअगरा ॥ छेरेरूपवलवेदअपारा ॥ २५ ॥ दो
रा ॥ नहिजानोंवहवलकहांजानभयो इहकाल ॥ मघपिगुक
हिमहाइनितकरुनासिंधुगुपाल ॥ र ॥ चौपई ॥ भगतसुधन्वे
कोरतनोवल ॥ मानोनहीरिपोकिहमवचल ॥ मैगुनकहै
सुनहुभूपाला ॥ कथासुधावतपरमरसाला ॥ मोजोविजैवि
चारकिमेलव ॥ भगतसुधन्वेजानलियोसव ॥ इमसवतकहे
भगतअर्जुनपति ॥ अहंकारमनमैंकरहोकत ॥ माकेहहेअहं

कुलहोई॥ रनमहिकवडुनजीतेसोई॥ वहुरुक्षापीश्रीनंद\
लाला॥ करनकरावनहारगुपाला॥ ४॥ दोहरा॥ भयोकुलसन
वसारथीतौमारेवडुजोध॥ जीतसकोंअववकुलविनरनगाढो
मनक्रोध॥ ५॥ चौपई॥ तुफसोंजुद्धनउचलहमारा॥ जिनवडरे\
कोकुवधुधारा॥ पुनप्रद्युमनसोपलियआयो॥ जिहरिसायकै
हहजगायो॥ सोकैसेंकरिहैसंग्रामा॥ जुद्धवीचउनकोंनहिका
मा॥ कर्णपुत्रअनुसालमहावल॥ जोवनासहतसहितआरव
ल॥ सोंचकहतहोपारथऐसें॥ हमकोंजीतसकोंनहिकैसें॥
जोसहाइतुमरेनंदलाला॥ अवहमसोंजीतहुतनकाला॥ ६॥ दो
हरा॥ समकहतहोंकुलविनरनजीतहोनमोहि॥ वेगवुलाव
हुहरिइहांजीतहोइतवतोहि॥ ७॥ चौपई॥ जोतुमरेतरकसमै
वाना॥ जुद्धकरहुतुमकैसविधाना॥ अरुजोसरनगुरेवलहा
रा॥ वेगवुलावहुकृष्णमुरारा॥ ऐसेंवचनकहतउहिकाला॥
आयोहरखतहुतोपयाला॥ वचनकहेहरभगतविजैप्रत॥
अरुअनुसालहिपवनफुलावत॥ वहुरभगतमनवचनउच
रई॥ पुनअनुसालश्रवनमहिपरई॥ सेनामांहिसरविद्याता॥
महावलीभातनकोताता॥ ८॥ दोहरा॥ ताकोहमसूर्छितकियो
नहिजानोंकिहठौर॥ हसरपहअनुसालजिहहरजीमोदल
मोर॥ ९॥ चौपई॥ पुनअनुसालअसुरकोअधपत॥ वचनक

जै॰ श्री॰ भा॰ १५१

हे जिह हने रमापत॥ सो वल तुम पाक हां गयो अब॥ पहु व-
वह रि हतन हने अवनसव॥ हन प्रद्युमन निकर चल आयो॥
भाष भगत प्रति वचन सुनायो॥ कहि प्रद्युमन सुन भगत गु-
पालहि॥ कतिय हव वचन कहे अतुमालहि॥ तुह्म कर इअब वह
मरे साथा॥ कैसें तुम फहिल गावों हाथा॥ कस्सलानन वलियो
धनुष कर॥ सो धोसर निय महां क्रोप धर॥ १०॥ दोहरा॥ सुर
अनइ का धोन हीं भगत अ और हरि तान॥ शीघ्र सु पन्ने पठहि
योतीकन सर विधान॥ ११॥ चौपई॥ हर सन के पत्र को गुन ना
सो॥ महा तेज सर सों कर राखो॥ बहुर सु पन्ने वचन वषाना
हन इ प्रद्युमन तात भगवाना॥ महादेव जासो तुम पालन
कीनो पुनि सर जीत साम तन॥ हम सन सु घर न उचत नहीं
तुम॥ एक ओर वर है तुम पपाल सु फ॥ एक वार भाग रन मां
ही॥ पुन संग्राम जोग तुम नाही॥ तुम हरि सुत सु फहे विचा
रा॥ मों तैं तो हिन करों संहारा॥ १२॥ दोहरा॥ पारथ का हार न वि
चंतिस हि कहो तुम जाइ॥ देषत है वल पत्र षम हिंसु हकरै
पुन आइ॥ १३॥ चौपई॥ अरु जो अर्जुन वल हा सोर न॥ सिम रत
लावै रहा साम धन॥ हय पत्र का पर इहम पारथ॥ हम कों जी
तन सिंह करसारथ॥ मैं सुन कहै सुन इभूपत तव॥ वच हरि
सुत में भगत कहे तव॥ पुन प्रद्युम्न हां कर पग गयो॥ अर्जुन के

डिगठाढाभयो॥ पांडवकोहरिहनहेओचल। ठाठाद्रुमकी
ओरहारवल॥ कहीग्रहस्त्रविनैप्रनिवाना॥ चिंतमानगंगाडे
कलनाना॥ ७॥ दो० ॥ विजेकहैग्रगुप्रस्तनसेनभईसभठा
न॥ तिखुटेवाननिषंगलैंकैसेंजुझीनान॥ ५॥ चौ० ॥ वचोन
हींकोउजोधहमारा॥ सकलहुधन्वेकियोग्रहारा॥ जहठाढेश्र
र्जुनहरिनाना॥ कहलवनायपरस्परवाना॥ भगनहांकरथ
नहांसिधायो॥ पारथकोंकहिवचनसुनायो॥ उठहुविनैहम
सोंजुझहुरल॥ कनिलमठाढेभयहारवल॥ ग्रबहराइजाहु
फिरकेजव॥ कहांकहेगोधर्मनकोतव॥ जसकरनहैंमेउप
जाना॥ जोन्रपहोनमहांवलवाना॥ ९॥ दो० ॥ जपकरनहैंजो
न्रपनहेतलरंगमझोर॥ पुनिसेनापनहोनजोनहींकुपनउघ
श्रोर॥ ८॥ चौ० ॥ वचनसुधर्मवडररकहेपन॥ श्रवलमठाढेहा
रफालगुन॥ जगयग्ररंभकियोलमजिहवल॥ सोहरिसौंनवला
वडरइहरल॥ द्वैहैहरलमरारथस्तारथ॥ सोलमरनहारोनहि
पारथ॥ हारमानठाढेलमग्रैसे॥ हपमुकलावडगेलमकैसें॥
रनमहिधनुषउठावडुलवही॥ ग्रपनावलजवग्रनिकैजव
ही॥ इसहीवलतेंसारथिभयो॥ पारथकोवलकनिइरगयो॥
१०॥ दो० ॥ भलेकरायोजगपन्रपठाढोलरगकिनाइ॥ कवजी
सोलमकसविनवचनकहेप्रगराइ॥ ११॥ चौ० ॥ हैनिषंगा

अ॰ अ॰ बांधेकटिपारथ॥सारथभयोइसहिपुरषारथ॥कहिआयो
भा॰ वलहैइलनपुर॥नगकरावींन्हपतन्नुधिष्ठिर॥जैसुनकहैइल
१५२ नइअश्वथवीपल॥यहवचनकहैभगवानअर्जुनप्रत॥पारथकहु
नकहीनिहअवसर॥पुनपांडवप्रतिकह्योनानहर॥कहिप्र
द्युम्नसनइवचअर्जुन॥कलिकाहोरनमागफालगुन॥सोइपु
रुषइरहैरनमांही॥जिनकेतनहिपराक्रमनाही॥२०॥दोहरा॥
सोरइरेसंग्राममेंजोनहोइवलवान॥कहौतोहिउरकवनकों
जिहसहाइभगवान॥२१॥चौपाई॥उनतमरेसंगसेनअपारा॥म
हावलिष्टजोधरलभारा॥तातेंमकहइरनकुसलाता॥चिंताह
रकरहूजियनाना॥तुमसहाइश्रीपतिभगवाना॥ज्ञानभीम
सेअतिवलवाना॥तेकतिमागहिकोपधनुषरन॥जिनकेसरा
सहाइसामहन॥जिनकेसषाहैंहिवनसामा॥कवइनतेहार
हिसंग्रामा॥लियाइदोषप्रद्युमनतानजव॥पारथहृदेनधीर
धारतव॥२२॥दोहरा॥अर्जुनउवाच॥अर्जुनकहेप्रद्युम्नसनर
नमीतहिगेनांहि॥रपतहैसपुत्रसेजहांताठेसंघवजांहि॥
चौपाई॥वइरतधज्ञाश्रतिवलवाना॥अवरवलीनहिनाहि
समाना॥हमरेनाइकपेसरेवर॥सभमुरक्काइगिराइरिये
धर॥कौनकेउनकेसविधाना॥हमवासरकवनहराना॥
जैसुनकहैहतनकरानननतव॥अैसेंवचनकहेपारथजव॥

बहुरप्रगुम्रबचनभाषेसुन ॥ गुहरहावनहोप्रनिसुर्जुन ॥ जो
रघुरुषहैधनुषलेरकर ॥ तेनकरहिरक्षालनरनपर ॥ २२ ॥ दो
हा ॥ यहजोवनगनमेघकीसावनजोजलजान ॥ देहराषरन
जउंहीपावेनरकप्रमान ॥ २७ ॥ जैमनउपच ॥ सोरठा ॥ सुनराजा
हरिलालबचनकहेजोविनपपल ॥ भगनसुनीसबबालरष
हांकलश्रायोनिकट ॥ ४४ ॥ सुधनुगच ॥ चौपई ॥ कहेसुधनुजास
नहूफालगुन ॥ श्रीपतबिनलमममहांहीनपुन ॥ दुपदसुताकी
प्रमेविंतकर ॥ लमपांचोयुधीननिहअवसर ॥ हरिबिनकछु
बलनहीलस्यारा ॥ हरज्ञीनहांहैपहीनारा ॥ लमश्रसमकैरहे
चिंतमन ॥ रक्षाकीनीनहांसामबन ॥ रापीकृसलतुलारीला
जा ॥ जहलहकियोसशरनकाजा ॥ हमसोंलमजीतहुनहिपा
रष ॥ हरिबलाइपरहिसभसारष ॥ २८ ॥ दोहा ॥ जिहबिनल
मरालकुबलसारपलेदुबुलाइ ॥ सुरतजोहैककुश्रवरबलजु
हकरहूरनश्राइ ॥ २९ ॥ चौपई ॥ यहबवचसुनकोश्रोपारपलब ॥
कह्योभगनप्रतिमुहकरहश्रब ॥ रनमहिकियोधनुषटंकारा
ध्यानधरयोश्रीकृस्नमुरारा ॥ श्रावतरहपभईतिहश्रवसर ॥ पार
षनिरषीसेनभाउधर ॥ पांडवकेजोपासभजागे ॥ तुनतुनबा
नचलावनलागे ॥ निषुरगयेलरकसर्वेवीरा ॥ श्रतिबिहबलत
नभएश्रधीरा ॥ ३० ॥ दोहा ॥ पारषसेनादेषकैमननमहिबहुतरि

ग्रं॰ श्री॰ मारू ॥ अगनवानकसमारकै भैकारीप्रगटाइ ॥ २९ ॥ चौ ५ ई ॥ उ
भा॰ अग्रगनसेनासभमारी ॥ अगनवानहनसकलघनारी ॥ हयग
१५३ नरथजरगणपरामा ॥ सेनाकरीगरदमवगाना ॥ करपगने
नजरेसभअंगा ॥ वडनपरेरनमहिहैपंगा ॥ वडरभगनकार
पजरगयो ॥ लवहिसुपञ्चाक्रोधनभयो ॥ लियोधनुषसरप
वनचलायो ॥ पावककोसरपवनउडायो ॥ लेडारीवहुअगन
वापसर ॥ ननछिनपारथकीसेनापर ॥ २० ॥ दो ७ रा ॥ सेनविजे
कीनरपरीजेउवरेयेजोध ॥ परवतनसरपुनमाधियोभगनहि
यंकरक्रोध ॥ २१ ॥ चौ ५ ई ॥ परवतवानभगनमास्योजव ॥ चम
विजैकीहननकरीसव ॥ किनहूंकेसुघम्रलननभंगा ॥ करपर
हूटभयेकोउपंगा ॥ किनहूंकीहूटीभुजमंवा ॥ सकलचमूक
रवरनअंगा ॥ केउमर्छहूहैगिरेधरनपर ॥ रथसभअग्रारेकोरटू
ककर ॥ गजनतुरंगननभंगपरेधर ॥ मर्छतप्रउमननभौनिह
अवसर ॥ मेघवानप्रनिभगनचलायो ॥ जरमीधरनीकोसि
ननलायो ॥ २२ ॥ दो ७ रा ॥ भगनसुपञ्चासोचमप्रुनजरभईअपार
विनविंनापारथभईमननमहिकरनविचार ॥ २३ ॥ चौ ५ ई ॥ अवै
ममननमहिनानविचारा ॥ विनहरिकोउनअवरहमारा ॥ श्री
ह्ललकहिसिमरनकीनो ॥ मननलेहरिचरननमहिदीनो ॥ गि
रवरधरनगुविंदगुपाला ॥ भक्तवत्सलहरिदीनदयाला ॥ ना

पग्रनाथजगतगुरुस्वामी॥ सकलघटनकेअंतरजामी॥
दीनवंधईश्वरअवनासी॥ सभघटरलमरीजोतप्रकासी॥ नारा
यननरहररवंदनंदन॥ आइकरऊग्रहिकष्टनिकंदन॥ २४॥ दो
हा॥ सेनाहमरीहतकरीभगतजुधअेआइ॥ दरसनदीजेना
थजीकीजेवेगसहाइ॥ २५॥ चौपई॥ अपनेवचनकरऊप्रति
पाला॥ संकरहूरकरऊनंदलाला॥ जोधारयोनएकहमारा
कोमूर्छतकोभएसंघारा॥ कछुवलरह्योनहमरेतनमहि
जासोंजुद्धकरोंप्रभरनमहि॥ तातेंराषहुमारीलाजा॥ दर
सनदेहुवेगजदुराजा॥ जहलहरछा करीहमारी॥ विरदला
जलमकोंवनवारी॥ तुमविनअवरनहीकोअआसा॥ आव
ऊशीघ्रमिटावऊत्रासा॥ २६॥ दोहा॥ दुषछीजेदीजेदरससुष
निधआनंदकंद॥ आनषोलजवेंपहीरथसारथिनंदनंद
२७॥ चौपई॥ पारथहरिकोकियोप्रणामा॥ चितवचनमैंआपउ
नस्यामा॥ अर्जुनहूदेखनंदनभयो॥ सुषसमूहउपजेउषगा
यो॥ रथपाछेंठाढेगिरवरधर॥ कहूनमाउवैठेसपंदनपर॥
मानोअमलसंबतनलपायो॥ तैसेंविजेहियेंहरषायो॥ वार
रूपगिरधरआपसज॥ एकसरूपउधिष्ठिरपैतज॥ हिलि
यरूपकुंतीकेआगे॥ तिसरूपरूकमनिअनुरागे॥ २८॥ दो
हा॥ कोपोअर्जुनसारथीरथपरवैठोआइ॥ बाणेंओसेंजान

गे॰ग्रं॰ हीहमसंगहैनहुरारे॥४९॥चौपई॥ विनैपत्नोहरिपगपरमा
भा॰ षा॥ हमसेसुदिनत्रिभुवनकेनाषा॥ कमलउकारश्रलिंगनकी
१५५ नो॥ पारषकोधीरजनवइटीनो॥ उचमनवरकरिकहोविनय
नव॥ श्रारतुधश्रानुहकरऊभवव॥ श्रर्जुनसवरभगलपहि
वानो॥ हरिश्रापनिहचेंजिपजानो॥ श्रागेहोतमवरश्रतिदी
ना॥ श्रवउपजीधनमहांप्रवीना॥ हांकोभगतशीउरथलहां
मनसुषगयोविजयहरिमहां॥५०॥दोहरा॥ सूरनवंतविलो
कियोपारषरथभगवान॥ संषचक्रश्रायुधसकलगदापदम
लियपान॥५१॥चौपई॥ जोइभगतकेडूतोइहूतन॥ सोइनिहा
सोप्रगटस्यामघन॥ भगतश्रापनेहृदेबिचारे॥ श्राजदिवस
वडभागहमारे॥ हमराजनमसुफलश्रवभयो॥ करुनाक
रिहरिदरसनदयो॥ मनममरनतेंहरिमुकतायो॥ देहरस
ननमनरूपनायो॥ जोदरसनदुर्लभजगमांही॥ शिवसन
कादिकपावतनांही॥ घोजतनिहनारदइंद्रादिक॥ लषिन
सकलमुनिजनसनकादिक॥५२॥दोहरा॥ शिवसनकादि
कउमलकेजोनहिंश्रावतध्यान॥ भागवतेहमरेभयेसोदेषो
समधान॥५३॥चौपई॥ हरिमिलनसुषश्रापनसुजसभयो॥ जन
ममरनसंसामिरगयो॥ रक्षाशरनभईहमारी॥ भयोकल्प
रणनिरषमुरारी॥ रणतेंउतरदंडवतकीनो॥ मनलेकम

वरनमहिहीनो॥ वडुरथरूढभयोसंहनपर॥ हरषलभ
योदेहपावनकर॥ वडुरथीकलहिकियोप्रनामा॥ उद्यम\
कियोवडुरसंग्रामा॥ भगवतउचारकह्योअर्जुनसन॥ आवडु
तुडुकरडुहमसोंपुन॥ ५५॥ अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ अर्जुनक
हिहनहोभगवतनुडुकरडुअववचार॥ तुमतोहमरेसुरस\
भरनउरेपुरकार॥ ५५॥ श्रीभगवानुवाच॥ चौपई॥ हनपारथ
गरजोअवयानें॥ हरिजानेआपतुमजानें॥ प्रथमेहमरीस
पतह्नीजै॥ पाछेहाथधनुषसरलीजै॥ तीनवानसोंवफ\
हिपयाला॥ पठवोंजोनसहहतनंदलाला॥ तोअवतीनलाग
हैमोकों॥ प्रगटहुनावलहोंकहितोकों॥ निपरजसवलाहैकै
नवहीं॥ गमनकरैतिहसोंनरलवहीं॥ मलभोजनलेवैतिह
हाथा॥ हासविलासकरैतिहसाथा॥ ५८॥ दोहा॥ हमरआव
हिवासकरजोआवहिकिहपास॥ आदरकरेनरेहिकडु\
फिरतिहपरैनिरास॥ ५०॥ चौपई॥ अवतीसरोहनडुविधा\
ता॥ जोनरडुषदेवैपितुमाता॥ साधनकोंदेवैसंतापा॥ ह\
नलीजैतीनोयहपापा॥ जोइमहुभनपपालपठावों॥ यह
तीनोअवकाफलपावों॥ विद्यमानपारथअहगिरधर॥ ती
नसपतयहकरीभगवतहर॥ तीनसपतप्रनअर्जुनकीनी॥ ते
हरिभगवतअवनहनलीनी॥ कहिपारथहनभगवतप्यारे॥

अ॰ पु॰ जोनतोहिपठवोंजमहारे॥४८॥दोहरा॥रपसमेनजमहार
भा॰ तफजोनपठोंइहवार॥तीनवानसोंजोनतफलगेतीनश्रव
१८५ भार॥४९॥चौपई॥कंमावेचरवेजोलेवहि॥हसरगुरनजग्या
नगुसेवहि॥ग्ररुतीसरोजनमकाइरग्रहहि॥गुफलागहिनी\
नोपालकपहि॥तीनवानसोंतफजमलोगा॥जोनपठइलाग
हिग्रवसोगा॥सपनकरीपहइहनपरसार॥रोइभएसव\
पानगुहपर॥कयोसपन्नेवचनविजैप्रति॥तमरापकहिकि
योत्रिभुवनपति॥ताहोकतकीजेसंग्रामा॥तमरीग्रोरभए\
घनस्यामा॥५०॥दोहरा॥संषचक्रसुरगदापुनपरमलियेक
रधार॥नेपारपसारपभएग्रजुनकसगुरार॥५१॥चौपई॥त
वकरपारथवानलियेरस॥छाइदियेसनमुषकवंरकस
सपषकरीपीतीनवानकी॥छाइरससरनहिप्रमानकी॥
ग्रावतसरहरभगतनिहारे॥चक्रोंसापरसहिकरिडारे॥ते
कैसेग्रर्जुनकेवाना॥तिनकाकहौंप्रतापप्रमाना॥प्रथमत
तातेंरसोंनिकारे॥होतभयेसोनवगुणधारे॥जवछाइसह
सरसमभए॥भेरसलाषनिकरजवगए॥५२॥दोहरा॥लागत
ग्रवसरकोरसहोतभयेजनवान॥ततछिनकरगहिचक्र
सोंकरेभगतभगवान॥५३॥चौपई॥परिपकवनीहैहैजैसें
वारनलगीकहैमेरनैसें॥गारनजनपन्नेवचनउचारे॥ग्राव\

नपारथवानहमारे ॥ आपसंभारसहूतभगवाना ॥ पठवोंती
नोंसरवलवाना ॥ देकसीसरिससोंकमुमारे ॥ तीनविसषजो\
मुषछूडवारे ॥ धारेहृदेकृसकोधाना ॥ विजैकयोसरपलैस\
माना ॥ संदनसहितविजैनंदलाला ॥ लेफरेतिहसरनपयाला
५४ ॥ दोहा ॥ वडुलधिकारकियोनहींअर्जुनकोजडुराइ ॥ जिन
केवचनअसत्यनहिंभगवहसौपकहाइ ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ तुममुषतें
तीनसरकीने ॥ ववनभंगकरहसपठदीने ॥ तुमरीसपत\
परीतमअपर ॥ देषतधनुआसरमहिअंवर ॥ जेतेअपनेमुषछूटक
हेसर ॥ मेकलिनकोदेहदषणाकर ॥ सपतनतानतुमहीननकाला
लेइसासोअलिअंधपयाला ॥ नवपारथहीननलाकरीअन ॥ कीजे
ककुउपाइरमापन ॥ अवहींवेरइहांसकलावडु ॥ वेगहोइइह\
रिरनपकुचावडु ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ जोलागेगीवेरसुफलोगधिका
रहिमोहि ॥ तोंतेंरनमहिलेवलउलाजहमारीमोहि ॥ ५७ ॥ सोर
गा ॥ पुनठाटेरनमांहिनिकसेवेगपयालतें ॥ टहकनडरतिह
काहिजिहस्तवधानसहाइकरि ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ जैसुनकहैसुनझरा
माना ॥ पुनरनविजैभयोसविधाना ॥ धनुषअरोपोअईचंदस
र ॥ वचनकहेनवपारथसोंहर ॥ अईचंदसांधोतुमभगवाना ॥ पुन\
पारथमुषवचनवषाना ॥ हमरीलाजतुमहिभगवाना ॥ औंऔं
गावडुहमरीआना ॥ विजैधसोहरिपगपरमाधा ॥ राषोलाजअ\

अ॰ श्व॰ नाथननाथ ॥ धर्मनकोश्रणसुबनकीजै ॥ अश्वमेधयज्ञफल
भा॰ हुकरलीजै ॥ ५४ ॥ जै मनडांच ॥ दो॰ ना ॥ जैमुनकहिहुनहोन
१८९ पलश्रीपतभपहिपाल ॥ पारथकोचिंतासहितदेष्योभयोकृ
पाल ॥ ६० ॥ चौ॰ ई ॥ गोवर्द्धनधास्योजिहवलकर ॥ हीयासोव
लअर्जुनकोहर ॥ पारथकमलचरनसिरधारा ॥ उठरनकियोध
नुषटंकारा ॥ तीनलोकपरहररकांपेसुन ॥ सबरमहांभेकार
धनुषगुन ॥ कियोविचारसुधन्नेतनवही ॥ हरिवलदियोतिजै
कोसवही ॥ नवहिसुधन्नेवानचलायो ॥ वेगधनुषगुनकाट
गिरायो ॥ तबपगोवर्द्धनवलधास्यो ॥ भगतसुधन्नेतोरप्रनास्यो
९१ ॥ दो॰ न रा ॥ इतिश्रीभारथपर्व ते॰ अश्वमेधमाख्यान ॥ पूरनधा
प ३ विंशमो कवि ट हुकन मिघ ग्रा न ॥ २२ ॥ ॥ इतिश्रीभारथ
पर्वतेअश्वमेधकेधर्मपत्रआख्यानेभगतसुधन्वाप्रायकग
मनोनामद्वाविंशतमोध्यायः ॥ ॥ जै मनड्यांच ॥ चौ॰ ई ॥ जैमुन
कहैहुनहुभपततव ॥ गोवर्द्धनवलतोरिभगतजब ॥ हरषत
वचनकहेपारथप्रति ॥ सुफलकरियोगुवर्द्धनवलप्रति ॥ हरि
वलकोसुफलभगतविश्वास्यो ॥ तोरधनुषगुनअगनप्रजास्यो ॥
पुनिपारथलागोहरिचरनी ॥ बहुप्रकारविनतीहुवरनी ॥ ला
जहमारीतोहिसामथन ॥ सभमैराषलेहुमेरोप्रण ॥ नृपत
युधिष्ठिरओरनिहारो ॥ श्रीपतअपनाविरहविचारो ॥ अर्जुन

करीवहुतनमनुहारा॥ भएप्रसन्नक्रपालमुरारा॥ ९॥ दो०॥ सा॥ के
सकहेअर्जुनसुनहु वहुबलहमनमदीय॥ तिहबलनोसोह
स्थतुमजीतसपंवरसीय॥ २॥ चौ० ई॥ पारथकोऐसावलदीनो
है कृपालहरिसवदुषछीनो॥ अंत्रनरुष्टकरीसेनाहरि॥ जीपउ
वेजोधामूर्छितधर॥ आरषगुप्रसूरसेनासव॥ भएसहचेतकुरी
मूर्छीतव॥ यपजोननसेनाविस्तारा॥ तिनमहिपउमनमुषा
विचारा॥ हरिहिनसापकरीवहुसेना॥ संप्रोघगएकहतहोंवे
ना॥ हससहहसगजअनिमदमाते॥ मेघवरनमदअंभचुचा
ने॥ २॥ दो०॥ सा॥ अस्वअगुतरसमहावलमानअप्रुतरघजान॥ अ
हपदानपरअगुतलेचलोनातभगवान॥ ४॥ चौ० ई॥ भयोप्रगु
स्रहुपछेसनमुष॥ षटसरमारेहियेपारहष॥ हतनकियेनो
षेवलवेला॥ मारेवडुहस्तीमहिमंता॥ वहुअस्वअसरपअसवारगि
रेषर॥ छिनमहिउरसकलपलेकर॥ सवरउठतभोअतिभैका
सी॥ अतिसाक्रमकिपनातमुरारी॥ वहुरहपछेवचनउचारे॥
स्तनडुअवनरेसलामुरारे॥ ऐसेवचनहरेसुहिधारे॥ मनवच
क्रमकरसमविचारे॥ ५॥ दो०॥ सा॥ नहिजीतोंइसपुरुषतेंकमर
पमारपिजोउ॥ नहहतहराघनलाजनहमपहमानतसभकोर॥
द॥ चौ० ई॥ इनविनजीतसकोंहमनाही॥ हमसारषेजोधरन
मांही॥ हमतोयहनिहचेंजान्योमन॥ तफकोंरियोमहावलम

ग॰ ग्र॰ गवन ॥ जिह्ह बलसों जीती सियमाला ॥ हह्हू धनुष तोस्यो जगना
भा॰ ना ॥ अबलमगर्जत श्रीपति के बल ॥ हम री सेन करी रन हलम
१४० ले ॥ जिह हम गावल कियो प्रकासा ॥ हम हैं तिसहि पुरुष के दा
सा ॥ मृगनवंत कसल लम रणपर ॥ लमरे तिन सहाइ गिरवरधर
२ ॥ दोहरा ॥ अगनत बल ल हमरे विषे जिह् नें रनं इसहाइ ॥ अहह
मह रको एकबलगाका होर नआइ ॥ ५ ॥ चौपई ॥ आवन हैं अब वका
न हमारा ॥ पारथ अपनी करइ संभारा ॥ यह कहि क्रोध हिये
ललकाला ॥ तीन बान अर्जन हीं विकराला ॥ रथ समेत पारथ भग
वनको ॥ उहरा पोलेवी च गगन मों ॥ हय गज रथ पाइक सभ मे
ना ॥ भ्रमत अकास तुषित विन चैना ॥ चक्रपवन वट भ्रमत अ
कासा ॥ जैसें तृदी तेल कपासा ॥ धन्य धन्य कहि कृस्न भगवन को ॥ अ
ति प्रसन्न अलि हियें हरषसों ॥ ६ ॥ दोहरा ॥ कृस्न कहे अर्जुन सहन
हुम बलम बान चलाइ ॥ तों तें सिंधु नहो वही हू देस अहं हं कृन भाइ ॥
७ ॥ चौपई ॥ भगनह धजे रूपइ मारा ॥ करराख्यो उरधान अधारा
तों तें मुऊ हि भ्रमाइ अकासा ॥ मुऊ विन उन के औरन त्रासा ॥ लम
जान न हो पौं अपने मन ॥ हमरे रथ परमारथ भगवन ॥ लव पार
यह रके पगलागा ॥ करी हीन ताहि पअनुरागा ॥ भगतह धज्या
अति बल बाना ॥ हम कों लम गावल मन माना ॥ लवक कवरक्या
करी हमारी ॥ पांडव हैं हरि सरन तुमारी ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ जैसें रक्या

करहुअबतुमत्रिभुवनकोनाथ॥ पांडवप्रीतपक्षानकेकीजै
मोहिसनाथ॥२५॥चौपई॥ धर्मजधर्मजग्योरनिहारऊ॥ करुना
करकारजसबसारऊ॥ जोनहिरक्षाकरऊहमारी॥ सांचकहो
तुमगिरवरधारी॥ तौइमधनुषरेउतजहाथा॥ आज्ञाकरोक
रोंसोईनाथा॥ पारथहेरेनिरखेअभमाना॥ बहुरचलोरनकेस
विधाना॥ तुरतकरनमनमेंहमभयो॥ तिकरहुपक्षेकोबलग
यो॥ भगतविजेश्वतिवचनबषाना॥ सुनहेरथवनसषाभगवा
ना॥२२॥दो॥ तौलगतुमजीमोनहींहनयुधजनरेकान॥ जौल
गषाहस्तवापनहिनिजकरश्रीभगवान॥२६॥चौपई॥ तुमप्रभु
ननिजभगतप्रतिपाला॥ जैसेंहमसेबककरनरसाला॥ भेदनहींक
छुभगवनहिंयें॥ मनवचक्रमनिश्चैमानोजिय॥ सुमोहतातमप्र
भावविनाशी॥ चढिआईरनमहिहितधारी॥ देखोरनपतिकोसं
ग्रामा॥ धमधमकहिपतिकोवामा॥ छत्रिधर्मतुमपरतिपालो
रन॥ तुहकियेसनमुषरनतुममन॥ अबनचलावोसरसन
मुषहूर॥ मुकुमांगलीजैतिहअवसर॥२५॥दो॥ यहसुषपरा
क्रमतुमकियोअबलगसर्बगुपाल॥ कुलतिलासोसकलतु
मप्रभुमांगतजनकाल॥२९॥सो॥चौपई॥ कहेसुधक्षाप्र
भावतीसुन॥ जोअबरनमहितजोंधनुषगुन॥ छत्रिधर्मम
हिहानहोतनव॥ कापरभयोलोकभावहिसब॥ मुकुकोंप्रभु

न॰ ग्रं॰ देहअपनीगत॥ सभविधज्ञानप्रवीनरमापत॥ यहवचक-
भी हिकैग्यातारहई॥ प्रभावतीपुनग्रहकोंगई॥ जनमेजैप्रश्नोजेप्र
१५८ नप्रति॥ संसयहहृदयमिटावहुमुनिपति॥ वलगोवर्द्धनहियो
विनयहहरि॥ कलिवहुषंडनकियोभगवतसर॥ १५॥ दो०॥ स्वामी
केसनमुषलरैसेवककोनहिजोग॥ यहूनसपथजेसंपवैजग-
जोहैनिहसोग॥ १६॥ चौपई॥ तातेंयहविधमुझसमझावहु॥ ह
मरेहृदेसंदेहमिटावहु॥ जैपुनरिषकरुनाअवकीजे॥ यहह-
मंतमुझकोंकहिदीजे॥ जैपुनकहैहमनंदभुपाला॥ सवआपर
नधीनंदलाला॥ हैसारथिअर्जुनकेरथपर॥ वैठेआइकमलजि
हस्रवसर॥ तवहिहथपत्रैहैसविधाना॥ अरपेहरकोंमनमन
प्राना॥ तवहिहथपलेकह्योहृदयपर॥ भयप्रहिअरिकेसारथ
तिरथपर॥ १७॥ दो०॥ भगवतकह्योअपनेहृदेपारथपद्धगुणा-
ल॥ ग्यावतहीसारथिभयोरथवैठोततकाल॥ १८॥ चौपई॥ होनो
सवहोंहिपरमसर॥ सनमुषषठादेहोंहिसतवकर॥ मित्रभावम-
नआसोंहोई॥ सत्रुमापकरिहैहितसोई॥ ताकोफिरसत्रुपहि
वानहु॥ मनवचक्रमनिहचैंनियजानहु॥ मित्रहोइकेसत्रुक
रेहित॥ सोईमित्रजानहुसत्रुचित॥ मिलेसत्रुसोंमित्रजाइजन
व॥ ताकोमहांसत्रुजानहुतव॥ वैठोजाइसत्रुकेसंहरन॥ तातें-
भगवतसदानंदरनंदरन॥ १९॥ दो०॥ वैठोचढरथविमैकेसनमु

षहीरयहोइ॥ मांनेंभगतविचारवोसुजसहूसममतोई॥ ४२॥
चौ॰ई॥ जोग्रवहमनहिकरोंसुहूरन॥ तौलज्जितह्वैक्षत्रिधर्म
पुन॥ जोरनमहिनहियाउमनावै॥ सोनरनरकजोनगतपावै
यहविचारजियसनसुषभयो॥ रनकेअग्रभागचलगयो॥ प\
हुपांडवनकेगिरिवरधर॥ जाकोभगतहियेंनिहचेकर॥ तो
तेंग्राजकरीहमरीगत॥ प्रीतिपांडवनसोंहियजदुपत॥ हरि\
सनसुषह्वैवानचलावों॥ यातेंप्रक्रिपदारथपावों॥ ४३॥ दो॰रा
पहविचारजियकरचलोभगतकुलसविधान॥ शत्रुरथप
रजोचल्योअतिवडवरजान॥ ४४॥ चौ॰ई॥ पहविचारकरस\
नसुषगयो॥ विद्यमानश्रीपतिकेभयो॥ हरसनसुषह्वैपहैगु
वाना॥ नवहरयहमनहहेठाना॥ रथपतेंउनरथरनपरजाव
ड॥ तीनलोककोंछोषमनावड॥ ४५॥ दो॰रा॥ प्रथमहंसधुन
हिरदपरअतिधुनसंषवजाइ॥ पांचजनमधुनअधरधरसव
हकियोजडराइ॥ ४६॥ चौ॰ई॥ देवदत्तअर्जुनमुषधासो॥ संष
महाधुनभगतउचासो॥ सेनाकोंआज्ञाहरिदीनी॥ सुरनसभ
नसंषधुनकीनी॥ तीनलोकधुनसुनरपनाए॥ सवसेनाजव
संषवजाए॥ दुंदुभवजेअपारनिसाना॥ हनफवलोकमहां\
हरमाना॥ सेवककोंप्रभकरतसनाथा॥ यहरक्षाकीनीजदु
नाथा॥ क्षत्रिधर्मराषेजसपावै॥ तीनलोककीरतउपजावै॥

ज॰ भ्र॰ दो॰ १०॥ दोऊपरस्परगतभगतकोमनविचारभगवान॥ पार
भा॰ थहंकीधुजापरवैठायोहनुमान॥ ५५॥ चौ॰ ६॥ तवगिरधरश्र
२५९ र्जुनकेरथपर॥ तीनलोककोभारधरयोहर॥ पांचजनमप्रुषक्र
सधरयोपुन॥ तीनलोककेतैकारभयोतन॥ इंद्रआदसुरेसभआ
ए॥ चढविमानसभनभवहुराए॥ श्रीपतनयहनिहचेंधारीम
न॥ श्रवहीगतपङवावङभगतन॥ तवहरिमनमहिकछोत
रनप्रति॥ सवहमरेउभगतप्रपनीगत॥ प्रुहपरछतवकर
ङविविधसव॥ सेवककोंसनाथकरहोंतव॥ ५६॥ दो॰ ११॥ भग
तउधारनकेसमैंमनमहिकरोश्रनंद॥ इंद्रभसवरषनावहो
स्वर्गकघोनंदनंद॥ ५७॥ चौ॰ ७॥ रूपनहंसधुमंसंछवजावत
धुन॥ कहीवाननहिं सवनकोउसुन॥ तवहरिसवजनतवजेउमहा
महाधा॥ श्रभिमंआश्रतिकरनइनाधा॥ भागवतप्रेषैवीचवा
नके॥ ब्रतपतेजहरिपसोश्रानके॥ कालतेनश्रभिमंत्रमधास
र॥ गाओग्रीगिरधरनमंत्रकार॥ वहुरतेनलैरसश्रवनाग
संभरनसरमदिहरधारा॥ ५८॥ दो॰ १२॥ श्रश्रभागफलकेधर
हिंश्रपनातेजगुपाल॥ रहकनपांरवप्रीतहितजनतनकर
मनंदलाल॥ ५९॥ चौ॰ ८॥ वहुरतेनलेसभसंसारासंभरनस
रमदिहरधारा॥ वहुरप्रुणमहारावलितेऊ॥ जहराएसरम

दिहै रिसेऊ ॥ आरत्रानकी ह्नकलनेउ सब ॥ बङुरराम अवतार
धुरलपसव ॥ तुम्ह पराक्रम बाल वेस को ॥ देखभयो सो बानलेस
को ॥ जैमन कहै ह्नन ऊ भूपलवर ॥ पांऽव हिन घहै अमकीनो\
हर ॥ २४ ॥ दो० ॥ सुनस भगनको देन हिमकरन पांऽकोका\
न ॥ भगनप्रताप वहा वहीरन रक्षा जनइराज ॥ २५ ॥ चौ० ॥ ई ॥ न\
घपि लागहि बान अपारा ॥ अतिसुषमानन हरे सुरारा ॥ जैमुन
कहै ह्नन ऊ भूपलवर ॥ सरकों कीनेव ङुलजननहर ॥ सर्गलो
कध्रुवलोकपपालहि ॥ रपपरभारउनोनंरलालहि ॥ सोपा
पोसरमधमलनव ॥ सपनरीपनवषंऽभारसव ॥ वङुरवि
सको वलसभलीनो ॥ तेसभतेजवानमहिदीनो ॥ अस्यावर
जंगमकोभारा ॥ तेसभतेजविसकमहिडारा ॥ २५ ॥ दो० ॥ रंद
अमररिषसिद्धमुनि तिनको बलकहराइ ॥ अवरसुद्धतेघन
कवललेउ बानमहिपाइ ॥ २९ ॥ चौ० ॥ ई ॥ अपनीकहुनापारगुपा
ला ॥ अभमंत्रनकीनोतनकाला ॥ बानधनुषहरदीनोपारथ ॥
क्राउहरनिपुरवहिसभसारथ ॥ हनऊबानआतापुरुदीनी
अपनेसेवककीगतदीनी ॥ लेसांधोजवधनुषविजेमव ॥\
मुषपहैवचनकहैपारथनव ॥ हनऊहपआसीसनुलारा
जोनकरोंसरसोंइहवारा ॥ मोतनसपपपरेतवऐसी ॥ वर\
नहनावनहोंकहिजैसी ॥ २८ ॥ दो० ॥ शस्त्रीतेजेऊपापहैंते

जै॰ अ॰ लागहिसभमोह ॥ कहिपारथपहवानसोंजोनकटोंसिरतो
भा॰ ह ॥ ३५ ॥ सुधन्वोवाच ॥ चौपई ॥ बहुरसवधर्म्मवचनवषाना ॥ स
१५॰ नलीजेपारथएकाना ॥ पहजोतुमसोंधोकरवाना ॥ जोनक
रौंहैकपमाना ॥ तोहमराविक्तिमहोइसब ॥ जोनकरोंस
रहकहोइअब ॥ हमसमजोअर्जुनजियसाथहि ॥ तऊबल
हीनअवईननाथहि ॥ जानतहोंअबभागमएपुरू ॥ श्रीफ
लहीनीहैंआजाजुरू ॥ अबप्रमानभएत्रिभुवननाथा ॥ जा
नतहोंप्रभुकरतलसनाथा ॥ ३६ ॥ दोहरा ॥ जयपितुमरेबान
महिबलिरामाअवतार ॥ बहुरकसअवतारबलतेपुन
सरमहिपार ॥ ७ ॥ चौपई ॥ विश्वसकलकावलहीनोपुनि
सोसरअरणोतोहिधनुषगुन ॥ एकबारपहवानतुला
रा ॥ करिहोंदोउहूकपहवारा ॥ अहजोपहतुमवारपसार
प ॥ जिहुआजारीनीतुमपारथ ॥ रवकहहतसभठाहैनभ
पर ॥ रिपोमहाबलअर्जुनकोहर ॥ नहिकोइपहवारभग
नको ॥ पहचावहिहरअपनीगतकों ॥ कोधतपारथवच
नउचारा ॥ आवतहैसरभगतहमारा ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ आवत
हैयहविसकअरूभगतहोइसविधान ॥ देषोंकेसंकरोंतुम
होरहूकपहवान ॥ ८ ॥ चौपई ॥ मैपुनकहेसुनइराजाना ॥
कसिअर्जुनकाशेबहवाना ॥ प्रथमेसरनभमारगगयो ॥

प्रलैसवरभयकारीभयो ॥ मघवाइंद्रासनलजगयो ॥ सं
साअधिकविस्मैंभयो ॥ सेसनागसहिसकोनभारा ॥ सा
गरसपलसोकलियोवारा ॥ कांपेषंडमेडलब्रह्मंडा ॥ सप
तदीपहष्ठीनवषंडा ॥ ५३ ॥ दो० ॥ लोकचलईसलोकथ
ववयुकांपेदगपाल ॥ नयग्रर्जुनकसमारहैलीकनसरवि
कराल ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ सुनोगर्जकासवरभगनजब ॥ वान
श्रीकृसनिनिपजानोतव ॥ हृदेहपजाहर्षनभयो ॥ अवहरि
मुरुअपनाकरलयो ॥ मुरुकोंहरिकीनोनिजदासा ॥ दीनी
मुकतसपरनआसा ॥ मुरुकुलकोंकीनीकस्याना ॥ मुरुक
देहहरिसमप्रमाना ॥ रह्योएकसंसामुरुमनमैं ॥ अर्जुन
लोधावचेत्ररनमैं ॥ लेसभक्तिउतवपठिजमधामा ॥ कलि
नकियोअपमेवहूकामा ॥ ५५ ॥ दो० ॥ वीचगगनकेवा
नकोंउपजोरविप्रकास ॥ ऊपरतेंधरपरगिसोउलरक
रवकीनास ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ चमनकारसरकाअतिभयो ॥
रविअप्रकारधारतनलयो ॥ इनतेंभ्रमनवानपठईनै ॥ न
भमगवीचहूकहैकीने ॥ भयोसवदभयकारमहातव ॥ र
विससिमंडलहीकांप्योसव ॥ अमरभगनकीअसतैनकर
ही ॥ हटहहभगनमुषहुउच्चरहीं ॥ वानकृसनकाषंडनकीनो
ततछिनदोउहूककरलीनो ॥ हरिपारथपहिवचनउचारा

नं·भ्र·
भा·
१५१

देषविजेयपहुभयतहमारा॥४७॥दो॰९ा॥सघनतुसारी।
सतनहींकोउनलागेवान॥श्रीपतिकेएवचनसुनपारथ
चिंतामान॥४८॥चौ॰५ई॥अर्जुनदेष्योचिंतसमाना॥भएकृपा
लतवहिभगवाना॥अग्रभागफलहोतनुसरको॥तेजहु
तोमहांगिरवरधरको॥सोउअर्द्धसरलग्योभगतको॥सी
सकाटपठयोहरिगतको॥सषसवरभोजैजैकारा॥पुहप
वृष्टहरकरीअपारा॥वजेवजंत्रअनंतप्रकारा॥सुररही
धुनगगनमंफारा॥स्वर्गपतालनभ्रमसमाना॥वाजतरहि
आतावितनाना॥४९॥दो॰९ा॥चक्रछेदरसनकोतवहिआ
ण्याकरीगुपाल॥सीसउतारउभगतकासुक्रहोइतनकाल
५०॥चौ॰५ई॥काम्योवक्रभगतकासीसा॥जोतसमानीसुषज
गदीसा॥नाहिनपर्योसोउधरनीपर॥आइपर्योहरचरन
कमलतर॥आइउणामचर्नेहरिकीनो॥क्रसउठायहाथ
करलीनो॥अपनेसेवककोसिरलेकर॥धम्मधम्मवडकह
तभयेहर॥महाप्रसन्नभएगिरिधरतव॥गहावीचउहराइ
सीसतव॥हारहिपोकवंधुपितआगे॥देषपिताहाहाक।
रेनेलागे॥पितपगभगतसीसपर्सेनहित॥ढाढाइतोहं
सधुजनरपजित॥५१॥दो॰९ा॥जोइपर्योसिरवेगहीमोह।
हंसधुजनराइ॥सीसकियोनरपहाथमहिवचनकहेयग।

राइ॥५२॥ जै मवङनव॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनडुभूपनवर
सुनसिरलयोहंसधुजकरपर॥ लागोकरननहांविलपाता
कलिहुनकरडुनहमसोंवाता॥ पितसनमुषबोलडकना
ही॥ अमपायोयातेंरनमांही॥ मुषतेंजोइप्रनताकीनी॥ तेव
मश्राजसमकरलीनी॥ कविपर्मपलिपाल्योसभहीं॥ रनमहि
पीठनदीनीकवहीं॥ काहेकरोलाजलमसुफसों॥ बोलडवातकहनतें
लफसों॥५३॥ दोहा॥ तोषकियोप्रणमेंसुवलपड़ीहियेंठहरा
इ॥ हमपावेंगापरमगतरनदरसनजडुराइ॥५४॥ चौपई॥ म
नलमनहिबोलडरहकारन॥ सुफलफदीनोअगनप्रजारन
हमलमकोवङकियोप्रकारा॥ मानापानहिवचनहमारा॥
लमहियहरिदरसनरसनेहा॥ नवहिगसोनहिमोलमदेहा॥
पितापुत्रकोनजनानामुफ॥ दीनोमेलकडाहवीचलुफ॥ सो
मेंहमसोंबोलतनांही॥ फठरयोअपनेमनमांही॥५५॥ दोहा॥
हरनकेरवङहंसधुजहनसिरपरहिहपार॥ हमसोंबोल
डनानअवबडमलगाईवार॥५६॥ इतिश्रीभारथपर्वेलोश्र
मे ध आख्यान॥ दूरन ध्याय रिईसमें कविट हक म जिय
नन॥२२॥ सोरठा॥ पुनजनमेजयराइजैमुनिकहिहनहो
श्रवन॥ कछहंसधुजराइजिमजिमनिरषलनानसिर॥१॥
चौपई॥ सीसपुत्रकोलेनिमहाथा॥ पुनपुनधारनअपनेमा

रा॰ भा॰ या॥ बहुरललाटलिलारकुहावत॥ बहुरसीसलेश्रृंकलगा
वत॥ रूपतमहांदुषकरतविलापा॥ मनमहिंयाद्योमहासं
१५२ तापा॥ बहुरकहेंसुतलछमरेसीसा॥ जिहंश्रवसरकाध्योजगरी
सा॥ धनतुहलछमरीश्रभरामा॥ श्रपमसीसहरिकियोप्रणामा
सुनराजापहंवचनकहेंरूप॥ श्रतिगरगरविनभयोनराधि
प॥२॥ दोहरा॥ सीसधाररूपगोदमहिंहदेमहांदुषमान॥ ति
हश्रवसरश्रापतभयोहरथमहांवलवान॥१॥ सुर सोठाव॥
चौपई॥ कहेंसुरथसुनवचनसुजाना॥ लछमकोंउचतनहींय
हवाना॥ मनकसीसगोदमहिलेकर॥ रूदनकरतमहोलछमपह
श्रवसर॥ कवहूंसिरलेसीसलगावहु॥ कवहूंलेनिजश्रंगलगु
नकीजै॥ जिहहरकोसेषकलछमश्राता॥ दीजेसिरलिहकोप
विलाता॥ लछमवादेरनसंषसवरकर॥ हमनकोंगासाध्यवि
मेहर॥४॥ दोहरा॥ श्रातवेरलेवोंश्रवहि॥ छत्रीतवहिकहाउ॥ च
मसहिंतपारथश्रवहिंवैरलेउश्रवनाहि॥५॥ चौपई॥ सीस
हपनाकोउतसोजव॥ हरिकेपगमहिंनाइपसोतव॥ २
रतप्रनभगतकोमाथा॥ वरनतजेनहिंत्रिभुवननाथा॥ ३
नपहसीसचरनतजकेहरि॥ श्राइपसोहमरेपांइनपरि॥ ४
मातेंतपतपथंइतकीनो॥ यातेंसीसकमलनजदीनो॥ नामह

पठ्ये भगत धराये॥ अंतसमे हरि पग तन जाये॥ तांतें मो मन
महा चिंत अति॥ सम कहत हों सुरपती हि ब्रति॥ ८॥ मै॥ प्त नर
वाच॥ दो॥ रा॥ जैसु न कहि सुन हो न्रपत जन मे जै स विधान॥ सु
रप कहे वच पितासों ले अब कहों बषान॥ १॥ सुरपो वाच॥ चौ
पई॥ सुरप कहे सुन वैन सुजाना॥ न वं ही सिर उत सो सुष धा
ना॥ कियो प्रणाम पसो हर पग पर॥ कुसल कयो तम पहि सि
र हित कर॥ पक्को भगत को पितु पग परसन॥ कियो कुसल तारष
तम रे हरसन॥ अब पितु मुझको आज्ञा दीजे॥ हनों शत्रु धाना
तु षकी जे॥ न्रपत हंस धुज सीस लयो कर॥ पग्र दीनो जन कर नगा
ड हर॥ जाइ पसो सिर गोद सुरारी॥ पुन कर पर धासो गिरधारी
पदो॥ रा॥ राघो सीस गगन विषे आशा दे चन साम॥ वह करमं गा
वोंगा तउ फहि हर न कर संग्राम॥ १॥ चौपई॥ कहि जै मन सुन नर
पति आना॥ सुरप चलो आज्ञा ले जाना॥ रपपर वठ मन गुष
र न भयो॥ जहां मरन कथा नात हां गयो॥ लीनी गदा कोप कै हाथा
सुठ कर नति ह अर्जुन साथा॥ जिह अर्जुन मारो सुष धाना॥ ता
को अब हिं करों तन घाना॥ बढ़ कुसल पति व चन बषाना॥ तम
अति परपंची भगवाना॥ रुक भगत को पक्ष कियो मन॥ एक
भगत को हन न कियो रन॥ २॥ दो॥ रा॥ बुरा न मानो कुसल तुम
वि को पांडवन हाथ॥ हलकर न हो रास जिम जयपति वि भु

जै॰ग्र॰ वननाथ॥ ११॥ श्लो॥ चिंतामणीकौंजारदियोहर॥ ताकेव
भा॰ रलेकाचलियोकर॥ धर्मराजहितजम्मप्रकासा॥ हमोहर
१५३ भगतश्रीतहमारा॥ तमनोग्रंतग्रहीरयुपाला॥ वनचरग
नतमरीनंरलाला॥ काचसांचकियोसांचकाचपुन॥ प
छकियोहरतहीफालगुन॥ तमपशुपालनहूहेविचासो
निरहूषनसेवकनिजमासो॥ हेषहूसेवककोनिजगाना॥
तममारातमवीचसमाना॥ १२॥ मै म मउ वा च॥ दो हा॥ हन
राजावचहरथकेहनतहसेभगवान॥ पुनपारथप्रतिवच
कहेश्रीपतिहैसविधान॥ १३॥ श्री भ ग उ वा च॥ चौ प ई॥ पारथ
देषहरथपरनग्रामो॥ थालाडुषजियमहांरिसायो॥ महाग्राक
मीग्रतिवलवाना॥ गुरुकरेगाग्रलैसमाना॥ इनसोंग्रवन
करहिसंग्रामा॥ रनतनवलडुकरहिविग्रामा॥ इनकोहै
२ वलसीग्रवरपुनि॥ वानहनावतहोंपारथहनि॥ ग्रथमे
तोयहमहाग्रधरमी॥ पुनग्राग्रनहकूनषटकरमी॥ हिति
येवलयहसमसवचनसुष॥ रनसुरावलवंततनहीडुष॥ १४
होहरा॥ पुनतीजोछवियधरमयहतीनोवलधार॥ चहग्या
योरनधातडुषसेनाकैसंघार॥ १५॥ चौ प ई॥ वहुरडुःखवली
नइनकेतन॥ ग्रथमैंथालसंघारभयोरन॥ डुषहूसरोडुषि
नपितमाना॥ तीजोडुषविपवालियथाना॥ गुरुकरेगाग्र

तिमैकारा॥ दिषरावैगाकछुअपारा॥ आजहोइनहिसनमुष
पाके॥ हमतुमरहेनौंसङ्पाके॥ रसअबनारविषबलमुक
कों॥ आगेंहीदीनोसभलफकों॥ सेनाकोंआज्ञादीजैअब। सुर
षमाषसंग्रामकरैंसभ॥१६॥ दो॥ पुनअर्जुनअषवचकहै
हीनानाषरियाल॥ ऐसेवचकतभाषिहोइषभंजननंदला
ल॥१७॥ चौ॰॥ सूरतवंतहमारेरणपर॥ वैवेहोगिरिधरन
लपाकर॥ हमकोंनहांआपरापरी॥ नहांरपाकरतुमहीह
री॥ नवअरहछअवहोसविधाना॥ पुहिकाकोइरश्रीभगवाना
तुमकहितरणमहोवलवाना॥ दैगोलछमोहिविरमाना॥
जैमुनकहैहनडूछपवीपत॥ वचनकहैपुनिकुसविजैपति
रनसमजोधानहितैलोका॥ हनडूकहेंरहमननमषयोगा
॥१८॥ दो॥ तुहिणसरपकोमानकैमननमहिकियोविचार॥
रनसमवलीनअवरमुकरआकोउसंसार॥१९॥ चौ॰॥ जिह
हजविधकोंविनभईमन॥ सोइहरपगवारेषङ्गरण॥ रण
सराहरणप्रणामको॥ निश्चेंआजनजीतहिपाको॥ हमतुम
इछुतबाइरनजावहि॥ कहंहैवैठकैसमैविनावहि॥ करनस
तपघुमनसेनसब॥ गुरुकरहिगेहरपमाषअब॥ आजका
होहमतुमकोंऐसें॥ मानलेहुकीजैकततैसें॥ वैठहिजाइ
करककेपाछे॥ मनवचक्रममानहुतुमसांचे॥२०॥ दो॥ रा

ग॰ अ॰ जोनहिभानउआजरणजानमरावौआप॥काउंगानहि\
भा॰ आनतुमअतिनिपआतसंताप॥२०॥चौ॰पा॰ई॥वहोजोधपह\
१५८ हुरथमहांवल॥आननकाउंगाहुकपहदल॥तांतेभाग
वलडुइहवारा॥मानलीजियेवचनहमारा॥प्रथमेचमूलरे
इहसंगा॥कीनहोइवलवाकेअंगा॥पाछेमारिलेहिमुखकाई
औसेवचनकहेजउराई॥जैमुनकहैसुनहुराजाना॥तवहरि
करीसेनसविधाना॥पारथकोरथहांकगुपाला॥लेभागो\
पाछेनतकाला॥२१॥दो॰हा॰॥जैजाजनपाछेषरेअर्जुनअरुभ\
गवान॥रथअरूढहैसुरथपरनआरभपोसविधान॥२२॥चौ॰पा
ई॥सुरथआइरह्योरनमांही॥हरिअर्जुनरोकपहनोंही॥गर्ज
सुरथमुषववचनउचारे॥भागगएकहांशत्रुहमारे॥जिहर\
नहननकियोसुरुभाना॥तिसहितनतजोकरोंरनहाला॥क
रअपराधभागरनगए॥रननेतेनिकसकहोकहांगए॥वाको
नहिकाउंसत्रुमुरुझ॥आजनहिरनमहिहंतककरोंतुरुझ॥एनहि
छविधर्मसंग्रामा॥रनतनमाइकरतकेलकामा॥छ्रीहैक
ररणतनभागे॥तोकलेकनाहीमुषलागै॥२४॥दो॰हा॰॥सुरथ
हुनाहैसेनकोनिठुरवचनकरक्रोध॥इहतोसेनारीनअति
हष्टपरतनहिजोध॥२५॥चौ॰पा॰ई॥सेनातुमकोंकरोंनछाला॥\
तिसहितहनोंमाराजिहथाला॥सत्रुआनभागकतगए॥चमू

एकलीकोंतजगए॥ सेनाहिषिपतहैंअनिदीना॥ जोसुनहन
नअसमअदीना॥ हनबोलीअर्जुनकीसेना॥ कनिरेहरथक
हैंकरबैना॥ जोकछुबलहैदेहुलखारे॥ जुद्धकरहुरनसाथ
हमारे॥ जोतुमकोंहमजीतलियोअब॥ पाछेबहुसंग्रामकर
हुतब॥ २१॥ दो० ९॥ अरुजोहमजीतोंतफहिरनमहिकरसंग्रा
म॥ काहेकोअइकलकरोपहनरकोकाम॥ २२॥ चौपई॥ जैम
नइच्छाब॥ जैसुनकहैहनरुदेकाना॥ जबसेनापहबचनबषाना
लियोधनुषकरसनमुषआयो॥ जियअपनेमहियहठहरायो॥
वहुशत्रुआवतकरजोलग॥ मारलेऊसेनाअरितोलग॥ पाछे
रहैंशत्रुदेनोंजब॥ कानेरहैंनमारलेउतब॥ जयपितारकप\
हिनभसाला॥ हरप्रभुरयअपबामस्रुपपाला॥ सानहीपषदीन
वर्वंश॥ तीनलोकचौरहुब्रह्मवंश॥ २४॥ दो० ९॥ हूंढनिकारहुकि
तक्षिपहिराघसकेनहिकोइ॥ हननकियोअरुध्यानकोसत्रुह
मारेहोइ॥ २५॥ चौपई॥ नहीकोउअसैसोबलवाना॥ तीनलोकम\
हिसरनिधाना॥ जननमोनहीगर्भतेंकोऊ॥ तावेध्यानसत्रुसुहिजो
ऊ॥ प्रथमकरोंअरिसेनसंघारा॥ पाछेकरिहोंशत्रुप्रहारा॥ प\
हविचारकरधनुषहिलयो॥ क्रोधनहैरनसनमुषगयो॥ लेक
रगदापस्योसेनामध॥ कोपोमहाध्यानदुषगरगद॥ सेनाहनर
हरिसकरडारी॥ सनमुषभयोतालगिरधारी॥ २०॥ दो० ६॥ भुज

ज॰ अ॰ गहिगिरधरलालकोमारगपकोप्रकास॥ नभप्रमप्रमध
भा॰ रनीगिसोमूर्छितभयोननास॥२५॥चौपई॥पुनरूपजोवना
१५५ सरूपमाणा॥सनमुषभयेधनुषलेहाणा॥हतसमेतमूर्छा
ततकाला॥पुनआयोदानवअ्रतुसाला॥ततछिनतिसहिप
यालपठायो॥पुनकर्नजसनमुषचलआयो॥कर्नहतनदको
धर्नपछासो॥अतिविहवलमुर्छितकरडासो॥वहुरषघम्र
भयोसविधाना॥चलआयोरनमैंविरमाना॥पकलोहरपव
इरषहुम्रकों॥देइवनायपिताभगवनको॥२५॥दो॰॥आप
उचारनकेनिमितहरिहतहनसरपक॥कूरतंहीसरपकनें
है॥गपविसकअनेक॥२६॥चौपई॥नवहिहरपकरसहुसंभा
सो॥सभसरकोछंदनकरडासो॥वहुरहरपसरपकनिकासो॥
कर्नषमानतानकरमासो॥महांसवरभैकारीकीनो॥वहुरौंसि
लावानपठदीनो॥क्रोधनहरपगदाकरधारी॥पमोवीचस
भसेनसंघारी॥लगाकोंअगननजरावनजैसें॥कीनीचमूवरी
रणतैसें॥किनहूंकेकरपगकरतोरे॥किनहूंकेमस्तकपगके
रे॥२४॥दो॰॥वहुलतवमूमारीहरपगजरपअ्रषपदान॥जो
कोंलागेगदाकीहोरपरेतनदान॥२५॥चौपई॥जोगनलीनप
हारलगयो॥अनगनसेनाकोहतभयो॥जेरेषेताटेपाछेरन॥र
पअ्ररूतपारषअ्ररूभगवन॥पारषदेषतभयोहरपकों॥आ

बलमारलहूपगजरथकों ॥ लवगिरबरथरबचनउचारे ॥ स
नलेपारथबाकहमारे ॥ हमलमआइकपेइरनाके ॥ देवदवि
अेपराक्रमताके ॥ कीजेहोइस्हृरननलपर ॥ अबरउपारनहीं
इहअबसर ॥ २४ ॥ दो ० हरा ॥ कलकहेआयोहरथदेषविजेरनमां
हि ॥ अबसनमुषहैनकियेभागेकूटइनाहि ॥ २५ ॥ चौ ० ई ॥ क्रोध
नहैवचहरथकहेलव ॥ भागडूकहांकसपारथअब ॥ तुमहीं
हरनकियोयुरुधाला ॥ अबहमलमहिकरोरनघाला ॥ भाग्योर
नतजकुचलआयो ॥ अबहमलमहिभलेकरपायो ॥ यहके
हिहरथधनुषकरलयो ॥ क्रोधमसरवरषातवभयो ॥ चलर
मासकेजलधरजैसें ॥ बरषाकरीसरनकीतैसें ॥ वेधतकियोके
सअर्जुनतन ॥ क्रोधतभयोविजैसनमुषरन ॥ २६ ॥ दो ० हरा ॥ सहस
बानधाखोधनुषअर्जुनहरेहिसाइ ॥ छाइरियोसनमुषहरथ
हिपेंसिमरजडराइ ॥ २७ ॥ चौ ० ई ॥ धजापताकाअबविदारे ॥ छि
नमहिहूककहूककरउरे ॥ बहरोंहरथपांचसरलीने ॥ अर्जुनके
सनमुषपठहीने ॥ पारथकोगुनधनुषजरायो ॥ पुनपांडवकेर
थहिधमायो ॥ चक्रकुलालफिरतकरजैसें ॥ धमतपवंनरथको
रथतैसें ॥ उतरगहेरथनाहिकसकर ॥ धमतनरहेजलनकीने
हर ॥ पकरथकेरथकोंबलबाना ॥ टिकेनतेकधमतविधनाना
२८ ॥ दो ० हरा ॥ रथपरबैठेधारहेरलीतलोककोभार ॥ तौनरहैर

ने॰ ग्रं॰ षधर्मनतैंलागेधर्मनअपार॥७४॥ चौ॰ ई॥ रहेनधर्मनरस्यइह
भा॰ अवसर॥कीनेबहुउपाइगिरवरपर॥अतिअचर्जमनभयोगुपा
१५६ ला॥क्रोधनहैपारषननकाला॥बलकरचक्रगहैभुवमांही॥तो
मरघोरषधर्मणनहांही॥कियेअनेकजतननबलवाना॥तौनध
मणतैंरषउहराना॥उपमाहरषअपारभईतब॥धन्यधन्यरनम
हिमाषहिसब॥जैसुनकहैसुनहुभुवपाला॥अर्जुनप्रतिबोलेने
हलाला॥७५॥दो॰॥ कहांकरोंहमबिजैसुनरषणगाटानहिहोइ॥
जोहमबैठौंपारबलधर्मेअधकमैंसोइ॥७६॥चौ॰ ई॥ हेषहुपार
षसुरषमहांबल॥रषनहिरिकेधमणतैंरकपल॥जोहमकी
नोजतननअपारा॥ताओभवनचलईसभारा॥तीनलोकराषेतिह
ऊपर॥धर्मअधकरषहिकेनभूपर॥भाताइषसरसुरषचलायो
तांतैंग्रैसंरषहिधमायो॥क्रोधनहैमासोकसवाना॥अमहुनहीं
रषभूमठराना॥वहकालाहैसुरषकहोंतुम॥षकोवहढलउपचा
रकियोसुम॥७७॥दो॰॥ रषसमेतनसरहरषकोंलेगइगगनउ
डाइ॥जुद्धरच्योपुनिसुरषनवनभमहिरषउहराइ॥७८॥चौ॰ ई
श्रीभगवानबिजैठाटेधर॥नभतैंकैरेसुरषवरषासर॥बेहूतल
नाहांतधर्मजैसें॥सरनकियेहरिपारषतैंसें॥बेधनकियेकलस्य
गैंनउत॥इषिनभयोअतिहियेंफालगुन॥मेहरीनवरषाबलवा
ना॥त्रिपतकियेपारषभगवाना॥सरनगसलपारषकीपजव॥

रथोनविजयकोरथभ्रमणानव॥ ह्वैरथगगनमेंयानचलावै
मलधरजिमपाहनवरषावै॥ ४९॥ दोहरा॥ एककभ्रमैरथधरन\
परअवररेषरुषवान॥ विजेगियावहुधरनरनकहतभयभग
वान॥ ५०॥ चौपई॥ सोसरनभरिसविजेपठायो॥ ह्वैरथसहितर
थधरनगिरायो॥ न्हइकरनपुनलगेपरसर॥ कुसविचारकि
योतिहअवसर॥ मनहमरारथगगनउडावै॥ वहुरउहांनभवी
चभ्रमावै॥ इमकोंकछनवनेतववाना॥ यहविचारकीनोजग\
नाना॥ कुसनहांहनुमंतवुलायो॥ पारथकीध्वजपरवैठायो॥ र
थकोंवांधिपूंछकेमाथा॥ भारत्रलोकधरयोजगनाथा॥ ५१॥ दोहरा॥
रथहनुमंतकिपूंछसोंवांधलियोततकाल॥ तीनलोककोभा
रथुनरथपरथलीगोपाल॥ ५२॥ चौपई॥ रथकेचक्रधरनमहिदी
नेहरिसुरकविजैमनननवदकीने॥ इहउपाइकीनोगिरधरजव
मिरगोरथकोसकलभ्रमणानव॥ जैसुनकहेहनउभूपलवर
श्रवरगभपश्रमरसभनभपर॥ धर्मपमनुलककहैहरथवल
कविधर्मराजासनमुषदल॥ भ्रमणोतेंजवरथरहिगयो॥ निरष
ह्वैरथनियक्रोधनभयो॥ रथकोंकरसोंपकरउठायो॥ शुवलेंक्रो
धवचनप्रगटायो॥ ५३॥ दोहरा॥ जहांकहांअसोंतहांहरिहनमेंनस
मेत॥ मनवचक्रमपारथपलफहिपठोंकुलांतनिकेत॥ ५४॥ चौपई॥
मैंहरकसोंषेलनकोऊमैसें॥ रथकोंलियोह्वैरथकरलेसें॥ पारथ

ज॰ ग्रं॰ सोंपुनवचनकहेलव॥जहुभाषेउसोंनाहीग्रव॥उसोंकहेउ
भा॰ रथमैंग्रवहीं॥निकसदुनहींलहुंलेकवहीं॥कहेलुपठदेवों
१८७ हल्लनपुर॥दर्सनपरसडुरपलनुपिछिर॥लहेकहेगाधर्मज
लमप्रति॥ग्रग्रछिनायग्रायोग्रानाकिल॥करिग्रायोलमव
डेहकाजा॥ग्रमहरायसहलनडराजा॥५५॥दो॰ह॰रा॥उसोंकहे
हुमेरपरकैसालवेंपपाल॥कहेलुपठवोंजमपुरीरपलम
सहितगुपाल॥५६॥चौ॰ई॥कहेलुपठवोंमधग्रकासा॥इस्थि
तकरोंपवनग्रनपासा॥जैपुनकहेहनऊभपलनव॥ग्रैसंह
रपवचनभाषेमव॥लिपोधनुषग्राहासोंभगवन॥ग्रवलग
मामोवानहवलवन॥पांचवानसनमुषकसमारे॥छहेठ\
हाथकेहेरप्रहारे॥ननविहवलकरधरनगिरायो॥मनकन
भपोहरपमुरफापो॥मनकभपोआम्योग्रर्जुनजिय॥कारोंग्र\
रिकासिरमनसाकिय॥५७॥दो॰ह॰रा॥एकमहरलउलटमुषधर
नीपस्योग्रचेत॥पाछेदैसविधानपुनमुषभाषेवचहेत॥५८
चौ॰ई॥वचनकहलभोहरपविजैप्रति॥ग्रानकरोंलमरानिह
वेहल॥लमरनकियोहनवनमुफग्राना॥ग्रवहमकरोंमोहित
नहाना॥विद्यमानहरकेलमरालन॥ग्रवहींनासकरोंरेषहुर
न॥लमरेरपपरपुरषपुरालन॥वैठोदैसारपीमुहितमन॥\
नयपिकरनसहारलहारी॥पांरवपकलियोगिरधारी॥पार

पग्रुहकार उग्रमाई॥ पूरन चौवीस मो धिपाई॥ ५४॥ दोहा॥
इति श्री भारथ पर्व ते ग्रंथ मे पआध्या नम कवि ८ इकन पूरन भयो
गै विंस धउ प्रमान॥ २५॥ ॥ ॥ चौपई॥ मैं पुन कहे हमन डराजाना॥
हरष विजै प्रति वचन वषाना॥ प्रथमे सपत न करै हम तमग्र
व॥ विद्यमान हरत्नुह करहि तव॥ प्रथमे सपत सहर पकीनी
हुन॥ जोन हि जीतो तरुहि फालगुन॥ तोइ तनने पातक लाग
हिपुरु॥ वरन तनावत हीं पारथ तरु॥ जो रितवै मी इस्री के कर
मल भोजन लेवै अघाइ कर॥ पर स्रुव लीरति जो नर होई॥ वहदों
कनक चुरावहि जोई॥ ९॥ दोहा॥ दान करत जो वरजई मनतरह
भोजन षाइ॥ ब्राह्मण गोरस बेचके धन लेवै उपजाइ॥ १॥ चौपई॥
शाहु वेर नहि मानत जोई॥ मित्र द्रोह करिहैं पुन सोई॥ तब पुरी
षके सममे जो इनर॥ निरवेस मकी गेरहैं भर॥ जो अब हम नां
ही जीतों लरु॥ इन पापन के दोष लगहि पुरु॥ वहदों सपथ
करी पारथ तव॥ जो हम हरपन नास करों अब॥ जो पुरु कों पा
तक पह लागे॥ जो पुरु तें अब वपह हूं भागे॥ जोइ तुम हलाकेर
नकरई॥ जो कोउ विरत घवर की हरई॥ १॥ दोहा॥ गाय द्वीकरस
लिलतें जो कोउ वर्जै रहाइ॥ वह्यर जो इरइ कनत करै पग सों थेतु
उठाइ॥ ८॥ चौपई॥ जो पितजान बूझ केमावर॥ रहै कहतन अब सा
पनर॥ छुवीहै कैहि जनहि पढावै॥ तीरथ जात्रा वरजन रहावै॥ जो

जै·अ·
भा·
१५८

रनकिलविषकोसंतापा॥तऊहिनजीतोंलागेपापा॥हर
षविजैयहसपषपरसर॥कीनीवियमानवैठेहर॥रनम
हिभएहोऊसविधाना॥प्रथमेहरथचलायोवाना॥लीनीका
टविजैकीसेना॥सोगनकहीपरननहिवैना॥५॥दो॰॥पार
थमारेवानप्रनचमूहरथकेवीच॥हयगजरथपाइकसम
रभईसभनकीमीच॥५॥चौ॰॥कवंधनहधझेकालिहप्रवसर
उठनभयोरनमहांक्रोधकर॥रनउनडहदिसभुजाचलावत
वमूविजैकीधरनलगावत॥संडवप्रकारतपर्वतजिम॥क
वंधभुजागतिसूरनकीतिम॥गिरहैंएकहूसरेऊपर॥सेना
सभैपराईजमपुर॥भुजापहारलगेजिनकेतन॥तनकिलच
रनहोइपरेरन॥चतुरंगनिसेनावहुमारी॥कवंधभगनकेस
कलसिंगारी॥७॥दो॰॥वडुरस्त्ररथसनमुषभयोक्रोधहियें
प्रतिधार॥आवतहमरेवानअवपारथआपसंभार॥८॥चौ॰
हरथनिकासोसिंहवाननत॥अभिमंत्रितकरपठईनीत
व॥सेनामहिंवेप्रगट्योवलकर॥महाभयानकसिंहरूपधर
गजगनरथपायकवहुमारे॥फोरफाररथतोरविडारे॥पार
थसेनभईम्रगजैसें॥ववैसिंघसरतैंकइकैसें॥पारथरथपा
कैंचलगयो॥विजैइरथनिपविहवलभयो॥सुषनैंककुनक
हैगोपाला॥मौनधारवैठेनिहकाला॥९॥दो॰॥भगनहथ

मेकेकबंधसेनाहनीअपार॥ बडरहरषकेसिंहसरअघ
गजकियेसंघार॥ ८०॥ चौ० ई॥ ठाढोविजैहारअपनाबल॥ हर
षसबरगंभीरकरनदल॥ पारषलागोपगगिरधारी॥ रक्षा
कीजैकृसलहमारी॥ कछुबलनरहोहमरेतनमैं॥ कैसेजुद्ध
करोंअबरनमैं॥ हमतौबलहाराइहअबसर॥ रक्षाइमरी
कीजैनरहर॥ कमलापतिसुनबचनउचारे॥ अर्जुनअतिअभ
मानतुम्हारे॥ तुमतोनिजकोआपहरावउ॥ सपषकरतअ
हंकारबढावउ॥ ८१॥ दो॰ रा॥ मैंइनजीतोंयोंकरमोतांतैंभयोनका
मे॥ नहांमैंहूंनहांहमनहींजहांहमतहांलाज॥ ८२॥ चौ० ई॥ सप
पकरततबमैंभाषाउष॥ भईनजीतनसहोतनअलिउष॥ ह
मकहहलेजगहोतनतहांसब॥ मैंकहहतेएकोनहोइतब॥ हम
तोसभहरमैंबसिहेंसम॥ हरषसोकनाहिनबापतहम॥ प
षमेतुमअहंकारबढावत॥ पाछेअपनेजियपछतावत॥
तुमरीसपपपरीतुमकपर॥ ठाढेहोरनबीचतहांहर॥ हम
तुमरेरषपरसबिधाना॥ उनकेहहरेबीचठहराना॥ ८३॥ दो॰ रा
सकलठौरसुफवासहै तुमजानोइककमोहि॥ चाररूपअवधा
रकैरषवैताघोनोहि॥ ८४॥ चौ० ई॥ धर्मराजपहहधनहिजान
ने॥ हमकोंअपनेढिगपहिचानत॥ नहिजाननतहमकोंतुम
पांही॥ धर्मजनकोपहहधपककुनाही॥ तीनसरूपहहांआपोप

म॰भ्र॰ र॥ एकसरूप लख्यो रेरपपर॥ सकल जगत महि वास ह्मा
भा॰ रा॥ घट घट विषे अनेक प्रकारा॥ हृदे ह्ररप के ह्म री वासा॥ ल
१५६ मरीर हलकरौं निमहासा॥ पांडव कौ दुष सहित सकौं मन॥
ऐसें वचन कहेत व भगवन॥ ५५॥ मे मनउ॥ च॥ दो॥ रा॥ कलस क
है ऐसें वचन सुन मन में जयराज॥ पारथ हरि चरनन पर्यो
राष विरद की लाज॥ ५८॥ चौपई॥ कवंध सु धनु लै के सेना अव॥ ह
यगज रथ मारे पाइक सव॥ वडे रहे रथ सेना सव मारी॥ रक्षा
करहु मरी गिरधारी॥ सुरथ महा वल अति विकराला॥ लम
विन हमरा कौन गुपाला॥ पारथ पह्व व च भाषें प्रति ह्व॥ सुन
प्रापोर न सुरथ क्रोध कर॥ पांच वान मारे अर्जुन पर॥ भयका
री विकराल पैन अति॥ पांडव कौ गुन धनु षन रापो॥ विजै वां
प गुन अवर सवहापो॥ ५८॥ दो॥ रा॥ कोप एक सो सायक सरपार्थ
रिये चलाइ॥ सर लागे उर सुरथ के धरन पर्यो उलटाइ॥ ६०॥ चौ
पई॥ अर्जुन कौ पष इगकर धायो॥ सनमुष कोप तनचङ्र रथ आ
यो॥ कारी भुजा विसै के सन मुष॥ चली दियो अर्जुन कौं अति
दुष॥ ऐसुन कहै सुन दूरष वीप न॥ छत्री धर्म सुरथ सराय
न॥ श्री पति कर्यो सुनडु वचपारथ॥ रन चहिये ऐसो उरधार
थ॥ उन कौ धन रहनी गिराई॥ वैरी के सनमुष सुचलाई॥ मा
रन परी भुजा रन पाके॥ सन मुष चली जु रह मन जाके॥ ६१॥ दो

दृता॥ बहुरसहरथयसुरासकलसनमुषभयोरिसाइ॥ भुज
कारीजानैनहीं अधिकजुद्धविनवाइ॥४०॥ चौपई॥ हरषग
हीलवगदावामकर॥ कह्योविजैकोलिषक्रोधकर॥ भागाक
हांजाउअबबसुफलैं॥ रनमहिसनमुषहोइकैभजनैं॥ उलटीभुजा
नेकनहिरहैं॥ अबवहीरनलमराहतकरहैं॥ सेनाबीचपसो
क्रोधलअल॥ गदाप्रहारकरतसूरनप्रन॥ एकगदाकोंचोर
प्रहारै॥ सहससहिरहचूरनकरडारै॥ करतगदाहिलियोप्रह
रजव॥ गिरहिसहससहैरथसारथिलव॥४१॥ दोहरा॥ गदालीस
रीजवहनीअसमसहितअसवार॥ अयुतएकहूरनविसोक
रतनलागीवार॥४२॥ चौपई॥ गदाचलतधीसोंपदातसव॥ चूर
नकरडारेरनमहिलव॥ गदापांचवीचोटप्रहारी॥ तिहसों
सेनासकलप्रहारी॥ छठवीगदाहनीभगवनकों॥ मारलजा
सभयोनहिमनकों॥ जैमुनकहैसुनहुपथवीपल॥ अर्जुन
केजियक्रोधवढ्योअल॥ गदाप्रहारदेषहरतनपर॥ पार
थउबधोमहांरिसाइकर॥ बानननकीवरषावढकीनी॥ उत
मैंहरथगदाकरलीनी॥४३॥ दोहरा॥ बाननकीवरषाकरी
पारथहृदैरिसाइ॥ सभसरकाटेगदासोंमानहंसधुजराइ॥
४४॥ चौपई॥ हरथगदामारीनिसंकरन॥ अगनउठतमार
तसेनागन॥ बज्जिमसावनहैंलटगाजेसें॥ हरथप्रजारतसे

जै॰ अ॰ भा॰ १६॰

नातैसैं॥ पारथभयोमहांबिह्वललन॥ कीनोबहुरप्रणा
मस्यामहन॥ अबहमकरनसकोंसंग्रामा॥ हमरीलाजराष
हुनस्यामा॥ जैसुनकहैहनहूराजाना॥ विनसोअर्जुनको
अभमाना॥ लवगिरवरधरभएकृपाला॥ दियोविजैकोव
लनंदलाला॥ ५५॥ दो॰॥ कृस्नदियोबलविजैकोअपनीक
रुणाधार॥ अर्जुनकेरथपरधस्योभुवनचतुर्दशभार॥ ५
६॥ चौ॰॥ पारथकोंआगणादीनीहर॥ करहुयुद्धतनतजि
नजीमहुअर॥ हेकसीसअर्जुनमास्योसर॥ वेधोहरथकि
सोधरनीपर॥ कारहरथकीवामभुजाप्रुन॥ चलीभुजा
सनप्रुषरनअर्जुन॥ बहुरहरथप्रुषबचनबषाना॥ नि
ष्ठलिष्ठपारथसविधाना॥ लमकारीहोउभुजाहमारी॥ हम
लमहेउमहांदुषभारी॥ बहुरहरथबचकहेकसप्रल॥ अ
र्जुनकेसारथिलमश्रीपल॥ ५७॥ दो॰॥ आननकछुशेंविजै
कोहनअतिविधुवनलाल॥ मारेंमारनजुद्धकरवैरलेउगो
पाल॥ ५८॥ चौ॰॥ अर्जुनकोंअवनासकरौंतन॥ हेपडुकैसें
राषहिभगवन॥ अैसेंवचकहिहरथरिसायो॥ पारथके
सनमुषचलआयो॥ रथकोंलिपोउठायसीसपर॥ अतिदु
षपावैविजैसहृदहर॥ पुनअर्जुनसंधैबवाना॥ आनाही
नीश्रीभगवाना॥ कृस्नआपनावलदीनोसब॥ हेकसीसम

रहनेविजैनव॥लगेहरनकेहैसानसर॥विहवलहैंगि
रपलोधरनपर॥४९॥दो०॥चकसरसोंकारेचरनदेहहस
रेवान॥पहुंगनकीनीहरपकीआज्ञासोंभगवान॥२०॥चौ०
ई॥पुनसनमुषभोसरहरपरन॥आगेचलोधसीरआपतन
कहैहलसोंवचनिहुअवसर॥कोउनमारसकैमुरुविनहर॥
पहुवचहनहरभएक्रपाला॥चक्रसुदरसनसोंनंदलाला॥आ
सोकरतभएजगदीसा॥कारदुवेगहरपकोसीसा॥कटोसी
सहरपगलपराघो॥ननक्रलमुषविषेसमायो॥सीसपको
नभकोंजगनाना॥तहांहोनआगेसिरधाना॥२५॥जैसेंवरवा
नलहराजारै॥तैसेंहरपसीसविनमारै॥करीचमूचकरंग
निवाना॥सीसरहतअचरजकीवाना॥अर्जुनकहोहनदु
वंदनंदन॥कवंधकरीसभचमूनिकंदन॥सिरविनकवं
धसुमोनकराचित॥रनमहिकैरेपनापरमापत॥पहहसो
नहमकोंकहिदीजै॥श्रीपतिमुरुपरकहनाकीजै॥२२॥श्री
भगवानउवाच॥दो०॥श्रीपतिकहिनिरषहुविजैकवंधगनकी
ओर॥सिरविनछत्रदिषावहीधनसरसिरमोर॥२३॥चौपई
रकनोलमछत्रीसुराव॥प्रथमहारवाहोनरवरनर॥देषहु
पारथभगानहमारा॥सिरविनकरनफिरनसंघारा॥मुरुसमै
सिरपलोचरनपर॥धनभाइनीकेरहसअवसर॥पुनपारथहर

319

रा॰ अ॰ केपगलागा॥ बिनतीकरीहियेंअनुरागा॥ सुरसुधआम
१९१ भा॰ गनगुपाला॥ ताकोकवंधमहाबिकराला॥ दिषवनहैअति
त्रासबिसाला॥ दिषियतप्रगटप्रलैकाकाला॥ ३४॥ दो॰॥
प्रलैसमैऔउमापतसंषगहैसिद्धमार॥ तिमकवंधरहह
भगतनकेसेनाकरीसंहार॥ ३५॥ चौ॰॥ पारथकोंअतिदीन
देषहरि॥ भएक्रपालकृस्नतिहअवसर॥ चक्रसुदरसनकों
नंदलाला॥ तनछिनकारधरनिपरडाला॥ जैजैकारसुसब
हभघोरन॥ बरषतकुसुमदेषहरषतमन॥ जैजैबाणीहो
नभईनभ॥ पारथजियतबिलगईसभ॥ ३६॥ दो॰॥ अर्जु
नहरिपगलागकेकीनेबहुतप्रणाम॥ रनभगतनकेसिर
दोऊप्रभुहिदीनहिघनसाम॥ ३७॥ चौ॰॥ अर्जुनकहेसुनहु
गलाला॥ मोकोंदेहुसीससदोउध्याला॥ रणकीधुनकेसिषरव
माऊं॥ सत्रुसीसलोगनदिषराऊं॥ रनदोऊप्रभुफवबहुइषरी
ने॥ महाबोधस्वर्धिलरनकीने॥ करनसुतुप्रद्युमनआर
सभ॥ स्वर्धिलकरीहनीसेनासभ॥ रनमोरेमारेबहुमोधा
अंत्रप्रजैननमानहिक्रोधा॥ हमकोंरनदीनोबहुसोभा॥ तां
नैंसिरदिषवौंसभलोगा॥ ३८॥ दो॰॥ रनकेमस्तकधुजापरस
भलोगनदिषराउ॥ ऐसेजोधेहतकियेजगमहिसुजसबढाउ
३९॥ श्रीभगवानुवाच॥ चौ॰॥ अर्जुनप्रतिहरिबचनउचारे॥ ब

हहोतोजिनभगवानहमारे॥ देउनतुमकोंइनकेसीसा॥ यह
होसेवकजिनजगदीसा॥ महासूरजोधेबलवाना॥ छत्रिधर्म
त्रैलोकनिधाना॥ इनकेबलसमाननहिकोई॥ भूतभविष्य
अबनाहिनहोई॥ इनतोमहापरमपदपायो॥ तुमहमारेबी
चसमायो॥ इनकेसीसहरसरीमांही॥ ज्ञारोगाजलबीचनहो
ही॥ ५७॥ अर्जुनउवाच॥ दोहरा॥ ऐसेतुमरेजिनभगवानअतिश्री
तमघनस्याम॥ तिनकेसीसमंगाइहहरिहमतिनकरहिप्रणा
म॥ ५८॥ श्रीभगवानउवाच॥ चौपई॥ सेसुनकहैहनउतपतवर॥
नभतेसीसमंगाइलयेहर॥ दिव्यजोनरविसमकीजेसे॥ अति
जगमगजनहांमिरतेसें॥ सेनासकलदंडवतकीने॥ दोनों
सीसविजेकरलीने॥ अर्जुनअस्तुतकरीअपारा॥ धनगोत्र
पितमातउधारा॥ छत्रिधर्मतुमप्रतपालोरन॥ अंतसमेंत
नक्रोधनमोमन॥ सुषतेकरीप्रतज्ञानोऊ॥ संघरनकीनाथ
लालेऊ॥ ५९॥ दोहरा॥ दोनोंधानमहाबलीइनसमअवरनकोर
जिनसेवकश्रीकृस्नकेअतिकीरतजगमोर॥ ६०॥ श्रीभगवानउवाच
चौपई॥ सेसुनकहैहनउधपाला॥ अर्जुनप्रतिबोलेनंदलाला
देषेपारथभगवानहमारे॥ जिनसुरकेसभजोधउधारे॥ करने
युधममहतजगनुसाला॥ वरूनबेरनभयवेपियाला॥ हमतु
मकोंरथसहतबचायो॥ फिनबीवेरथपालपठायो॥ विह

ज॰ श्री॰ कामीजोधेवलवाना॥हमरेश्रर्थसमर्पनठाना॥इनकोश्र
भा॰ फनिजगतिपद्मवापो॥ननश्रापनेवीचसमायो॥७६॥दो॰॥
१८२ भगतश्रापनेज्ञानकैलीनेमोहिउवार॥जनमकलास्पकि
योइनळविधर्मउरधार॥७७॥चौ॰॥इनकेसिरसुरसरी
पठावों॥श्रवदेपठोंगहरनहिलावों॥मतजगकहैभगतह
मिहोऊ॥गंगाश्रापतभएनसोऊ॥गहरइजुलाइलियोतिहश्र
वसर॥होनोंसीसरपेनाकोंहर॥जहांसुरसरीकोप्रवाहश्र
त॥श्ररद्धतहांहोउसिरविधवत॥षगपतहरश्रतिवचनव
षाना॥कहोंवेनतीसुनभगवाना॥ननश्र्यारेवीचसमाना
कीनोकोरगंगइसनाना॥७८॥श्रीभगवाउवाच॥दो॰॥ग्रग्र
कहहतहोगहरनमरहेनलोगाचार॥श्रापतभयेनसुरसरी
मतजगकरैधकार॥७९॥चौ॰॥भलीवस्तजोनरपपहिहो
ई॥सायतवीचघजानेसोई॥तैसेंहमरासंगषचाना॥ममभ
गतनकोवरश्रस्थाना॥यहहोउभगतनकेसिरताजा॥षग
पतवेगकरहुइहकाजा॥संगमहोइत्रिवेणीजहां॥होउसीस
लेश्ररद्धतहां॥पद्मवैगंगनिश्चमलोका॥विनसेजनममर
नरहसोका॥होउसीसधारेश्रुषवगपत॥उद्योतहांतेवेगपो
नपत॥८०॥दो॰॥गहरउद्योश्रतिवेगसोंगयोसिषरकैलास॥
स॥तहांगौरिसंकरसदाप्रगटितकरतविलास॥८१॥चौ॰॥

ई ॥ गौरी हृष्ट पल्लो षगपति कों ॥ वचन उचारक है षगपति सों
उग्रु लव लगरु ह इ सुष मांही ॥ जिह समान रवि सम सिद्धि विनाही
जग मग गात ब्रह्म विउ जल लता अति ॥ लिषें जात सुष धारे षगपत ॥
शिव जी मो पर करुणा कीजे ॥ यह हेतु तो मोकों कहि दीजे ॥ हृ
रिवाहन के उष मैं जोई ॥ मोकों कहो कृपाकर सोई ॥ तुम तो त्रि
काल गत सभ जानत ॥ गुपत प्रगट सभ विधि पहचानत ॥ ५· ॥
सं करउवाच ॥ दो ६ ॥ ईस कहै गवरी सुनहु षगपत सुष महि
सीस ॥ काटे अर्जुन वान सों ले आना जगदीस ॥ ५ ॥ चौ ६ ॥ एक
समै यह वात सुनी सुजान ॥ सो अब भाषहु ना बल हो उक ॥ सुरथ
सुधन्न के रोउ सीसा ॥ काटै हैं निज कर जगदीसा ॥ भारथ हू को
अंत होइ जब ॥ रथपत होइ गा धर्म नाल लव ॥ जनक करै गा अश्व मे
ध सुन ॥ सेनापत हो वेगा अर्जुन ॥ हो हि सहाइक श्री जदुराजा
क्षाइ हिगे पृथवी पर वाजा ॥ जावेगा घोरा चलत तहां ॥ रथपत हैं
सुधन्न को पुर जहां ॥ ५५ ॥ दो ६ ॥ वांधहिंगे हय कों तहां सुरथ सु
धन्वा आइ ॥ ताव हिंगे कृष्ण जी परम महा सुहृद पगराइ ॥ ५२ ॥ चौ ६ ॥
तव हृ रिच कृष्ण हरसैं न सोऊ ॥ काटहिंगे उन के सिर दोऊ ॥ सुक
धारी मन साल हिकाला ॥ जब इन सिर काटहिं नंदलाला ॥ उ
चत सीस रहं उनकी माला ॥ हर पद्म ध्याभगन सुपाला ॥ मे
हक रौंगा रुंड माल पर ॥ आनक मो गौरी सो इश्रव सर ॥ षगप

ज॰अ॰ ततेंमंगाइअवलेऊं ॥ भृंगीनंदीगणपठदेऊं ॥ देहैंजोनगरु
भा॰ डसिरअैसें ॥ लावहुवलकरजैसेंतैसें ॥ ५४ ॥ सो॰ ८ गा ॥ गौरीम
१६३ नभोनंदवङ्करवचवकहेईसप्रत ॥ सुनसंभुसुषकंदमेरुकंठ
मालाउचत ॥ ५५ ॥ दो॰ हरा ॥ भृंगीगणनंदीवृषभशिवदोलिये
बुलाइ ॥ षगपतकेमुषसीमहैं तिहकोंलावहुधाइ ॥ ५६ ॥ चौ॰ प
ई ॥ सुरपवस्थप्रेकेसिरदोऊ ॥ लियंजातषगपतिसुषसोऊ ॥
लेआवहुवहवेगनाइअव ॥ आज्ञालेगणदोऊचलेतव ॥ आर
गरुडपतिवचनसुनायो ॥ हमकोंतुमपहिंईसपठायो ॥ दीजे
सिरकीजेशिवकाजा ॥ कहैहैरुंडमालसिरताजा ॥ तेसुनकहैसु
नडरपवीपत ॥ पहवचशिवगणकहैगरुडप्रत ॥ पुनषगप
नवोलेतिहअवसर ॥ सुननभपशिवगनसुअवतापधर ॥ ५७ ॥ ग
हरउपाच ॥ दो॰ हरा ॥ सुनभृंगीनंदीवृषभहृदरीनेदोऊसीस ॥ डा
रोंमधासुनाकवीआज्ञासोंजगदीस ॥ ५८ ॥ चौ॰ प ई ॥ पहदोउसी
सहंसधुनताना ॥ निजसेवकपेत्रिभुवननाना ॥ तिनकेछेदे
सीससुदकर ॥ चक्रासुदरसनसोंगिरवरधर ॥ आज्ञामोहिक
रीजगदीसा ॥ लेडारोगंगामहिसीसा ॥ देऊनहींसिरतुमहिगरु
डकहि ॥ जाइपुकारहुअपनेशिवपहि ॥ शिवगणकहैंनजहि
हमनांही ॥ अवहींसीसलेहितुमपांही ॥ षगपतिअपनावल
अलिकीनो ॥ उड्योगरहनभकोमगलीनो ॥ ५९ ॥ दो॰ हरा ॥ शिव

बाहन सुषग रजके आवद कियो रिसमान ॥ हुनकांपै त्रैलो
कसबमानो प्रलैसमान ॥ ९० ॥ चौ० ॥ पगसों नभ हिम रेनउ
डावत ॥ सिंगमारकै धरनषुदावत ॥ इम्यो सेस मरजादस
जीतव ॥ पहस भथरनउडाइ लेगसुव ॥ सबदकरत सुषम
हां क्रोधकर ॥ तीनलोककांपैतनवपरहर ॥ सिंगमारकैसै
लउडावै ॥ हरिवाहनकी ओर चलावै ॥ सुषगरजै धरसिंगउ
भावै ॥ अंधकार रहहिमसुगरावै ॥ भएतिअवसर लोक दुषी
सभ ॥ मानो धरनी उलटावतनभ ॥ ९१ ॥ दो० ॥ धरनी रजउ
डन भवि षेअंधकार अतिकीय ॥ षगपतिअतिबिहबलभ
यो बहुदुषपायो जीय ॥ ९२ ॥ चौ० ॥ तीनलोकमहिसोरपरयो
तब ॥ जान्यो प्रलैकाल आयो अब ॥ हुनकांपेत्रेहांउहिपे दुर
जानहि अवगिरपरधरनीपर ॥ ध्रुरसिंगनसोंध्रुवषोदत
जब ॥ इरपतउदधिनीरसोषतसब ॥ सेसनागनवअतिड
रपावत ॥ सुरपुर सकसोकउपजावत ॥ सिवकेगणसिरदं
डउठावत ॥ नभहिमषगपतिओरचलावत ॥ जहांबद्धतउड
पर्वतपरे ॥ बहुतनगर तिनचूरनकरे ॥ ९३ ॥ दो० ॥ रजधरनी
अहरेतउड अधकभयोअंधियार ॥ कितनेनगरप्रलैभएभयो
महांभयकार ॥ ९४ ॥ चौ० ॥ जैसुनकहेहुनउभपतवर ॥ सिव
गणअतिक्रोधनतिहअवसर ॥ अंगगहहकेहुकहुकमए ॥ सै

नं॰ भु॰ लनसोंसूरनहैगए॥लषहिरनरजषगपतिसंगा॥अलिवि
भा॰ हवलगलितनभोपंगा॥हरिवाहनअपनावलहारा॥उवन
१९८ सकलजनकछअपारा॥गरुडविचारकियोमनमांही॥ओसि
रगंगप्रवाहोनाहीं॥नोहमरेवलहोइधिकारा॥हासकरहि
भुकजोधअपारा॥९५॥दो॰॥ यहविचारषगपतहियेंआगे
चल्योरिसाइ॥उरेगंगासिरगंगमहिभुकथ्याताजइराइ॥९९॥
चौ॰॥ मकनलागोबडुरपरसर॥वडतनुडकीनोतिहअ
वसर॥तिहसोंसिरदेवैनहिषगपत॥नहिछोडहिशिवगण
क्रोधतअत॥अकुलजकलपरेतहांही॥पावनगंगाकेजलमां
ही॥संगममिलतत्रिवेनीजहां॥षगपतिसीसप्रवाहेतहां॥ग
रुडअनंदतभयोमहामन॥आत्माप्रनभईप्यामहान॥सिवसे
वकतहांसिरकाटेगहि॥लेआएततकालईसपहि॥९८॥सो॰॥
भगतनकेसिरनिरषिकेसंकरभयोअनंद॥ पुहमलीतकरिसे
सकलशिवपहिरंगीनेंद॥९८॥चौ॰॥मसनकोकीनीआहा
हर॥नावडलीननीरपावनवर॥प्रथमेलावडमलहरिहारा
पुनहसरोप्रागकोवारा॥संगमजलधगंगकोजहां॥लेआव
तलीनोजलतहां॥सेवकलेआयेजलनीने॥विघमानशिवके
लेकीने॥तिहजलसाथपषारेसीसा॥विधवतसेवकरतभ
एईसा॥चंदनमृगमदचर्चितकीने॥शिवलेरुंडमालमहि

दीने ॥ ९४ ॥ दोहरा ॥ रुंडमाल की मेरु इक किपो सुरिन मन ई
स ॥ हन्यो रावणु हरि के पर कमल भगवान को सीस ॥ ७० ॥ चौपई ॥ नव
शिव इक गणप को कमल पत ॥ दीनो सकल संदेसा विधवल
गणायो हरि पै ततकाल हि ॥ शिव के वचन कहे ते लाल
हि ॥ तम हरि पठे इते सिर दोऊ ॥ डारे गहर गंग मैं सोऊ ॥ गुरु वि
चार कीनो नव मन नैं ॥ यह दीनो सिर हरि भगवान के ॥ लागे इन
हि विधि के बाना ॥ करे सु दरसन सों भगवाना ॥ तन लखुयारे वीच म
माई ॥ लेउ सीस गुरु लिय मंगाई ॥ ७१ ॥ दोहरा ॥ समै पाइ के सुर
सरी गुपत हो इ नग मांह ॥ तुम भगवान के सिर उचत उहां राख
ने नाह ॥ ७२ ॥ चौपई ॥ एक सीस मे हम गुरु कीनो ॥ इनि यह इक पर
धर लीनो ॥ जुग जुग हमरे कंठ विराजहि ॥ तुमरे भगवान हरि पर
राजहि ॥ शिव के हने संदेस कमलजव ॥ भए प्रसन्न हरि हिय गिरध
र नव ॥ कहि जै सुन सुन नरपत महांधुज ॥ पुत्र न को जस सुमोहं
सधुज ॥ कीरत न कर तस तन न की राजा ॥ दोउ सिर धम श्राइ शिव
काजा ॥ सफल भयो अब जनम हमारा ॥ किपो दरस पद पद्म सुरारा
७३ ॥ दोहरा ॥ हमरे भिय आवन अब हि लागे वरन गुपाल ॥ सकु
चो जिन हां सीकर रहि मो सों सभ भूपाल ॥ ७४ ॥ चौपई ॥ भाषहि मो
गुरु कों भुव पाला ॥ सेना नाम मिलो तन काला ॥ वहुरों त्यागन म
पहोउ लाना ॥ भयो हंस धुज विहवल गाता ॥ तौ वल हार कमलप

गलागा॥ छत्रिधर्मअपनाप्रणामागा॥ कहिगेयोकोंहहभयो
अव॥ हीनभयोवलजाइमिलोनव॥ यहविचारकरचलोजो
रदल॥ सनमुषपारथकेआयोचल॥ साथअमितचतुरंगनि
सेना॥ वानककहीपरतनहिवैना॥ २५॥ दोहरा॥ न्रपतहंसधु
मकेचहतवजेवजंत्रअपार॥ चमूनिरषचर्चेनकयोदिषियत
अतिभयकार॥ २६॥ चौपई॥ न्रपतहंसधुजनिकटगयोजव। द
रसकियोगिरवरधरकोअव॥ देषतहीतनमैंद्वैगयो॥ हरिम
नकोमनफेरनभयो॥ इहनमित्रफेसोन्रपकोमन॥ कोऊनहि
मीतहिइसकोंरन॥ तांतैंपावैगाडुषपारथ॥ यहजियजानकि
योयहसारथ॥ पांडवकाडुषसहनसकतहरि॥ न्रपकोमन
फेसोतिहअवसर॥ गदगदहोतभयोभुवपाला॥ अंचलहट
करीनंदलाला॥ २७॥ दोहरा॥ दंडवतकीनोकमलकोंपसोधरन
मुरछाइ॥ न्रपकोंलियोउठाइहरिलीनोकंठलगाइ॥ २८॥ सोरठा
करुनाजलसोंसिंचन्रपतकियोहरिहंसधज॥ मिट्योजनमअ
हमीचकियोकलारघकलसकल॥ २९॥ चौपई॥ मैसुनकहैंस
नहूभूपाला॥ परसोहंसधुजचरनगुपाला॥ हाथजोरविनती
वहुकरी॥ श्रीपतहमरीअपदाहरी॥ भागवडेहमदरसनभयो।
मनममरनमिटहमरागयो॥ ओरदर्सनमुनिरिषसुरदुर्लभ॥
योजनफिरतंहसिवविधसभ॥ धमपांडुसुतनसषामुरारी॥

जनकिपोषदुष्टलिप्रुभकारी ॥ हमकोंधर्मकुमारपकीनो
मघमिसपाइदरसहूरिदीनो ॥ ८० ॥ दो॰ ॥ जोदरसनशिवब्र
ह्मकेनेकनआवतध्यान ॥ सोप्रुफटेओप्रगटप्रवकृपाकरी
भगवान ॥ ८१ ॥ चौ॰ ॥ जाकोंषोजतशिवब्रह्मारा ॥ सोप्रुफटर
सोधर्मप्रसारा ॥ जैप्रुनकहिलनरपतमहांधुज ॥ वकुलदीन
नाकरीहंसधुज ॥ महांप्रसन्नभएगिरधारी ॥ भूपतिपरकरुना
वहुधारी ॥ अर्जुनअरुनरपकोंतिहअवसर ॥ कंठलगाएकुलप
रस्पर ॥ विजैहंसधुजडरजवलागे ॥ करीदीनताहियअनुरा
गे ॥ वारवारनपहरपगपरई ॥ हाथजोरविनतीवहुकरई ॥
८२ ॥ दो॰ ॥ भेटदईनपकुसलकोंत्रहुहेमहिमान ॥ पांचअयु
तरथसर्वभरइकटसअयुतप्रमान ॥ ८३ ॥ चौ॰ ॥ अश्वदएअन
गनतअपारा ॥ वसननभूषनअंतनपारा ॥ अर्पीधनतनमन
सरीरसभ ॥ महांप्रसन्नभएगिरधरतव ॥ हरषतवचनकहे
श्रीपतप्रुन ॥ प्रुफदीनाहरूप्रुकृनरपतसुन ॥ प्रुफकीनसभ
नगरतहांरा ॥ पहपंकीजेतकनरनारा ॥ गर्भकामकुची
लचंडाला ॥ सभप्रसादभेप्रुफभुपाला ॥ सेनापुत्रकलत्रसमेता
प्रापतहोहैंप्रुफहिनिकेता ॥ ८४ ॥ दो॰ ॥ नपतहंसधुजहरिचर
नवकृरपलोलपराइ ॥ कियोकुमारपप्रुरसकलकृपाकरीज
दुराइ ॥ ८५ ॥ चौ॰ ॥ प्रुनरपकुलचरनलागोतव ॥ चंपावती

न॰ प्र॰ प्रवेस करहु अब ॥ सभ पुर लम्ह रसन की आसा ॥ तिन की
भा॰ पुरन कीजे आसा ॥ जैसुन कहै सुनहु रुपवीपल ॥ पहवच
१९९ कहे हंसधुज हरि मिल ॥ भए प्रसन्न स्वीकसल नहांही ॥ हंसधुज
कीनो श्रगवांही ॥ ८४ ॥ दो० ॥ तिह पाछे आज्ञा करी पारथ कों
नंदलाल ॥ आगे कों पग धारिये हय पछाओ नतकाल ॥ ८५ ॥ चौपा
ई ॥ नृपत हंसधुज हय के साथा ॥ चलो दई आज्ञा जदुनाथा ॥ वि
मै चलो पाछे लरंग के ॥ सेना चलु रंग निसंग लैके ॥ कुसल गयो
गजपुर को तहां ॥ मषसाला धर्मज नृप जहां ॥ विचरत अश्व
तहां चल गयो ॥ त्रियाराज महि प्रापत भयो ॥ प्रेमलावती त्रिया
सुन पायो ॥ अदभुत हय पहमरे पुर आयो ॥ जैसुन कहै सुनहु रा
जाना ॥ प्रेमलावती कथा विधनाना ॥ ८६ ॥ दो० ॥ इति श्री भार
थ पर्व ले अश्वमेध व्याख्यानं ॥ प्रथम अध्याय पंचीसमो कवि छत्र
जियजान ॥ २५ ॥ ॥ जैमनउवाच ॥ चौपाई ॥ इक तिय मन महि चि
रत पुरि तन अति ॥ विचरत देखो हय पवि चित्रगति ॥ सापत्र रं
गमन वपु अपारा ॥ हय गज रथ पाइक दल भारा ॥ तिह संग कछी
सहस्र नेका ॥ नृप वहि कियो न जाइ विवेका ॥ सपी कह्यो प्रेम
लावति आगे ॥ सुनत भई हिय अति अनुरागे ॥ प्रेमलावति आ
ज्ञा कीनी तब ॥ ले आवहु पुर मैं तुरंग अब ॥ हय कों गहि लाई त
तकाला ॥ बांध्यो हय प्रेमलावति बाला ॥ ८७ ॥ दो० ॥ अश्व गह्यो ति

नम्राइनियपकलाषटलजोर ॥ नीनलाषचढकामनीश्रा
ईहससिश्रोर ॥ ५ चौपई ॥ कामकंदलासौंछबिकाजल ॥ कूरह
मगैंइवेहायबिरानल ॥ ससिबदनीकुंनलग्रलिकारे ॥ मनु
श्रंबुजपरश्रलिमनुवारे ॥ भौंहधनुषसरपलकचलावत ॥
देषतहीनरकोंसुरझावत ॥ विद्यमानचलकैनवश्राई ॥ नि
रषतमरकैनचमूतिठांई ॥ चमनकारचपलाजैसैंतन ॥ हाव
भावकरवसकरिहैंमन ॥ देषतमरकैभपवलवाना ॥ जेउभा
षतनुधकोंबुधवाना ॥ ५ दोहा ॥ कामालरजेनरहूतेतेऊ
मरकैतनकाल ॥ धीरजकोउनधरसकैनिरषतभपविहाल
॥ ६ ॥ चौपई ॥ पारपश्रनमधुमनश्राटसम ॥ नाइककोधनरसू
कैतव ॥ कामवानहनसबवसकीने ॥ जपपियेहरिभगनष्ठ
वीने ॥ विसरगयोनियजपनहुरंगा ॥ भयेकामवसमनतनश्रं
गा ॥ प्रमलावलीविजैहेलोरन ॥ हावभावकरमोहिलियोम
न ॥ तनमनमोहिविजैरसभीनो ॥ गजऊपरचढाइलियलीनो
हभगश्रंबारीमहिबैठायो ॥ पारघमतिहियश्रनंदबढायो ॥ ५ ॥
दोहा ॥ षानषवावलपरसपरपानदोउरकठौर ॥ चलीबजंत्र
बजाइकैपुरीश्रापनीश्रोर ॥ ७ ॥ चौपई ॥ चढविमानसभचली
सुरिनमन ॥ हयपकोंजीवसहितसेनागन ॥ पाकेइलोकनेका
वालक ॥ श्रापतश्राइभयोमनकालक ॥ देवीश्रपनीचमूश्रमके

मे॰ श्रृ॰ लियेंजाननिपहूपछिनाइकै॥ सेनाकोंदेषोनिहअवसर
भा॰ रकमूर्छिनद्वैपरेधरनपर॥ इकनरहूतीपरअसवारा॥
१९० वसकरलियेपुरषसभदारा॥ पारथकोकर्नजदेषोनव॥
क्रोधनअनिहषकेनभयोनव॥ १॥ दो॰॥ रथहांकोइहषके
ननवदेषोअर्जुनजाइ॥ गजऊपरवसकामकेभयोअचेन
सुभाइ॥ ५॥ चौ॰ ई॥ प्रमलावलीविजैनिहअवसर॥ पानषा
नसुसकानपरसर॥ हर्षनकरनपरसपरहासा॥ मनभावन
नहांकरनविलासा॥ कामवानहनपुरछापसव॥ अथजन
कौविसरगयोनव॥ कहिजैमुनसुनरूपनप्रवीना॥ निपकी
नैसभजोधअधीना॥ कर्नजवचनकहेअर्जुनप्रति॥ पारथन
मरीभईअववरगति॥ हयकोंहननपुरपहुंचायो॥ भलेयुधि
ष्ठिरजनकरायो॥ ४॥ दो॰॥ सुनैनकुनवोलेनमुषचितवे
कर्नजओर॥ ननमनप्रमलावलीकोविजैदोउनिहठौर॥ ५॥
चौ॰ ई॥ देषोप्रमलावनिहषकेला॥ यहवालकनहिभयो
अचेला॥ कामवानसोंसभमूर्छैनर॥ यहवालकनहिलग
हिमदनसर॥ प्रमलावलीवचनभाषेनव॥ सुनवालकनम
रीअरभुनकव॥ कंमाहमरीमुनसुंदरवर॥ होइअरूढसंग
निहगजपर॥ प्रमलावलीकह्योसषियनप्रन॥ मकौवोनहि
यहवालककन॥ मिलयाईसभसषियसहनहल॥ कर्नज

केसनमुषग्राईचल ।। ११ ।। दोहा ।। हावभावदिषरावहीक
र्नजकेसविधान ।। दगकटाछकसमारहीमदनमोहनी\
वान ।। २ ।। चौपई ।। कामकटककोदेषकरनहल ।। कीनोहदे
विचारसोउविन ।। व्रम्यज्ञानसरकार्नजमारा ।। कामकटकट
हदिसकरराजा ।। अलिक्रोधनहषकेनभयोमन ।। सालवानक्षा
देसनगुषरन ।। फेरकामदलदनउनकीनो ।। पारथकोउलार\
गजलीनो ।। उननिपजोरकामदलसाई ।। नवचमकतचपला
कीन्याई ।। मारनकामवाननिपसोऊ ।। प्रकटधीरधसकनन
कोऊ ।। ३ ।। दोहा ।। धनुषउठाइसमसकलनहिसभरनभएअधी
न ।। आपनलागेकरनसरकरनमानपरवीन ।। ७ ।। चौपई ।। क
र्नहनन्नमवहदेविचारा ।। उचलनसूरगुरुसंगहारा ।। प्रथमें
अवकरिहांउसनाना ।। लेहिपचारधनुषअहवाना ।। कर्नजव
लनभयोनिहअवसर ।। पारथसहितकटकटहदिसकर ।। वे
गकियोमंजननलाउपम ।। मनदीनोकीनोसिमरनहर ।। पार
थधसोफसकोध्याना ।। मनवचकरसिमसोभगवाना ।। वा
नीहोतभईनभतेंनव ।। हनअर्जुनसविधानहोइअव ।। ९ ।। दो
हा ।। प्रमलाबनिजीतनकवनविजैसमजियजान ।। जोपारथ
रसवरहुगेजीतहुलवहिप्रमान ।। ८ ।। चौपई ।। वरषअयुत
रकामहुकरहुजव ।। प्रमलाबनीनजीतसकहुनव ।। अैसेवच

से॰ ग्रं॰ नकरहु लियसंगा॥ गजपुर पर सकरोइह संगा॥ अनिसंद
भा॰ र प्रमलावलिनारा॥ कारजकीजे र सहि प्रकारा॥ नभकीवा
२९८ नीहनी फालगुन॥ मनमैं उपज्यो अनि संभ्रम घुन॥ विजैवि
चार कियो मनलाई॥ मुकसौं हांस कियो जदुराई॥ हृषिवानी वि
हवें जियजानी॥ मनवचक्रम करसनमपछानी॥ ८॥ दो॰॥ या॥ वा
नीसनम ग्रकासकी कबहूं अससननहोइ॥ ब्रह्मचर्ज महि इंचन
नहिहांसकियो हरिसोइ॥ ९॥ चौ॰ ॥ ई॥ ब्रह्मचर्ज महिहम रहक
ला॥ उहां जतहन धर्म भुपाला॥ सभविधजान प्रवीन गुपाला
कलिय हव वचभाषहि नंदलाला॥ हमकों गुवलि ग्रधीन जानह
र॥ तौहांसी कीनी इह ग्रवसर॥ नहिलोजनसमै भगवाना॥ य
हवच उचलनक इनप्रमाना॥ दीन होइ कै वरीना रिजव॥ गज
पुर रही जीन कहैं सब॥ हांस्कर हि हरि ग्रनि हमसौं पुन॥ कहि
हैं नियवस भयो फालगुन॥ ९॥ दो॰॥ या॥ अवमोकों यह उचित
है जाइ करैं संग्राम॥ ग्रश्वकुशपो गहकरस्न मूर्छी कैवाम॥ १॥
चौ॰ ॥ ई॥ चलो विजै कर नंजलियो साथा॥ दोनों धनुष लिये निज
हाथा॥ उलनें काम निजु री ग्रपारा॥ सनमुष भई साजदल भारा
एकनीयगज पर ग्रसवारा॥ उनइकलाष चढी हयनाभा॥ एक
लाष लिय रथ पर राजन॥ साईजोर करक छवकाजन॥ जेमु
नकहैं हन हुभूपाला॥ तेउ कैसी हुंदर रहैं बाला॥ दियग्रांनन

नैनैनविसाला॥मुषअनिकांतकोससिजाला॥२१॥दो०॥
जिसकोंदेषहिंनैनभरद्दावभावकरबाल॥तिहनरकोंमूर्छि
तकरैवसहोवैततकाल॥२२॥चौपई॥जेमुनकहैंमनइभपत
वर॥त्रियाराजमैंजोजेहैनर॥तिहकोंमारवदनकेबाना॥कर
हिंअधीनदीनतिहप्राना॥सोनरफिरनजातअपनेघर॥वसी
होइहैमनवचक्रमकर॥वसीहोतहैपुरुषतहांही॥कामवान
लागतउरमांही॥महाअसमहोततांकोतन॥लीनहोतवस
ताहीसोंमन॥एकमासराषततरतहां॥पुनतजदेतजाइम
नजहां॥२३॥दो०॥सोनहिराषहिपुरुषतिहजवलेवहिरि
झुदान॥पुनतिहनरअैसेंकहैंजावड्डनिजअसथान॥२४॥चौ
पई॥देहअसमहोतसोजनर॥चलनसकतसोपुरुषअपन
घर॥तिसहीठोरउष्ठितमरजाई॥पतिसोंकहतमहानिठु
राई॥जानतगर्भभयोहैजवही॥पतिअपनादेवहितजतव
ही॥पतिकोंदेतहलाहलनिजकर॥पलकनपरतजाततत
वहींमर॥होतप्रसूतजवहिवहदारा॥जनमतपुत्रीरूपअपा
रा॥तिनकेगर्भनउपजततबाला॥सुननरपननमेंजयविष्या
ता॥२५॥दो०॥अैसीकामनितनहनिश्चरआईहैइकठोर॥म
दनअंधइहतनीजिमतिमभ्याईदलजोर॥२६॥चौपई॥अर्जुन
सुहृदषकेतहोउरन॥धनुषलियेंकरअतिक्रोधतमन॥प्रम

ज॰ ग्रं॰ लावनीनिकरचलआई ॥ सुषमइवचनकहेप्रगटाई ॥ कहि
भा॰ प्रमलावनिसुननहोपारथ ॥ जिपलैंहरकरङमषसारथ ॥ ओर
१९९ पवलआयेहमरेसा ॥ पुनगहहजिपलनगयेनरेसा ॥ तातेंआइ
अलिंगनकीजे ॥ हमराअधरअमृतरसपीजे ॥ हरकरहजिय
लैंअभिलाषा ॥ अअपरेनहिलमरेहाषा ॥ २२ ॥ दोहरा ॥ नहिजीव
इगेतुइकरमनवचक्रमनियजान ॥ आगेपीछेहोहिगेनासमछ
लारेषान ॥ २० ॥ सोरठा ॥ हमसोंकीजेभोगमनकोंरीझैपरमसु
ष ॥ विनसजाइसभलोगजीवनजनमसफलकरङ ॥ २१ ॥ चौप
ई ॥ तुमसोंवचनकहतनहोंसांचे ॥ सकलमरोगेआगेपाछे ॥ रो
नोंवातनहिमरनउल्यारा ॥ गुइकरउतवहोइसंग्यारा ॥ आगेपा
छेहोइमरनजव ॥ कौंनकरोरसअधरपानअव ॥ कलिकोंतुम
हमरोअकारथ ॥ लेइअधररसपुरवङसारथ ॥ कलिकोमरङ
निसारथतुमरन ॥ करविचारदेषङअपनेमन ॥ जैसुनकहेहम
नङहपवीपन ॥ जवपहवचनकहेप्रमलावन ॥ २ ॥ दोहरा ॥ न
भवानीनिजधारवैअर्जुनकसोउचार ॥ समकहहमहोतुमवच
नसुनप्रमलावनिनार ॥ २१ ॥ चौपई ॥ तुमसोंपुरुषमिलेकङ
कैसें ॥ तुममनोवचनकहतनमुषऐसें ॥ जोनरहमसोंकरैकामर
म ॥ सोनिहचेकरहोइकामवस ॥ सोनरज्ञाननपनअपनेठर ॥
होइइकीपवजाइनेइनर ॥ उचननकरनअलिंगनतुमसों ॥ प

नककिियोचाइनहोमुकसों ॥ जोनरपरेलब्धारेहाथा। मरेतु
करेभोगलमसाथा॥ तोतेंमहांकठनपहवाला ॥ आनइकनन
करोंनघाला ॥ ३२ ॥ प्रमलावलत्रीच ॥ दोहरा ॥ जिहदिनक्षाएटेस
हमकहिप्रमलावनिवाल ॥ अर्जुनजानइसमकरनवहिभए
वसकाल ॥ ३३ ॥ चौपई ॥ जियतेंअवइनिवारइवाला ॥ निहचेंहो
रनत्याराघाला ॥ सोनमकरइअलिंगनमुकनन ॥ तोप्रनमन
पावइजानइमन ॥ अहजोकरनअलिंगनतमअव ॥ पाहीहि
ननुकनासकरोंसव ॥ जीवनजाइनहीहमपांही ॥ सभमारहि
क्काउंकोनाही ॥ तमहीजाननहोअपनेजिय ॥ निहचेंनासकरें
हमकोंतिय ॥ नैनवानवेधाहमजोई ॥ सोनरजीवनगयोनको
ई ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ नैसुनकहितनहोनपनविजैधारहरिध्यान ॥ जी
नवानघटपठदिएप्रमलावतिसविधान ॥ ३५ ॥ चौपई ॥ पुनघट
वानहनेप्रमलावन ॥ भयकारीविकरालपैनअति ॥ पारथके
सरघंडनकीने ॥ छिनमहिहूकहूककरलीने ॥ वरषाकरीसर
नकीवाला ॥ मरनवानमासोविकराला ॥ अर्जुनअतिकोपो
निहअवसर ॥ कसमारेतियकीहिसरससर ॥ पर्सनकियोमो
हनीकेतन ॥ पुनप्रमलावलिअतिक्रोधनमन ॥ अतिरसहि
मेंमहनसरमारे ॥ उठेअगनसेनासभजारे ॥ ३६ ॥ दोहरा ॥ जसो
वांपपनुधनुषकोअर्जुनकोंतिहकाल ॥ पारथसोंहसवचन

ज्ञा॰प्र॰
भा॰
१२०

हैतवषमलावतिवाल॥२०॥चौ०१॥पारषमनमहिकारइन
सोगा॥ पठयोमोहनसरतमजोगा॥वङसरमारनकामह
मारा॥नहिमोहनसरकामतत्यागा॥तमसेजोधावङतहमा
रे॥हनिसरमदनधर्षिकरडारे॥करतेंधनुषतमोग्रगुनतव
प्रमलावतियहवचनकहेतव॥उनपारषमनमोहिविचारा
हमवहमीलसकोंनहिदारा॥वचनकहेहरसतग्रकासा॥गुफ
गान्योकीनोहरिहासा॥२५॥सो०१॥समवचनगुफहरिकहे
वानीभईग्रकास॥तिहग्रवसरवचनमलकेगुफसमऊकरिहा
स॥२१॥चौ०१॥इनसोंपीतमवचनकहोंग्रव॥पहकारजतिर
वाहहोइतव॥याहवचनइनसोंपगदावों॥जोपुनपाछेंग्रयकु
डावों॥विजेमलकावचनसंभारा॥तिहचेंकिपोग्रडुतिरवारा
सीतलवचनकहोतिहग्रवसर॥सुनहोप्रमलावतीनारवर
तमरेवचनकरोंप्रतिपाला॥याहकरोंगातमसोंवाला॥ए
कसपथकरिहोंतफसोंगुफ॥जोहमग्राज्ञामानलेहुतफ॥७॥
सो०१॥ब्रह्मचर्जकेविषेहमवङरमारपीवाज॥हतनपुरम
धसिदकरतमसोंकरोंसमाज॥८॥चौ०१॥मनतइछधासोग्र
फयाना॥ब्रह्मचर्जमहिग्रवगुफगाना॥सतमानतीजेगुफ
वाना॥गजपुरचलइहोइकुसलाना॥मिलीविषसभधर्मज
तपर॥तीनलोकमहिजोडनारनर॥याहकरोंहमतमसोंत

हां॥ गजपुर कुसल युधिष्ठिर जहां॥ जिनकी सषी सायस सम रेख
व॥ चलहीं गजपुर रव रणावहि सब॥ सभलिय मन वांछल वरणा
वहि॥ हरि रसन करहु षड पजावहि॥ ५२॥ दो॰॥ हरसन पर
सद कुशल कोन हां युरे त्रैलोक॥ मन वांछन पलिपाइ सभ विनस
जो हि गे सोग॥ ५३॥ चौ॰ई॥ नैसुन कहे सुन हट घरी पन॥ अर्जुन
पहवचक है अवनि ग्रन॥ सुन युवमिन कोमन भ्रम गयो॥ विजै
वचन सुन हियरट भयो॥ भई अधीन सकल तिह अवसर॥ दीनो
नियन अश्व अर्जुन कर॥ करन लाग आयो निह काला॥ रथ अरूढ
कीनी सब बाला॥ सभ लिय बांध चढा रथन पर॥ हां कहि पे रथ
श्री ब्रजनन कर॥ पाछें नियन सम म कछ लेवाना॥ करहि वियोग
महां विलपाना॥ ५४॥ दो॰॥ राजकुंवर ष्रमला बनी एकलकुस
विसाथ॥ हस्तनपुर कों पठई कर नज अपने हाथ॥ ५५॥ चौ॰
ई॥ पहुंच लोंन मंत्र णी सुमोजुव॥ चल आई वह पारथ पैनव॥ जु
वनी अव रजोर है लाषा॥ लै आई कर अपने हाथा॥ करी दीनता
पारथ पैनव॥ जुवतिन पग हस्तनापुर अब॥ छमा कीजिये
दोष हमारे॥ नमतो अर्जुन सषा मुरारे॥ देष सत्र क हणा अब की
जै॥ नियमु कनाय भेरव डलीजे॥ भला लष्या राव करहि गुपाला॥
कारद कुवर सहित सभ वाला॥ ५६॥ दो॰॥ अश्व कुश पो आप
ना अव हम सों कहां काम॥ कार दे कुयुवमी सकल विजै सुत्रसि

न॰ मु॰ रताजन ॥४७॥ चौपाई ॥ लमसलोइनकौं पठवन गजपुर ॥ यहका
भा॰ मंत कतिय मोहनसुर ॥ सुरेजत्तपर वड्डन रनारा ॥ इनके नो
१२१ नहि साथ भतारा ॥ मिलेन हां सुरन मुनि राजा ॥ यहसम महीं को\
करहि सुकाजा ॥ ब्रह्मचर्ज महि तहां सुर सभ ॥ इनके रूप महां है
हरछव ॥ कामवान इनके रोऊ नैना ॥ मारत नन उपजावत मै
ना ॥ ब्रह्मचर्ज ब्रत षंडित करहीं ॥ पुरुष देख इन धीर न धरहीं ॥ दो
हो दरा ॥ यहका मंत्र क कामनी मोहिलेहि चित चोर ॥ शेष नधीर
न परे को परे जत महि छोर ॥४८॥ चौपाई ॥ करुनाकर सभ लिय\
तनरीजै ॥ क्रोध मिराइ जगत नसलीजै ॥ सुनवो स्रो हष के त\
सुनइ लिय ॥ लमकौं सुवन नतन मं इंगानो जिय ॥ अथ मजत्तकीर
हलकरहि सभ ॥ पाछै नेपुन सुक्रकरहि प्रभ ॥ बड्डर मंत्र लीव च
न वषाना ॥ सुनहुष केत महां बलवाना ॥ एक सहस मष पैले
सावइ ॥ स्रो रसभन कौ सुक्रकरावइ ॥ पुनपारण सुष बचन उ\
चारे ॥ सुन इकर्न सुन वाकहमारे ॥५०॥ दोहरा ॥ छाडदेइ इनस\
भन कौं गजपुर लियन पगाइ ॥ ब्रह्मचर्ज महि जिन सुकहि मोहि
लियो विरमाइ ॥५१॥ चौपाई ॥ मषपर चलन नहीं ऐसी लिय ॥ ले
महि विचार देष कर्न महि प ॥ अरु मोरका है समरे मन ॥ एक\
सहस पव रेपुरहलन ॥ करन सुनत सुनत वहटे विचारा ॥ मेटल
ईका ईस भरारा ॥ अस्थ नहां आगे चल गयो ॥ मनकिन वनम\

हिष्रापतभयो॥ बनमहिएकसरोवरअतिवर॥ विचरतनअव
गयोचललिहपर॥ अववनअंभकियोहयतवंही॥ हैगयोअस
अस्वनीजवंही॥५५॥दो॰ रा॰॥ पारथकीसेनासकलहियअर्जनस
भराज॥ अर्जुनअतिचिंतावटीभयोअस्वनीवाज॥५६॥ चौ॰ ई॰॥ जै
मुनकहैसुनजंमूपतवर॥ सैसाआइवमोरहअवसर॥ चिंतमान
सेनासभलोगा॥ पारथहदैमहांदुषसोगा॥ अवहीयहअर्जनहैग
यो॥ जनतनरंगनरंगनिभयो॥ अंभप्रवेसकियेतेंपहगत॥ होतम
ईहयकीअर्जनवत॥ विजैप्रतापवंदावनकेहित॥ यहविधकरी
मानगिरधरचित॥ सुनजपजनमेजाधरभाउ॥ सरनघरवीस
माअभाउ॥५७॥दो॰ रा॰॥ इतिश्रीभारथपर्वेअस्वमेधेपयाख्यान॥ छ
वीसमोध्याय॥ कविठहकंजियग्यान॥५९॥ चौ॰ ई॰॥ जैमुन
सामीकिरपाकीजै॥ यहहमतेंनहमकोंकहिदीजै॥ भयोनरंगन
रंगनिजैसें॥ हमकोंबिधकहिदीजेकैसें॥ कहषनहोतेजलमां
ही॥ कैककुटोषडलोवनचाही॥ तांतेंहोतमहांअचरजसुन॥ क
हिदीजैहमतेंमुनिजैमुन॥ जिहप्रकारपुनभयोनरंगा॥ सुनइक
हतहोंसोउपसंगा॥५८॥दो॰ रा॰॥ नलमहिकियोप्रवेसनवभईअव
रगनवाज॥ भयोनरंगनरंगनीअतिविसमेसभराज॥५९॥ चौ॰ ई॰॥
अर्जनकेजियमहाचिंततव॥ अतिसैसोगवढोमेनासभ॥ पारथ
मनमाहिकरतविचारा॥ हरिधर्मजसहिकरहिविकारा॥ कहैम

न॰ प्र॰ लीविधजतनकरायो। तारयभयोतवरंगफिरायो॥ पुनपांडवबवि
भा॰ चारकीयोमन॥ प्रथमेहमग्रवलोकलेउवन॥ तबवनमहिहिवि
१७२ चरनसभलागे॥ चिंतवानलिपतेंसुषभागे॥ तपसीएकनिहाले
तहां॥ सिमरनकरततेतजसीमहां॥ २॥ दो॰॥ ग॥ ह्रपचोरबेंरनकि
योरिषपगलागेधाइ॥ कह्योहमोंतनलाइकोतपसीकोंप्रगटाइ॥
३॥ चौ॰॥ ई॥ ननकरतहैंधर्मनरांजा॥ काहदियोहपचीपरवाजा
चलग्यायोहयरहेंग्रस्थाना॥ कियोआरसरवरजलपाना॥ तब
छिनविक्रपुरुषमिटगयो॥ अवरनअश्वग्रश्वनीभयो॥ रिषजीह
मपरकहनाधारउ॥ कीनेकृपाकष्टनिरवारउ॥ पहहेंसंतोंनहम
कोंकहिदीने॥ हरकरऊहदुषसंकरकीने॥ पुनितरिषीश्वरवचन
कहेतब॥ सुनहोअबनहूवोंतभयोसब॥ ४॥ दो॰॥ ग॥ कहेंरिषीश्व
रतनविनेहूतोपवित्रनलाउ॥ आपलागग्रेसाभयोकथाकहोंप्रग
टाइ॥ ५॥ चौ॰॥ ई॥ त्रेतायुगमहिश्रीरघुनाथा॥ वहोलंकपरसेन
संगाथा॥ उतरेआइइसीतलाउपर॥ छनवरमातपसीतिहअव
सर॥ तपसाधनपाविविधप्रकारा॥ अगनहोत्रमषकर्मविचारा।
रसहिमसोवरपरनिमाना॥ करनपुरितनषटकर्मविधाना॥ रघुव
गरिषकीश्रनाकीनी॥ बलननहांलेंयातालीनी॥ बहुतनकालबीते
रिषनहां॥ प्रगटीएकतापसीमहां॥ ६॥ दो॰॥ ग॥ तपसीरवीतकमसी
अनिसंररकविशंग॥ वचनकहतभईरिषपतनीइमकोंवरहूउ।

मंग॥५॥ चौ०६ नवरिषअपनेरिदैविचारा॥ यहराक्षसीभेसति
यधारा॥ धाम्लोदेवांगनारूपा॥ मायारचिराक्षसीअनूपा॥ उज
लतनतुनिरियसमाना॥ पहिरेतनभूषनपरनाना॥ रिषकोंकि
योप्रणामसुरतिनमन॥ सुकसोंकरइसंगरिषवरअब॥ इमनि
जरेइसमर्पोलरुकों॥ करुनाकरइवइलनमसुरुकों॥ यहराक्ष
सीरिषीश्वरजानी॥ मनक्रमवचनिइचेंपहचानी॥ दो०॥ राजलप
कोंवरोंनरिषकह्मोलमराक्षसीनवाल॥ राक्षसमायारचकियोरि
षरेइयहकाल॥१॥ चौ०६॥ वइराक्षसीजननकियेसव॥ तिइकों
वसोनहींरिषवरतव॥ नवइराक्षसीइरेविचारे॥ रिषश्रावननहि
हायइमारे॥ महाकष्टरिषकोंउपजेहै॥ निश्चतिकरमधष्टकरजेहै
इषपावेगारिषवरजवहीं॥ इमसोंप्रीतकरैगातवहीं॥ नवरिष
वैवेश्रगनहीउपर॥ आवैतवराक्षसीक्रोधकर॥ मनुपुरुषस्तव
रषावै॥ रिषकोंमहाकष्टउपजावै॥ दो०॥ रिषवेवेनवकर्मं०
रमैगायत्रीजाप॥ पाइनवरषाकरैत्रियरिषनतहीइसंताप॥ १२॥
चौ०६॥ निरषरिषीश्वरक्रोधवड्योतव॥ भ्रष्टकियेरनतनकर्मस
म॥ रिषकेजिपउपजोवइत्रासा॥ इकरिनइमराकैरेविनासा॥ इक
दिनवइराक्षसीरिसाई॥ करसिंगाररिषवरपहिआई॥ रिषकांतन
नजगमगालजिइ॥ अंवरश्राइगहोरिषकोतिह॥ श्राननकोजेजी
रिषतमकों॥ देरितदानकृपाकरमरुकों॥ इमतुमविषसमयो

न॰ मु॰ श्राप॥ जो न वर कहें हों रिष श्राप॥ ३॥ दोहा॥ रिष रिसाइ के वच
भा॰ कहे बरों नहीं हम तोहि॥ पर्स करों न हितं सहित न श्राप सहों ना सो
१२१ हि॥ ४॥ चौपाई॥ मैथुन न करै ह्वै न इराजा ना॥ नव राक्षसी किया इस
नाना॥ मुष ते बचन कहै श्रैसत्व॥ रिष कों जो न दियो तन मन स
व॥ तो रिष को मुक्त श्राप न लागै॥ उलट श्राप हमरे तन लागे॥ श्र
नो मुक्त श्रर श्रो रिष को तन॥ पति कीनो निहचै वच क्रम मन॥ म
न रिष को लीने श्रापा॥ दुष पावै मन तन संतापा॥ रिष सूस
णी होइ सरसां ही॥ हम होवांगी सूसन हां ही॥ ५॥ दोहा॥ श्रंगीका
र न किया रिष मैं तुमम मी श्राप॥ जो हम रो वच समम पह तो ला
गै रिष श्राप॥ ६॥ चौपाई॥ रिष होइ है सूसणी सरोवर॥ होवांगी हम
सूस पहीं सर॥ नहीं करहिंगे भोग विलासा॥ हटे मिटेगी मन की
प्यासा॥ मुष तें श्राप दियो लिय श्रैसें॥ होत न भए व पुतल किन तैसें॥
रिष तन व पत्यो सूसणी को तन॥ भई राक्षसी सूसतंही छिन॥ नर ते
भयो नार श्रव लारा॥ लिय राक्षसी देह नर धारा॥ लिस हैं सिरस महि
कियो निवासा॥ पायो दिष्टी महा जिय त्रासा॥ ७॥ दोहा॥ देह धार लिय
की रिषी दुष पायो सरमांहि॥ नुवति मन रिष की भई बंधन क्रूट तना
हि॥ ८॥ चौपाई॥ रिष हीनता करी वहइ इरसों॥ मुक्त कीजिये दुष सर ब
रसों॥ तिन लिक रीति रिष इ रिसों नवं ही॥ बालक रिष श्राप लभो नवं ही
विचरन देष्यो ग्राइस भगवन॥ निरष सरोवर मुदित भयो मन॥

मज्जन कौं मन साजिय धारी ॥ करउ सनान भजौं गिरधारी ॥
बालक रिषि पैठे जल मांही ॥ रिषि पग सरस निगह्यो तहांही ॥ क्रू
न बर मेख सुष मैं पग लीनो ॥ बालक रिषि कों दुष न हि दीनो ॥ १९
दो हा ॥ बालक रिषि मन मंहि डरस्यो जल तें निकस्यो धाइ ॥ पले
ख्रूसणी रिस्य न तन परस साथ के पांइ ॥ २० ॥ चौपाई ॥ निषिद्धो ख्रस
णी को बधु रिषि जब ॥ क्रूनवर मेनतु रिस्य पस्यो तब ॥ आगे दु
तो रिषी तन नें से ॥ होत भयो क्रूतवर भांजे से ॥ बालक रिषि की
पूजा कीनी ॥ नपाउ चिन भेरा रिषदीनी ॥ पुन बालक रिषि बच
न कहे तब ॥ कहू क्रूनवर मा यह हलांन सब ॥ क्रूनवर मेंतब
भाष सुनायो ॥ सुन बालक रिषि रिदे रिसायो ॥ आप सरोवर कों
दीनो यह ॥ भाष सुनावों तुम आगे कह ॥ २१ ॥ दो हा ॥ जो पइ सर
बर के विषे आइ करे इसनान ॥ नर तें नारी होइ सो निहचें सत्य प्र
मान ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ सुर नर षग मृग है है जोई ॥ जल परसे है है ति
यसो ई ॥ सुन क्रूनवर में बचन कहे तब ॥ इन की मुक्त होइ बडु री
कब ॥ सरवर सुरूप अकसि पद होक ॥ इन की मुक्त होइ पुन सो क ॥
बालक रिषि करुना सु हि कीनी ॥ भयो दिपाल मुक्त कहि दीनी ॥
मैं सुन कहे हनुमान बपाला ॥ बालक रिषि अति भयो कृपाला ॥
सुक्त अकसी अरु जल की पुन ॥ कहि पग धार मुदित बालक उ
न ॥ २३ ॥ दो हा ॥ हापुर जग के अंत महि होइ क्रम अवतार ॥ म

न॰ श्व॰ भा॰ १२४

हाभारथकुरुषेतपरकौरवहांहिसंहार॥ २४॥ चौपई॥ नत
करैगाधर्मराजसुत॥ अश्वमेधकोसमभविधसंयुत॥ इहतला
उपरश्राइतरंगा॥ परसकरैगाअपनेअंगा॥ होवैअश्वअश्वनी
तिहछिन॥ कुंतीसुतनिजभक्तसामहुन॥ निरमलहोवैगात
लनवहीं॥ धनुषधारैपारथजवहीं॥ ह्वैगीमुक्तराक्षसीसा
षा॥ धनुषफालगुनकुहनसंगाषा॥ २५॥ दोहरा॥ जैमुनकहि
सुनहोनृपतअर्जुनकोंरिषराइ॥ शरवकोविरलोतसवभाषा
प्रगटसुनाइ॥ २६॥ चौपई॥ सुनपारथजिथइहरषतभयो॥ श्रा
योतहांसोगमिरगयो॥ अर्जुनजलमहिधनुषपषारा॥ भोइ
यविक्रमिरगाईनारा॥ जलनिर्मलअतिपावनकीनो॥ मुक्ति
येपारथइयमीनो॥ अंगुराक्षसीअश्वथवीनो॥ मनवचक्रमनि
इचेंयइमीनो॥ भक्तनकीसहाइजदराजा॥ यहविधमुक्तकीपो
तइवाजा॥ जैमुनकहैभूपधुवनतसुन॥ श्रागेचलतभयोतुरं
गपुन॥ २७॥ दोहरा॥ आगेअतितुथानवनअश्वचल्योलिहश्रोर
पाछेपारथसेनजुतचलतभयोदलजोर॥ २८॥ चौपई॥ अर्जुन
अतिअभमानहटेकहि॥ हमरारसनकाउधरेषइ॥ लोंतेह
महांअतिबलवाना॥ अवरकोउनहिमोहसमाना॥ चल्योतुरंग
तोरवनजहां॥ पांचनृपतपाछेभयेतहां॥ एकहंसधुजनृप
विषाता॥ नन्हसमोकर्नकोताता॥ श्रहतीमरोप्रधुम्नकलप

ते॥ चौष्यौपुनअर्जुनसालमहाद्रुत॥ बहुरयोचमोजोवनासरूप॥
हयपाछेपहबलेनराषिय॥२९॥ सो०॥ हयपाछेपहपोंचरूपसे
नासंगअपार॥ गवनतअस्वनहांगयोजहअलिवनभयकार॥३०॥
चौपाई॥ वनमहिएकतलाउविमलजल॥ विवरतगयोतहांरंगत
हांचल॥ हयजलपानकियोतनकाला॥ दैगोसिंघरूपविकरा
ला॥ पहपाछेधावनलागोतव॥ अवरजभयेरूपतसेनासव
आईविजेसाथसभसेना॥ तिनहूंसिंहविलोकोनेना॥ अर्जुन
अविविंतानुतभयो॥ नीदभूषभलीसुघगयो॥ पारथकहेभले
गिरवरधर॥ सिंहतलरंगभयोलिहअवसर॥३१॥ सो०॥ किपोसा
रथीअस्वकोमुरुकोंधर्मजराइ॥ सिंहभयोलिहअस्वतेदेषेभय
उपजाइ॥३२॥ चौपाई॥ पहहुतोतमहनपावहिगेहर॥ वहुरहनेगा
रूपतजुधिष्ठर॥ निंदहिगेहमराघुरथारथ॥ कहिगेरक्षाकरी
नपारथ॥ नीकेफेरअस्वगहल्यायो॥ भलेधर्मसुतजगतकरायो॥
जनमेजेएकोजेमुनपति॥ पअस्तनावोमुनिमुरुहरषत॥ हयतें
सिंहभयोकहुकैसें॥ मुरुकोंभायसुनावहुतैसें॥ कैहयनहैहैंन
लमांहीं॥ कैहयनकहुभयोनहांहीं॥३३॥ सो०॥ कौंकरभयोत
रंगपुनकहिजैमुनप्रगराइ॥ हमरासंभ्रमदूरकररूपाकरउ
चौपाई॥ जैमुनकहेसुनहुष्पवीपत॥ उत्तरपअ
रिषराइ॥३४॥ चौपाई॥ जैमुनकहेसुनहुष्पवीपत॥ अनरषअ
कहतहांतमपत॥ उनोआपरिषकोतलाउतिहं॥ नहांकियोत

ग्रं॰ ग्र॰ लपानग्रग्रइह॥ननञ्छिनग्रग्रसिंहबगुधारा॥निरखविजैजिप
भा॰ चिंनग्रपारा॥लागेचिंनकरनसभराजा॥सिंहरूपधासोजनबा॥
१७५ जा॥पारथकरनहनहग्रनुसाला॥हरिहतजौवनासभ्रपाला
बहुरहंसधुजयहषछोनव॥हेरनलागेगहबरबनसभ॥४५
दोहरा॥गहबरबननहांढूंढिपोनपसीरेआएक॥नामरिषी
ग्रनुसंगनिहगुणनिधबुद्धिबिबेक॥४६॥चौपई॥रिषबैनाधा
रेसमाधजनब॥इनसबंहीकीनोप्रणामनव॥सबरभणोजनबरि
षकेकाना॥कुटीसमाधभणोसबधाना॥रिषधूछोनबरनहिस
भनघत॥तुमभयकारीबनआएकत॥नामग्रापनेकहिग्रगहा
बहु॥ग्रापकिहनमिनसमझाबहु॥किहकारनतुमइहबनमो
ही॥ग्रर्थकौनग्राएइमपांही॥सभहतांनग्रभाषहनाबहु॥ग्र
पनेहृदेसंदेहमिराबहु॥४७॥ग्रड़िल्ल चौपाई॥दोहरा॥इमपांडवरि
षबरसनइजतरयोनमताल॥हमग्रर्जुनइयसारथीकीनो
त्रिभुवनलाल॥४८॥चौपई॥यहपग्रमनकुसकोनेहन॥पुनहिष
केतसञुदलकंहन॥जौवनासराजाग्रनुसाला॥बहुरहंसधुजरि
पबीपाला॥मघकोइपयहबनग्रापोग्रब॥सरजलपानहरंगकि
योनब॥ननञ्छिनभणोसिंहकोरसन॥नबहीजलइयबरकियो
परमन॥देषमृगनपाकेउठधावन॥इमहिनिरखभञ्जनकोआ
बन॥रिषबरइमपरकरुनाकीजे॥बहुग्रातरंगरूपकरदीजे॥४९

दोहा ॥ हम हूं जीत हि जु इक कर मोर पवं धा होइ ॥ भयो अबते मि
हव प्र अति अचर्ज मिय सोइ ॥ ४० ॥ चौ० ॥ जिह तलाउ इह प किय जल
पाना ॥ तिह सरवर को कहौं विधाना ॥ जै सुन कहि सुनहो नृप तन
य ॥ दीन वचन भाषे अर्जुन तब ॥ तव रिषि इन कों किपो प्रणामा ॥ जा
ने निज सेवक उचन सामा ॥ वचन उचार कहे सुभ रिषिवर ॥ रिष को
श्राप इहु तो रहु सरवर ॥ सोई श्राप अब पूरन भयो ॥ तुमहर सन उन
काउ घग यो ॥ जो इय प्रश्न श्रम पुरुस मुरुसों ॥ सुनहु अब वन भाषे सभ
तफसों ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सरवर जल को श्राप जिह दियो रिषी अर आ
र ॥ सब हलोल तम सों कहौं सुनहु अब वन चित लाइ ॥ ४२ ॥ चौ० ॥ दे
वांगना एक सुभ रूपा ॥ तप सिव कव भगवती सरूपा ॥ एक समै
कैलास गई जब ॥ आगे बैठे थे संकर तब ॥ किपो प्रणाम मनोरथ सुग
हापा ॥ शिव चरनन पर धारो माथा ॥ हरपत की कीनी अस्तुति अ
न ॥ भये प्रसन्न भगवती तब ॥ पुत्री मन सारथ है जोई ॥ मांगले उ
हम पदि वर सोई ॥ देवांगना कहौ तिह अवसर ॥ शिव जी मो कों दी
जै पइ वर ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ वन के विषे तलाउ इक करौ तप साना
र ॥ यह वर दीजै मोहि कों शिव जी करइ सहाइ ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ जो सु
थ कहूं होइ तत काला ॥ मिथ्या सब दून कर इ कृपाला ॥ नीलकंठ
दीजै करुनाकर ॥ यह वर दीजै मोहि कृपाकर ॥ जै सुन कहे सुनउ
श्रवीपत ॥ रिषि धनमंड कहत अर्जुन प्रत ॥ संकर देवांगना दि

घोवर॥जोतुमकहोहोइतनिहचैवसर॥आज्ञातुमैजाइतपकीजे
मनइछतसिमरनकरलीजै॥वैवीआइतहांहीनलाउपर॥भयकारी
वनमांहिध्यानधर॥५५॥दो॰॥ग॥इकदिनआयोपकघलनिरषीहं
दरनार॥वचनकहतभयोग्रहमनदेवांगनाउचार॥५६॥चौ॰॥ई॥
हनहोदेवांगनाअनूप॥तुमरीछवनननदिव्यसरूप॥कलिकौं
देहगवावनग्रैसैं॥करतकठनतपतपसीजैसैं॥तपकररहेहनि
हतुषकेकाजा॥तपविनतुकदेषौंसुषसाजा॥जोतुमसुफकों
करहुभताग॥तुककोंदेउसकलसुषसारा॥प्रापतह्वैहैतुकहिप
रमसुष॥भोगपरमसुषविनसजाहिदुष॥निहच्नमितलपकत
नरघोग्रव॥हमतुमकोंआपनकरिहोंसव॥५७॥दो॰॥ग॥देवांग
नावचनलोभकेवचनकहेपगरार॥कवहूंछलमायारवेग्रवरसरू
परिघरार॥५८॥चौ॰॥ई॥कवहूसिंहरूपदरसावै॥देवांगनकोभय
उपजावै॥देवांगनाकरैमनजननव॥फारिहिरूपधरदुषदेवैतव॥उ
नमुषवचनकहेछलग्रैसे॥तुफडिनकाशंजैसेंमैसें॥जपतपस
भघंडमकरहोंतुफ॥कलितुमसुफकोंवरेनहीसुफ॥उहषरूप
हैपानकरेनल॥उनहैजावैसिंहमहावल॥मतकीनोपापीग्रैसे
मन॥देवांगनाकरीभछननन॥५९॥दो॰॥ग॥टीनीउारदेवांगना
तिहतलाउकेमांहि॥दुषधरयोवपुग्राहकोपैवलिषोपगनाहि॥
६०॥चौ॰॥ई॥तवपापीद्वारहिपगनाही॥कोपीदेवांगनमनमांही

350

प्रथमे आपहि यो जलकौं नव॥ यह इहि षन जिय नानकहीं अव
सरवरमं हिरे ओप्रभवारा॥ नवहीं इहां इछ पगधारा॥ इलोन
मांझ सरोवर जो जल॥ आवन लोन इश्य इह ठां चल॥ नवउ फश
पतनन कों यह इष॥ तांतें हर करों जलको रुष॥ यातें प्रथम अ
पजल रीनो॥ पावन अंब अपावन कीनो॥५५॥ दो॰ ६०॥ यह सरको
जो जल पियै पसु पंछी नर नार॥ अपनावर नमिटाइ कै है है सिं
इ अकार॥५६॥ चौ॰ ६१॥ पुन यह षल को आप इ मारा॥ थाइ इहो रर
इ सरहि मंझारा॥ आपहि यो यह रे वां गन नव॥ काइ चली वर
ठौर शीघ्र नव॥ बीत गये पुन किननेकाला॥ एक दिन रिष अन
मेंइक पाला॥ जेता युग का अवसर भयो॥ विचरत नहां अरंइरि
षगयो॥ नीरथ रहन करनचल आयो॥ सरवर निरषत हीं सर
भायो॥ जैसुन कहैं इन इ रूपवीपत॥ रिष अनमें इकहत पाइव
पत॥५७॥ दो॰ ६२॥ रिष अरं इ जल देष के हृदे लियो इछ मान॥ इ
भग ठौर रमनीय जल कर लेवों इसनान॥ ५८॥ चौ॰ ६२॥ गायज्ञीव
इकर्म विधाना॥ इइझेइसिमरों भगवाना॥ वहु उनार किया स
पर्स जल॥ गयो अरंइ सरोवर तें चल॥ नित कर्म कीनो तिह अव
सर॥ सकल समर्पे हरि महि रिषवर॥ पुन अभिषेक दियो कर रेसो
नव॥ तोष करन वै रिवे वेसव॥ सिमरन कर तोष इहरि देवा॥ कीनी
मनकर विध वनसेवा॥ निगम मंत्र पढ तोष रेवतन॥ अर्चे दिया

ज॰ सु॰ रविकोहरषतमन ॥ ५५ ॥ दो० ॥ पैंडोवीचनलाउजवपकर
भा॰ यैंविपोग्राम ॥ इस्योरिषीस्वरहृदैमहिग्रासकियोनहिंत्रास ॥ ५६
१७७ चौ० ॥ इहपरसजवरिषकोभयो ॥ रिषपदपरसश्रापमिटग
यो ॥ ततछिनरिषरूपदेहतिनधारी ॥ रिषकोंकियोप्रणामअपारी
लागोशकुनवदहंउनप्रत ॥ किहअपराधभईलमयहगत ॥ रि
षकोंसकलहतांतसुनायो ॥ जिहहरषनतेंयहवपुपायो ॥ तन
रिषकेंबिनतीवहुकीनी ॥ तुमकरुनाकरमुजगनहीनी ॥ साध
संगतेंभयोमुकतहम ॥ भयोपवित्रदेहमनवचक्रम ॥ ५७ ॥ दो० ॥
अवरवेनतीसुनहुरिषरहहसखरकोश्राप ॥ दीनोतिसहिदेवां
गनाजिहमुकतियोसंताप ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ अैसाश्रापरिषोतिहि
वारा ॥ जोइनीवश्रचवैयहनीरा ॥ नरअथवापंछीमृगकोई ॥ यह
जलपीयपिहपुनहोई ॥ हमराशेषमिटायोजैसें ॥ जलकाश्रापमि
टावहुतैसें ॥ रिषवरअपनीकरुनाकीजे ॥ यहजलकोनिरमलक
रलीजे ॥ ववनउचारकहेरिषवरतव ॥ द्वापरजुगकाअंतहोइज
ब ॥ दैहैतववलीकलसुववतारा ॥ हरकरजनधरनीकोभारा ॥ ५९ ॥ दो
हा ॥ महाभारयुधनवहोइगाकौरवहोहिविनास ॥ पानकेंसाथ
भमततजिहकोंहरिकीआस ॥ ६० ॥ चौ० ॥ कुलहषनतियधर्म
धारनव ॥ पतनकेंगायश्वमेधतव ॥ शर्गनहोवैगाइहसारथ
होइसह्यपरमपुरधारथ ॥ इहयज्ञवैगाचलइहयाना ॥ करहै

रहूसरवरजलपाना॥ सिंहहोइगाइयलिहयुवसर॥ उपजैगा
पारथकेहियडर॥ अर्जुनहोवेगाचिंताजुत॥ हूंढेगागहवरवनर
नउल॥ लहोंपावेगाएकरिषीस्वर॥ ममरिषीमुनमंडलपीलर॥
९८॥ दो ॥ वा॥ विजैनिरषमुनमंडकोंउपजैगाचितचाइ॥ शकेगा
विरलांनइपरिषतेंवचप्रगटाइ॥ ९९॥ चौ॰ ॥ सिंहभयोहैस्रथ
इमारा॥ कृपाधारककौनप्रकारा॥ जिनउपाइहैहैपुनवाम
मोविधमोहिकहोरिषरागा॥ सभसेनाजियभयोवियोगा॥ क
रूनाकरइमिरावहूमोगा॥ धर्मजकोमधष्टरनकीजै॥ सिंहरू
पतेंइयकरदीजै॥ हयकोनिरषहोलहरषनमन॥ भयउपजा
वनहिपेंलरंगन॥ जिइप्रकारहयनिर्मलहोई॥ कहोउपायरिषी
स्वरसोई॥ १०१॥ दो ॥ वा॥ प्रकेगामुनमंडपहिपारथजियधरभार
नवप्रसन्नताहोइगाकहैहलांलसनाइ॥ १०२ चौ॰ ॥ आनातैहैस्र
र्जुनकोंलव॥ कररसनानविजैरहसरस्रव॥ कररहूगापत्रीकर्म
विधाना॥ धारइहूदेकुसकोध्याना॥ हददहोइसरवरजललवही
परसकरेगाअर्जुनजवही॥ पूछहिसिंहदेहफेरेकर॥ अश्वहोइगा
पुनलिहयवसर॥ मांलेंगाइकरइरहकामा॥ सिंहविक्रमिटहै
दूकावासा॥ जेमुनकहैहैलनइभूपनवर॥ श्रेसंवचजवकहैरिषीस्वर
१०५॥ दो ॥ वा॥ पारथश्रुतिप्रमुदितभयोलनरिषकेमुषबैन॥ रिष
कीपूजावहुकरीहदेधारमुलिचेन॥ १०६॥ चौ॰ ॥ अर्जुनकर्नजाय

न॰ अ॰
भा॰
२७८

रुअनुमाला॥ न्रपतहंसपुनसुतनंदलाला॥ कहवोजोवनामसु
जानत॥ लेरिषकीआज्ञाआपेसत॥ आवतविजैकियोअसनाना॥
धासोहृदैकृसकोध्याना॥ ततछिनजलनिरमलह्वैगयो॥ मिष्ठो
आपअलिपावनभयो॥ विजैसिमरकैत्रिभुवननाथा॥ फेसोसिंह
पीठपरहाथा॥ अर्जुनहरिकोसिमरनकीनो॥ मनलेकृसचरन
महिदीनो॥ ८७॥ दो॰॥ जैसेंहरिरक्षाकरीदुरवासाकीवार॥ पुन
लाषाग्रहमैंनरतनमहीलियेउवार॥ ८८॥ चौ॰॥ राषीद्रुपदसु
ताकीलाजा॥ तैसेंलाजराषियेवाजा॥ यहकहिवचपुनध्यानध
सोहर॥ फेसोनिजकरसिंहपीठपर॥ ध्यानधारविजयेपुनदेखो
जैसाथातैसाहृपपेखो॥ सिंहविङ्गलततछिनमिटगयो॥ तद्दूरत
रंगमतैसाभयो॥ जैमुनकहैसुनहूराजाना॥ भगतनकीसहार
भगवाना॥ आपअसुकोआपमिरायो॥ अर्जुनकोलाहजसवढा
यो॥ ८९॥ दो॰॥ अथचत्योसविधानहै वजैवजंत्रअपार॥ सेना
सभअसुरितभईकियोकस्नजैकार॥ ९०॥ चौ॰॥ वनतेंनिकस
चत्योत्तरंगतव॥ पाछेचलेमारिभूपतसव॥ आपतभयोअसुव
ततहां॥ भीषणराकसिकोपुरजहां॥ जैमुनकहैसुनोहोभूपत
रक्षाकरतभगतनकरश्रीपत॥ करतपांडवनकीप्रतपाला॥ भग
तनकेअधीननंदलाला॥ नरपतकृपानिनङ्धरभाउ॥ प्ररनसप
तवीसमेंध्याउ॥ ९१॥ दो॰॥ इतिश्रीभारथपर्वेअश्वमेधपर्वेअ

न॥कविइइकनपूरनभयोप्रप्रविंप्रमोप्रा३॥२२॥जैप्रनअदाच
चौपई॥जैपुनकहैकपासुनराजा॥भरनहोहिलसारेकाजा॥१
गवनलिअश्वगयोचलनहां॥जिहपरभीषमराजाकसिनहां॥नृ
पराक्रमसनकेलिहसंगा॥जिहपरप्रापतनभयोप्रसंगा॥भीषमके
अस्त्रविकराला॥क्रीड़ाकरनपरस्परबाला॥विचरतदेखोहय
कोवनमैं॥सुहितनभयेराकसहिजमनमैं॥पाकैनिरखीचमूअपारा
हयगजरथपारकदलभारा॥५॥दोहा॥अश्वराक्षसनपकियोइ
यकोसकलहनांत॥हैलरंगनरूपकौनकोअलिविविचित्रवलवंत॥
२॥चौपई॥उनभाक्षोयहममकोवाजा॥यतरओयहधर्मनराजा॥
अर्जुनसारथिहयकेसंगा॥अगिनतलसाथचमूवलरंगा॥जोयह
वांधेहयनृपाला॥रनकरकेजीनहितनकाला॥अश्वराक्षसनह
नलोलसभ॥कघोरूपतनभीषनकोंकिनलव॥यत्तलरंगपकरइ
मदेखो॥अलिविविचित्रवितरलवनपेखो॥यत्तअरंभकियोधर्मन
रूप॥पारथहयसारथीनराधिप॥३॥दोहा॥हयगजरथपारक
नकरसेनाअपरस्त्रपार॥संख्याकोउनकरसकैअंतनपारावार॥
४॥चौपई॥भीषमकहैसुनइष्टोहनसव॥त्यावहुअश्वपकरउ
रमहियव॥वैरहमारोभीमसंग्राला॥अर्जुनहैतिसंहीकोआला
पुत्रीहमरेभालाकीवर॥लईछिनाइभीमइकअवसर॥पारथउ
नकाआनपकानहु॥मनवचक्रमसत्तसुरुमानहु॥जोतुमरे

जै॰ग्र॰ षाहपवनमांही॥ गहिस्यावकुलरंगसुरूपांही॥ यहआषाढीनीभू
भा॰ पतनव॥ चलेब्रह्मरातसमिलकेसब॥५॥दो॰हि॰रा॥ मिलेब्रह्मराक्ष\
१२९ सबइतनरोइलाषपरमान॥ स्यापपकरलरंगकोंभूपतकेविदमान
६॥चौ॰दे॰ई॥ देखोनरपविविचित्रगतबाजा॥ भयोअनंदतनभीषणराजा
ब्रह्मराक्षसनसोंभाष्योनव॥ आनाकरइकरोंतेसेंअब॥ ब्रह्मराक्षस
नकह्योनरपतघति॥ हमपरकरुनाकीजेभूपत॥ चारमासकेहमति
रहारी॥ लियोनककुअैसाव्रतधारी॥ अनउपारनेकीनविचारा॥ श
रनहोनतडरहमारा॥ अबपुरबोनरपहमरासारथ॥ चारमासके
हमकुध्यारथ॥७॥दो॰हि॰रा॥ ननतरंभकरहोनरपतरूपतहमारीहोर
वरहीचलआईसकलननतसमग्रीसोर॥८॥चौ॰दे॰ई॥ ननतरचइनर
मेघधुवाला॥ चलआईसनसेनविसाला॥ हयगजनिकरपरानन\
पारा॥ नरपतहोहिलिनकरहिअहारा॥ अर्जुननिजसेवकभगवाना
तिहसंगननतसमग्रीनाना॥ नवभीषणनरपवचनवषाना॥ हुन\
होसबपोइनरेकाना॥ तमनोअनकोइनरइअवसर॥ षाइरसोई
किननकरुविकार॥ सुनराजानवइमक्कारइिअन॥ रननालेहि
अहारसुदिनकुल॥९॥दो॰हि॰रा॥ सकब्रह्मनसुनहोनरपतइननाले
हिअहार॥ सकसहंसगजसालनाभोजनविविधप्रकार॥१०॥चौ॰
दे॰ई॥ गजअसोसनसहसनरदोई॥ रुधनपानकरहैनरसोई॥ बडु\
रोहमकरिहैंउपवासा॥ पुनहमव्रतधारहिचौमासा॥ जोउपारना

धरम हि करहीं॥ भूषे रहैं उदर न हि भरहीं॥ नरका न नकरहि
न्हपजोई॥ तो हम पूरन ले हि रसोई॥ जो वां कुत सो गृह मार्गा पों चल
सिद्ध होइ मघ नरपत मझ्हांवल॥ पारप सेना घ परम्पारा॥ पूरन है
है नतह मारा॥ ५॥ दो ह॥ कंकन वांधइ हाथ मैं जतध्यरे भट्टरान॥
मन वच क्रम जिय जानि यें होइ संपूरन काज॥ ५॥ चौपई॥ भीषन नर
पहुन वचन हमारे॥ करहु जतन नरमेध सवारे॥ नृमराध्रान लंक को
राजा॥ तिन हूं कियो हु तो मष समाजा॥ नहिं कर सको जतन तिह ध्रवसर
र॥ भयो न पूरन गयो ध्राप मर॥ मष नरमेध करो तुम ध्रव हीं॥ तुम
राहु नसव है जगत वहीं॥ भीषन नरप ध्राग्या कीनी तव॥ देरकव ध्रा
पराकुस सव॥ भीषन कहो हुनड सभ सैना॥ हृदेधार लीजे सुक
वैना॥ ६॥ दो ह॥ पारप कों सेना सहित वांधले हु तन काल॥ राव
सहिप हरष भभए हुन के वचन धुवाल॥ ५॥ चौपई॥ वहु तरि व
सको हमकु ध्यारप॥ करहि ध्रहार सभू सभ पारथ॥ नृपत कियो
नृप उदर हु मारा॥ पांडव सेना करहि संहारा॥ जैसुन कहैं सुन हु
नृपध्रवना॥ वहु राकस के दीरघ तन ना॥ कोउ दीरघ तन नगा गान
समाना॥ ध्रति ध्रसथूल उदर वल वाना॥ है जो जन प्रमान मुष ना
के॥ दाढ हि पन रकजो जन वा के॥ अंध कूप सम दृग हैं तिन के
नाक कंदरा सम हैं तिन के॥ ५॥ दो ह॥ कारन छिद्र न के वरहि
रहवलेम धजांहि॥ नाक वीच हय पवर वलहि तो इन कों सधना

जं॰ग्रं॰ भा॰ ९९॰ हि॥ ९८॥ चौपई॥ भुजापांइमलकविस्तारा॥ अतिहीरचअशुभथलअपा
रा॥ जनमेंजाअकुलमेंगुनथल॥ हमकोंअशुभकहोयहगुनपल॥ या
कुमतेंहधारउनलीनो॥ अरवअमनमकोंनअशुचकीनो॥ मैंगुनकहै
गुनइकभ्रपनवर॥ राक्षसजोनहोउदइअचकर॥ आत्मनकोंधन
हरलीनोजिन॥ मनमैंककुजासनकोंपोतिन॥ अबरथानजिहन
रनचुराई॥ अलराक्षसनकोवधपाई॥ ९९॥ दो॰॥ अलराक्षसीजो
नलिइजनमभयोविकराल॥ अबयुंसजोनरहहरहितिनपहग
नभूपाल॥ १००॥ चौपई॥ पुनभीषनमुषवचनउचारे॥ तुनहोपोह
नसकलहमारे॥ भजनकरोंइमयमनवचक्रमकर॥ तुमसभभोजन
लेहुउदरभर॥ विजैसेनसभकरइअहारा॥ अरनहैगाइहरतवा
रा॥ तोतुमवडुररहोकुध्यारथ॥ अरनकरोंतव्यारेलारथ॥ मोउ
नप्पावोंमारअबरनर॥ तुमकोंभोजनदेउंरपतकर॥ संतोषोंत
मपालनविधवन॥ इक्षाभोजनकरइमुदितअत॥ १०१॥ दो॰॥ इ
क्षाभोजनदेउं तुमयमनवचक्रमनिपजान॥ कुधातव्यारीसभमिटे
वडुइफषपावहिप्रान॥ १०२॥ चौपई॥ कहैअलराक्षसिभीषणाप्रत॥
नगरतव्यारेहमनजोइत॥ संख्याहोइलाषपरमाना॥ आमगस
भकुध्यारथप्राना॥ जतनअबरंभवेगनरूपकीजे॥ इक्षाभोगदिजा
नकोंदीजे॥ चरवेठेपोराइहींपावहि॥ वडुनमानभूपननलेवा
हि॥ करइजननपोहनलपनावइ॥ पइकारजकोंविलमनलावइ

रकरकआश्रमकोंप्रहारपरइ॥ बरनहुनावनहोंनृपनमपरि
२१॥दो॰ ॥ इकसहसगजसालनादोइसहसबरंग॥ पुनपाकेर
पवासमुषवारसहसनरसंग॥२४॥चौ॰ ॥ इकसहसचरहपर
प्रमाना॥ इकइककहिंगअश्वबननिलपाना॥ इकइककोपइइैअहा
रनित॥ मनवचक्रमजानइभूपनचित॥ अतछाइनग्रवसमाइ
माया॥ करहिंजनपरविपनग्रहाया॥ वइदिवसनकेइमउपवासा॥
जतकरइपुरवइइमग्यासा॥ नृपतनहोहिंचमूपारषनव॥ नोन्र
पग्रवरविचारकरोग्रव॥ परइकहिराकुसचटेमुपारा॥ सेनासा
जक्रोधजिमधारा॥२३॥दो॰ ॥ अर्जुनकेसनमुषभयेसमराकु
सदलजोर॥ पारथराकुसरेषकेधीरजनरघोनठोर॥२४॥चौ॰ ॥
कुंलीहनमनमोंहिविचारा॥ इनसोंजुद्धनकामहमारा॥ दीरघरा
कुसगगनसमाना॥ निरषिविजेमनमहिंडरपाना॥ अर्जुनहरिको
ध्यानधरयोनव॥ परइभयतेंराषइगिरधरअब॥ परइअतिकोरम
हांविकराला॥ इनतेंराषलेइनंदलाला॥ रक्षाकरीसदाअमजैसें
राषलेइहमकोंअबतैसें॥ राषलेइधर्मजकीलाजा॥ तुमबिनइ
मराकोजगराजा॥२५॥दो॰ ॥ बिरदसंभारइआपनाभक्तवछल
भगवान॥ सरनकीनेजनतवतधर्मतातरजान॥२६॥चौ॰ ॥ राषत
लाजसदाअमजैसें॥ बिरदसंभारराषअबतैसें॥ परइकहिंपतो
कुलकोध्याना॥ अंतरजामीश्रीभगवाना॥ तबछिनइरिजानीस

ज॰ अ॰
भा॰
१८१

भवाला ॥ कियो विचार जगत के नाला ॥ सोच विचार कियो अ-
र्जुन मन ॥ कहन न गुरु न रखा घ राछसन ॥ पक्यो पवन सुतन कों-
तिह अवसर ॥ अपने भगतन पहि करुनाकर ॥ धुज पर बैठे आ-
इ पवन सुत ॥ हरि आग्या ले महां क्रोध जुत ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ पान-
षाल जब देष्यो अर्जुन भयो अनंद ॥ धुज पर बैठे पवन सुत आ-
नि सौं नंद नंद ॥ २५ ॥ चौपई ॥ जे मुन कहे हनुमत भूपाला ॥ भगतन
के रछक नंद लाला ॥ सहित सकल दुष पांडु सुतन को ॥ श्री गिर-
धर न सषा अर्जुन को ॥ सुनत पवन मे जय सविधाना ॥ बिजै धु-
जा बैठो हनुमाना ॥ दुष्टन को कर वश अकाना ॥ रिछ राषो वपु अ-
ति भय कारा ॥ अर्जुन अरु हनुमान परस्पर ॥ नमस्कार कीयो हित
हित धर ॥ देष पवन सुत राछस सैना ॥ लागे कहन परस्पर बैना
॥ २६ ॥ दोहरा ॥ जे तुम सुन राछस महां ते आय दिषे अगरार ॥ हम पहर वा-
ना कपि वही लंक जराई जार ॥ २७ ॥ चौपई ॥ बीस भुजा जिह वपु अ-
प्रकासा ॥ सो रावन रन कपि कियो नासा ॥ बांध्यो इंद्र धनपति रन सौं
जिन ॥ हरहि सिवा गननास कीयो इन ॥ यह कपि रामचंद्र को दासा
हनूमान इह नाम प्रकासा ॥ जिह इह सक्यो धन्यो मन वच क्रम ॥ ब-
स लाके पुन आइ परे हम ॥ कंकन बांध्यो न्रप नहमारे ॥ हनूमान
अवगुल रसं चारे ॥ भीषम तेनाक है परस्पर ॥ परन सालीजे पाकी-
कर ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ हम कों गुरु प्रमल है लरहे षद्धि रक चार ॥ जोप

हकपिहनुमंतनहिजिनमहिकरहिसंहार॥२५॥चौ०ई॥यह
विचारकरसनमुषभए॥विद्यमानपारषचलगए॥पारषमारेजा
नअपारा॥रनकेंलननहिलगैपहारा॥मायारचीराक्षसीनाना॥
सभनकियेलनगगनसमाना॥ठाडेभयेआइसबथाना॥सभनरु
कउबलायेबाना॥कपिहनुमाननिरषअवसर॥षंडषंडकीनेआव
नसर॥पलोवीचराक्षसिकीसेना॥भुजगहिसकलपठावनवीना
र२॥सो०॥रा॥कोउराललसेलपवनसुतपरकावनभुवमाहि॥हनन
परपरकलनकेऊकिसहीक्षाडननाहि॥२६॥चौ०ई॥केउभागगये
नगरमंझारा॥भीषणआगेकरीपुकारा॥सेनामारीसकललंका
री॥इकवानरसोंआइसंहारी॥यहहनुमानरामसरबुराई॥जिहजा
रमकीलंकजराई॥भागकुपेपेहमडरआके॥अबपनहाथपरेह
मताके॥सुनरावणभीषणकोआनव॥राक्षसहहदुलारलियेसब
गुवलीवालकसकलबुलाये॥सभराक्षसयेकठेकराये॥२७॥दो
हा॥जैसुनकहिसुनहोन्दपलराक्षसमिलेअपार॥हीरघबेदेदअ
कासममलनकारेभयकार॥२८॥चौ०ई॥केउराक्षसकेरकपगअं
गा॥किनहूंकेपगतीनप्रसंगा॥इकराक्षसवैसेविनअवनन॥ए
कनिसाचरतीनअवननिन॥जिनकेकानबहूतननजानहु॥तेरा
क्षसअतिबडेप्रमानहु॥बहुनिसाचरतेउकहावहि॥जेउनरआ
हारअंससबुरावहि॥विसभगामकरनिंदकरावहि॥तेनरघोर

जै॰ अ॰ नरकहँ ही पावहिं ॥ टीरह तनषनासिका श्रवनजिह ॥ हगनकरालमु
भा॰ ग्रंथरूपलिह ॥ पुरुषषोपरी कंठविराजत ॥ हाथपांइ नै सेंही राजत ॥
१८२ १७ ॥ दो॰ ॥ मुद्रा सोभत कान महिं गजषोपरी विसाल ॥ हाथकमंड
ल नित मसदादी रहहू दाकपाल ॥ १८ ॥ चौ॰ ॥ कटिषां हिं कंधे गजनमा
सा ॥ ग्रास्यगात रुधिर पियहिं अति प्यासा ॥ अगनहोत्र ग्राल्लगा षटक
रमी ॥ तिनकों भक्षनकरहिं अधरमी ॥ हरजनसाधवांधगृहल्याव
हिं ॥ भक्षनकरहिं नहीं त्रिपतावहिं ॥ नेत्र अग्न राक्षस विकराला ॥
गज अांत्रनकी सोभत माला ॥ अगनिहोत्र द्विजकरहिं अहारा ॥ तां
बेमानहिं पुन्यअपारा ॥ इहरवरे टीरहपुषनाके ॥ हरसनकालसार
षेनाके ॥ १९ ॥ दो॰ ॥ बहुरच्चना सालसजो ज्ञ्नकों करहिं अधार ॥
मुनीनपीरिषसिद्ध द्विजभक्षहिं पुन्यविचार ॥ २० ॥ चौ॰ ॥ महामु
नीन ने उनरजानहिं ॥ तिनकों मारअधकसुषमानहिं ॥ कंमाना र
वर्षकी ल्यावहिं ॥ भक्षनकरैं हरे सुषपावहिं ॥ अैसेत्रयनिसाचर
जोसव ॥ मिलग्राएरूपभीषनवेनव ॥ राक्षसकहैं सुनहुरूपबाला ॥
तुमसापिता विनै किये ज्वाला ॥ वकनामासभमगविद्याता ॥ सोपा
महावली तुमताना ॥ पितहूं तापारणलभमारइ ॥ देहू आइ की
अगनपमारइ ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ त्रिजेसाथसेनानिकर तेहमक्षकरहिंअ
हार ॥ धुजरूपरहनुमंतकपि जो तुमकरइ संघार ॥ २२ ॥ चौ॰ ॥ रूप
तुमरानरमेधनतनव ॥ प्रनहाइहनइकपिकों जव ॥ हारहिं जेअ

अवर राक्षसन ॥ सकी आज्ञा गजन की अनगन । वादे तीन जोज-
न परमाना ॥ तिन को देषइ रन अतिघाना ॥ अवर राक्षसन की भीष
न लव ॥ वचन कहै देश्रवण हनु ख्रव ॥ जो कवही वानर हनुमा-
ना ॥ हमरा वल नहि तिस हि समाना ॥ जिह रावन को नास कियो-
नन ॥ तिन सौ हम कै सै जीत हि रन ॥ ४३ ॥ दो० ॥ अवर राक्षसन सों-
कहै यहै वचन प्रगटाइ ॥ जो यह कपि हनुमंत है हम को मारे धाइ ॥
४४ ॥ चौ० ॥ मंदर नाम राक्षस वलवाना ॥ ताकों आज्ञा ताकरी रजाना ॥
तीन लाष सेना ले जावइ ॥ यह हम राका रन कर आवइ ॥ जिह हम-
री मारी सेना सव ॥ जावइ तिस हि पकड़ान लेइ अव ॥ छिन महि मार
लेहि हम सोई ॥ या कारज कर विलम न होई ॥ तो हम कहो रसंग्रहन का-
जा ॥ आज्ञा ताकरी सविव को राजा ॥ ४५ ॥ दो० ॥ मंदर नाम मंत्री इतो आ-
ताले भूपाल ॥ तीन लाष राक्षस सहत चल तन भयो तन काल ॥ ४६ ॥
चौ० ॥ राक्षस महा हांक दयो तेऊ ॥ लंका नगर समेत ये तेऊ ॥ जिन रे घाया
पवन तानन को ॥ महा सुर त्रिभुवन विघातन को ॥ तेउ पगा तन साथ लि-
ये तव ॥ चल आए रन भूम विषे सव ॥ आप संग राक्षसी वाला ॥ जिह
कुचरक जोजन विकराला ॥ आनी वडी राक्षसी माया ॥ जिन के का-
ल मारष माया ॥ पवन तनइ को जो पहिचानन ॥ लंक पजारी की-
विध जानन ॥ ४७ ॥ दो० ॥ तेउ पाछे राक्षस इते लायो संगर जान
तेक सभ नर आई ये अर्जुन के सविधान ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ तीन लाष रा-

ज॰ अ॰ कुरूपमाया॥ दीरघबदनभयानकमाया॥ तहं राक्षसीबहुत
भा॰ मायाकर॥ जेउ छलीरावनकेअवसर॥ पवनतनइकोंदेषिनिसाच
१८३ र॥ बालैंकरहिउबारपरसर॥ तहराक्षसनलवहिपछाना॥ पर
सेवकरघुबरहनुमाना॥ एककहैंहनुमंतनहोई॥ जुगप्रजंतथिर
रहीनसोई॥ पवनसुतहैताजुगमहिनव॥ द्वापरजुगकोंअंत
भयोअब॥ ४९॥ दोहा॥ ननलजहांगापवनसुतपइवानरकोंउओ
र॥ वैठाअर्जुनधुजापरइमहिमारगेगौर॥ प॥ चौपई॥ एकराक्षसीक
हपुरामन॥ सिवमुषमैंकरहतुनघहसुबचन॥ यहकपिवहांमोहि
पहचाना॥ रघुबरकेसेवकहनुमाना॥ जिहरावनकोंकियोविना
सा॥ लंकप्रजारनिसाचरनासा॥ तीनलोकचराचरआवहिजोई॥
याकोंजीतसकैनहिकोई॥ महाअप्रगाधरहधवोंथोंजिन॥ कोउ
नजीतसकैबलकररन॥ कलपप्रजंतनजुइकरहोजब॥ कोउन
जीतसकैइनकोंतब॥ ५०॥ दोहा॥ औरराक्षसीबचकहैविनभागे
गननाहि॥ राक्षसएकनकांइहांसभमारेछिनमाहि॥ ५१॥ चौपई॥
कुरूपनामराक्षसीएकनतब॥ ऊचबचनतिहकोंसुनहोअब॥ क
हांभयोजोयहहनुमाना॥ अबहींनासकरौंयहप्राना॥ मोहिकुबच
नकोंवहोअबकारा॥ दीरघबारनकोंविसतारा॥ जुगलस्तनकोंकरोंउ
हाय॥ सेनसहतनकपिकोंसंघारा॥ ऐसेंकचअंगुलिकतनहमारे॥ ह
सननछूकछूककरडारे॥ यहवानरअर्जुनकीधुजपर॥ एकचोट॥

डारहिंतिन्हहितकर॥५४॥दोहा॥अवरराक्षसीएककपोहमरे
कहुभयकार॥बानरकोंअर्जुनसहलछिनमहिकरहिसंघार॥५४
चौपाई॥जोयहसोंचकपोहनुमाना॥अपवाहोइकोउबलवाना॥अ
ललनतीछनकवनहमारे॥अतिअरुलमहांभयकारे॥यहवचक
हिसंग्रामसमवायो॥भीषणभूपनरणमहिआयो॥राक्षसअरुराक्ष
सिआईसव॥देखोअर्जुनकेरणकोंतव॥सनमुखवानवलावनला
गे॥हियअतिक्रोधस्वरसभजागे॥पारथनिरखक्रोधजियकीनो॥ध
नुषगंडीवहाथगहलीनो॥५५॥दोहा॥अर्जुनमारेवानकसजैसेमे
घवधार॥सोंराक्षसरनतजगएहहरिसकियेविहार॥५५॥चौपाई॥अ
र्जुनहंराक्षसमारेसव॥पाइपरीराक्षसीआइतव॥लेगिरदीनतउच
रथफिरावहि॥कुवहनवचक्रअसंषगिरावहि॥वारकोसरीरखकुव
जिनके॥चलनफिरहिनहांलगतिनके॥गजरथनिकररलरंगपराता
छिनमहिकरहिकुवनसोंगाना॥परवलसबकपरसनेकरहीं॥है
सूरनजिहपरकुवपरहीं॥वर्षफेरवेकेतिहअवसर॥वैठजाहिथ
वतेहिवचवहिनर॥५६॥दोहा॥जोनहिवैवैतिहसमैहोइपरैनलनका
न॥वहुतनचमूभईकालवसगजरथअश्वपराति॥५६॥चौपाई॥जेसुन
कहैहनउभूपाला॥वलराक्षसीअतिविकराला॥पारथअपनीसे
वनिहारी॥इनैराक्षसीसकलविडारी॥विजैकहैवचपवनसुतनद
नविहारी॥इनैराक्षसीसकलविडारी॥भीषणलमरेषननसगपो॥र
पत॥रामविनहमरीहोइनहींगत

रा॰ग्रं॰ नंनिसाचरीग्रतदुषरघो॥ हनुमानकिलकारमारकर॥ छुटप
भा॰ त्योराक्षसिसेनापर॥ मानोगगनपरयोगिरधरनी॥ ग्रलैकालग
१९८ ननाइनवरनी॥ ५१॥ दो॰॥ करतचर्वणराक्षसीकाइदिएनिह
काल॥ पुंक्षपसारीपवनसुतसरीरभयउविसाल॥ ६॥ चौ॰॥
बांधपुंक्षसोंसभनलकाला॥ राक्षसग्रुहराक्षसकीबाला॥ गट
वोफेरपुंक्षभईनैसें॥ हेरलियेराक्षससमनैसें॥ कोउराक्षसप
ठदियेग्रकासा॥ कोऊपरकेभूमिविनासा॥ कोउकरगहिगिरप
रफेरकारे॥ कोऊपकरिदियेजमकेद्वारे॥ राक्षसपरेपवनसुतन
हाथा॥ बांधेसकलपुंक्षकेसाथा॥ बांधपुंक्षसोंउद्योगगनमव॥
उतरधेयेलैउरपवीचसव॥ ८०॥ दो॰॥ करपसोइकुमंतलवभी
षनकेघरमांहि॥ डूंढरह्योपुरपवनसुतभीषणपायोनाहि॥ ८१॥
चौ॰॥ ग्रसुराक्षसनकोंपकसोनव॥ भीषणारेरवलाइमुसेव
व॥ मोहमनासकसोंनहिलफकों॥ नपकोंवेगवनावहुमुफकों
ग्रसुराक्षसनकह्योजोएकर॥ नहिंभीषनसुधहमरहग्रवसर॥
छिमाकीजियेदोषहमारे॥ हमइर्वलहैंविप्रलव्यारे॥ लीजेराघ
नामकीलाजा॥ तुमनिजसेवकहोरघुराजा॥ संतनकेसुषकों
तुमरहेना॥ हमकोंरइजीयकोदाना॥ तुमभनहोभगवानसुजाना
नासनकरहुहमारेप्राना॥ ८२॥ दो॰॥ कारदियेतेउपवनसुतद
ग्रोनगरग्रपार॥ नासकियेपुरमहिंसकलराक्षसराक्षसिनार

९४ ॥ चौपई ॥ राक्षस सकल नास नव भए ॥ जे उबरे बन महि दुरगए
भीषण रक्षयो कंदरा मांही ॥ राकस और रखयो कोउ नाही ॥ नगर मार
कीनो उद्याना ॥ यह चरित्र कीनो हनुमाना ॥ भीषण अपने हृदे विचारे
विजे परे कहुं हाथ हमारे ॥ नषन वरीनै करों तिह नासा ॥ जिन सभ राक्ष
स किये विनासा ॥ लूट लियो है नगर हमारा ॥ जो तिह पावों करों संघारा
९५ ॥ दोहरा ॥ पारथ पुन मन मैं कहै राक्षस भये संघार ॥ भीषण कों का
हें नहीं पकर लेउ तिह मार ॥ ९६ ॥ चौपई ॥ पारथ भीषण ढूंढन के हित
गयो एकला बन को धत चित ॥ पांडव कों भीषण देखो जब ॥ माया
र विमन महि वेगो तब ॥ तपसी भेस धार कै ध्याना ॥ आसन साध
जोग विधनाना ॥ जैसे मुन कहै हनन रूप तब ॥ धन्यो तपी हर भेषनि
साचर ॥ ९७ ॥ दोहरा ॥ भेष रिषीश्वर को कियो वैठो ध्यान लगाइ ॥ कुरी
सा जब बन मैं रचे बालक लिन रूप बनाइ ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ तिह तें पकरन भ
यो कालगुन ॥ कहूं पावों भीषण भाकों मुन ॥ इत उत देह दिस भ्रम्यो
विजै जब ॥ पायो आरक्रहिल बन महि तब ॥ अर्जुन आवत देख निहा
रा ॥ माया रच बडु कियो पसारा ॥ रच्यो सरोवर सुभग मध्य बन ॥ ता
मध्य प्रफुलत कमल मधुपगन ॥ कुसुम बनाए विविध प्रकारा ॥ मा
या रच कीनो बिलासा ॥ सरवर पर पुन रचे मराला ॥ रचे मोर कोकल
बनमाला ॥ ९९ ॥ दोहरा ॥ कुसुमन पर गुंजत मधुप बन बोलत पिक
मोर ॥ नभ हो नहारा चमक जुत मरगार नन कल घोर ॥ १०० ॥ चौपई ॥

367

ना॰ प्र॰ एवेनहांमगविविधप्रकारा॥ वैसीमायाकरविस्तारा॥ लागोहु
भा॰ षुपहावनवाला॥ पाथाभयोरवीवरसाला॥ सेवकवहुप्रकार
१८५ साजेनिह॥ करैसोरकलजोभाषैतिह॥ प्रफुलतमहांकियोवन
कोंतव॥ वहुप्रकारकेसजेपुष्पसव॥ एघोगंगकोजलप्रवाहवन
सोभापुरहीभावतमन॥ पारथनाम्मोकोउरिषीस्वर॥ वैठोगंगा
कूलतपीस्वर॥ ७७॥ दो॰ ॥ नमस्कारपारथकियोराक्षसकोंरिष
राइ॥ अर्जुनहृदेविचारियोरिषमूरतभगवान॥ ७८॥ चौ॰ ॥ विद्या
देतवालकनरुविकर॥ महापुराणनमाहिरिषिपतरिषिवर॥ रिष
अर्जुनकलत्तागनकीनो॥ निकटआपनेवैठकदीनी॥ लागोकह
नविनैप्रतिवाता॥ धन्यधन्यतममरोपितमाता॥ महावलीराक्षस
तुममारे॥ हमरेदुषदायकभयकारे॥ लेहप्रसादकरोविश्रामा॥
श्रमनहोएतुम्हारोकामा॥ कछुकुसिषराकेरहांरहहैरिन॥ भीषण
मारहुगेजकेविन॥ ७९॥ दो॰ ॥ वैसामंत्रसिषाइतुमफविनसेभीष
णराइ॥ विनवकेहमहोरनिह्मसत्रुदेउवताइ॥ ८०॥ चौ॰ ॥ विनैपवा
संसोनिजमनके॥ यहलक्षनतारिनरिषियनके॥ तिहचेहोरविस्त
वरकोई॥ मायारववैगोवनसोई॥ तवंहीविनैध्यानधारयोमन॥
सिमरनकीनोहृदेस्यामघन॥ तवप्रकासकीयानीभई॥ अर्जुनति
नश्रवननहूनलई॥ भीषणायहीज्ञाननियतीमे॥ तांतेहुधशीघ्रव
धकीजे॥ पारथहरषकीनोमनमांही॥ यहभीषनराक्षसरिषनाही

368

७५॥दोहा॥अर्जुनलीनोधनुषकरकीनोकोपअपार॥भीषनमा
स्रोतुघुतवमहाघोरभयकार॥७६॥चौपई॥तबहिअर्जुनधर
गनिकारा॥दुष्टसीसकोंकाटउतारा॥भीषणाराकुसनासभयोजब
तीनलोकमैकारभयोतब॥पाछेंफेरिलियोउनताकों॥रथभरलि
योकनकवहुवाको॥अमुदितचलेबजंत्रबजावत॥हयमथुराचय
नंदवढावत॥आगेचलतभयेपुनवाना॥पाछेंविजेसहितवडुराना
हयचलगयोतहांवडकाला॥अहभयकारीवनविकराला॥७७॥दो
हा॥जैमुनकहिसुनहोरपतहयसंगसेनअपार॥तहांअश्वआप
नभयोजहांवनअतिभयकार॥७८॥चौपई॥षोडसजोजनवनभयका
रा॥फलसमूहलहहिविविधप्रकारा॥तिहवनकाफलकरैसपर्स
नर॥होयपसुनिहचेंतिहअश्ववसर॥वहुरोंचारप्रकारसोरवन॥जोज
नचारअवरतिहलछन॥चारचारजोजनपरमाना॥अवरअश्वस्था
कहूंवषाना॥सोलहजोजनवनविलारा॥चारअश्वस्थाहोहिमंझारा
जोजनचारखीचवनजोई॥ताकाफलपावैनरकोई॥७९॥दोहा॥वाले
अश्वस्थाहोइ॥तिहहहदपापमिरजात॥जोजनचारविषेकोऊजोवनको
फलषात॥८०॥चौपई॥वहुरचारजोजनगवनेजेव॥इहइअश्वस्थाहोर
जातनव॥वहुरचारजोजनआगेपुन॥होइजातनरपसुअवनसुन॥
जैसेवनकोविजेनिहाल्यो॥महाचिंतवसहहटेविचाल्यो॥जैमुनकहैसु
नहूनपाइवनन॥पारथभईमहाचिंतामन॥सुन्योनरेसोसोऊवनके

अ॰ प्र॰ व॥ज्ञामहिश्रापलआइभयेसभ॥८१॥दोहरा॥पारथजितयदुरथप
भा॰ भयोनिरथ्योबमभयकार॥जिहपर्सेतेहोतहैमानवपसुअकार॥
१८६ ८२॥चौपई॥पहवनतुलंहमाउनिसकोंजब॥हुषपावेगीसभसेना
तब॥दिनकोचलोनजायपंथबन॥हुषपावेगीसभसेनामन॥तब
पारथसिमरनहरिकीनो॥मनहरचरनकमलमहिदीनो॥श्री
गुपालगिरधरनमुरारी॥अवबयहअपदाहरहुहमारी॥भयकारी
बनमांहितुरंगा॥पसोआइसेनासभसंगा॥बनतेंहमरीरछाकीजे
पारउतारअबैपरदीजे॥८३॥दोहरा॥पारथबहुबिनतीकरीभएब
सब्रगुपाल॥गगनबेनरबानीबिधवचनकहतनंदलाल॥८४॥चौप
ई॥करिहरिध्यानमंत्रकेनेना॥निसकोंलंघजाहुबनसेना॥यहबा
नीअर्जुनसुनपाई॥सभसेनाप्रतिभाषसुनाई॥कारजकरनभएसभ
जैसें॥नभबानीभाषीहरिजैसें॥नैनमूंदधरध्यानगुपाला॥ऊलरग
एबनकोंततकाला॥जैसुनकहैसुनइअपनबर॥पांडुसुतनको
श्रतकरुनाकर॥घोरसघनोजनबनभयकारा॥उलंघगएलागीन
हिबारा॥८५॥दोहरा॥जैसुनकहिसुनहोरथपतआगेबसोतुरंग॥
मनीपुरमहिश्रापतभयोसंगसेनचतुरंगा॥८६॥सोरठा॥सुनहु
कथाधरभाउजैमुनजननेमेजयकहैत॥अबहवीसमोध्यायअसुमे
धकेयतको॥८७॥दोहरा॥इतिश्रीभारथपर्वेतोग्रथअसुमेधपर्वाआन
कविरहकनेप्ररनभयोअष्टविंशध्याउप्रमान॥२८॥चौपई॥जैमुन

कहै सुनहु भूपन नव ॥ मणिपुर कों देषो पारथ जब ॥ गढ कोनि
रष भयो अचर्ज मन ॥ कंचन भवन जटित हीरागन ॥ अर्जुन ष्ट को
रूपलहं सधुज ॥ रहपुर को हलांत भाषो प्रभु ॥ नगर नाम ही भाष
सुनावहु ॥ हमरे जिय आनंद बढावहु ॥ बोल्यो नव दिहं सधुज रा
मा ॥ पहु गढ सभ सुवर्न को साजा ॥ पुनि यह पुर को मणिपुर नामा
मणिगन षचित महा अभिरामा ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ विश्वकर्मा को करत
हैं यही जन्म अस्थान ॥ तातें इह पुर कों कहैं मणिपुर सकल बषान
२ ॥ चौपई ॥ न्रप को नाम वभ्रुवाहन पुनि ॥ प्रगट कहइ वन श्रुत फाल
गुन ॥ किसहि न देषो न्रप को नाना ॥ सुष अपने भाषत यह बाना ॥
पुण्य संभरन है भूपाला ॥ मन वच क्रम यह भगत गुपाला ॥ ब्रह्म
तमप्रन सभ नारा ॥ गृह गृह महि धुन वेद उचारा ॥ हरि की सेवा
महि सभ लोगा ॥ सेवत इष्टदेव निह सोगा ॥ कंचन भवन षचित म
णि नाना ॥ राउ रंक सभ भए समाना ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ हेम कलस सभ
गृहन पर जगमगात सभ जोत ॥ ऐसी छवि लागत किधों सुरस
रन नहि होत ॥ ४ ॥ चौपई ॥ दिन दिन भवन दीनन र के जिह ॥ नौत
नेमा जन देत है न्रपति इह ॥ देत कनक अपने भंडारा ॥ गृह हर बट देत न
लावत वारा ॥ रतन षचित बहु थंभ विराजत ॥ दरवाजा गजरंत न
न क्कामत ॥ सुक्ता फालर हार हार षचत ॥ बावन चंदन लेप अगर न घत
अग्निहोत्र बल पुण्य विधाना ॥ जज्ञ होम पुर महि निमाना ॥ ५ ॥ दोहरा

ग्र· भु·
भा·
१८७

वेदवचनप्रतिपालउरसकलपतिव्रतनार॥ एककनुवतिरति
पुरुषसभहूरिसिमरतहितधार॥ ४ चौ॰ ई॥ न्रपतवत्रवाहन
कीनगरी॥ सतनुगरीतसुपावनसगरी॥ पुनपहून्रपतमहाव
लवाना॥ महासूरत्रैलोकनिधाना॥ समरदृष्टीइंद्रीजितसूरा॥ सत
वचनभाषतप्रणपूरा॥ जतनकरतब्रह्मणसुकरमी॥ अतिउदार
गुनवानसुधरमी॥ पहन्रपकीविभ्रतसंपदसभ॥ रकसुषवरन
सकैनकोउकव॥ हस्तीअप्रतपवासप्रमाना॥ वठतसुरकतसाए
रजाना॥ ५ दो॰ ॥ वहुरसमग्रीगजनकीमंदलअंकुसचंद॥ कं
चनहीरामणिजरितकुरहंदरिकाकंत॥ ५ चौ॰ ई॥ सभगढतेल
पुल्लेलसुधारे॥ अतहिमंदसकलमनवारे॥ न्रपतजुरहिवहुरा
जदुवारा॥ चवरकरहिसिरराजकुमारा॥ सेनाअमरपअसुनप
हाता॥ चित्रांगनान्रपतकीमाता॥ पतिव्रतपुनगुनवानअपारा॥
ससुसीलकुलवेदउचारा॥ सुमितसुचितमंत्रीन्रपतेऊ॥ सेनाको
तिदृअंतनकोऊ॥ मित्रभाववरतैसभसेना॥ कोउनकहिभाषतके
हुवैना॥ ६ दो॰ ॥ जैसुनकहिसुनहीन्रपतवचनहंसधुजराइ॥
सकलहतोंतसुनाइयोअर्जुनकोंपगराइ॥ ७ चौ॰ ई॥ वहुरिस
नगरवागफलवारी॥ फुकतफलनकरतरसुभकारी॥ वनसप
तीतरूभारअवारा॥ वरनवरनकेकुसुमअपारा॥ अतिसुंदरव
नवीचसरोवर॥ प्रफुलतकमलसुगंधमहावर॥ गुंजकरतमधु

करयनिजहां ॥ विचरतअश्वगयोचलतहां ॥ वनकेरक्षकजोउ
छुतेतब ॥ तिनदेख्योहयअतिविचित्रछव ॥ जाइकह्योतिनन्रपत
नकाला ॥ देख्योइमनंदनवनभूपाला ॥ ११ ॥ दो ॥ हमदेषाइकअश्व
रूपअतिविचित्रशुभअंग ॥ सीसमुकटरतननजडितअनगनसे
नासंग ॥ १२ ॥ चौपई ॥ अंगअंगसाजेभूषनतिन ॥ चंदनचर्चितगात
सकलजिन ॥ तीनलोकमधिहोइनऐसो ॥ देख्योहमछवितरंगमजे
सो ॥ छिषिपतन्रपतजसकोराजा ॥ रयोअश्वसमषकिसहीराजा ॥ व
नमालीकेवचनश्रवनसुन ॥ भयोबहुवाइनअनंदमन ॥ सुमति
सचिवकोन्रपतिबुलायो ॥ ताकोसकलवृतांतसुनायो ॥ आज्ञाक
रतभयोभूपाला ॥ मंत्रीहयल्यावढूंढततकाला ॥ १३ ॥ दो ॥ जेमुन
कहिसुनहोन्रपतहयल्यायेततकाल ॥ आगेवीचपनीपसामंदिर
छलोभुपाल ॥ १४ ॥ चौपई ॥ भईप्रभातउठ्योभूपततब ॥ संध्यासिमरन
कर्मकियेसभ ॥ पुनन्रपतकीनोअसनाना ॥ नित्यकर्मकीनोवि
धनाना ॥ सेवाकरपुनभोगलगायो ॥ संतोषेहरिजियसुषपायो ॥
वस्त्रपहररचौसुगंधतन ॥ आयोसभावीचहरषितमन ॥ लागसभा
न्रपतकीजहां ॥ रतननषचितमंदिरवरतहां ॥ कंचनषंभषचितहीरे
रामना ॥ ठाढेतिहमंदिरमैंअनगन ॥ १५ ॥ दो ॥ मंदिरकनकरत
ननषचितचित्रसालपिकमोर ॥ षगमृगजलचरचलअचललि
षेसकलतिहठौर ॥ १६ ॥ चौपई ॥ अतिसोभतपरजंकभुवाला ॥ कन

म॰ भु॰
भा॰
१८८

373

कहलनमणिजरितविसाला ॥ जगमगकविलिहिरचितसभा
ना ॥ तिहरूपरवैठोराजाना ॥ सेनासकलवुलाईतहां ॥ जेउढ़तेजो
धरनमहां ॥ विदुरंगतातनृपतकीमाता ॥ अतिधर्मतसर्वगुनसा
ता ॥ पुनन्रपकहैसविवसोंवेना ॥ वाचहूपठिकेसभसैना ॥ दे
षहिकवननरपतकोवाजा ॥ जत्तग्ररंभकियोकिहकाजा ॥ ७ ॥ दो
हा ॥ वेगपठोहघपत्रिकाहनेहमारीमात ॥ कीजेसोइविचार
पुनहोइसहजसविख्यात ॥ ५ ॥ जै॰ वैनउ॰ वाच ॥ सो॰ १ ठा ॥ त्यापरतहांत
रंगजैमुनकहिंसमहानृपत ॥ निरषअस्वसुभरंगसुदितवत्र
वाहनभयो ॥ १९ ॥ चौ॰ ॥ पट्टटेछोपत्रीततकाला ॥ पढतरंगध
र्मनभूपाला ॥ जत्तअरंभकियोहसतनपुर ॥ हरिआतालेनृपत
जुधिष्ठिर ॥ छोडदियोपृथ्वीपरवाजा ॥ मारथिविजैसंगवडु
राजा ॥ जोवलरषैसुपनेअंगा ॥ सोनृपवांधेजत्ततरंगा ॥ तिहह
मजीतदिकरसंग्रामा ॥ अस्वजत्तकोअतिअभिरामा ॥ सकेनवां
धतरंगमजोऊ ॥ हमसोंआइमिलैनृपसोऊ ॥ २० ॥ दो॰ ६ ठा ॥ हमकों
भेटालैमिलैकाकुनकहैंतिहराज ॥ सैनाअपनीसाथलेहोइच
लेसंगवाज ॥ २१ ॥ चौ॰ ७ ॥ पत्रिहतांतसुन्योसेनानव ॥ विदुरंगत
महदहासकियोतव ॥ इकतोअस्वधर्मराजाना ॥ वडुरसहाइक
श्रीभगवाना ॥ पुनअर्जुनमारथीमहावल ॥ आपोतिनकाअस
रहांचल ॥ तवविदुरंगतवचनउचारे ॥ सुनहुअवनरनाततहमा

रे॥यहअर्जुनहैपितात्यारा॥लागहुंचर्नहोइनिस्तारा॥हमराव
चनमानहुनलीजै॥यहकारजकोगहुरनकीजै॥२४॥दो०॥सा॥नैपु
नकहिसुनहोन्रपतविच्त्रांगतकेबैन॥सुनेबभ्रुवाहनजबहिजि
यउपज्योअतिचैन॥२४॥चौ०॥कहैबभ्रुवाहनसुनमाता॥हमसोंक
हहुसकलयहवाता॥पितामयोपारथसुहिजैसें॥भाषहुतातसुना
वहुतैसें॥विच्त्रांगमावचनभाषेउन॥कहिहोंप्रवकथातातसुन॥
सेषनागन्रपकीपुत्रीहम॥इकदिननिकसीवालवहिक्रम॥मिली
जाइगंधर्वनसोंतव॥समापहुचोआइयहीजव॥चहगंधर्वनगयेप्र
घनेघर॥लेगपमुऊहिसाथतिहअवसर॥२५॥दो०॥सो॥गंधर्वनकी
नारसभमुऊसोंकरैंपियार॥पांचवर्षकीवेसमुऊवालअवस्था
सार॥२५॥चौ०॥जेतकगंधर्वनकीनारा॥सभकीटहलकरोंतिह
वारा॥सभमोआदरदेहिअपारा॥वालअवस्थावपुषहमारा॥कहुं
जोंहिवहगानकरनसव॥मुऊकोरहिपकांतठौरतव॥मैंकवहुंस
गजाउनउनके॥जहांवहुगानकरनकलधुनके॥वर्षइकादससो
गुरजवहीं॥भईगणनमनउपज्योतवहीं॥अपनाकुलमनमांहिवि
चारा॥लाजचढीमनविविधप्रकारा॥२६॥दो०॥सो॥इकदिनमन
चिंताचढीइनसोंभलोनवास॥तवहिपार्थप्रापतभयोकीनोत
हांनिवास॥२६॥चौ०॥गंधर्वनकीनोवहुगाना॥नित्तकरीनर
गनविधनाना॥देखरहीमैंअतिलतनमन॥तवअर्जुनमुक्कोगंध

375

भै॰ग्र॰ ईन॥ यह कंन्या न्रुमसुता नहोई॥ नष सिषला जन भरे तन नहोई॥ ह॰
भा॰ म राकुल शकुनो तिहूंपांही॥ दिषिय तन यह कंन्या न्रमनाही॥ आष
१८९ हुनायो सभ हलां लगन॥ सेसनाग की हुमा फालगुन॥ मिली श्र
र हू म साथ पयाला॥ हमयाकों त्याये तिहूकाला॥ २८॥ दो॰॥ ह
न ग्रर्जुन प्रभु दिन भयो मन मह किंयो विचार॥ यह कंन्या है सेष की
ब्याह करों निज नार॥ २९॥ चौपई॥ बडे गोत्र की कंन्या होई॥ ताको ब॰
रों हुजस जग होई॥ ग्रर्जुन यह विचार की नोमन॥ कंन्या वर लेऊं य
ह तन छिन॥ प्रभु रूप रपा रथ हथ करी वर॥ विष वुलाइ लिये तिह॰
अवसर॥ पाणिग्रहण किंयो बेद विधाना॥ हास विलास किये विध
नाना॥ दिन दस पांच रयो प्रभु रूपां ही॥ दियो मोहि रिल हान न हां ही
पुन बलवे की मन साधारी॥ उपम किंयो सघा गिरधारी॥ ३०॥ दो॰
॥ तब प्रभु रूप्ण गकरजो रके विनती करी अपार॥ तुम तो उपम क
रन हो बलवे को भरतार॥ ३१॥ चौपई॥ गर्भ भयो प्रभु रूपदरत ल्यारा
तुम प्रभु रूप को तन चले भतारा॥ हम को आनारी जैजैसं॥ मन वच॰
क्रम करि हों जियतैसं॥ जै प्रभु नकहे हुन हरप पबी पन॥ जब यह ब
चन कहे वियोगन॥ तब पारथ प्रभु ले वचन उचारा॥ सुन हो जु ब॰
तिह तोन हमारा॥ वडाधान प्रभु फन रपत न्रपुयिष्टिर॥ राज सुधर्म क॰
रत हस्तनपुर॥ तिह प्रभु रूप को आग्या की नी तब॥ एक वरष बन वा
स करहु अब॥ ३२॥ दो॰॥ सम किये नारद वचन धर्म तात नृपा॰

ल॥ एकवरसवनवासमुकदियोसुनकुरुकुलिवाल॥ २३॥ चौ
पई॥ एकवरषअरनअवभयो॥ मनतनकाकलेसमिटगयो॥ अ
वैगवनकरहौहस्तिनपुर॥ चरनपरसहौनरपतजुधिष्ठिर॥ तप
परिअपनीमातपठावौं॥ देआदरगजपुरीवुलावौं॥ गर्भठला
रतेउपजैसुन॥ राजनकोराजाप्रतापजुत॥ यहआताकरतम
रोनाना॥ निजपुरवसोभयोकुसलाना॥ लैवैठीपतिव्रतहमन
वहीं॥ मैदसमासपरसंश्रननवहीं॥ २४॥ दो॰॥ म॰॥ सनमभएपारथ
वचनअनमलियोतुमतात॥ राजनकाराजाभयोतीनलोकवि
ख्यात॥ २५॥ चौपई॥ अववपरनभोहमतुमसारथ॥ चलआयेसहजे
गहपारथ॥ नपनजुधिष्ठिरध्यानपितातुम॥ धर्मराजलागत
सतुरामुक॥ हमरापतितुमरायहनाला॥ सोगरुवरनहोरकु
सलाना॥ जेमुनकहैसुनउदवीपन॥ जवयहवचनकहेवि
योगन॥ सुनततवमुवारनहर्षतमन॥ सुषसमद्र उपजोसिपश्र
नगन॥ पुनपुनअपनेहृदैविचारै॥ आजदिवसवडभागहमारे॥
२६॥ दो॰॥ म॰॥ सुफलपतिव्रतमानमुकभयोसंपूरनआज॥ गहहवै
ठेप्रापतभयोविजैसषाजदुराज॥ २७॥ चौपई॥ पितावचनपर
धालोसीसा॥ मुकपरकृपाकरीजगदीसा॥ महावलीपुत्रता
हमारा॥ जहांतहांकछुविधर्मजेकारा॥ सुष्टसकलत्रैलोकनिधाना॥ स
दाविजैसेवकभगवाना॥ मुकसोंलोगकहतरहवाना॥ नहीव

अ॰ सु॰ सुबाहु न को नाना॥ हनुमान कों हो मल गावहि॥ तां तें हम नि-
भा॰ ज अलि हु षपावहि॥ कृपा करी हरि हम अप रघुव॥ मिहत गये मा-
१९५॰ ता के हम षनसब॥ २८॥ दो॰ ॥ आज दिवस बड़ भाग सुरू पितु मातु
गात भो आज॥ सुफल पतितन मान को परसों ताके पांइ॥ २९॥ चौ॰
ई॥ सुन्य भये अलि इहै हमारे॥ पूरन भये मनोरथ सारे॥ जेसु न कें-
हे सुन इन्द्र पतनव॥ यह वचन कहे वत्स वाहन नव॥ पावक निग-
म विप्र पुरलोक॥ तपन सुलाय लिये नव सोक॥ जिन तें रूप अब्जी-
य हम ना ना॥ जेसें मिलै पिता सों नाना॥ सो विधमो कों कहि सम जा-
वहु॥ बेटहु कान करग हरन लावहु॥ तपन वत्स वाहन सुजोर कर
वि प्रन सों प्रश्ना नि हम अब मर॥ ३०॥ दो॰ ॥ आपुणा कहि सुन हो-
तपन उचन नाहि यह वान॥ सर्व सले आगे चलो पाइन लागइ तन-
म॥ ३१॥ चौ॰ ॥ राजपार अब अर्पणा कीजे॥ लागो चरन मान हूं लीजे
रक मोधनु षर है अंन रजव॥ पगि पाले ऊ तार हाय न व॥ कर न
हंरवनना इन हो लग॥ हरषन लाग इ जाइ पिता पग॥ सादर हो-
आज्ञा महि नाना॥ तां तें हो इत जग विधाना॥ पितु आज्ञा मान हु
तमम्मै सें॥ मानी सुन न जइ राजा जेसें॥ नौ तन न अब र लिपो करका-
जा॥ काम निरन न हइ तन राजा॥ ३२॥ दो॰ ॥ लिप हि यमहि विं-
ना करै विरघ हहभर नार॥ नान सो गम हि देष कै कीनो पुत्र वि-
चार॥ ३३॥ चौ॰ ॥ तुवन अब वस्या अपनी पितु कों॥ हेत भयो अ

लिहरषलखिनसौं।। ह्वैगयो षोडस वर्ष पिता तन।। दियो देह धा-
रो ताही छिन।। नगनी कोन्ह पथ लितु षदीनो।। मन इक्षित बिला-
स करलीनो।। बीतन गये कितने दिन काला।। जोबन फेर दियो धुवपा-
ला।। बहुत बरस तप भयो नरपत्तन पर।। धर्म धर्म भाषो तिह अवसर।
कहै बभ्रुवाहन को ऐसें।। पितु आज्ञा मान हु तुम जैसें।।४४।। दोहरा।
तब हि बभ्रुवाहन कियो जग्य मलोग बुलाइ।। तीनी भेट अपार संग उ-
तो हरें हय पाइ।।४५।। चौपई।। कोट कहार लिये कांवर भर।। हीरा म-
णि गग्गार रतन जवाहर।। दोय अयुत हस्ती मदमाते।। महाबली मर
अंकुसु चाते।। अंकुस बंर कनक के राजत।। वार अयुत हयवर छवि
छाजत।। वार अयुत रथ भरे पटंबर।। तिन महि बहु प्रकार के अंबर।।
अगनित भेट उठाई साथा।। अश्वमेध को लियो संगाथा।। साजि चले स-
नाच तुरंगा।। सरवीर जो धे बहु संगा।।४६।। दोहरा।। अगन धरत हारे
चले हाटक सम घन संगाथ।। भेट करन की तात को सर्व सती नो सा-
थ।।४७।। चौपई।। आगे दिषपंडितन की नेतन।। कैं वेद उचरैं धुन कोतस
व।। भई कमकाण अश्व सवारा।। हरषत गावत मंगल चारा।। वार वा-
र पुर के सभ लोगा।। चले अनंद न जियत नि हु सोगा।। बजत बजंत्र अ-
नेक प्रकारा।। हरषत मंन चितं न अपारा।। मगन दिह रहु परत कि ह-
सै ना।। छार रही अवनी पर सैना।। लुम डरही रज धर ति अकासा।। दि-
ष्ट न परत दिनेस प्रकासा।।४८।। दोहरा।। कही बात सुनिये गही वा

अ.अ. जहिंअसलिपवचनर॥ छाइरहीभुवरजगगनरुछपरतननहिसूर
भा. ८९॥ चौ० ई॥ छाइरहीअवनीसेनासब॥ रुछनपरतथरतकोम
१९१ गनव॥ हयगजरथवढ़करभपदाता॥ अगनितनकहलपरतन\
हिवाता॥ रुपवीअंधकारहैगयो॥ भुवरजमलरअछाइतभयो॥
कहैंजनयमुनीस्तनइनराधिप॥ अैसैंचल्योवसुवाहनरूप॥ पांड
वकीसेनाजियजाना॥ पुरुकरनआवतसविधाना॥ नवरूतरु
मुषवचनउचारा॥ यहनहिपारथअनुरूपकारा॥ ५०॥ दो० रा॥ च
ढीगजनतपरकन्यकागावतमंगलचार॥ चारवरनअरुअजास
वआपनिजयहितधार॥ ५१॥ चौ० ई॥ यकसोयजुतअप्रमानरथोन
व॥ सीनीपागउलारनपनतव॥ कियेदंडवननपलकनहियम
न॥ लागीजायधनंजयकेपग॥ सीसवरनपरविष्णुरेकेसा॥\
भयोवसुवाहनयहमेसा॥ पुनपुनअर्जुनकेपगलागे॥ पिता
मातुधरहियअनुरागे॥ कहिजेमुनमुनरूपविथाला॥ लागीआ
इपितापगताला॥ वचनकठोरकहेनवपारथ॥ रेकायरतज
केपुरुषारथ॥ ५२॥ दो० रा॥ समकहेरेतमकवनछुद्रीगतप\
हनाहि॥ अर्जुनतिहअवसरमहांअतिकोपोमनमांहि॥ ५३॥
चौ० ई॥ कहेवचनवसुवाहननव॥ कह्योतनतनसुनारविने\
सव॥ उरवकमारुनीयहमाना॥ सोसमभाषहुनाईताता॥ ज
ननीकह्योपितातमअर्जुन॥ सोलागोपगआइसुवनसुन॥ व

चनकहे पुत्र पितासों धस्युत ॥ रे का धर तुम हो काके सुत ॥ हम
गनान होइ जो अवहीं ॥ बिन संग्राम मिले नहि कबहीं ॥ तुम हिल
नाइ छत्रि को नामा ॥ मिलो आइ बिन हू संग्रामा ॥ ५४ ॥ दो ॥ तुम
ग्रे सें जिय धारियो छत्री भाष हि नाम ॥ अर्जुन सुत कहें अंग्रवै बि
न कीने संग्राम ॥ ५५ ॥ चौ ॥ स्वर नाम निज रुप न के हित ॥ तुम ग्रे
सें उपाइ कीनो चित ॥ जो गंध्रव के कुल का होई ॥ कौं छत्री है है पुन
सोई ॥ जद्यपि आप कहावे राजा ॥ तिह तें होइ न ही रण काजा ॥ तुम रा
काम सुरंग बजावत ॥ गान करत नृत्य नचावत ॥ छत्रि धर्म को
जो न हि जानत ॥ लागत बर्न हार हिय मानत ॥ प्रथमें तुम मा नानि
जजानो ॥ हम तो के लच्छन पहिचानो ॥ ५६ ॥ दो ॥ गंधर्वन सों यो
फिरत तिन सुत नसों कहा काज ॥ तुम गंधर्वन कर्म कर तुमको उ
चित न राज ॥ ५७ ॥ चौ ॥ जो नृप छत्री धर्म कहावै ॥ तातें कुल को ग
न उपजावै ॥ गंध्रव नाम लाज तुम आवत ॥ तातें छत्री धर्म कहावत
कुल सुभाउ नर मिटत न कैसें ॥ कोट जतन जग मानत जैसें ॥ तुम
ग्रप नें ग्रे सें जिय धारा ॥ गंध्रव का कुल मिटे हमारा ॥ तातें हय मेरव
झ त्याग्यो ॥ कुठे पारथ नात कहा यो ॥ ५८ ॥ दो ॥ नहि बल देष्यो आ
प महि कपट करी यह बात ॥ गंध्रप कुल मेटन न मित भाष्यो पारथ
तात ॥ ५९ ॥ चौ ॥ नहि देष्यो रन महि जे कारा ॥ तातें त्याग्यो मेट अग्रपा
रा ॥ मिस कर पारथ सुतन सु कहावों ॥ गंध्रप कुल का नाम मिटावों ॥

ग॰ ग्र॰ १९२

तुमसे हेतु नहु मकरो प्रकासा ॥ जो गंध्रप पर ह करहि निवासा ॥ ते
महा विद्यांगन के ताता ॥ हम जानत नहो तुमरी माता ॥ उनकी तौ वि
भवार तकी मत ॥ नाचत विचरत हारहारपत ॥ हम मानत नही तुम
हेत नाके ॥ गंध्रव कुल के लछन जाके ॥ ८॥ दोहरा ॥ प्रथमे मात ससंभा\
रके तो भाषड्डु सुक्रतात ॥ हम तुम मनामाको नहीं गंध्रव तुमरी मात ॥
८॥ चौपई ॥ जैसे सुनक है हेत उद्वप वीपत ॥ ऐसे वच कहि व ब्रुवाह
नपत ॥ विनै वचन हेत नभयो अधीरा ॥ सो कवंत अरे हग नीरा ॥ कुस
पुत्र प्रभु प्रमहांकुव ॥ हेत न आपो तन का तउ हां नव ॥ वचन कहै प्र\
भु मविनै हेत ॥ तुम तौ भगत गुपाल वलीपत ॥ कलित हि हम कों कं
डलगावत ॥ गज रथ अश्व कन कधन पावत ॥ ९॥ दोहरा ॥ राजसमर्प
तनो हि कों मात रे तन निज हाथ ॥ पुत्र तुम्ह्यारा हो न है ताइ ले रउर साथ
९॥ चौपई ॥ पुत्र पुत्र तुमरा पुत्र कहावत ॥ दीन भयो तन मन दुरपाव
त ॥ रुकुम्ह्यभि मत्र तुम्ह्य सो लाला ॥ सराही तन लोक विसाला ॥ रुक यहटी
न विनै तुमरो हेत ॥ आइ मिल्यो ले भेट विंन सुत ॥ ले आयो संग भेट अपा
रा ॥ पिता पुत्र को कियो विचारा ॥ दे वे रुकसहह सम्रु क्रज वहीं ॥ हेत कर
कंठ लगावो अवहीं ॥ हम जैसे सों कर रतन ताता ॥ अवही आइ ले इं इह
माता ॥ १०॥ दोहरा ॥ तुम कों कौ तो पिता रत मन वच क्रम भो तात ॥ स
र्वस तुम कों ले मिल्यो सहित आपनी मात ॥ १०॥ चौपई ॥ इस काहो र\
प्रताप जगन नव ॥ विनै सार षापिता हो रजव ॥ नाम गंधव न को मि\

हजावै॥ अर्जुन सुतन जग इस हि बुलावै॥ तातें लोगन कर हि धकारा
पारथ सुतन सुष कर हि उचारा॥ यह वच कहि पुन पुत्र गुपाला॥ इस्यो
हर षहि पसुतन नंदलाला॥ ऐसे पुन कहै सुन इन्द्रभूपत स्यान॥ नीके हगक
रर प्रीति मै सुतन॥ अर्जुन हृदै कोप अति धारा॥ सुत सों अनिक दुर्वचन
उचारा॥ ७९॥ दो०॥ अर्जुन सुतन कों यौं कह्यो कायर मान संभार॥ संगरां
प्रवन के फिरन निरतन करन परहार॥ ८०॥ चौपई॥ तुम कों उचत मरन
वनावहु॥ मातां को नर निरलक रावहु॥ तुम जैसा पुरुष इह सुत नहोई॥ हम
रा अजस वढै तिहुं लोई॥ हम रा सुत अभिमन्यु सरवर॥ जिह कों रेष
बिचार कियो हर॥ यह तौ जोध महा बलवाना॥ इन के बल को उन ही
समाना॥ नहि छा रेगा रूप कोउ जगपर॥ नहि कोउ जोधा बलि इह स
मसर॥ इह समान बल नहीं किसी कों॥ कियो चाहियै नास इसी कों॥ ८१
दो०॥ पवरी तो चक्रव्यूह मैं इक्का सोंन रलाल॥ बीच पर्यो निकस्यो न
ही होन भयो वस काल॥ ८२॥ चौपई॥ ऐसे सुतन हों हमै नाला॥ तुम का
घर घर हउ चव्रन वाला॥ मूरख कहां वह पारथ लाला॥ का इन तो सोगंध
व नाला॥ काहे मुरू पुनि भाषन लाला॥ तातें मो हि न है कुसलाला॥ अ
म ऐसो हृदय महि मनु धारा॥ अर्जुन भाष्यो पिता हमारा॥ तौन करन जि
य मिलन विचारा॥ कर संग्राम जीत इकवारा॥ जो तुम मनु इकरो हम
सों अव॥ जान लेहिंगे कलह मरोन व॥ ८३॥ दो०॥ छत्रिय धर्म कहां जा
नहीं गंधव तिन की मार॥ जद्यपि तुम राजा भयो मिरै न गोर हभार॥ ८४

लं·कां· चौपई॥ न्रपकुलकथासभावनजैसें॥ सुचितसुमितमिलचोपु
पा· नतैसें॥ वहुरदीनसभनगरसुखारा॥ गंध्रपलोकवसहिनरनारा॥
१९१ क्रोधतपारथवचनकहेतव॥ इनकाराजछिनाइलेहुसव॥ गंध्रप
हैकेभूपकहावैं॥ इनकोउचितसदंगवजावैं॥ रेकायरतुमराजरि
घोकिह॥ ततछिनलेऊंसुरराजपह॥ वहरग्रहरग्रहपुनमानतनचावै
गरमहिडारपषोतवजावै॥ ३२॥ दो॰॥ कोउदीनमिलअधीनयहश्र
मतफिरैसभहार॥ यहकहिविजेरिसायअतिचावकमारेचार॥ ३२
चौपई॥ लेसुनकहेसुनहुभूपतनय॥ वचनकठोरकहेअर्जुनजव
वहुरवडुवाहनविनतीकर॥ लेधासोमसकपितपगपर॥ कहेवजु
वाहनसुनताता॥ सुरधारीमनमहिपहचाता॥ पितसोंउचनतनसुह
हमारा॥ मानलियोहमवेरउचारा॥ तुमपातातसुफरोषलगायो॥ गंध्र
वकोकुलभाषसुनायो॥ अवमातातकोरोषउनारो॥ अवहोरनमहि
तोहिसिंघारों॥ ३३॥ दो॰॥ गोवहमारीमानकालेहुपवनतातेष॥ के
हहिनागंधर्वकीकेपुत्रीहेसेष॥ ३४॥ चौपई॥ गंध्रवहमरीमातहोर
तव॥ रनमहितुमसोंहारिजाइजव॥ ग्रीवपषाउजउचततनसुफकों
सुनफ्नतकहोंजथारथतुफकों॥ अवतुमसेपसुनामुफमाता॥ हम
हींमनववक्रमनिहनाता॥ तौतुमराअवसीसउतारों॥ सेनातुम
रीसकलसिंघारों॥ लोहमविडोंगतसुननाही॥ जोनतुफहिमारोंर
नमांही॥ मातसुनसमुनभयोसंमाया॥ अवतुमविजेसंभारहुआपा

२९॥ दो॰॥ ऐसे बचन कहि उठ चल्यो महा क्रोध जिय धार ॥ सेना अप
नी महि गयो कीयो हदै विचार ॥ ३०॥ चौपई ॥ अस्वमेध करके अप्रज्ञा
सब ॥ पठई ने अपने पुर कों तब ॥ सब सेना पुनि बचन बषाना ॥ वेग
करहु सभनु हम पाना ॥ सुनहु अर्जुन देसां भइ वाना ॥ शस्त्र बांध हो वो
स विधाना ॥ नगर मांहि सेना पी जोऊ ॥ चल आई ततछिन मिल सोऊ ॥
रूप जननमेजय पग अरकियो पुन ॥ संसे मुझ हि मिरावो जैमुन ॥ अर्जुन
ज्ञान तभले प्रकारा ॥ बभ्रुबाहन रूप लालन हमारा ॥ ३१॥ दो॰॥ पारथ अ
पने सुम के को समास कसे नहि साध ॥ अपना सुत नजियजान के कछि को
करी उपाध ॥ ३२॥ चौपई ॥ जैमुन कहै सुनउ भूपाला ॥ गहन गूढ गत अग्री
बंदलाला ॥ बचन हरसरीसन करन नहि न ॥ तांतें बिधना बुद्ध हरी
चित ॥ होनहार दिढ है पुन तैसें ॥ कोट उपाइ मिटत न नहि कैसें ॥ पिता पुत्र
नजानत वन काज नहि ॥ ऐसा कारत ग्रोजन हुरा जनहि ॥ लषी परत नहि भग
वन की गत ॥ बिजे हुदै नव भयो कुवत अखल ॥ सुनत रूप कथा हियें धर भा
उ ॥ ३२ रतन ओउनतीसम ध्याउ ॥ ३० ॥ दो॰॥ इति श्री भारथ पर्व लेख श्रम दे धना
यन ॥ ३ उनतीसमो अध्याव यह हटट हकन करन जान ॥ ३१॥ चौपई ॥ जैमुन कहै
सुनहु भूपाला ॥ सुनहु अर्जुन रूप का विसाला ॥ बभ्रुबाहन की अ
रगन ॥ भई कनर आरंभ मरन ॥ रूपत आपने पुर महि गयो ॥ माता
को हलतां न कछि रयो ॥ पितु का दूषन भाष सुनायो ॥ वातक कहन जिय
मां रिसायो ॥ पुन बोली चित्रांगन माता ॥ सुनहु अर्जुन देह मरीचा

न॰ ग्र॰ ता॥ दूषन लछमन रामा न लगायो॥ तुहि नसभा महि कहि उग गायो
भा॰ ॥ दो॰ ९॥ अब सतलछमन कों यह उचन दूषन मोहि निवार॥ निरदू
१९८ षन मुक कों कहै ऐसे वचभरतार॥ २॥ चौ॰ ९६॥ जह करहू सनमुष
होतावा॥ बलकर होय उमा रहू माता॥ कौ जै जु हू पुत्र बलवाना॥
तुमरी है सहाय भगवाना॥ हमरो कुल पवित्र तहै रिझानत॥ पाप
पुन्य सभ विध पहिचानत॥ जो पवित्र तरहे अवल हमारा॥ तौ ता
मनु हु होइ जेकारा॥ पिता तो षली जै वानन सों॥ डुषटी जे उनके
प्रानन कों॥ कै उ ग्रापना या हि दिषावहू॥ पैने सर सों रन विपता
वहू॥ ३॥ दो॰ ९॥ यह वच विग्रांगन कहै ह्व नजन मेन परा इ॥ व
दूर वचु वाहन कहै वचन नीचगराइ॥ ४॥ चौ॰ ९७॥ कहै बभ्रु वा
हन हन माता॥ सुरु मानी निगमन की वाता॥ ह्रायजो रणा ढोपि
तआगे॥ दीनी भेट हियें अनुरागे॥ ऐसी मनसा कीनी पीसुक॥ ह
न माता वच सत्य कहो तक॥ हमपकलो फिरावो वाजा॥ जीतदे
उपितकों सभ राजा॥ अर्जुन कों गजपुरी पठावो॥ अश्व फिराइ
जीत नृप स्यावो॥ पइचावो हय कों हस्तनपुर॥ जत्तकरै गानृप
तनुधिष्टर॥ ५॥ दो॰ १०॥ हमरी मनसा यह हुती पिता करी विप
रीत॥ दूषन राषात कविषें अब भई उलटी रीत॥ ६॥ चौ॰ ९८॥ अब
निरदोष करों तक माता॥ करों चमून तपित रन घाता॥ जीव
नेतें भल मरन हमारा॥ सभा बीच महि भयो धिकारा॥ तातेंजक

परैंरनमांही ॥ जियतविजैकोछोरैंनाही ॥ मातासोंआतालीनी
जब ॥ आयोअपनीसेनामहिंतब ॥ आताकीनीसभसेनापत ॥ उघ
मनुडकरोहरषतमन ॥ संपसबरकीनोबहुजोधा ॥ कायरडरे
सूरमनक्रोधा ॥ ७ ॥ दो० ॥ चढ्योबभ्रुवाहनुबलीमहासबलबल
जोर ॥ अलिपचलरहसबरभोआयोपितकीओर ॥ ८ ॥ छंद ॥ चा
लेसबलदलसाजबभ्रुवाहनरिसाइमन ॥ हयगजरथपाइकअसे
षडंडभपुनअनगन ॥ सेसचकतथरहरहलोडंदरंदासनकंप्यो ॥ डुलो
सुमेरकुमेरसपतसागरजलकंप्यो ॥ दिनमणिप्रतापसभमिटगा
योअंधकाररहहरिसभयो ॥ धरकालरूपसाभ्यानबप्रअर्जुनकेमन त्रिरव
प्रुषभयो ॥ ९ ॥ सुतकीसेनानिरषिंपारथअबरजमन ॥ कालप्रका
रनिहारतातकोभयोसिथलतन ॥ प्रलैकालकेसमेहोतक्रोधत
संकरजिम ॥ महारिसाईहोरबभ्रुवाहनसनमुषतिम ॥ नहिकाइगा
मुजआजपहछिनविनाअर्जुनकरत ॥ अबसरबिपरीतकबन
हिंबसमोबिधनागतनलषीपरत ॥ १० ॥ चौ० ॥ जैपुनकहैसुनउरग
पवैना ॥ विजैनिरषकेसुतकीसेना ॥ महासोगचिंतावसभयो ॥ दुष
उपज्योजियमहुषडरगयो ॥ करनसुतनहुअहहरिकोताता ॥ होनोक
हीविजैप्रतिवाता ॥ प्रथमेरनसोंनुदहमारा ॥ जकहिगेरनभलेप्र
कारा ॥ सुतपारथचिंतानिपकीनै ॥ गुरुकरहिंहमआतादीजै ॥ प
हुबचनकहिहोरसनमुषभये ॥ विद्यमानचलकेरनगये ॥ ११ ॥ दो० ॥

न॰ श्री॰ प्रथमेहरिसुतमानसरकसमारेकरक्रोध॥ आवतवाननिहारकै
भा॰ हलोविजैसुतजोध॥ ९२॥ चौ॰ ई॥ फुल्लहाथनसोंटुकटुककीने॥ प्र
९९५ थनेनिकरतनआवनदीने॥ कोप्योअधिकवब्रुवाहनमन॥ ववनक
हेसुनअवनसुडमन॥ आपसंभारहुआवतहैंसर॥ यहवचकहिली
नासुधनुषकर॥ तीनवानछाडेसनमुषतव॥ काटतकीनोसरनग
गनसव॥ मनकोऊपरकरेनिवासा॥ तांतेंलीनोकारग्रकासा॥ वा
नपिंजरारचगटकीनो॥ पांडवकटककेहरसभलीनो॥ ९३॥ दो॰ ॥
सरपिंजरकोतोरकैहरिसुतकियोविचार॥ तोसोंसरपिंजररच
यमपार्हेंनुरप्रकार॥ ९४॥ चौ॰ ई॥ यहविचारगिरधरसुतकीनो॥
कोपतनभयोधनुषकरलीनो॥ टेकसीसछाडेरसवाना॥ इकसर
सोंसरपिंजरहाना॥ उनषरसरषरसहसभयेतव॥ हयगजरथ
पाइकमारेसव॥ तीनवानसनमुषचलगए॥ रथसारथिसोंवेध
नभए॥ करगहिचर्मविजैसुतलीनो॥ रसवाननकोंषंडितकी
नो॥ पारथसुतरथअवरमंगायो॥ भयोअरूढक्रोधउपजायो॥
९५॥ दो॰ ॥ रथअरूढकैविजैसुतछाडरियोइकवान॥ रनम
हिआपतभयोसरहैगयेसहसप्रमान॥ ९६॥ चौ॰ ई॥ एकवानला
गेहरिसुततन॥ लेगयोगगनउडाइतिहीछिन॥ अवरसरनपा
रथकीसेना॥ हननकरीकहिपरतनवैना॥ हयगजरथवडहह
नेपहाता॥ अनगनचमूकरीसभताता॥ करनसुतनसुतवदेष

नभयो ॥ हरसुतनकोंमरनभलेगयो ॥ चमग्रकासतुनिधरनगि
रायो ॥ मासनभयोदेहहुरछायो ॥ नवहषकेनभयोसनतुषरन
महावलीसूराक्रोधनमन ॥ ९ ॥ दोहा ॥ क्रोधनमासोवानकस
हदेधारहरध्यान ॥ पारथहतनकोवषुसभछौभईप्रमान ॥ १०
चौपई ॥ पारथसहतनग्रागाकीनीनव ॥ होइपरसरसुहकरइसव
हस्तीसोंहस्तीतुरगर ॥ ग्रसुनसोंग्रसुसनमुषभए ॥ रथसोंरथप
रकसोंपाइक ॥ मछोनुहसेनाभईवाइक ॥ चारवानहषकेतग्रव
रतुनि ॥ कसमारेहसनातफालगुन ॥ नषवछवाहनकोसारथि
पक्योग्रकासकियोपुहषारथ ॥ ११ ॥ दोहा ॥ कुप्योवभ्रुवाहन
हियेंहियेविसकसरकोर ॥ दसमरतेंदससहसदैचलेकर्नसुत
ग्रोर ॥ ११ ॥ चौपई ॥ सरनउडाइलियोहषकेना ॥ डालोधरकरमू
र्छग्रचेता ॥ वद्दरपरेसरसेनामांही ॥ हनेजोधराछोकोऊनाही ॥
मारतवानगयेचलतहां ॥ वाहाथापारथनिजजहां ॥ ग्रर्जुननि
रषीग्रपनीसेना ॥ नासभईग्रवलोकीनैना ॥ मर्छगतकर्नसहरि
हतनहां ॥ पारथगयोहांकरथतहां ॥ दोनोंकोंदेषोकुसलाना ॥
मूर्छितपरेभईनहिग्याना ॥ १२ ॥ दोहा ॥ पारथपवनकुलारके
मुषग्रववायोनीर ॥ मूर्छाउतरीदुहनकीभईसुचेतसरीर ॥ १२ ॥ चौ
पई ॥ लेधुनकेहसनदहरानाना ॥ होजसूरभयेसविधाना ॥ धनुष
वानलीनेपुनहाथा ॥ वभ्रुरंगनीवसूकरिसाथा ॥ ग्रतिक्रोधन

जै॰ अ॰ सत्र सुबाहु पर रन॥ कियो बभ्रुवाहन विचार मन॥ मूर्छित गिरत लउ बलप
भा॰ ह तन लखि तन॥ अजह इन नास भये इनके तन॥ आयनि कर चल अर्जुन ना
१९८ ना॥ क्रोध तक कहो इह हन सों बाना॥ लम लो छडि धर्म न हि जानत॥ सुत बी
च अपनाम लखान न॥ २३॥ दो॰॥ एक बेर बलहार के सर गिरे रन मांहि
लिह जो धाकों रण विषे सुहृद उचम पुन नाहि॥ २४॥ चौ॰॥ लमनो बडल
बेर मूर्छैं रन॥ मृतक समान भये लमरे तन॥ एक बार जो करन महि
हारा॥ बड्रन ने हरन मैं जै कारा॥ यह वच सुने क्रूल के सुल जब॥ बारबा
न तीछन का दे लब॥ बारबान सुघ केत निकारे॥ अति विकराल महांभ
य कारे॥ ते धो जाइ बभ्रुवाहन कों॥ कंटक सम लागे अमतन कों॥ बड्र
विजै सुत पको सैलसर॥ डालो पारथ की सैना पर॥ २५॥ दो॰॥ नासक
री सैना बड्र लबड्र पवन को बान॥ देकसी सकाडे नव हि अर्जुन सुत
बलवान॥ २६॥ चौ॰॥ करन सुत न सुत्रहल तनें रलाला॥ होइ पठेस
नाम भई लरु सेन अपारा॥ लव पारथ जिय कियो विचारा॥ जहां परा
मूर्छित हरिलाला॥ अरु हव केत सर विषाला॥ तिंहो बीर अर्जुन बलिआ
व॥ तिन कों निरखि चिंत वस भए॥ अंग्रत रहे करी प्रहमन पर॥ भयो ह
बेत॥ नु हरको सुत न विजै सो हरि सुत न सुत कहे बकेत॥ २८॥ चौ॰॥ करन सु
न सुत कहलन गिरधारी॥ रको सुह सेना बड्र मारी॥ बारबान सुघ केतनि

कारे ॥ चारों सर गिर धरहन मारे ॥ कर इक कउ काढे सनमुख रन ॥ बेधत
कि पेव बभ्रुवाहन जन ॥ फूलहि लें मारन को जैसें ॥ सूरबीन हनन सरलागे तैसे
मे ॥ पर्बत बान बिजै हनन मारा ॥ सेन बिजै की करी संघारा ॥ जोई जोधा बा
हे रन जहां ॥ धरन गिरे सो मूर्छित ह्वै तहां ॥ १९ ॥ दोहिरा ॥ बभ्रुवाहन कु
फो बान सुरें मे चार ॥ है सर हरि हित कों ईनै हैं ह्वैकै न प्रहार ॥ २० ॥ चौपई
बेधत किये सरन सों होऊ ॥ रहिगये बभ्रु रउ बनतें सोऊ ॥ सूर्जेन चिंत भई
तिह काला ॥ उठ्यो न बहिरान बभ्रुसाला ॥ जोबनास हनन सहित उको
नव ॥ उठ्यो हैं सधुज हनन सहित सब ॥ हनन बर मानाद बल बाना ॥
भये सकल सोधे सबिधाना ॥ प्रथम हनो सत्रुसाल एक सर ॥ छूटन भए
सह सनि हम्र बसर ॥ रथ बिहीन किये पारथ लाला ॥ बडूरों सेन करी
बडूवाला ॥ २१ ॥ दोहिरा ॥ कुप्यो बभ्रुवाहन नन बहि बान रियो रकको रे ॥ रथ
समेन सत्रुसाल कों लै बहि पोन भयो र ॥ २२ ॥ चौपई ॥ नभ प्रथम पके धरन
गिरायो ॥ नासन भ पोहेहं भुरछायो ॥ क्रोधन उकोन पन त्रेबनासा ॥ सर
हं न रथ सारथि कियो नासा ॥ काही धुज मल रंग मभारे ॥ पहुं बल किय रक
सरभय कारे ॥ बडूरव बभ्रुवाहन सरमासो ॥ जोबनास मूर्छित कर तासो
बडूरहं सधुज के हनन क्रोधे ॥ सन प्रथम भये महां बल जोधे ॥ सेनापत
पके हनन कीतिन ॥ बडूनकरी संहार ताहि छिन ॥ २३ ॥ दोहिरा ॥ सुनि क्रो
पनमो बिजै हनन बिषसर मासो पार ॥ बचे हूने जे कमल हर रन सकल
हियेभर कार ॥ २४ ॥ चौपई ॥ कै हचेन प्रथम सुन उठो पुन ॥ हे छो चिंता

म॰ ग्र॰ मद्दिनफालगुन॥ पाकेरयोनहींकोकओधा॥ महाजीयवत्रुवाहनक्रो-
भा॰ धा॥ कहैविमैहनहमनंदलाला॥ दिषियतहैअबअपनाकाला॥ अप
१९० नाआपमानहतुलापो॥ रिसकरअपनाकालबुलापो॥ लमयहनवास
कियोनिहअवसर॥ अनिसेक्रोधवढोहमनिहकर॥ फेरपढेहलपाव
कवचन॥ कंमाफेरकियमलीनमन॥ २५॥ दो॰ ह॰ रा॥ नगरमहाजनयज्ञ
कोकियोनिरादरमोहि॥ लोनैहमयानामअवसांचकहहलहोलोहि॥ २६
चौ॰ प॰ ई॥ जाननहोयहमगरीकाला॥ लागतहैयहहमरीलाला॥ निहवि
रहषनकियहगकारा॥ नहिजामोयहकवनप्रकारा॥ कैसेकीजेहल
नंदलाला॥ हदेविचारकहोनंदलाला॥ कहिहरिसुलसनभगवन्तुरा-
रा॥ नुहविनानहियअवरविचारा॥ यहकहिहरिज्नसनमुषगयो॥ वा
पअगनसरसाधनभयो॥ क्रोधनहैकामयोमधसेना॥ नरगईसयक-
हिपरलनवैना॥ २७॥ दो॰ ह॰ रा॥ कृष्णावत्रुवाहनरूपतक्रोरदियोजल-
वान॥ अगनमेरक्षाकरीपुनकोप्योवलवान॥ २८॥ चौ॰ प॰ ई॥ हनैविमे
हलवानअपारा॥ पारथसेनाकरीसंघारा॥ लमलनुहइहदिसभो-
पारी॥ अर्जुनकीसेनावडभारी॥ कुरीकरारीनमधरलरही॥ सनमुष
लाउलेहिनहिरहरही॥ हयगजनरषण्डगिरहनैपहाला॥ अनगननमोधभये
रनकाला॥ वड्डरउठेपारथकेमोधे॥ न्नुहकानहिनअनिजियक्रोधे॥
अपमेडक्योरैमगत्रुसाला॥ वडरोंजोवनासभूपाला॥ २९॥ दो॰ ह॰ रा॥ म-
कीकुरीउठलवहिनारकसेनालोह॥ निरषवत्रुवाहनवलीनिजक...

पलमोसोइ॥५०॥चौ०१६॥सांध्योबहुरहलाहलबाना॥नासहोइलीनि
पेयाना॥सोसरकसिमासोअनुसालहि॥मूर्छितधरनिपरोतनतका
लहि॥बहुरोंजोवनामभूपाला॥सननसुषहोनभषोनिहकाला॥ननलि
नलिसहिबहुरसुरछायो॥एकबानहनधरनगिरायो॥बहुरविनैसु
नहदेरिसायो॥समसेनाप्रतिबानचलायो॥पौनलागगजिमउडनकया
सा॥जिमसमसेनाभ्रमनअकासा॥५१॥दो०॥नभतेंभ्रमगिरधरप
रोसकलगिरीसुरछाइ॥बहुरषयुत्रतवैनहैमननसुषभयोरिसाइ॥
५२॥चौ०१६॥हरिसुतनसरसंरंभकरजोलै॥हन्योवस्त्रुवाहनसरतोलै
कुलनालकोधरनगिरायो॥बिहवलकरधरनीसुरछायो॥सालि
ककुलनवरमाधुनआए॥जोवनासतुनसहनरिसाए॥रूपलहंसधु
मतलनसहितनव॥पुनआएहलचोरएउसव॥इतेजोउजोधेबल
बाना॥ठाढेभएआइसविधाना॥बालकनागफांससरसांध्यो॥मा
लोबानसमनकोंबांध्यो॥५३॥दो०॥नागफांससरछाइकेबांध
लिएसभजोध॥रूपलवस्त्रुवाहनहिंयेंनेकमिरतनहिक्रोध॥५४॥
चौ०१६॥उठेनीलधनपावकहोक॥सत्रसरजमानालागनसोक॥पाव
कसुषतेंअगननिकारी॥पारषहलनकीसेनसंघारी॥गजरएअश्व
पदातनमरेसभ॥निरषलवस्त्रुवाहनकोप्योतब॥पवनबाननिहसंधा
रचलायो॥सत्रसरजमानागगनउडायो॥लगेभ्रमतगनभपवनचक्र
पर॥हूंगयोअंधकारतिहअवसर॥पवनचक्रज्वालाउलराई॥

म॰ग्र॰ भा॰ १९८

पारथकीसेनामहिपाई॥ ७५॥ दोहा॥ हयगजरथपाइकनकरसे
नकरीवहुत्रान॥ पावककोवहुइषदियोवलीविजैकेमान॥ ७६॥ चौ
पई॥ पारथग्रपनाकरकनिहारा॥ निरषतचिंताबढीग्रपारा॥ मूर्छित
भयेसकलवलवाना॥ दिषियतकोउनरनमतिपाना॥ महावलीपे
सत्रुरजमाना॥ तेउभयेमूर्छितरनथाना॥ अर्जुनसनरदेषीनिजसे
ना॥ म्तकभईथिरथीवहुतैना॥ वहुरविजैकीचमूनिहारी॥ केउम
लककेउभयेदुषारी॥ रह्योनकिसीवीचवुधवारप॥ रह्योएकलोपा
छेंपारथ॥ ७७॥ दोहा॥ हयनमानमिराउग्रवषुफरसंहीसोंकाम॥
अर्जुनकेसनवुषचल्योपारहियेसंग्राम॥ ७८॥ चौपई॥ नदीरुधिरकी
महांवीचरन॥ जहांकहांनहिदेषियतधरन॥ परेतहांधनुवानवानरन
व॥ रननेंहूरकेनोंकवंधसव॥ भटननामताकसवलवाना॥ निसहि
वुलाइलियोधरध्याना॥ प्रगटेवेसुनिसाचरतहां॥ वहुदिनकेभुषा
रथभरा॥ धारिरूपदारुनविकराला॥ ग्रापसभरतामहिनतकाला॥
७९॥ दोहा॥ दोइलाषराक्षसवलीवलग्रापरनमांहि॥ नवहिवभ्रुवा
हनन्रपलग्रासादीनीताहि॥ ८०॥ चौपई॥ यहरतामहिसभभोगत्रसा
रा॥ इच्छामोंकीजियेग्रहारा॥ हयगजरथमारथीपदाला॥ वहुतभय
रतामहिपहवाला॥ इनसभकोंभक्षनकरलीनै॥ यहकारजकोविल
मनकीनै॥ राक्षसहृदेग्रनंदलभए॥ वहुदिवसनकेदुषदूरगए॥ वहु
नकालनकेभुषारथमन॥ निंगलग्रांहिगजग्रस्वनकेतन॥ गावत

कोउउचनकोंजैसें ॥ वरवनकरतनरनकोंतैसें ॥ ५१ ॥ दोहा ॥
नुहद्भ्रमषालीकरीहलोग्रसघपरान ॥ षाइगएरकनिमषमहिजे
उहूलेरनतान ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ पीवहिरुधिरहोइहरषितमन ॥ तेता
गजननकीलेपहरहितन ॥ श्रंतगर्यरनकीउरमेलहि ॥ करहिकलो
लपरसरषेलहि ॥ श्रघर्यछलेधारहिसीसा ॥ वर्मपइरतनकरहि
श्रसीसा ॥ महाप्रसन्नभयेवडूनाचहि ॥ भोगहिभोगजेउमनवांछहि
धनधनकहिपारषलाना ॥ जिनहमराकीनोकुसलाना ॥ धनश्र
नैनहेतनमनरचायो ॥ हमकोंदेश्रहाररूपनायो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ पार
षपन्नतश्रतिधननलमवडेजतनकिपतोहि ॥ हमभूषेवहदिननके
वडूलपनायोमोहि ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ षालीकीनीवहुतभूमरन ॥ षह
कारतकिषोग्रसराक्षसन ॥ इकइकराक्षसइतनश्रहारा ॥ भक्षन
किषोमुदितनिहवारा ॥ एकसहसगजइकइकषायो ॥ इकइकश्र
घुतनुरंगचवायो ॥ इकइकलाषपुरुषमुषवासा ॥ पीवहिरुधिरभि
हीजिषपासा ॥ कछोवद्धवाहनवलवाना ॥ आइनिसाचरनिसप्र
स्याना ॥ जवरेकोषालीमगभयो ॥ तनपितकेसनमुषचलगयो ॥
५५ ॥ दोहा ॥ निकटजाइकेपितासोंवचनकहतभोलाल ॥ उग्रग्रं
नग्रवमुद्दकरछुपेवननतनहिंचाल ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ जैसुनकैहतमङ
भूपतवर ॥ यहविधश्रानरचीगिरवरधर ॥ श्रापहरसरीसमक
रतहित ॥ तातेंरचीरमापतपदकंज ॥ लषिनपरतमायापलाकीग

न॰प्र॰ न॥ करनकरावनहारजगतपत॥ होनहारह्वैहैपुनतैसें॥ कोउ\
भा॰ पाइमिटतनहिकैसें॥ पितापुत्रकोत्रुइसमाजा॥ ज्ञानवनापोश्री
१६६ जइराजा॥ सुनइकथारुपहिधरभाउ॥ पुरनभयोश्रीसमोधाउ
५७॥ दो॰हा॥ इतिश्रीआरण्यपर्वतेअश्वमेधप्रथाण॥ कवित्तहनुकनर
रगभयोध्याविंध्यमोमान॥ ३७॥ चौपई॥ जैसुनकहैसुनइभुपाला
प्रतिश्रवजलीलानंदलाला॥ सुनतैनासकरावनलाला॥ लषिन\
हिपरतकसकीवाला॥ पारषसुनतकेसनसुषआपो॥ इनेपांचसर
हदेरिसाचो॥ रथसारथीवभ्रुवाहनको॥ ततछिनलोरगिरायोरन\
को॥ धरितनकरलीनेवइवाना॥ अरजुनसुनतमरेवलवाना॥ वइर\
विजैसुनतवचनवषाना॥ कुंतीसुनइमेसविधाना॥ ५॥ दो॰हा॥ कु\
न्तीवभ्रुवाहनवलीकीनवानरिपकोर॥ रथसारथिअरजुनसहित
परेगगनकीओर॥ ४॥ चौपई॥ गगनउठाइधरमाइदियोपुन॥ महा
कष्टतनभयोफालगुन॥ रथविहीनमनछिनकरलीनो॥ अरजुन
महासोकमनकीनो॥ पारथदेषीअपनीसेना॥ कोउनओपविलो\
कीनेना॥ चिंतायुतमनमांहिविचारै॥ ऐसेजोधेइनेहमारे॥ कोउन
हिठाढोरहयोवसरथ॥ कोउमृतककोउपरेपरुधपर॥ हमदेवनतें\
निनवलहारा॥ रथविहीनजियचिंतअपारा॥ ६॥ दो॰हा॥ सुनतकुंतो
नकारूपगुहिरहपरतरहइभार॥ नासहुमाराकेरेगायापोमहारि
सार॥ ७॥ चौपई॥ वहुरोंविजैकोधजियधारा॥ सहसवानसुनकोंक

सभारा ॥ मूर्छितभघोवत्रुवाइननव ॥ षकुठरीघरउकोवइरर
व ॥ षंडितकीनेअर्जुनकेसर ॥ कुष्णोधनंजपसुनतिहअवसर ॥ कंद
कसीलात्रुभततननमैसं ॥ अमघाघोघारषसुनतैसं ॥ लीनोधत्रुववत्रु
वाइनपुन ॥ कह्योसंभारइआपफालगुन ॥ सानवानपुनकियेप्रहा
रा ॥ भयेसानतैंसालहमारा ॥ ५ ॥ दो ॥ रा ॥ वेधनकीनोविजैकोधरनप
लोउलराइ ॥ वइडुषघायोइंइसुनसिरनलऊपरधोइ ॥ ९ ॥ चौ ॥ ई ॥ एप
हुराअतिविकलभयोनन ॥ वइरउजोअतिवढीचिंतमन ॥ तिषुइ
गघेनरकसनैंकाना ॥ भाषतवचनभलेभगवाना ॥ क्रोधतइनेवि
जैप्रनइसमर ॥ कूरनभयेलाघइसनलपर ॥ वइरहोतभैअमित
सुघारा ॥ नवधारषसुतषकसंभारा ॥ षंडितकीनेवानअनेका
अवनानकिघोनजाइविवेका ॥ भघोवत्रुवाहनक्रोधनअति ॥ अग
नरूपलरइयोविजैपति ॥ ५ ॥ दो ॥ रा ॥ तिहसरअर्जुनकेधनुष
लिघेप्रलैंचमराइ ॥ अैसैंनाम्योविजैमनकालपहूच्योआइ ॥ ५ ॥ चौ
ई ॥ पकवाननहिलगेहमारा ॥ होइनहीरनमैंजैकारा ॥ गुनकु
वंकालोरचूरायो ॥ नामोकालनिकरस्रुहिआयो ॥ देषतहींअप
सगुनविधाना ॥ तिइवेंनामहोइउकमाना ॥ जोअववविनैमिलैं
करलाला ॥ तिंइहिसरउपतनहिवाना ॥ पहताहोरनकालप्रका
रा ॥ मामाकोइषवजिमधारा ॥ आजनकाइेगाघ्रुनकोपइ ॥ सन
मषभयोवइरअैसेंकहइ ॥ ९ ॥ दो ॥ रा ॥ पत्रुषवानदोऊनजेषइग

ने॰श्र॰ वरमलि पहराय॥ जेहि रस्यो क्षों पलहि थें पिताउ वकेसाथ॥१५॥ चौ
भा॰ पा ई॥ प्रथमे अर्जुन षड्ग निकारा॥ है कर मोर तो लन न मारा॥ षड्ग न
१०० कियो षड्ग कों वालक॥ अपना षड्ग कादलन कालक॥ कादलियो
अर्जुन को सीसा॥ अैसें पीड़ कथा जगदीसा॥ नलछिन उलरप सोरन
भूपर॥ रंच क अरकर हह इलन रूपर॥ हरषन भपो व उवा हनन व
माता को हषन उलसो अव॥ जै उनकै है लन डू भूपाला॥ पहगनर
वीनरंरकेलाला॥१६॥ दो हा॥ समकर नगंगा वचन हरन विजैश्र
भिमान॥ लांतें पहकारन कियो कथा सों भगवान॥१६॥ चौ पा ई॥ कौंन
करेषन नमिलरे वसभ॥ वट विमान ताके ऊपर नभ॥ पिताउ
कोनु ऊपर सर॥ सूरल रावन र कथा सों हर॥ प्रभु कियो जनव मेज
धछ्रिलपनि॥ हिलधर कै शकथो जै उनि शनि॥ आगे क वडूभर्द
पहवाला॥ कीनो नुह पितासों ताला॥ आगे को फल सो विपथ अैसें
पारथ अरुपारथ हनन जैसें॥ जैमुनकै है उनरूभूपति वर॥ नु
हभयो ते ला के अवसर॥१७॥ दो हा॥ जैलान्नुग मैं कुसलव हिनुह
कियो पिलसाथ॥ उलतें सीता हुनन भयेइ लतें श्री रघुनाथ॥१८॥ चौ
पा ई॥ ते लान्नुगमैं श्री रघुनाथहि॥ कीनो नुहरलकु सलव साथहि॥
कहि जनमेजा जै उनपनी॥ गुरू पह कथा हुना वडूरपनी॥ लरे
रामसों सिपहुन जैसें॥ मोकहि कथा हुना वडूजैसें॥ जै मुनकै है
हुन डूभूपन वर॥ कहां कथा हुन ले डू अवन धर॥ जैसें लरे रामसों

नाना॥ तुमकौं सकल सुनाऊं बाता॥ रघुबर नास कियो रावन ज
ब॥ रावन मरन मंदोदरी लंका सब॥ ५॥ दोहा॥ सुनत रामायन संछेप यह क
था सुनाऊं तोहि॥ सुनी महां बिसतार सौं बालमीकि कै मोहि॥ ६॥ चौ
पाई॥ सिय कौं लै आए निह भुवसर॥ कियो प्रनाम जानकी रघुबर॥ श्री
रा कर तन भए रान बन तब॥ अगन प्रवेस करो सीता अब॥ पावक कुंड
रच्यो बिधि नाना॥ दीरघ जो जनु देह प्रमाना॥ ता मधि सीता कियो प्रवे
सा॥ हरष भए तिय नहि कछू कलेसा॥ कीनो राम प्रसन्ना सिय की॥ उतर
गई मलीनता सिय की॥ मन कलुता न बचा रह पापो॥ सिलर बुपत
हि वियोग न सापो॥ ७॥ दोहा॥ जै सुन कहै कपाल न हु कपार मा
यन राज॥ रावन कीनो तप कठन जिह लंका के काज॥ ८॥ चौपाई॥ रा
वन महां कठन तप कीनो॥ नवमन शिव चरनन महि दीनो॥ दस हि
वे रचा दे दस सीमा॥ नौ उन भयो दसन गवरीसा॥ काटे दह तेरगो नि
कारी॥ विधि सौं तिनकी जांन सवारी॥ अनि हर्षत हिय में उवनायो॥ ना
हि मध्य शिव को गुन गायो॥ विधि बल करी शंभु की सेवा॥ तब हि प्रस
न्न भए महादेवा॥ कियो मनन मे सं दह सिर अब॥ पायो लंका देस ता
मन ब॥ ९॥ दोहा॥ सोइ लंक को राज प्रभु दियो विभीछन जोग॥ वि
न सेवा जप तप रहन ग्रह वै वै निह सोग॥ १०॥ चौपाई॥ मो तें रघुबर म
हां उदारा॥ प्रकट भए लला बन नहि बारा॥ अैसे प्रभु कौं छाइ जे उनर॥ आ
न सुबरन कौं मन न मा धर॥ सरा कलप नाम्हि रैन यासा॥ तिनकी

जै॰ अ॰ पूरनहोतनन्मम॥ लंकाराजवभीखनदीनो॥ कृपाकरीअपनाकर
भा॰ लीनो॥ नापाकेरघुवरचलआए॥ मिलभारद्वाजकर्मकरवाए॥ आग
४०१ पितोकोपिंडभराए॥ पितरकर्मकरसभनरपताए॥ विधवतपित
केकर्मकियेसभ॥ आपरामअञोध्यामोंतब॥ २२॥ दोहरा॥ आइमिले
भ्राताप्रथमभरथसत्रुघनसोइ॥ किपधमुरिवमनरंदवनलगेरा
मपगजोइ॥ २२॥ चौपई॥ भरथरामकोआताकारी॥ मनवचक्रमसे
वकहितधारी॥ धरतधोरपोढनतिहअवसर॥ नहिंसोवतरघुव
रकेसमसर॥ नदहमहिकिंघोपवेसरामजव॥ प्रथमेकेकेपगला
गेतव॥ कौसल्याकेपगलागेपुन॥ विनेकरीरघुनाथमहागुन॥ व
हुरसुमित्राकेपगलागा॥ सभकोतोखहिर्देअनुरागा॥ पुनसिंघा
सनरामविराजै॥ महांप्रकासकोटरविसाजै॥ २३॥ दोहरा॥ दर्सपर्स
केरामकोहिरदहर्षतसभलोग॥ चावंदउरनसमाचहीविनसगये
सभसोग॥ २४॥ चौपई॥ नहांमिलेसभलोगअपारा॥ दरसविलोक
करतजैकारा॥ जोजैसीमनमांकरआयो॥ तिहकोतैसोदरसदि
खायो॥ लेकरभेटसुमिलीप्रजासभ॥ तिनपहिप्रछतरामचंद्रत
व॥ कीतोराजभरथमोपाछे॥ लयककुलखपायोविधआछे॥ भर
थराजमहिहमदुखपायो॥ कोटकष्टकरसमाबितायो॥ २५॥ दोह
रा॥ वचनप्रजाकेसुवनसुनरघुवरप्रछनधाम॥ सोचकरहनकिधों
रूवपहकरहजनारथवात॥ २६॥ चौपई॥ भरथकहेसुखवचनप्रका

सा॥जबप्रभलगमहिगयेउवनवासा॥मोमनउपजीमहाचिंतनव॥
सुफवचनकहेप्रनाउलारसभ॥वोवेवीजपरतिमहिमेऊ॥लेइउवा
इसकलप्रनसोऊ॥बहरप्रनाघुषबचनउचारे॥ग्रेसीवालनउचन
हमारे॥हसमोभागसेलरघुनाथा॥मैसंवरलऊहमलमसाथा॥हम
सोंवचनकहेइनजैसें॥मानलियेहितसोंहमजैसें॥२४॥दो॰॥ग्रेउ
वंजावनकेसमेलापवीचप्रमान॥इनकोंसूपाभरदियेहमउलवा
लियजान॥२५॥चौ॰॥मोहिप्रनाकोपहउघदियो॥जोलमबवग्रव
नवसुनलियो॥दियोप्रनाकोग्रापरामजव॥हूवेग्रारप्रकारेहैसव
हैहैपहीसुभावलुलाना॥सहाभूपपरकारद्रकाय॥लमरायहप्र
घरोगनजाई॥ग्रंतकरदलपकीलजुलाई॥ग्रबपउरीमहिहसरघनं
दन॥रानकरतमोहुनिकंदन॥राजसतामससहरकियेषड्ड॥करी
सुधसानकनगरीसब॥२६॥दो॰॥धरतीदेतप्रनाजवइग्रपनेसह
जसुभाउ॥नरवरदेतसमहहफलगावइहधवहार॥२७॥चौ॰॥पर
वनरतनदेनवडलागे॥सुषसमहहउपजेउघभागे॥ग्रेनामहिसत
जुगकीरीता॥मानतसकलसुमनकीप्रीता॥रहेरहमहिसंपतप्र
तभई॥ग्रापग्रापग्रहाररगई॥बहुरस्यानकाकहमिटायो॥घर
महिग्रतिग्रानंदवढायो॥वहुतकालवीतेकुसलाता॥सियतेंउपज
नकोजवाता॥इकदिनसियाजोरकैहाथा॥बिनतीकरतभईरघु
नाथा॥२८॥दो॰॥प्रथमजीपरभैगरहस्यकोसंततलबिनककुनाहि॥सी

ने॰ श्री॰ जेमोहि सनाथ करय हइ क्षामन मोहि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ जैसुत नकहै है त
भा॰ न हू भूपन वर ॥ वचन कहे सीना थनिर घुवर ॥ मन धीरजधार हुरो
२०२ कमासा ॥ धूरनकर हलखारीआसा ॥ पुन है मास वरीत भये जव ॥ सि
य रिखदान दियो राघव तव ॥ तन छिन गर्भ जानकी भयो ॥ सभ मन
का संभ्रम मिर गयो ॥ पांच मास को गर्भ भयो सिय ॥ ह्व पन अपायो राम
चंद जिय ॥ सीता कों लक्षमन वन मांही ॥ तजआवो उद्यान तहांही ॥ २
३ ॥ दो० ॥ तहां महा आकुल भई दूटन करन भय भीत ॥ हृदे विचार
त राम तव होइ विघ्नककुसीत ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ विघ्न न होइ मन तकिस
ही देवा ॥ कोने करो हि जन की सेवा ॥ तव रघुनाथ वसिष्ठ बुलायो ॥ ति
न सों आदर दे वैठायो ॥ भले मुहूर्त तह भल गन न धर ॥ तिथ पंचमी
भलो रविवासर ॥ लक्षमन कों संदेस रघुवर कहि ॥ पठ दीनो तव
रूपनजनक पहि ॥ लेआव इहले मलाग वार सभ ॥ लक्षमन वलेक
री आलाप भ ॥ आप न भयो वेग चल तहां ॥ मिथुलीपुरी जनक नृप ज
हां ॥ २५ ॥ दो० ॥ लक्षमन मिथुलापुर गए कह्यो संदेसा जाइ ॥ वड्
आदर कीनो जनक हरष हिये हुलसाइ ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ सकल समग्री
लेनृप साथा ॥ लीनो विश्वामित्र संगाथा ॥ तन छिन चल तम्बवधपु
र आए ॥ रामहरस करसभ हलसाए ॥ प्रथमे हरसम हसनल्यनको ॥
भोजनन दियो अनंद न मन को ॥ गो सहस्र इक कंचन भारा ॥ इकइक
हि जदीनो इह वारा ॥ वेद रची निगम पनन हां ॥ वार श्रुचार जवेठे

जहां॥वल्लकसंभसीयपहरेतन॥जेपानेंपेजनकसुतहितमन॥दे
हो॥६०॥सुभदकूलप्रमुदितहियेतननपहरेरघुनाप॥वांध्योवेदवि
धानसोंग्रंचरसियकेसाप॥२८॥चौ॥ई॥श्रीरघुवरकवचनीयनूप॥
सियसोभालक्षमीसरूप॥रघुवरकीनेकर्मविधाना॥विधिवत
वेदउकतपरमाना॥कुलगोहनकोंदक्षनादीनी॥सबलवोलहितब
रसभलीनी॥इकइकहितजनकोंदानदियोपद॥वरनक्षनावतहोंविप
वनकहइ॥इकहलीपुनपकतरंगा॥इकरपभरकंचनदियोसंगा॥
गोइकसहसमहांसुभवरनी॥रतनमंक्षपूरतप्रतिहरनी॥२९॥दो
हा॥इयवद्धतदियोहितजनकोंपुरनजनकराइ॥पहसमपदीनोजनक
नपलागचाररहुषपाइ॥३०॥चौ॥ई॥विश्वामित्रजनकभूपनवर॥प्र
पनेपुरकोंचलेविहाकर॥सीताअहरघुनाथरैनदिन॥प्रतिप्रपुर
लनविकुरतइकछिन॥सातमाससियगर्भभयोजव॥विवेकरीसि
यरघुवरकोंतव॥गंगाकेउपकंठरिषनतिय॥तिनकीसेवकरों
उपजीजिय॥अन्नवस्त्रकंचनपननाना॥देहोंतिनकोंविधवतदाना
वहुरप्रसूतसमेकेअवसर॥आवोंगीवहुरीतिहिकाघर॥३१॥दो
हा॥उत्तरदियोनरामकछुकीनोहृदैविचार॥उपजीउइविपोग
सियतजसुषभोगविहार॥३२॥चौ॥ई॥जनकसुतागंगाकेउपव
न॥ताहीमहांविकलसुचितनमन॥तजआयोलक्षमनसुषपाव
न॥हरनकरनसंतापवहावन॥किननेदिनपाछेरघुवरतव

रा. उ. इछ्याकरीबिलोकौं पुरसब॥ निसकौंलिषपाहरूसंगा॥ फिरौन
भा. गरसभहर्दृहेडमंगा॥ आए फिरीरजकद्वारपर॥ बडूलोसोरसुनोति
२०३ नकेघर॥ ७२॥ दो ९ रा॥ नारिरजककीक्रोधकरगईहुतीपितुगेह॥
आनीहुतीमनाइकैसासननरदपुननेह॥ ७४॥ चौ ५ ई॥ रजककरन
याक्रोधअपारा॥ उचसबदकरकरनप्रकारा॥ हमरावोंनहिअह
इहनिपकौं॥ मनबचक्रममागीपहजिपसौं॥ पतिकीआज्ञालोप
ननारा॥ तासौंउचननअंगीकारा॥ बरजपकोनिहसबन्धरबारा॥
रजककहैमागीप्रकहारा॥ हमलोनहींरामहोजैसे॥ निंहकककर्मकि
पोत्रिनमैसें॥ जोसिपलेराषीरावनघर॥ ताकौंल्यायोफेरनुहदक
र॥ ७५॥ दो ९ रा॥ जोनिपकीइछ्याप्रभुजुलीजगतनकेमांहि॥ सिपकों
ल्यायोफेरगृहराघउचलचीनाहि॥ ७६॥ चौ ५ ई॥ सियपतिकीआज्ञाला
नहिमानी॥ सोनिपरामबडरघुरआनी॥ बसीराकुसमनगृहहुबड़का
ला॥ हिपआइररघुबरमिहिवाला॥ ऐसीनिपकौंआदरदीनो॥ राम
कामघरभलौनकीनो॥ कहैरजकमैंकरौंननैसो॥ करीअनुगनरा
मविधजैसो॥ बारंबाररामश्रीरघुबर॥ रजकउचारकयोनिहअबस
र॥ ७७॥ दो ९ रा॥ घरहमांनसुनउठचलेरामक्रोधजिपधार॥ निहक
नंदिरागजगकैसोअहभलीननार॥ ७८॥ चौ ५ ई॥ जैप्रनकहैसुनहुभ
पाला॥ क्रोधनभयोरामनिहकाला॥ नबहिबिचारकियोमनमाही॥
ऐसीतियराषोंगृहनाही॥ निहकरअपनसबनदैअपारा॥ ननछिन

नगरीजेबहुहारा॥ मोकोंउचलननहीपहुचाता॥ सियवनपठोंहोइउके
सलाता॥ हमरीनिंदकरनसंसारा॥ तांतेंसियग्रहहेइनिकारा॥ सुन
कुकथानृपहियधरभाउ॥ सुरनइकलीसमोधियाउ॥ ८९॥ दोहरा॥ र
निश्रीभारथपहुतोअथबंधकआना॥ कछिइकरनसुरनअपोपाइइकनैलो
मान॥ ९१॥ चौपई॥ सुनजननमेजपराइअवनधर॥ बचनकहेश्रीननसीं
रघुबर॥ सीतागृहहसेंवेगनिकारइ॥ मनक्रमजियनिश्चैयहजानइ
निंदाहमरीकहतलोकसभ॥ अवनहतननजियक्रोधवढतअब॥ म
घपिनिंदाहमरीकरहीं॥ उसमरनतेंअधिकउचरहीं॥ यहचरचानि
सकोंहुनपाई॥ विंनवदीनियहधविसराई॥ अपजसहातहमारानि
हतें॥ पीत्रकाटियेसियकोंग्रहतें॥ १॥ दोहरा॥ लछमनभरथअवनन
सुनइवेगनिकारइसीय॥ करनअकीरतननगरसभअैसीगृहहमहितनी
य॥ ३॥ चौपई॥ विंतातुरबोलेहोउदाता॥ सियविनहुषनकोंजगलाता॥
कलिवनबासजानकीदीजै॥ रजकबचनजियधारनलीजै॥ नीचजा
नकेकहेनलागइ॥ जानबूझकलिकोंसियमागइ॥ नीचजातनहिमली
बषानै॥ ताकाबचननकोउमानै॥ नहिसमर्थउहिदोषनिवारन॥ त्रम
तोहोसमर्थसबबातन॥ छिनमहिकरइकोटिअघघातन॥ विधनाकी
गतलषिनहिजातन॥ १॥ दोहरा॥ अगनप्रवेसकराइसियलेआएलम
साथ॥ निरदूषनयहजानकीतननइनहीरघुनाथ॥ ४॥ चौपई॥ जोकछु
दोषहोतसियकेमन॥ अगनजानतिहभसमकरतनतन॥ सकोनअग

जै॰ श्रु॰ नजराप्रवृषशिय॥ दोषरहतमानोनिहचे जिय॥ श्रुगनप्रवेसकि
भा॰ योसिपजैसें॥ आटीनिकसबहूरउनलैसें॥ जोनहिदोषनिवारनजो
२०५ गा॥ ऐसेंवारवकहिलेकलोगा॥ दोषमिराघसकोनहिरसुपन॥ ज
नकहतनावनवासहिसोकन॥ धरिमृवभरकोऊमूढनर॥ सनसु
षलेइरलमयंकपर॥ ५॥ दोहा॥ फिरलाहकेसुषपरैससपरछ्रै
सोइ॥ हैमलीनसुषतिसहिकोससिसपर्सनहिहोइ॥ २॥ चौपई॥ रज
कनीचजानतुधहीनो॥ ताकोवचनमानतमलीनो॥ निरहषन
सीलगुनमाला॥ तिहवनवासनदीजैबाला॥ जिहसियहमरानज
सवहायो॥ महापवनापनगनवगहायो॥ जाकेनमितमहल्यातारी॥
रिषीश्रापकरथलउवारी॥ जिहप्रसादलंकागढलीनो॥ परमअग
रहकपिसंगकीनो॥ महांत्रलवलरावनमारा॥ तिनत्रैलोकवंद
महिगरा॥ ५॥ दोहा॥ जिनरावनकेनिमितसिवब्रह्मावेरउचार॥
दंरकुनमपगलावहीकरिहैंपवनउहार॥ २॥ चौपई॥ वंदपरेसुर
तीनलोकउर॥ धरनिश्रुकामरहैतिनपरहर॥ सियप्रसादसभकष्ट
निवारे॥ रावनहनकरपाहनतारे॥ ब्रह्माशंकरइंदरदेवपद॥ जोयहदे
हिसियाहषनकद॥ तोसीयावनवासपठावहु॥ रजककवचनमनहो
षनलावहु॥ यहममकोनहिजोगरामसुन॥ सियकोंतजदुकिदेति
नहषन॥ नीचवचनमनकरहुप्रमाना॥ तनमइनसीयविसारहुराना॥
५॥ दोहा॥ उनिरघुवरसुषवचनकैसुनहूदोऊमोथ्रान॥ जिहविधजग

जसरूप जे सोई कीजे वात ॥१०॥ चौपई ॥ जिन का हुनम जगत मैं नाही ॥
तिन का धृग जीवन जग मांही ॥ दुष सुष समै पाइ करि आवै ॥ काल पाइ
बहुरो विनसावै ॥ दुइ कल चल कहै ही गुन ॥ समै पाइ आवत जावै पुन
कीरत को जग नास न होई ॥ अवर न रहियो जग थिर कोई ॥ जग महि
पृथवी के पत भए ॥ समै भोग बहुरो चल गए ॥११॥ दोहरा ॥ हरीचंद न
ल नहोष धुंधु निवेरा सम पाना राजन ॥ बहुर दधीच महां वली अवर भूप सि
रताज ॥१२॥ चौपई ॥ थिर न हि रह्यो कोऊ जग मांही ॥ कीरत वान सदा थि
र आंही ॥ जिंह सुनी मैं अपने काना ॥ तुमें जानत की सम प्रमाना ॥ ले जा
बहु सिप कों अब ही वन ॥ सबरी जे थाला हम रे वन ॥ सुन लछमन को
जो मन मैं भ्रत ॥ वचन कहै प्रगट पर माम प्रत ॥ नीच वचन सुन लछमन ही
जोगा ॥ सीता सती न ही जे सोगा ॥ बहुरो विन दूषन सुन काना ॥ कन वन
बास रहि मम माला ॥१३॥ दोहरा ॥ बहुर गर्भ सीता पत्नी लमरा नामा चार ॥
दइ अवसर महि वन पठइ निरद कै संसार ॥१४॥ चौपई ॥ जिह प्रसाद र
मरावन मारा ॥ सकल राकस न को कुल नारा ॥ जिह न पिय लंका तम
लीनी ॥ भगत न वभीछन कों गहि दीनी ॥ कीं कर सुकल हो न वंद साला ॥ १
सुरनर सकल कुरे तिह काला ॥ बहुत दिनन के कष्ट न परे ॥ करुना के
रत मइ दुष सम हरे ॥ ते लिम सको र अमर सुकनाए ॥ सिय पसार विजय
वन सिधाए ॥ रसा न न हरि लै जात न सीता ॥ लोकै संहो वीघ हरी ता ॥
१५॥ दोहरा ॥ सिय तें सुकन बहुभए हम कुलभयो प्रकास ॥ नीच जान के

उ॰ ख॰ कहेतेदेहोतिहिबनवास॥८८॥चौपाई॥नीचग्रानकोदोषलगावै॥ताके
भा॰ कहेनजगपतिपावै॥तीनलोकप्रकलमदेषो॥सियकोंदोषनहींग्रवरे
२॰५ खो॥जोकोऊनिंदैजनकसुताको॥ग्रवहिनिकारोभवनसियाको॥को
लेरामचंद्रसुनवाता॥मैंजाननसियजियकीवाता॥जनकसुतामहि
दोषनकोई॥ग्रपजसनगरनिरारपहोई॥तोपुनलोगलाजतेंडरऊं॥
निहचेंमागजानकीकरऊं॥८॥दोहा॥भलीनहीवहवात्तहइजिहतेंग्र
पजसहोइ॥ताकोंग्रहतेंकाढिएभलाकहैसभकोइ॥८॥चौपाई॥जिह
लियनिंदहोइपरवारा॥मनवचक्रमतजियेवहदारा॥सगसनवंधी
सुतहितभाई॥जिनतेंनारहितजसउपजाई॥तेतजदीजहिविलम
नुकाई॥फतिशास्त्ररपहवातवताई॥तांतेंमानहुवचनहमारा॥सिय
कोंदीजहिनगरनिकारा॥जोतुमहमरावचननमानहु॥तोपुनतु
नहमारानामहु॥लेउसम्हकरिहोंनिजवाना॥जोतुमनहिमानहुय
हवाना॥९॥दोहा॥कहिलक्षमनसुननाथजीचिरजीवहुरघुराइ॥
हमहिगरैंगेमानकोहषनसपोनजाइ॥१०॥चौपाई॥सुनलक्षमनतुम
मनहुनयाना॥ग्रानाहमरीसभनप्रवाना॥केवीपर्मशुपजसपावै॥
तोग्रात्मलाहितनेहहगिरावै॥ग्रपनाकोईर[illegible]जेकामा॥नरूपराहि
सनगुषसंग्रामा॥नहीभलोग्रातमनहमारा॥भानलीजियेवचनहमारा
ग्रपजसलोगकरैवनांही॥जोनि[illegible]मैसीतागृहमांही॥वीनराषनीहै
संमारा॥सियकोंदीजहुबेगनिकारा॥११॥दोहा॥वहुतनरीनताहूंकरी

आज्ञाकोंरघुराइ॥विहवलहैलछमनगिलोधरनपलोमुरछाइ॥२२
चौपई॥मैंनरमहांपुरातननहोई॥लगेपवनगिरधरनीसोई॥मैंहील
छमनगिलोधरनपर॥हरनकरनलोचनअम्हवांभर॥भरथलछुव
नविवहुरगयो॥लछमनआगेठाढोभयो॥रथमैंगाइदीनोलछमन
कों॥लेआवहुसियगहवरवनकों॥माहीठौरछाइतुमआवहु॥हम
रीआज्ञागहरवनलावहु॥रथलेलछमनवनहींसिधायो॥जनककलाके
मेंहरखायो॥२३॥सोरठा॥मंदिररतननकनकषचितनहांजानकीनार
लहलछमनआपनभयोरथलेबाहोहार॥२४॥चौपई॥उठकैवेगचर
हुतुममाता॥आज्ञाकरीमोहिजगत्राता॥तुमकोंगंगानहलेजाऊं॥आ
तारामनहांपहुचाऊं॥प्रथमेलछनआनंदलभई॥मयाकरीआज्ञाप्रभु
हई॥लगीसमथीसापउठावन॥रानचमितनसुकृतउपजावन॥की
नीपीविनतीपुकाररघुवर॥तातेंआज्ञाकरीकृपाकर॥सुनलछमनसु
धवचनउचारे॥हतनमानाहमरासलछारे॥२५॥सोरठा॥संगउठावहु
कछुनहींआज्ञाश्रीरघुनाथ॥ऐसेंहीचलियेजहांरथचढहमरेसाथ
२६॥चौपई॥प्रथमेउठइहांलेजाऊं॥सोचहिपेपाछेपहुचाऊं॥सेव
चवकहेलछमनजव॥हतनमनचिंतवदीनिपकोंनव॥हहेविचार
जानकीकीनो॥कलिकलुसंगनउठावनहीनो॥नातेंहमकलसा
ननमानों॥देखतलछमनसुखकमलानो॥प्रफुलतवदनसदासुं
बुजजिम॥भयोमलीनकमलजलविनजिम॥नाहिनलेनरेतक

409

ज॰ग्रं॰ कुसाषा॥ करतउलाइलफेरतमाषा॥ ४४॥ दोहा॥ सियलछमनव
भा॰ लिवचकहैनैननीरभरआइ॥ मुषमलीनतनमरामयोकलिकोंमुदिस
२०६ मजाइ॥ ४५॥ चौपई॥ अैसावदनमलीनहोइतव॥ अवगुनचेरीकरतकी
उजव॥ नैनेहेंकुबीसलषरिपैने॥ गाखताकोंअतिकोपकियेने॥ नैसेंपर
त्रियसोंहितलागत॥ कुबीहोइसमरतेंभागत॥ गोगासताहितजोचहि
मरई॥ गोजआपनेसोंकुलकरई॥ जेनरवोरनरकमेंपरई॥ जनमजन
मलोहुषअलभरई॥ निरदेषनकोंदोषलगावे॥ ताकासुषअैसाहिवगा
वे॥ इनमेंदोषकोउलमरेजिय॥ तोतेंवदनमहामलीनकिय॥ २८॥ दो
हा॥ एतेहषनमेंकोऊहैलमरेजियमांहि॥ तोतेंमुषअैसाभयोमानो
संसेनाहि॥ २०॥ चौपई॥ लछमनकहेतनदुववमाता॥ आज्ञाकरीजग
तकेताता॥ चलइवेगगंगाकेतीरा॥ सुचनवचनउठचलीअधीरा॥ प
यमेकौसल्यापहिंगई॥ रुदनकरतविंताउसभई॥ लागीचरनविदा
कीनीजव॥ महांवियोगहियेंभरेतव॥ रथचढचलीरुदनकरतीअत
मुकुन्दहरियोनिकाररतुपत॥ सकगयोमुषकमलतीपहुत॥ अ
वहीरथहांकोलछमनडत॥ २१॥ दोहा॥ भयोवियोगलषअवधपुर
सकललहुषीनरनार॥ अतिभयभीतनवचकहैकियोनरामविचार
२२॥ चौपई॥ जिहमारगलछमनसियजगाये॥ वहमंदरदेषतजनसिग
रे॥ हाहाकारकरतपुरलोगा॥ नरनारिनसभकेमनसोगा॥ रथजान
कीअरुडभयोजव॥ सकलभयलोगविसमेसभ॥ पवनवेगहांक्योत

बलछमन ॥ डलें बिगृपर्ग गागगह बरबन ॥ महाअरण्य सू मउपाना ॥ नि
रषत सिय बिपोंग ग्रंथाना ॥ महासघन बनद्रुम बहु जहां ॥ जाहां किय
लछमन रघुनाथ हां ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ रघुनंदन रहुमालजी हिनमयाहन
जाइ ॥ कछु प्रसाद कर पुनबलहि बचन कहे प्रगटाइ ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ उन
रपरीसी लारघुनंनब ॥ रूके अपरमलीन महां छब ॥ लागी कहन बच
नलछमन प्रत ॥ रहां नहीं जल अहजियरपत ॥ नहां आनहमकों बै
नाधो ॥ हरन करन सिय मिपद्रषणा भो ॥ लछमन कहे सुनो प्रभ मा
ना ॥ सावनहों जल भरकुसलाना ॥ लेन कमंडल चलो गलभरन
प्रन जानकी कह्यो सुनलछमन ॥ हौं डरपों मन मांहि अकेली ॥ भय
कारी पहअग्र रहुद्रुम बेली ॥ २५ ॥ दोहरा ॥ तुमबिन भयकारी गहन पुत्र
न धीरज पाउ ॥ चिंतन कीजे मातजि रहहम शीघ्रहि फिर आउ ॥ २६ ॥ चौ
ई ॥ लेन कमंडल लछमन गयो ॥ तापाछें सियअति दुखभयो ॥ सोच
करत मन चिंत अपारा ॥ बहुरा करत नजिपमत गुन बिचारा ॥ पुर निकस
न अपसगुन भये तब ॥ सनमुष बिधबा नार मिली जब ॥ तापाछें नु
बनीमरकी सिर ॥ सहजे उलर परी धरनी गिर ॥ भंजन न भई गागर जे
लइगलो ॥ पहअग्र पसगुन नत बहि जिपधासो ॥ गई भमस बहराह नेकी मो
जोबें मगण बने दुषदीनो ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ शोषपक अग्र रधंगप्रन फुरेरा
हनी शोर ॥ पहअग्र पसगुन भये नबहि स्यारकरत भये शोर ॥ २८ ॥ चौप
ई ॥ चिंतन करत अग्रे बीर तहां ई ॥ सिमरन करों कार करतार ई ॥ तोपुक

अ·रा· स्याग चल्यो पति भ्राता ॥ इन सगुनन कै सें कुसलाता ॥ अब वां क्यों उ
भा· नको कुसलाता ॥ गर्भ श्रवत रघुवर बलवाना ॥ बिंमा तुम बिह्वल
२०७ बन भई ॥ दच्छिन बचु धमो ह्नव गाई ॥ पीवत रनत नइ निकम\
लानी ॥ बिह्वल परी धरन पर छानी ॥ बिसमै भई न कहु रन मरी
स ॥ नन आकुल मन न धरत न धीरा ॥ प्रभु आता मानी सिय सीता
सुखु मे पको आय वनी सा ॥ २१ ॥ दो॰ ह॰ सा ॥ इति श्री भा॰ रामायण दित्ति अ
मेध काण्ड ॥ कवित्त कनक रचित सोधा इव नी समान ॥ २२ ॥ जै म
नउ गाउ ॥ चौ॰ ई ॥ जै तुम कहै सुन नृद्ध पवी पन ॥ कपा रमापत\
कीमन न हरषत ॥ सिय वन वास ह मोन सुनावों ॥ कर विसनार
सकल समझावों ॥ लछमन ल्या पो जल नल काला ॥ देखी धरन प\
री सियवाला ॥ नहीं संभार सकल सुध भूली ॥ बन में भय सों गत\
सभ भूली ॥ लछमन सिय कों नहीं जगायो ॥ नीर कमंडल ले मुख र
कायो ॥ गदगद है लछमन बड़ रोवत ॥ रथ चढ़ चले का इ सिय सो
वत ॥ करि वले राम चरन ह ढ हो ई ॥ निसदिन सिमर रघुपत सो
ई ॥ अंत काल मिलि है रघु तो ई ॥ या में कछु न संसा हो ई ॥ दो॰ ह॰ सा ॥\
गिसो कमंडल हात मैं कीर पर नीजत ही य ॥ नव निहाव मधु भई नैन
उग्यो र मी च ॥ २ चौ॰ ई ॥ निर खे रथ लछमन रोक न्यों ही ॥ पुन मूर्छित है
गिरी महि ही ॥ मुनि सुकुमार अमल सिय को न न ॥ कों दे लुभ ई दुखित
या कुल मन ॥ पुन कक धीर न ता न किधो चित ॥ राम नाम सिमरन\

कीनोहित ॥ गंगामिससुदिवनहिपठायो ॥ ऐसेंहीसियचनउहरायो
हमकोंहीकोनगरनिकारा ॥ इसलोगहमबरवनहिमंझारा ॥ हरनक
रतहीरवभरसासा ॥ विहवलतनरसमैंभईनासा ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ कोप
किधोजियधरनपरकीनोबहुतप्रकार ॥ पछिनहैलषपरगिरीमैं
नहिकरीसंभार ॥ ४ ॥ चौपई ॥ धरनिकहैषवीसननलीजै ॥ होरमहांसष
चिंतनकीजै ॥ बहुप्रकारकहिवचसमझायो ॥ कछुकधीरजसियके
जियआयो ॥ नैननिहारसियाबनदेषा ॥ सुवटसभारबनाससनपेषा
फलसमूहदुमविविधप्रकारा ॥ दाडिमजांबुरसालअपारा ॥ केलक
दाषजंभीररंभफल ॥ बहुकदंबपीपरहुरदल ॥ सुषसोदकनीप
लक्षवक्षाजै ॥ संपूरनफलनिकरविराजै ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ बहुप्रकारष
गबोलहींहंसकोकलामोर ॥ सुकसारिकबाइकमधुपगुंजकरत
अतिभोर ॥ ६ ॥ चौपई ॥ तिहवनमहरिषिपसुवसहिअपारा ॥ बरननहो
तग्रंथबिलासा ॥ सेवासियकीकरहिसुदितचित ॥ हर्षबिलोकहो
तहर्षतचित ॥ पंषीपंषसिंचनजललावहि ॥ सबमिलसियअपरवर
सावहि ॥ पंषपसारकरतछायासव ॥ कछुकधीरजपावतसियजि
यतव ॥ तिहअवसरबालकएकआयो ॥ कंदमूलहितरिषनपका
यो ॥ इषितवचनबालकसियकेसुन ॥ मनसुषचलआएसबकहु
न ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ कंदमूलकोकाउकैबालचलोनिहयोर ॥ रिदेविचार
तजानतहैकोउदुषितरहठौर ॥ ६ ॥ चौपई ॥ बालमीककेशिष्यविचारा ॥

ग.भु. गहबरबनउद्यानविहारा॥ सवरनुबसिकोजान्योमनमैं॥ अतिभय
भा. भीतप्रकारतबनमैं॥ शीघ्रनिकरबालकचलगयो॥ सियकोंनिरष
१०८ विकलमनभयो॥ परीउलरमुषधरनिप्रकारत॥ हालक्मनहाराम
संभारत॥ हाइनुमनअमिरीनप्रकारत॥ विधनाकेवलदुषसबधार
त॥ रुदनकरतषगम्रगदिगठाढे॥ सियकौनिरषसोबचिनवाढे॥ पं
षभिगाइनीरखबरसावहि॥ सियानमिमनवीनफलसावहि॥ ८॥ दो॥ रा
बालकदेषेदृष्टकरपस्तुपंषीसभआइ॥ इकलेफलठाढेभए एककी
रबरषाइ॥ ९॥ चौ॥ ई॥ आज्ञाकारीरहैंरैनदिन॥ दूरनहोंहिवरनतेंइ
कछिन॥ सियप्रभुषरामरामउच्चारत॥ तनबालकमनमांहिविचा
रत॥ रघुवंसनकेकुलकीपहलिच॥ मनवचक्रमनानद्वनिहचेंजि
य॥ रिषबालकप्रभुषवबनउवारे॥ तनमानाहमताससत्यारे॥ नैनउ
घारकृपाहमपरकर॥ रेरद्वउषतनामलेरघुवर॥ कवनलोहिगह
बरबनसायो॥ किहद्वषनतमरहांपठायो॥ १॥ दो॥ रा॥ परोधीरमाना
हिपंकहोसबबमोहि॥ नामगोत्रअपनाकहोरामसपनहेलोहि
२॥ चौ॥ ई॥ नबसियनियकछुधीरजआयो॥ रिषबालकप्रतिबचन
बषायो॥ रामचंदहमराभरतारा॥ सीलमानद्वनामहमारा॥ पुत्रक
हद्वतमसियकबनअनि॥ आपनभयेइहांकैसेंप्रुनि॥ रिषसिसुक
रीपरिक्रमसियकों॥ पांइनलागनइहरषनहिषकों॥ बालमीकसेव
कहमताना॥ आपोद्वतोरेनफलपाना॥ इषिनबचनतमरेअबन

नसुन ॥ प्रापत भयेइहांनैसँघन ॥ १२ ॥ दो०रा ॥ वेगउ वचलहु संगप्रकुरि
षआश्रमकौंमान ॥ सीतावालकवलिकुशेसुनहुऊउचरइकवान ॥ १७ ॥ चौ
०ई ॥ सुनहुउचरशघमेलवजावहु ॥ वालमीककौंवचनसुनावहु ॥ समह
तोंनहमराकहिदीनै ॥ वेगजाहुसुतगहरनकीजै ॥ ताहीछिनवालक
उठधाये ॥ रिषकौंसकलहतांनसुनाये ॥ वालमीकसुनहरषतभोवि
त ॥ नारिसहितउठचलोहिंपैहित ॥ ततछिनआरइवरनसिपलाम्यो ॥ र
एनपरससकलदुषभाग्यो ॥ पपहीपआरतीइनारी ॥ हमहेंहेतमरेआ
ताकारी ॥ १५ ॥ दो०रा ॥ विपवननकरीप्रदछनापुनपकीरिषवान ॥ किह
प्रकारआवननवल्पोकहुहमांनप्रुरुमान ॥ १९ ॥ चौ०ई ॥ पुरुवनवासदियो
रघुनाथा ॥ पकोइहांलछमनहेसाथा ॥ सोहमकौंवनमेंतनजगयो ॥ प
हंचवस्यप्रुरुआपनभयो ॥ पतिप्रहगर्भहोइकलाना ॥ हमप्रनिदवि
ततजनहोंशाना ॥ मतकपलीहोंरहविपोगतें ॥ कुदपरोंदुषविरहसो
गतें ॥ कहिहतांनतवगरगरभई ॥ अतिभपभीतपहुँहृगई ॥ रिषसिष
निरषविंतउपजीमन ॥ नारिसहतविसमैव्याकुलतन ॥ १२ ॥ दो०रा ॥ रि
षनुवतीवालकसकलहरनकारनदुषसीन ॥ ननकसुनाआरतप्र
धकवचनकहैभयभीन ॥ १९ ॥ चौ०ई ॥ बोलेवालमीकसुनपाला ॥ धी
रधरहुकहैहैकुसलाला ॥ होवहिगेलमरामकृपाला ॥ नाथअनाथनदी
नरिपाला ॥ उनकेनहीविरोधभाउमन ॥ भगतवछलनिरनामकृपा
वन ॥ इच्छासोंतमवनहिपठाये ॥ ऐसेंहीप्रभुकेमनभाये ॥ लमवन

रा॰ग्र॰
आ॰
२॰९

बासरिपोइहकारन॥ हमसे पतितनकोंनिसतारन॥१९॥ दो॰॥ राम
हीं भाग हमरे भए तुम दरसन तें मान॥ कोटजनम तप कर्म सुभ सुफलभ
ई यह ज्ञान॥२०॥ चौ॰॥ हमरे आसन चल इकृपाकर॥ रिषवचन सुनि उठ
चली धीरधर॥ रिषके आश्रम कियो प्रवेसा॥ पीतवरन सुभरूष केसा॥
है तो रिषीकुटीके द्वारे॥ रामराम सुभ सदा उचारे॥ रिष सुनन तपी वृक्ष लग
नआप॥ दरस विलोक परम सुषपाए॥ सुनत वचनता संग रिष हरषत म
न॥ आए सकल जानकी दरसन॥ जो रिष वसत गंगतट मांही॥ ते चल
आए सकल तहां ही॥२१॥ दो॰॥ जो गंगाके तट दूते अरु वनमहि ते औ
र॥ जनककुता कोनाम सुनसभ आए तिह ठौर॥२२॥ चौ॰॥ सभसीताके
चरनी लागे॥ दरसपरस हिन वित अनुरागे॥ जो हो ते वनमांहि रिषी सु
र॥ घरकरमी रिषमहां तपीश्वर॥ वडु र अगन होत्री तपस्वी वनन॥ ला
गे आइ सकल सिय वरनन॥ त्रिकालनतप नलव विचारी॥ मषकरता
अरूपवन अहारी॥ सभन नआर आन कौ परसी॥ सुरतन प्रगट रामकी
दरसी॥ वालमीक रिषकों लिय साथा॥ सिय पग सभन लगायो माथा॥
२३॥ दो॰॥ सकल रिषन विनती करी दीनवचन सनमान॥ अंगीकृत
हमरे कर इकंद मूल फल पान॥२४॥ चौ॰॥ सीता कहै रिषन सों वाता॥
इच्छा राम सो इकुसलाता॥ सिय वचसुनन रिषीश्वर गए॥ निज निज
आश्रम आपन भए॥ कछुक सांत सिय धीरजजी धर॥ वैठी आइ कुटी
द्वारे पर॥ वालमीक को सुन कलश सब॥ सेवा करहि सकल सिय की

नव ॥ सियपरिषकुरी वीचवनहिं जावै ॥ वैकोहार राम गुनगावै ॥ जन
नकरहिं सीता नहिं मानै ॥ चरनपरहिं मौं सौं हठ ठानै ॥ ५५ ॥ दो० ॥ रा ॥ वा
लमीक विनती करहिं विंतन करनिय मान ॥ धीरजनपरहु विचार
विनराम कै कुसलान ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ सुनहु पिता कहिं विंतन करहु
रामचंद भरता सिरधरहू ॥ वचन कहैं सिय आंसू हगभर ॥ गनमली
मकां पीजिय घरहूहर ॥ जनकसारषा पिताकहावत ॥ कर्मरेष नहिंको
उमिटावत ॥ यहनमिटाइसकै मुहिं सोगा ॥ श्रवरन कोसमर्थ लिहू
लोगा ॥ जवकै राम व्याह गृह लाए ॥ एकदिवस सुहिं लषन हिं पाए ॥
हमतारषीभयो वनवासा ॥ सभनगग्रसो कर्मकेपासा ॥ ५७ ॥ दो० ॥ रा ॥ ग
तिताहमरे व्याहकी रिषवसिष्ठ परवीन ॥ रघुवर सा भरता भयोन
वहूंकरम अधीन ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ होनहार सोई पुन होई ॥ कोटडपाउके
रोजिनकोई ॥ लिषनलिलार सोइ पुन पावै ॥ करमरेष नहिं कोउमि
टावै ॥ वालमीक मुनि वचन उचारे ॥ सुनै मुत्रिसन वचन तुम्हारे ॥ ह
दैआपने ज्ञान विचारहू ॥ करविवेक धीरज चितधारहू ॥ इष्टहष्ठका
लपारकै आवै ॥ सुमै विताइ वहुर मिरजावै ॥ मानलीजिये वचन हमा
रा ॥ रघुपत करिहैं कुसल तिहारा ॥ ५९ ॥ दो० ॥ रा ॥ कृपाकरहु भीजरचरन
हूतनजडहिं घें संताप ॥ सुनउपजे गागर्भजिम मनिहर्दै लोक प्रताप ॥ ६० ॥
चौ० ॥ जनकपिता मानहु तुम जैसें ॥ हमकों तुम्ह पघिहिं यानहु तैसें ॥ मे
सीजनक कहत जानैसी मुऊ ॥ भीजरचलहु सुपतन रघुवरतुऊ ॥ सीताक

ज॰ ग्र॰ हैसुनहुवचनमाता॥भीतरवाहहरमोकुसलाता॥कुसीहारपरकाया
भा॰ करहु॥वैठीरहोंनेकमनहरहु॥जनकभवनमुनिरामचंद्रग्रहहु॥सु
२१० मुनिवासमुहिभयोनहीकिहु॥मोतेंहमभीतरनहिआऊं॥रहोंहारप
रकालविताऊं॥२१॥दो॰ ह रा॥वालमीकमुनिवचकहेहेसुनहुजानकी
मात॥यहहैवनकीठौरनहिपानलेहुमोवात॥२२॥चौ॰ ६॥ठौररह
नकीनाहिसुनहुसिय॥भीतरचलहुजानकीहमलिय॥वनहुयान
महाभयकारा॥सिंहव्याघ्रमृगविविधप्रकारा॥भयकारीपसुत्रास
दिखावहि॥देहमहादुखजियडरपावहि॥हमरीकुटीजनककोमंदर॥
मेटनसोकोहियमेंसुंदर॥उठहुवेगभीतरपगधारहु॥देहकृपालनिय
सोकनिवारहु॥रिषिकुटीदेवलागोवरनीसभ॥भईदिपालगईभीतरव
व॥२३॥दो॰ ह रा॥हृदेविचास्योजानकीगर्भहोरमहान॥निहहरतेंभीत
रगईवालमीकवचमान॥२४॥चौ॰ ६॥किपोप्रवेसकुटीभीतरसिय
रामवियोगदुखितव्याकुलहिय॥जनकसुताकीसेवकरीसभ॥कंद
मूलवचनैंस्यवहिजव॥प्रथमेंध्यानधरहिसभआगे॥दहलकरहिहि
मविनअनुरागे॥तापाछेंनिजसर्पणाकरई॥निमप्रतिसेसीगनप्र
तुमरई॥सीलसियधीरजनककुलीना॥पहीइछविनिहदेंसियकीना॥
प्रथमेंदुवमनजनककरिआवै॥ध्यानधरेरघुपतिगुनगावै॥२५॥दो॰ ह रा
तिहपाछेलेपनकरैवैठेपासरसोइ॥मधाइनभोजनकरेसियहईवेव
विनहोइ॥२६॥चौ॰ ६॥एककालभोजनलेवेनित॥करैसमर्पणार

सुवरमैंहिन ॥ आगेपाछेककुनहिलेवै ॥ निसवासररघुपतजियसे
वै ॥ रहप्रकारवीतेनौमासा ॥ भईप्रसूतसीयगरभासा ॥ रैनसमैंप्रघन
नेऊववर ॥ वालकजनमलियोतिहअवसर ॥ वालमीकआनंदतनभयो
सभसंतापमानकिमिटगयो ॥ सियजिपउपजोआनंदभारी ॥ रामरूप
करविपनउनारी ॥ रिषसीतापहिरानकरायो ॥ हीरमणकंचनमन
भायो ॥ १० ॥ चौपई ॥ अनककलापहिरानकरायो ॥ गोरससहससहेममन
सायो ॥ वसनलछदीनेवडदाना ॥ यहसंकलजिपैंगहराना ॥ ग्रहमैंओं
नववेउद्दिनमवर ॥ विधवतदाननदियोसियमनकर ॥ वालमीकमैरि
भरिषआयो ॥ लगनसोधलवनामधरायो ॥ सभरिषियमनहिसअभ
धाना ॥ होउमहंतमहागुनवाना ॥ हनकृतिसकलरिषीसररआए ॥ देत
वधाईसियमनभाए ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ सीताभईअनंदमैंविनसेविरहवि
योग ॥ लवजनमतलवकुपजेदरभयेसभसोग ॥ १२ ॥ चौपई ॥ महाओं
नसंदरवालकयति ॥ हिनकोरववसिकोंरजनीपत ॥ निरषरिषीसभ
असनकरहीं ॥ वारवारवालकपगपरहीं ॥ निरषिवालरिषिरेहिय
सीसा ॥ विरजिपोवढसियसुतनसुनवीसा ॥ रिषसुतनलपीअनंदतनभए
वरनलागआश्रमनिजगए ॥ सीताहलमलेगोरषिलावन ॥ वूमकपो
लखंकगहिलावन ॥ सियजिपउषविनसोचिनचाउ ॥ मरनवैमीसमो
धियाउ ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ इतिश्रीभारथपर्वतोश्वमेधयायाय ॥ कवि
ददकनमरनभयोसैतिसध्यायप्रमान ॥ २४ ॥ मैनकउपावसोरवा ॥ क

419

ग॰ ग्र॰ पारमायनमारमेंउनकहिंसुनहोनृपन॥ कुसकोजनमप्रकारबर
भा॰ ननहींजैसेंभयो॥ ५॥ चौ॰॥ एकदिवससियजियउपजीलव॥ वहम
२११ लीनकियेबालकसब॥ लाउपवारजाउयाहीछिन॥ राखौबालहिंगेल
लाहिछिन॥ चलीवसनलेजलरसपाना॥ बालमीकप्रतिवचनवखा
ना॥ याबालककीकरहुसंभारा॥ यहकहिचलीगईनटवासा॥ तहांप
कवंटरीनिहारी॥ लवकोंलियेंफिरलउरधारी॥ निरखिविचारकियोमी
ममन॥ फिरतमर्कटीलवधारेतन॥ ५॥ दो॰॥ रकछिनतजेनकेउ
मेंसुतवअपनेसुतलाव॥ लवविचारसियजियकियोहायमीजपछता
न॥ ३॥ चौ॰॥ जनकसुतामनमांहिविचारयो॥ मनअपनीकोंनाहिंधि
कारयो॥ यहवनचरप्रभुजनमकहावत॥ तजततनसुतनकोंकंवलगा
वत॥ हमलननजआईरिषकेढिग॥ भयकारीवनभीनसिंहमृग॥ जोक
बहुंरिषध्यानलगावे॥ बालकजिनकोउपललेजावे॥ लवमेरोबलक
कुनवसाई॥ उलटचलीरिखआश्रमआई॥ देखारिषध्यानलगाई॥
ललनबालहिंगेलसुहाई॥ ५॥ दो॰॥ सीतासुतनकोंलेचलीदेषतभयो
नकोउ॥ बहुरपवारेआइकेमुनिहर्षनचितहोइ॥ ५॥ चौ॰॥ उनरगयोरि
षकोजवध्याना॥ रछनपस्योबालडषमाना॥ महाकलेसभयोरिषमन
को॥ सोकवढोलागोदुषलनको॥ रकवियोगदुवसुतनसंतापा॥ हैहैमो
हिजानकीश्रापा॥ रिषसेवकप्रतिवचनउचारे॥ वेगजाइवनसिंहहर
मारे॥ लेश्रावहुकुसगहरनकीने॥ यहकारनश्रवंहीकरलीने॥ श्राइजा

तहैंजनकसुतनाथव ॥ तवनहिदैषै आपदेहतव ॥ ९ ॥ सो ० रा ॥ बानीकु
वामिलेतहां सकलरिषीश्वरआइ ॥ ७ मलाकरम्रमिमंत्रिपारसुवरथा
नलगाइ ॥ १ ॥ चौ ० ई ॥ प्रगटभयोबालकतहंरघुति ॥ मुंगवविचक्रांतग्रर
भुजगति ॥ वालमीकमनहरषतभयो ॥ सिवनिरषततवसवदुषगयो
धलोहिंगेलेवीचकुलावत ॥ निरषनिरषमिथमनसुषपावत ॥ लिहअ
वसरसिघ्राफतभई ॥ कुसनिहारग्रचरनहैगई ॥ कहोरिषीश्वरयहका
कोसुत ॥ कुलतबीचहिंडोलमहाद्रुत ॥ कहोजथारथसुकसोंवाला ॥ इ
हबालककिहकोसुतलाला ॥ २ ॥ दो ० रा ॥ बोलेरिषसुनजानकीकहोअ
थारथबात ॥ बसुपषारनतमगईइहांबाइकेलात ॥ १ ॥ चौ ० ई ॥ बाइग
ईपीसमहमपहिसुत ॥ इमनाहीद्विनभयोध्यानसुत ॥ नोहमबद्रथ
योसविधाना ॥ रहुतपसोकालड्रषमाना ॥ पुरुजामोकोउपसलेगयो
महांसोकजिपकलपतभयो ॥ तवहीमोहिकुसालरणलीनो ॥ मानवकोपु
तरारवकीनो ॥ रघुपतकोजिधध्यानलगायो ॥ निगमरिषनतैपावकरा
यो ॥ वेदमंत्रपढअक्षतलेकर ॥ दियोअसीरवादसभरिषवर ॥ १ ॥ सो ० रा ॥
नैनमूंदकेसभरिषनपलोरषतमध्यान ॥ वेदमंत्रउलपतभयोबालक
रामसमान ॥ १ ॥ चौ ० ई ॥ सवनप्रतीयहलोकमरोसुत ॥ सुरनमैंवलवंततेज
युत ॥ लववतैहोइपराक्रमवाना ॥ महाप्रतापत्रिलोकनिधाना ॥ वेदमंत्र
पढसिसुप्रगटायो ॥ राघवकोमिनध्यानलगायो ॥ इनकोजगतहोइगै
कास ॥ मनवचक्रमयहइउवलधारा ॥ कुसिकोंरीपदरिषनअसीसा ॥

म॰ प्र॰ चिरजीवीकीरतमुगवीसा॥ प्रगटाथोरघुवरपरधाना॥ होइमहांबल
भा॰ राइसमाना॥ ११॥ दो॰ ॥ तनसिपमनआनंदभईप्रतिपालेहोइकाल॥ कु
२१२ रकाकर्मभिकरलियोवालमीकरिषघाल॥ ४॥ चौ॰ ॥ सीताजेपुत्रसा
वकराघो॥ गोकंचनअगनतनमनसाधो॥ सिपसिपमहांअनंदतभयो॥ उ
पज्योतषचिंताहरगई॥ उठेप्रातमंजनकरवावै॥ प्रथमेकथाहुनेसुष
पावै॥ रामायणकीकथाहुनेनित॥ सावधानह्वैकैहरषतचित॥ ताथाके
भोजनतनलेवै॥ निसवासररघुपतसियसेवै॥ वरषसातकेवालकभ
ए॥ अतिविचित्रतषसिषकवकए॥ ५॥ दो॰ ॥ करिपेहननजोपविनजो
गभएहैंवाल॥ वालमीकसिपसोंकह्योकुलकीजैनतकाल॥ ५॥ चौ॰ ॥
वालमीकरिषिगरगवुलायो॥ विश्वामित्रमहांवलआयो॥ सौरभरिषिवि
सिष्ठवरिषीश्वर॥ लगनकाढनवग्रहपूजाकर॥ दानहोमपुनिजग्यप्रका
रा॥ रिषनवेदधुनकियोउचारा॥ वेदीपरफेरेरघुवरसुत॥ होइतेजसीयु
तिसुंदरइत॥ करिह्वैसवरवनीकक्षोभी॥ लक्करीहाथनतकसिरचोरी॥
कियोदानपुनसिपलिहअवसर॥ सिकुलागेरिपचरननहितधर॥ ६॥ दो
हा॥ निरषसुतनआनंदपहहरषवढ्योसियसीत॥ भ्रैसेंहीकरनेभएदि
ननेरिवसवदीत॥ ७॥ चौ॰ ॥ इकदिनसियउपज्योजियसोग॥ रामचंदको
विरहवियोग॥ कुरेकेसमलीनभयोमुष॥ ननविह्वलअतिव्याकुलह्वै
दुष॥ विरहअवसरआपरोऊधाला॥ महांदुषितननिरषीजियमाला॥ हाय
मोरप्रकोसिपकोंनव॥ चिंतावसकृतमानभईअव॥ वैनीसिपलमलीन

बरनहुति॥किहकारनतें भई कष्टसुत॥कहोजथारथमनकीताता॥
तोहमरेजियहैकुसलाता॥१८॥दोहा॥कहतजानकीसुनहुतरामचं
द्रसुतमात॥मुकरीनोबनबासतिहकहोंजथारथबात॥१९॥चौपई॥रघु
बंसीदसरथवरराजा॥तिहकेहहचारपुत्रसिरताजा॥रामचंद्रअरुभरथस
त्रुघन॥चौथेमहाबलसुरबललछमन॥तिनमहिजुबडत्रिभुवनपती॥अव
नासीअपरंपरअवगति॥तिहदीनोप्रभुकोंबनबासा॥तातेंनिसदिनरहें
उदासा॥ताकेविरहवरनकुमलानो॥यहकारननिहचैजियजानो॥कै
सेंवैनीगुहेंअकाजा॥बालकरतसाबेउहिलाजा॥२०॥दोहा॥सुनबाल
कवोलेवहुरचिंतनकीजैमात॥परमेसुरसिमरनकरउ है हैसभकुसला
त॥२१॥चौपई॥एकदिवसरिषअपनेद्वारे॥षेलतदेषध्याननिहारे॥बालमी
कविचारकियोतब॥विद्यासकलपढाउंइनहिअब॥सुभवासरसुभघरी
मुहूरत॥गुनरामकेसिषाउसुपूरत॥हरिजसप्रथमपढावनलागे॥
अतिहर्षितरिषमनअनुरागे॥तापाछेरिषवेदपढाए॥शास्त्रसिमृत
सकलसिषाए॥गायत्रीषटकर्मपुराना॥संध्यादिकसिमरनभगवाना॥
२२॥दोहा॥आवाहनअरुविसर्जनपितरकर्मसतभाउ॥संध्याध्यानविधा
नसभमाधारचनउपाउ॥२३॥चौपई॥जोतकवैदकअरुहैरजविध॥वि
द्यासकलपढीकीनीसिध॥जेतकविद्याहैपृथ्वीपर॥वेगपढेबालकहि
धरुषकर॥तिहपाछेविद्यासंग्रामा॥लागेपढनबालअभिरामा॥धु
धतेंकहतविलमरिषलागे॥तिनमहिबालपढेअनुरागे॥तातेंरिष

रा॰ अ॰ प्रसन्नमनहोई ॥ श्रीरघुगरवंपदावैसोई ॥ अस्त्रपास्त्रविद्यासरमारल ॥ चंद्र-
भा॰ वानमुरूशुरजप्रहारन ॥ १७ ॥ दो॰ ॥ शावनसरषंडनकारनपरनवान
२१३ महिमान ॥ एकसरहोइसइसहस्रवलदिपगदिसमान ॥ १८ ॥ चौ॰ ॥ जि
हरकवचश्रुहषोलप्रकारा ॥ मंत्रनपंडनपढेअपारा ॥ फरसापट्टरसुह
मुद्गुलि ॥ लागनमारनलरनसकलगुन ॥ जवरजंगहपनालचलाव
न ॥ मेढवानपाहनवरषावन ॥ अगनवानमिहपंडिजहोई ॥ सेलवानसी
षेविधसोई ॥ नागफांसविद्यात्रिसूलकर ॥ षड्गगदातरवारचक्रवर
गजफेरनधुनअश्वसवारी ॥ सीषेसकलवालसुषकारी ॥ १९ ॥ दो॰ ॥
जोककुलीनोलोकमहिविद्यादलीजुसार ॥ जेसमलवालकपढेकहे
होतविलार ॥ २० ॥ चौ॰ ॥ भएजेजसीमहासूरवर ॥ कोउनलीनलोक
रनसमसर ॥ संपरनविद्यासीषेजव ॥ गुरुपगहोकुमारनपरेजव ॥ इक
रसवर्षवीनपुनगए ॥ महाप्रतापवानसिसुभए ॥ छोटीधनुषीहाथ
लियेंसर ॥ वनमहिषेलनषेलपरसर ॥ उहांरामनिजहियेंविचारा ॥
अस्यअंसरावनमुहिमारा ॥ सवपैलसप्रहारकियेहै ॥ महांहोयजि
यमानलियेहै ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ यहइषनकैसेंमिरै रघुवरकियोविचा
र ॥ असैमेपकननजकोमिरेसुतनकेभार ॥ २२ ॥ चौ॰ ॥ यहविचार
कीनोरघुराममन ॥ ध्यानकोअभमाननमिरावन ॥ लवकुसकेप्रतापा
देषनहित ॥ सीनासंकरहयोंधलाचित ॥ ताहीसमैत्ररंगमंगायो ॥ हर
षनहियेंवसिष्ठवुलायो ॥ अस्वप्रतिष्ठासमैभयोजव ॥ चरचाचलीअ

त्रुकीकीनव॥ कहैवसिष्ठसुनौश्रीरघुवर॥ जनकसुताचहियेयह
अवसर॥ लपकरकंकनवांधौकैसे॥ अरधंगीविनउचननहैसे॥ २
दो॰ ॥ कहैवसिष्ठसुनसुनौप्रभुमनसमैहैआन॥ सीतासुआईचाहियेसौ
पुरवैसभकाम॥ २१॥ चौ॰ ॥ अंचरवांधोकिहकेहाथा॥ सियकौंरहैआ
नौरघुनाथा॥ जनकसुतासीयहारानिवर॥ जनसमैसावडकलमा
कर॥ सुनवोलेगुरुप्रतिरघुनंदन॥ प्रथमेकियोजोरकरवंदन॥ मन
ववक्रमग्रहस्यावौंनहिसिय॥ नहिआहोंरहसमेअवरतिय॥ नैनव
सिष्ठनीरभरआए॥ रामवंदरहवचनसुनाए॥ कहिवसिष्ठइक्कापरह
भगवन॥ सियसारथीसतीघरहियोवन॥ २२॥ दो॰ ॥ जनसमैकोचा
हियेसनवनरामउदार॥ हरनकरनलागेसकलसीतानामविचार॥
२३॥ चौ॰ ॥ कंचनकीजानकीसवारी॥ वामअंगरघुवरलेधारी॥ वैठा
ईरघुनंदनसाथा॥ यत्तकंकणवांध्योहाथा॥ यत्तचलिकाकरीमहा
वर॥ क्षायोरामअग्रचलिहअवसर॥ हयगजरथसेनापारकसब॥ से
नापतकीनोलक्ष्मननव॥ महापराक्रमसरसत्रुघन॥ संगवलील
वमचत्रुरंगन॥ कुंकुमचर्चितगातलवरंग॥ कनकछत्रकरसिरछविअं
गअंग॥ २४॥ दो॰ ॥ अथफिलोचारोंदिसाजीतलिएवलवान॥ नवल
क्ष्मनमनमैंकह्योममनाअतिअभिमान॥ २५॥ चौ॰ ॥ लक्ष्मनमनमनउ
पमोअभिमाना॥ हमसमअवरनहीवलवाना॥ शत्रुघ्नजीकेउपमसम
हिसवारे॥ हमतेवलीअवरनहिधारे॥ मनमैंअतिअभिमानंरववहायो॥ हय

प्रै. सु. फिरि निकर्स्यो जो आग्या पायो ॥ गए वर वन मैं चल्यो लव रंगा ॥ लछमन हि पे
भा. सत्रुघन संगा ॥ लागे जाइ अश्व के पाछे ॥ रछ्या कीजे वन महि आछे ॥ वन
२१५ मैं कोऊ नाहिन रामा ॥ जो अरु कावे हम गोबाजा ॥ २८ ॥ दो० ॥ लछमन
अरिघन कौं कह्यो पाछे लागे जाइ ॥ हरकारे नहि ह्वै है तेंप हलव रंग रघुरा
इ ॥ २९ ॥ चौ० ॥ चलन अश्व गह वर वन गयो ॥ रिषि आश्रम दिग बाहा भ
यो ॥ बालमीक रिषि लवन इलोग्रह ॥ गयो पत्रा तुलायो बल लिह ॥ कु
सनिह सम गयो कहि काजा ॥ लिह अश्व सरदा पल भो राजा ॥ लव षेल
त रिषि बालक संगा ॥ विचरत देख्यो सुभग लव रंगा ॥ लेत रपंच कलान
महाउत ॥ मस्तक पुकर रहे मही नान्त ॥ कांधे सो भलके सल्व रंगा ॥ कारे
करन सक सम अंगा ॥ ३० ॥ दो० ॥ निरषन लव सब रज भयो वेग हि
पकरयो आइ ॥ सीस पत्र महि जो लिष्यो पढ्यो सकल प्रगटाइ ॥ ३१ ॥ चौ
० ॥ रघुवंसी नृपत रघुनाथा ॥ छाड्यो हय लछमन हि पो साथा ॥ संग
सत्रुघन सर अपारा ॥ अगनित चमू अंगन नहि पारा ॥ महाबली है हैन्द
प जोऊ ॥ यह लव रंग कौं बांधे सोऊ ॥ तिहकौं जीतहि कर संग्रामा ॥ ले हि कु
शर लव रंग मरामा ॥ सो को बल निर्बल नृप होई ॥ सावै भेट मिले हम
सोई ॥ कछुन कहै गेह मति हराजा ॥ आता मान फिरे संग बाजा ॥ ३२ ॥ दो
हा ॥ लव कोपो पढ पत्रिका हृदे विचारी बात ॥ अश्व गह्यो मैं तिन हि को
मो शाऊ सो मान ॥ ३३ ॥ चौ० ॥ रघुवंसी रघुवर विष्याता ॥ सो कभ रता ह
मरी माता ॥ तिरहोवी कौं हो बल गायो ॥ भयकारी वन मांहि पठायो ॥ ति

बोयहाउषमानहमारी ॥ सदाचिंतवसरहनइषारी ॥ पीनवरनतु
षगुहनवकेसा ॥ निसदिनरहनलपसकेभेसा ॥ उजलचीरनयंगव
नावन ॥ चिंतातरमननलनइषपावन ॥ नहिविधवलमंजननलनकर
ई ॥ विरहविधोगरामननजरई ॥ ८२ ॥ दो ॥ १ ॥ जिहनिरदोषीसीयकों
इषदीनोबनवास ॥ अवयगसोतिनकाधुजहिसेनाकरोंविनास ॥ ८३
चौ ॥ ८ ॥ तिनमानासियकोंदुषदीनो ॥ अपनेहृदेविचारनकीनो ॥ ति
नकोअबयपसोहमहाथा ॥ जुदकरोंहमइनकेसाथा ॥ उनतेंवैरमान
कालेऊं ॥ सेनासकलनासकरदेऊं ॥ जोयुनवैनीमालगहाऊं ॥ तौहम
सियकेयुतकहाऊं ॥ सीताकेदुषनसभहरऊं ॥ निमषमांहिसेनाहन
करऊं ॥ निरदुषवनहोतीसियमाता ॥ कियोविवेकनहमरेताता ॥ ८४
दो ॥ १ ॥ मानवैरलेवोंअवहियुद्धकरोंइनसाथ ॥ सकलचमरनहत
करोंभलेहियाउंहाथ ॥ ८५ ॥ चौ ॥ ८ ॥ यहविचारलवमनमेंकीनो ॥ क्रो
धलभयोधनुषकरलीनो ॥ हेरंकारवानगहिलयो ॥ तीनलोकयुति
कुलहलभयो ॥ महासवदउपजोभयकारा ॥ तीनलोकयाकुलकर
जरा ॥ अवयपकरवांध्योनरवरसों ॥ भयोजुद्धसेनारघुवरसों ॥ पाछेते
रघुवरकीसेना ॥ आपनभईत्रिलोकीनेना ॥ धनुषवानलेसत्रुघन
यो ॥ जुद्धकरनहितमनमेंभयो ॥ ८६ ॥ दो ॥ १ ॥ यहइछारघुनाथकी
तनमनमेजपराज ॥ हतनअनापकेनिमितनहआपनकीसोबाज ॥
८७ ॥ सो ॥ १ ॥ रघुवरकियोउपावगरवनिवारनसभनको ॥ चौतीस

मै॰ अ॰ मोप्रभाउअश्वमेधकेजतकौ॥ ७८॥ दो॰ ह॰ रा॥ इतिश्रीभारथपर्वलोअश्व
भा॰ मेधपर्वभाषायां॥ कविरहकनयरनमधोप्याइकौशीसप्रमान॥ २७॥ चौ॰ ई॥ जै
२१५ मुनकहैसुनहुकुरुराजा॥ लवअनिवलीसरसिरताजा॥ हननमार
कह्योलछमनसौं॥ वालकहृदयवांध्योसतुमनसौं॥ आज्ञाकरीसत्रुहन
कौंतव॥ संगसेनालेजाइवेगअव॥ तपस्व्युवनरसपषरनहरवर॥ मु
कताबन्हहृदयप्रवलनृहकर॥ यहविचारकीनोमनमांही॥ यहवन
मैंराजाकोउनाही॥ वहैअस्वानवालरिषकोऊ॥ राषनसकेनरंगम
सोऊ॥ ८॥ दो॰ ह॰ य॥ वेगनहींआपनभएलवकौंछेलोआइ॥ सकलचमूके
मध्यसितहमौंवैवेठेतुमजाइ॥ ४॥ चौ॰ ई॥ हेरलिपोसिपसुनकोसेना॥ नि
रषीसकलचमूलवनैना॥ वांध्योलैकरंववुडमसौंहृय॥ मनुषवानलेक
हानिरभय॥ वचनकहेनवसुरासत्रुघन॥ रेवालकनहिंडरतमूढमन
कतिलमवांध्योअस्वहमारा॥ आयपहृच्योकालतुह्यारा॥ वलहिवरा
वनहोसनमुषमूत॥ हस्योसत्रुघनअवमारौंतकू॥ लोगकहैंगेवालक
मास्यो॥ सिसुरनहन्योनहीयविचास्यो॥ ४॥ दो॰ ह॰ रा॥ वहुरहसहिंगेलोहिं
कौंआपवरिनसौंजाइ॥ कियोसुदृअसाननालीनोनासकराइ॥ ५॥ चौ॰
ई॥ वालकलोहिचढ्योसिरकाला॥ क्याररेदहृदयकोंननकाला॥ कलिकौं
नासकरहिंनिजप्राना॥ वालवुहसमझइअसाना॥ रहोनुहरनथात
प्रहारन॥ आनमनानकरइकिहकारन॥ नहीनपतहुननमहिंजता
ना॥ कलिकौंकरइआपननग्याना॥ नीवरानहमनमकौंरीनो॥ अस्वा

जानकासनहि कीनो ॥ नागइहथभागइरणमांही ॥ बालखेलकी क्रीडा
नाही ॥ ५ ॥ से॰ रा ॥ इस बोल्यो नवलीयह तन मोहि कहइन होवाल ॥ त्रिदस मे
रि बराइ गाहि जसहन के भुवपाल ॥ ८ ॥ चौ॰ ई ॥ इम बोल्यो है अक्षन त्यारा ॥ जा
न कुटीवंसहमारा ॥ अपने बल बांध्यो मुहि बाजा ॥ नहि सहाइ हमरे को क
राजा ॥ ऐसे बचन कहे लव क्रोधन ॥ कियो धनुष टंकार हरष चित ॥ धनुष
सबद सुन अति भै कारी ॥ सभ सेना आकुल करडारी ॥ आसन डोल्यो हर प
नको नव ॥ डस्यो सेस पर नीकांपी सभ ॥ कांपे पुन सुन दस दिगपाला ॥ र
बहुन सागर सप तन पाला ॥ ७ ॥ दो॰ रा ॥ तीन लोक भय भीत हैं लागे कर
न विचार ॥ इम नहि है छोभ लख्यो कब ऐसो धनुष टंकार ॥ ८ ॥ चौ॰ ई ॥ महा क्रो
धजियम भयो शत्रुघन ॥ महापराक्रम निरख बालनलन ॥ तीन बाण कर
तणलिकारे ॥ करर कव बालक पर मारे ॥ कूदत ही अगनन सर भए ॥
सीमा हलकों छाइ तन भए ॥ ठेरलियो मानन छडनमाई ॥ निरभय सिसु गा
होतिहताई ॥ नवकों घ्योलव धनुष संभारे ॥ बारबान नीछुन कर मारे ॥
इकसर सों सभ बान बिडारे ॥ बान घातु घंडन करडारे ॥ ९ ॥ सो॰ रा ॥ सिय
हलहटे अनंत भंजन की धोवानगढ ॥ अरिदल कि धनिकंदर दहकनग
रमलमे वचन ॥ १० ॥ चौ॰ ई ॥ इनिप सत्रुहन सनमुख गयो ॥ अश्वसारथी
लिनवडइहयो ॥ त्रिनिय बान बड सेन संघारी ॥ चोपे सरगन कुंभ वि
हारी ॥ सूरवीर बडइ हने पहाला ॥ अगनन चमू भई रनछाला ॥ लछमन धी
ननिहारी सेना ॥ महा दुषित अवलोकी नेना ॥ धरन परे सभ सूर निहारे

हृदयगनरखपाइकबहुमारे॥ निरषसत्रुघनकिंयोक्रोधमन॥ नीकन
सरकाटेदसननलछिन॥ ११॥ दोहा॥ सियसुतनकोनाउनकियोजोरवान
विकराल॥ क्रांहेत्याईत्रुभगिरेरथमनहिंपायोताल॥ ११॥ चौपाई॥ पुनलिय
सुतरकबाननिकारा॥ लछमनथानश्रीरकसमारा॥ उडुगयोगगनश्री
रहिसदछन॥ पस्योजाइजमहारसत्रुघन॥ रथसारथीसमेतउडायो॥
देसरपठपुनधरनिगिरायो॥ लेसापजनमपुरतेंवाना॥ विकलसत्रुघन
धरपुरछाना॥ परारप्योहैगरीधरनपर॥ बहुरउजोजियमहाक्रोधक
र॥ वचनउचारकरयोबालकपति॥ तमहीनहिंमीकोंतोयहृगत॥ १२॥ दो
हा॥ मोलमपिहृजीकोंनहींश्रेसीगनमुफहोर॥ इंद्रअहल्याहोयअबहृ
मकोंलागेसोर॥ १४॥ चौपाई॥ घहूलाकरदसवानचलाए॥ लगेजारनहि
वेकनमाए॥ कमलकर्नकालागनमैसें॥ इघनहिंदेनभयसरतैसें॥ पुनहै
वानहनेसीतासुत॥ इश्योसत्रुघननभसरसंजुत॥ पस्योजाइकेस्वर्गद्वारपु
र॥ पुनस्यायोभपलनीकनसर॥ मर्छितभयरनपस्योविहवलमन॥ पुनह
वेनदैउक्योसत्रुघन॥ वचनकहैकोपलसियसुतनप्रति॥ रेबालकहनश
नकरहकति॥ १५॥ दोहा॥ नहींपानसोंपीनतमवांकनअपनोकाल॥ बा
रबाररुमकहनहोंसमरुननाहिनबाल॥ १६॥ चौपाई॥ पुनकाटेहैबानस
त्रुघन॥ रिससोंकसमारेलवकेतन॥ रकसरअगनदतियरविलेजा॥ वे
पोलवकोहियेकलेजा॥ कछुननेनदेधानसंभाग्यो॥ आपनभयोनसमाधि
वाल्यो॥ पीइननवभोलागेबाना॥ मर्छितदैधरनीलपटाना॥ हरवलो॥

तनभीगेकेसा॥ लपटानीरजरजमनहुरेसा॥ भालप्रदेससहथरसरनत्र
ति॥ महाक्रूरगनपर्योविकलमन॥ ९॥ दो॰ना॥ तीछनसरगननहननकें
धरनगिराधोवाल॥ वलेग्रछत्रुकनारकैपर्योवगभञ्जाल॥ १०॥ चौ॰ई॥
लक्षमनवलोअग्रजोधाकोंतव॥ रहोसत्रुहनसंगचमूसब॥ हृदेविचार
शत्रुहनकीनो॥ हमरनवालककोंहनलीनो॥ मनकोक्रोरेवालकज्ञा
वै॥ क्रारगयेरनछवलजावै॥ मांतेंभयोसत्रुहनदुखित॥ परमनीलस
तनिहवलचित॥ हहरितजानकाजेसमभयो॥ उतसिसकोमलांगसुन
लयो॥ सीतासुनविसमैहूँगई॥ हरनप्रकारकरनप्ररहई॥ ११॥ दो॰ना
नवहीक्रुसप्रापतभयोसुनलवकेविरतांत॥ मूर्छितभातनिहारकेकु
मोसरवलवंत॥ १॥ चौ॰ई॥ भ्रातहननतहनकेक्रुसअवनन॥ महाचिंत
वसभयोक्रोधमन॥ व्याकुलभयोसोकजियधाना॥ वहूरोंइषितनिहा
रीमाता॥ क्रुसकेजियऐसीठहराई॥ सुतवियोगमातामरजाई॥ प्रथ
मेलोषकरोंमातनको॥ पाछेवैरलेउंभ्राताको॥ भागेकहांजाहिअरिमोपे
तीनलोकजुरिआवहितोपै॥ कोटजतननकरमानउंजाई॥ पुत्रजनलरेकै
मूर्छितकुसगई॥ ११॥ सो॰ना॥ हरनकरतसियकुसहोकमहासोकजियमां
हि॥ उतसवरकरटेरहीनैननीरवहरांहि॥ १२॥ चौ॰ई॥ वचनकहैक्रुस
सुनसियमाता॥ प्रथमेहमटेषोंलवभ्राता॥ जिनमेरोभ्रातामार्योर
न॥ तिनकोनासकरोंयाहीछिन॥ देहजरनहमरीदुखजिनके॥ वेग
संभारकरोंअरितिनके॥ जद्यपिहोंहिपराक्रमवाना॥ छिनमहिमा

अ॰ प्र॰ सकरौंलिनप्राना॥ सोकनिवारज्ञानमनकीजै॥ ह्रोनहारमाथेधरलीजै
भा॰ कोरउपाउकरैजिनकोई॥ इछ्याभगवनतैसेंहोई॥ २३॥ दो॰ ॥ दृढ़ेधीर
२१२ धरसोकतजनज्ञानविचारहुमान॥ हमजैहोंरनमहिंतहांजहांपरलोलव
ध्रान॥ २४॥ चौ॰ ॥ जाइनिहारोअपनोप्राना॥ पूर्छितभयोकिधोंरनप्रा
ना॥ नाथकेंलिहमजुसंघारौं॥ चलरंगनीसेनसभमारौं॥ निगमवचन
कहिमानवनावन॥ धीरजदेवहुविधमनभावन॥ जोमनकरिहैंगवन
प्रदेसा॥ ग्रपथारनसंग्राममप्रवेसा॥ जननीग्रपवालिदग्रहहोई॥ दिहेग्र
वंदवहावतसोई॥ जोमनकीरनजीतनहोवै॥ जाइविदेसमजनसभखो
वै॥ २४॥ दो॰ ॥ जोजननीचिंतकरैतजेग्रकीरतताल॥ लिहनरकीरतहो
वहीवललनसुरिनपितुमान॥ २५॥ चौ॰ ॥ वचनकहेकुमसजनमहतारी॥
सुतविधोगदुषलमकोंभारी॥ धोमनमहांसंतापकहोंतुम॥ डतरपरी
हैआजधुजाधुम॥ लमसंतोषकरहुजिपमाता॥ अबहीलेउवैरनिजप्रा
ना॥ जोवैहोजेकारजतनको॥ सोकनिवारधीरदेमनको॥ वद्धवकवार
नहीसुहभाषों॥ हनोंमहुलवरकनराषों॥ सभसेनाजमपुरीपठावों॥ ना
सकरोंअरिविलमनलावों॥ २८॥ दो॰ ॥ प्रसमकरैसुषलैंवकैजोपुनफले
नहान॥ रनमहिमालेजोवकहिलेहारहिवलवान॥ २९॥ चौ॰ ॥ भाईकेह
परेहमलोग्रव॥ नौतेंवकोंनसोचकहोंसव॥ ग्रवजैहोंरनमहांध्रानल
व॥ सोकतजहुसेनाजगाउनव॥ तौतेंमातधीरकरहोतुम॥ हषोमोपेह
दमागोधम॥ सुषतेंचकेनहीकछुहोई॥ हृदैहेजोहरिभावैसोई॥ मोहिम

हारेव रुन नहि सुमाना ॥ बहुरौं चिंता लछमन आना ॥ देषउ कैसें दूकर
ऊसु काजा ॥ प्रलै करौं सभ सैन समाजा ॥ तौ सिय सुत रुनकुल नाम कहा-
वौं ॥ रुधिर नदी रन बीच बहावौं ॥ १९ ॥ दो॰ रा॰ ॥ थान जिवावौं ब्रह्म रुनग
हलावौं पुनवाज ॥ तौ सिय सुत रुनकुल नाम प्रभु ऊभै सैं करौं सुकाज ॥ २० ॥
चौ॰ ई ॥ तौ लछमन रीआ लाव हपाअं ॥ छिन महि भुव थर गगन उठाअं ॥
सागर सपत जार सुषरावौं ॥ रंद्र भेद को समुद्र बहावौं ॥ जल निधकी
रसुग प्रुदृ बावौं ॥ उलट पर ओ पाल पठावौं ॥ सुरपुर कौं गहि पकौं पि-
पाला ॥ पकौं पयाल इंद्र की साला ॥ कंपावौं दस दिस छिन मांही ॥ थान-
सत्रु हित छाडौं नाही ॥ २१ ॥ दो॰ रा॰ ॥ रुधर कुंड कर रव विषे पत्रु षप षावौं
मातहि ॥ आलाली जै मान प्रभु ऊनु ढकरौं अवजाहि ॥ २२ ॥ चौ॰ ई ॥ बालमी
ऊग्र हनाहि न सोई ॥ देन असीस सिदर न होई ॥ अब दीजै आला प्रभु ऊमा
ना ॥ जुद्ध करौं जी मौं अरि थाना ॥ सुन सीता उपज्यो मन ताना ॥ होर जगा
रक्षा भगवाना ॥ होनहार रहै रहै सत तेसें ॥ कोर जतन न कर र र तन कैसें
मैसें को ऊब सत गवावै ॥ कोर जतन व कर र व कै न पावै ॥ जो व इता कीशा-
पन है मन व ॥ गरह वै को पावै मा को नव ॥ २३ ॥ दो॰ रा॰ ॥ तांतैं इषष्ठ सम भ
ला जो रक्षा रघुनाथ ॥ यह जिय जान नग्र ने रसों धसो भाल कुसहाप ॥ २
४ ॥ चौ॰ ई ॥ सिय सुत लव के कटि सम बनाप ॥ कवच षोल कुस नन पहराप
धनुष बान रीवे सुत षापा ॥ सभ छिन करी सीय निज हाथा ॥ कियो प्र
नाप ननु र कुस कौं नव ॥ दई असीस जीत आवउ अब ॥ जेतक ऊली रिष

रा॰सु॰ रकीनारी॥ सभनसुनीसकरीहिनधारी॥ विनैहोइगीबालकुमहिरन
भा॰ आनसत्रुसंघारकरहुकन॥ मायेनिलकहियोकरभाउ॥ श्रवनपैंलीस
२१८ मोप्रभाउ॥२५॥दोहरा॥ इंद्रजीतमारतपर्वतीसुग्रीवअंगदपवनसुत॥ कवितइक
उद्दरनमयोपैमीपाउप्रमान॥२५॥जैमनउरध्यान॥ चौपई॥ जैसुनकहैसुनो
रघुवरवचन॥ मानतोषकुसमबलसेजोधमन॥ इहांसत्रुघनहूहेविचारा
आवनकोउनदेषनिहारा॥ जोकोऊहोनवेगरनआवन॥ बालकवध
सुनगहरनलावन॥ एकोपासिसुग्रवरनकोई॥ चलेसत्रुघनपहु
कहिसोई॥ हरषतहियेंपवनजंउवनआवन॥ विजैकरीचलमंगलगावन
जोजनएककसत्रुघनगयो॥ पाछेतेकुसआपनभयो॥ ॥दोहरा॥ निसहि
निषकुसभाषियोकहांजानहोभाग॥ कुडीधर्मलजाइसिसुमारचले
रनत्याग॥२५॥चौपई॥ भागेकहांजाउगेसुफलें॥ भानवैरलेकंग्रवलफलें
रनकोंजीतत्यागपुनआवै॥ होइअकीरतकुवलजावै॥ बालककहनभागे
उमतैसें॥ सूरनकीगतकरीनमैसें॥ सुनकुसवचनसत्रुघनकोहो॥
सेनाजोरक्रोधनिघकाहो॥ निरषतकुसनउपजुषसंभारा॥ अपमेसी
नवानकुसमारा॥ सकलसूरकांपनतनलागे॥ उपज्योसोकसभनसुउ
भागे॥३॥दोहरा॥ हयगजसूरपदातकेघरहरकांपहिआन॥ पनुउहा
यलैगिरपरहिविसमैसभवलवान॥४॥चौपई॥ हायपांउकांपनन
नमैसें॥ महाप्रवलकुमहोलनतैसें॥ सभसेनाप्रतिकहोसत्रुघन॥ सन
उपदेउमनुइकरोरन॥ सेनाकहेलनदउसुरूवाला॥ महाकंपउपज्यो

हयगाता॥ नहीजुहकी सकल रहीनन॥ सांचकहीजियजानससुड
न॥ केसेंधनुषगहैंकरवाना॥ परहरकांपतहेंउहिथाना॥ कालरूप
बालकयहलागे॥ कहेंनपारयतुमरेलागे॥५॥ दो०॥ कालरूपस
सबालयहहेसडरनहेंथान॥ मानोंप्रलेसमेभईकांपेहैं भगवान॥९॥ चौ
ई॥ कृष्णोसंजुगनपनुषसंभारे॥ दससरकसकुसकेतनमारे॥ तीकन
बानमहाभयकारा॥ कुसतनलग्योनकरैउकारा॥ कमलहिगमारहि
गहिजैसें॥ लगेबानकुसकेतनमेंसें॥ चारबाणकुसलछ्यनिकारे॥ तौ
कुनतेजबानसुतिमारे॥ हेरलिपोसरएकसंजुगन॥ भयोकवगहव
हंस्रोरतन॥ हिलियेसरहयगजरथमारे॥ लत्तिषेसरमारपीतिहरे॥
८॥ दो०॥ धुजापताकपरालवड्डहनेचलवैबान॥ करीतपरपचेरस
भसेनाकुसलवबान॥१०॥ चौ०ई॥ लवकुसपहमनबातविचारी॥ कही
मपार्थवचनमहतारी॥ जिनमासोंहमरोलवध्याता॥ तिनकेवेगक
रोतनवाला॥ हयरकुंडरताबीचसवारों॥ अरिशोणितसोंधनुषपषा
रों॥ भालनसोंरिपुमासषवाऊं॥ ओजियहतनकुसनामकहाऊं॥ सोप्रण
पूरनकरोंसमेंग्रब॥ एकबाणकाडोंनिषंगतब॥ दैकसीसकोधनहै
मारा॥ हयगजरथपाइकबसंहारा॥११॥ दो०॥ ठाढोहैकैबानकुस
मारमारकरक्रोध॥ एकएकपरमारईबहुतनसंहारेजोध॥१२॥ चौ०ई॥
ठौरभाजवेकीकोउनाही॥ लवदलबानपिंजरेमाही॥ येपतकरी
सकलसेनासर॥ अमितसूरसुरजाइगिरेधर॥ सेनासकलनिहारस

ज्ञा॰ प्र॰ गुवन ॥ पकपकपरपसोमनकनन ॥ रुपरप्रवाहवसोनहिपारा ॥
भा॰ लोगनभैरवमनगुपारा ॥ सिलावानसत्रुवनमासो ॥ क्रोधनदैकुसको
२१९ रग्रहासो ॥ मेधरीनपरवनवरसावै ॥ लागहिकुसमग्रमपकनपावै ॥ ५१ ॥
दो० ॥ अनिक्रोधनदैसत्रुवनमारेपरवनवान ॥ नेकनहीश्रमकुसव
पुघलागनफूलसमान ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ महाग्रसणाहगलछमननाला ॥
नहीवेरग्रापननिसधाना ॥ गिरकुसधोरपगेनिजकरही ॥ स्पनहि
रेषमर्छधरपरही ॥ कुसनिरभयवादोलूरारला ॥ आवनगिरकारे
लाहीछिन ॥ कुसमग्रहारकरहिलनजैसें ॥ परवनलागहिकुसअंग
मैसें ॥ ग्रपकग्रपकहिपहरपनहोई ॥ वालकवाननलागेकोई ॥ अ
निश्रचर्जमनभयोसत्रुवन ॥ सहग्रहकोउलगेनकुसनन ॥ ५३ ॥ दो
० ॥ क्रोधनदैपुनसत्रुघनकाउरिपैजेवान ॥ कुसलीनोधरनकिये
महासूरवलवान ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ तीनवानपुनकाटेसिपहन ॥ पचेस
त्रुवनश्रारक्रोधयुत ॥ तिनकोलिपोवचायसत्रुघन ॥ वहुरोंक्रोधकि
योग्रपनेमन ॥ नरकसमेंधरवाननिकारे ॥ ग्रलिप्रतापवामभयकारे
क्रूरनहीधरसहसभयमन ॥ भयलाधधरमारगअवसर ॥ भयकोरद
सनिकरगपजव ॥ नरकोलगेग्रपारभयेनव ॥ नववालकविनचल
रविनारा ॥ अपनेरिदेविवेकविचारा ॥ ५५ ॥ दो० ॥ फोरवानरहरिस
किपपाकेरयोनपक ॥ विनग्रापोरुषग्रानकोमनमहिकियोविवे
क ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ यहतोहैवेरीप्रभुजाला ॥ गुरुकरनप्रभुसोंमहमाला

यहीविचारहृकरतभयोमन ॥ षट्सरहृनेनीषनसङ्खन ॥ वेध
मेंहीलेचवेंद्रकासा ॥ कियोभ्रमारशत्रुहनतासा ॥ प्रानरहृनतनबंही
तनभयो ॥ तबहीशरपरतपरहयो ॥ कियोसंग्रारसत्रुप्रानको ॥ सोक
निवासोसिपामानको ॥ कुसतिपश्चतिप्रानंदनभारी ॥ सहृनसत्रुहन
सेनसंघारी ॥ ५ ॥ दो ॥ रा ॥ सनत्रुषसेनाहोइकैकुसबाइरेरोवान ॥ चम
संघारीसकलतिनरघोनकोबलवान ॥ ५ ॥ चौ ॥ ई ॥ पकलोजारश्च
स्त्रुकुसलाता ॥ पुनरनमहिंहृदनतलवधाता ॥ निरखोजाइपलोर
तामांही ॥ मूर्छितदेहविकलसुधनाही ॥ ताहृग्रसेदिनमणिकोंजैसें
वेपलवानकियोलवतैसें ॥ कुसमनुवापरिवानपठायो ॥ वेगसर्ग
तेंसुधासंगायो ॥ अंकुनसिंच्योलवमुखमांही ॥ उठ्योधानहृषमिट्योनहो
ही ॥ कीरतनसहृतउठ्योलवसूरा ॥ महासोधपावनप्रणपूरा ॥ ९ ॥ दो ॥ रा ॥
राहुग्रसेरविमलिनहैकुटेनिर्मलाहोइ ॥ तैसेंहीसिपतनउठ्योसंसेर
होनकोइ ॥ १० ॥ चौ ॥ ई ॥ ताहीछिनलववचनउचारे ॥ कहुहमतातकुसभ्रा
तहृमारे ॥ लेनहिगदकुशाइतहरंगा ॥ सत्रुमहाबलरनचतरंगा ॥ बो
लोकुसहुनहोलवभ्राता ॥ घुकसभकियेशत्रुतमघाता ॥ भ्रम्योमो
हिजीतकैबाजा ॥ हृनेनिकरजोधेवरराजा ॥ सुनकुसवचनभयोल
वहृरषन ॥ बांध्योग्रश्चकरंवमलग्रन ॥ होकथ्यानग्रडदिनश्रुतिमन
महि ॥ पत्रुषवानलेबाडेरनमहि ॥ ११ ॥ दो ॥ रा ॥ जोकायररनतेंबचे
भागगयोआभ्योर ॥ आपनहोइहिरामपहिजहांजनकीठोर ॥ १२ ॥ चौ

437

रा॰ य॰ पई ॥ मषसाला वैवे रघुनाथा ॥ नतकंकनलसोभमहाथा ॥ कंचनकी
भा॰ सिपवामेअंगा ॥ अंचरगांवजोरनिहसंगा ॥ सहसअ्रकासीरिषीन
२२॰ हांनित ॥ लेनरसोईमहाशुहिनचित ॥ इंहआदिसभदेवमुनीस्वर ॥ बै
वेनहांअनेकरिषीस्वर ॥ कंचनघटनअनेकननारा ॥ हेमपात्रवहुर
वनठवारा ॥ सिंगसर्णसवर्नमनिभावन ॥ हेमगऊनहांअलिछव
पावन ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ नितप्रतिगोकंचनवहुतदेनद्विजनकोंदान ॥
गुरुवसिष्ठवैवेनहांहोमकरनरुचमान ॥ २४ ॥ चौ॰ पई ॥ पतिनलन
सोंछुतद्विजगारन ॥ जैजैजैमंगलउचारन ॥ अंगनकंदरवचग्रहको
सपर ॥ देतआइवीनोतिलनिजकर ॥ नहांजाइकैदुनप्रकारे ॥ रव
केवीचसत्रुवनमारे ॥ वहुरसंहारभईसभसेना ॥ सोगनकहीपर
तनहिवैना ॥ सुनरघुनाथचिंतमनभई ॥ सकलसभाविसमैह्वैग
ई ॥ रुदनकरनलागेसभलोका ॥ सकलपरीउपजोमनसोका ॥ २५ ॥
दो॰ ॥ रा ॥ हनहनोंनसकलकहोवुनश्रंकोरघुनाथ ॥ वनमहिकोउरा
नानहीनुद्धकिधोकिहसाथ ॥ २६ ॥ चौ॰ पई ॥ कहेहनसुनहोश्रीरघुपत
हेवालकहैंवलीसरअत ॥ रिषिपतनैहैसभक्षांनतुह्यारी ॥ नमलनु
हकरसेनसंहारी ॥ नषसिषसकलअंगसंदरछव ॥ वरनसकैनाहि
नकोउकव ॥ नेनवानसभरूपतुह्यारा ॥ सतमानहुप्रभुवचनहमा
रा ॥ इनपहिपाहतुह्यारेनांहीं ॥ अवरसकलतुमरीपरछांहीं ॥ प्रग
हेकिधोंहसरेरघुवर ॥ कावरेनआयुधनाहिनकर ॥ २७ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ प्र

घमेजफासत्रुघनसकलसेनधीजेह॥ पनुषउठाघनकोसकैघर
हरकोंपद्दिरेह॥१९॥चौ॰ ९ ई॥सरकहैयहजोरघुनाथा॥कैसेंनुहक
रैंइनसाथा॥जिहसनधुषहेहाथउठायो॥ताहीछिनहनधरनगिरा
यो॥सुरनहैवहरूपनुह्यारा॥तेजवानबलकोनहिपारा॥सिंहरूपवा
टेसनमुषरन॥मारभईसभवधसत्रुघन॥सनत्रुघसूरमाइकोऊमव
धनुवहाथगिरपरेधरननच॥कोउनधीरधरेतिहआगे॥सुनसबत
नछेदनलागे॥२०॥दो॰ ॥सरोरनबालकनसमरदेषसुनेनकान॥तन
म्राभातमसमवहैतेजसीबलवान॥२१॥चौ॰ ९ ई॥दलनकेसुवचननसभ
सुने॥मीचहिहाथसीसनवधुने॥तबबोलेवचश्रीरघुनाथा॥जहत
कंकलाहमरेहाथा॥समाऊठवेकोनहिमोकों॥तबलछमनआज्ञादे
तोकों॥घघमेजाइलेहुसुधपाना॥मर्छितपलोकरइकूसलाता॥हे
वहूवहवालकहैकैसे॥जिनहनकिपेसत्रुघनजेसे॥गहितुरंगबांध्यो
महरंभा॥वातसुननतमनहोनअचंभा॥२२॥दो॰ ॥कोमलकेलेडुमग
रभसुसमहाबलवान॥कैसेंलैबांध्योनहोवंचलहपगुनवान॥२३॥चौ
९ ई॥कोमलमहांइभकेलासा॥हरनलगेपवनजोलासों॥प्रबलतुरं
गमहाबलसैसें॥गाबांधबालवहकैसें॥पुनश्रचर्जजिपहोनहमारा
साघसत्रुघनसेनअपारा॥तिनकोंजाइनिहारइनैना॥जिनहिसिंगारक
तीसभसेना॥पछ्कलेइतिनतैसबयाला॥कवंनानतमकोपितुमाला॥
म्राताकरीमोहितुमजैसें॥वेगजाइकीजेहलतैसें॥२४॥सेना॥आता

न॰ग्र॰ लेलछमनचलेभेरनिसानवजाइ॥साजसेनचतुरंगनीसंगाक
भा॰ हीनजाइ॥२४॥चौ॰ ६॥हयगजरथपाइकनहिपारा॥सूरवीरसेना
२२१ विसताता॥अंगकवचसमसूरनपहरे॥महांप्रवलजोधाप्रणगहरे
वामरधजापताकाराजत॥घंटासहावदविपछवकासत॥सुहदक
रनचनसाजियधारी॥चलेसाजसेनाहलभारी॥राजावरगनलछ
मनसंगा॥चलेरिसाइसकलअंगअंगा॥लोगकहैंहनतहोधीरनुपत
इतनीसेनापवनहोकत॥२५॥दो॰ ॥वनमहिअवलनरहनदेत
हांतपवनहिकोइ॥इतनीसेनाकतपवइअघनिअचरजमिपहोइ॥२६
चौ॰ ६॥हांहिकहाविनवालमीकहुत॥वनमहिसकलवरनविधा
नुत॥वेदमंत्रकरसेनसंहारी॥वनमहिसभमदहिनकरहारी॥तिनपर
इतनीचमूपठावइ॥अपनेहृदयेविचारलगावइ॥आगेकोऊरूपदेहि
नव॥इतनीसेनापठवइतमपतव॥पुनरघुनाथकहीपहवाला॥जो
वइहैदनेरिषीकेलाला॥जोकहनदेमरेजननचावत॥सुसमेधजसहन
पावत॥२७॥दो॰ ॥हमपठएपेहतरिषवालमीकरहिकाल॥तवतन
उहांरिषनहइलेवलपहिगयेपयाल॥२८॥चौ॰ ६॥वालमीकतवइ
तेपयाला॥ततकरावनवलनपताला॥वालकहुइहोतनाकेसुतन॥
आपनहीइहांरिषिपनत्रुत॥प्रथमभाइऋषिकोहमराखा॥पुराभला
सुभतेंनहिभाखा॥कतिकोहहेकिपोउनक्रोधा॥पहिनकरीचनसम
जोधा॥पहनहांहिवालकरिषलाला॥कीनोजिनहिसत्रुवनवाला॥छं

थीं अंस हों हिंगे वाला ॥ पवि हां तें सैन विसाला ॥ ४९ ॥ दो॰ ॥ अंबर
नामी राम है कारन करन बनहार ॥ कवि रह कनलीला नमितह पक्ल
र ओ विचार ॥ ५० ॥ चौपई ॥ सोर सब षेव हि क्रम जाके ॥ श्री चले महा दल
तां के ॥ सूर न कों नम महा बल वाना ॥ पत्रुषहा पलर कसम रवाना ॥ महा
सव वैविविध प्रकारा ॥ सेना चली अनंत अपारा ॥ वेरन अरू स्वर गन
भरे तन ॥ उजल परसत चले मुदित मन ॥ महा तबा सप्रकास नमंग
अलि गुंजार करत निह संगा ॥ गरव न चल हि मत गज जैसें ॥ सिंह रूप
गरजत रन तैसें ॥ ५१ ॥ दो॰ ॥ महा सूर मे धात ननु प्रगरे कोर अनंग
गजको नाग ति चलत हैं मरमाते अंग अंग ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ प्रक्रमाल ति
नकं तविराजहि ॥ पहिरे अस्त्र शस्त्र छवि छाजहि ॥ धापत भय आइग
जोधे ॥ मानो प्रलै काल लिव क्रोधे ॥ मग महि धूर न भय पहारा ॥ बरन
बलत बन रजकार गारा ॥ पग रज सों नभ सूरल काना ॥ कही बात सुनि
येन हि काना ॥ मोर महा दल अति भयकारी ॥ सत्र मुष ता पकोप जिय
धारी ॥ रन भूमी रेष सिंह वादे ॥ निरषत सभन क्रोप जिय बादे ॥ ५३ ॥ दो
॥ अति अब वर्ग मन क्रमसन बहि सेना देष अपार ॥ कोंगीन हि गेरन हि
नैं मन म हि करत विचार ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ सेना देषी महा विसाला ॥ निरष
भय विसमै हैं वाला ॥ करन विचार नहों मिल शोक ॥ विजै होइ कीजै कौन
सोक ॥ इह रेवना सूर अराधहि ॥ कर प्रसन्न काज सभ साधहि ॥ महा दे
जसी प्रथ वीपाला ॥ सिमर हि हम ता कों मन काला ॥ इह देव विनसि

दुनहोई॥कोटरूपाइकरहिहमजोई॥मनवचक्रमउघमपहकि
यो॥प्रथमेसरमंजनकरलयो॥४४॥दो०॥मंजनकरतनसुचकि
यो संध्यासिमरनकीन॥रविसनप्रुषकरजोरकैठाढेहैमनदीन
४५॥चौ०ई॥जापमंत्रसूरजकोकीनो॥प्रथमेनमस्कारकरलीनो॥
स्तुतनकरीअनेकप्रकारा॥तुमहीरवजगकोकरतारा॥महांप्रता
पवानकस्यपनंदन॥सिधचारनतेंजसीमहाइन॥हमरहैप्रनाम
तुमकोंअव॥सिद्धकरहुकारजहमरेसव॥तुमपतनपालकसकल
जगतनको॥मनवांछतफलदेतभगतनको॥प्रथीमोजनकोरपजासा॥
जहांनहोंतुमतमहांप्रकासा॥४६॥दो०॥सहंसकिरनतुमरेविषे
सदाअनेकतमाइ॥सोतुमकोंपकरहुहियैंसभअधबंधजराइ॥४७
चौ०ई॥तुमहीहोसभपरथवीपाला॥रूपारूपवरनेनविसाला॥तु
मकोंजानसमर्थसकलविध॥कियोप्रनामकरहुहमरीसिध॥जै
सीमनसाकरकोउध्यावत॥सोतुमपहिवांछतफलपावत॥ब्रह्मा
विस्नमहेसअराधत॥इंद्रादिकजपतपकरसाधत॥किनरगनगं
धर्वदेवनर॥सभसेवततुमहियैंभाउधर॥जोतुमकरहुतनगनउ
काला॥सकलओषधीकरहुविनासा॥४८॥दो०॥अंधकारहैजगत
महिकछुनसूझैनैन॥प्रथीकोआधारतुमकृपारूपसुषदैन॥४९॥चौ
०ई॥सहंसकिरनतुमरेसुषमांही॥तुमसारषाअवरकोउनाही॥तु
मरेनामअनेकअपारा॥सिमरेहोतसिद्धजेकारा॥प्रथमेसरजनाम

तेह्याता॥ ताकोसतराष्ठणामहमारा॥ पुनअगाहिलनामतहमजाना॥
हेतभगनतमनवांछतदाना॥ जोनरसदाहिवाकरसेवहि॥ उत्रदानता
हीछिनलेवहि॥ भपदनतकरनभासकरध्यावहि॥ सकूमित्रहोहिम
सपावहि॥ ५०॥ दो० ॥ सविताकोसिमरनकिए हृदरवकीहोइ॥ र
विकोंहिपंथुराधंहीअतिसषपावहिसोइ॥ ५१॥ चौ० ॥ अवरनाम
कधपकलनेरो॥ रनमैंविजैकरंकतमनमेरो॥ भानुनामतबमराजस
वंता॥ जोनरध्यावहोपजसवंता॥ पुनसहसत्रषनामतलाता॥ से
वतमंगलविविधप्रकारा॥ दिनमणिनामघुरुषजोसेवहि॥ तषा
पावहिकीरतजगलेवहि॥ दष्टीपालनापतमध्यावहि॥ जीतहो
ररनदुषसभनावहि॥ तमरेनामभुवनंतअपारा॥ हादसकहेदुगरस
सारा॥ ५२॥ दो० ॥ तमरेहादसनामपढपवेसुनेनरकोइ॥ मनवांछ
तफलपावंहीसिद्धमनोरथहोइ॥ ५३॥ चौ० ॥ पुत्रअर्थसिमरेतमको
ई॥ ताकेगृहसंततवहुहोई॥ धनअर्थीतनछिनधनआवै॥ भजेभोग
हितसुरपुरपावै॥ जुदभुरपजोतमहीध्यावहि॥ विजैहोइरनतुम
सवसावहि॥ जिहजैसीमनसाकरध्यायो॥ मनवांछततमतेंफल
पायो॥ ज्ञानसमर्थअराध्योतमकों॥ दीजैदानविजैरणमुरकों॥ न
मस्कारतमकोंहमकीनो॥ तमभवंतरजामीसभचीनो॥ ५४॥ दो०
रा॥ शत्रुनकीनीकुमतलवैसुनररविभयोकृपाल॥ दिनमणिमर
नवंतहैवलआपोतमकाल॥ ५५॥ चौ० ॥ भयोअमतवचनभाषेर

अ॰ प्र॰ व ॥ मागहु सो अब रघौं कुसलव ॥ हाथ जोर बोले सो अधपाला ॥ यह हम
भा॰ देहु करहु कुसलाता ॥ सपत सुधार रघ सो हम यरी जै ॥ सायुर देह हरूपा हम
२२३ कीजै ॥ प्रथम देहु बर होइ विजै रन ॥ करौं अश्व सीमा हनु मुनि दल गन ॥ सप
न सुला रघ सर मंगा यो ॥ लव कुस कौं सिह पर वै ठायो ॥ वलरी यो लां
ग हरूपा कर ॥ सान वान उनरि ये महां वर ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ प्रथम कवा म सर
के कहौं दिय हरूपा कर रलर ॥ प्रथम दिये सर रसपन सुषल व कुस कौं प्र
ण घर ॥ ५५ ॥ चौ॰ ॥ अगन वान जल वान दियो उन ॥ तीजो घर र गति
यो तीक्ष्ण गुन ॥ महा सैल वान पुन दीनो ॥ सिला वान दे सभ हुष की-
नो ॥ प्रसल वान दियो वहुरौं रव ॥ अति प्रताप गहि सकल कहत क-
व ॥ पवन वाण दीनो दिन मणि जव ॥ भए प्रसन्न हिये कुसलव नव
सान वान देसी घरत न सो ॥ करी अश्व सीम विजै हे रण सो ॥ स्वर्ग मान-
पुन लोक पयाला ॥ अमर सर स्फुरन को इष्य वाला ॥ ५६ ॥ दो॰ ॥ स्वर्ग
अंतर ध्यान न भव भयो गयो निज धाम ॥ रघु वर दिल वकुस सहु गदि-
व ले करन संग्राम ॥ ९० ॥ इति श्री भारथ पर्व लो श्री पेषन पांचमा ॥ कवि
र हक ... न भयो ... निमध्या प्रमान ॥ १८ ॥ चौ॰ ॥ जो सुनत कहे हनु व
न सहवली जै ॥ कथा र माय न अंग्रेजन पीजै ॥ रवि रघु वर उठा दे हो अधा
ता ॥ सम पहर वाल कहत भगाता ॥ रन महि लक्ष्मन रेष न भयो ॥
श्रुत न वचन निकरु चलगयो ॥ लक्ष्मन न कहे हेस नहु सिमवाना ॥
श्रपनाना मकरहु विधाना ॥ हिषि घन हो होज लम भाई ॥ हम रीस-

भसेनासुरकाई ॥ महासूरजोपेवलवाना ॥ नासकिपेलिनकेरनञा
ना ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ पर्छिनकीनोरत्नाविषेधानसमुझनमोहि ॥ उनमेनाउ
वरंगनीसकलसंगारीनोहि ॥ १ ॥ चौपई ॥ सुसकापवालकनवचउञा
रे ॥ लवकुसनानइनामहमारे ॥ हमसालोनवधानसमुझन ॥ नमक
रेषडुग्रवहिनूररन ॥ हयवोध्योहमरेलवधाना ॥ भयोनुहसेनाभ
ईधाला ॥ हयमुकलायवलोउनजेवही ॥ नाकोहननकियोहमनव
ही ॥ उनलोकियोश्रापनोपायो ॥ कलिकोबांधाग्रथकुशपो ॥ नासभयो
रनसभसेनाजत ॥ श्रैसेवचनकहेकुससिपसुन ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ सुनके
लक्षमनकोपमनवचनकहेसुगहइ ॥ रेबालकनिहचेलमहिका
लवबोसिरआइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ लमनोसोवनसिंहजगायो ॥ तांतेकालनि
करलमआयो ॥ जैसेजंबूआलजगावत ॥ ग्रपनेनासनिमिनउपजाव
त ॥ जीवनकीकाहइमनआसा ॥ ग्रवहीकरौंप्रानलमनासा ॥ बोलेको
पनकुसवलवाना ॥ हककवहकनररनग्रनाना ॥ हमकोंसिंहरूपनि
पजानहु ॥ स्यालरूपनिजकोंपहचानहु ॥ सिंहएककेसभअगजानन
जंबुककाघरचहुरप्रमानन ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ तैसेंलमवहुतेनरेगजेबुक
माईहोइ ॥ एकसिंहकीगरजसोंरनमहिटिकैनकोइ ॥ ८ ॥ चौपई ॥ लव
लगजंबुकजोधकहावत ॥ जबलगसिंहहष्टनहिआवत ॥ प्रपपेरे
षधानकीसेना ॥ मर्छिनमनकनिहारइनैना ॥ सोगनग्रवलमकों
पहुचावो ॥ मर्छनकररनभमिगिरावो ॥ जंबुकमिलनसाहेलजगा

रा॰ सु॰ पो॥ निहुरयें काल निकर तम आपो॥ कुस के बचन अवन सुनि लछम
भा॰ न॥ कछो च मन प्रतिमा अति क्रोध न मन॥ करो बालकन सों संग्रामा॥ बेग
२२५ पठ दुह्रन कों जम धामा॥ २॥ दो॰॥ लव कों कुस आज्ञा करी तुह्र करहु
हन साथ॥ सब सेना मर्दन करहु भले लगा बहु हाथ॥ १॥ चौ॰॥ रविर
थ चढ दल बल मन सुख पायो॥ सकल चमू मिलि बान चलायो॥ अंधकार
रहहि सहि गयो॥ लव कों सर न प्रकार नलयो॥ बार बार लव कहा
निकारे॥ लछमन की सेना अति मारे॥ एक बान रथ गेर पठायो॥ हि
लि येग न के सन पुखायो॥ त्रिति पवान सम जोध संहारे॥ चौथे श्र
स पटान बिहारे॥ ह्लन कीनो चतुरंग नि सेना॥ सो गन कहीं परत न दि
खैना॥ १॥ दो॰॥ मौं कुवार कानन करै रण जिमि मग गन नसाइ॥ ह सो
बालक के सरन सों चमू परी भुरझाइ॥ १॥ चौ॰॥ लव बल लछमन सब से
न निहारी॥ बखान कोउ सकल लव मारी॥ ह्रष परे रह हसि सब काल
व॥ बानन सों कारन सेना सब॥ मौं लछमन गगन अपार निहारे॥ लव
बाहु गगन कुंभ बिहारे॥ मौं पुन रहे वे अरि रन रंगा॥ लव बाहे कारे तिन
संगा॥ सो पुन रहे वे भर पहाना॥ बाम कर हि तिन हि लव बाना॥ अहो
महों लव रण छत्र भासे॥ बा दास सकल चमू कों नासे॥ २॥ दो॰॥ या पर
ग्राम भयो रन लव सेना करी संहार॥ हय गज नर पथ पा रके रहै न कर बन
लागे बार॥ १॥ चौ॰॥ महा क्रोध उपजो जिय लछमन॥ सेना गिर
थ भयो अचरजे मन॥ हरे विचार नर कबालक लव॥ छिन महि क

रहि सिंघासन बस्तुलबहमरीसे नाम महा बिसाला ॥ भयकारी जो धेलि
कराला ॥ नेस भधरन गिरे धुरत्वाई ॥ बालक हनन कालकी माई ॥ रु
धिर प्रवाह चली सलिला रन ॥ बहे जात रथ गज पाव कथन ॥ जैसे ज
लमहि कमल बिराजत ॥ त्यों सिर लूरत धिर महि राजत ॥ ३ ॥ दो ॥ सा ॥
लछमन अति क्रोधन भयो किपो धनुष टंकार ॥ रथ हसरथ के सचिव
सुत दस आयवलपार ॥ ४ ॥ चौ० ॥ चंद्रभान मंत्री को नामा ॥ ताके सु
त दस हैं अभिरामा ॥ जिस के नाम प्रथक सब लीजे ॥ राम कथा अंम्रे
त रस पीजे ॥ चंद्रसेन अरु चंद्रकेतु ध्वनि ॥ चंद्रकीर्ति अरु चंद्रचारस
त ॥ बज्र रथ वेग सु ज्ञान महाबर ॥ अग्रसत्व के ज्ञान मानधर ॥ सुर
थनाम अरु बरे रनायंभा ॥ लरत जहां रण होत अचंभा ॥ समय जके दे
मिल वचल लछमन प्रत ॥ आत हैं हम का रहि बालहृत ॥ ५ ॥ दो ॥ सा ॥
आता ही जैसे कपाकर हम करि हैं संग्राम ॥ कोऊ बालक हनन कर
वेगपव हि जमधाम ॥ ६ ॥ चौ० ॥ इप मेदेष दुर्जन हमारा ॥ कर
हि मनीरपसिद्धलखारा ॥ जो हम हारहि गे हनसों रन ॥ तौ लछमन
रुकवो नाहीं छिन ॥ बिधमान हम बल मरे हाला ॥ करहि बालकन को
रननासा ॥ काहे को अमरे हम आयकों ॥ हरकर हमनके संतापकों
नवटीनी आतातिन लछमन ॥ जुद्ध करन कों चले सुरिल मन ॥ जु
बनिबान द्रुबलि छूलरबर ॥ क्रोधन द्वैरन लिये धनुषकर ॥ ७ ॥
हो ॥ दो ॥ पठे दस सद्रुहि सबान सरल बन लागे जार ॥ सियसत्व

म॰ सू॰ कौंवेधनतकिधोलेगेगगनउडाइ॥४५॥चौ०॥भ्रमतभ्रमतलवधर
भा॰ नगिखोजत॥कुसकेआगेआइधलोनत॥लवतनअ्रमककुलागोना
२२५ ही॥धंतिलकिपेवानक्षिनमोही॥पुनकोपेलवसरमहाबर॥काढदि
येधुविपेनलीनसर॥वंदभानसुतगगनउडायो॥इसस्रोरंदइदिसेध
मायो॥नभभ्रमाइधरनीपरडारे॥ततविहवलमूर्छितकरडारे॥ल
छमननिरघक्रोधजियकीनो॥तीछनधारचक्रकरलीनो॥४६॥दो०॥रा
नछमनरिससोंचक्रलेलवरिसहियोचलाय॥ढालमारकैवक्रफि
रसियसुतवैवोमार॥४७॥चौ०॥वालकवैवोमारचक्रपर॥चढोअ्र
कासधम्योदइदिसवर॥स्वर्गद्वारदेवस्थलदेवे॥अवसठलीरघहन
अवरेखे॥वइररवक्रकोखंडनकीनो॥पुनरननआइदर्सकुसदीनो॥इस
वोलेलवसुनहोभ्राता॥इमततनभयोधरमकुसलाता॥इमवड्डनास
करीपीसेना॥तभतीरघअवलोकीनेना॥देखोजाइस्वर्गकोद्वारा॥ता
नरीपनवधंरनिहारा॥४८॥दो०॥नृदकीनाघाहमवड्डलसेनाट
ीअपार॥पृथिवीकेतीरघपरसआयोहोधडतार॥४९॥चौ०॥कोल्लो
कुसमनहोलवभ्राता॥धनतमहियमतमरीमाता॥तमत्तुमवले
करोविश्रामा॥मैंकरिहोंरनसोंसंग्रामा॥तमकरिगुरकरटकसभ
मारा॥अवरेखद्संग्रामहमारा॥रविरघचढमतनप्रवरनगयो॥लछ
मननिरघक्रोधधनलयो॥सानवानकुसकोंकसमारे॥रोकलियो
कुससरभधकारे॥वाननकोपिंजररचकीनो॥ताकेवीचवेरकुस

लीनो ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ तिन पुछ कसाव सहेत कुस छाइ रिपे है बान ॥ रक मर
हूं सों पिंजरा मोर किपो मैं राज ॥ २३ ॥ चौ॰ ॥ छिनि पवान लछमन दियथा
यो ॥ हय सार पर पधरन गिरायो ॥ रथ विहीन लछमन कों कीनो ॥ को
पो लछमन धनुक रलीनो ॥ बैंच बान कुस ग्रोर प्रहारे ॥ भएव कंचन कोल
करारे ॥ पुन कुस वान एक कस मारा ॥ रथ धुज नत हि नउ लरप रहारा ॥ भ
यो ग्रचेत पसो धुइ लछमन ॥ व इव संभारउ को क्रोधत मन ॥ पुन बाल
क पुनि वचन उचारे ॥ जिहवल सों सवन हम मारे ॥ २४ ॥ दो॰ ॥ निहचुव
सर पुरु वल दियो श्री रघुनाथ प्रतापर ॥ निहचल कों पगहो रहुव करों
नलुमहि संगार ॥ २५ ॥ चौ॰ ॥ यह हव वचक हि कर धनुष उठायो ॥ एक
बान कुस ग्रोर चलायो ॥ एक विसके तें भएय पारा ॥ हेर लियो कुस कों
इक वारा ॥ बानन किय सर्भ धकार सीय सत ॥ निकस गए सरन नउसा
रउत ॥ पद्मी गिसो संभारउ कोपुन ॥ क्रोधत कहत नवचन लछमन
ह्वन ॥ तो निहचल सतन है सिय माला ॥ तो तम मग्र वहि करों रन वाला
लिय सिमरन कर बान चलायो ॥ लछमन कों हनप रन गिरायो ॥ २६
दो॰ ॥ लछमन मूर्छित भयो रन कुस ग्रायो चल ताइ ॥ बैसा सरम
हावली जो गमरक्षा नाहि ॥ २७ ॥ चौ॰ ॥ मंरमंर कुस पवन कुलायो
सीतल नन लपुष महि छिरकायो ॥ बीसनन करन वाल हिग ग्राठा ॥ नि
रघ सरकों वितन हित वाढा ॥ पसो रह्यो पर एक महूरत ॥ भयो सचे
नउ ग्रोर सम परत ॥ पुछ पहार किपो कुस केतन ॥ लागत फूलन सम

रा.मु.
पा.
२२८

ताकेमन ॥ न्हुहकरनबाहेरनमांही ॥ जियतें क्रोधनिवारननाही ॥ व
डुरघुनन्दनषकरलियोउआई ॥ भूरनसपनलीसमोधाई ॥ २४ ॥ सो० ॥ रा ॥ २
श्री आरथपधतिसुषमेपध्यार ॥ कहिरहकरमरनमपोध्यापमन
हपान ॥ २५ ॥ जैमनउाव ॥ चौपई ॥ जैमुनकहैमनडभूपलवर ॥ कथा
रमायनसारअवनपर ॥ उनसनसुषहोऊसरेरन ॥ लियोपञ्चषकर
कुसअरुलछमन ॥ नवलछमनमनतानविचारा ॥ सीयनामसुषवा
लनिकारा ॥ ताहीसरहमकोंसुरआयो ॥ मनयाकुलकरधरनगिरा
यो ॥ हमसियकोंवनछाड़गयोजव ॥ गर्भसहितनषीजनकहतासव
प्रगटहोहिवालयहसियतें ॥ निहचेयहवहरानीजियतें ॥ ३ ॥ सो० ॥ रा ॥
उनविचारलछमनकियोयहवालकहैहोइ ॥ न्हुगलननमहीगर्भ
सियउनसंभ्रममनहोइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ अपवाहोइरहलियेसियके ॥ यह
सुरवालकरहटजियके ॥ रावनराकसकोंहममारा ॥ सियकहत्यांतें
रमहिप्रकारा ॥ हमपरहोलीसियाकृपाला ॥ रानवकोरपठेजमसा
ला ॥ रानवकोंश्रीपनिरघुनंदन ॥ वांधोसेनकियतिउकंदन ॥ म
पाननकलनघाकीमोपर ॥ तांतेंहमसभनामकियोसुर ॥ २ ॥ सो० ॥ रा ॥
यौंभाषनहैंश्रुनिववनउहषन्हुहकोंतार ॥ यहजनवनीसम्मावनी
सतुनीतउरआर ॥ ४ ॥ चौपई ॥ जोरहीविभचारताहोई ॥ निहपनि
हनजीनेसोई ॥ सियसारषिरानीवनवासा ॥ दियोरामकीनाउपहा
सा ॥ तांतेंहमरीनीकनहींरता ॥ निरहषनपवईरघुवरवन ॥ यहवा

लकग्रनुचरसिपमाला ॥ एकवहिक्रमहैंसोऊथाला ॥ सोउररुलिपेन्न
नकसुताके ॥ मोलेमहापराक्रमपाके ॥ सिघानापलेवानचलापो ॥ लि
हससरसोंप्रभुकोंसुरक्षापो ॥ ५ ॥ दो० ॥ पहनेहोंहिकुनसीयकेगर्भन
उपजहिहोइ ॥ सेवनकरीप्रसन्नसियरुनकेवलहैंसोइ ॥ ९ ॥ चौ० ॥ ६ ॥ उन
सरभ्रगनचमूमहिगपो ॥ सेनासकलप्रजारलभपो ॥ मोनरउवरेपे
लवसरतें ॥ तेसभमर्छितभपेसंगरतें ॥ सरनहुलरपभ्रमुपराना ॥ मो
पेसकलभपेरनछाना ॥ मरगईधजापताकश्रेवारी ॥ सरनसरपाश्र
त्रिभपकारी ॥ मेघवानलछमनछाग्रोनच ॥ पवनवानकुमपवरीनो
ग्रव ॥ मेवविसककोछंडतकीनो ॥ अगनवानसेमाइपदीनो ॥ ७ ॥ दो० ॥
भसप करीसेनासकलसरूपरेसुरक्षाइ ॥ टगधभपकोफनसगपधु
रीश्रमोभ्राग्राइ ॥ ८ ॥ चौ० ॥ ६ ॥ दोठीपछुजरेसभकेसा ॥ साममपसु
चवलनरेसा ॥ अगनउवीनमपूमवध्योश्रन ॥ लछमनतिरषभपो
आकुलमन ॥ करवरपनुषह्तोनरगपो ॥ सेनानिरषसोकमनभपो ॥
लछमनकहैविवेकहियेंधर ॥ दिषिपनअग्ननकालकोअवसर ॥ धनुष
हाथलेंजलोग्रकाना ॥ हैअसीरक्षामहाराजा ॥ तीनवानधनकाटेसि
घसुन ॥ कियोधनुषटंकारकोधसुन ॥ १ ॥ दो० ॥ बालमीककोनेमकु
सठहराघोवानमांहि ॥ कसमासोलछमनदिदेकियोमरक्षानाहि ॥ १० ॥
चौ० ॥ ६ ॥ लछमनअनिसुरछिनकीघोरन ॥ लवकुससबनिग्रानंदभपो
मन ॥ जेउधुरघरनकांघरभए ॥ भागेअवधपुरीमहिगए ॥ रघुवरआ

रा.ग्र. गोकरीउकारा॥तनदुअवनपभुषचनहमारा॥मूर्छितवालककिय
भा. लछमनकों॥सेनाहननकरीतभरनमों॥रघुवरभरथवसिष्टसभास
२२० भ॥तनयहवचनभएविसमैनव॥गरगदहैअसवनहगसरत॥सभ
पुरहाहाकारउकारत॥ ११॥ दो॥ सु॥ प्रछा रामहमांतपुनउनहूंसोंप्रग\
टाइ॥कैसेंलछमनसेनसों लियवालकपरछाइ॥ ११॥ चौ॥ ई॥ हतनस
कलहमांतहनायो॥जैसेंरनलछमनप्रपरछायो॥हतकहैसनश्रीरघु
पतवर॥यहवालकराछसतुमरेअर॥तुमरावनकुलसकलविदा
रा॥इनतनमहाक्रोधजियधारा॥वैरलियोइसकेंपधानको॥रघुवरह
देविचारवानकों॥यहवालकनहिमानसकोनन॥जिनपरछाइलछ
मनसहूपन॥महासूरजोधेवलवाना॥जेसभपरेमागरनप्राना॥ १२॥ दो
॥ रा॥ रामवंदवोलेनवहिजनमआइकिहकाम॥जिहनमिलप्रानासोअ
सकृतपसंग्राम॥ १२॥ चौ॥ ई॥ हमरीपुजागिरपरीसोऊ॥प्रानवरहित
रानधूगसोऊ॥हाहाहालछमनपुहिप्राना॥हासहूवनप्रहिरनवाना
तुमविनजीवनहेममनांहो॥कहांपारधानाजगमांही॥तुमममहित
प्रानननजगए॥हमरावनसजगनमेंभए॥जिहलछमनरावनहतकि
यो॥सोइप्रानरनमैपरछयो॥महासूरसंग्रामप्रवीनो॥रनभूमीमोंस\
यनजुकीनो॥सोकैसेंवालकपरछावत॥पुनपुनसुनअनुचरनिजियआ
वत॥महावलीहमरेरोइभ्राता॥कमनसकैवालकरनघाता॥रघुवर\
कहैभरथसुनलीजे॥वानरीछकचमूसंगकीजे॥जनकंकनाहमरे\

हाथा॥ कै सेंन्य हु करों उन माथा॥ १५ दो॰ ॥ हमरी आज्ञा वेग तुम वे
ग वबहु दल साज॥ सकल समग्री लंक की ले चल हो संगमान॥ १६ चौ
ई॥ वे रनाइ आनन कालीजै॥ वानर रिछ चमू संग कीजै॥ जिन तुम रे
धाता उरकार॥ सरवीर रहत धरन गिराए॥ जीन ह्यार वेग वह काल
कं॥ सेनासान वलदु वन कालक॥ आज्ञा मान निसान चलायो॥ चले भ
रथ नभ धर हल ह्यायो॥ चले भरथ संग सुनि वलवाना॥ जामवान अंग
द हनुमाना॥ पुन सुग्रीव नील नल मालक॥ चले मान आज्ञा जग पाल
क॥ १७ दो॰ ॥ भरथ चले संग सेन ले वंदर रिछ अपार॥ सूरवीर जोधे व
सी कर कम हां भय कार॥ १८॥ चौ॰ ई॥ ऐसें सर रुकि रन विलासा॥ परन जरो
घन वीच अपारा॥ उडन वीच निह किन कानेसें॥ गनी आनन दिसेनाने
सें॥ रघुवर कहै भरथ कुसलाता॥ कीजै नहीं वाल रणाताला॥ जीवनप
कर इहां गहि ल्यावहु॥ यह कारज को विलम चुकावहु॥ जिन कीने
मूर्छित तुम भ्राता॥ तिन सों प्रकुलेहु सभ वाता॥ वन महि वसन वाल
वहकाके॥ महांक्रम मत निपन याके॥ १९ दो॰ ॥ भरथ चले क्रोध नहि
यं विन आज्ञा रघुनाथ॥ रंनभूम प्रापत भयो अगगनत सेना साथ॥ २० चौ
ई॥ मर्छित परे जोधा रन देखे॥ लछमन वहुर समुझ वन पेखे॥ रन महि
गावे लव कुस राजन॥ महां सूर श्राई त्र विराजन॥ मेंद रज च कलस के
वजे सें॥ सोभा पावल सिय हतनै सें॥ निरख भरथ सुभ वचन कहे तव
रेवन वर कुह नी सेना सव॥ लं अनुगत कीवो यह कामा॥ मर्छित कि

लं॰ कां॰ येजोधसंग्रामा ॥ अवलौकहेरनअताना ॥ लुमकोंछिपनहिलुमरे
भा॰ ष्माना ॥ ११ ॥ दो॰ ॥ सेनाकोंआसाकरीमनमेंभरथरिसाइ ॥ बरषन
२२८ लागेबानलवमेघवुंदकेभाइ ॥ १२ ॥ चौ॰ ॥ कुसभ्राताकीनीलअया
ना ॥ करइजुद्धकीजेअरिहाना ॥ कोप्योलवकरगहसंभारी ॥ पलो
वीचसेनावहुमारी ॥ महामत्तगजकुंभविदारे ॥ हयपरथपाइकवहु
मसंहारे ॥ अगनधरनहारेजुकहावत ॥ लवतहांअगनवानवरषा
वत ॥ सेनभरथकीसभजरनामाई ॥ छिनमहिवालकसकलजराई
हुरनकियेहनेसभजोधा ॥ प्रलैरूपधरसिपसुतक्रोधा ॥ १३ ॥ दो॰ ॥ से
नाहनीनिहारकैभरथक्रोधतिधपार ॥ सामवाणगहिनृपलेलव
कोंकियप्रहार ॥ १४ ॥ चौ॰ ॥ कुहनलावसानसरभए ॥ हेरसिपोकु
ससनमुषगए ॥ वानपिंजरामैंकुसकीनो ॥ क्रोधवहेकुसधनकर
लीनो ॥ अगनवानपठदियोविसाला ॥ सरपिंजरजार्योतनकाला ॥
पुनवहबानचमनहिगयो ॥ सेनासकलप्रजारनभयो ॥ लगेजरन
मरनकेभाषा ॥ काहुकीभुजघंगुरीहाषा ॥ काहुकोपगदेहजरनहे
रनमहिहाहाकारकरनहैं ॥ १५ ॥ दो॰ ॥ हयगजरथपाइककहलु
सेनाकरीप्रजार ॥ सत्रुघ्नवारीअरुधुजाजारकरीसमछार ॥ १६ ॥ चौ
॰ ॥ अगमवानमारीकुससेना ॥ जरनभरथअवलोकोनेना ॥ भा
गेकेउअवधपुरगए ॥ कहनवलोनरामप्रतभए ॥ वेदेपेरघुवर
प्रतिसाला ॥ गरुवसिष्टदिगसभाविसाला ॥ रनविमुषहेमुषभाष

लनाथो॥ सकलकटककोवालजराधो॥ जोयेकक्रुकभरथकेसंगा
मरूकरनथेविह्वलअंगा॥ अवलोगिरेहोंहिगेधरनी॥ बालपसक
मजाननवरनी॥ २५॥ सो॰ ना॥ पुत्रप्रनापनहेनरघुबररच्यो विचारय
ह॥ लनमसहजननकोंहेतगरवमिटावनथानको॥ २६॥ दो॰ हा॥ इन्द्रजी
तयघवधलैलक्ष्मणप्रेमपजाया॥ कविरकनपरनभयोग्रवनीसभाउप्रमा
णा॥ २७॥ चौ॰ ई॥ जैसुनकहैलनऊभूपनवर॥ कथारमायनअवणा
हूदेधर॥ रामलनकोंगसरूपजावन॥ थालनकोंजियगरवमिटा
वन॥ रघुवरकीरक्षामनऐसें॥ कारनरूपकरनविधनैसें॥ सुनसु
घवचनकहेरघुनाथहि॥ सीसधुननमीजननिजहाथहि॥ लक्ष्मन
सूरसमुवनथाला॥ तेउभकेंरनजगविख्याता॥ सरवीरजोपेहन
कीने॥ हयगजरथगिरारथईहीने॥ २८॥ दो॰ हा॥ दोऊवालकसुनिवली
करीवमूरनगान॥ महिलकीनोसमुवनपुनलक्ष्मनसेधान॥ २॥ चौ॰
ई॥ सफलनिमिलजनहमकीनो॥ अपजसभयोदुसहभहीनो॥ सम
संतापजनकमनयाको॥ पीनिरहोघहिषोवननाको॥ कौंनहोरघु
मकोनासा॥ सियसारषिरानीवनवासा॥ पुरुषहकामभलानहिकि
यो॥ विरहधनसियकोंवनदियो॥ विनअवगुनपुहिपवननिकारी॥
कैसेंकैहैमीतहमारी॥ इविनभईवनविरहवियोगा॥ कैहैकौंनमहा
हमसोगा॥ ३॥ दो॰ हा॥ वामअंगप्रतिमाकरीसीयहोनसविधान॥ तासें
मंवरगायोहमकौंनहोरमघहान॥ ४॥ चौ॰ ई॥ सोगनपीहमकोंपहवा

अ० प्र० ता॥सनसीतासभजनगविषाता॥तातेंहमहिभलानहिकियो॥गर्भ
भा० सहितसियकोवनदियो॥जनकसुताकोंदियोनिकास॥कैसेंह्वेहै
२२९ कुसलहमारा॥होनहारह्वैहैपुनतैसें॥कोरउपाइमिटतनहिकैसें॥
सत्रुभनाममंत्रीरघुवरको॥लियोवुलाइतिहींअवसरको॥ताकोव
चनकहेरघुनाथा॥लेजावहुसेनासभसाथा॥५॥दो०॥रघुवरमं
त्रीसोंकह्योयोंकहियोहनुमान॥अंगदअरुनलनीलकोंपुनसुग्रीव
वलवान॥६॥चौ०॥तुमहिपराक्रमकीनोभारी॥निसाचरनइनतें
कपुनारी॥तिनवलकोतुमनाहिलजावहु॥करहुजुद्धकीरनजुग
पावहु॥वकतहुतेतुमसभअभिमाना॥अवरवलीनहिहमहिसमा
ना॥महापराक्रमकरधनवलि॥ताकेआगेतुमकछुवलचलि
तिनतुममारोरनवलवाना॥सोहैवीरसुतनहनूमाना॥तहांहमतुम
वलककपहाना॥तिनतुमजीतेवालअपाना॥७॥सो०॥ऐसेंतु
मकहुजाइहमैजसककरकंकना॥आवनहोनअवनाहितुधकरत
गकाहेलजत॥८॥चौ०॥रनसुरजाइकवपीठमरेई॥पइवालक
रनातिनकिनलेई॥दोऊवालकहीदिखलनहैं॥रनतेंतमअवराहि
परमहै॥तांतेंकाहिमजीततवान॥गयोगरवतुमरासभआन॥
योंकहियोतुमतिनकोंजाई॥सोंजगमैंतुमकरहितनाई॥पकम
सरनकेतगकाही॥करवलजीतहुवालकताही॥कहांपराक्रमगमो
तुत्यारा॥इहवालकनकटकसभमारा॥पाछेतेवताउमकिहकाजा

गुद्दकरहुसुकनावद्रुवाना ॥९॥ दोहा ॥ लैसंहैसनमेंश्रीचलोसभसं
गसेनाजोर ॥ रनभूमीश्रापनभयो जहांजुद्धकीकेर ॥१०॥ चौपई ॥ मत्त
ननिमित्तभरथचलगयो ॥ गंगाकेतटवासभयो ॥ वसनउतारकि
योइसनाना ॥ संध्यासुमिरनकियोविधाना ॥ तापाछेंजलपत्रुषपकरा
पुम्नप्रतापवानमहिश्रारा ॥ जगमहिजुक्रतनेककीने ॥ तेसनधारवि
सकममहिदीने ॥ ननछिनउनिरतभूमहिश्रीयो ॥ क्रोधनदेकरधनुश्र
उठायो ॥ कुससकोंवानप्रहारकियोतन ॥ पाछेंजाइपसोटसजोमन ॥
११ ॥ दोहा ॥ रथसमेतवालकउजोहसजोजनपरमान ॥ वलसंभारके
सीपलतनपुनआयोसविधान ॥१२॥ चौपई ॥ क्रोधवंतदेकुससनपुनश्रायो
भरथश्रोरसरपेनचलायो ॥ भयकारीश्रागमविकराला ॥ कोउरियो
सिपसुततनतनकाला ॥ श्रोजनवीसभरथरथपाछे ॥ पस्योधमतलागोस
रश्राछे ॥ पुनवसीटततछिनसापोरन ॥ कुसवलनिरखसूरविसमेम
न ॥ भरथसिसुद्धउतिवचनउचारे ॥ कवनगोत्रहैवालतुसारे ॥ कवनगोत्र
कोतुमपितमाता ॥ कवनगुरूविद्याकोदाता ॥१३॥ सोरठा ॥ सुनवालकउ
ज्ञरटियोलवकुससहमकोंजान ॥ जनकसुताकेसुतनहमहिकुलरघुवं
सप्रमान ॥१४॥ चौपई ॥ वालमीकरिषगुरूहमारा ॥ तिनतेंविद्यापटी
श्रपारा ॥ जहाहमनेनसकलकहिदीनो ॥ मनमेंककुसंभ्रमनहिकीनो
सुनकेभरथविचारतमनमें ॥ सियकेगर्भन्नेगलननहिमनमें ॥ तिथिव
नवहवालकवासीवन ॥ पवेससविद्यागृहतेंगन ॥ महासूरसंग्रामवि

जं॰ ष॰ धाना ॥ लांनें कुसरत्तु बंस बषाना ॥ कहे हैं निजनवंस बलाबन ॥ जुद्द वि
भा॰ जै हित जग चकहा वन ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ भरथ बदरमन क्रोध हैं बचन कहै य
२३॰ गदाइ ॥ रेबनचरहू सुहीर लमन हवे बंस बलाइ ॥ ५५ ॥ चौ॰ ॥ जयपति सर
होइ बन कोई ॥ नीच जवके सम न हि होई ॥ होय कहां चरहहि लिये सिपके
सम कहा बन होरह निपके ॥ होइन क्षत्रि धर्म बनचरलें ॥ जयपहें स्र
निलरसम रलें ॥ लमबनचर इम क्षत्रि धरमन ॥ स्रव हीलम हिवि
नासकरों रन ॥ हूं सुहीर सन सुष सुकस्रापो ॥ क्षत्रि धर्म को मर्म न पा
पो ॥ आइ बन्यौ सिरकाल तुम्हारे ॥ विहहचें माना बचन हमारे ॥ ७ ॥ दो॰ ॥ म
क्रोधत हैं कुस बचन कहे भरथ संभार जु आप ॥ देषलेहु बन चरन कार
नमहि जुद्द प्रताप ॥ ५५ ॥ चौ॰ ॥ तीक्ष्न सर कुस पंच निकारे ॥ क्रोधत
हि यें भरथ को मारे ॥ रन महि मुरछ पाइ है गयो ॥ रहहि ससब दंभ पान
कभयो ॥ रघत्र रंग सारथी विडारे ॥ कवच धजा छिन महि कटि डारे ॥
बहुर भरथ को सर न उ रायो ॥ लेग ए गगन बीच बह रायो ॥ बहु भ्रमा र
पुन धरनि गिरायो ॥ सम कन किंयो भरथ पुर काये ॥ एक महूरत लप सो
रयो पर ॥ बहुर उठे लीनो कुवं रकर ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ भरथहि वानर थ
निकयो उबकर हो संग्राम ॥ रहस्र बसर नरुहनं ही आवहि गे किह का
म ॥ ५० ॥ चौ॰ ॥ हनुमान सुग्रीव उ अंगद ॥ अंगद जामवान सानक सब ॥
उठे नील नल सम बलवाना ॥ गिरद्रुम कर गहि हैं सविधाना ॥ लिपउ
पारसै ललकहाया ॥ जुद्दकरन लवकुस के साथा ॥ गहि ल्यावन तु मव

दे पहारा ॥ सीताहरननन करन प्रहारा ॥ हनन निसंक क्रोध जिय जान-
न ॥ मन मंहि नेक न संसय मानन ॥ मल मुद होन भय कारा ॥ किलक
न वानर सबद अपारा ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ त्याग न सैल ग्रकास समकुसल वकर
न प्रहार ॥ लाल लगहि क्रोध कै सभ मार न रक वार ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ पुह पम
मान लगहि कुसल वनन ॥ मुरि न मान बालक का देरन ॥ पुह पहि मले
मार त मैसें ॥ लगहि बालकन कों गिरनै सें ॥ सीय हरन नन न ग्रमन हिला
मै ॥ सिंहरी नगर जन निसपागे ॥ पुन क्रुस क्रोध न पल घलियो कर ॥ का
ग्रो अति विकराल पैन सर ॥ उड गय वांह रस कल गगन नव ॥ लागे भ्र
मन ग्रोम मध्य नर सब ॥ भ्रमन भ्रमतन भ सभ वल हारे ॥ नव सरथ्रान धर न
फटकारे ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ हो रवि ग्रासन धरगिरे वांह रस कल हिरार ॥ के उभ
य वस काल के केउ परे मुरछार ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ निरषत भर्ष पभ पो अचरजम
न ॥ हनमान से भए मर्कर न ॥ महाबली प्रगट नहि पवन को ॥ जिह सम सम-
रन ही त्रिभुवन को ॥ जिह द्रोणगिर छेद उठायो ॥ निमिष अग्रोषधी को लह
त्यायो ॥ सो इह अब मंत सिसहि मुरछायो ॥ वान न मोंह न परन गिरायो ॥
यह वानर नृष भाषत ऐसो ॥ सर न मीन लोक इम जैसो ॥ पलैक रैवि-
न ग्रव निग्रकासा ॥ मान दीपन व वंड विनासा ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ नैवानरसभ
हार बल धरन परे मुरझार ॥ दह कन गन भगवंत की लषी कदन हिजा-
र ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ चिंता करन भरथ ग्रपने मन ॥ सब वानर बल हारपरे र-
न ॥ सत्र घन नाम मंत्री महां ग्रायो ॥ भाष भरथ को वचन सुनायो ॥ मीतन-

सं.सु. सकहिवालसंग्रामा॥सोंतेंवेगकरहुरहकामा॥सुर्गलोकअपसरासं
भा. गावहु॥कामवानसोंसिसुरकावहु॥वलकरजीतसकोनहिवालक
२११ पहकारजकीनेतनकालक॥इंद्रअपसराअतिवलवाना॥मोहेवालम
टनकेवाना॥१५॥दो॰॥अवरजननसोंश्ररूपरहजीनसकैनहिकोइ॥
इंद्रमोहनीअतिप्रवलमोहैवालकसोइ॥१५॥चौ॰॥भरथकोपकरवा
नचलायो॥देसदेसअरलोकपठायो॥पठुओजाइवानननकाला॥ला
गीजरनइंद्रकीसाला॥सकलदेवमनअचरजभए॥ननछिनसकल
इंद्रपहिंगए॥इविनभएवहुकरनउकारा॥भगनवानहअरउरसभचा
रा॥इंद्रकहैयहभरथपकोसर॥मांगपकीहैहमतेंअपसर॥पठवनि
हींअपसरांमहांवर॥तुमतिहचिंनवसोअपनेवर॥१६॥दो॰॥जोइस
वरथअभूानरहपचीसमोहरिनंस॥रंगभूमआपनभईकामवानलै\
हंस॥१६॥चौ॰॥भरथकहैसुनहोतिपअवनन॥मोहिलेहुवालकगा
हेरन॥रथअरूढअपसरनवभई॥नवसतसाजसिंगारहिगई॥कुव
कजोरअंजनहगदीनो॥वदनजोंनससिसरहनवीनो॥संकीरनसा\
नेभवननन॥सनमुखवलीभईहरवनमन॥भौंहकमानवानसनप
लकै॥वरखीकइरहीसुखअलकै॥लचककुसवेरलियेरहहरिसों॥हा
वभावरिपरावनमिससों॥१७॥दो॰॥दगकटाछसरमदनकेमार
तलवककुसओर॥सजसिंगारसभमोहनीगाढीरनरहलओर॥१७॥चौ॰॥
नवलवककुसमनमांहिविचारत॥कामवानपरहमहांकठनअत॥का

रसंग्रामनजीनसकहि इन ॥ रै सिंगार दुंद पठयो जिन ॥ लवकुस पर
विचार कीनोनव ॥ ब्रह्मलान सों जीन हि गे सव ॥ ब्रह्मलान का लेन मंगा
यो ॥ विप सों वान ग्रग्रव हतायो ॥ देवांगना ग्रोर कसिमारा ॥ उडी ग्रका
सस भन वलहारा ॥ भ्रमत फिरी नभ वीच सकल तिय ॥ वान सभन के
स्रंग भंग किय ॥ ११ ॥ दो० ॥ स्रंग भंग सगरी करी वची न एकै तीय ॥ ब्रह्म
लान सर वालकन कसमा सोरि सहीय ॥ १७ ॥ चौ० ॥ केउ तिय भई ही
न चष स्रंगा ॥ किनहूं की नासिक नहि संगा ॥ किनहूं के दोऊ नहि काना ॥
किनहूं की कर भुज इसथाना ॥ एक भई तिय पग विन पंगा ॥ किनहूं के
नेत्र क्षल भंगा ॥ ग्रान ग्रंन वल हीन भई सव ॥ परी ग्राइ वन मैं ग्राकुल
सव ॥ देवांगना महा दुष पायो ॥ भाग गई सभ रूप विलायो ॥ कहूं भूषन
कहूं वसन गिरे पर ॥ होर गई रसहि स वालकरर ॥ १५ ॥ दो० ॥ कोपभ
रय सरथ त्रुषतन षड्ग लियो कर धार ॥ लवकुस के सनमुष भयो धाता
वैर विचार ॥ १९ ॥ चौ० ॥ कुस लव दोउ षड्ग लीयो कर ॥ सनमुष भरप
भये सरेवर ॥ सिंह परे गजगन महि जैसें ॥ जुद्ध करन वालकरन तैसें ॥ ये
गाव द्धत भरथ की मारी ॥ पैन षड्ग सों सकल संघारी ॥ सियसुतन को त्र
लाप व्रत भारी ॥ समर स्त्रुर सेना सभ मारी ॥ भ्रतक भये कोऊ तज भागे र
न ॥ महा कष्ट तन रहियो वालकन ॥ सेना निरष भरथ क्रोध न हिय ॥ धार
प्रहार षड्ग सों तन किय ॥ १५ ॥ दो० ॥ नन कवा मकुस देह को कयो ष
ड्ग की धार ॥ दुषता गो नहि वालक कु कोप्यो वैर विचार ॥ १६ ॥ चौ० ॥

ज॰ अ॰
भा॰
२२२

पुनकुसकोपषडगकरलीनो॥कह्योभरथकोवचनप्रवीनो॥भ्राताक
हांजाइदुखुहिपायो॥सियचिलारपुनषडगचलायो॥लागोखडगभरथ
पुरछायो॥विह्वलह्वैधरनीछगिरायो॥प्रानतकिपेभरथकेनासा॥
कुसलवमानसियाकेत्रासा॥लेकरसस्त्रपरेरोऊधाला॥कीनोसकल
सेनकोवाला॥अगनसकलवनराहतजैसें॥सैनानासकरीकुसतैसें
॥१९॥दोहरा॥मारलोउनमंडीसबचमपसोवेहरनमाह॥कालसरूपीदे
खियतमानोसंसयनाहि॥२०॥चौपई॥वानरसकलसस्त्रछिनकीनो॥ति
मघमांहिमूर्छितकरलीनो॥हनूमानवाहिनपुरछायो॥ग्रीवमेवरीग्र
रचलायो॥ताकोगहिवांधोदृढतरवर॥अवरसकलदैपरेमूर्छापर॥
प्रश्नकीनजनमेजचकितपत॥संसयहरकरतनेमनपत॥वहवदरस्थे
अतिबलवाना॥अंगदनामवानहनुमाना॥सुपहग्रीवनीलनलजैसें॥
मूर्छितकियेवालकनकैसें॥२१॥दोहरा॥सरवतीरत्नकपिनसमलीनसो
कमैंनाहि अलिअचर्जमनहोतहैवहकेसंगुरकोहि॥२२॥चौपई॥जिह
हनुमंतलंकगढजासो॥रावनकोमर्दितकरजासो॥अंगदअवरनील
नलजोधा॥कैसेंरनमांप्योरनक्रोधा॥पुनसुग्रीवसपनकोराजा॥महांव
लिशकरसिरताजा॥वडरोंजामवानदलिसजा॥सातिकमहांवलीप्र
तापहूरा॥वनचरऔरमहावलवाना॥भपसकलरतामूर्छप्रमाना॥त
वमेमनैहकलपरभाउ॥पूरनउनतालीसोध्याउ॥२३॥दोहरा॥इतिश्रीभा
रथपर्वलिअश्वमेधपर्वभाषा॥कविरतनकनमरतनधपोड नकालीसमोध्या॥३९

जैप्रनउपीव ॥ चौपई ॥ जैसुन कहे हनवङकुकराई ॥ प्रुस्मझ्किपोजमहलषपदा
ई ॥ वलरनतम्मोवानरनजैसे ॥ वरनहनावनतहोंतमतैसे ॥ तवकुस
ङनेलानरघुनाथा ॥ तांतेरननङ्गाघोमाथा ॥ आवनहक्रूपरघुवरको ॥
क्रोधनिवारनभोवनचरको ॥ एकवारजिनसमुचलाघो ॥ सोकपिग्रप
नेमनपकलाघो ॥ जोहनुमंतधरनजियध्याना ॥ सोउरूपवालकसवि
धाना ॥ ५ दोहा ॥ गुरुसनमुषसेवककवहि नहीउवावनहाय ॥ जैसंता
मोहनुमनहिगादेहैरघुनाथ ॥ ५ चौपई ॥ तांतेहनुमतआपवंधायो ॥ प
हविचारमनमहिवहरायो ॥ सभकाहूकेवलभगवाना ॥ इनमेसभनके
मनअभिमाना ॥ वलुकिनापलीनोअपनोप्रभु ॥ मिट्योगर्वरनमूर्छभए
सभ ॥ यहकारनसभमूर्छितभए ॥ मनअभमानसभनकेगए ॥ वहुरोंभ
रथसंभारउक्योतन ॥ हधरप्रवाहहेषविसमैमन ॥ जोधापरेमूतकत
नरेषे ॥ केजमूरमूर्छअग्रवरेषे ॥ २ दोहा ॥ जीवनआसाभरथतजसिरध
नमीजतहाथ ॥ जेउवरेरनहीनजनलेउचमकरनाथ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ ला
घोभरथजोरसेनाङुन ॥ तववोलेकुससवचनभरथहन ॥ यहसेनान
हिजीतसकेसुक ॥ एकपवनजावरकहोतक ॥ हनूमानसुतहंसतरंगा ॥
सुफवांधेहोउनरवरसंगा ॥ जोतुमवोलइजाइकरमसों ॥ तुइविनाजी
सोहमतुमसों ॥ जोतुमवलकरउनमुकलाघो ॥ तुमनवजीसोहमहिहरा
यो ॥ तुमममहिपहवलहछुनआवै ॥ जिहवलपवनसुतनमुकतावै ॥ प
दोहा ॥ सुनतभरथक्रोधनभयो लिषोधनुषसरहाथ ॥ सिपसुतनकेस

र॰ श्र॰ नपुषवगएपोकलकुककवमूलेसाष ॥९॥ चौ॰ ६ ॥ भरथक्रोधसोंवानचला
भा॰ यो ॥ बालकश्रृंगकुटननदिपायो ॥ आवतसरकुसनैनचीन्हो ॥ फलहा
२३४ थसोंटूकटूककीनो ॥ कुसक्रोधग्योमरसिपहिधायो ॥ धनुषभरथका
काटगिरायो ॥ इसरथहतनधनुओरमंगायो ॥ नीलवानकुसओरपठायो
इहिसबरननीलहैंगयो ॥ लवकुसबीचवोरकैलयो ॥ क्रोधनहैकुस
धनुषसंभारा ॥ वानअसंखभरथकोंमारा ॥ ७ ॥ दो॰ ॥ क्षाइनभपश्रसं\
घसरपरश्रकासलिपोछाइ ॥ नीलवानकेघोरकोंछिनमहिदियगिरा
इ ॥ ८ ॥ चौ॰ ६ ॥ वेधीसकलभरथकीसेना ॥ सोगनकहीपरतनहिंबैना
हयगजरथपाइकसभमारे ॥ सूरवीरमूर्छितपरडारे ॥ जोनरकछुपेकं
दरामांही ॥ नेसरवेधनकिपेनहोंहीं ॥ रोमरोममहिपसरेवाना ॥ परन
गिरपरेसभवलवाना ॥ एकोभरथरथोनिहरुवसर ॥ पुनकुसकियो
अरंभअगनसर ॥ लामधिसिषकोसनगहरायो ॥ तिहसरभरथअकास
छायो ॥ ९ ॥ दो॰ ॥ तहांगिरायोभरथकोंसिरनलछपरपांइ ॥ नासन
कीनोविकलतनधरनपरेअरकाइ ॥ १० ॥ चौ॰ ६ ॥ भरथपर्छहैधरनगि
योजब ॥ आनंदहियेबढोकुसलवतब ॥ बालकहोहिमुयसमसवारा ॥ व
नमहिक्रीडाकरहिविहारा ॥ लकुरीलेहउमंतप्रहारहिं ॥ हासकरहिमं
गलजियधारहि ॥ वनमहिलीलाव्याकुलभई ॥ लवकुसकीसुधकिन
हूनलई ॥ हरनकरतडरीरवभरसासा ॥ प्रथमेसुमोहतोलवनासा ॥ पुन\
लवकेपाछेकुसधायो ॥ सोऊमहिकोउफिरनहिआयो ॥ ११ ॥ दो॰ ॥ मारट

रिषप्रापतभयोनवैजात्रकीपाहि ॥ नमस्कारकीनोसिपपीरधसो
मनमोहि ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ नारदकोंपूछ्योसियमाता ॥ स्वामीकहद्धकृपाक
रवाता ॥ प्रथमेलवकाननमहिंगयो ॥ तिहपीछेंप्रुकुसपठदयो ॥ पु
नमैंताकीसुधनहिंपाई ॥ सगुनहिंदेषतहौंदुषदाई ॥ आजदिवसलागत
हैभारी ॥ नहिंजानोंकछुरचीपुरारी ॥ नारदनमस्कारसिपकीनो ॥ मनसं
तोषधीरवहुदीनो ॥ कुसलसहितहैंलषपरैताता ॥ करहिंविजैरनमहिंदो
उभ्राता ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ वहुप्रसस्त्रलमहौंहिंगे श्रीरघुवरजिपजान ॥ जल
रुजीवकासिंचकैराषहुसत्रप्रमान ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ विंमहरकरद्धजिप
माला ॥ द्वैहैतोहिवेगकुसलाला ॥ यहवचकहिनारदरिषगयो ॥ सुदिन
गगनमगगवनतिमभयो ॥ वालमीकरिषद्धतोपयाला ॥ प्रापतम्राइभयो
तिहकाला ॥ दुषितमानकीकरतविलापा ॥ रुदनकरतमनवढ्योसंतापा
नारदरिषसंधुमडपजायो ॥ जलरुजीवकाग्रहणवतायो ॥ द्रतुककोउ
होतहैजहां ॥ जलरुजीवकाचहिंयेतहां ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ नवरुजीवकाजल
वहैनवद्वैहैकोउग्यान ॥ कोउदुपरवहोतहैदेषतहोंउतपात ॥ ४६ ॥ चौपई ॥
विजैवालकनकरीद्धतीरन ॥ तोम्रापवमोपहिंताहीछिन ॥ प्रथमेल
वमूर्छितह्वनपायो ॥ नहिंजानोंयवकुसरनछायो ॥ आएवहुतरिषीति
हम्रवसर ॥ छमाकराईसिपकोंपगपर ॥ जनकसुताकोंकसोरिषिनस
भ ॥ जलरुजीवकासिंचरावसभ ॥ नारदवचनसमकरमानद्ध ॥ सोकत
जहुजिपतावपछानदु ॥ वालमीकरिषवेलमंगाई ॥ जलरुजीवकाणहो

म. श्रु. बनाई ॥ ५ ॥ दो० ॥ अलहमी विक्रा सिंच कै रिष राखो गृह मांहि ॥ पीरज
भा. दी नो सीष कौं विंनकर हू जिय नाहि ॥ ६ ॥ चौ० ॥ इहां हून रघुवर पहि
२३८ गए ॥ करी पुकार भरथ हनु भए ॥ बालक महावली विकराला ॥ बांधे
हनूमान नल काला ॥ तुमरी सेना नास करी सभ ॥ दिषियत बालक रूप
बोहि प्रभ ॥ श्रप मे नास करी सभ सेना ॥ देषी है भरथ हि निज नैना ॥ क्रोध
न भरथ कियो संग्रामा ॥ नाहि न ग्रव रसूर को कामा ॥ तुमल जु हू कर भर
थ गिरायो ॥ राम राम कहि धरनु र छायो ॥ ७ ॥ दो० ॥ बालक तुम रा रूप
है किधों हि लिय रघुनाथ ॥ गर्जे तरन महि सिंह जिम क्रोरी धनुषी हाथ
८ ॥ चौ० ॥ निकट हि द्रु लो मं ग्रिलि र अवसर ॥ वचन कहे तिह सुनन्ग्रीर
घुवर ॥ सुनन द्रू श्र वन तुम महमरी वाता ॥ नव तुम वन पठई सिय माता ॥
गर्भ सहित सीता तिह काल क ॥ मत पह हो हि जानकी बालक ॥ नाही ते सू
रे वल वाना ॥ सियके सुत पह हस नप्र माना ॥ यह बालक संत तनु महोई
तो तें जीत सकै नहि कोई ॥ वनवासी बल धर तन ग्रैसें ॥ सूरे मह्यां बालक
न जैसें ॥ ९ ॥ दो० ॥ यह बालक अति सूर र न महि काटे सिंह जिम ॥ क
रहि प्रन नाश्र र सेना सभ तहमरी हनी ॥ १० ॥ चौ० ॥ सूर सत्रु हन सें प्रु रछो
ए ॥ लछमन जैसे धरन गिराए ॥ भरथ सारषे सूर महा बल ॥ पर्छिन कर
डोरे रन दल मल ॥ हनूमान सुग्रीव नील नल ॥ जामवान अंगद हा खो ह ल
बलरंग नि सेना मारी तव ॥ बालक अंस तुम्हारी है प्रभ ॥ सुन प्रभु कछ्न
उत्तर दीनो ॥ यह विचार मन मैं हर कीनो ॥ तोसों कर मष कंकन रघुपत

466

औ तिलक सहु लतेज विमल घन ॥ २४ ॥ दो० ॥ ना ॥ सेना सकल रकत बक
रंड भिस्त बरबमाइ ॥ हय गज रथ पाइक नकर चले संग रघुराइ ॥ २५ ॥
चौ० ॥ ई ॥ बनास पति के पलव जैसें ॥ सेना गनीजा मन हि जैसें ॥ वेग आइ र
न आपत भए ॥ मूर्छित आनन हां चलगए ॥ लछुमन भरथ सत्रुहन देषे ॥
रत कलस मूर्छित अवरेषे ॥ रघुबर नैन नीर भरआए ॥ निरषे प्रान बंधु बि
न भुरझाए ॥ पुनि देषे होऊ बालक रन ॥ अध अरूढ करन क्रीड़ावन ॥ कर
ली हुम सों बांध पवन हन ॥ मूर्छित किये तरेसर चतुरंगन ॥ २६ ॥ दो० ॥ ना ॥ क
हहु गिर लोल छमन पलो कहहु सतुहन श्रान ॥ कहहु भरथ मूर्छित परे सोम क
ल बदी रणागान ॥ २८ ॥ चौ० ॥ ई ॥ कहहु अंगद कहहु नील नल नकप ॥ कहहु प
लो सुग्रीव नराधिप ॥ कहहु जामवान मूर्छित रन ॥ हनी सकल सेना
नर हरि गन ॥ वचन लिह्यार राम अवचरज मन ॥ महा पराक्रम किये बाल
कन ॥ तब रघुपत सुष वचन उचारे ॥ कवन नाम हैं बाल तुम्हारे ॥ को
विद्या गुरु को पितु माता ॥ कौन बंस कहो सत बाता ॥ बोले कुस रे
हिन ऊंस रबर ॥ हम जोग नहीं रण अवसर ॥ २७ ॥ दो० ॥ ना ॥ हरुकह
अपनी चमसों हम राकुल अरुनाम ॥ सबहितों तम कहें गे जिन दे
आ संग्राम ॥ २८ ॥ चौ० ॥ ई ॥ तिन सों हुड़ रेकायर रन ॥ भागे जाहि काइ
रन केघर ॥ हम गढ़े रन लिषें धनुषसर ॥ सेना तुम री सकल नास क
र ॥ हम हरलिपो जनक को बाजा ॥ रनगन हने सर सिर ताजा ॥ अब आए
तुम आप संभारहु ॥ क्षत्री धर्म जु हमि य पारहु ॥ अंतरजामी राम क

अ॰ श्रु॰ भा॰ २३५

पाउन॥ जियजाने निहचें अपने मन॥ किपोविचार हृदेमहि रघुब
र॥ कछी जोगजुद्ध लिहअवसर॥२९॥ दो॰॥ देषले उबालकन की वि
षाकर संग्राम॥ छत्रिधर्मप्रतिपालिये हृदे विचारो राम॥३०॥ चौ॰॥ ई
मनमहि राम विचारत बाता॥ कहां भयो जो हमरे ताता॥ छत्रीधर्मजु
द्धमें उनरन॥ धनुषलियो रघुवर क्रोधतमन॥ कसिमासो सरअति
विकराला॥ छंडतकर उररहि तिहबाला॥ ऐसेंबान चलावत रघुवर॥
लुतनके सनमुषरन अवसर॥ दुमन्माई विस्तार हि षरवर॥ छोडसजो
जनटेहृ धरहि सर॥ बहुरकहों फलको विस्तारा॥ जोमनवार अग्रबहु
मारा॥३१॥ दो॰॥ जो प्रभमारे बान विषहृनहि सुधारसवाल॥ रामपठे
सरअगनको मेघरचे ततकाल॥३२॥ चौ॰॥ कोपमेघसरहृ ने रामज
व॥ पवनवान छाडेतबालकतव॥ जोरघुपतसरसैलचलावे॥ छंडनहि
तकुसचक्रपठावे॥ विविधप्रकार पठे रघुवर सर॥ सभ छंडन कीने लव
कुसवर॥ महापराक्रम देषलुतनरन॥ अचरजभयो रामके अपने मन॥ रा
मजोग बालक यहभए॥ सभकलेससिय केमिटगए॥ हृदे विचार कियो
पुनर घुपत॥ हैनहीं हिगर्भसियउतपत॥३३॥ दो॰॥ वालमीककृति
सक्लेसिसुप्रगटायो होइ॥ इकउपजो सियगर्भतें तांते बालकदोइ॥३४
चौ॰॥ श्रीरघुवर बालकप्रतिके प्रन॥ किहगुरुपहि सीषे विद्यागुन॥ का
वननाम तुमको पितुमाता॥ कवनवंसभाषहु सनवाता॥ लवहि बालक
नवचनउचारे॥ वालमीकरिषि गुरू हमारे॥ तिनहमकों विद्यायहदीनी॥

हरषनहियेंकृपाबहुकीनी ॥ कुलरघुवंसआनसीजइमय ॥ स्वनसीता
केअरुहतुमरेहम ॥ सुनयरहबचनरामसोचनमन ॥ कनिहमकियोजुर\
इनसोरन ॥ २५ ॥ दो० ॥ नबवालकप्रभुषेलेकह्योजनकसुताकोनाम ॥ अ\
वनसुनतमगरहगरभयोप्रेममगनमनराम ॥ २५ ॥ चौ० ॥ निजरघुवर\
कीयोधृगकारा ॥ विनसीताधृगजनमहमारा ॥ सियवियोगप्रभुविक\
लभयोतन ॥ सीताविरहरामनननदाहन ॥ सीतासुनप्रनहृदेविचारा ॥ सभ
भगतनकोनामविसारा ॥ अंबरीकप्रहलादध्रुवादसभ ॥ कियोअवाहन
सीयसुतननव ॥ तिहुलोगनकीभगतमंगाई ॥ सभलेवानअग्रबहराई ॥
२७ ॥ दो० ॥ सोसरक्षाअयोकुसलवहिवेपलियोरघुराइ ॥ भगतभाउकेवा
नसोंरामपरेप्रुरक्षाइ ॥ २८ ॥ चौ० ॥ एकप्रेमसियकोजियरघुवर ॥ इति
यलगोउरभगतभाउसर ॥ तासोंश्रीरघुवरप्रुरक्षापो ॥ रघुतेंगिरधर
नीलपरायो ॥ रामनिकटआएवालकनव ॥ देषनलगेनहीरनमैंसव ॥
लक्षमनभरथसत्रुघनकेतन ॥ लियेउतारप्रभुकरकेंइलगन ॥ बवरक्ष
इभूषनसभक्षीने ॥ उतमअप्राप्रपमेसभलीने ॥ अप्रहवसनजेजेमनभाए
लियेउतारविलमनहिलाए ॥ २९ ॥ दो० ॥ वस्त्रसममस्नइकवकारहयक
परवहराइ ॥ शस्त्रजेवरीपवनसुतसंगलेचलेउताइ ॥ ३० ॥ चौ० ॥ हयअ\
रूढहैचलेभवनकों ॥ बांधलीनसंगप्रभुपवनकों ॥ हाथजोरगाटेहनु
माना ॥ लवकुसआगेवचनवषाना ॥ सियपैलेजाहोनहिहमकों ॥ लीजे\
मानकैहनहांतमकों ॥ सियकोंदेषनहीमरजावों ॥ हमसियकेनिज

469

ल॰ श्र॰ भा॰ २६९

दासकहावों॥ कैमरिजादरघुनारीमाना॥ सनमानलीजैसपह वाना॥ एव
चसुननलहसेदोऊभाई॥ देषहुयाकपिकीचतुराई॥ ०५॥ दो॰॥ सा॥ अपनेकु
दनकेनिमितहरषावनकपिमोहि॥ लेवनचरलेजाहिंगेसियकेआगे
मोहि॥ ०६॥ चौ॰॥ लंकुरीमारचलाइपवनसुत॥ हनूमानमनभईविं
तअसुन॥ लेगयेसियकेविघमानजव॥ सीतानिरषअनंदभईतब॥ पव
नसुतअरयोरहइअवसर॥ पठयोदेसंदेसश्रीरघुवर॥ जवहीलंकसमे
पहुआयो॥ रामप्रुदकाआनदिषायो॥ तवपहमनमैंकीहप्रवेसा॥ देष
उयोकोउरामसंदेसा॥ कुंडलभूषनयुकरजुदेषे॥ सभरघुवरकेसियअ
वरेषे॥ ०७॥ दो॰॥ सा॥ मनकहतातहजुमंनकौंशक्रानिकरतुलाइ॥ रतनय
चितकुंडलयुकदपहतोश्रीरघुराइ॥ ०७॥ चौ॰॥ देनिसानिलुमराम
पठायो॥ जवकवकहसमेतुमआयो॥ नीकेहैंरघुपतरहलछमन॥ कु
सलसहितहैंभरथसत्रुघन॥ कनितुमसुषमलीनअतिभयो॥ लंकपरा
क्रमकतिहरगयो॥ गरगरहैवचकेहेपवनसुत॥ अतिलजातमनमैं
चिंताजुत॥ लछमनभरथसत्रुघनसाथा॥ पर्छभयेरनमैंरघुनाथा॥ अ
रुसुग्रीवसहितसेनासभ॥ पर्छतकरआएवालकनव॥ ०८॥ दो॰॥ सा॥ य
हवालकतुमरेहोऊमहावलरवलवान॥ श्रीरघुवरभगवानसहतनमूर्छित
किमपरनजान॥ ०८॥ चौ॰॥ कुंडलयुकदउतारलिषेसव॥ डारदाभहमे
अंधलिषोतव॥ लेआपतुमपैतनकाला॥ पहचरित्रकीनेतुमबाला॥ य
हवचतुनतसीयधुरझानी॥ हारघुवरकहिपरततपरानी॥ सकलगयोसुष

पीतवरनमव ॥ मयकमलहै परीविकलमन ॥ लवकुससियतनपवन
फुलावत ॥ वरनवांपमुषवीरजुचावत ॥ करीजतनसों चेतनमाता ॥ वोलीसि
यवमधगहोउताता ॥ ७२ ॥ दो० ॥ लवकुससियतिहक्रोधसोंवहुतकियोध
गकार ॥ अपराधीलषमनकहकियापितारनकियोसंहार ॥ ७३ ॥ चौ० ॥ आगेपी
हमकहंचिंतामन ॥ तिरह्षनपधजुहिपथयोवन ॥ हतजनमनकउकुधीरजु
भयो ॥ तिनहनमोहिमहांदुषदयो ॥ सेवाकरनपुनपितुमाता ॥ करुआपतम
पितुरनआता ॥ तमहमसीरआयहकीनी ॥ पिताहन्योचिंतादुहिदीनी ॥ तु
षरेषेअपराधतुम्हारे ॥ तुमलोभयेमहांहमारे ॥ रघुवरविधामुववमातजराव
ड ॥ यहकारनकोगहरनलावउ ॥ ७४ ॥ दो० ॥ हाहारामपुकारकेवहुरगिरीध
रसीत ॥ मातकीगतदेषकेवालभयेभयभीत ॥ ७५ ॥ चौ० ॥ रुदनकरतसिय
जियदुषभारी ॥ करतविलापमहांदुषकारी ॥ लवकुससवहीअतिहिचिंताजि
य ॥ हेषीदुषितनहांमातासिय ॥ वालमीकरिषवचनउचालो ॥ ताकेसंग
कहतभयहास्यो ॥ तनदुजानकीचिंतनकीजै ॥ जलतजीवकानलहिनली
जै ॥ नारदहुवजलसिंचरषायो ॥ तिहजलकोततकालमंगायो ॥ ७६ ॥ दो० ॥
जलहीजीवकाआनकैवालमीककरधार ॥ सीताअनपमोसधासोंजलसोंलि
योपधार ॥ ७७ ॥ चौ० ॥ जलहजीवकाजीतोसोई ॥ सीनाहथामीयनजोई ॥
वालमीकलीनानिजहाथा ॥ हतनसहितसियकोंलिपसाथा ॥ जोरिषगं
गातरचसहैंवन ॥ तैसभसियसंगचलआयेरन ॥ तेनकहूजीरिषनकीनारी
तेसभसियकेसंगसिधारी ॥ सभचलरंगभूममहिआए ॥ जहांपरेरघुवरसुर

अ॰ श्रं॰ क्काए॥ अलसजीवकासियनषलीना॥ वालमीकरघुवरगुषदीना॥ ५३
भा॰ दो॰ ना॥ पुनसिंच्योलछमनभरथवडूरसत्रुघनवीर॥ सिंच्योरिषसेनासक
२६७ लरिषहजीवकानीर॥ ५४॥ चौ॰ई॥ भयेसवेतउठेरघुनाथा॥ लछमनभर
थसत्रुघनसाथा॥ मूर्छाकुटीउठीसभसेना॥ रघुपतसभप्रवलोकीनैना॥
वालमीकरिषसियनिहअवसर॥ लेहारीअधुपदपंकजपर॥ पुनलवकुस
कोचरनलगायो॥ वालकजनमसकलोनहुनायो॥ जोलवकुसनेदानकरायो॥
सोरिषकहिरघुवरसमझायो॥ रामसियाकोआदरदीना॥ कंठलगाइस
तनकोलीना॥ ५५॥ दो॰ ना॥ सीतालवकुससंगपुनि वालमीकरिषसाथ
अवधपुरीकोलेचलेहरषनहियरघुनाथ॥ ५६॥ चौ॰ई॥ नरहरदहभयेन
हीग्रानंदा॥ अवधपुरीआपनसुषकंदा॥ आएदसरथहीसुतसीता॥ जुवती
गावनमंगलगीता॥ जेपुनकहेसुनइभपाला॥ कथारमायनपुण्यविसाला
पढेसुनेमनसाधरजेसें॥ पूरनहोतमनोरथतेसें॥ पुत्रवानधनवानहोइनर॥
सत्रुविनासहोतकीरतवर॥ जोजैसीमनसाकरध्यावै॥ सोततछिनवांछतफ
लपावै॥ मुकहोतदियमहासविस्रामा॥ सुनेरामलवकुससंग्रामा॥ एकोजो
उभयदलमहमसों॥ उभरदिवोजपारथजमसों॥ ५७॥ दो॰ ना॥ इतिश्रीभारथ
पढेसुषदेप्राणा॥ कविदनकनरनपोध्याअलीसमान॥ ५८॥ चौ
पई॥ वोलेजैमुनजनमेजपहन॥ कथावभ्रुवाहनअर्जुनपुन॥ हमोवभ्रुवा
हनपारथरन॥ महाभरमर्छिनकीनेतन॥ मूर्छाकुटीउठेपुनजोधे॥ जुद्ध
रयोमननमेंसमझोधे॥ प्रथमेउकोहंसधजराजा॥ वडरनीलधजनरपति

रनाजा॥ पावककउमो क्रोधजियधारे॥ रूपलहूं सधुजवचनउचारे॥ विय\
मानजोफलहोनअव॥ नंहीसुधल्लासरसायसव॥ ४९॥ दोहा॥ जोअवहोमो
सायनवपारथहोनजान॥ मोरक्षानंदलालकीसोइवनावनवान॥ ५०॥ चौ
पाई॥ वहुरहूंसधुजक्रोधजभयो॥ धनुषलियोसनमुषचलगयो॥ वारवा\
नपठहिपमहांधुज॥ क्रोधनहूंन्रपवडोहंसधज॥ हयगजरथवहुहनेपदा
ता॥ अनगनवयकरीवहुवाता॥ वहुरउमोपावककोधनमन॥ फूकीअग
नजारिसेनारन॥ पठयेगजरथपाइकजारी॥ धजापताकाजरीअंवारी॥
५१॥ दोहा॥ वलसमग्रीजरतिरनवढ्योमहासंताप॥ सूरवीरजोधेवलीस\
हिनसकेकोउताप॥ ५२॥ चौपाई॥ अपनीचमूवभ्रुवाहनरन॥ निरषीसकलज
रतआकुलतन॥ अग्रुनरक्षाटससूरगिरेधर॥ कृष्णोवभ्रुवाहनसूरावर॥ ज
लसरमारअगननिरवारी॥ तेजमिटाइक्षारकरडारी॥ वहुरक्रोधसरपव\
नचलायो॥ दहदिसअंधकारअगहायो॥ अगनतेजमिटगईताहजव॥ उलट
परीअर्जुनसेनासव॥ पवनवानपुनछाडउडाई॥ पारथकीसेनाधुरक्षाई॥
५३॥ दोहा॥ लियोवभ्रुवाहनषड्गपलोकटककेवीच॥ हनेसूररनमैंकरी
मासरुधरकीकीच॥ ५४॥ चौपाई॥ अर्जुनचमूभईसभहाला॥ छिनमहिकही
परतनहिवाला॥ वकोएकमंत्रीतिहिअवसर॥ अवरसकलसेनामृछीधर
मंत्रीलिषीधर्मकोपाती॥ लिषनभयोदाहणदुषछाती॥ समाचारलिषरू
तपठायो॥ देसेदसवहुविधसमझायो॥ अवरकिसीकोदुधनहिकीजे॥
पत्रीहाथजुधिष्ठिरदीजे॥ अक्षरलिषेपत्रिकाजैसे॥ धर्मजविनकोउपढेनकै

न॰ प्र॰ सें ॥ ५ ॥ दोहा ॥ सुरछामी सेना सकल अर्जुन सूर समेत ॥ बलीबभ्रुवाहन
भा॰ महा सबदल किय संग्रु चेत ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ पाली देकर रहन पठायो ॥ वेग हल
२२८ हल नपुर आयो ॥ देखे महा धर्म मषसाला ॥ रतन षचन गृह महा विसाला
हस सहस कंचन के षंभा ॥ निरषकों न जिय हो न अचंभा ॥ सहस अठासी न
हं रिषीस्वर ॥ नित प्रतदेन अहार जुधिष्ठिर ॥ गोकंचन भूषन पटदाना ॥ नि
स दिन छमा करत विधाना ॥ अगन कुंड षट कोस रओ कर ॥ होमत नमच वनि
लखन निह अवसर ॥ ५ ॥ दोहा ॥ राजा नहां अनंद मैं देखे गिरधर साथ ॥ ह
सपत्रिका का देके दई जुधिष्ठिर हाथ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ लागो पढ न जुधिष्ठिर ब
लियो ॥ वाचन भई वही रूण छलियो ॥ यह संसो मन हि किसहि सुनायो ॥ म
न मैं यह विचार गहरायो ॥ मन यह सत नहि रिषीस्वर वाना ॥ ह नकु भयो अ
र्जुन रनवाना ॥ सत कमान माहि उठज वही ॥ अवन सन नहि पार षवपन
वही ॥ पडी गुपत जुधिष्ठिर कीनी ॥ काहू कों यह सुधन हि दीनी ॥ धर्मपरी
छ मन वेग बुलायो ॥ मत कर्म परत लिह वे वायो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ उठ आयो धर्म
न महा नहां छले नइ नाथ ॥ वचन कहे नगरह गर भयो पत्ति या दीनी हाथ ॥
८ ॥ चौपाई ॥ दुहे रकं न धर्म जनेद लाला ॥ पनि यां सकल पढी न लकाला ॥
इ षिन बचन बहुत पनउ कारे ॥ बिनवन पत्नोप्र भुनत हमारे ॥ पत अरंभ
अग्र भरिन कीनो ॥ तांतें पुत्र भयो अवहीनो ॥ क्रोधो हम हिंल रंग क्यारहि
न ॥ इय तिरवां ध्यो गुकरह मधु भक्ति न ॥ तोंतें हो इ विघन मषमांही ॥ इब
वालन संसय क छुनाही ॥ कै तो लहर भई दिन दाना ॥ अहल बरलगो रथ

हिजरान ॥ ८३ ॥ दो० ॥ केहरीनोनहिहिजनकोइक्षाभोजनसोइ ॥ अंग
भंगहिजकोंकवहिभोजनरीनोहोहि ॥ ८४ ॥ सो० ॥ इमपरत्रिभुवनना
नकैलमरीकिरपामहीं ॥ अर्जुनसेरनबानविधनपरनहैमनमहि ॥ ८५
चौ० ॥ अंतरजामीकृसककृपानिधि ॥ जाननसकलभूतभविषविधि ॥ सु
नीजुधिष्टिरकीसभबाना ॥ कियोमनोरथत्रिभुवननाना ॥ हरिकरुनाके
षकेलजगायो ॥ भयोहचेनडलोपुरकायो ॥ अवननसुनीअवाहरवानी ॥
कहीसकलविधसारंगपानी ॥ कृसकृपानेडकोकरनहुल ॥ निरभीअ
पवीचमचमकइन ॥ हूटनफिरनकरनहुलरनमों ॥ देखोजायपत्नोअर्जु
नकों ॥ ८६ ॥ दो० ॥ सीससकलउनलोनहीकककुअरकोननसाप ॥ निरष
भयोकर्नमउदीधारलियोसिरमाप ॥ ८७ ॥ चौ० ॥ कर्नबकियोअबाहन
दिनकर ॥ लियोमंगाइहथानिहअवसर ॥ कहत्तासोंअंबनरविरीनो ॥ क
रनहुलनसविधवलगहिलीनो ॥ तबपारथकोवरनउद्यासो ॥ लेकरस
पाहुसुषतिहडासो ॥ तनक्षिनडगोमहांबलबाना ॥ पनुषलियोकरर
नसविधाना ॥ क्रोधनहियमनमुषचलगयो ॥ निरषलानकोविहलभ
यो ॥ निजबलहीननिहारइहसन ॥ ठाढेहैविमनविसमेयुत ॥ ८८ ॥ दो० ॥
हीनभयोबलरइहसनमनमैंभयोअधीन ॥ पुनकर्नजसनमुषभयोवान
लएकरलीन ॥ ८९ ॥ चौ० ॥ ठाढाइलोजहांअर्जुनरन ॥ बल[illegible]कर्नमदि
गननक्षिन ॥ पारथकोंबचकहेकरनहुतन ॥ कतिलमभयोअचेनदिं
नमुन ॥ ठाटेकहांजुदअवकीजे ॥ मर्दनदेषसेननिजलीजे ॥ पारथक

ग॰ म॰ हैबचमकर्नेजमृतन॥ करनहारभगवानमहागुन॥ देखोनहीआनसि
भा॰ रजनपर॥ भयोहीनबलमनरहअबबार॥ इयमनुरहहोलनहिगुरुसों॥ १
४४९ गुरुकरइआलायबलजसों॥ २॥ दो॰ ॥ कहैकरनत्तनत्तनपिताव
इबलदीजैधार॥ जिहबलसोंभारथरचोभीषमकियोसंघार॥ ३॥ चौ
पई॥ जिहबलसोंजमकरनबिडासो॥ होणाचारजमघपिमासो॥ इ
मीबइतनचपसेनअपारा॥ अउरसकोहणिकरीसंघारा॥ बहबलचे
मनुहकरपारथ॥ कुंतीपर्मनलनपुरुषारथ॥ कहैफालगुनसुनर
करनसुन॥ आपबभ्योपहकालसोकगुन॥ जोअभमम्हाइरलहअबम
र॥ नासकरनमनक्रिबहमरेअउ॥ जोकबहोनरहोनेंरमंदन॥ किन
मद्दिकरनकोरथघकेंदन॥ ४॥ दो॰ ॥ बोलोकर्नेजमसुनपितालम
अेसेबलबान॥ इयमकीनेनुहकाबिनधारइभगवान॥ ५॥ चौपई॥
कुंतीहोइकोपरनमागे॥ होइपलायनरनमेंभागे॥ ताहिसरबहुकरैं\
धिकारा॥ अपजसबढैसकलसंसारा॥ तांतेंइहकरहोसंग्रामा॥ लीजे
नसकीनैसंहकामा॥ यहबचकहिपारथदहकीनो॥ सनमुखभयधनु
छकरलीनो॥ कोपनहेकेलछकेतपक्रोसर॥ लाग्योमाइबहुबाहनबर
रथसार॥ थीसमेननिसोरन॥ पाछेमाइपलोटसमोजन॥ ६॥ दो॰ ॥
इकोबहुबाहनबडरहीजोबानचलाइ॥ छोडसमोजनकर्नेसुतपीछ
पलोडलराइ॥ ७॥ चौपई॥ पुनलछकेतउकोरिसभीनो॥ मान्योधनुष
छइगकरलीनो॥ पुनलीनोपारथकोंसाधा॥ छंडाकियोधनंजयहाथा

परेकरइकमहि सेनसंघारी॥ चलरंगनिवकुवच्यप्रहारी॥ अगनितगज
वलवनलग्गजैसें॥ सेनाहननकरीरनजैसें॥ पारथअग्रनहथकेलमहां
वल॥ अगनितचमकरीरनहलमल॥ पकरकरनसोंसरप्रभावहि
मलकहोइलवगगनपठावहि॥ २८॥ दो॰ ॥ जोकछुआवहिहाथमहि
ऊपरदेहपठाइ॥ भछकरनपंछीजुरेहररसोनभछाइ॥ २९॥ चौ॰ ६॥ च
म्रुवमुवाहननिजदेषी॥ नासभईवहुरनअवरेषी॥ लीनवानकरलगनि
कारे॥ पुरुकेनेमअग्रसभधारे॥ पुनहिमतेजवीचवहरायो॥ करण
सुतछुकोवाणचलायो॥ लागतहीलेवछ्योगगनपर॥ मर्छनकरपुन
डालोभूपर॥ वहुरवभ्रुवाहनसरलीनो॥ मायधसभडरकोवलहीनो
वहुरआपनावलमअपायो॥ पारथकीहिसवानचलायो॥ ३०॥ दो॰ ॥
सरलागाअर्जुनहिंयेंमर्छिनभयेनजान॥ पुनपारथकोधनभयोवहुर
अरंभ्योवान॥ ३१॥ चौ॰ ६॥ जवलगवानचलावनपारथ॥ कियोवभ्रुवाहन
धरवारथ॥ अगनवानपितओरचलायो॥ अर्जुनकरकोपतुषजरायो॥
पारथकोचिंताव्यकीनो॥ कालसरूपषड्गकरलीनो॥ मानासनमध
हतायो॥ कोपतछैपितसनसुषआयो॥ सीसकाटडालोअर्जुनको॥ हर
नकियोमनोरथमनको॥ कोमलगर्भकेलिकोजैसें॥ उनरपरोसिर
नवलेजैसें॥ ३२॥ दो॰ ॥ अर्जुनकोउवकवंधतवमहाक्रोधतनधार॥ हय
गजरथपाइकनकरसेनाकरीसंघार॥ ३३॥ चौ॰ ६॥ कवंधभुजाहोइजो
रचलावै॥ हयगजनरथनरगगनपठावै॥ छेलीपरपछकैहैजैसें॥ काट

रा॰ अ॰ नवारन लागे ते सें ॥ मैं कबंध मारी सभ सेना ॥ सो गन कही परन नहि बे
भा॰ ना ॥ निरखव बहु बाहन को पो मन ॥ का देन एनी न सर नी छन ॥ कसिक
२५॰ बेधके रिदे प्रहारे ॥ धरन गिलो धर सर भय कारे ॥ इडु भस बर बजाव
न लागे ॥ प्रमु रिन व बहु बाहन डुख भागे ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ चले बीनर गाहर
षमन पुर प्रवेस कियजाइ ॥ रह ह्याए माना मिली क ह्यो ह मांन ह नाइ ॥ २२
चौ॰ ॥ पारथ को बंधव बन ह्मो जब ॥ मर्छित चित्रांगना भई तब ॥ सिं
चो नल सुष मान उठाई ॥ कहो मार लम कल सुर छाई ॥ रे अपराधी पिना
ह्मो तुम ॥ दियो महा दुख रांड किया तुम ॥ कंत सुत गर्भ प्रकास भयो अ
ग ॥ अपन सभ योस्हम हि जिह लग ॥ कहां उतार डूगे र ह पापा ॥ पिन्न ह
न हियो मात संतापा ॥ हमरे हृदे अवचर पी बाना ॥ ओग मिर बेगा लन मा
ना ॥ २४ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ ओग मिरा पी नु मन नहीं रि यो चि षा हृष मो हि ॥ ह्मो पिना
को नाम नहीं सर र ध कारें तो हि ॥ २५ ॥ चौ॰ ॥ कित गो काल वियोग विला
यो ॥ नी बन मिलहि हृदे बह रायो ॥ तम मिलवे की आस मिटाई ॥ पिन
रन हम्मो मान दुख दाई ॥ अब मो पर करुणा पइ कीजै ॥ विना वेग सुफ कों
करही जै ॥ रहन नहीं पाके पति जोगा ॥ विधवा करम कचन दुख सोगा ॥
मान वरू फल सग फ दुख दी नो ॥ अपने रिदे विवेक न कीनो ॥ तीन अवस्था नि
गम उचारन ॥ बाल बुबा ब्रिध हू विचारन ॥ २६ ॥ दो॰ ॥ रा ॥ होहि महा दुख
नारि लव तीन अवस्था मांहि ॥ बाला पन पित मात दुष जोबन दुष पति
पांहि ॥ २७ ॥ चौ॰ ॥ हर समे को रेन पुत्र दुख ॥ तीन अवस्था वीतन दुख रहष

बालसमे पित्रु रहे दुषरयो ॥ संगगंध्रबीं का पुत्र भयो ॥ तहां भयो दु
षमो हि निरारथ ॥ ओ बनसमे पुक फिसो पारथ ॥ भयो कृपाल रुसिपुत्र
दीनो ॥ पालि ग्रहण आको पलि कीनो ॥ दिन दस पांच रहो लिह ग्रबसर
पुन उठ बसो बिदा कर निज घर ॥ लिह पाछे सं प्रगट भयो हल ॥ पुत्र बि
चार कीनो मन संतन ॥ ४८ ॥ दो० ॥ दुषदे बेगा पुत्र बहुत हम जान्यो मन मांह
जब बक बस हि मिलमा हि पति मानो संसपना ह ॥ ४९ ॥ चौ० ॥ बहुत काल
बीती पन आयो ॥ नाम हनन नन पनह षपायो ॥ सह जत्त भाव कप्राप
न भयो ॥ तो लग मान यहो दुष दयो ॥ कर संग्राम पिता रन मारो ॥ ननम
हि ना हि बिबेक बिचारो ॥ बब व्याकुल कहि गह गह भई ॥ हरन करत न
हिलत हे गई ॥ निरषब बुबाहन मानागत ॥ विंनात रमन भयो हि कलजु
त ॥ मैं मैं देषत हे दुषमाना ॥ मैं मैं हो तब दीरण गाता ॥ ५० ॥ दो० ॥ यह
दां भयो हनत नपह हल न पुरमहि ओर ॥ कृस चंद मन ना करी बल बेकी
रण ठोर ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ चले तहां ते श्री जदुनाथा ॥ नपति जुधिष्टिर कों लि
य साथा ॥ भीमसेन कुंती संगलीनी ॥ हरन करन माता दुष भीनी ॥ पगप
ग गिर गिर परत बिकलमत ॥ टेरन करत बिलाप दुषित अत ॥ चले सक
लरन की मनसा धर ॥ बचन कहे तब भीम क्रोप कर ॥ भीम कहे पारथ नि
न मारो ॥ सरसंघ के न च ग्रघ्र प्रहारो ॥ जो लिह कों न हि हम जीतो रन ॥
तो यह होइ निफल हम राघ्रन ॥ ५२ ॥ दो० ॥ भीषम का लिंक ब्रत धरम
निफल प्रनम पुत्र कहो इ ॥ जिह हन की छाडंड ब्रत जो न हि जीतो लोइ ॥ ५३ ॥ चौ

न॰ प्र॰ ई॥ पहूंच चक्र हि लव भीम सिधायो॥ आला लेआगें ठठ आयो॥ पहुंचो
भा॰ जाइ वेग रन मांही॥ मगन हि गिह हरल गीककु नाही॥ प्रथम आइ देख्यो
२५८ अर्जुन कों॥ हर्ष भयो दुष छलपवन को॥ भीमसेन जिय महां रिसायो॥ ले
कर गदा कहूं कम हिआयो॥ हनसेना दह दिस कर डारी॥ रनमहि हीरव
कर विस्तारी॥ हयगज सर गहासिर मारत॥ भुज उरु कफोर रथ का सपका
वत॥ ७४॥ दो॰ ॥ कुरयो बभ्रुवाहन निरष सेना अपनी नास॥ लीनवान का
ढेलव हि लेगये भीम अकास॥ ७५॥ चौ॰ ॥ भ्रम भ्रम भीम गिरो रनमांही
मूर्छित भयो ग्यान तन नाही॥ हरष लभे रनिसान बजायो॥ जीत बभ्रुवाहन
घर आयो॥ नाही सचै मान पहिगयो॥ हाथ जोर के गढा भयो॥ हमतो तुम
राहो षइनारा॥ तुम आज्ञा पार परनमारा॥ पहुंच बसुन नवद्र रग्गुरुक्षा नी
है विह्वल तन पर लपरानी॥ सभ सिंगार तोरकै डारे॥ षान पान सुष भोग
बिसारे॥ ७६॥ दो॰ ॥ रुदन करत व्याकुल हियें सुन्यो कंत को धान॥ आई सुत
लउलष माचित्रांगनकी बान॥ ७७॥ चौ॰ ॥ तनत्ति नपुत्री माइनिहारी॥ मू
र्छित परन परी दुषियारी॥ चित्रना करत बभ्रुवाहन तन॥ मुष जल सिंच
करी सुचेतमन॥ बोली चित्रांगना सोक जिय॥ रे कुपुत्र तुम कुल विनास
किय॥ पुत्र पति हन नतास न हि कीनो॥ पितकों मार अजस जग लीनो॥ क
न तुम गत्यो न गर्भ हमारे॥ तौ इकौन मो कों हमारे॥ हमरे इष न मित जनन्यो
जग॥ पिता कियो संहार महां वग॥ ७८॥ दो॰ ॥ कहुं तुम्यो है इ छूमल सु
त पित कियो संहार॥ महापतनत महो भय सभ जग कर धृग कार॥ ७९॥

चौपई ॥ तपमोदकपापनहिकीना ॥ हमावइहनकरीइषदीना ॥ प्रथम
होषपिनकोरनद्यापो ॥ इलिपमानकोग्रुगनजरायो ॥ त्तलिपजनकीना
त्रमद्याला ॥ हनमुरत्वेगीकुंलीमाला ॥ अर्जुनमहनकहनहिगेअवन ॥ स
मकमानजांहिउठननछिन ॥ प्रथग्रगनमहिहोमनहोई ॥ नतवरंभह
मोनिहुलोई ॥ किपनीवनकीनलोकसव ॥ नतविधंसनिरासजांहिसव
४९ ॥ दो० ॥ परेनरगवैसेग्रमुषजोतिलहलननहिसेव ॥ नवग्रहजांहिनि
रासमभग्रगनमारवेरेव ॥ ५० ॥ चौपई ॥ भवनचलईसकिपेनिरासा ॥ हीन
किपोनितप्रमपकासा ॥ निवग्रविदेनहिजनकोंहाना ॥ सर्गसिंगलवर
हपविधाना ॥ करीप्रमकीहानइहमन ॥ धर्मजरिपोविपोगतमपनन
कलवेरपहमलमहिग्राप ॥ ग्रातांकरीत्रिलोकवुलाप ॥ ग्रापरेहिगंत
मकोंबाला ॥ किपोलोहिपारपरनदाला ॥ नुरीनहोवइपनिवननारी ॥
सनपहवानहोंहिइपिपारी ॥ ५२ ॥ दो० ॥ महांदेवकीहकमनीसनभाग
वरनार ॥ पुनकंतीग्रुहद्रोपदीगावतमंगलचार ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ जहांतभरा
पीमहांरानी ॥ वइरससिवापनिपारनी ॥ नुरीअनेकनारिगुनगावत ॥ इ
रषलहिपमंगलउपजावत ॥ महानुरेग्रगननहपषवीपत ॥ नवरइहमे
हमोरनपारष ॥ चिंतमानफिरजांहिनिरारष ॥ नवहिहवेगीकुंलीमाला
ननछिनहोरवहीरगगाला ॥ वइरसोपदीविसभगतवर ॥ विधवाकरीइ
हरहग्रवसर ॥ ५४ ॥ दो० ॥ ग्रपराधीतमइठहप्रवग्रगनजराबइ
पोहि ॥ महापनतहमरेगरभजनमलिपेकनलोहि ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ हमा

ग्रापसमांहिकरैचर्चाग्रत

न॰ सु॰ रे सु फल भल लगा पो॥ कुल को नास करन जग आयो॥ तुमने कोउ न भली
भा॰ सुनावर॥ तुमने भला होत न मनवर॥ काहू तेकार्ज बह होई॥ तुमने
२७२ तुम न भयोन कोई॥ पु फले बलो नहीं पार पावन॥ न होंन राव कुमो हि मुग
नमन॥ सहि न सकों संताप महादुष॥ बहु नि जराव डु हो हि वडु न सुष॥ पि
तु हन माता भ्रगन जराई॥ इह जग नो हि हि कीरत पाई॥ ५५॥ दो॥ रा॥ पित
रन हन माना भ्रगन न्मार इ उपनेहाप॥ तन तु तल पैसे करहि मान पिता
केसाप॥ ५०॥ चौ॥ पई॥ रन की ओर चले विंनामन॥ लेउ लषला संग सो कत
न॥ रुदन करत जिय कष्ट न भारी॥ पग पग पर गिर पर न डुषारी॥ पुन पुन
करगहि मान उठावन॥ होत न हे चेन दुर दुर छावन॥ करत विलाप भई घा
पन रन॥ मरहु गिरी निरषत पार पमन॥ हूल न पुरनें कुल मनु षिष्ठिर॥ प्रा
पत भए आइ तिह अवसर॥ संग दुषित लिए कुंती माता॥ महा षिंनवस पर्म
नमाता॥ ५५॥ दो॥ रा॥ कुल वंस के पग पग सो पर्स न मन पर भाउ॥ सूरन र
कनालीस मो अष्ठ मे धको धाउ॥ ५८॥ इति श्री भारथ पद ते अ श्व मे ध प र्वा
ना॥ कवि र म क न प र न प थो र क न्नाली प्रथमा न॥ ८॥ जे म न इ ज व॥ सो॥ ई
मे सुनत कहे मन दम पनवर॥ रन महि आए कुल सु षिष्ठर॥ कुंती सह न म
हांदुष भारी॥ आपरंग भूमि गिरधारी॥ उनने चित्रांगद न आई रन॥ रनने कुंती
महा दुषित मन॥ पार थ ही हे षो न न काला॥ रुदन करत पर्म जभ पाला॥
कुंती निरषत हुई है गई॥ करत पुकार विकल मन भई॥ कि मारूप द है
है गोपाला॥ सभ से ना निय चिंन विसाला॥ ६०॥ दो॥ रा॥ सिर चित्रांगद गोर

482

महि है वैगी करत विलाप ॥ रुदन करत देरत सुपि कवचो हृदे संता
प ॥ २ ॥ चौ० ॥ कुरी मरक्षा कुंती माता ॥ दुष सों भयो वदी रुगगाता ॥
तिरछो वसन उतार तात मुष ॥ रोवत वारंवार महा दुष ॥ अर्जुन को
लै कंठ लगावत ॥ कत तुम हम तें मन न हि मात बुलावत ॥ बोलत नाहिं न
रह्यो मष्ठ कर ॥ कहां पठयो तुम मन उह अवसर ॥ माता सों बोलत दुइ के
वारा ॥ कहां कहों तुम हृदा तल्यागा ॥ धुम्य करन कों कहीं पठायो ॥ तो
रथ मंजन करन सिधायो ॥ ३ ॥ दो० ॥ देत रसोई ब्राह्मणीं गंग दान कें
मांहि ॥ कै तुम गुरु की सेव महि तातें बोलत नाहि ॥ ४ ॥ चौ० ॥ कै तु
म वैवे कथा सुनन पर ॥ कै परिपाक रसोई ऊपर ॥ कै तुम सो दर हे स
हमा हय ष ॥ तातें तुम बोलत नाहिं न मुष ॥ कै तुम करत ते इंतकाहश्च
ष ॥ कै मंजन के कर्म करो सव ॥ कै गोद्विज हित रन महि धायो ॥ ताके
न मित सरीर गिरायो ॥ कै सुभ वस्त्र समर्पत श्रीपत ॥ तातें उत्तर दे
हु न सुत अब ॥ एक बार गुरु सों कर बाता ॥ कति हगमंदर रहे तुम
ताता ॥ ५ ॥ दो० ॥ तुम गजु के पितु वंदइ सों तिन कों लीनाजीत ॥ ऐसें
तुम सुव भए हो नवन भई यह रीत ॥ ८ ॥ चौ० ॥ सुन माता पथ भार पव
लकीना ॥ भीषम द्रोण करन हत लीना ॥ नासकरी कौरौं की सुव गारा ॥
तु करतव लन रेस सुधारा ॥ सरपि तामह हसें अरुफेरत ॥ तिनके सर रहे
गे तुम मरे तत ॥ तहां तन तुम मरी यह गत भई ॥ जैसी सुव विधना गत ठई ॥
सव तुम सुर अरज गुरु रक्षा पो ॥ तातें कवन समै यह पायो ॥ विधवा

म॰भ्र॰ करइनतुपदसुनाको॥ तरेसुभइअगनचितामों॥ ३॥ सो॰रा॥ सु
भा॰ रुकों कष्टडरेहगाहैंगाजनतविनास॥ तुरेअग्नासी सहसरिषितेस
२८३ भजांहिनिरास॥ ५॥ चौ॰ई॥ लोगकहैंगेनिफलभयोक्रुल॥ षंडित
भयोजुधिष्ठिरकोयल॥ पांडवपुम्यनभयो प्रकासा॥ जांहिअगनसे
देवनिरासा॥ तुरेजनतपरअगननिराजा॥ सुरनरमिलेबम्योसभसा
जा॥ हमकों पहडषरेडनताना॥ यहवचकहिमर्छी पुनमाता॥ क्र
सवंदसभसेननिहारी॥ हरेसंतापसभनडषभारी॥ रोवतविश्रांग
नाइषितअति॥ क्रोधतवचनवषाननसुनअति॥ ४॥ सो॰रा॥ रेपत
नहिवसुवाहनहिहमारेसुरुताल॥ कतिअगयोसुरुगर्भतेंकीन्
पितारनताल॥ ६॥ चौ॰ई॥ अपराधीकुलकीनानासा॥ होइगर्भधुग
नमहि प्रकासा॥ यहनिमितनतमरहजगआपो॥ अपराधीअपनापि
तुतापो॥ पितामारश्रवनमानजरावइ॥ तीनलोकमहिअपजसपावइ
नमसोंवैरभावहमकीना॥ भरवजनमसोइअवलीना॥ कुंतीनम
राकहांगवापो॥ जाकासनतमरनमहिआपो॥ यहाइषितअर्जुनकी
माता॥ कवडनहोइनोहिकुसलाता॥ ६॥ सो॰रा॥ कुंतीकहांविगारिया
नमनारेषलवाल॥ जिहकासनतिरदोषनमहनतकियोरहकाल॥
७॥ चौ॰ई॥ दासीकोंनमपहडषरीना॥ जाकासनतरनमहिहवकीना॥ स
मकेविरहअवहिमरजाई॥ करतविलापरुदनडुषदाई॥ सुतपितमा
नापुन्यकरावै॥ गयाजाइकेपिंडभरावै॥ वइरनततीरपइसनाना॥ ९॥

कीर्तनकथासुनाइबिधाना॥ नीमदंडपितुमातउतारे॥ होइसहल\
सकलकुलतारे॥ पुत्रनकहियतहैतमजैसे॥ पितकोंकरतहैततनर
नभैसें॥ १३॥ दो॰ ॥ जिमदसरथरघुबरबिरहकियोअपनतनत्याग
तिमकुंतीसुहहमसकलअगनतजरावहिगात॥ १४॥ चौ॰ ॥ देवीहु
तीकबहुनहिंबाता॥ पलकरैपितुकोंरनत्राता॥ कहतबेदबचसमञ
ताना॥ मातपितासेवाकरजाना॥ मातपितासुतनआज्ञाकारी॥ ताकीकी
रतजगउजियारी॥ परसरामभातानहनकीनी॥ ताहीछिनजियाइपु
नलीनी॥ जोसुतनककरबहुरजियावै॥ ताकेदोषनिकटनहिंआवै॥ स
कनबिनाजोकरेसंग्रामा॥ निहचेंहोइमहाउलिपारा॥ १५॥ दो॰ ॥ तु
मसासोअपनोपितासोहैसकलजिवाइ॥ नातरबेगबिनारचउहम\
कोंअगनजराइ॥ १६॥ चौ॰ ॥ महाउषितनिषविनभरतारा॥ नहिंउनरे
पितुहतकोभारा॥ निरषबभुवाहनउषमाता॥ रुदनकरतबिह्वल
भीगाता॥ कुंतीकोदुषदेषिउषितअनि॥ बचनकहैनवनिजपाना\
प्रनि॥ कहेंबभुवाहनजननीसुन॥ हमरेबीचनाहिंकछुअवगुन॥ पुरु
षीकीपितसुतनकीरीता॥ बचनप्रमानवेदकीगीता॥ प्रथमेहमपार\
थपगलागा॥ पितामानछसीसप्रनामागा॥ १७॥ दो॰ ॥ तुरूपरहषनरा\
षवउहमराकियोधिकार॥ सोप्रनहमलागेचरनकीनोलावप्रहा
र॥ १८॥ चौ॰ ॥ बारबारतुमहषलगायो॥ पुनपुनहमराछत्रलगायो॥
हमकोंकियोबहुतउपहासा॥ सभामध्यसभमानबिनासा॥ बारबा

अ॰ ग्र॰ रवहुतकुरुफकारा॥निंदाकरीनसामविचारा॥पुनमोकोंकहि
भा॰ मोहिपठायो॥पुहुकरदुकनमानलजायो॥परमपुनीतपुत्रहैसोई
२५५ मानारोषडनारेजोई॥मोपुरुरनकोछुचलजायो॥तुमआतासोंच्छ
हरचायो॥१९॥दो॰॥रा॥हमकोंक्रासंग्रामलवमोकहिभेजोमोहि॥र
ओजुद्धकुद्धीधरमरनमैंइस्थितमोहि॥२०॥चौ॰॥६॥मोकुद्धीसनपुत्र
राहोई॥रणातजपीठदिषावैसोई॥सोनरहोइनरकअधिकारी॥
महांघोरदुषलहैविकारी॥तुहुसमैकेसोपितुनाना॥वेरवचन
मऊकुसलाना॥आमोनहींवनेपहवाना॥पुहकियोआतातुमया
ला॥मानकहेहुनपुत्रअछमन॥पहनकसोमुरुपिताकरदुहन॥
पुरुभाओपहपितातल्यारा॥तिहचेंपहभरतारहमारा॥२१॥दो॰॥रा
मानकहेरेदुश्मनमैनकमोपितुमार॥अपनावलदिषराइकेमिल
उचरनसिरधार॥२२॥चौ॰॥६॥जोमैसैंवसकरतमातकों॥तोतुमकर
तयससमानकों॥तुमरेवलकोंपिताप्छानन॥सुरजानसुतनवि
पछमानन॥सोतुमपासतपुत्रहमारा॥इहप्रकारनसहोनत्यारा
नवविबांगमहमपठाए॥वेरनकाछतवद्धरमंगाए॥ततछिनसंर
रचितावनाई॥तिरषववुवाहनदेषराई॥विंतातुरसुषवचनउचारा
पितहमोहमलोहलिपारा॥२३॥दो॰॥रा॥पुनहमापहहोइगीअगन
मैरेंगीमाल॥तोलेंपीपलमलहमनरोंहोरकुसलात॥२४॥चौ॰॥६॥पि
तमीवनविधकोइवनावै॥सोहमरापहकछमिटावै॥जयपिकवन

ठौरकछुहोई॥ त्यावैंजाइवेगहमसोई॥ छनउलषनाहरेविचारा
पारषलगैनमानहमारा॥ सोतोनिहचैभयोकालवस॥ चित्रांगला\
मरेदुषसोंग्रस॥ भरतवभ्रुवाहनरहेअववसर॥ नासहोनसकलाकु
लमहवर॥ तातेंकरोंउपाइसोईअव॥ पारषजीवहोइलषमनसव
२४॥ दो॰॥ भाषेवचनउलूषनारेवालकअग्यान॥ किपोनोहिकुलमी
सकोपितहनकीनोप्रान॥ २५ चौ॰ई॥ पितामारपुनमानतरावहु॥
तीनलोकमहिअपजसपावहु॥ वहुरकरउअपनोतनछाला॥ कत
विपरीतकरीयहवाता॥ कहेवभ्रुवाहनसुनमाता॥ सोअधिकहोहोर
कुमलाता॥ जौंहोवैसजीवपारथपरता॥ सोप्रुफकहोविचारसत्रम\
ता॥ जोकछुवलकहैलाऊसव॥ नहितोपीपरमरतेंअव॥ तहित
सकोंदुषमानपिताको॥ मारेंतनअववरचोंचिताको॥ २६ दो॰॥ वोली
वहुरउलूषनासुनवालकसविधान॥ जिहविधजीवैपितातमसोर
वतावोतान॥ २७॥ चौ॰ई॥ मणिसजीवनीमृतकजिवावै॥ जिहकेछुवे
प्राणघरआवै॥ तनछिनहोइजीवसविधाना॥ प्रापतहोइमृतककेत
नप्राणा॥ सोमणिहैसतभमेपयाला॥ सेषनागपहिमहांविसाला॥ से
षनागतमरानानावलि॥ देवैमणितमजाइतहांचल॥ तहांनाग\
विषभरविकराला॥ भयकारीतरूपतनजाला॥ जोवहमणिआवैतो
महाथा॥ पारथजीवैताकेसाथा॥ २८ दो॰॥ महाकठननागनतप
लभयकारीअतिरूप॥ नानातमयासहसफणावलीसभनकोभूप॥

ग्र॰ भा॰ २८५

१॰॥ चौ॰॥ई॥ सोभगणसदासेषकीमाला॥ धारीकरुणाकरनंदलाला॥
सिमरणकरनसेषगिरधरको॥ सहसनाममैंतननमिलहूरको॥ भा\
वसहतसिमरनकरधीना॥ ऐसीसेषनागकीरीना॥ इकनैनागति
केसिरसोफन॥ इकनैहैसोसोभनफणमन॥ एकनकेफणवनेनी
नसै॥ एकनकेसैचारगरलसै॥ एकनकेसनपंचमहाद्युत॥ एकनके
षटसैविषसंयुत॥ १॥ दो॰॥ एकनकेफणसाननसैपरैआवसैएक
एकनकेनौसनवनेकस्योनजाइविवेक॥ २॥ चौ॰॥ई॥ फणसहसनसे
षलुभपाला॥ हीरयतननसभमहांविसाला॥ वडेडेदरहीरतभयका
री॥ अविअप्रसयुलमहांभयकारी॥ गजसमत्वचामहावलहारी॥ नष
सिषविषसोंभरीविकारी॥ जोनुषतैंविषकोंवरसावहि॥ गिरवनद्रु
मछिनमांहिजरावहि॥ अतिकरमहांवलीहोविषधर॥ देषडूअपनेम
नविचारकर॥ अपनावलतकुहुदेविचारो॥ पाछेमणमनसाजिपधा
रो॥ ३॥ दो॰॥ सननवयुवाहनहरषकस्योपत्रुपदंकार॥ पालापयद
लषनाओइकघोलविचार॥ ४॥ चौ॰॥ई॥ हमवांछनपापहूअपनेम
न॥ जिहउपायजीवेंपिलगर्जुन॥ यहउपायलमभलावनायो॥ सु
ननककुकधीरजमनआयो॥ प्रवलनुदकीओरहोरजव॥ छिनम\
हिजीनलाउमणिकोंतव॥ नागनपहिकेनकवलहोई॥ सुफवलआ
गेरिकैनकोई॥ कहैतसभकाहेंरकसरसों॥ सेषमंगांकेहितमणय
रसों॥ कागरजिमफोरेंप्रकासकों॥ धरनकरोंउलटायनासकों॥ ५॥

दो॰ ना॰ ॥ कहै तुम सब पयाल कों ऊपर ल्यावौं धाय ॥ सेषनाग कों मणि लि
हम सर सों लेउ मंगाय ॥ २९ ॥ चौ॰ ई ॥ कहै अरजुन सब सुनि बलवाना ॥ धरन
भार जिन सों ठहराना ॥ एक बान सों सकल गिरावौं ॥ गहि सब मेघ पाल
पठावौं ॥ नागन तें भुज कों डरपावहु ॥ हमरे बल कौ मिनन हि पावहु
प्रलै करौं नागन छिन मांही ॥ मणि ल्यावौं छाडौं तिह नाही ॥ तो भुज सेव
करी न हि संकर ॥ जो न ल्याउ मणि नाग कहु पंकर ॥ वको बभ्रुवाहन मुख
ऐसे ॥ देषहु मणि ल्यावन हो कैसें ॥ ३० ॥ दो॰ ना॰ ॥ मणि गहि ल्याऊं सेष सों
अर्जुन भीम जिवाउ ॥ तुम सुत उहि षकेतन कों सेनासह लडगाउ ॥ ३१ ॥ चौ
पई ॥ यह सुभ हल्लन पुर हि पठावौं ॥ धर्मराज पहि लै जु करावौं ॥ सुभट
पमी लै फिरौं अथ पुन ॥ सो भुज भाषहु विग्रांग न लडन ॥ जीतन चलै हैं स
पुरवों सारथ ॥ तो हौं कहहु भगत हत पारथ ॥ कलो बभ्रुवाहन ऐसो ध
ला ॥ पुन उल्लूपता कहो यह वचन ॥ तुम कों जोग नहीं यह बाना ॥ प्रथ
मक सो अपना कुल लाना ॥ वहूरन करहु नान कुल नासा ॥ भले पुत्र कु
लक लो प्रकासा ॥ ३१ ॥ दो॰ ना॰ ॥ पितामार हत्या चढी पाप तुहमन कीय ॥
मा ने गोत्र संघार कों मन साधारी जीय ॥ ३२ ॥ चौ॰ ई ॥ इक यह करन पुत्र ब
लवाना ॥ अश्व निमित्त समर्पे प्राना ॥ निमित मित्र वन रोष पिता को ॥
गरुत न महा पराक्रम जाको ॥ ऐसे सूरन मारन जोगा ॥ पितु हनते यो
महा दुष लोगा ॥ अपराधी मातासो पितु माता ॥ पुन चाहो हम रे पितु गा
ता ॥ इक लहु महा दोष करन को नंदन ॥ पितु हू षन की नेस भकंदन ॥ इक

अ॰ श्व॰ तुमसे सुतनभयेप्रकासा॥ चाहतहोइहकुलकोनासा॥५१॥ दो॰॥
भा॰ वल्लभलीनीचाहियेलीजेनहांसंगाइ॥ कौंलीजेअपराधसोंजोसह
२५९ जेचलआइ॥५२॥ चौ॰ई॥ ईहांकहांजसभयोमल्हारा॥ करसंग्रामपि
तरनमारा॥ इहतेंइहांअधिकजसहोई॥ तातेगोत्रविनासहसोई॥
टेहैसेषनागतुमप्यापा॥ तातेंवढेमहासंतापा॥ सुनउनववचनक
हैपारपसुन॥ सुनउलूषतामातरूपाजुन॥ लेउएकमणजैसेंतैसें
आनीचहियेअवसरऐसें॥ तुरतकरनेसुफवरजरहावहू॥ करवि
चारकछुअवरवनावहू॥५३॥ दो॰॥ बोलीवहइरअलूषताबाल
कसोंहितमान॥ सुरूपतिकोमंत्रीइहांपुंडरीकपहिचान॥५४॥ चौ॰
ई॥ पुंडरीककोंपठउपाला॥ सेषनागपरिअवतनकाला॥ पुंडरी
ककोवेगवुलायो॥ सभहतांतनिहभाषसुनायो॥ जाइकहोअपवे
हितदेसा॥ जोहमतुमसोंकहेंसंदेसा॥ हाथजोरकैविनतीकीजे॥ क
होसेषमांगीमणदीजे॥ दीजेमणकीजेउपकारा॥ देहुनमणतव
जइहमारा॥ कारनकरहेंहैंफिरतुमकों॥ आरववनोदुषदारुणहम
कों॥५५॥ दो॰॥ मंत्रीचल्योसंदेसलैकहेसेषकोंजाइ॥ तुमकंन्यासुन
तुहकरपितरणहितोगिराइ॥५६॥ चौ॰ई॥ अर्जुनभीमसेनहथकेला
कोउमतककोउमर्छितवेला॥ चतुरंगनिसेनासभमारी॥ यहांउ
पितव्याकुलकरहारी॥ भयउनधर्मसुनवढोविषोगा॥ जनतविधं
सभयोअतिसोगा॥ कसलधर्मतेनरनमहिठाढे॥ सहनकरनजिपश्च

तिहुषवाटे॥ लमपुत्रीलनअग्रगनजरावन॥ करतविलापमहा
दुषपावन॥ मणिनिमित्तलमपासपठायो॥ पारघचढिपेवेगजि
वायो॥ ४७॥ दो॰॥ सनवचनप्रणामइकसोजोपभएसभकाल॥
तेजिवाइकैमणलमहिफिरपठवहितनकाल॥ ४८॥ चौ॰॥ पह
संदेसहमकोंउनदीना॥ तेसभलमअग्रवननसतनलीना॥ रपनवत्रु
वाहनवलवाना॥ अपनेहृदेविचारइमाना॥ तिनेसंदेससेषसभका
मा॥ नौकुलमैंतेऊनागप्रधाना॥ सुषनागनेऊसेषबुलाए॥ महाव
लीनतछिनतुरिआए॥ नमस्कारसेषकोंकसो॥ सेषसभनकोंआदर
भसो॥ वहुरसेषसुषवचनउचारे॥ तुमतुवानतमसमहमारे॥ ४९
सो॰॥ हतिअहृतपर्मनरेसअग्रवरवत्रुवाहनवली॥ तिहकहिपठेसं
देसहितनइसकललमअग्रवनरे॥ ५०॥ चौ॰॥ अर्जुनअग्रहसरवलवाना
महतकभएरनसमप्रमाना॥ पुंडरीकहमपअरपठायो॥ मणिकेनमित
रहोंवलआयो॥ उनहमसोंमणमांगपठाई॥ हेषइलमपविचारमन
लाई॥ वहरोंवचनकस्योहेपहमण॥ इरजिवाइफेरपठवहिमण॥
मणपठाइतेहोइसकाजा॥ पारपजियेंसरसिरताजा॥ वहेप्रहष
सुषकृतनभाषहि॥ समकैंजिपकपटनराषहि॥ ५१॥ दो॰॥ कार
जकरकैदेहिंगेमणराषहिंगेनाहि॥ परइपकारमिहोतहैभय
नकरोमनमांहि॥ ५२॥ चौ॰॥ जोहममणउनकोंनदिहैंहो॥ करतं
ग्रामजीतकैलेही॥ सभनागनमिलमंत्रविचास्यो॥ आइसेषपहि

अ॰ श्रु॰ वचनउचारो ॥ यहमणजीवनमूलहमारी ॥ सोकैसेंकरदेहुउधा
भा॰ री ॥ जोमणयहहमकरलेंगई ॥ तिहचेंमनमहुहमारीगई ॥ जिहकेरि
२५२ येहोंहिहमदीना ॥ नेकौंरीजेबुद्धिप्रवीना ॥ सेषकहेसुनसभाहमा
री ॥ वहनहिश्रैसेलोगविकारी ॥ ५३ ॥ दो॰ ॥ इनहीहोइनफुठप्रण
मनकहेंसभवान ॥ हमकोंपठवैफेरमणकरअर्जुनकुसलान ॥
५४ ॥ चौ॰ ॥ सावधानहमसजिनमांही ॥ सोमणलेराषहिनेनांही
श्रैसिनसोंनहिकरहुविरोधा ॥ दीजैमणवादेनहिक्रोधा ॥ अफणु
जीकोसुतनवलवाना ॥ महासूरत्रैलोकनिधाना ॥ बलीबभ्रुवाह
नविख्याता ॥ जिहकीनेपारथपितघाता ॥ सेनालेनमपरचढिआ
वै ॥ नागसकलनमपुरीपठावै ॥ जाकापितानामरणभयो ॥ जन
नीमृगनजरनत्रनलयो ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ इषिनबभ्रुवाहनभयोमण
विनसरेनकाज ॥ औंमोंनेवेमुहकरमानपिताकीलाज ॥ ५६ ॥ चौ
पई ॥ सुषसोंदेहुकरहुउपकारा ॥ मानलेहुयहवचनहमारा ॥ की
जैवचनबभ्रुवाहनसों ॥ पितानिवाइफिरपवेमणसो ॥ सकल
सभामिलवचनउचारै ॥ सुनहुसेषतमवचनहमारे ॥ फेरनदेव
हिमणवहराजन ॥ आवैगीउनकेवडकाजन ॥ करपरपंचलिये
वहचाहै ॥ नहांलडमनकमनहांहै ॥ नहांनमणआवनकिहका
मा ॥ हैनहांविद्यमानतनवामा ॥ ५७ ॥ दो॰ ॥ जाकीरूपाकराक्ष
मेंकोरमनकमविधान ॥ नहांनमणयहकामकीनहहनाहैभगवा

न ॥५८॥ चौपई ॥ कोरम न कछि नमांहि जिवावै । पारथ को हरि स
षा कहावै ॥ अर्जुन कों सरजीन करै छिन ॥ रोम रोम जा के कोर क
मन ॥ पांडव नहीं जि कारन इनमिन ॥ सभ परपंच ले न मणि के हित
अर्जुन इह षड हरि सकल न रकपल ॥ लेहि कपट कर मणि यह लोक\
ल ॥ तां तें यह मणि कों नहि दीजे ॥ हमरा बचन मान जिय लीजे ॥ स\
षा भाउ बडु चीन धरन मन ॥ पवन का उन है हरि अर्जुन ॥५९॥ दो
हरा ॥ इक छिन इड षन हि सहस कै अर्जुन को भगवान ॥ म्लन कन\
काहै रन बिषे पांडव सषा पछान ॥६०॥ चौपई ॥ अहां पांडवन बिपता
परी ॥ न न छिन आइ हम न महां हरी ॥ बहुत बेर इन का दुष टारो ॥ उ
र वा सा को आपनि वासो ॥ जिह अबवसर इन हर को धायो ॥ ता ही समै
महां चल आयो ॥ इन के सदा गुपाल सहाइक ॥ संकर सम के कर नइ ष\
षा इक ॥ मणि कों लेइ हरे यह सारथ ॥ तां तें हरि जिवावन न हि पारथ
इन तो यह परपंच रचायो ॥ पुंडरीक हम पास पठायो ॥६१॥ दो हरा
हहे विचार हइ सेषजी मणि बिन हरि कि ह काम ॥ हम मणि कों देवें\
नहीं आइ करैं संग्राम ॥६२॥ चौपई ॥ मणि दीये ने मरन हमारा ॥ तां तें
ग्रहम रहि इक वारा ॥ हम जिवावन लगे न वारा ॥ उन यह रच्यो
अपंच प्रकारा ॥ लोगन कों कर मिठ षवावत ॥ मणि के हित मन हि\
सषा जिवावत ॥ छिन मांही पारथहि जिवावै ॥ जो मणि हेत हियें बि
सरावै ॥ यह बिचार मन मैं ठहरावउ ॥ पुंडरीक कों फेर पठावउ ॥

न॰ श्रु॰ पंडीसों पुनवचन सेष कहि ॥ फेर ईहां दृम णादेन नही पहु ॥ ५३ ॥ दो
भा॰ हा रा ग लि श्री भा र ण पर्व लि ग्रष मे प ग्र षा न ॥ कवि र ह कर न पर न ष पो ध
२५८ वैं वा हि स न न ॥ ५२ चौ ५ ई ॥ पुंडरीक मंत्री चल आयो ॥ सकल स्वगांन
भाषसमझायो ॥ सुनइ वत्रुवाहन वलभारी ॥ देम नहीं मणनागवि
कारी ॥ इनकौं सेष कही वहु वानें ॥ पानन नाहि महां विषमानें ॥ सेष
नागमहि हो षन कोऊ ॥ इह बुद्धि मंत्री लिह सोऊ ॥ देम नहीं मणवि
न संग्राम ॥ भला होइ कीजै सो काम ॥ सुनन वत्रुवाहन क्रोधनम
ण ॥ पान इलषना सुनइमो वचन ॥ ५ सो र ठा ॥ श्रवतु हि हो सन होर
तु न हो पान इलषना ॥ नाम करौं त्रै लोइ कहौं तु वलनाग महि ॥ २
चौ ५ ई ॥ पुनव्रपमें हीन नाह मारी ॥ जो मणदेन हि दें हितधारी ॥ जो न
हि इनसों हम कछु कामा ॥ जो न हि देहि करौं संग्रामा ॥ नव कुल केय
हि नास करौं सव ॥ एक वान सों प्रलै करौं सव ॥ आना करी अलषन
माना ॥ चला वत्रुवाहन मरमाना ॥ पुंडरीक कौं साथ चलावा ॥ इ
कछिन महि पताल चल आवा ॥ निरष वत्रुवाहन पयाल इन ॥ मं
दिर कनक मणीमन संजुन ॥ ३ सो र ठा ॥ सकल समधी कनक की ज
गमगमोन अपार ॥ जहां तहां भरन भरे हि वें रतन भंडार ॥ ४ ॥ चौ ५ ई ॥
रतन कनक के वने पलंक कछुव ॥ कूलहि कनग कहिं शैल वीच सव
हेम रतन मणाष चित सरोवर ॥ निर्मल जल सों भरे महां घर ॥ सघ
अमल नागरी रजतन ॥ निरष नहीं भप भीन होत मन ॥ इक हीरव

सहस्र इक जोजन ॥ होत सहस्र जोजन इक नागन ॥ इकलौं वे सहस्र\
जोजन मैं ॥ एक सहस्र संचार तन विष मैं ॥ पांच सहस्र जोजन इक वि
स्तर ॥ इक सहस्र जोजन वट विस्तार ॥ ५ ॥ दोहा ॥ इक सहस्र जोजन
सपतन एक अष्ट परमान ॥ एकन हूं के दस सहस्र जोजन तन अहि
जान ॥ ६ ॥ चौपई ॥ इक अस्थल महां भुजभारी ॥ चलन सकत न वेगेस
षकारी ॥ एक नाग क्रीडा वन करहीं ॥ प्रफुलित वन अलिगन गुंजर
हीं ॥ फल दल कर संपूरन कानन ॥ परस तहां तन महां सुषपानन ॥
अरधुन मधु सरोवर राजत ॥ निर्मल जल सीतल छबि छाजत ॥ क
रत कलोल नाग नीय तिसंग ॥ अति विचित्र रहंद रनिय अंग अंग ॥\
भूषन गन मन हरत मई फूलमन ॥ नैत्र कटाछ करत मोहन मन ॥ ७ ॥ दो
हा ॥ काम केल हरषत करत युवतिन संग भरतार ॥ फूलन बीच\
हिंडोलत नव वसन साज सिंगार ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तहां ललाउ हेम के तोहैं
भरे अगर गन्ना सों मन मोहैं ॥ तहां करत क्रीडा युवतिन सों ॥ करत कलो
ल अनंद लपनसों ॥ जो रहत जल जन नर इक छिन ॥ इह प्रकार होत की
इत निस दिन ॥ भयकारी स्वरूप विकराला ॥ महाबली तन बडे विसा
ला ॥ निरष बन्नु वाहन अचरज मन ॥ जीवन फल देहि के सेमन ॥ म
ता है उन के प्राण अपारा ॥ देन सकहि शुक कों इक वारा ॥ ९ ॥ दोहा ॥\
प्रथम दैइन सों दीनता भरासों हम रन काम ॥ जो न देहि तिन सों युद्ध करि
पीछे है संग्राम ॥ १० ॥ चौपई ॥ यहं दीक सों करि विचारन ब ॥ सेष नाग\

अ·भ्र· सोंजाइकहोप्रभु॥ प्रथमेहमरादेहप्रणामा॥ पाछेमांगहुमनिअ
भा· भिरामा॥ चलेहोउपहुकसोविचारा॥ आएजहांसेसकोद्वारा॥ कंचे\
२५९ भवनसमानप्रकासा॥ षचनरतनमणमहाप्रकासा॥ अतिविचित्र
चित्रहुकीसाला॥ जगमगातछबिमहांबिसाला॥ नवकुलकेजोडना
गकुंवर॥ रक्षकवेठेराजद्वारपर॥५॥ दोहरा॥ भीतरदेषनकानको
तुराभलापहिचान॥ नवनपपहिलेजावहीआज्ञाकरेराजान॥१२॥
चौपई॥ नादेपुंडरीकनपद्वारा॥ हरिकादोबालकहैमारा॥ पुंडरी
कसेषहिपहिगयो॥ हाथजोरकेठाढाभयो॥ विनतीहमरीसुन\
हुनरेसा॥ दियेबभ्रुवाहनहिसंदेसा॥ नमस्कारतुमकोंउनदीनो॥
बहुमउहारदंडवनकीनो॥ मणतनमितनुमपहिचलआयो॥ तुम
पुत्रीरत्नमहिपनिवायो॥ चित्रांगननननअगनजरावन॥ रुदनकर
नव्याकुलविललावन॥५॥ दोहरा॥ मणगदीजेकीजेकृपापारथले\
हिजिवाइ॥ फेरदेहिंगेमणितुमहिंवचनसमयनिवाइ॥१०॥ चौपई
बोलेवचनसेषराजाना॥ पुत्रीसुनववचसमप्रमाना॥ हमतेंमणमा
गनपितुसारथ॥ वहतोभगतकृसकोपारथ॥ भारथमांहिसहार
करीरण॥ मनकछाउनहिहरिश्रवअर्जुन॥ सदाअधीनरहतनितार
धारी॥ पांडवकुलकेआज्ञाकारी॥ सहिनसकनइकछिनइनकोदुष
कोटकलेसमिराइहियोसुष॥ नहांनमणआवनकिहकाजा॥ जहां\
ठाढेनिमयीनहुराजा॥५॥ दोहरा॥ इच्छासोंसभजगरच्योतीनभव

बहुषसार॥ हरि होते मणमांगिय पहु पर पंचविचार॥९८॥ चौपई॥
तुलपलकरनबहुलसंसारा॥ सबविधकरनकपवनहारा॥ पारथस
षागुणलकहावल॥ सहितसकलतुषवेगजिवावल॥ जिनकी अपरा
सहितसकलछिन॥ आनाकारी रहत रैन दिन॥ होहदिसनलकलजहिर
नकेसें॥ महाभगलबरअर्जुनजैसे॥ पारथतुषहररहोनजाई॥ विपना
मगावेजतुराई॥ मनकेदेषसकैहरिपारथ॥ मणमांगनजिपकपरनि
रारथ॥९९॥ दो॰॥ लमरेजिपषारथपहे मणषसोरलेआदु॥ पहसं
देसलैफिरचलो पुंडरीकजिहनाउ॥१००॥ चौपई॥ पुंडरीकउभरलेगयो
सकलबन्धुवाहनकहिदयो॥ भाषेसेषनागबचजैसें॥ सकलहलानल
नायो तैसें॥ तनलसंदेसवालउवधायो॥ नानाकेहारेचलआयो॥ सभा
सेषकी अनिभयकारी॥ विषमरमानेनागविकारी॥ नमस्कारकरवैगो
आई॥ पारथकी कहिकथा सुनाई॥ आपनभयोमहांदुषगुरुकों॥ स
नदुहलांलकरलहोंलरुकों॥१०१॥ दो॰॥ मुहसमैकजीधरमगुरुगो
योरनबाप॥ विलारचीपनमानगुरुअगनजराबलआप॥१०२॥ चौपई॥
लमरीहलाहमारीमाला॥ पतितुषअगनजराबनगाला॥ आपमिलन
गुरुकोंअनभारी॥ तिहचेयहगुरुरिदेविचारी॥ लागोकरनअपनन
नबाला॥ अवणसुनीनवमणकीबाता॥ तिहनिमिमलमपहिचल
आयो॥ चाहेंमणलेपिलाजिवायो॥ आउनहोंफिरविनमणलियें॥
पहविचारकीनोगुरुहियें॥ हिमसोंदेहुकरदुउपकारा॥ माननीजि

अ॰प्र॰ ये वचन हमारा ॥ २४ ॥ दो० ॥ मात पिता के आप सों मरें नर्क कों जाइ ॥
भा॰ तातें तुम सों लरन में सब विधि धर्म जस पाइ ॥ २२ ॥ चौ० ॥ जहां पठयो तु कष्ट\
२५॰ पनो ताता ॥ तहां पठें तुम कों करि ध्याता ॥ सहिन हि सकों मात पितु सो
गा ॥ तुह करन तुम सों हम जोगा ॥ तुम पुत्री लागे प्रभु माना ॥ पारस्थ लागे
तुम हि जमाना ॥ हम रे जिय उपज्यो यह ज्ञाना ॥ इहं श्रीरद्धे है कल्याना ॥ ही जे
म एजी वे रणा पारथ ॥ कलि कों हम ले इनि रारथ ॥ फिर न जा इह लंगन हो
रा जाना ॥ जरू मरें यह गौर प्रमाना ॥ ५३ ॥ दो० ॥ से न तुला वड सेषजी
उव की नै संग्राम ॥ छिन महि नास करें सकल रवि कुल रहे न नाम ॥ ५४
चौ० ॥ तब न नसे षनर पति दे विचालो ॥ महा कष्ट जिय वस्यो निहालो ॥ पु
त्री स्वन हम रेंग रह्यो आयो ॥ हम पैने कन अरिहर पायो ॥ जिस हि चित्ता पूत्र प्रभु\
त्र्प्रवर ॥ कोट हि जन सम पर उपकारा ॥ हम सिर इह भाव देजमाना ॥ पुत्री
भगवन जराते गाता ॥ बालक महां नु इ अमह होई ॥ पुरु जग भला न भावै\
कोई ॥ इन कों हमा वडु विलारा ॥ वर्ने न है कलि विविध प्रकारा ॥ ५५ ॥ दो
॰ ॥ जो भगनी कों मारई सो हमा तिर होइ ॥ वह लोई जो इन करे इक स
हस अव सोइ ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ दो हि जा अब उपकला भगन ॥ दो हि श्रीपति को
इ कलुष भन ॥ वड्डु सें भगनल सन कों पारथ ॥ मणा रे हां प्रर वैलि हसा रथ
भगनहि की रत हो इह मारी ॥ सेष नाग यह हरि रिंद विचारी ॥ नव कुल व
र नाग न सब तुलाय ॥ सेष रथन पहि सभ चल आय ॥ वचन कहे ता सकि
नाग हि प्रति ॥ तु न इ अल यह वनी कद न प्रति ॥ स्य पन व त्रुवा हन व\

498

लवाना॥ महासूरत्रैलोकनिधाना॥२२॥ दो॰॥ अर्जुनमाखोरणवि
षेमणमांगलहमपाहि॥ कारनकरफिरदेहिंगेकपटकरैंगेनाहि॥२३॥
चौ॰॥ हमसोंकरनसमवचपहप्रण॥ पिताजिवाइपगाऊंफिरमण
नांनेंभलानहींसंग्रामा॥ मणकोंदेहिकरहिशुभकामा॥ जहांग्राइगाडे
गिरवरधर॥ मणकोंदेहिभलोइहअवसर॥ जहांकुसलविधुवनपनहो
ई॥ तहांकपटकरमकैनकोई॥ मणप्रशालइनकोंअवरीजै॥ पारउप
कारमजसजगलीजै॥ यनहमपाककुटोषनकीना॥ कपटनकलो
कन्हहिदीना॥२४॥ दो॰॥ उनमहिंहृषनककुनहींजोहममणनदि
देहि॥ महावलीवभ्रुवाहनजुद्धजीतमणलेहि॥२५॥ चौ॰॥ वहुरोंगरुड
हंसकोवाहन॥ आवेगाकरक्रोधमहामन॥ कवनकरैतिनसोंसंग्रामा॥
सोकहिमोहिवतावहुनामा॥ सनमुषकवनलरैतिहजोधा॥ जवआवै
हरिरणकरक्रोधा॥ कहैसभासुनसेषनरेसा॥ देहिनहींमणकरहिक
लेसा॥ गहहुसमेतवभ्रुवाहननृप॥ संगसेनलेसकलनराधिप॥ तोह
मवामणकोंनहिदेहीं॥ जीवनफलकवनपहिलेहीं॥२६॥ दो॰॥ अर्जु
नकोंहरिदेवहींएकनिमषमहिआन॥ नहीजिपावनमणतिमितक
पटरच्योभगवान॥२७॥ चौ॰॥ मणलीजीचाहतनेंदलाला॥ हमसोंक
रिपरपंचगुपाला॥ कुससकतनहिसषाजितावै॥ सभमिसकरजग
कोंदिषरावै॥ ऐतनहींमणहमरहवालक॥ अपवानुकरोतनलका
लक॥ अपनेविषकरहमनिजमरहीं॥ विषमरयुद्धपरसरकरहीं

विछुरन मारै करहि न नासा ॥ पुनि सर जीन होंहि मणि आसा ॥ जरवर
अ॰ ग्रं॰ क्ति न महि नास होंहि सब ॥ प्राण अधार होहि नहि मणि जब ॥ ३३ ॥ दो॰ ॥
भा॰ विष आपन तन नआइ जब मणि रेष हि नल काल ॥ सीतल तान बहोतन
२५१ न विष की अगन विसाल ॥ ३४ ॥ चौ॰ ॥ कहां कार्ज हम राजुन सों ॥ जी
वै किधों मरै पारण सों ॥ जन होइ हम रे किह काजा ॥ पुण्य प्रकास न धर्म
न राजा ॥ नहीं करै म षनो हम कहहे ॥ सब को उ अपने हाथ कों चाहै ॥ रूप
वंत कास षाफाल गुन ॥ काल होइ बैकुंठ जाइ पुन ॥ हरि को भगत न
हां वल पारथ ॥ तिन सों हम राकछुन स्वारथ ॥ भाग हि अपने जीव हि म
रै ॥ कर्म आपने दूवैनरै ॥ ३५ ॥ दो॰ ॥ जीवन प्राण अधार मणि देहि आप
ने हाथ ॥ कोर जतन पुनक न करहि लेहि हीन नाताथ ॥ ३६ ॥ चौ॰ ॥ दिए
अधीन होइ कन तरी जै ॥ जतन अनेक जु कर लीजै ॥ कोर वार मर जीव ह
विष पर ॥ जो यह मणि प्रताप हमरे वर ॥ जो ऐसी मणि हम ले जावें ॥ पुण्य आ
लपि रकुवन जिवावें ॥ इसी मत कल ब सों कीइन ॥ मन कहो न मणि व
न करजी वन ॥ जो यह मणि हमनें इ न लई ॥ नागन की नि हचे मन भई
देहि न मणि जो लौ तन प्राणा ॥ मन कसे ष वच समप्रमाना ॥ ३७ ॥ दो॰ ॥ ना
गन रापन चाहि ये दीने सकल उठाइ ॥ यह मणि कोंदे वै नहीं मन न हो
ता स करा इ ॥ ३८ ॥ चौ॰ ॥ सब अहि के मणि प्राण अधारा ॥ देहन हीं हठ
हिये विचारा ॥ जो लम चाह न हो मणि दीनी ॥ जान बूझ हम रीष न कीनी
अप मैल मसों जु द हमारा ॥ मणि देव न कों रिहा लसारा ॥ पाके जु दव

ब्रुवाहनसों ॥ जबलगप्राणदेहिनहिमणसों ॥ अपनीइछ्यासों
जगताला ॥ अर्जुनकोंकीनोरणघाता ॥ भारथमहिकैरवमारेस
भ ॥ हनुमानलईपांडवलव ॥ ४९ ॥ दो० ॥ हनुमानीपांडवोंहोव
सकलजगमान ॥ जोइनमांगीतुकनहरिकहीजनकीवान ॥ ५० ॥
चौ० ॥ पूरब्बरणयहजनतवनायो ॥ महाबुलणहरिभावहनायो ॥
महाकवचराहनमघकीगन ॥ मरनमलकहिसोरजगतपन ॥ ए
भीसकलफिरेगावाजा ॥ बांधहिगेहयकोंवडराजा ॥ हैहैनहांपांडु
सुतनासा ॥ गर्ववचोजिपहोइविनासा ॥ इनकेहेतहुजसरचायो ॥
पहीमंत्रहरिहियगहरायो ॥ रिपोडलाबलहरिअर्जुनकों ॥ सोबल
कीनलघोयारनमों ॥ ५१ ॥ दो० ॥ नासकरहिजोपारथहिकोअसावल
वान ॥ नामवभ्रुवाहनकह्योसमइछ्याभगवान ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ अश्वलम
णहैश्रीभगवाना ॥ सोयणमहिडांडेसविधाना ॥ जोछिनइयमकार
हितुपाला ॥ जीवइंडेअर्जुननतकाला ॥ तातेंयहपरपंचरच्योसव ॥ जा
नवकमणदेहिनहींअव ॥ जोहरिकृपाइहअनुसरहीं ॥ सावधानपा
रथअवकरहीं ॥ चमत्सेषत्रलिवचनउचारे ॥ देहिनहींमणप्राणअधारे
नागइवचनकहेरिसभाई ॥ सरनतैतालीसमप्याई ॥ ५३ ॥ दो० ॥ इति
श्रीभारथपर्वणि अश्वमेधपर्वाध्याने ॥ कविहरनरपरनपयोधाउवेला
सिसमाप्तन ॥ ५४ ॥ चौ० ॥ बहुरस्यवनसुनकथारसाला ॥ जनमेजयप
रध्यानविसाला ॥ समनागनकेवचनअवनसुन ॥ सुधतेंवोलेसेवना

ग्रं·ग्रु· गहुन॥ सभकोऊ बाहत अपने स्वारथ॥ होत हुत नस जगमैं परमार
भा· थ॥ जो वांछे परको कल्याना॥ सो इ जगत महि पुरुष प्रधाना॥ यह जो
२५२ देह अनित्य कही जै॥ तां तें परकारज करली जै॥ यह प्रकार सभ वेद
बखानत॥ परकारज सम औरन मानत॥ १॥ दो॰॥ कवित कर्म जो हो
वही जहां उठ ननहि जोग॥ परकारज उर धारि धरी वेद लखी रत लोग
२॥ चौ॰॥ संग्रह करत वस्तु सब धाना॥ सुफल होत जावत परकामा
मोन हि सिद्ध करत परकाजा॥ पुग प्रताप जिह कृतमु समाजा॥ सोइ ब
स्तु सुफली जगरही॥ जिह सों परकारज अनुसरही॥ जिह तें होत
न परउपकारा॥ ताकी निंदा करत संसारा॥ इत लोह थी चमहां वडराजा
देह दियो राषी कुलनाजा॥ देत नहीं तुम मम तन सरीर हित॥ नृप तन
देन से नज जगमैं कत॥ २॥ दो॰॥ हुकमो गत नृप कपोतहित काटरि
पो तन मास॥ इच्छा कीनी धर्महित जगत जस भयो प्रकास॥ ९॥ चौ॰॥
प्रान समर्पत परउपकारा॥ जो है महां पुरुष संसारा॥ इक तुम रोम क
रो मत केहित॥ मांगत नहीं प्रान सम करु इ विनत॥ मांगत मत्त अर्जुन
निमित्त स्वारथ॥ फेर देहि गे कर निज स्वारथ॥ विलत भगत पारथ भोगा म
गत विधं सहोत न सम नाना॥ सावधान वांडे रत प्रीपत॥ मत्त मांगत दे
खत तुम री मत॥ करत परीक्षा करत हमारी॥ जात पतित कि धौं परउप
कारी॥ ५॥ दो॰॥ पारथ कल विमाव तेक कुनलागे वार॥ मत्त मांगी
रीनी न तुम निंदा है संसार॥ ९॥ चौ॰॥ तुम री निंदा करत है लोका॥ कत

भूलहुदीजेमगणजोगा॥सेषकहैसुननहोश्रुहिसेना॥हृदैविचारहृह
मरैवेना॥लुमराश्रमसकरैसंसारा॥तीननलोकमहिहेअधिकारा॥सभ
मेंबुरीलोगश्रपकीरत॥सुनपठईसीतावनरघुपत॥तीचरजकनिंदा
सियकीनी॥सुननरामवनकोंपठईनी॥जद्यपितीनलोकपतरघुवर
नाहिनश्रवरकोऊनिहसमसर॥५॥दोहा॥जद्यपिचोदहभवनकेपति
पालकश्रीराम॥सियकीनिंद्याश्रवनसुनदियोनिकाराधाम॥६॥चौपई॥
विनदूषनसियकोंवनवासा॥दियेरामजगश्रपजससाभासा॥महाविवो
गसहोरघुनाथहि॥उनमनभलेसकलजिहसाथहि॥जद्यपिरामजग
नकरतारा॥तिनश्रपजससहरहृदैविचारा॥हमसमजीवश्रमलभरे॥
तीनलोकनिंदाहमकरे॥श्रागेभपवडतचलगए॥परउपकारश्रमरज
गभयो॥नाकाजससहसथिरजगमांही॥श्रमरभयेमरश्रकनेउनाही॥९॥दोहा
रा॥यहलोहेहश्रनिलहैकरलीजेउपकार॥मगणहेजगनसलीजियेनही
लुनरकउवार॥१०॥चौपई॥कलससभामहिश्रपजससहोई॥हमरीकीरतक
रैनकोई॥जीवनश्रपकीरतजगकरई॥अपकोरनरकमहिपरई॥नर
कसरगमहधकोउनजाने॥जसश्रपजससुनसभपरचाने॥मगणहीपरे
हुजसश्रपारा॥प्रगणहोइजननेकारा॥पुत्रीकीहमानहिलागे॥कलष
मिटेकीरतजगजागे॥होइप्रसन्नवसुवाहनमन॥लषउपजेचितश्रंगनके
नन॥११॥दोहा॥मगणदीपतेगुणसकलविनदीयेंदुषफल॥पुत्रीविधवा
होइगीसमोनाइनहिसल॥१२॥चौपई॥विधवाधर्मकठनदुषसोगा॥नि

उ॰ श्र॰ मध्रनवाद नविरह वियोगा॥ ज्ञनउपवासकरे तनसाधे॥ संध्यासिम
भा॰ रनकूलसुसाधे॥ कीरयमंजनकथासंपूरन। विपवापर्म कउनदुषपू
२५२ रन॥ विनाजरे तनयमकह्नुषहोई॥ विपवापर्मस हसदुषसोई॥ जोतुम
नहीरेद्रुगेयहमन॥ दुषपावैउतीसुजमननन॥ उतीदुषसुजसहोन
जाई॥ मानभंगवालकफिरजाई॥ ५॥ दो॰॥ जाकोसषासमतनकपलो
दुषमानहिजगमान॥ गरुडपदाव हिक्रोधकरहोहिनागसमथान॥
६॥ चौ॰॥ हमममणदेडवेनुवाहनको॥ भलायहै विचारसुजमणको
भागेसमफलेडनमदोऊ॥ भलाजानिपैवेकीजेसोऊ॥ सुनेनूपसेषकेवचन
वमसव॥ बोलेचारनागसरिषनव॥ एषकष्टएकवरनोनिहनामा॥
रकयभुराषगरलकोपामा॥ इतिएककर्करवचनउचारा॥ सुनिपवरार
क्रोधमिपधारा॥ चौपानक्ककजगविषाला॥ चारोंकहनसेषसोंवाला॥
७॥ दो॰॥ कहांसमफहैसेषतमवाहनहमरोनास॥ हमरीजुवतिन
रवैसोंवाक्कभोगविलास॥ ८॥ चौ॰॥ जोतपमुपनीचमजरावै॥ तो
रपरामनइस्थिरपावै॥ सेनाविनभूपनकिहकामा॥ रक्षाकरेनपरग
वहराजा॥ कतिनमश्रेसीनियवहरावो॥ मणदेकेसभचपमरावो॥ देष
हिवहवैसेंतहेमण॥ तिनकोनासकरहिमनछिनरन॥ कवनपुरुष
हमरीमणलेवे॥ सोनिहचेंनमपुरकोंसेवै॥ देहिनमणजोलोयहशाणा
जजमरहिगेसमप्रमाना॥ ९॥ दो॰॥ हमहिहरावोकसमेंकण्योकंस
इरसोर॥ गोकलवक्षचरावहीपहमानैसभकोर॥ १०॥ चौ॰॥ मगमोक

ननवनीनचुरावन॥ हपरहीचोरीमनभावन॥ गोकलघरहअही\
रकेवासा॥ छलकरकीनोकंसविनासा॥ हरपतजरासिंधुतेभागा
सरनजाइसागरकीलागा॥ तिहअहीरतेंहमहिहरावइ॥ करविवे
कनहिमनसमझावइ॥ मातलोकमहिमहासंतापा॥ तहांनमणप
ठवहिवहुपापा॥ उपजतविनसतहैंवहुलोगा॥ शीघ्रहिमरनहोरव
इलोगा॥१९॥ दो॰ ता॥ पुरनआयुनभोगहीजोववचवेदप्रमान॥ एकमर
तवालकसमैइकयुवजोवनवान॥२०॥ चौ॰ ई॥ पुरनआयुनभोगेको
ई॥ अवववइकरहिआयुवरहोई॥ शीघ्रहिहोतलोकवसकाला॥ त
हांनमणपठवहिभूपाला॥ ऐसीवलआइउनहाथा॥ पुपनिपाइले
इतिहिसाथा॥ जिहमणवीचहांहिगुणऐसे॥ हमकोंदेहिकेमणकै
से॥ नितप्रतिउहांकोइजननमरहीं॥ मणसोंवहुतसजीवनकरहीं॥ ऐ
सीवलफेरनहिदेहीं॥ हमतेंमणपहछलकरलेहीं॥२१॥ दो॰ ता॥ कै
सेंदेहैंफेरमणऐसीवलपछान॥ मृतकसंजीवनिजानमणफेरन
देहिरजान॥२२॥ चौ॰ ई॥ ऐसीमणआवैउनहाथा॥ मृतकमनुषजिवै
जिहसाथा॥ वलअपुरवपहदुर्लभमन॥ आवैहाथमनुषकेलोगन॥
फेरनदेहिकावनिजप्राणा॥ मनननदेहिहतनसेषरमाना॥ मणमण
पमरतेहमनांही॥ जोमनगईमरहिछिनमांही॥ मानसमरहीअपने
कालम॥ हमममरहैंविषमरतंमाला॥ विषवउनमारपरसपरलरहीं॥ वि
षज्वालासोंतनछिनमरहीं॥२३॥ दो॰ ता॥ जोतमहमरारामजेहेतोम\

505

ज॰ग्र॰ णाहेवोनाहि॥ जोहमसोंनहिकाजनोमणारीजैनरपसाहि॥ ४६॥ चौ
भा॰ ई॥ सुनहुसेषनसवशहमारा॥ देहुनहींमणभलालसारा॥ मानलो
२५८ ककिलविषकोधामा॥ नहांपवडूमनरुवननहिकामा॥ नरककुइहौ
रननहिजहां॥ पनिव्रतनारएकनहिनहां॥ जहांसकलोगहैंग्रैसें॥
नहांदेनहोपद्ममणाकैसें॥ हिनरोषीजड़बेरनलोगा॥ मदपानीनह
मणानहिभोगा॥ जहांरजसलनुवनीकेकर॥ भोजनअरुजलपान\
करतनर॥ ४९॥ दो६रा॥ दिनवंनीग्रहकम्मकापिताजनपतिलिहदेहि॥
पहमणाजोगननहींनहांसेषश्रवनसुनलेहि॥ ५०॥ चौ० ई॥ जहांलेहि
कंन्यापनलोगा॥ दानदेनवरजनवडूसोगा॥ नीरपजाशावरजरहाव
न॥ कंन्यादेनेविरानलगावन॥ जहांनहांन्रवनिनमैंलाला॥ विभचारन
तियघनरपरकामा॥ फिरहिजहांकामनिपरद्वारा॥ सेवतपरनरलज
भरतारा॥ जहांग्रपानविवेकविचारा॥ चोरीकूवकुसंगअपारा॥ जहां
श्रनीनपिहनग्रतामा॥ रजनमगुनपूरनअभिमाना॥ ५१॥ दो६रा॥ इन
सौगुननेंग्रापुडनकुरनकरनवडूपाप॥ तातेंरहीनहिमरतहैंडप\
जनमहासंताप॥ ५२॥ चौ० ई॥ पहमणाहेननहींउद्दजोगा॥ फेरनदेहि
श्रुप्रवइलोगा॥ वहुरसेषगुषवचनउचारे॥ सुनहुनागनुमसत्वाह
मारे॥ उग्रीहोपमहांअतभारी॥ पनकंन्यासुनहोनउषारी॥ हरिकोभ\
गतसषानिनपारप॥ जीवैसिद्दहोइपरमारथ॥ महाग्रसग्रहोइवंर
लाला॥ तुमपानसनगवटनविसाला॥ हरषनहैहैकंलीमाना॥ अनु

हिलवलत पर्मकौ नाना ॥ १९ ॥ दो० ॥ पहसभइ रघवहोइहीवहांही\
त्रिपेश्रान ॥ सबमनकौं देवे नहीं ध्रुवत्रुदग्धलान ॥ २० ॥ चौ० ॥ पहव
नकहियालनकेसाथा ॥ सेषहई मनवालक हाथा ॥ चलोवत्रुवाह
नलेमनकों ॥ करप्रणाम वासकिराजनकों ॥ ववकुलनागसभान
नकालक ॥ मनलेगयो सेषकोवालक ॥ क्रोधतसम विषधरइवधा
व ॥ भूमिसिरपरक महांरिसाव ॥ ऐसो नाइव भ्रुवाहनकौं ॥ मौंइमल
माह्लपरललनकौं ॥ लपटरहे अहिदिगहिसचारे ॥ दीरघनभसभा
नभयकारे ॥ २१ ॥ दो० ॥ निरषवभ्रुवाहन प्रथम विनती करी अपार ॥ व
कमहूरनमणमुकुहिहीनेहटेविचार ॥ २२ ॥ चौ० ॥ महिनसकोंमाला
पितश्रापा ॥ पहाइषनलममणसंताप ॥ लमसोंकयेंदीननमालानें ॥ ना
नगोइलागनहैजानें ॥ फेरदेउ लमकों लमरीमणा ॥ परउपकारविचा\
रद्धनिजमन ॥ एकमहूरनमणसोंकामा ॥ फिरपहूचाऊं मणलमया
मा ॥ लमरीमणछलकरनहिलेऊं ॥ पिताजिवाइफेरलमदेऊं ॥ समव
चनमानियेंहमारा ॥ तभलेंभ्रुवहपरउपकारा ॥ २३ ॥ दो० ॥ बालकवें
वालकललनदूभलाकसोनहिलोइ ॥ जीवनप्राणअपारमनमनलेचल
योमोह ॥ २४ ॥ चौ० ॥ छिनमहिभसमकरहिहमपललमकों ॥ वलदिष
रावनहोसिलहमकों ॥ हमललमसोंडहिनाकोनाना ॥ मोंलेंलमतनकर
हिनत्राला ॥ मनहीजैछाइहिलमप्राना ॥ मानरकरोंनाससमसाना ॥ कुं
मोवभ्रुवाहनवोल्योनव ॥ नवकुलनागनासकरहौंअव ॥ हमललपमा

ज॰ सु॰ घगनलपहनाला॥ सेषनाग पुत्री सुकमाला॥ यहजिय जानतुह
भा॰ नहिकीना॥ जीवदान तुमकों हम दीना॥ २५॥ दो॰॥ उलटकहहन
२५५ हो यह वचन सुहृदकार दृग्ध बआइ॥ कीनाप तुषरंकार लव सनसुष
भयो रिसाइ॥ २६॥ चौ॰॥ नागकुमर निसुन वचन उचारे॥ यह इक्षापी
हृदे हमारे॥ नानै गोत्रक करों सुवनासा॥ पतमुरू कर हिलोग उपहा
सा॥ तुम मन महि समझी यह रीला॥ समै विनास तुद्ध विपरीला॥
तुमनो सो वनसिंह जगायो॥ तौंते काल निकर तुव आयो॥ तो चितं
गन सुनहि कहाऊं॥ नवकुल नाग परनि सुरक्षाऊं॥ इहवां रच्यो हु
सरो अप सुव॥ अगनन जराऊं नागकुल तुसम॥ २७॥ दो॰॥ इहांक
रन मष पर्न सुन जब तिल अगनन जराइ॥ इहां जराऊं व्याल सुनपुद
कर उत्र वआइ॥ २८॥ चौ॰॥ यह वच कहे वचु वाहन जब॥ सुन कोपे
पेन वकुल के अहि सब॥ सुष सों देहि स्वास फुंकारा॥ वरषा करहि म
हां विषधारा॥ दहदिस गरल अगन उपजाई॥ महाभयानक कहीन
जाई॥ सुषभर भरमार न विषलागे॥ लरन निसंक क्रोध चितजागे॥
लागे जरन सैल गहवर वन॥ निरष विचार किषो बालक मन॥ वक्र
संभार वत्रु वाहन नव॥ आपवीच वोफेर चमक छव॥ २९॥ दो॰॥ पर
सकस्तोन हि गरल कछु वालक उरप्योनाहि॥ चक्र फिरै चौफेर वि
घ उलटपरी वनमांहि॥ ३०॥ चौ॰॥ लगा जरन कानन हु सकल ज
व॥ किषो वत्रु वाहन विचार न व॥ हिये हढने रेव नन पांचसर॥ लिय

संभारबालकनिहअवसर॥एकबानसंकरजोरीना॥तेउचिला
रबालकरलीना॥मेघबानरंहजोदिया॥तेउसंभारबालकरली\
पा॥सूरजहीनाअगनविसकसर॥सोउविचारलिपोअपनेकर॥
हियोहूनामारुननमवाना॥काढतेऊसिहकरवहराना॥४१॥दो
हा॥सुधाबानससिदियाया यहपांचोसरलीन॥विषसनयुधकस
रकहमोबालकयुद्धप्रवीन॥४२॥चौपई॥मिटगईसभेगरलकीज्वा
ला॥बालकसरपाअतिविकराला॥भयोवज्रबाहनसविधाना॥
क्राशोपवनमेवकोवाना॥विषअहअगनपकरीकीनी॥हारपला
समांहिसभहीनी॥लागीजरनवमूनागनकी॥महाभयानकगरल
अगनकी॥उलटपहीपयालबनमांही॥जरतिवागडुमलतानहांहीं
मंदरकनककनलाउअपारा॥जरनहलाहलअगनसंकारा॥४३॥दोहा
कजाचोवंशीनगरजरनिसमलपयाल॥नागहूकीपतनीजरीवारी
अगनविसाल॥४४॥चौपई॥काढ्योबहुरबालकसरसंकर॥कसमा\
सोनागनसेनापर॥सेनासकलकरीसंघारा॥बचोनकोउनागरक
वारा॥एकनकेभुजसीसउतारे॥एकनकेकरपगकरडारे॥मस्तक\
युकरसमेतगिराए॥मूर्छितकरअहिपरलपठाए॥सेनासकलना
सकीनीलिन॥तबकुलपकसेसराजाविन॥हलहआइकहोअहिथा
मा॥महांहोतनागहूविश्रामा॥४५॥दोहा॥नुरिअपएउनभागवहू
जोउहूतेलिहठौर॥हलतजुबलिनसापनेछरसापतिहठौर॥४६

509

न॰ भ्र॰ चौपाई ॥ लपटेइहतेपकवंदनवर ॥ पकनागपेअगनहोअपर ॥ जोअ
भा॰ हिवसतनसरोवरमांही ॥ हैइकअसभचलेनहांही ॥ देखोआइवअ
२५६ वाहनरन ॥ महाप्रकासहसरोदिनमण ॥ लपनवानहै लिपोधनु
षकर ॥ निरभपगादासरमहांवर ॥ नागइअपनीचमू निहारी ॥ महा
बलीबालकसभमारी ॥ कुपेनागसुषविषहरषावन ॥ फूंकनतास
अगनउपजावन ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ फुंकारदियअहिगरलसुषकीनीअग
नप्रकास ॥ महाकवनजिहबाणसोंहोहिकोटनरनास ॥ ८ ॥ चौपाई
मारुनवानलिपोबालकपन ॥ काटअसरोपणकियोपनुषगुण ॥
काउदियोसनमुषविषज्वाला ॥ मारुनसरपाअनिविकराला ॥ व
रुनाविषउडचढीप्रकासा ॥ मानलोकवनकियेविनासा ॥ जहसंग्रा
मकियापापाअर्जुन ॥ लागीजाइअगननाहीवन ॥ जरलभपसभरूर
कवंधा ॥ हपगजरथजरउडीदुगंधा ॥ इंद्रवानवालकपुनमालो ॥ ग
रलअगनकोतेजनिवाल्यो ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ क्रूरनसरअगननभयेमेव
वृंदपरमान ॥ नासकरीअहिसेनसववालकअतिवलवान ॥ १० ॥ चौ
पाई ॥ रोमरोमनागनकेवाना ॥ लगनभयेसभभिनकेप्राना ॥ पुनपि
लआएनागअपारा ॥ होतेजोनवकुलसिरदारा ॥ इकइकसापकोटि
टइकसेना ॥ वानकककहीपरननहिवेना ॥ चढचढआएअहिनसवा
रा ॥ भागेसेनमराइअपारा ॥ नवमीकेरवडेरनवआए ॥ नवकुलअहि
सवमहांदिसाए ॥ पिंकलीवेरनागअतिक्रोधे ॥ विषवरषावनअहि

मुषमोषे ॥ ५५ ॥ दो० ॥ विषज्वाला दह दिस भई क्रोधे नाग अनेक ॥ द
कवैक्वोडे पांच सर बालक कछु ला विवेक ॥ ५२ ॥ चौ०ई ॥ परे चक्र नाह
नक्यांई सर ॥ विषज्वाला अहि उडे गगन पर ॥ गरल अगन अपनी सभ
मारै ॥ पन न कछु कर धरनी पर डारै ॥ ओर ओर रहै परे वास सभ ॥ चिंनाउ
पनीओ रनके नव ॥ डाढे कुनै नेउ मणधर के ॥ पलोघ डगले वीचस
भनके ॥ मारे सकल कल्लोन हिवासा ॥ एक न कोग हि पवे अकासा ॥ ग
गन सम लअक्षार न भपो ॥ इछन परे सूर न भक्षपो ॥ ५६ ॥ दो० ॥ क\
परतें गिर धर न धुव ढीर ढिनाग अपार ॥ गिर सम मान है रेह जिह सव
दकरन भ षकार ॥ ५४ ॥ चौ०ई ॥ लागे गिरन नाग तिह रन पर ॥ जहवा
देषे कुल जुधिष्ठिर ॥ देव पराक्रम बालक को अति ॥ धन्य धन्य मुषक
है जगनपति ॥ मार नाग दह दिस कर डारे ॥ गरन सिंह जिम सवर उवा
दे ॥ इन सेष पहि जाइ पुकारे ॥ नाग वत्रु जाह मसभ मारे ॥ उघम कलो से
घर पर न को ॥ रहि हो लोष वत्रु वाइन को ॥ सेना अव रहो इन हि पाना
राजन होइ च षू विन थाना ॥ ५५ ॥ दो० ॥ सेना विन रूप काज किह हो
इ पराक्रम हीन ॥ घइ विचार करउ गवलो सेषनाग परवीन ॥ ५६ ॥ चौ
ई ॥ पापो अपना कस्या नाग सव ॥ ववे सराषों निन हि जाइ अव ॥ इ
धुंधनाम नाग तिह आयो ॥ सेषराज प्रति वचन सुनायो ॥ इनमैं तुम
मैहो किह काजा ॥ तुम तो सकल नाग को राजा ॥ तुमरा वचन अहिन
नहि मानो ॥ बाल पराक्रम को नहि जान्यो ॥ ऐसी सेना है उष जोगा ॥ सु

अ॰ग्रं॰ पेभलेग्रैसेषलतोगा॥ कालरूपवालकभपकारी॥ जोलमरीसप
भा॰ सेनसंहारी॥५७॥ दो॰हा॰॥ वालकसनपुछआइनहिदेषइइहेलगाइ
२५२ फुफकोंग्राहारेइतमवालकतोषोंजाइ॥५५॥ चौ॰पई॥ चलतसेषको
वरजरहायो॥ ग्रातालेदुर्बुदसिद्यायो॥ ताहीसमैवेगरणगयो॥ धा
वतनिरषमहांदुषभयो॥ मनकपरेभूअंगनिहारे॥ इकताइलतू
तमनवारे॥ जोग्रहिवचेवज्रवाहनमें॥ हारपरेविद्धलहैरननें॥ ताग
जीनलेगोवालकमणा॥ चिंतमानग्रहिसकलपुननपुन॥ जोपहक
पालनैगुणगावै॥ सुकहोइनिरभयपदपावै॥५८॥ दो॰हा॰॥ इतिश्रीभा
रथपर्वतलोग्रंथमेपव्याध्याय॥ चौ॰ताली तमध्याउ ४२ इतिकथोपवा॥
५९॥ जैमनउवाच॥ चौ॰पई॥ जैसुनकहेहसजननेजपधन॥ वद्दरकपा
लनहोनपदर्षन॥ जोग्रहिइवरेपेसंग्रामा॥ मंत्रटपोतिनदुर्बुपनामा
पगलमराजीवनजगमांही॥ तमतोवलसकसोकछुनाही॥ सेना
नागनासभईग्रनगन॥ सेगयोजीनवज्रवाहनमन॥ वद्दनववचत्र
णगयोतल्यारा॥ परपंचसहैनपतलल्यारा॥ जीवनमलसकल
मणहीनी॥ तमरेछपकीमनसाकीनी॥६०॥ दो॰हा॰॥ मंत्रकसोहोहित्र
सोंसेनकसोसंहार॥ भलानवांछेचमत्कासोनपनजइविचार॥६१
चौ॰पई॥ जिहभूपनकेपहमनआवै॥ ग्रपनीसेनानासकरावै॥ ल
मरीग्रानाविनमणहीनी॥ रनमहिग्राइसहारनकीनी॥ जोरणवि
षेरहांचलग्रावन॥ सोकछुरहनमानजसपावन॥ ग्रैसेनपकीसेव

नकीजै॥ कलिकों जगमहि अपजसलीजै॥ वचनकहै दुर्जोधनतेना
रुमनमोसनकहैसभवैना॥ इकमणागईद्रुपदसुताना। अबकसमकहो
हकीजैयाना॥ २॥ दो॰ गा॥ वचनकहै दुर्जोधनवहुतचड़आनमननलाइ
अर्जुनतोजीवैनहीकीजैसोइउपाइ॥ ५॥ चौ॰ ई॥ सोविधकरोजिवैनहि
पारथ॥ जगजसहोइसिद्धसभस्वारथ॥ नृपहमकोंनकरैउपहासा॥
सिद्धहोइप्रणपुरवैआसा॥ नातरतनमरीरहैनलाजा। हांसीकरैलोग
पुनराजा॥ पुनसेनाप्रवचनउचारे॥ कहोमंत्रहमदासतुम्हारे॥ जोतुम
पहकरिहोउपकारा॥ हमसेवकतनमनधनपहमारा॥ जोहितमनपहिया
नपघाला॥ नवकुलहमसेवहितनकाला॥ ५॥ दो॰ गा॥ वचनकहै दुर्जो
किपुनकहाइचलहुतुमराज॥ जिहविधपारथनाजिवैसोइकरनहों
काज॥ ६॥ चौ॰ ई॥ समुदवीचइकठौरबनाई॥ हमतमउहांमिलहिगेजा
ई॥ अर्जुनमीसलाउगहितनछिन॥ पारथजिवैनहीपुनतिसविन॥ घर
वचकहिदुर्जोधचलेनव॥ अबरचलेअहिसमुदअोरसब॥ दुर्जोधरनव
हिआपनभयो॥ पातालकालनहांचलगयो चित्रांगनअरुकुंतीयाला॥ तो
वननहांकरनविलपाना॥ कुंतीगोदविषेअर्जुनसिर॥ दुर्जोधनगयोनहां
इनउतफिर॥ ७॥ दो॰ गा॥ कुंतीअरुचित्रांगनागिरीमूरछाहोइ॥ जैसीद
शाकुलसकीसभावँनसोइ॥ ८॥ चौ॰ ई॥ दछनपलोकिसहिकोंयाला॥
अैसेंपीइछानैरलाला॥ योंहीआइवभोसंजोगा॥ देखोमाहिनकिन
हूंलोगा॥ लियोउठाइसीसअर्जुनको॥ परनकसोपनोरथमनको॥ सउ

नाव

म॰ भ्र॰ इवीचलै राखो सीसा॥ ऐसेंही भावत जगदीसा॥ वैदे जो रथचक्र अरि
भा॰ नहीं॥ विषम तो रहा हनघीनहीं॥ वालक मरण लखो पोहर षल मन॥ पा
२५८ रथसीसनरहृपलेरन॥४॥ दो॰॥ भयोवज्रवाहनदुषितजियडपनो
अतिसोग॥ तहभगवंतप्रकारईपुनयहदियोवियोग॥९॥ चौ॰॥ यह
कारजसभभयोनिरारथ॥ सिरविनमरणआवैकिहस्वारथ॥ कौलनरइ
षडपजोमनमांही॥ सिरविनपारथजीवैनाही॥ अवजीवनकीरहीन
आसा॥ सोचतसभसीनलभरसासा॥ कुंतामानाअरुहवियोगत॥ मूर्छितथ
रनपरीआकुलअति॥ दुषितवज्रवाहनमनभयो॥ मंत्रीकोतुलाइतव
लयो॥ तनदुखसविवरस्यामभगवाना॥ महांतुडकरमनउरआना॥११॥ दो॰
हा॥ जिवैनअर्जुनसीसविनमरणआवतकिहकाज॥ आइवन्याहैकालअ
जमानपिताकीलाज॥१२॥ चौ॰॥ नहिजानौंकोसिरलैगयो॥ कहांकरौंदी
रघेदुषभयो॥ सभराजनकेसचिवअपारा॥ मिलबैठेसभकरतविचारा॥ र
पनहेंसधुनसचिवप्रधाना॥ जिमविचारतिनवचनवषाना॥ यहतौहै
नागनकोकामा॥ मणआनीहरजिनकेधामा॥ नासभईजिनकौसेनासभ
वैरमानलैगएसीसअव॥ यहविचारमिथ्यानहिहोई॥ अहिविनअरिहर
सकैनकोई॥१३॥ दो॰॥ भीमसेनकौंजुद्धमैंनभयवधापावाल॥ मूर्छितडस
रीपवनसुतनधरनआइतनकाल॥१४॥ चौ॰॥ सभलवांनकहिभीमसुना
यो॥ किसहीयअर्जुनसीसचुरायो॥ पलोहोरकहूंरछलतारी॥ भीम
सेनजियवानविचारी॥ रछपलोप्रजरकसर्पभग॥ उजलवसनलिवें

मुषजगमग॥ चल्यो जान मारग नभ मांही॥ तब मोकों पहस्रपक-
भुनांही॥ राख्यो है है सागर भीतर॥ सम वचन हि पलग्यो निरंतर॥ पि-
तन स्कार की सुध हत नश्रवनन॥ प्रभु दिन भयो व भुवा हन मन॥५५॥ दोहरा॥
राख्यो है गाड रषि महि नहां ग्रहिन को वास॥ कहां सकै है समुद्र की छि-
नमहि करों विनास॥५६॥ चौपई॥ रापन सकै सीस मुऊ लाला॥ छिनम-
हि करों समुद्र तन घाना॥ जलनिध कों मारों इक वाना॥ सक जाइ जल-
स मस प्रमाना॥ समुद्र वीच पृथ्वी वहराऊं॥ लो ग्रर्जुन को स्न कहाऊं॥ सं-
कर को जिय ध्यान लगावों॥ पिन्ह सिर सहत समुद्र गहराऊं॥ हम से-
वक हों महादेव को॥ विजै भगत श्री कृस देव को॥ कमल चरन लागों र-
मत वहीं॥ साव धान पार पहुंच वहीं॥५७॥ दोहरा॥ लागों गात व कमल पग
पिता होइ सविधान॥ तात प्रसाद समुद्र कों सोखन मारों वान॥५८॥ चौप-
ई॥ एक वान सों नीर हकाऊं॥ ग्रर्जुन सीस हूं दगहराऊं॥ करगहि धनु-
ष वसो रणधीरा॥ पहुंच्यो वेग जलधि के तीरा॥ धनुष टंकार लियो कर
वाना॥ सागर त्रास भयो सविधाना॥ भेद रईव हूं कसो प्रणामा॥ श्रीरा-
होइ सोइ करों कामा॥ मत मारो तुम वान मोहि मन॥ जो चहिये लीने
तन मन धन॥ सन प्रभु पलरे जूऊ तिह साथा॥ हम तो हैं वलहीन ग्रनाथा
॥५९॥ दोहरा॥ जिहतन मिस लम को धकर त्राप हमरी ग्रोर॥ जहां सीस ले-
ग्रहि छिपे चलो हि धाकं ठोर॥६०॥ चौपई॥ वसत नमु ऊ विधे जी व ग्रपारा
समनि रहो धनकर रूसं वारा॥ तव सागर भ्रुप ऊरध भयो॥ मगरीनो

म॰ भ्र॰ इतउतलहै गयो॥ आपाएक ओरओ सागर॥ आधाइलिय गेरह तनागर
भा॰ मध्य वीरयुद्ध कौं कीनी॥ युगकर जोर वेन भी कीनी॥ सेनाजो रहे नागस
२५९ भआय॥ दिषवर्षन लिय महो दिसाय॥ कसौ विचार वभ्रुवाहन तव॥ सी
सलेऊं पाके मारौं सव॥ ५४॥ दो॰॥ प्रथमे अहिने लेउ सिरमनगरमर
मरजाइ॥ छोरदियो मधवान सभ वालक हहे रिमाइ॥ ५५॥ चौ॰ई॥ ला
गो वान अंधहै गयो॥ सकल अंग मधु सों लपटयो॥ पुनपपील कावा
नचलायो॥ लागो वालन वहुडुषपायो॥ अंग अंग काटन लिह लागी॥ वि
हवल है सांपन सभ भागी॥ लियो उतार सीस पारथ को॥ कीनो सिद्ध
पितासा रथ को॥ वहुरों क्रोध वाल जियधारयो॥ नीछन सरइक कमल नि
कारयो॥ मारयो वान नाग सेना प्रत॥ उठी अगनज्वाला रात हन अत॥ ५६॥ दो
हा॥ नरवरहह ये भस्म सभ नाग भए वस काल॥ नरक कुंड डारे सकल
ईर्ष्युध मुहन सभ याल॥ ५७॥ चौ॰ई॥ चलो वाल कर नागना सत सभ॥ सापो
सीसपी श्रुन मैं तव॥ वादे कुलसु धिष्ठिर तहां॥ पारथ को कवंध था
महां॥ परपर सो सोसिर अर्जुन को॥ मलपषारसि रलयो जतन सों॥ दा
सो जलपारथ मुषमांही॥ जीव धनंजय पइयो नहांही॥ होन भयो मंगल
मैं कासा॥ वरषा वन सुर कुसुम अपारा॥ धर्मज महा अनंदन भयो॥ कुं
ती मुदित सकल दुषगयो॥ ५८॥ दो॰॥ चित्रांगन आनंदमैं हरभयो स
भलोग॥ भयो वभ्रुवाहन मुदित हरष भए सभ लोग॥ ५९॥ चौ॰ई॥ से
नासकल भई सविधाना॥ वाजहि दुंदुभ भेर निसाना॥ उठवा दीभई से

नअपारा॥ अहनहहोनसवरजैकारा॥ इबअर्जुनगिरधरपगलागा॥ हृ
दयतनभयोसकलदुषभागा॥ पसोबभ्रुवाहनपितकेपग॥ प्रमुदितभयो
कृष्णवरननलग॥ पुनलागेचित्रांगदचरनन॥ प्रमुदितभयोबभ्रुवाहन
मन॥ चित्रांगदकुंतीपगलागी॥ जुगकरजोरहियेंअनुरागी॥ २४॥ दो॰ ॥
धर्मसुतचरननपरीचित्रांगदवरनार॥ बभ्रुवाहनपसोधर्मसुतप\
गसिरधार॥ २५॥ चौ॰ ॥ बभ्रुवाहनजोरेकर॥ विनतीकरेंसुनोश्रीगि
रधर॥ कारनअकारनभगवतलक्ष्मीप्रभु॥ द्वैहैजोरक्षाशमरीप्रभ॥ तुमहोंक
रनकृपावनहारा॥ कृपादोसदेवडुसंसारा॥ रक्षासोइकरावडकाजा॥ तु
मप्रभुअलषभवनसिरताजा॥ होनहारदेहैहैपुनसोई॥ जोतुमरचीसोर\
चिधहोई॥ मायारचसमभगगमधुमापो॥ किनहूंतुमरापारनपायो॥ २६
दो॰ ॥ करीबभ्रुवाहनविनैभएप्रसन्नगुपाल॥ बालककोंअपनाकियो
टहकनषभुनंदलाल॥ २७॥ चौ॰ ॥ धनधनकहैंसबबालककों॥ सिसुअ
सनकसोनंदलालकों॥ कुंतीकहैधन्यचित्रांगद॥ एकपुत्रहषरतिधन्यप
तिव्रत॥ धन्यसीलसोभासुषदेहा॥ तुमपतिसोपरमअसनेहा॥ बडु
रधन्यपहहृतहमारा॥ कुवीधर्मविवेकविचारा॥ रणमहिधर्मपिताहु
मराषो॥ नाकाजसतिहलोकनभाषो॥ बडुरधन्यपहगर्भतुम्हारा॥ श्रे
सेसुरलियोअवतारा॥ २८॥ दो॰ ॥ कुंतीपगहारावडरलेबालककोंमा
न॥ कुंतीदईअसीसवडुचिरंजीवडुकुसलान॥ २९॥ चौ॰ ॥ लोकसक\
लसुभमंगलगावत॥ बरषतकुसुमअमरसुषपावत॥ धर्मसुतआ

म॰ श्री॰ भा॰ २९॰

मंदरजिपभारी॥ महांप्रसन्नभएगिरधारी॥ चलेनगरकोंप्रभुनंदनंदावन॥ हर
षनसकलबजंबनावन॥ करलग्यारसीपुरकीहारा॥ कंन्याहस्तीपरश्रम
वारा॥ मनभावनगावनमिलगीता॥ विहसनहहदेवदावनशीता॥ चारव
रनपुरकेंसभलोगा॥ हरिपगपरेमिटेसभसोगा॥ २२॥ दो॰हरा॥ नगरबीच
आपनभएउतरेराजदुवार॥ रतननषचनऊंबेभवनननहरदुईगौरसुरार॥ २७
चौपई॥ चित्रसालमंदरछबछाजे॥ तहांगौरपीलसविराजे॥ धर्मसुत
कोंगौरदईवर॥ भीमकरनस्तमकोंमंदरघर॥ ताकोंगौरजोगषीजैसी
हीनीवांरहगौरतिहहैसी॥ हरषनअर्जुनअहचित्रांगन॥ क्रीशकरनगुरि
नमनहंपन॥ पुरकेलोगक्रनारघभए॥ क्रसदरसकरअबमिटगए॥ व
हरवप्रभुवाहनजोरेकर॥ आनारीजेभुऊगिरवरधर॥ २४॥ सो॰रठा॥ आ
नादेप्रभुमोहिदेयावोंमणसेषकों॥ वचननमिथ्याहोइकहणाकीजे
नगनगुरु॥ २९॥ चौपई॥ क्रसचंदआनानिहरीनी॥ पुनहपकेनवेनती
कीनी॥ मीनीवसपेरनहिदीजै॥ जाकोंमहांसुहकरलीजै॥ जोडनदई
होइसरधाकर॥ तोमणदीजैफेरनिबांबर॥ यौंकहनेचेवानपरसर
आपनभएसेषनिहअवसर॥ एकअयुतनभररपरननको॥ दीनीभं
रनंदनंदनकों॥ क्रसवंदकेचरननलागा॥ भेटसमर्पसकलदुषभा
गा॥ २५॥ दो॰हरा॥ सेषवहुतअस्तुतकरीभएप्रसन्नगुपाल॥ बालक
लागोसेषपगमणदीनीततकाल॥ २८॥ चौपई॥ वासकराषीमणर
ननपर॥ हाथजोरलागोचरननहर॥ मनकरननमनअरथोहर

कौं ॥ महाअसस्वकसोगिरधरकौं ॥ आसादीनीथीनंदलाला ॥ सेषना
गफिरगयोपयाला ॥ वंद्रखवसुवाहनकरजोरे ॥ विनतीकरोलेनइअ
भुमोरे ॥ पितुसनयुधसंग्रामकस्योगुरू ॥ कीनेअतिअपराधद्विजेतगुरु
गुरूकीनोगरिछुयहपापा ॥ पतितभयोमननतनसंतापा ॥ ३९ ॥ सो० ॥
गलोंहिमालैजाइपुनस्वर्गयाकीयहौ ॥ जोपितुराहचलाइताकीगत
याहीभली ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ देहहिमालैबीचगिरावौं ॥ पिसहदूषनइहभांत
मिटाऊं ॥ तीनपापकोकिलविषभारी ॥ सुनलीजेसोकहौंविचारी ॥ प्रथ
महोषडूसनहिसेवै ॥ दुतियपरोषगुरुकोंदुषदेवै ॥ त्रतियपरोषजोपिता
दुषावै ॥ सोनरघोरनरककोंजावै ॥ यहकल्योप्रभुपितुसनयुधरन ॥ सो
सकारकेनासकस्योतन ॥ तानेंगलोंहिमालैजाई ॥ पितादोषअतिअतिक
ठनाई ॥ ४० ॥ दो० ॥ भीमसेनतादानिकहवचनकहेसुनतात ॥ नंदलाल
केदरसितेंकोरकलषमिटजात ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ तुमकोंपहरदूषनककुनाही
केहरिसनतुमकोंदुषभयो ॥ कोरजनम
कलररसगुणकोरमिटाही ॥ हरिदरसनतुमकोंसुषभयो ॥ कोरजनम
कोकिलविषमयो ॥ तीनपापतेंइममकरदीने ॥ तुमहीकियेसकलद
मकीने ॥ यहतीनोपुनअवरअपारा ॥ रच्योमहाभारथकुलमारा ॥ द्रोणा
चारजहमोपितामा ॥ अतिवलवानधर्मकेधामा ॥ जिनहमकोंमधगोर
षिलायो ॥ करसंग्रामतिनहिहमघायो ॥ ४२ ॥ दो० ॥ नासकस्योहमगोत्र
समभ्रीनंदनंदसहाइ ॥ अर्जुनकारथसारथीजाकोमानसभाइ ॥ ४३ ॥ चौ
पाई ॥ भारथमैंकीनेअघभारी ॥ मिटगएसकलदरसगिरधारी ॥ तहांकहे

अ॰ म॰ किलविषनहिलागै॥ठाढेजहांकुसलहगआगे॥जाकेनामलियेअघहान
भा॰ सहि॥पालकमिटैहधर्मप्रकासहि॥ष्टरनवंतसोइसविधाना॥विद्यमा
२६८ नठाढेभगवाना॥निसदिनकुसलसाथजिनहोई॥तिनकोंअघलागैनहि
कोई॥तुमकोंपापनसकहिपरसकर॥जोपेलोमिटगएदरसहर॥४५॥
दो॰॥तुमराखोकुरीधरमसुकनककलोसमकाज॥पितुरनमारिजि\
वाइफुनसकलसमर्प्योराज॥४६॥चौ॰॥तुमतोवेदवचनप्रतिपालक
हहेचिंतकीजेनहिबालक॥उठहुबहुरहरिकेपगलागहु॥हरषतहै
जियसंभ्रमभागहु॥भीमभतीजेकीभुजगहकर॥लेहसोथीकुसलघर
नपर॥भीमबालकोंलानहहाथो॥जियतेंसकलसंदेसनुकाथो॥पांच\
दिवसतिहनगरमंझारा॥बसेसकलघनकुसलविचारा॥अर्जुनप्रति
हरिवचनउचारे॥ऐसीबाननहोतहमारे॥४७॥दो॰॥जनसअरंभ्योधर्मसु
तसोतुमरीझुविसार॥कारनकरनावहुतहैआगेचलहुविचार॥४८॥चौ
ई॥हरीवचननतनउपमकीना॥धर्मसुतजगजउरपउहीना॥कुंतीविद्यांग
नाउलषन॥चलीउरहपुरमधपरहरषन॥चलीवहूनराजनकीनारी॥पु\
रवनितासभसंगसिधारी॥पुरुषचलेहैंसंगसहायक॥नरुनीचलीपचव
रदायक॥बहुधनहोतवजुवाहनके॥भरहीनेरथसभरतननके॥मानीमु
कताहलकनककभारभर॥हलनपुरसंगपठेजुधिष्ठिर॥४९॥दो॰॥कुसलस
हायकअश्वकोअर्जुनरथआरूढ॥सतसेनाचतुरंगनीचलेवजनपचतर
५०॥चौ॰ई॥चलोअश्वपश्चिमदिसगयो॥मोरधजमहिपापनभयो॥पुरस्प

नाममोरघुनराजा ॥ विश्वभगतसूरासिरताजा ॥ इहिसेवासिमरननि
तलागा ॥ छूटेनिहकामराजसुषभागा ॥ तामरघुजनरूपसंतकोनामा ॥ प
हापवित्रधर्मकोधामा ॥ जीवतपितारामानिहरीना ॥ रूसभगतग्रलिसर
प्रवीना ॥ वेसवसकलनगरनरनारी ॥ पुमरानअनविविधप्रकारी ॥ दो
हरा ॥ रूपतमोरघुजरैनदिनसेवाकरनगुपाल ॥ भगतकरैनिहकामनकाम
नवचक्रमभूपाल ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ वसनवधनहिप्रजाहपरमी ॥ कछीसूरेहि
अधरकरमी ॥ सभपुरलोगआत्मलाहितकारी ॥ परमविवेकीनमविचारी
सभवचनसुषकूठनभाषहि ॥ परदारापुत्रीअभिलाषहि ॥ निहपुरनिंदा
करैनकोई ॥ सदाप्रकाससवेरधुनहोई ॥ मनहिमोरघुमहरिसेवापर ॥ वैठे
ध्यानलगाइभगतवर ॥ तामरघुजपरहोइरहलनिन ॥ तपकरैफलापि
नाधर्महित ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ सुहकरैचावरवद्धरवोलागहिहरियोग ॥ रूहा
इकाहरकरकरैसुइकुलजोग ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ वानीसुभगकपरवनावन
हीपकवीचफलेलजरावन ॥ भलकपूरमेंसीतलसुवासा ॥ पाकवचित्रसु
नेसुषरासा ॥ निमडकाहहोनरूपसाला ॥ भोगलेनवैसवभूपाला ॥ चरनो
दकपाचेपरधारन ॥ जैजैमंगलसवदउचारन ॥ तापाछेकारजनरपकाई
रहप्रकारनितप्रतमनुसरई ॥ सचपावनतुरमहांपुनीता ॥ मानतसभकु
निसिम्रतरीता ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ अश्वमहांज्ञापतभयोगहिल्यापपहिराज ॥
नामरघुजहरषनभयोनिरषतुरंगसमाज ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ भालपत्रकाप
हपदवाम्यो ॥ अश्वयुधिष्टिरकाजिपजाम्यो ॥ सेनापतनअर्जुनहैपारथ ॥ संग

521

म·भ्र· सहाइकैहै नइनाथा ॥ नामरधुजश्रानंदनभयो ॥ पटुपकनमनश्रतिवि
भा· गसयो ॥ श्राइपरोहै हाथहमारे ॥ वडेपिताकेभागविचारे ॥ हूरनभयो
२८२ मनोरथमनको ॥ भयोश्रनुग्रहश्रीरघुवरको ॥ सोनजनतकिपहमरेला
ला ॥ सोनलोकनिहरियेविधाना ॥ ४५ ॥ दो० ॥ वडूरथ्राठवोंलोकवडून
हांविसकोधाम ॥ करैश्रश्वमेनलतपितनहांहोइविश्राम ॥ ४६ ॥ चौ० ॥ श्र
श्वमधुरिवैकुंठकहावै ॥ करेश्रश्वमेधसवपावै ॥ चिंताथीपावोंकहंवा
ना ॥ ग्रहवैवेसरनभोकाना ॥ वहेभागहैमोरपिताके ॥ श्रापनभयोश्रश्व
हनाके ॥ वेगपितापहिहूनपठायो ॥ पनश्रश्वंभकरोहयपायो ॥ नवल
गलमकरहोमवसाजा ॥ नवलगहमजीमोंघहराजा ॥ सुनतमोरधज
नपमनहरषत ॥ श्रापनभयोदरससिभुवनपत ॥ ४७ ॥ दो० ॥ कह्योता
मधनसचिवपतिकोमेनुहइपाउ ॥ श्रश्वमेधकनजमसकोपैंनालीसम
पाउ ॥ ४८ ॥ इतिश्रीभारथपर्वलिअश्वमेधयाया ॥ कविदनकनपुरनभयो ॥ ८
पैलानैसमान ॥ ८४ ॥ चौ० ॥ मैमुनकहेसनहूम्पनवर ॥ श्ररथुमकथाहन
हूमवननधर ॥ कहैसचिवसुमाननाग्रधज ॥ वचनहमारेसुनहूमहाभुज
भलाकरहवांधहूनहिवाजा ॥ घनकरनहैधर्मनराजा ॥ सेनापनश्रर्जुन
हैसाथा ॥ श्रथसहाइकश्रीजदुनाथा ॥ सुरवश्रुवाहनसहाइजिह ॥ करनप
नहषकेतसंगनिह ॥ महावलीश्रनुसालनीलधुज ॥ पावकजनिश्रनिस
रहंसधन ॥ १ ॥ दो० ॥ जोवनाससनपसहितसुनवडूरवडूनभूपाल ॥ श्र
वलचमकनरंगनीसंगसहाइगपाल ॥ १ ॥ चौ० ॥ पुहनकरइमेरलेजा

बढ़ ॥ चरन लाग हरि सभ सुख पावहु ॥ बहुर ताम्रधुज बचन उचारे ॥ सुनहु
तात तुम सत्य बिबह मारे ॥ प्रथम बेह पक्षीनों संग्रामा ॥ ताके चरन परों तन स्यामा
जो पहि अश्व बनजी मो जाई ॥ सो लै भेह मिलों जदुराई ॥ हरि पग परों लिये सेना स
ब ॥ जो पहि अश्व बनजीत सकोंन बं ॥ छत्री धर्म होत न नहि ऐसें ॥ हय को बांध मिलों
पुन कैसें ॥ १ ॥ दो०हा ॥ अश्व बांध के जो मिलों मोहि हसहि गे लोग ॥ बहुर रथ का
रहि गे नर पत छत्रि धर्म न हि जोग ॥ ४ ॥ चौ०ई ॥ पुन तुतात सुबब बचन उचारे ॥ सु
न तुम श्रवन दे बचन हमारे ॥ प्रथम मे अपनी चमू निहारहु ॥ सभ बैस बमन
मांहि बिचारहु ॥ रहहल करत बीतन त्रापादिन ॥ नागर भर तकरत गह हलेप
न ॥ प्रजा करहि हरि भोग लगावन ॥ रहि प्रकार है पहर बिलावन ॥ सेना को नि
नघति पह कामा ॥ रहां कवन करि है संग्रामा ॥ पुन ताम्रधुज उचरे बैना ॥
हरकी रहल करन है सैना ॥ ५ ॥ दो०हा ॥ ले अश्व सीस उनकी रहां सब अकोर रन मांहि
कहि हतात भूपत नहि जो सेन्या बिन रण त्याहि ॥ ५ ॥ चौ०ई ॥ पांडव सेना अतिब
लवाना ॥ संग सहायक श्रीभगवाना ॥ तिन सों जुद्ध उचत तुम नांही ॥ समरू
रेव अपने मन मांही ॥ बमम्रागे संग्राम न कीना ॥ उन है अर्जुन महां प्रवीना
मुधिसर थापित मां तुमारा ॥ हिएस ह्वतन जतान बिचारा ॥ निसदिन करत से
वनंदलाला ॥ नेम ध्यान मपन रहत बिसाला ॥ १ ॥ दो०हा ॥ ऐसा काल बिताव
ही निसदिन करत अनंद ॥ कीर्तन कथा सुनन सदा गुन गावत नंदनंद ॥ ६ ॥ चौ
०ई ॥ तुम सेना को पह संग्रामा ॥ हरि स्मिरन महि बुधि बिश्रामा ॥ तुम पर
कलो पुरन हि कीजै ॥ हरि पग परहु अश्व फिर दीजै ॥ पुन ताम्रधुज बचनक

न॰ श्रु॰ हेतव॥ हमएकलोगुदइकरहीं सब॥ जोहपरेहिकहैं इरजासा॥ सुग्रीप
भा॰ मेलजनतउपहासा॥ होलजगतमहिजनमथकारण॥ निंदाहोइमोहिपुर
२९६ षारथ॥ सुभनगहोहोलप्रपमेतुक॥ इवलमोहिलवपइविचारतक॥
ह॥ दो॰ १०॥ सबहीं नुदइप्राहैदेखोहरेविचार॥ चरनलागपिलकेच
ल्योनामरघुजसिरदार॥ ० ॥ चौ॰ १६॥ सेनसहनरनग्रापमनभयो॥ जिहको
कसनहींबलगयो॥ पारपप्रतिववकहेपुरारी॥ पइनामरधनसुति
बलभारी॥ मुहकरेगामहाप्रतापा॥ देषावेगावचसंतापा॥ सिंहरूपस
नमुषचलगयो॥ चतुरंगनिसेनासजसायो॥ देषिमहाइषसरनलन
को॥ सतिलाहुपिरबहावैरनमों॥ जीतेगातमरीसभसेना॥ सममान
लीजकुपुरुषैना॥ ० ॥ सो॰ १ ॥ जीतेगावहुजोपवसुवाहनहषकेनसे
निहकामीविनक्रोधविस्नुभगतपाकोपिना॥ ० ॥ चौ॰ १६॥ वहुरनथके
लोकसमधरमी॥ विस्नुभगतपावनघरकरमी॥ श्रमवानननपरश्रात्र
न॥ पुरुषत्रिपापुरसकसपर्मरन॥ अनिवलवंउमोरघुजराजा॥ जीनव
हीकीनापहकाजा॥ गजनाननकोअर्पणकीना॥ हरसेवासिमरनचितदी
ना॥ नागरजलनिनउनिभरल्यावै॥ मजाहिननिनसीसनिवावे॥ सेवा
महिनिसदिनमविधाना॥ जानमभगमप्रतापविधाना॥ ० ॥ सो॰ २ ॥ पा
केकरनप्रमारप्रपमेभोगलगापहरि॥ प्रेममगनमहिलाटभजनवि
षेतनमनसदा॥ ० ॥ चौ॰ १६॥ हरिननगंधचुपोदुउमारै॥ सोलेश्रवनेअं
गलुपारै॥ प्रपनेपरहरिकोंपइपावै॥ नापाकुनिजगानवनावै॥ कहु

524

नलेवैहहरिस्वरूपेविन॥ हरिपूजाविनरहैनइकछिन॥ सकविकहं
ररवनलावै॥ साधुसंगनिमहहरिगुनगावै॥ कीर्तनकूपासमनिउजल
मन॥ इंद्रीजीतएकस्रुवलीरत॥ सदाप्रसनरहैसविधाना॥ सबघटब
साकेएकसमाना॥ ५॥ दो०॥ भगतनकरैनिहकामना सभस्वरूपेप्रभ
मांहि॥ समवचनहहरिवंदमौंकूवउचारननाहि॥ ६॥ चौ०॥ भागीवडो
रधीचरूपनसो॥ जिहनिजदेहसमर्पीगनकों॥ अंबरीषसारषोभगत
वर॥ विस्नरहलमहिनिसदिननलपर॥ प्रेमभगतनारदपरमाना॥
अहनिसहहैविस्नकोध्याना॥ कीर्तनसुनेगीतप्रभुगावै॥ नाचैनिल
जहोइमनभावै॥ कबहंप्रेमउमगमनरोवै॥ कबहंहसेहरषजिपहोवै
कबहंकरैरंडवनहिनसों॥ कबहंतालबजावैचितसों॥ ७॥ दो०॥
मीरणपरसनप्रीतहीप्रणप्रशोपरकाज॥ केतेगनप्रभ्रमकहोंभगत
सोरधुजराज॥ ८॥ चौ०॥ महाबलीइनमिहनामरधुज॥ प्रणप्रसम्रा
गुनावधुज॥ करैनहरिषराइप्रताप॥ पांडवनलहिसत्धारउआपा॥
पारथसोंयहवातकरमहरि॥ तामरधुजप्रगयोमिहसुवसर॥ आवत
अर्जुनवचनमनिहारा॥ धनुषगिरेकरतेनसंभारा॥ तामरधुजननविक
चक्रवर॥ चरनोदकप्रघतिलकभालपर॥ कंठीमालनलसिहवका
जे॥ वैसवधर्मनमधुनराजे॥ ९॥ दो०॥ प्रणमेहरषमनलाप्रधजपसो
वरननंदनंद॥ विहसतकहेदेवचक्रसप्रतिमनमहिवढोधनंद॥ १०॥ चौ०
ई॥ तुमप्रभुपरमपुरुषपरमारथ॥ जहांकहांहोसारथिपारथ॥ भारथ

अ॰ मु॰ मांहि सुनत नपे काना ॥ सो अब देखो समम प्रमाना ॥ मुक्त अपने मन मांह
भा॰ विचारा ॥ तुम री माया अपरमपारा ॥ तुम नो धर्म दास बस पंडुन ॥ अ
२९८ र्जुन बस द्वै रहे सामनुन ॥ हम सेवक देवकिनंदन को ॥ सदा उपासक
श्री मुकुंद को ॥ मोहि शिष्य देवकि को माना ॥ अर्जुन बस करौं रन ठाना
॥ ५ ॥ दो॰ ॥ मोहि तुम नहीं मोरधुज नाम रधुज गुहि नाम ॥ अर्जुन की सेना
सकल परखावों संग्राम ॥ २ ॥ चौ॰ ॥ मुख सूरस भग गगन उड़ावों ॥ अ
वर बपूह निधरन गिरावों ॥ मोहि शिष्य देवकी सुत को ॥ दिषरावों
कौन कअरधुनको ॥ पुन हम जानत हों जदुनाथा ॥ ममहि विकाने पं
दव हाथा ॥ सहन सकल होड पअर्जुन को ॥ तुम पास षाक हा यव मन
को ॥ पारथ केन मथा ला कारी ॥ सदा रहत मम हिरदै मुरारी ॥ अर्जुन क
है करद्र मोर्ई काया ॥ रथ सारथी महासंग्रामा ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ तुम बिनव
नियी कलमी अर्जुन के आधीन ॥ होय हो रथ सारथी बिन हुन हम मनन
दीन ॥ ५ ॥ चौ॰ ॥ देवकिनंदन हमारे रथ पर ॥ बैठो है बर चक्र लिये क
र ॥ रथ में बही करत संग्रामा ॥ सिद्द करत मन वांछत कामा ॥ देवकि
सुत रन करन संग्रामा ॥ देषहु मेरो भुज बल भारा ॥ जगम हि कीनो है
सिरसंग ॥ वचन नबद्ध फिरत है संगा ॥ एक बार रन मांहि हि रावो ॥ ति
हसों पुरन बेर बनावो ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ एक बान सों भीम कों पको गगन
के मांह ॥ जीत बनुबा हन लियो तिहसों जरौं नाहि ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ पुन प्रद
मन कों ईस जरायो ॥ भाग कृक मनी उरर समायो ॥ तिन सों तु हन उड़ा

नहमारे॥ है जो पाप मन मांहि विचारे॥ इक छत्र के वज्र वाहन छुन॥ इन
सों जुद्ध करों गिरधर सुत॥ औरन सों संग्राम न हो मुक्त॥ औरन कों पर
सांच कहों तुक॥ यह वच कहि कर पत्र षडाया॥ अईचंद्र वन वानच
लायो॥ छेर लई पारथ सेना सब॥ वान पिंजरा रची नोतन तब॥ २७॥ दोहा॥
वान पिंजरा रचो बल इति पचंद्र के वान॥ दिन दिन कल बढ तीर है शर
न जुद्ध प्रमान॥ २८॥ चौपई॥ पारथ प्रति हरि वचन उचारे॥ कौन कहे को मी
न हमारे॥ इति पचंद्र सर पिंजर कीन्हा॥ निकसति वाकै न कला नवीना
छिन छिन अधिक कला विसतारे॥ युद्ध समै फुरन इति धारै॥ हिति पचं
हस्याई अव रेखो॥ युद्ध समय फुरन अव रेखो॥ युनय हस रभर क्रोध चला
वै॥ सेना कों अनिक रहि धावै॥ ये संतन न फल के वैना॥ चक्र न भई पवंज
पसैना॥ २९॥ दोहा॥ पारथ चपह हरे कहै है देपक्ष फल गुरार॥ तामर धुजस
रावण सेन करहि वस काल॥ ३०॥ चौपई॥ तुमरी सेना अपर अपारा॥ हांसी
मानहु वचन हमारा॥ फल कहै हनन हो वच पारथ॥ हम सारथी भयो रु
मभारथ॥ तुमकों अव सारथि रथ कीजै॥ उठ हनु दुउ धमकर लीजे॥ हू
मरे वचन हांसि जिन जानहु॥ कहरहि गेस रन व पहिचानहु॥ वचन मान
अर्जुन नन नकाला॥ अपनी सेना रची विसाला॥ ३१॥ दोहा॥ है है जोधे एक
वेगा वे किये वनाइ॥ वज्र वाहन हष के नपुन तुष्य पही ठहराइ॥ ३२॥ चौप
ई॥ काढे है है है सर विसाला॥ मेघ वरन हान व अत्र साला॥ रथन हंस
युक्त अरुन तुव नाला॥ न्तर गावे रन कसो मिचाला॥ हरघस वेग हो करक

नं॰ ग्रं॰ डौरा॥रूपलनीलघुजनपावकजोरा॥समसेनाइहविधरचिदीनी॥कछु
भा॰ माग्गेकछुपाछेकीनी॥इनउनचारौंदिसावनाई॥करविचारपइजिप
२८५ इहराई॥सनप्रषदैवइहवेरलेरखव॥दैरकउसरवरपावढ्ढसव॥२१॥
दो॰रा॥वहएकलाकहांकरैमारलेहिछिनमांहि॥मिथ्याहमहिइराइ
हरिजरूदइरपइनाहि॥२४॥चौ॰ई॥जिनइरिवचनप्रतीननआई॥
प्रइकरनकौंचलेरिसाई॥लागेसनप्रषसरवरपावन॥नामरधुजन्कौं
इष्टउपजावन॥नामरधुनसरलागेजैसें॥मारनकोऊफूलहिंनजैसें
तीनवानअर्जुनकसमारे॥नामरधुजनकीओरपठारे॥एकअगनसरहि
निपपवनको॥तिनिपावानसिलावरषनकौं॥समसेनामिलवानचं
लाए॥जिमघनवूंदसमाप्रधुजकाए॥२५॥दो॰रा॥अमनभयोकछुनाप्रधु
नधनुषकसोरंकार॥समदिसिसरवंडितकसोपरनभयोअंधियार॥२६
चौ॰ई॥प्रनधुनसोंघंइनसरकीने॥अपनेनिकरनआवनदीने॥परनीकं
पमानसभमई॥गिरइगमगनलोकसवघनई॥तीनलोकभैमानभयेअ
न॥तीसअवपाइरज्योंभैफलापन॥परीसौरदहदिसपहराती॥नागर
सपनसोवलिपपाती॥करननानप्रतिदेषरिसायो॥वारवानलेसन\
मुषधायो॥एकवानलागोभाउजसन॥लेगयोनभउड़ाइनिकसोउन
र॰॥दो॰रा॥वानहूसरोसेनमपहिपठोइनेसभजोप॥गजपरानसर\
तीसरेइनेमहांलिपक्रोप॥२७॥चौ॰ई॥वोचोसरभपभीनसवरकर
पसोचनसभहरनहारीधर॥अर्जुनसेनभईसभवाना॥गजलइंगर\

पसरपसारा ॥ उठोइहलोहषकेनप्रथममसर ॥ धमपरपसोमृहेति
हुम्रबसर ॥ देषीचमूबहुबाहनमव ॥ रहोनकोउसररमुरकेसब ॥ क्रोध
नभयोबहुबाहनमव ॥ सेनाकीगनदेषपरेनव ॥ करनविचारनबहि
अपनेमन ॥ मनहमरीसभसेनहनीरन ॥ चारबाणबरमणनिकारे ॥ ता
मरधजनरपकोंकसमारे ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ रथफोसोसारथिहयोहयहनधर
नगिराइ ॥ बहुरमंगायोरथअवरबरतामरधजराइ ॥ ३५ ॥ चौपई ॥ ताम
रधुजअरूढरथभयो ॥ क्रोधवनधनुषबहुरकरलयो ॥ अर्जुनतनकों
गगनउडायो ॥ धमनअकासबहुरपरआयो ॥ एकबानफिरमारकरन
हुन ॥ पञ्चोपतालधमनरथसंजुत ॥ तीनजोधनरहेक्रोधवन ॥ ओ
बनासअनुसालमेचबरन ॥ कालरूपतीनोंचलगए ॥ तामरधजकेसब
सुतभए ॥ बरषाएसाइकविकराला ॥ बडेक्रोधपजनदैनकाला ॥ ३६ ॥ दो
हरा ॥ बानननसोंरहहरिसग्रगनइबबनभईभयकार ॥ सुततामरधजक्रोधके
लियोधनुषकरधार ॥ ३७ ॥ चौपई ॥ सिलाबानबरषावतभयो ॥ पावककबान
सांनकरलयो ॥ बहुरोसांनकउभोदिलायो ॥ तामरधजप्रतिबानकला
यो ॥ मंत्रीकारथभंजनकीना ॥ मंत्रीक्रोधधनुषकरलीना ॥ सरहनसात
कनभयदहियो ॥ तीनबानसोंबिलमनकियो ॥ पसोधरनपरधमनअ
कामा ॥ सेनानिरपबधयोजिघडामा ॥ अर्जुनबचनकहेसेनापत ॥ हलसे
भयोनीलधजशापत ॥ ३८ ॥ दोहरा ॥ जदकरनलागेबहुरबरषहियानअ
नेक ॥ तामरधजपरगेवजिमकलानजाइविवेक ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ ताम

म·भ्र· रथुजनजियक्रोधकलोअन॥मीनवानमारेसेनाप्रन॥काटीवडअर्जुन\
भा· कीसेना॥सोगनकहीपरननहिवैना॥भागेजांहिजोधननरनकों॥अग
२९९ ननसरलागेसभननकों॥पुकरगिरेकाटेभुजहाथा॥एकपिंगलेपग
नहिसाथा॥किनहूंकीआंगुरीगिरीनव॥लागेवाउहियेंतनमनसव॥र\
नमहिमलकगिरेअपारा॥हयगजपाइकअंतनपारा॥५५॥दोहा॥मीन
कोहरणीहलभईमहाखूररणजोध॥नामरथजनरूपकेअजनद्रहूरेहरन
नहिक्रोध॥५६॥सोरठा॥भानुजननंदपयालपओवत्रुवाहनगगन॥रद्व
नहिसअत्रुसालवीचध्रमनहैंपरउमन॥५७॥चौपाई॥अर्जुनकीसेनामा
हीसभ॥रुधिरनदीरणवीचवहीनव॥तूपनचेरवीचसिरअैसें॥केससि
वारविराजनजैसें॥गजनकवंधहयसीसअपारा॥वहेजातरथअंतनपा\
रा॥डुरदकुंभघुनसीसपराना॥वहेजातत्रुभयेरनघाना॥वहिलरुधि\
रमहिलागनकैसें॥मोकावलननदीपरनैसें॥वहेजाननरकसलरणाभा
ई॥सीसगयंरमछहिषवांई॥५८॥दोहा॥तुमलयुद्धराहरणभयोभाओक
कुननाइ॥अर्जुनकोंनृपनागधनवचनकहेप्रगराइ॥५९॥चौपाई॥कहे
नाथधनसनवचपारथ॥तुमकोभयोकुसलरथसारथ॥नासभईतुम
रीसभसेना॥वहीजातअववलोकडनेना॥विघमानजोजनासकरावे॥म
गमहिकुजीपर्मलगावे॥कुजीहोरनुहनेंहरई॥निहचेंघोरनरकमेंपरई
अर्जुनउनिहहरिवचनवषानन॥मुकवचनवहोसीकरमानन॥ह\
मरावचनत्रमाननताहिन॥नामरथजवलरेआंग्रांवन॥६०॥दो

530

रा॥ लुमरयौ सेना हनक री नामरधुज संग्राम॥ उत अर्जुन अरु बभ्रु हरि करउ
बलन नहीं बिसराम॥५५॥ चौ॰ई॥ नामरधुज को मंत्री महकेन॥ परा क्रम नार\
ताभ्रम मम नकबन॥ नषसों अभ्रमन सिंच जिवायो॥ सावधान कर वेग अजुग्रा
यो॥ उद्यम करत धनंजय तौ लौ॥ ग्रापतन भयो ना अधु जजो लौ॥ आवत
हीं हस बान चलायो॥ रथ समेत न पार यहि उड़ायो॥ नभ प्रमान प्रुन पत्यो ध
रनि पर॥ रथ टूटा न वउन रथ रे हर॥ न परे ह्यो रथ उतरे गिरधर॥ पुन मालो
पा रथ कों इक सर॥५६॥ दो॰॥ अर्जुन उओ अकास कों जात भयो जैन म
लोग॥ हरि नहिं सावलोक ई सिव है वज्यो संजोग॥५६॥ चौ॰ई॥ अर्जुन\
निरथ अन्नं तरत भयो॥ विवकर जोर निकर सिव गयो॥ सेवा कर अलल\
नव कुकीनी॥ ईस प्रसन्न अमीस हीं दीनी॥ पारथ जुद हनो न सनायो॥ क
रीदीन नासं भुरि कायो॥ अर्जुन मांगे सहाकर दृष्टि॥ हैं प्रसन्न रीने शिव
रुषेत॥ आयुध गिव दीने सम्मेन रथ॥ सिइहफाल गुन भयो मनोरथ॥ अ
जुन शिव पहि यह हरि नांतर रन॥ कहना कीनी बहुरसा मखेन॥५८॥ दो॰
अर्जुन ॥ सिवपहि यह हरि नांतर रन॥ ...
रा॥ अर्जुन लत न अरु कर न लत फेर उ ठाय चाय॥ उन दोनों मिय क्रोध क
रा॥ अर्जुन लत न अरु कर न लत फेर उठाय चाय॥ उन दोनों मिय क्रोध क
र धनुष उठाय हाथ॥५५॥ चौ॰ई॥ नामरधुज के सैन प्रुष आवे॥ दोऊ जो\
धा जिय महां रिसावे॥ प्रथमे अर्जुन लत न सर मारा॥ लागो न पतन रथ हि
विडारा॥ बहुर बभ्रुवाहन मारो सर॥ रथ फेलो हय हन डारे वर॥ हार क
रथ मंगा इनामरधुज॥ पुन सन मुष बलगयो महां भुज॥ बहुर बभ्रुवा\
हन इक सर सों॥ भंजन कस्यो कनक रथ वर कों॥५९॥ दो॰॥ रथ फूटो

जै॰ अ॰
भा॰
२९०

मवनरूपनकोगहलैंगर्वसंगाइ॥चोरचोरसोंकहियेरथतामरधुजरा
इ॥५२॥चौपाई॥कोपकरनहतबानचलावत॥सेनाकोंअतिदुषदिषरा-
वत॥पुनतामरधुजअतिकोपोमन॥करनहलकोंनासकरोंरन॥क्रोध
नहैन्रपबानचलायो॥करनमूलकोंगगनउडायो॥बहुनिचोरलीजि-
येजैसें॥भयोहीनबलकर्नजतैसें॥मूर्छितह्वैगिरयोसोधरनपर॥पयोम
नकबनलरमहांवर॥वहुरताम्रधुजहूदेरिसायो॥औरवभ्रुवाहनचल-
आयो॥५८॥दोहा॥अर्जुनहलकोंताम्रधुजमारेबानअनेक॥सकैनही-
प्रकारनिहबानननलागेएक॥५९॥चौपाई॥वहुरवभ्रुवाहनक्रोधतमन
मासोरेकसीससरलीडून॥टूकटूकरूपकोरथकीना॥अबसारथीकों
दुषदीना॥तामरधजरथअर्ववरबयोजब॥हैअरूढसनमुषआयोत-
ब॥वभ्रुवाहनसरमारो॥रथत्रैरंगसारथीविडारो॥जोजोरथ
तामरधुजल्यावे॥सोअर्जुनहतनकारचुकावे॥तामरधुजमनमांहिवि
चारा॥इनहमरेरथकरेअपारा॥६०॥दोहा॥हमरेरथकारेवहुतसे
नभईअनुमनास॥पलोकरकमहिगसगहिसेनाकरीविनास॥६१॥चौपा
ई॥लेकरगदाताम्रधुजक्रोधे॥हनचमअर्जुनकेजोधे॥हलीअहरथअ
रुपदाता॥सेनासकलकरीरनघाता॥बनमहिघासकाटिपनजैसें॥
पारथचमभईगततैसें॥लगेनचोटवभ्रुवाहनकों॥नरपयाकोकर-
कोरनलननकों॥अर्जुनलतरोकबानचलावे॥तामरधुजतननकुह
नतपावे॥रथफरेतनताउनलागे॥सरतहोउनिधक्रोधनल्यागे॥६२

दो०॥ कुसलविलोंकेरनविषेचतुरलइनीअपार॥ पांचक्रोहलीहल
भईगननकीकरीविचार॥ ८४॥ चौ०ई॥ रनमहिरूपरसगुइसमाना॥ हूहे
विचारकलोभगवाना॥ आज्ञाकरीकालिकाकोंतव॥ कीजैपानवेगओ
णितसव॥ आज्ञामानकालकाहरषत॥ रुधिरपानकीनासमुहलव॥ व
गकवंधलेचवननअकासा॥ कार्यरहेनभकरनविनासा॥ निरषकाग्रध
ननरूपकोधोअन॥ हैसरकाटअरोपधनुषपुन॥ अर्जुनहननकीओरच
लाए॥ रथपइलताइधरनपुरजाए॥ ८५॥ सो०॥ सूरलरावतपरसरइकों
करीगुपाल॥ ताहाकौंतकदेषईरहकनप्रभुनेंहलाल॥ ८६॥ सो०॥ अ
र्जुनसहिशिववानपुनरनमहिप्रापतभये॥ अश्वमेधकोजानषटचालि
समुझायपह॥ ८७॥ दो०॥ इतिश्रीभारथेपंथलिषिते अश्वमेधपर्वाभाषान॥ १॥ व
नालीसोध्यायः॥ ६ह ८ह कन ४ र ४ प्रथमन॥ ४८॥ जैमनउवाच॥ चौ०ई॥ जैमुनक
हैसुनहुभूपाला॥ भगतकथारसमहाविसाला॥ शिवआगुधलायोपा
रथरन॥ गर्जीमहासिंहजिमअर्जुन॥ तामरधुजप्रतिवचनवषाना॥ सु
हककरहुतद्यपिवलवाना॥ मोहमपारथनायकहावें॥ तुमरीसेनागग
नउडावें॥ तुमहिवभ्रुवाहनपुरजाये॥ कर्नसुतनकोइहेदिषराये॥ सक
लजोधमर्दितरनकीने॥ सुरकहावहुपुरुषप्रवीने॥ १॥ सो०॥ उवइतात्र
धजराजअवचनुहकरहुहमसाथ॥ वैरलेउंगासेनकाभलेलगाऊंहाथ
॥ २॥ चौ०ई॥ तामरधुजपुनवचनउचारे॥ शिवतुमहिपेवानभयकारे॥ मोता
मरधजनरूपतकहाऊं॥ सिवसरतुमरेभगतकराऊं॥ प्रथमेपारथवान

533

अ॰ मे॰ चलायो ॥ रजननजरजनरथमोरगिरायो ॥ हन्योसारथीवहुरतुरंगा ॥ पुनस
भा॰ रलगेचम्मकेअंगा ॥ तामरधुजकेसरेजिनने ॥ अर्जुनवानहनभेदजिनने ॥
२९८ समसेनावेधनकरडारी ॥ एकवानसोंसकलसिंघारी ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ अर्जुनस
रषंडनननिजहन्योताम्रधुजवान ॥ क्रोधनहैगजमोतुरनसिंहरीनवल
वान ॥ ४ ॥ चौपई ॥ पारथकेसरषंडनकीने ॥ छिनमहिहूकमानकरलीने
तवअर्जुनसरअवरचलायो ॥ रथतोसोसारथीगिरायो ॥ परसनभयोता
म्रधुजकोमन ॥ नरपरथअवरमंगायोततछिन ॥ तामरधुजरथसकल
मंगाए ॥ समरशस्त्रसमग्रसमग्रहाए ॥ रथचकरथकपारथरथमोरे ॥ रजन
नषचमसहसहस्रकफोरे ॥ पुनतामरधुजनरपकोपोमन ॥ अर्जुनकोंमारत
सरलीछन ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ सरलागोपारथहृदेननछिनडग्योअकास ॥ चक्र
पवनचरननभभ्रमनजैसेंउडनकपास ॥ ८ ॥ चौपई ॥ ऊपरतेंडारतोअभाड
धर ॥ मरछितभयोधनंजैरथपर ॥ कहेताम्रधुजवचअभिरामा ॥ अमेसमर
मोमनसंग्रामा ॥ कुरीभरसकाएकमहुरत ॥ वहुरउठ्योअर्जुनरिसभरत ॥
वहुरपरसरजुद्धभयोजव ॥ एकवानमारापारथतव ॥ नपकोरथषंडन
नवकीना ॥ पुनअर्जुनविवकोसरलीना ॥ तामरधुजकीओरचलायो ॥ रथ
हनहयसारथीगिरायो ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ कनककीरकुंडलकवचवोलसंजो
रविसार ॥ भयोपियाराताम्रधुजकसोधनुषरंकार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ रुक्मनेद्रता
मरधुजभयो ॥ अर्जुनकेसनमुषचलगयो ॥ क्रोधनसरमारविकराला ॥ पा
रथउड्योगगननतकाला ॥ नभभ्रमाइडारोवनमांही ॥ उतरपरेरथऋलन

हं हैं ॥ बहुरि बान नामरधुज मारा । रघुपति उन स्त्री कुल निहारा ॥ पस्यो जाइ
रकमासपंथपर ॥ मूर्छित होइ परयो धरनी पर ॥ हरिदेषी पारथ की सेना ॥ सभ
मूर्छित नहि विलोकी नैना ॥ ९ ॥ दो० ॥ पाछे रष्ण नमूरकी सुद करें न्ह प साष
पांडव धीन पकान के उठे आपन उनाष ॥ १० ॥ चौ० ॥ पछु पांडव न के नइना
षा ॥ मूरछन अप ने भगतन साष्या ॥ मदनबान गिरधर कलमारा ॥ अगरभई
मोहनी अपारा ॥ महा सरूप कोल संदरवर ॥ सिव से निरवस कै नधीरधर ॥
तामरधुज के मन अषगई ॥ हावभाव दिष रावत भई ॥ निरष ताम्रधुजर
पसुसकाना ॥ श्रीगिरधर प्रति वचन वषाना ॥ तुम कों जोग न मार न पर
सर ॥ कामबान मोहनी अगरकर ॥ ११ ॥ दो० ॥ देव कर्म नहि होइ यह छल जो
तहू संग्राम ॥ यह विपनी कैलो कवह कपर लगायो काम ॥ ११ ॥ चौ० ॥ यह स
रति न कों जोग वलावन ॥ जो नर पर तिय प्रीत बढावन ॥ कामबान लिहउव
तप्रहारन ॥ जो हिय नैं हरि ध्यान विसारन ॥ जो यह छल करत मति नेछल ॥
नैयह लोग अवर जान इवल ॥ विहस ताम्रधुज पतुष लियो कर ॥ तियरि
समासो अरस तान सर ॥ तिय अनंग सेना सन आई ॥ अस तान सर सकल उ
डाई ॥ हारी जाइ स्वर्ग हारे पर ॥ जे तिक ती पर इंद्र की अपसर ॥ १२ ॥ दो० ॥ का
मवान कों नोर के तिय रसरि सहि पवार ॥ पुन ताम्रधुज जोर कर हरपदि
ठा हो आइ ॥ १३ ॥ चौ० ॥ मूर्छा कुरी पनें जप आयो ॥ रनमहि आइ दरस सही
पायो ॥ सनमुष देष पुन होइ जोधे ॥ अर्जुन अरु ताम्रधुज क्रोधे ॥ प्रथम प
वंज पवान निकारा ॥ कुल नेजलाकेम धरारा ॥ वीच आपना सन वहरायो

535

मो॰ ध्व॰
भा॰
२९९

तिहसरसों भूपतन पुरछायो॥ भगतन्ह आपनाम इक्किनकीना॥ धर्मजहि मका
रजकरलीना॥ नामरधज पाप्रति वलवाना॥ कोप्तीत्ते तिह विन भगवाना
५॥ दो॰ ॥ रा॥ रोमनासनहिकरसकै कोरम्मुरहि वलवान॥ रछ्यासों मदर्कि
नकलोश्रेम वान भगवान॥ ९॥ चौ॰ ॥ ई॥ हतनजाइमोरधज कह्यो॥ मोनग
हीतवन्रपतहरह्यो॥ नामरधजरतनमहिसुरछायो॥ सुनश्रुतिमनहिमहा
दुषपायो॥ सुनतमोरधजकोपवढ्योमन॥ जिहसुनहम्मो सुनिहरेवोरन
हतकहै सुनहोराजाना॥ तुमसुनहम्मो कस्यकेवाना॥ सुनकेकृपो मोरध
जराजा॥ ततछिनवढ्योवजावनवाजा॥ हरिपरसोहरिकीनरपआवन॥ कृ
सविसैकोकहिसमकावन॥ देषहु अर्जुनपेहे मोरधज॥ तिहकोमीस
रा अमान भुज॥ ५॥ दो॰ ॥ रा॥ नवविचारी भगतनपुरुसेवामहि सविधान॥ १
निजसेवामन पुरुविषैहूदेंहदावनतान॥ १०॥ चौ॰ ॥ ई॥ नरपतमोरधजकों
इहअवसर॥ न्वरतनभपोयणाहरुनवर॥ तिहअवसरगागरभरल्याव
त॥ इहलकरतजियहिलेउपजावत॥ इकदिनमंडीकयोनरपतप्रति॥ ति
नपतियपावहनराहुनश्रुति॥ श्रीपतिकोंकहिरोगमिटावहु॥ सेवाकर
नकष्टनहिपावहु॥ हसिकैवोल्योनरपतमोरधुज॥ मोइछ्याश्रीकृस्नचत
भुज॥ यहइषसुषदेंश्रुपिकउमान्न॥ इच्छासोंटीनाभगवाना॥ २०॥ चौ॰ ॥ ई
दुषसुषसमैपाइसम आवै॥ उपजैविनसैभोगभुगावै॥ होनहारमेटतन
हिकोई॥ जोहरिरचीसोइविधहोई॥ तांतेंदुषसुषसमकरमानहु॥ श्रव
गनमकिरफलमानहु॥ कोरसननकरमिटननकैसें॥ जोहरिरचीहोइ

पुनतैसें ॥ यहवचमंत्रीसोंपुनभाषे ॥ निहकामीनिपटंभनराषे ॥ हृल
न्रपनकीमुसलनकीनी ॥ सुर्नुमसकलभुवनहुनलीनी ॥ ३१ ॥ दो ॥ रा ॥ व
हिमाघोन्रपमोरधुजरहहरिसहरिरपकीन ॥ रहांकलरूपमकसोसेवा
रवीप्रवीन ॥ ३२ ॥ चौ ॥ ई ॥ हृलवीनकाटेनोसूरे ॥ पुरूधवीनवचनअमा
पूरे ॥ प्रथमेहरिप्रयुग्रउकायो ॥ इतिपसूरमुनिरहजनगायो ॥ पुनउव
लिघोन्रपनहंसधुज ॥ वद्धरवत्रुवाहनविसालधुज ॥ कारनमूतहानवमु
त्रुसाला ॥ मेहवरनअवनासभुपाला ॥ न्रपनीलधुजपावककोधे ॥ ग
हेकरेप्रुथयुरूजोधे ॥ शापनभयोमोरधुजनहां ॥ श्रीगिरधरगाहेरनमहां
३३ ॥ दो ॥ रा ॥ अपनेमंत्रीसोंकहीन्रपनमोरधुजवान ॥ कैसेंवानचलाइहो
सनमुषत्रिभुवनमान ॥ ३४ ॥ चौ ॥ ई ॥ मुझमननमहिपहवानविचारी ॥ प्रथ
मेंलागोंचरनविहारी ॥ मंत्रीकहेसुनउमहराजा ॥ कबीधर्मरहनहिला
जा ॥ मर्छितभईसकलतमसेना ॥ तामरधुजअवलोकउनेना ॥ तनउ
नअपनीकुलकीरीता ॥ वदहरनछत्रिधर्मविपरीता ॥ यहजोगावेहेंन
वजोधे ॥ करहिपनुषपुरहितनक्रोधे ॥ तेसमतमकोंकरहिपकारा ॥
कहैंहरहैन्रपवलहारा ॥ ३५ ॥ दो ॥ रा ॥ मंत्रीकेवचअवनसुनपनुषलियो
कररार ॥ प्रथमेदेष्योपुत्रगाभयकतनिहकोवार ॥ ३६ ॥ चौ ॥ ई ॥ अपना
कसालनप्रुरूपायो ॥ श्रीपनसनमुषशासवलायो ॥ उचननहरिअनका
नचलावन ॥ सनमुषवलोभपतचपावन ॥ हरिकोंनिरषमुनंदनभयो ॥
मागोपनुषहिपंउहरयो ॥ पनगाहेनोजोधविहारे ॥ शरनकोंपसरवल

मं॰ ग्रं॰ भा॰ २३०

भारे॥ कह्योबिचारमोररघुनन्दन॥ अबहौंआपनभयोआइरन॥ न
वजोधनअतिबानचलावै॥ तोनहिछत्रीधर्मलजावै॥२२॥दोहरा॥ पर
जोगदेजोधनोहियेंनुहकौत्रास॥ पुहकरेणमोरधुनजिहहतनभयो
विनास॥२५॥चौपई॥ जोपुरुकरनैंधनुषनिवारा॥ तोपुरुसमधहकर
हिप्रकारा॥ तांतेंइनकौंबानचलावौं॥ छत्रीधर्मतजनजसपावौं॥ धनु
षटंकारमोरधुनकीधा॥ सरसासोसनपुषनवजोधा॥ नवलूरेनवर्षं
उपकार॥ पुनहयगजनपाइकरनजाए॥ क्रोधनकसोचांपटंकारा॥ धर
नभउकोसवदभयकारा॥ कांपेतीनलोकइंद्रासन॥ किनकीधटंकारम
हारन॥२६॥दोहरा॥ वटोहोइकोऊस्तर्गपरइंदइसोमनमांहि॥ शिवविं
रंचरररपलभएवदोकोउहमपांहि॥२७॥चौपई॥ कैपोप्रलैकालदिनभयो
दहहदिसअंधकारह्वैगयो॥ चारौंदिसझीलसनिहारा॥ करवरविकलसदर
सनधारा॥ हानभयोदहदिसउजियारा॥ धरनअकासमिलोअंधियारा॥ पा
छेरघोनकोउलरररन॥ निरष्योवाहोएकसामकन॥ इचननहीहरिसोसं
ग्रामा॥ लागोपगअवकरौंप्रणामा॥ धनुषमागजेवरिअरीगए॥ पसोपो
रधनलसचरनपर॥२८॥दोहरा॥ द्वैप्रसन्नअंगरलालन्रपतीनोकेंवलगार
नवजोधानवषंइतेंश्रीपतलिपतुलार॥२९॥चौपई॥ रुपाटघपुनहरिर
नकीनी॥ सभसेनाजिपाइकैलीनी॥ न्रपतमोरधनहहरिपगलागा॥ प्रेम
पुलकमननननअनुरागा॥ वाजतभेरनिसानअपारा॥ वरषतपहुपहोत
जैकारा॥ विनतीकरीमोरधनहरपत॥ नग्रप्रवेसकरहुत्रिभुवनपत

पुरिकौंचलेप्रभुहितमहनाथा॥ करेनयकेलोकसनाथा॥ हरसहितपर
सकलतारघभए॥ कोरननवमकेअंतमिरगए॥ ११॥ दो॰हरा॥ तिहपुरकीनु
वतीसकलपतिव्रतमैंसविधान॥ आज्ञाकारीदाससवनरहलकरहितच
मान॥ ३२॥ चौपई॥ चरनधोइचरनोदकलेवहि॥ प्रभुहितनारिदंकंतनिज
सेवहि॥ ऐसीअनुवतीनुरीअपारा॥ ललाचरनलागीसवदारा॥ महाप्रेम
उभपदनंदलाला॥ देषनसभकीनीनविसाला॥ बीतसहनराआअरुरानी
निरषप्रभुहितभएसारंगपानी॥ न्रपतनमोरधुजनामरथुजपुन॥ लागेच
रनप्रभुपालकपनगुन॥ श्रीगिरधरप्रतिवचनउचारे॥ सफलमनोरथ
भयेहमारे॥ ३३॥ दो॰हरा॥ धरनहमरेप्रभपेदरसनभयोगुपाल॥ भयोक
तारथनगरसभहरसपरसनंदलाल॥ ३४॥ चौपई॥ जिहचरननकोंशि
वसनकादिक॥ नितहितवांछतहैंव्रह्मादिक॥ इंद्रादिकसुरनरमुनिध्या
वत॥ तीनलोकषोजतनहिपावत॥ सोपदहमकोंशापतभए॥ सुधरपजी
किलविषमिटगए॥ अवपहराजनहमरेकामा॥ अनहूनिसहिदेदूव
नस्यामा॥ हमकोंहीनेभगतचरनरन॥ यहकहतनाकीनेत्रिभुवनपति॥ क्रो
सनपतकोकंवलगायो॥ पुनप्रभुषतेंयहवचनसुनायो॥ ३५॥ दो॰हरा॥ कुस
कपोसुनमोरधुजराजनवसहिभूपाल॥ मैंदीनीअपनीभगतसमपर
सदाकृपाल॥ ३६॥ चौपई॥ तुमहमरासेवकनिहकामी॥ वड्रप्रसत्रभोअं
तरजामी॥ न्रपतमोरधजभेरहिदीनी॥ विद्यमानहमरकेसभकीनी॥ एक
अप्रुनगजसेनमहांवर॥ पुकनाफालरकनकंछंदगर॥ रघरसमप्रभुनक

अ॰ श्व॰ नकुभरहियै॥ पांच अंगुलरतनन भरकियो॥ सात अंगुलरथरहियो ब
भा॰ सनभर॥ तनमन धनन्रप अर्पहियो हरि॥ प्रथा गुरु कलरानीपनिसाथा
२०१ हरषतसाजआरतीहाथा॥ ३९॥ चौपई॥ हरिअर्जुनकीप्रीतविसारी॥
भयोमोरधुजवसगिरधारी॥ पारथनिजउपमोगुभ्रमाना॥ मेरलोभ
हरिहमविसराना॥ कहांभयोन्रपहियोवकलधन॥ तांतेमानदेतनन्र
पभगवन॥ आनदेतइकपरउपकारा॥ इनतोदीनीलक्षअपारा॥ लक
लक्षदानननसमनाही॥ अर्जुनकेसंसामनमांही॥ पारथकेमनकीवि
पमानी॥ अंतरजामीसभपहचानी॥ ४०॥ दोहरा॥ संसाअर्जुनमनधर्यो
मेरनहितनदेरलाल॥ राजसभामैंप्रगटभैआसवरराभमगुपाल॥ ४१॥
सो॰रठा॥ न्रपउवलागोपांइआस्वराआवनदेपके॥ सैंतालीसमध्याइ
अश्वमेधकेजनतको॥ ४२॥ दोहरा॥ इतिश्रीभारथपर्वणिअश्वमेधपर्वणिभाषा॥
सैंतालीसमध्याइ ५६ ॥ ४७॥ अथअठतालीसमध्याव॥ चौपई॥ अैसु
नकैहेतनइभपनवर॥ आस्वराभेसधारआयोहर॥ राजसभाब्रहमपांइ
धरेना॥ वैठेसकलउचारनवैना॥ राजनसभावीचनंदलाला॥ ब्रहमण
वलआयोनिइकाला॥ इर्वलहिजदेखोभूपननव॥ हाथजोरसागत
रकीनव॥ सामीकहोक्रपाकरमुझकों॥ देउदानमनवांछतमुझकों
अरथआपनाप्ररनकीजै॥ जोचाहोसोदहममैंलीजै॥ ४८॥ दोहरा॥ कहेवि
प्ररामाहुनइदुघलागाजिथमोहि॥ रिखवंतीनरहकमकाहेथांहमा
होहि॥ ४९॥ चौपई॥ प्रुनकंन्याकेकुअरेहपर॥ अंगीकारनकरैकोउनर॥

कंम्याकेकांणीवरम्रावहिं॥ ननकोकुछदेषिफिरजावहिं॥ विद्याइ\
रिरषम्रानोनवंहीं॥ कुछहरहोवैषहनवंहीं॥ विछागलरहरहैसोई
इखविनानहिंप्रापनहोई॥ पुनपुरुहदेनरकीम्रासा॥ करिहोंमषजि
यमैंवडुप्यासा॥ १॥ दो॥ कंन्यावरकेम्रर्थपुनम्रवरनतमैंकाज॥ दाव\
दीजिपेनरपनपुरुकनकरकाटसभाज॥ ७॥ चौ॥ इहविधमिटैकम्य\
काक्रोइष॥ पनरम्रोंद्दैहेषररनहुष॥ परयुपकारीनामम्रलारा॥ नपप
हकारजकरदुहमारा॥ हनकेनरपनम्रवंदनभयो॥ करदसनानदान\
हिंजदयो॥ दियोदकाटसभारकनकभार॥ नपसायोहिंजकोंहरषवढ
२॥ म्रर्जुनकेसंसेमेरनहिंन॥ पचीपुनलाहरिकीनीकल॥ सुभवेलाम्राल्प
लाहेकोजव॥ पतकंकणाकरवांधोनव॥ ५॥ दो॥ ता॥ जतस्रवंम्योविप्रन
वहुतनकोंकणोवुलाइ॥ पत्तसमधीवेगकाररहथेपदुलेजाइ॥ ९॥ चौ॥ ई
विछागरुरवेगहींम्रावडु॥ महांहोदलहोंशीघ्रसिधावडु॥ चलोव्रह्म\
हनषिनाचरनलग॥ नहांगरुरहेगयोनिहोमग॥ पहुंचोनहांसमधीली
नो॥ कारजकछोलहुवडुहीनो॥ विछागरुरम्रमहुमपसाजा॥ लेहोरव
लचलोकरकाजा॥ चलोनग्रकीगेरपुदितमन॥ मगमहिम्रावनमिलो
सिंहवन॥ म्रत्यमहनकोंसिंहनिहारा॥ कुप्पानरम्रानेरजिपधारा॥ ०॥ दो
हा॥ सिंहगयोदिजमानकोमनमहिकलोनज्ञास॥ वडुनदिवसकीभव
मुरुकरोंभक्तनवमास॥ ८॥ चौ॥ वालककहैहेमनकलमपहपन॥
म्रानहमारेभागभयेम्रन॥ वडुनदिवसकेक्षमकुप्पारय॥ हमरान

अ॰ थ॰ नग्रावैतुमसारथ॥ बहुरवेनतीपककहोंतुम॥ वचनमत्रनहनहिअ
भा॰ वमारइहम॥ अवनकरइहमराननहाला॥ प्रथमेतुनइहमारीचाला
२७२ कैहमापानकतुमलागे॥ सनकहइनहोतुमरेआगे॥ पितुकंताकोकुष
भघोनन॥ बाहतनहीकोउलिनग्रालन॥ २॥ दो॰॥ ताकेओघटके
नमिनपितापठायोमोहि॥ सौघटआमोजननसोंसांचकहइनहोंतोहि
१॥ चौ॰ई॥ जोअवमारकइगेअवहमकों॥ कंमाहरलागेतुमकों॥ बहु
रोतुनइहसरीवाना॥ जनअरंभकसोप्रफनाना॥ जनककेकताबां
धोहाथा॥ अततसमग्रीहमरेसाथा॥ जोतुमकरइमोहितनहाला॥ नि
फलजतनाहिनकुसलाना॥ यहपानकतुमकोंसभलागे॥ कहोंजथा
रथतमरेआगे॥ जोतुमआनाकरइकपाकर॥ फिरआऊंदेवलहोउत
२॥१॥ दो॰॥ सकलसमग्रीजनककीविशागरहइसमेत॥ देआऊंफिरमो
हिपहिहिविनहीवसोंनिकेत॥ २॥ चौ॰ई॥ सत्यवचनजिपमानहमारा
आवोंवेगनलावोंवारा॥ मनवचकमपतीतपफकीजै॥ हरषमहेप्र
विसाप्तहदीजे॥ सिंहकहेमृहिरिरेविचारा॥ सत्यवचनहैवालतुमारा
हमतोभरमहाकुधारथ॥ कसोवहोतमग्रपनेसारथ॥ कलिहमतु
मरीवारनिहारा॥ कुधायावीतमहिसंवारा॥ नहमैआयोभृतनमा
गों॥ वालकतमरेकहेनलागों॥ ३॥ दो॰॥ जोअवहमतुमकोनजोंति
हकरहिइपहास॥ आयोभक्षनकारिएकीजेवेगविनास॥ ४॥ चौ॰
ई॥ अवतुमननोंकरोंपुनआसा॥ तुमनहिआवोरहोंनिरासा॥ तोंतेतु

म कौं सब बहि संहारें॥ मनन महि अब बरन मंत्र बिचारें॥ दीन होइ हि
म बचन उचारे॥ सो यह काजन द्रुलो हमारे॥ पिता कलप नाते र रपा\
वों॥ पत्त सम शीले पद्म चावों॥ सो यह बलन पङ्क चेपा को॥ देहै जनत बि
नास पिता को॥ सो आबैम ब होइ निरासा॥ काहू की उर बैन हि आसा॥ ९
दो०॥ नतकं कनापिता करवां प्यो है मघ वास॥ सो हम इतना कहत हैं
म तन होइ बिनास॥ ९८॥ चौ०॥ तम कौं दोष न लागे कोई॥ पिता जतकं\
या फल होई॥ पाछे करहीं सोष न त्रासा॥ बचन मान ली जिये हमारा
सो हम तन मपहि फेर न आवों॥ सम कहत हीं पहगत पावों॥ इतनी बल
करहि जे पापा॥ ते लागहि अब मोहि संतापा॥ भगवत निंदक गुरु निर
कपुन॥ परदारा रत सिंह अपवन सन॥ कंन्या बेच दरब जो लेवहि॥ बेदन मा
न हि बिप्र न सेवहि॥ ९९॥ दो०॥ तिय पर जन सला हाय जौं जल भोजन जोले\
हि॥ हिम बेली कंन्या भवन ना को पितन हि देहि॥ १०॥ चौ०॥ जो नर जवा
र त अभ्यानी॥ बेद न बूझहि अरु मदपानी॥ जो अतिथ को मान न राषहि
गो ब्राह्मण दोषी कटु भाषहि॥ भक्ष अभक्ष एक सम जानहि॥ बसहि
कुवास ब्रासन हि मानहि॥ मागी बलत करै अंगी कृत॥ बहुर दुषाव हि\
संत साधवित॥ पह अब लागहि मोह बाल कहि॥ जो नाहि न आवों सिं
ह सम पहि॥ पुन यह मन जनम हम पावों॥ जो न सिंहल मपहि फिर आ
वों॥ ४॥ दो०॥ बिरती सरहि जब हजनन मसं प्रासि मरन हीन॥ सरा
कल नामैं फिरहि जन मान दुहोर दीन॥ १०॥ चौ०॥ बहुर सौ धरी

अ॰ म्रे॰ कोवप्रधासे॥ पापउनननहिहिदें विचारो॥ धननेपद्ब करहि धनवाना
भा॰ निरधरहोषधरहिमुलाना॥ पुनपकधारीकोवउपावों॥ ननअथहस्तवैरा\
१२६ गकहावों॥ भरमनलिनंहीजनमगवापो॥ छोड़प्रहलवैरागवपायो॥\
जोगोग्रासमाहोवलगावै॥ वैरभावसभसोंडपजावै॥ २५॥ दो॰ ९ रा॥ जोफिर
वत्राकंलुमहिपैसभजनीपद्दपाकं॥ ममवचनप्रुकसिंहसुनदेहवि\
होवरजाउ॥ २६॥ चौ॰ ई॥ ग्रात्मगसुनकीसपनसुनीसव॥ कस्रोविचार\
सिंहमनमैंनव॥ करेनवचनलोपपहवालक॥ श्रावाहईसिंहुननका\
लेक॥ वहुरग्रसुनवचनउचारे॥ सुनहुसिंहवलनाउनिहारे॥ कहोलु
मोरमांसलेश्रावों॥ निमननमेंहिग्रणापहुचावों॥ कहैसिंहसुनहिज
सुनवारे॥ अवरमासनहिकामहमारे॥ लमरेननकोंकरोंग्रहारा॥ वहुर
कहननेहांएकविचारा॥ २२॥ दो॰ ६ रा॥ सुरुजोराजामोरधुमेनग्रनलसारेजोइ॥
जोवहदेवैग्रईननलमनजभोगोंसोइ॥ २९॥ चौ॰ ई॥ सिंहकहैहिजसुनसव
नकाना॥ लमननभक्षनकरोंप्रमाना॥ कैवउग्रईमोरधुजसावो॥ होम\
हिपकमोहिद्विपलावो॥ अवरमासहमरेनहिकामा॥ चलोसपनकरहि
जनिजधामा॥ जाइपसोपगअपनेलाला॥ सिंहहलांलकहीसवचाला
श्राकारेइजाउफिरनहां॥ कीनीसपनसिंहवनजहां॥ सुनग्रासुणलिप
क्रोधवढायो॥ सुनलेवेगनृपनपहिआयो॥ २४॥ दो॰ ६ रा॥ वलग्रायोग्रा
सणनहांनृपनमोरधुजधाम॥ पांडवसेनानृपसभामधवैठेवनसाम
२६॥ चौ॰ ई॥ नहांजाइनृपग्रापनभयो॥ क्रोधवचनपुखमेंप्रगटयो॥

कह्यो राज षगजन मन उल्लास ॥ बहुरों षगजन सब परिवार ॥ नेष
गज्ञो जु मन गरव सहित नर ॥ सभा सकल षग बिन श्री गिरधर ॥ तन रा
माबोले अवर्ज मन ॥ कृतिकों क्रोध कियो जिय जल्पन ॥ क्रोध निवारक
पाग्र्ब कीजै ॥ सकल हमांन मोहि कह दीजै ॥ आज्ञा कहें हन्न इ राजा
का ॥ तुम प्रभु हि दर्ई दिपो बहु दाना ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कंसाकार जजन तन करे तो
महि भयो न कोइ ॥ अति श्रुम पराधीन भयो प्रभु क्रौं दीनो सोइ ॥ २९ ॥ चौपई ॥
इन्लाटय सनते है मृत हमारा ॥ विषलरूपषाइ षल उल्लास ॥ करन्याबो है
स्वपनसिंह प्रति ॥ नास होइ हम राह्न न भूपति ॥ चिंता भई न्रप तन नका
ना ॥ प्रभु क्रौं भई प्रगनेहांना ॥ हम्हा करन ग्रन्ह नन ठाना ॥ राजा हदे वि
चार न बाना ॥ परम श्रुगन लागी पह कै सें ॥ न्रप मन मोहि दहायो ऐसें
ब्राह्मण हन राषों निज मरऊं ॥ मन बच द्विज कारन तन पकरऊं ॥ ३० ॥ दोहा
॥ करै री नना जोर कर ब्राह्मण कों भूपाल ॥ कहों वचन प्रभु गरल पव
इ तुम सुत न होइ न काल ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ जो बच कहै सिंह प्रभु बालक ॥ तेस
भ कहों सुन इ भूपालक ॥ भक्त करों हित अंग लसारे ॥ अब रमा समन रि
काज हमारे ॥ कै राजा कौं भई सरीरा ॥ अंक राइ नाला बहु बीरा ॥ तो लग म
न न इतन इहन न्राण सन ॥ नान रना सकरों जुम रो तन ॥ अब ई सरीर न
प तन प्रभु हि दीजै ॥ पाकार जकौं बिलमन कीजै ॥ मीन प्रगुण फल मों कों हों ॥
हिन तन रख्याम षफल सोई ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ प्रन कें नापनि जोग ग्रह
निर का मिटे कलेस ॥ अंग राइ नाबीर प्रगट दीजे बेग नरेस ॥ ३३ ॥ चौपई

रा॰ मं॰
भा॰
२२५

सुन राम आश्रमं रत भयो॥ हम आसिरी बिप्र बर रहयो॥ द्विज के गृह आइ हम
सेवत॥ रच्छा बस सुष हो रहत ब्राह्मन॥ मन बांछित पाप हरत अपने हिय॥ बि
चरनन हो रहत ब्रह्मन के जिय॥ देह अनिम कामन कि हरावै॥ एक दिवस ति
ह देस मुपावै॥ अब यह देह सु फल करलीना॥ जिह कर ब्राह्मन को दुष
दीना॥ चेगले हु स्वामी हरषत मन॥ सुफ निज देह कल्ले हरि अर्पन॥ २३
दोहा॥ हरि अर्पन सुफ कल सोतन लेहु बिप्र हत चमान॥ गो ब्राह्मन के अ
र्थ बप आवे सो रहमान॥ २४॥ चौपाई॥ सकल देह है है तीन प्रकारा॥ काम
बिहाय रहे है ठौरा॥ हमरी देह सफल अब भई॥ कुल अर्प ब्राह्मन कों
दई॥ यह बिचार रूप निय बहराना॥ सिंचत गंध कस्तो रस नाना॥ उ
बु में रूप न कस्त पग लागा॥ अस चली तन मन अनुरागा॥ ले पत्न कर सु
भ ठौर बनाई॥ पुरि तन रूप तन रहै बे बेगाई॥ अथा मुकत रानी मन हरषत
रे तसा न द्विज कों तन सुफ पल॥ २५॥ दोहा॥ केसर ओर म जन कस्तो तन ब
सन करे सिंगार॥ चोवा चंदन गंध सब अंग बनायो नार॥ २६॥ चौपाई॥ त
ले आई भरतार निकट तब॥ बैठे महा सुख पारष सब॥ अथ पानु कन छु
विते समिला मे॥ कुंडल मधुप कमल हगरा मे॥ प्रथ मे कस्तो प्रणाम र
वापन॥ प्रभु दिन ताही वा मशं गपन॥ ही न बचन बोली सुन ब्राह्मन॥
नुम मांगत रूप को आयो तन॥ अब रघुनी रूप की हम दाता॥ निप बिन हो
तन पुरानम बाप॥ हम हे आधो तन नरिंद को॥ द्विज लै मोहि समर्पसिं
हकों॥ २७॥ दोहा॥ रानी धर्मं धारी रूप लिवे रब चन परमान॥ मोहि समर्पं

कुलहि हित हितजै हित जहुराजान ॥ ७९ ॥ चौपई ॥ पतिबिन रहै भोगन न हिय
वै ॥ जदपि हरि सिमरन मन लावै ॥ विधवा धर्म महां दुषदाइक ॥ लीजै
मोहि करहु सुषदाइक ॥ हम जवनी रुप अरु ई सरीरा ॥ लीजै प्रभु फब्रा लषत
मति धीरा ॥ सुनि वचन तिय रुप को आयो नन ॥ ले प्रभु फल लइ भयो हरन\
भ्रमा ॥ वाम अंग गउ जन की वेरे ॥ पावन हैं हे पति के नेरे ॥ सोक कुकर पति
जप तप दाना ॥ या धा फल तिय सुनि तिन बषाना ॥ ८० ॥ दोहा ॥ पुन जो दान
करै त्रवति स्या धा फल लहि होइ ॥ इस्त्री प्रभु सरीर इक भेद न मानहु\
कोइ ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ करन न अंग्रीकार उचारा ॥ तिज न सहोइ यह परउपका\
रा ॥ कहइ न हि जन त नहो वचरानी ॥ सिहक मो नेउ तन हु कहानी ॥ कैयाल्य
न हत के नरेसन न ॥ सुवरना सकरि हो न हि भक्त न ॥ उघा पुकन पनिव\
वन उचारन ॥ कति हि जन तिय न विवेक विचारन ॥ पति बिन हिय रासो
भन पावन ॥ पति पाछे रहि जन न मलजावन ॥ विधवा कउ न कर्म अन हि\
नव र ॥ देवहु अपने हिय विचार कर ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ जिन जु वनिन के प
तिनि कर ले सभ करन सिंगार ॥ पति बिन करन सिंगार तिय सभ जग
करन प्रकार ॥ ८३ ॥ चौपई ॥ जो विधवा का जग रह गपावै ॥ विभचारन सोऊ
नाम कहावै ॥ तन सुगंध लावै ना सिकहि न ॥ ताकी है जग में अपकीरत
विन पत जीन ला रस भोगा ॥ ताको निंद करहि सभ लोगा ॥ अवन तहै
कहुं गीत कहानी ॥ लोग कहैं दर उहत षलभानी ॥ जिन तिय सों पे हास
विलासा ॥ निंद करन ते ऊइ पहासा ॥ अघ पकै रान इस नाना ॥ उलर होइ

न॰ग्र॰ अपजस जग नाना ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ जद्यपि चले सुमग विबेक भला कहै न दि
भा॰ कोइ ॥ तो नें दसौ उतष बिन महा कष्ट मन होइ ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ पति बिन
२२५ तियकि हृ काम न आवै ॥ जिम जल बिन वारिज कमलावै ॥ ओ पति कोच
रनन मन लावै ॥ होइ सुकृत निरभय पद पावै ॥ सर बिन जिम अलि दुषि
त मराला ॥ सो दुष होत कंत बिन बाला ॥ जैसें चमूर पत बिन हीना ॥ सो भ
रता बिन नारि अधीना ॥ सो अलि दुष बिन फूल निवासा ॥ सो भरता बिन
वधू निरासा ॥ सो आसन बिन बेद दृढ होई ॥ ताको मूढ कहै सभ कोई ॥ ५५
दोहरा ॥ जैसें नारि भरतार बिन जग उपहासी होइ ॥ निस दिन रहै महादु\
षी भला कहै न हि कोइ ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ सुहृद बिना जिम सूर बिकारा ॥ सो प
ति बिन तिय निफल सिंगारा ॥ नर बिन दान सो भवन हि पावन ॥ सो पति
बिन तिय असुच सवहावन ॥ सो धन पत धन षिसे होइ दूष ॥ सो जुवनी\
पति बिन नाहि न सुष ॥ अवर बडुलत दुष बिधवा तिय को ॥ लीजे बनरी
ने सुष तिय कों ॥ विद्या सुकृत बिन ती बडु करी ॥ ब्रह्मण के जिय ह पाव
परी ॥ तिरु वचन भावे सुन आसन ॥ सुन रानी हेष दृ बिचार मन ॥ ५७
दोहरा ॥ बन महि बालासिंह इक रहइ बचकहै इचार ॥ स्वपति मोर दुम अं
ग बिन औरन अंगीकार ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ कै राजा कै ब्राह्मण सुनतन ॥ इन
बिन अवर करें न हि भक्षन ॥ ओ धन दै हि जब वचन उचारे ॥ सुन दूर पव
न कहां विचारे ॥ सुर्ध सरीर वेग मुहि दीजै ॥ ओ न दिहै दु आप मुहि ली\
जै ॥ कनिकों इ मना विल मल गावन ॥ वेद वचन न हि कछ उपजावन

पवनसंकल्पकियोलघुसदाना॥ रेह्रवेगवचनिगमप्रमाना॥ उचननवि
लमहानकेश्रवमरु॥ अवरवनेककुजाइविसतनवर॥४९॥ दोहरा॥ पर
नन्दपनमुत्रसंभवैषुणहिविलमलगाइ॥ जगमहिकीरतहोइतरु\
हानहेडुभसकाइ॥५०॥ सकलसभाअचरजभई भाषोकहनजाइ॥ अर्जु
नकेश्रममहरहितसभचरित्रजतुराइ॥५१॥ रूपनमोरधजगतनिमितहा\
रिपहकसोउपाइ॥ अश्वमेधकेपतकोअउनालीसमध्याइ॥५२॥ इति श्री\
भारथपर्वणि अश्वमेधपर्वणि अध्याने॥ [illegible] पोथवतलीमप्रमान
५८॥ जैमनमउवाच॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनहुकुरुनंदन॥ कपामोरधुज\
किलविषकंदन॥ अर्जुनकेसंध्रमसेहनहित॥ कोतेरवीरमापतघर\
कुल॥ बोलोबडूरमोरधजराजा॥ लीजेननकीमेहिजकाजा॥ सफलहे
इकीरतजगपावै॥ पावेभलाश्रोरकाभावै॥ तवलीजेनकारडुगहरहे\
श्रव॥ करवनलियोमंगाइ रूपनननव॥५॥ दोहरा॥ तनकारनकोहरूनरप
लीनेवेगबुलाइ॥ सन्मारेषतनरूपतकीलोगनुरेसभआइ॥५॥ चौपई॥ व
दुरनरूपनकीयोइसनाना॥ अंगसुगंधसीचवहुनाना॥ रानीनिजकरय
ईनकीना॥ अतिआनंदआनजियलीना॥ राजाजियहर्षवअनुरागा॥ अप
नेश्रीगिरधरपगलागा॥ सबलेपनपरबैठोआई॥ रानसमग्रीसक\
लमंगाई॥ मैंयाकरीश्रुचुतनेदाना॥ एकअश्वपुनरपसर्णप्रमाना॥ नि\
गनिरतनसहुकुलअपारा॥ दियोदाननरपविविधप्रकारा॥ ३॥ दोहरा॥ रा
पुत्रनरूपनकामहाबलीतामरधजनिहनाम॥ करइसनानपवित्रदे

ज॰ ग्रं॰ कीनाश्याइयणाम॥ ४॥ चौ०ई॥ प्रथमेश्रारक्तस्पगलाग॥ प्रेमफल
भा॰ कलनसभस्रनुराग॥ चलवल्मणकेसनमुखगयो॥ हाथजोरकेकहि
२०६ भयो॥ कहेबचनलनविस्कृपानिध॥ यहहमराकारजकीजैसिध॥ श्री
गरेनहैनमकोंराजा॥ लनवैवेयहउचलनकाजा॥ लनरेषतपितमा
सकरावे॥ धगवहलनहिश्रकीरनपावे॥ श्ररथनपावेलनपितमाता
धगवहस्नश्रकारथगामा॥ ५॥ दो० हा॥ सफलजनमतिनकोजगतसे
वकरैपितमात॥ धन्यकलेवरहोतहैपितमाश्ररथनमजात॥ ६॥ चौ०ई॥
स्पकोंनतद्रमोहितनलीजै॥ लेहितजसिंहसमर्पणकीजै॥ विश्वकहेह
नहोस्पमाता॥ मोंप्योसिंहमोरधुनगाता॥ इस्त्रीग्रहलननतनहितलेही
धक्केगानस्पनकोयेही॥ पुनतामरधुजवचनउचारे॥ लनलनहिजवर
प्रभहमारे॥ जोहमपितकारनतनहिंयावों॥ निहचेघोरनरकगतपावों॥
पितागएसभगोत्रविनासा॥ रकलनविनलनश्रवरप्रकासा॥ ७॥ दो० हा॥
लनरेहीजोविनसतईपितवैंश्रवरप्रकास॥ एकपिताकोतनगएगोत्रस
मस्तविनास॥ ५॥ चौ०ई॥ मोंनेकरोवेनतीहितलयक॥ श्रंगीकारकरोसरीर
प्रभु॥ हमरारेहहमफलकरलीजै॥ समावानमफलकरलीजै॥ समाविन
वगुकिसहितकाजा॥ समाप्रुफउपजीहितराजा॥ लीजेहमरादेहकृपा
कर॥ परउपकारहोतकीरतवर॥ विप्रकहैलनस्पतनकाजा॥ वनमें
सिंहरहीडणाकाजा॥ मांगतनस्पतमोरधजकोतन॥ मनवचकमकीनो
श्रेसोप्रण॥ ८॥ दो० हा॥ क्रोधनहिंश्रात्माकाहोतनदुमोरधजराउ॥ लनरु

हनि पलुमरीविद्युनकरनदानमहिमाइ ॥१०॥ चौपाई ॥ हमजाननहीं
महाकवनश्रम ॥ कारननननस्वपनाहपवीपम ॥ तांतेंजुवलीमनहि
सिषावन ॥ पुनपुनआइमोहिभरमावन ॥ ननदीयेंजमराजसहोई ॥ औं
रधीचकीरनलिङलोई ॥ इंद्रहेनआपननननदीना ॥ श्रमरथपोजगम
हिजसलीना ॥ मांगथनरपनमासकरदीना ॥ हिनकपोनपहकारज
कीना ॥ हमजाननजमनिनहिसमाना ॥ श्रवजमवरपनदेननजाना ॥
११ ॥ दोहा ॥ सभजगहैवसकालकेइकदिनदेहविनास ॥ परकारजजमो
देननकोरवहोइप्रकास ॥१२॥ चौपाई ॥ सुनरवीरनशत्रुसमाना ॥ डारन
विघनदेनलुमराना ॥ कहैंनाथपुनसुनमनधीना ॥ पिताउरहैएकम
रीरा ॥ मोकोंकरद्रूकूनारपग्राह्यन ॥ रपवपुकाइलेऊहमरोनन ॥ तीन
हंडपितुकेसिरताना ॥ उनरेनहीविचारऊवाना ॥ तीनदंडपुनतनकेपि
लपर ॥ तीनोलिपेउनारनपनवर ॥ विघाघ्ररुनतोपवीननन ॥ पुनविवा
हकीनोरपहरषन ॥१३॥ दोहा ॥ तीनदंडजोपितापरतीनेरपनउतार ॥
तीनदंडजोपुत्रपरनहिउतरेसिरभार ॥१४॥ चौपाई ॥ तीनदंडसुननपर
स्क्रतिकहई ॥ देवदंडरिषिदंडउचरई ॥ पित्रदंडतीमरोवषानन ॥ हप
करयकयहइसभजगजावन ॥ देवदंडसुननवहिउतारन ॥ संध्याजन
करमविलासन ॥ निमकर्ममपवननइसनाना ॥ विपवनहोइकरावेदना
पुनिरिषिदंडकहतश्रुतिपाको ॥ तीरथयग्रहणकराइपिताको ॥ निबपु
तिकीर्तनकथासुनावै ॥ इहप्रकाररिषिदंडमिरावै ॥१५॥ दोहा ॥ पित्र

भ॰ पु॰ दंडपुनतीसचोगपामिटावैजाइ ॥ तीनदंडकोभारसुकवंहीइतासोंजा
भा॰ इ ॥ ८९ ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ नांनेंद्विजवरकरुणाकीजै ॥ पिताछाइहमराननकीजे ॥ तौ
२३२ नइदंडमिटैपितुभारा ॥ सिंहसमर्पइदेहहमारा ॥ पुनकोप्योग्रालमारा
जापर ॥ रेकाघरतननरेइनहितकर ॥ इहीग्रहहमकोंसिघरायो ॥ मछुक
रीनिजधर्मलजायो ॥ विलदानमहिकरनसंतापा ॥ देहोंरूपग्रवतमकों
श्रापा ॥ उठराजभलागोपगद्विजवर ॥ कारइसनानपसोचरननहर ॥ ९० ॥ दो
हा ॥ सर्वसगंधलगाइजपलेपनवैठोजाइ ॥ वामग्रोरवामाकरीसनदाह
नेसुभाइ ॥ ९१ ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ श्रईकेसउमग्रोरविपेतुन ॥ श्रईविदूरइतग्रोरदहे
पुन ॥ करवनतेमाथेपरधालो ॥ हतनसोंरूपवचनउचालो ॥ षेवडवेग
कारननहीजै ॥ याकारनकोविलमनकीजै ॥ कारनलगोहतनवहीतन ॥
बोलनभयोनवद्विपुनग्रालन ॥ कारानतहतनकेहाथा ॥ मैंनद्विलेवोंगा
रपमाथा ॥ रपहतनकोंवरजरहायो ॥ विवकरजोरवचनप्रगटायो ॥ ९२
दो ॥ हा ॥ द्विनवरग्रवग्राताकरोसमरेवचनप्रमान ॥ कइपकारतेसपत
मेनिइविपरीजैदान ॥ ९३ ॥ चौ॰ ॥ ई ॥ सात्मनकहैरूपतसुनलीजै ॥ दानफलै
नैसीविपकीजै ॥ सतनदसीषैवेंडहकरवन ॥ कारदेद्विजमरानविप
वन ॥ समसममोरधनकीनी ॥ तमग्रहलिपकोंग्रानादीनी ॥ पकजोरषैंच
इसुमताना ॥ जोरहसरीसमरीमाना ॥ ग्रानामानतिपोकरवनकर ॥ षैं
नीरवसोनव ॥ ९४ ॥ दो ॥ हा ॥ वद्विकारोग्रासुवकहैरूपननलेऊंदान ॥ सोवन

है हग जल टरन कायर भोरा जान ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ग्रासन कहै लेउ न हिरा
ना ॥ न्रप न मोर धुज सुरन जाना ॥ लेउ न दान देउ गाश्रापा ॥ पुन्न करत न्रप
कह्यो संतापा ॥ सुन न्रप सुत पुन वचन उचारे ॥ हिज स्वामी हम दास तुम्हा
रे ॥ करउ पकार हरहु दुख पीरा ॥ हम रालेव द्रुवई सरीरा ॥ पिता प्रेम
ताहु षपावै ॥ सोइ षमो कोंग्र पक जरावै ॥ मो पर करहो पर उपकारा ॥ सिं
ह सम र्प द्रुग्रंग हमारा ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ कर द्रुक्कलार पदे ह सुकदंड पिता का
मार ॥ सिंह सम र्प द्रु मोहि तन हि जवर करउ सहाइ ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ तामर
धज सुष कहै पह वचन ॥ तन न करै माने न हि ग्रासन ॥ पारपस भाष
ई सचर जगत ॥ म हु साप वैठे त्रिभुवन पत ॥ सुन ग्रासन प्रभु षव वचन उचा
रे ॥ पा ही न्रप के सुत न तुम वारे ॥ न्रप वीर जतेंत मरी इ तप त ॥ न्रप सारथी
तुष हो इ गी गन ॥ कंदू पन र के वसन कपाला ॥ मैं सुन करन गिर तन तन काला
वीरज वीज संग लिप ग्रावत ॥ करत निवास गर्भ उपजावत ॥ २५ ॥ दोहरा ॥
र मन तु वीस इक उमिल विपव न होत सरीर ॥ सुभ वेला रवि दान सो ह
न उपजन रणधीर ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ग्रह जो नीच समै रवि दाना ॥ इपजन तु
उ नीच ग्रज्ञाना ॥ तांतें सुन द्रुला प्रधनवाला ॥ तुम सो न्रप तन मोरधुज ता
ता ॥ दान करत न्रप कायर भयो ॥ विधमान हरि के शरण गयो ॥ तुम सो सु
न रसही भूपालक ॥ जिम तुम पिता होर तुम बालक ॥ तुम सभ कायर
हे हों ग्रापा ॥ दान करत न्रप करत संतापा ॥ हम सो न्रप तन सुष वचन उचा
रे ॥ सुन स्वामी हम दास तुम्हारे ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ जिह हत मिम तन लहग गिसो सो

अ॰ग्रं॰ द्विजसुनदू विचार॥ बामअंगको दुषभयोरोवनयहन्निपधार॥ २५॥ चौ॥
पा॰ ई॥ बामअंगरोवनयहन्निपधर॥ निहफलभयोदानकेअवसर॥ पारहो
२७८ गाकिसहिनकाज॥ गुरुकोंदानकरनहिराजा॥ रोवनहैवडकारनछ
कारा॥ भयोमकारजबरडपकारा॥ अंगदाहमाविघलेवहै॥ अरुविज्ञान\
गुहिमागदेवहै॥ सबपहदेहहोनसविधाना॥ नवहिनभयोसहलक\
कुराना॥ नवकवदानदाहनेअंगा॥ दियोनपवनभयोअतभंगा॥ २६॥ दो॰
रा॥ कृपाकर्मसभदाहनेवचनसमउनसाथ॥ कवियपर्मरणान्नदमहि
छदगदाहनेहाथ॥ २७॥ चौपई॥ सोवाचारकरनवामाकर॥ थछुकुवीज
ठौरमहिननपर॥ नहुदुरीषमांहीसवधाना॥ निनदुरंगेपकीवरसवाना
जीवनसिद्धभयोनहिसारथ॥ मनकसमेअवभयोनिसारथ॥ हरनकरन
अवभयोनिरासा॥ पूरनभईनमनकीआसा॥ देषदुअंगदाहनेरीना॥ जिप
नमनकयहपरमदुनीना॥ पूपारहोगाभयोयुकाजा॥ अंगदाहनामनसन
राजा॥ २८॥ दो॰ रा॥ कोंनेंबामाअंगगुरुरोवनहैहैद्विजदेव॥ दियोननपसंक
लपुरुकरीनआसणसेव॥ २९॥ चौपई॥ मोहमविवअंगअसवनअरन
मोद्विजकापरमोहिउचारन॥ बामअंगरोवनअपनेहिन॥ नमनक
रनजाकोंअंगीकृत॥ अंगदाहनारंषदद्विजवर॥ प्रफुलितभयोनिपो\
नमहिनकर॥ करनवचननननमेंहूंगयो॥ द्विजनेंरूपचननर्पुनभयो॥
रपकीसमाभईप्रमाना॥ हरसोकमनसयंभगवाना॥ जोजोदेषननप
नरहभर॥ विप्रमेवहुरगयोभयोहर॥ ३०॥ दो॰ रा॥ सावधानहरिदेषउ

ठवरनपसोभूपाल॥ श्रंगलगायोनपनकोभयउसत्रुघाल॥ २४॥ चौ
पई॥ धन्यधन्यहरिकहैमोरधुज॥ धन्यनरुवारीजीनमहांभुज॥ धन्यतुला
गकुलभूपाला॥ धन्यापस्यपननगरविसाला॥ देहसहितवैकुंठसिधा
रहु॥ जनमनमरनकोसोकनिवारहु॥ मोरधुजकहैसुनभगवाना॥ कलस्मु
गभगतवक्रनसंताना॥ बहुतभांतकेसंतप्रसंता॥ जिनतेपरधाम्नतथी
केता॥ तामरधुजसेनासभसंगा॥ हमसंगचलोसहादरंगा॥ पतसुधि
ष्ठिरराजनकुरावहि॥ कारजकारश्रपनेसरवन्नवहि॥ भयोमोरधुजश्रानं
दतमन॥ हरिकेवचननसनेरपश्रवनन॥ २५॥ सो॥ रा॥ वारवारहरिचरन
परवचनकहेप्रगहाइ॥ रन्योहमारेकुलनमिनयतजुधिष्ठिरराइ॥ २६॥
चौपई॥ जिहनिमित्तश्रीपतबलआयो॥ सावधानहमदरसनपायो॥ जो
मघकरननननपतजुधिष्ठर॥ कहांहोतहमकोंदरसनहर॥ हमसेपतित
नहरिपगपरसन॥ श्रीगिरधरनकहांहमदरसन॥ जिहचरननकोधि
वब्रह्मादिक॥ ध्यावतनारदसुकसनकादिक॥ जोगीजंगमजनमीतपीसर
ध्यावतसदनरमुनीरिखीसर॥ दीननतकोरकलपकरध्याना॥ सोहरहम
परसेसविधाना॥ २७॥ सो॥ रा॥ पर्मजनपतप्रसादहमपरसेश्रीभगवान॥
दिपोवासवैकुंठहरिदेहसहितहितमान॥ २८॥ चौपई॥ हमजैसेपति
तननिमित्तहरि॥ आएचरनपधारकृपाकरि॥ बडेभागतनपगुस्यहमारे
भयेकृतारथहरसुमनसारे॥ तामरधुजपगनहकसोजिह॥ नृपमे
सनगुषवानपठेतिह॥ छिमाकीजियेदासतुम्हारा॥ दीनबंधकृपामय

अ॰ अ॰ परम्रपारा॥ करीवेनतीन्रपतजोरकर॥ मगनहोइन्रपपलोचरनहर
भा॰ महाकृपालभए नंदलाला॥ कंठलगाइलियोभूपाला॥ ३९॥ दो॰ ह॰ रा॰॥ अर्जु
२२९ नअग्रनिअ्रचरजभयोरिदेविचारनतान॥ वडेभागहैंन्रपनकेहमकीने
भगवान॥ ८०॥ चौ॰ ई॥ अर्जुनप्रतवोलेश्रीगिरधर॥ न्रपतमोरधुजभग
तमहांवर॥ तुमपुनहोनिजभगतमहांभुज॥ न्रपकीप्रीतनवरनसकों
तेज॥ न्रपतदेहमोंभयोविदेहा॥ सर्वसमर्पोकृस्नसनेहा॥ राजपाटसुत
जुवतिसंगाथा॥ सकलसमर्प्योश्रीजदुनाथा॥ मांग्योहरिपदनिजध्यान
भगत॥ पुनहरचरनपलोष्टपवीपत॥ भएप्रसन्नकृस्नराजनपर॥ न्रप
सेंदेहवकुंठपठनहर॥ ८१॥ दो॰ ह॰ रा॰॥ जेपुरकेवासीहुतेसकलतेसभन्रपत
प्रसाद॥ साधवलाएमोरधुजजनजुवतनसोंअहलाद॥ ८२॥ चौ॰ ई॥ चढि
विमानमोरधुजगयो॥ तामरधुजहूपकेसंगभयो॥ अगनतनवपुतामर
धुजसाथा॥ वसेमानप्रातानजदुनाथा॥ अर्जुनसंसेकृस्नमिटायो॥ तिरछ
पतनानरपतिजियभायो॥ न्रपहितजलेंसरिशुभितयजाना॥ पारथपलो
चरनभगवाना॥ छोरदियोपुनचलोतुरंगा॥ अगनतनसेनचुरीरथसं
गा॥ सेनासकलदेखकेअर्जुन॥ प्रभुदितभयोसराहतभगवन॥ ८३॥
दो॰ ह॰ रा॰॥ कृपाकरीगिरिधरनकीधर्मसुतनकीओर॥ तामरधुजसेसहर
लेचढेआपदलजोर॥ ८४॥ चौ॰ ई॥ पुनतामरधुजकयोसुकाना॥ नग
रपठोसभजतसमाना॥ चारोंवरनपुरुषअरुवाला॥ गजपुरकोंप
ठएनतकाला॥ सकलसमग्रीलक्षअरवाला॥ हस्तनपुरपठईभूपाला॥

556

कुद्यो ग्रथ्य उनर हिसगयो॥ वीरव्रह्मपुर आपतभयो॥ पुरी नाम पनि हपा-
मावती॥ सुचि पावन बहु सम धर्म पनि॥ निहपुर सकल पनि व्रतधारी॥ उ-
हघ सकल रकलि घव्रतधारी॥ ८५॥ दो॥ शिव कीश माके निमल त्रास्य
नकलो उपाइ॥ सुख मेघ के पतकोड नवास मोक्ष भाउ॥ ८६॥ इति श्री भारथ
र्वे लोमश ऋषि उपाख्याने॥ कवि हरिहर कन भने उनवास मो अध्याउ॥ ८९॥ वैसंपा-
य॰ उ॰॥ चौ॰ ६॥ जैमुनि कहै सुनहु भूपति नवर॥ वीरव्रत सकी कथा अवनपर॥ नृ-
पको सचिव बहु मनि लिहनामा॥ सेवक रूहस रसंग्रामा॥ हथ भधन के द-
रसन काजा॥ वलो पुरि निर्झाता लेरा जा॥ सेना सकल समथ्री लीनी॥ सेवा-
ग्रा इसंधु कीकीनी॥ वाहर लें वन सार वल ग्रापो॥ निह हतां न समभ हमन ह-
गायो॥ अरभुजते ओप कुमर रंगा॥ विरचत संग अक्रूप मरंगा॥ २॥ दो॥ स म-
तप ताप हन तन लाप पवर सुरंग॥ निरघ सचिव अप्रसुदित भयो अव विवि-
उहि संग॥ २॥ चौ॰ ६॥ मंत्री मन महि कर तविचारा॥ गहन न हय न्पकर त-
प्रकारा॥ जो हय तन करग हत न वाजा॥ तो हन मो हिरिसा वत रामा॥ तुम-
निजुद्द काउ घम कीमा॥ प्रथमे करहलो षकर लीना॥ पाके ते पारथ कीसे-
ना॥ आवत सम तनि हारी नेना॥ सज सेना सनमुख चलगयो॥ पनुपहा-
ले काढा भयो॥ उनतें पांडव की सेना तब॥ आइ न्नुरे सरेस पहुसव॥ ३॥ दो॥ ग-
निरषव अवाहन कुयो पनु षलीन कर धार॥ इह रिस समतिरिसार मन-
प्रहस्यो भप कार॥ ४॥ चौ॰ ६॥ सेना जोर तय मन वल वाना॥ लागे सकल चला-
वन वाना॥ मेघ बूंद जिम सर वरषावत॥ अर्जुन सतन तन कुहनन पावत

मं.यु. परमपत्रपरजलजिमहोई।निमलरपरसकरैनहिकोई॥ताहासूरखत्रु
भा. वाहनरन॥निरभैदैकछुत्रासनहीमन॥हूंहंरिसाइवत्रुवाहनश्रुति॥नी
२८. नवानपारेमंत्रीवन।वेधनकरीसरनसेनासभ।त्मनिसहितउठगई
सेनसभ॥५॥दो०॥हनउत्रारकहीसकलवीरग्रयकोंवान॥त्मनसह
नलमरीचवभईसकलरनष्टान॥८॥चौपई॥सेनासकलउत्राइहईनभ॥
ध्रमध्यकासपुनगिरीपरनसभ॥नासभपरसभलमरेजोधा।वीरत्रत्यसन
रपजियकोधा॥रानावसोवजाइनिसाना॥संगछत्रीसरेवलवाना॥धर
नप्रकासपकहेंगपो॥लमलसबरसनिधंनहिकपो॥वीरवलत्नरपस
नपुबभपो॥क्रोधनपत्रुषवानकरलपो॥श्रत्रुनरघपरऋसनिहारा॥
श्रवरनहूरेसपहीविचारा॥५॥दो०॥कौकरवानचलाइहींसनश्रुव
दैनेरलाल॥छत्रीपर्मविचारविनचिंनकरनभूपाल॥५॥चौपई॥छत्रि
पर्मजोवेरवनावे॥छत्रीसत्नुवांधरनजावे।सेनानिरषजुद्धनहिकरई॥
निहवेकोरनरकमहिपरई।पुनहरिसनजुषवानचलावे।सोनरकहूंठौ
रनहिपावे॥वेरवचनपहूसनप्रमाना॥मांनेचिंतवहीराजाना॥हरि
भूपनकोवोरनिहारा॥चिंतमानतूपकसविचारा॥कवनवनीतूपकों
होउवाना॥करनसकनरकैउहिगाना॥८॥दो०॥निरषहीनतात्रूपनकी
श्रीपतभपऋपाल॥मनफैरेहरिहूदेमैंकरनविचारभुवाल॥१०॥चौपई॥
वनीकवनहोउवानतूपतमन॥रकहमसनयुषनहिजऋनरान॥पुनहू
मीछत्रीकीलाजा॥रनतेंविमुषपिकारहिराजा॥होतेंवातमहांदुषभारी

हमजानामोरषमहादुषारी॥ होऊवालहोनसिधजैसें॥ तनहोरषपतक
हैंतिपलैसें॥ सुग्रीवपनीदीजेपारष॥ सिहहोइतमराजगतारष॥११॥ दो
हा॥ कृविधर्मधमरारहै यौंआषहिगेलोक॥ सुग्रीपतिसनमुषरहीन
हुनहीनरपजोग॥१२॥ चौपई॥ पारषकहैसुनहूनरपमोरे॥ यहवचनकहन
इवतनहिजोरे॥ उहांसुरंभजततमनमलाना॥ हमकोंजोगनहींयहबाना॥१
जोनरअग्रमेधकतनकरहीं॥ तेनरअल्पवर्जमैंरहहीं॥ पतककर्ममहिहा
नहोनतनव॥ रहीसोंसंभोगकरैतव॥ ब्रह्मकर्मनेहमनीहवानपर॥ कह्यो
निगममनहिहमोक्षवनपर॥ पतककर्मवड़ोंपरहेसा॥ सबरहानतन
करैनरेसा॥१४॥ दोहा॥ दरसनपरसनसाधकेपुनतीरथइसनान वि
नसमानहिहोनसिधब्रह्मवर्जपरमान॥१५॥ चौपई॥ पातिग्रहहत्याहमकों
नहिजोगा॥ जवलगहोनपतसंभोगा॥ जवयहजततसंघरनहोई॥ जोश्रम
कहैकरैंहमसोई॥ रहीनहींकरोंइहअवसर॥ निहचैमातोंमनववक
मकर॥ कलसकहैपारषहतवलीजे॥ मनअपनेविचारतमकीजे॥ तंक
नवांधोरषपतनपिछिर॥ जततकर्मकोभारतनतमपर॥ रतवंसीकंमा१
रषकेगृह॥ मातपिताकुलअतिउत्तमजिह॥१६॥ दोहा॥ अपनेसुषतेंक१
हतहैपारषकरोंभतार॥ हहसंकसोंतजविषैकीजेअंगीकार॥१७॥ चौप
ई॥ जोतुमकरोतअंगीकारा॥ लागेमोहिअघापअवभारा॥ मोकंमाकोंपि
तेनहिरवै॥ जनमअनेकनरककोंसेवै॥ जोपतिताहिविसारकर
हो॥ निहचैंजोरनरकमैंपरहीं॥ वेदवचनभाषतहैंजैसें॥ उचवतमान

जै. सु. लीजइतुममैनेसें॥ हरिगुणबचबचनसुनेपारथमनव॥ कह्योनककुगद्दिर।
भा. होमौननव॥ बीरअल्पपुनबचनउचारे॥ सुनहुकृपाकरप्रभूहमारे॥ ७
२८१ दो०॥ जोपहम्र्वसरदेनहींपुत्रीपारथजोग॥ सकलधकारहिगेरथ
नविंदकरहिमुफलोग॥ ८॥ चौ०॥ लोगकहैंहेंगेपुसेवेना॥ इसोरथम।
देषीवडसेना॥ सोअर्जुनकोंकंन्याहीबी॥ कायरभयोलाजनहिकीबी॥ व
इरकहैंहेंगेकुबलजायो॥ लसोनबीरअल्पहैरपायो॥ भपकरहीबीकंन्या
पारथ॥ धगसवकहैंमोहिमुरूषारष॥ बोलेकमलसुनहुवचराजा॥ हरे
निबारसरसिरलाजा॥ कंन्यादिनवंलीअमरेगहह॥ हमालागनपितृहर।
सनलिहइ॥ ९॥ दो०॥ दिनवंलीकंन्याभवनपितुपतिहेबैनाहि॥ जनम
जनमदुषपावहीघोरनरककेमांहि॥ १०॥ चौ०॥ बांछनषीजोपतिकं
न्यामन॥ श्रापतभयोसरघहअर्जुन॥ मनवचक्रमअर्जुनपतिचहई॥
सोईअबवसरहैसुनिबहई॥ कहारहेगापर्मनिहारा॥ सुनापकृजवरेडु
भलारा॥ बीरअल्पपुनवचनउचारे॥ समवचनसभनाथपलहारे॥ जोकं
न्यानेनिजसुषपाषै॥ हेइसोईपतिसोअभलाषै॥ ११॥ दो०॥ कन्याअस
कहेंपगरसुनहुआपनेकान॥ कहांजपारथरथापनलोपहवानश्रम
न॥ १२॥ चौ०॥ पुत्रीवचनसुनहिगेलोगा॥ लोचपिकारकरहिमुफलो॥
गा॥ बीरअल्पचंदेलपवायो॥ पुत्रीकोननकालबुलायो॥ ताहीछिन
कंन्याचलआई॥ नमस्कारकीनोजडुराई॥ पिताकह्योपुत्रीसुनलीजै॥ १
जोमनवांछनसोपतिकीजै॥ कंन्याकहैंसुनहुपिताकाना॥ अर्जुनप

तिमुक्तसमप्रमाना॥ अवरनवांछतहौंपतिकोई॥ पारथनामकंतमु
कतसोई॥२४॥ दो॰ हा॰॥ इस्त्रीजननमहांकवनमनमहिकयोविचार॥ देहउधा
रनकेनमितअर्जुनकरौंभतार॥२५॥ चौ॰ ई॰॥ इस्त्रीजननमकहैअवलास\
व॥ संध्यासिमरनकरतनहीकव॥ करैनहीगायत्रीध्याना॥ पतिसेवा\
मेंमुक्तप्रमाना॥ टहलकरैभरतारतिझावै॥ पतिवसकरैपरमपदपावै
कोटउपायकरैतियजोई॥ पतिसेवाविनमुक्तनकोई॥ जोनहिपतिसेवा
मनलावै॥ सोतियघोरनरकगतपावै॥ यहनआइनिहचैमनमांही॥ मु
क्ततैंसेवाहोइकिनांही॥२६॥ दो॰ हा॰॥ जोसमर्थनहिहोइपतितौनहिउध
रैतीय॥ विमुखरहैहरिभक्ततैंसदापापरतजीय॥२७॥ चौ॰ ई॰॥ जोपतिप्र
थमआपनहितारै॥ सोकैसेंनिजनारउधारै॥ इकतौतियतेंसेवनहोई॥
पुनपतिभगतविमुषहरिसोई॥ जोनहिप्रथमैंआपउधारै॥ सोकैसेंनिज
नारउधारै॥ तांतेंमोमनज्ञानविचारा॥ कुंतीसुतनकौंकरौंभतारा॥ जिनसे
वाहरिकैहमरीगत॥ पारथविस्नुभगतकीनोपत॥ जिनवसकीनोश्रीनं\
दलाला॥ कमलापतत्रिभुवनप्रतपाला॥२८॥ दो॰ हा॰॥ सिवविरंचमह\
वानिसदिघोजनफिरतउदास॥ सोहरिअर्जुनकीसदाटहलकरतनिम
दास॥२९॥ चौ॰ ई॰॥ तातैंमुक्तकीनोपारथपति॥ देख्योहदैविचारहरिभगत
आपनाइगतिहअसपाना॥ पुहचावेगामुकतिनिजधाना॥ तिनसेवातेमु
क्तभगतमहोई॥ यहनियजानकसोपतिसोई॥ देनहारगतमुपनगतकि\
रधर॥ सोअर्जुननवसमनवचक्रमकर॥ मिटहोइसारथपरमारथ॥ नि

अं·ग्रं· हचेपतिकीनोगुरुसारष॥ यहकहिकंन्यागवनकरयोंघर॥सुरितव\
भा· लीकरकैप्रणामहर॥४५॥दो॰॥उग्रसरिपोनवड्डरककुरुगर्जुनगृह
२८२ राजान॥तैसेंहीकारजकरैगोरक्षाभगवान॥४६॥चौ॰॥वीरव्रतसा
जाप्रनुरागा॥हरषतहिंयेकपणागलागा॥आसालेउपमनपकीन्हा॥
कारनकोअरंभकरलीना॥हैकन्यापीनपकेधामा॥प्रगटकहौंताकेव
रनामा॥नाणकप्रवरइलीपमालनी॥रूपउजागरगुणविसालनी॥ना
णकश्रहत्याहीनमराजा॥प्रपमेडलोकसाजिहकाजा॥कंन्यानामभा
लनीजाको॥कह्योव्याहपारषसौंताको॥४७॥दो॰॥तनमराजाकारनसम
रपनबुलायोनाहिं॥कंन्यापारषकोंदईमुदितभयोमनमाहिं॥४८॥चौ॰
॥सोकंचनमृगजनरपरीने॥मालिगुकतलाहलवसनतवीने॥विध
वतकारनकसोलरपनवर॥महाप्रसन्नभयोजिपगिरपर॥इहांपनंज\
यकारजभयो॥उहांधर्मपुरितारहगयो॥धर्मराजआदरसिबकीना॥
सिंहासनतनग्रासनदीना॥फुनतारहगुषवचनउचारे॥यहकहतकी
नीसगुरतलारे॥कंन्याव्याहदईपारषकों॥प्रमुदितकरयोंसहत्रारष
कों॥४९॥दो॰॥आदरहीकोनहितमहितहांतुरैत्रैलोग॥तहांकुसलस\
विधानपेउरनतरसतनुमजोग॥५०॥चौ॰॥उचततपीनपकोंयह\
वाता॥कहोनिरादरवडेजमाता॥आदरहोइनवरमैंजाको॥करत\
निरादरसभजगताको॥रपकीनोपुत्रीकोकाजा॥श्रीपतिआदरतुरेव\
इराजा॥कलिकोसमरतनोहिंबुलायो॥श्रीगुनकोमनहींहमपायो॥क

कलिजुग सभा नहीं चलि गयो ॥ कुंभ हरष सन हि पाप न भयो ॥ रूपवत उ\
चन है न आदर लोक ॥ कलिजुग महल का कलो कहे सुरु ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ ह
न कौं पायो जमराज तब पहरे वसन बनाइ ॥ जिन कीनो आदर नगर क\
ना कौं मारौं धाइ ॥ ४५ ॥ चौपई ॥ रूकने उ जमराज करे तब ॥ नासत हर\
का करौं जाइ अब ॥ जिन मो कौं नहि बोल पठायो ॥ मान भंग कार जगदि
खरायो ॥ काल रूप है पर्मसि धायो ॥ नारद बीर बेल सरहृद आयो ॥ रिष कौं
रूप तब बंदना कीनी ॥ लागत रूक्ष बिनति सब कीनी ॥ पूजा करी हरष बन कि
या ॥ अतिथि सब नारद कर लिया ॥ बचन कहे नारद भूपत प्रति ॥ सुनी आहु
कलोल महर पति ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ कंन्या के कारन समै मन नहि लियो उ\
लाइ ॥ तातें जमपर कोप करि आयो महा रिसाइ ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ तुम कौं नक कु
बिंन राजाना ॥ बैठे इहां कलस बिधाना ॥ जद्यपि है तुम अति बलवाना ॥ क
हां करे तुम गृह भगवाना ॥ बीरबल रूप बिनत न कीजे ॥ मन लेह रिव रनन
महि दीजे ॥ यह वचन कहि नारद उठ गये ॥ तमनाही छिन आप न भयो ॥ जम
न ये माय छतन में मन अति ॥ संभ्रम मोहि निवार हृद मुनिपत ॥ है कंन्या हो
तीन पके गृह ॥ रूकनो आहृद ईशु जुन लिहइ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ इति यस्वलता जब
राजन कौं कैसें हरई विचार ॥ मांगलि पाय पति कन्यका कैन परियो भतार ॥ ४९
सोरठा ॥ सुरु यह कथा सुनाइ जैमन मुनि करुणा कराइ ॥ कंन्या सों जम
राइ लिह प्रकार कार जकसो ॥ ५० ॥ दोहा ॥ जो यह कथा पढे सुनै लिहइ
सन्न नहु राइ ॥ अश्वमेध के पत्र को पंचासम अध्याइ ॥ ५१ ॥ इति श्री आद

ने॰भु॰ पठितेश्रीप्रथमेपदाष्यानं ॥ कवित्तकनकहरनभयोपापवासप्रमान ॥ ५ ॥
भा॰ चौपई ॥ जैसेसुनकहैसुनउभुपाला ॥ कथासुधारसमहाबिसाला ॥ जोनर
२८३ परईसुनाजमराजा ॥ बसलहनावेंसकलसमाजा ॥ मालकग्रहरहकंमा
कोनामा ॥ कुलभगनगुननिधअभिरामा ॥ नवदसवर्षभईपुत्रीजब ॥
रूपकेजियचिंताउपजीतब ॥ हायजोरपुत्रीपहिगयो ॥ वचनकहतनर
पतजिनभयो ॥ कहोमैरक्षतवरसुषजोई ॥ लेउमंगाददेउपतिसोई ॥ १
दोहरा ॥ बीचेहगकररलाजसोंकहीकन्यकावान ॥ रत्रीजनमसुप्रकार
पतिहैसुजकहोइनहिताम ॥ १ ॥ चौपई ॥ सुजहोतहैसुचतीसोई ॥ जाकोधर्म
पतिव्रतहोई ॥ मनवचकर्मकरसेवकरैपति ॥ रहहुलकरैनिसदिन
पतिसोंरत ॥ पतिकीभगनकरैविधनाना ॥ भरताकोंजानैभगवाना ॥ प
हीनैपतिहचैनिपतलैवे ॥ विनहिनिमामधुवरनहिसैवे ॥ सुनहुपिताय
हवातद्वरीश्रुत ॥ परतीवेरवरहतपतिव्रत ॥ जमधुनिवलीगहतमरत
अवसर ॥ पतिव्रतभंगहुहतअवपरनर ॥ २ ॥ दोहरा ॥ सोतेंसुजतमपति
कसोवादखंतहैएक ॥ रहइप्रकारपतिव्रतरहैमनमतिकसोविवेक ॥
३ ॥ चौपई ॥ सुनवोलेनृपसुनतपुत्रीसुज ॥ मैंसोपतिनहिउचनकरनलज ॥
जिनतेंसभजगउरतद्रुरुषतिय ॥ देषतेसंतापहोतजिय ॥ दयानपरत
करतजगद्याना ॥ किततहिनतजतसमयहवाना ॥ मातादेषतसुतनहिवि
डारत ॥ सुतदेषतजननीसंद्यारत ॥ निर्दयकरतसकलजगनासा ॥ गोद्रा
सनननकरतविनासा ॥ गर्भसहितलेनाततिपतकों ॥ द्यानकरतजग

सकलजियनकों॥५॥दोहरा॥भक्ष्यअभक्ष्यनष्टाइईकारनसमनकोनास
रष्यापरननहिंनेकजियसामवरननउपहास॥६॥चौपई॥जमपतिकर
नलाजनहिंआवत॥कलिजगहमराअजसवदावत॥जमजमानहम
कोंनहिंजोगा॥पुनलमहासकरहिसभलोगा॥मालकवरपुनिवचनउ
चारे॥सुनउअवनरेपितारहमारे॥गुरुपतिकलोसमजमराजा॥धर्मसो
कंकोनरपतसुकाजा॥ताहनअवरकोउनिहअवसर॥जोसभजीवनकोअ
धिपतवर॥धर्मनरेसमहांवलवाना॥जाकाजसबैलोकनिधाना॥५॥दो
हरा॥जोगनहींलमकोंपितारेवउअवरभतार॥अंतनतिसहिपतिकोंअ
वरलेजमकरैसंघार॥६॥चौपई॥उसरेषतगुरुकोंलेजावै॥जमतेंमोहन
कोउकुडावै॥गुरुहेषतपतिकोंलेजावै॥वलकरकोउनसकैकुडावै॥जोप
रतानहिंआपवचावै॥सोपतिकैसंगुरुमुकतावै॥तांतेंसमारहतनकोई
लमहिविचारकरोमनलाई॥इसवीजनमअसरुजानजिय॥सरुवान
पतिकरैजोगतिय॥पुरुषनुवतिजवनिकलहोतनव॥पतिप्रतिसत्या
हीनहोतनव॥९॥दोहरा॥पहइअसलहैपिताजोसरुवानपतिहोइ॥जि
हप्रतापतेंअवरनरतियगहइसकैनकोइ॥१०॥चौपई॥सवतेंमहा
वलीजमहोई॥जिहतेंछूटसकैनहिकोई॥तांतेंधर्मराजपतिकीना॥
मनवचक्रममायेधरलीना॥गुरुनमनअरप्योजमराजा॥ताहीसों
करिपेसभकाजा॥पहकहिकंमाध्यानलगायो॥समवरतीतनकि
महिवुलायो॥विप्रभेषधरआपतभयो॥करपणामनरपआदरदयो॥

जं॰ स्वं॰ ऋत्याणागनकरीसागरनयन॥पुनरूपवचनकहेपुत्रीप्रत॥११॥दोहा॥
भा॰ वीरब्रह्मरूपवचकहेपुत्रीसोंसमझाइ।जमभरबलनहिंजोगलकघुअव
२८८ रकहोप्रगटाइ॥१२॥चौपाई॥मोहिकहोपतिजमराजाविन॥सोतुमरेउ
मंगाययहीछिन॥जमभरतानाहीतुमजोगा॥हमतुमनिंदकरहिंस
भलोगा॥अवरसिष्टमहिकोउकहोपत॥लेउमंगाइअवहिंमनहरषत
धर्मराइसमजगदुषदाइक॥निरदयजीवमनेनसमभवाइक॥चौरकुकौ
रदयानहिंहोई॥अविवेकीपतिकरहुनसोई॥सुनतनभयोजमपानके
धमन॥वीरब्रह्मप्रतिकह्योपहवचन॥१३॥दोहा॥धर्मराजनरूपसोंक
हेहमयहउचननवात॥तुमरेसनगुषवचकहेमैंसोंमतुरासोंतात॥१४॥
चौपाई॥सुतापितासतसरकीममसर॥तांतेंककुनकहोंइहअवसर॥ह
मकोंपतिकीनोपुत्रीतुम॥ध्यानलगाइलियोतुलाइक्रम॥तनमनसर्व
समुफकोंदीनो॥मनकरमोहिअवाहनकीनो॥तांतेंममइहसोंचलगा
यो॥तुमकंन्यापतिहेतबुलायो॥वीरब्रह्मरूपजमपहिंचाना॥कसोय
णामहिंपैसकुचाना॥पुनरूपजमसोंवचनकहेतव॥इषदाईकलि
मोहिकह्योअव॥१५॥दोहा॥वीरब्रह्मयराजासुनदुहमपरदोषनलाइ
मैंसेंकर्मकरैकोऊतैसेंभोगतआइ॥१६॥चौपाई॥सुषदुषनिजकर्मन
तैंहोई॥मुरूपरदोषनलागेकोई॥जिनसिमथ्योनहिंथ्योनंदलाला॥
तेनरदुषपावतभुपाला॥सुषदायकहरिकोंनहिंध्यावत॥तेनर
गनमतनमहदुषपावत॥जिनपुरुषनदुषेमवसकीना॥तिनकोंक

फलमहांदुषदीना॥ मानुषकरमकूकरनैहैंजैसे॥ ताकेफल
भोगतदुनतैसें॥ हमकाहूकोदुषनहिदीना॥ फलपायोजैसोतिन
कीना॥ ७॥ दोहरा॥ हमअपनेअसथानपरबैठरहैंदिनरात॥ कामक
रतहेंअष्टकोजपदसहमरेमात॥ ८॥ चौपई॥ पईकरतहेंतासजगत
को॥ देतमहांदुषविलषभगतनको॥ तिनकोनैहैंपापविकारी॥ तिन
कोंदेतमहादुषभारी॥ कर्मकरतहेंसोफलपावत॥ दुषदुषदुषहिमव
ऊऊनधपावत॥ सभकोंकरतधर्मकीरीता॥ काहूसोंनकरतविपरीत
दुषदुषदेतकरेंकर्मनपर॥ करतअनीतनकोऊमितयार॥ हमतोबैठ
रहेंनिजआसन॥ औरससततहिजगतविनासन॥ १९॥ दोहरा॥ और
ब्रह्मनरपजोरकरजमकोंकलोप्रणाम॥ औरसहतनअमरेकवनक
होसभनकेनाम॥ २०॥ [illegible]॥ चौपई॥ धर्मराजसुषवचनक
हेंतब॥ सुनदूतपततननामकहोंसब॥ सुभअसुतहेतापरमारा॥ प
हावलीजीमेजगतारा॥ हिलियेसीलनकंपधरततनन॥ स्तिपतमप
नवद्वनपनकरतमन॥ चौथोकफजोकंठविरोधन॥ पंचमबाणप
हाहाहणाअत॥ षष्ठमषुअसलेषमजानहु॥ उररसूलतासातवोंप्रमान
दु॥ अष्टमहतनमलकपीराअत॥ लखुबाधाजानहोविमलमत॥ २१॥ दो
हरा॥ कईरोगरससमोवढ़रहुईइकारससज्ञान॥ हारससहितनकोउघोर
सषिरषीलासप्रमान॥ २२॥ चौपई॥ अवरअनेकहमारेपातक॥ तैस
मैहैंनीवनकेघातक॥ देहिजगतनकोदुषसंतापा॥ तैसाकस्तोहोहि

उ॰ सु॰ जिह पापा॥ द्विज हत्यारा होइ न कोई॥ खास कास ज्वर सों हत होई॥ लघु
भा॰ बाधा जु मरत संसारा॥ सो ज्ञानो जिय गोह मारा॥ उदर सूल सों नास होइ
२८५ नर॥ गुरु तल्प सम भेद हमाचर॥ उदर बाय सों तजत न प्रानई॥ परधन
हरन बाय सोई ज्ञानई॥ २२॥ दो॰॥ राज रोग सों जो मरै कुल हत्या
सोइ॥ धातु चुराई होइ जिह हृदि चकी सों हत होइ॥ २७॥ चौ॰ई॥ जो न
र मरहि महा दुष पीरा॥ गमन अगम्य नीतै तउ सरीरा॥ जो नर रक्त पि
त्त सों मरई॥ वस्त्र चुरावन हार उचरई॥ रोग अजीरन होइ विनासा॥
करी होइ रही जिन नासा॥ रुग्ण दुमल लाह रजा जो करही॥ अंगभंग
पीरा ते मरही॥ अग्नि पर पंचक जो नर होई॥ पथ्या खान मरे जन सोई
जिह ग्रह वन को आगल गाई॥ मरहि अगन जरहे दुष दाई॥ २४॥ दो॰
॥ स्वकाव्य चपन लेवही करन नह दे विचार॥ ते संग्रहणी रोग सों न
र तन लागन न्यार॥ २८॥ चौ॰ई॥ जिन दुष दियो होइ पितु माता॥ पुन ग्र
हदेव दुषा पधाता॥ ताको होत गलग्रह भारी॥ होइ पहर मरहि मरन
दुषारी॥ निरदूषन पर दोष लगावहि॥ तेन रउदर वात मर जावहि॥
जो अपनागु रु लोगन करही॥ सो नर पांडु रोग दुष मरही॥ निंदा सभ
न करै जन कोई॥ रोग सलेषम सों हत होई॥ द्विज दोषी मरहै कफ रो
गा॥ पित्त रोग पर नारि संजोगा॥ २९॥ दो॰॥ जो नर भरै कसाब बचक
पका पनिह होइ॥ महा दुषी तउ वे मरहि तिहि उपचार न कोइ॥ ३०॥ चौ
ई॥ कन्या हेम वस्त्र गो दाना॥ देहि कुत्तै र विचारन नाना॥ तेउ रोग तें मो

बनपावहि ॥ काउहिपकर्योरहतमग्रावहि ॥ ग्राइकहाहपिलकर्मबन
करहीं ॥ मलकउदरपीरसोंमरहीं ॥ कृपाकर्मजिनकहूनजाना ॥ रोग
भगंदरसोंहनप्राना ॥ जिनविस्वासघातनकुलकीना ॥ कृतघ्नपरीम्रन
दुषतनचीन्हा ॥ रोगएकसोआठप्रकारा ॥ पीड़ादेतसकलसंसारा ॥
२९ ॥ दोहरा ॥ दुषपावतहैसभजगतअपनेअपनेकर्म ॥ भारतराघदु
अवरपरहरकरइमनभर्म ॥ ३० ॥ चौपई ॥ जिनपरुरुघनहरिभजननकी
ना ॥ परेकर्मफांसीदुषलीना ॥ लागेआइअनेकरोगतिन ॥ मेजहीको
हरिकोसिमरतजिन ॥ हयकोंनिरदयकयोभूपकिन ॥ करनकराव
नहाररमापत ॥ धरमराइकेवचनसुनैनृप ॥ पतनमहिसोनलभयोन
रथिप ॥ पुनरुक्तीपुत्रीपहिचाना ॥ कहोसुइकलनवरकुसलाना ॥ कुन
कंम्याद्रुबवचनउचारे ॥ मनवचक्रमसुनपिताहमारे ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ गुरू
कीनाजमराजपतिघरजोग्रासगरूप ॥ भेसधारआपनभयोनिहचेध
र्मस्वरूप ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ कारमनध्यानलगाइलियोगुरू ॥ किथोधर्मपति
सांचकहोंजुरू ॥ करीदीनतामोहिबुलायो ॥ मोतेंहमरेग्रहचलग्राको
मालकुवरयहवचनकहेसव ॥ रपयग्रईभकारजकीनोतव ॥ प्रकमहु
रतलगनलिषापो ॥ वीरव्रतधमिघइरषवढायो ॥ ब्रपमेवचनधर्मसो
लीना ॥ पुनकारजकोंउपमकीना ॥ मांगलईजमतेंहोवाना ॥ ताकोंउ
गरकहोंविद्याना ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ रोगनआपेगुमनगरचढिग्रावेस
तिकोइ ॥ सहवांधमजरूकुनहांजीतरेकुगुरूसोर ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ सनमान

जै॰ ग्रं॰ भा॰ २८९ लीनेजमराजन॥ वीरभद्रसन्मुखपलिषोयहवचन॥ नवरवेरीरवकार
नकीना॥ अनगननरानहिंजनकोंदीना॥ विविधप्रकारसमग्रीसामा
वीरभद्रसदीनीजमराजा॥ अश्वरथगजवहुरिघेकनकभर॥ मणिभु
कताहलरतनपटंवर॥ वीरभद्रसन्मुखवचनकहेउन॥ करीदीननाथ
मेराजपान॥ हमसबमरीकछुसेवनकीनी॥ दहलकरनकोंदासीदीनी
॥४१॥ दो॰॥ पावहुमुदवमरेकरेदासीअरपीमोहि॥ दियोनककुलार
कबमहिलाजहमारीमोहि॥४२॥ चौ॰॥ यहप्रकारकीनोजबराजा॥
प्रीतीआहरईजमराजा॥ जनमेनाशबोविधजोई॥ जेमुनकहैसंशय
नसोई॥ अरवकथाहनइभूपाला॥ क्रोधतजमअयोपोनजकाला॥
नारदवचनराषमनमांही॥ जिपनेक्रोधनिवारलनाही॥ वीरभद्रसन्मुख
उकोजोरकर॥ वहुतविनेकीनीतिहअवसर॥ सनहुप्रभुकारजमनव
भयो॥ नुद्रवीचअवसरवनगयो॥४३॥ दो॰॥ श्रीगिरधरमनहरल
योधनुषतनोभुहिहाथ॥ कमलकलोसेयामसमहिकारनअर्जुनसाथ
॥४४॥ चौ॰॥ श्रीपतिवहुतउनाइलकीनी॥ हैतपठनकीविलमनदी
नी॥ अैसैंहीहरिठाढवनायो॥ तांतेलमहिनटहूतपठायो॥ तुमहोश्रेष्ठ
बपुवरहमारा॥ नृपवचसुनसमक्रोधनिवारा॥ धर्मराजजियसीतलभ
यो॥ हर्षितकमलसभामहिगयो॥ निरखविचारकियोमनश्रीपत॥ वच
नउचारकहेअर्जुनपत॥ उचननजीतनविनहयलीजे॥ वीरभद्रसकों
जनसनदीजे॥४५॥ दो॰॥ बुद्धनमिलहयनीधिपोवीरभद्रराजान

कंस्यापतिल्लमकोंकस्यालस्योनयहहमिपन्नाव॥ ५०॥ चौ० ई॥ इचनत्नव\
ग्रुहहिकंस्यापतिसों॥ यहविचारउपजाभूपनकों॥ पुनखागेदेखोजडु
गाया॥ तांतेंपत्रुषनज्योनरपहाया॥ होऊवानकउनरपभई॥ केसेंलरे
लमातिमनरई॥ पुनसनपुषनऊरेनकेसें॥ तजेसलसमफ्रोनरपग्रेसें॥ पु
हविनानरपलजसनहोई॥ नानरविंरकैसभकोई॥ पुरुनकस्योवांध
केवाना॥ कछीपमधिकारहिराजा॥ ५०॥ दो० हा॥ सभराजाग्रुषपोंकहेंसे
नानासकराई॥ पुत्रीहेकेउरमिसेोकछीपर्मलजाई॥ ५१॥ चौ० ई॥ वीरत्र
सकेलनकोउनाही॥ जोग्रवनुहकरेरनमांही॥ नुहकरनरपकोंन
हिजोगा॥ पुत्रीपतिसोंनिंदहिलोगा॥ जिहविपरहेनरपनकीलाजा॥ तो
तेंकीजेवहीसुकाजा॥ पुत्रजपानापकसमाना॥ पर्मराइस्रावलवाना
नमसलरेकापछकरेगा॥ नहीहसावेलोगकरेगा॥ कायरनंहीमहाव
लभारी॥ पुरुकरेगापर्मविचारी॥ ५२॥ दो० हा॥ लोगहसावेगानंहीपरेस\
हरकीलाज॥ ववनकस्याकारजसमेभूपनसोंजमराज॥ ५४॥ चौ० ई॥\
जोलमपरसलरुचरस्रावे॥ लमकोंग्राइस्रासदिवरावे॥ तिनसोंहमकरि
होंसंग्रामा॥ सिरहकरोंलमरेसभकामा॥ ववनकस्याजमराजयहीनव॥
याइवस्रोलैसाग्रवसरस्रव॥ नंहीकरावेगाउपहासा॥ ग्रपनायशाननहि
करैनिरासा॥ एकसमानसहरग्रसमाना॥ ऊफेगाजमवलमदमाला॥
लसववनतनकेजमग्रवनन॥ सहलिपेंकरक्रोधभयोमन॥ ५५॥
रो० हा॥ गर्वमिसवनपर्मनरपयहगमरचीग्रुपाल॥ लजसतवकावनत\

अ॰ सु॰ भक्तकोरह्रदकनकपुरंदलाल॥ ८१॥ सो॰ २॥ कृपाल्हुनेजमराइ सोगन
भा॰ आपेनिह्रदुरुष॥ रकपंचासमेध्यारश्रमसुमेधकेपलकी॥ ८४॥ दो॰ त्रि॰ र
२८० त्रिश्रीमारुतपर्वतोत्रुवमेधयात्मानः॥ कविटह्रकनरूरनप्रतोरकपंकसमा
ना॥ ध्या॥ चौपई॥ जेसुनकहेहेतनकअभूपाला॥ जमकरसत्रुलिपेननकाला
अर्जुनकेसनमुषचलगयो॥ युद्धकरनकोउदितहभयो॥ इनपारथउ
घमरनकीना॥ बानकहापनवहिकरलीना॥ अर्जुनप्रतिइह्रदिवचनउवा
रे॥ जमसमानबलनहीहमारे॥ इह्रयवबसरचहिपेह्रतुमाना॥ वेगावे
ह्रमेरुश्रुसपाना॥ जावइनहांवेगगहिल्यावइ॥ शीघ्रउवावइविलम
उकावइ॥ ॥ दो॰ १०॥ अर्जुनगयोह्रमेरपरह्रउमनदेष्योजाइ॥ हाथजो
रजाग्रनकसोवचनकहेउगराइ॥ चौपई॥ चलहउमनतुमकृलउ
लायो॥ प्रभुकोंहरिहमदिगहिपठायो॥ यज्ञकरावतनरूपतिनुपिछि
र॥ अश्वसहारकभयेकृपाकर॥ कहोपवनहुनकलकोवहे॥ देष्योकव
इनहुमोअवनहै॥ पुनतुमकोंनाहिनपहचानों॥ कहुनकाजतुमसों
जियजानों॥ होरनहीमिउपणजहां॥ हमकोउचिननाइनहिनहा॥ कि
नचलमाउमहाश्रमपावों॥ रामध्याननजनकलिनहिजावों॥ दो॰ १०॥
पारथफिरश्रायोनहां ठाढेजहांगुपाल॥ हनमानश्रावननहीकहोश्र
वननंदलाल॥ चौपई॥ बोलेकृस्नसुनइवचपारथ॥ वइरांजारउ
सुहकरस्वारथ॥ पवनसुनकोकहोरहवचन॥ बोलननोहिरामसिध
लछमन॥ मनआरतीचलोश्रर्जुननन॥ सजानमिलसमथीलेसव

चंदनअग्रकछुनखीफलसाथा॥सिंधरअरुहयगंधलियोहाथा॥धूपदीपलेस
मस्तगंधवर॥पुनआयोपारथढमेरपर॥नमस्कारकीनोकरजोरे॥विनेक
रनेहोलनवधुमोरे॥५॥दो०॥समजाग्नीप्रणामकरवचनकहेअगवाइ॥
तुमहिबुलावनपवनसुतनसिपलछमनजदुराइ॥४॥चौ०॥रघुपतनाम
सुन्योजबकाना॥षुलेकपाटउठेहनुमाना॥नमस्कारकीनोअर्जुनकों॥
प्रभुहितभयोमहासुषमनकों॥नीकेहैंलछमनसियरघुवर॥कुसलप्र
श्नआनंदभोजियकर॥पवनपूतमनमांहिविचारा॥पुहसबैसुकराम
संभारा॥पारथसकलहतोंलहनाथो॥ततछिनहनुमानचलआयो॥
कृस्नभेषरघुवरकोधारो॥लछमनरूपप्रद्युम्नसंभारो॥५॥दो०॥जनक
सुताबपुलछमीभेषबनायोस्याम॥हनुमानआयतनभयोसुहितपरसेप
गराम॥८॥चौ०॥बहुरपनोहरघनपदलछमन॥पुनलागेसीताकेच
रनन॥बारंबारसीसपगधारन॥दीनवचनसुषहनुउचारन॥देषदरसह
रषनभोहियां॥चरनोदकअचवनकरलियां॥कुसलप्रश्नआरतीउतारी
पवनपूतआनंदजियभारी॥इतनेंजमसेनासन्नआयो॥सुतनसहित
जियमांहिरिसायो॥पुत्रनकोंआज्ञाजमदीनी॥सेनासावधानकरलीनी॥९
दोहरा॥सुष्यनलापरोगडुसहहनपलोवमकेमांहि॥सभसेनाव्यापीअघाकि
सहीजाओनाहि॥१०॥चौ०॥पारथकीसेनाधरबीनव॥करज्वरीरोगइ
व्याकुलसब॥एकनकेतनतापपरसकिय॥एकनकेकफकंठरोकलिय
एकनउदरसूलअनभारी॥एकनकेतनवायदुवारी॥केऊदेषहमोहि

ज॰ सु॰ भा॰ २८८

नभए॥ अनी भारसों इक भरगए॥ एक गलग्रह गहेउ षिनवर॥ पांडु रोग
दुषएक गएमन॥ रोग एक सों आवप्रकारा॥ सेना कों दुष दिपो अपारा॥१
सो॰॥ इक नरकों पलसीन ज्वर एक न केन नलाप॥ रोग एक सों आठन
व सेनाह परो संताप॥५५॥ चौ॰॥ निरषतापगजनगिरहिय रनपर॥ कुरुप
अश्व हेमर्क परे धर॥ मर्छित भई धनंजय सेना॥ फलसचं इय अवलोकी नैना
हरि आज्ञा तास करी हनुमाना॥ उठौ पवन सुत अति बलवाना॥ कोप्यो हनु
मन वचन उचारे॥ आज्ञा दीजे प्रभू हमारे॥ मोलपरी आज्ञा वर पावों॥ इक
सर सों जमपुर गन उलावों॥ छिन महि करों प्रलै जमलोगा॥ कोप करों दे
हों पति सोगा॥ सो॰॥ स जम्बुरुरेत पंगाइ कै लोप करों जमलोग॥ लष
आज्ञा सों नाथ की देउ महा जमसोग॥५६॥ चौ॰॥ आज्ञा ले हनुमंत कुप्यो तव
हं हुपता रोग वापे सब॥ जमकों वां प्यो हनन समेता॥ सकल रोग तन नभ
ये अचेता॥ पंलु समेरए कवे कीने॥ बच्यो न कोउ वां धस भलीने॥ बहुरों अं
धी पवन चलाये॥ जमपुर महां अम भूगराये॥ पूरउ दीतिय निरष इरे ह
र॥ लोप हों न लाग्यो जम कोउ र॥ प्रलै होन लागी जमनगरी॥ बच्यो कले
स प्रजा दुष सगरी॥५७॥ सो॰॥ प्रलै होन लागो नगर कछो पवन सुत
कोप॥ आप हिदै करनमें दुषी रोग सहित जमजोप॥५८॥ चौ॰॥ उपमक
लो पवन के सुतन व॥ जमसहित जम पवों गगन सब॥ धर्मराइ मन माहि
विचारा॥ पुरी न सन्ति है दुषवल हारा॥ देषों अपना होत विनासा॥ मनमहि
करी कलमकी आसा॥ हरिकों करप्रणाम हनुमाना॥ जमपुर पवनें महवव॥

नवषाना॥राघलेकुटुमकौंकरुनाकर॥लेगरहूदुमकौंचरननपर॥म
मवलहारवेननीकरी॥नवहनुमंतरपाउरपरी॥९॥दो॰॥रा॥ष्यायोसलु
रेसहिमेंहीलागोचरनगुपाल॥पवनपूतनैंराघलेकृपाकरडुनेंरलाल॥
१९॥चौ॰ई॥भक्तबछलहरिदीनदयाला॥हनुमनबचनभपकिरपाला॥
करुनाकरहनुमंतडुलायो॥हनननवचनहनुमंतसिधाये॥महाप्रभत्र
भएगिरधारी॥धर्मराइपरकरुनाधारी॥बीरब्रह्मराजाजुबलीसंग॥स्या
षोभेदमहाप्रभुदिनमन॥नमराजाकोंलीनोसाथा॥रानीकरीआरती
हाथा॥दीनोआइकलसपगलागे॥हीनीभेटहिपेंअनुरागे॥१९॥दो॰॥रा॥
सहसअवासीरथभरेमणिमुक्ताहलहीर॥हाटकअश्वपंचासरथभर
दीनेरथपीर॥२०॥चौ॰ई॥एकलाषषोडससहंसपुन॥सेनडरहरथमें
दियेपुन॥कनककरोरअरुमुकताफालर॥सहितअंबारीषचितरतनव
र॥अंकुससबअश्वसबाबषचनमन॥दिएहरंगबिचित्रसिहअनगन॥रष
भरदीनेबस्त्रअपारा॥तंबूसबिधानेनहिपारा॥तनमनधनरपअर्पणा
कीना॥सबसर्वसहनुमतकोंदीना॥हरिपगलागोसमरजमाला॥हनुमनकु
बेनतीत्रिभुवनमाला॥२१॥दो॰॥रा॥बीरब्रह्मसनमुबेननीकरीबहुलअधपा
र॥हमसेपतितनकोंप्रभुदरसदियोतमआइ॥२२॥चौ॰ई॥सफलजन
महमराअघसबषयो॥जनममरनकासंशयगयो॥जिहदरसनकोंशिवब्र
ह्मादिक॥षोजतसुरनरमुनिसनकादिक॥जिहिसेवतजगविविधप्र
कारा॥सोप्रभचलआयोमुझद्वारा॥जिहनचिंतनजपतपव्रतसाधन॥जनत

म॰ बृ॰
भा॰
२८९

दानयग्यसनानअश्रातपन ॥ तपनेकितहूनदरसभयोकब ॥ सोतुमसादर
पानरेख्योअब ॥ हमरेनमित्रजुधिष्ठिरराजा ॥ कसेअश्रमंभनलकोसाजा
२३ ॥ सो॰ ॥ हमसेपतिननप्रभुहैभयतनस्योभूपाल ॥ निहत्रसहदरस
नभयोरहकनप्रभुनंदलाल ॥ २४ ॥ चौ॰ ॥ निहत्ररुषनकोमनग्यानत ॥ नि
हतेहरवसननभगवाना ॥ पांडवकेहरिसषाकहावन ॥ सावधानविनती
उपजावन ॥ हमसेपतिननप्रभुकरनहित ॥ नृपनिजुधिष्ठिरस्योअग्रके
न ॥ यहविचारहरिनिपत्तमकीन्हा ॥ जगगुरुहलमहिपरनअधीना ॥ यही
ग्याननिपपतकरायो ॥ हमसेअधमनकोंप्रभुकहायो ॥ नीपअग्रनेकल्हमार
घमयो ॥ भगतनकेस्वारथनंदहुषगयो ॥ २५ ॥ सो॰ ॥ नृपनजुधिष्ठिरमनदहि
तनारेपतिनअनेक ॥ भगतनकोंसुषदेनहरमननमहिकल्योविवेक ॥ २६ ॥
चौ॰ ॥ वीरबत्सलनृपहरिपगलागा ॥ कहतनदीनवचनअनुरागा ॥ हमरा
जानरेहअर्जुनकों ॥ मेरोमनलावडचरननसों ॥ अपनीभगतदानमुहिदीजै ॥
श्रीपतिप्रभुकृपाकरलीजै ॥ वारंवारस्तुतनरूपकरई ॥ प्रभुरितनहियेंकृ
लपगपरई ॥ नृपपगपरमभद्रसत्रगुपाला ॥ कृपाकरलीनोतनमकाला ॥ पु
ननमराजरीनहृदेआयो ॥ चरनलागहरिरोदनछायो ॥ २७ ॥ सो॰ ॥ तुमरोस
नपुषसत्यहमनजुद्धनविनलिपहाय ॥ वेहाकसोअपराधतुमक्षमियेत्रि
भुवननाथ ॥ २८ ॥ चौ॰ ॥ तुमरीमायासकलजगतपति ॥ निहत्रमाइलीकी
हमरीमन ॥ तुमहीकरनकरावनहारे ॥ कृपाकरहुहमदासतुम्हारे ॥ तौतेंमो
मनगर्ववढायो ॥ तुमरेसनमुषसत्यचलायो ॥ स्वामीकेसनमुषहैरामा ॥

पावेनरकजगतउपहासा ॥ २९ ॥ दो० ॥ रा ॥ दीनीलमग्रधुजाग्रुफेलमगारहास
कहाउ ॥ प्रुफकीनोहूरवनवजेवकसलेउबलजाउ ॥ १० ॥ चौ० ॥ ई ॥ यह वचकहि
हरिचरनपलोगुनि ॥ कृपाकरहुश्रीपतिप्रुफग्रवगुन ॥ जमपरमउप्रसप्रग्र
पाला ॥ कृपाकरीहरषतनंदलाला ॥ वीरब्रमनपविवकरजोरे ॥ विनमीक
रोंप्रनहूप्रधुमोरे ॥ ग्रपनानगरजलारपकीजे ॥ करहूग्रवेसमारहघरीजे
हलकरीग्राताग्रर्जुनकों ॥ पुरमहिचलेग्रनंदलमनसों ॥ कीनोमाइपुरीपर
वेसा ॥ हरररसोसभप्रजानरेसा ॥ ११ ॥ दो० ॥ रा ॥ पम्मावतीपुरीवसेषटरिनश्री
नंदलाल ॥ पनकरनोश्रेहलकोंरानीग्रकभूपाल ॥ ११ ॥ चौ० ॥ ई ॥ लोगनके
कल्यानकरनहित ॥ हरसोश्रीपतनगईपापमन ॥ ग्रातामानसकलपुरव
ला ॥ प्रनधर्मजनमघजसनिरमला ॥ जेनकहइयभेरनपकीनी ॥ सभहरिहल
नवरपवसीनी ॥ सेनासाजचलेहरिपारथ ॥ हलभयोग्रर्जुनरथसारथ
कोरसिपोलिहसमेतरंगा ॥ ग्रुगनितवचूभईहयसंगा ॥ १२ ॥ दो० ॥ रा ॥ चलग्री
एश्रीवहारपुरमहांमनकरनजोध ॥ मंत्रीसहितपरेसकलहरिकोंकसो
प्रबोध ॥ १२ ॥ चौ० ॥ ई ॥ हपाहष्टकीनीगिरिधरनव ॥ भएसावधानजोधासव
मंत्रीग्राहउवेसभसूरे ॥ ग्रर्जुनसाथचलेप्रणपूरे ॥ उग्रहरिसकोंचलोनुरंगा
चलीजानसेनाहयसंगा ॥ सवालाषगिरहोनजहांही ॥ शापतभयोनुरंगत
नहांही ॥ हथनपरेनहांइरगयो ॥ हलइग्रारजसकोंकयो ॥ दिषिपतना
हिकहांहयगयो ॥ हमरीहष्टग्रगोचरभयो ॥ १३ ॥ दो० ॥ रा ॥ हलसत्योजवय
हवचनग्रश्रहष्टनहिग्राइ ॥ रथहांकोपाकेचलोसेनसहितजदुराइ ॥ १३ ॥

अ॰ मे॰ चौपई॥ औरउ चलहै पौन वेग गन॥ नेउ संग ले कछोर माथन॥ समय पर्वत उ
भा॰ लंघहु पग गयो॥ चंद्रहास पुर प्रापत भयो॥ जव ही आंषन अश्व निहारा॥ स
२९॰ भसेना अनंद जिय भारा॥ नगर नाम तिह कौंतल पुर॥ गयो तहां चल अश्व
सनु पिछिर॥ विरचिन तहां तु चंद्रहास सुत॥ विरचिन जाइ गह्यो हय अद्भुत
न॥ ले पुर मह हि वांध्यो निज धामा॥ अति उतम मंदिरंग अभिरामा॥ २५॥ दोहरा॥
पाछे अर्जुन चमूसों आए श्री भगवान॥ कौंतल पुर देषके पारथ चिंता मा
न॥ २६॥ चौपई॥ कौंतल पुर महां विसाला॥ रूचा गढ जगमगत रसाला
रतन नषचित मणिगण चमकारा॥ कहीं परत नहि सोभ अपारा॥ विसमै भ
यो निरष पारथ पुर॥ विसरगयो जिय अश्व सनु पिछुर॥ जगमगात नगदको
टकोंत रव॥ निसदिन एक समान महां छव॥ चंद्रहास राजा तहां राजत॥ वि
स्नु भगत अरु रघुत छवि छाजत॥ वैस्नव प्रजा सकल पुर मांही॥ हरि सिमरन
बहि सदा रहांही॥ २७॥ दोहरा॥ एक सार षेग्रह तहां राजा रंक समान॥ मणि मु
कता रतनन षचित छवि रवि कोट प्रमान॥ २८॥ चौपई॥ तोरण हार अपार वि
राजत॥ कुंजा चौपंडी छवि छाजत॥ कंचन सकल ग्रहण पर सोहै॥ छवि न
ग मगत कोट रवि कोहै॥ रतन नषचित मुक्ता हल फालर॥ हीरा लाल प्रवाल
फटिक वर॥ मनि गन अति निरास्छव पावन॥ हाटक कंकड़ रछन हिआवन
पौर षचित मणि नील अपारा॥ मणि वैडूर्य फटक चमकारा॥ हीरा लाल अति
गसभहारा॥ सोभन मुकतन ववंदरवारा॥ महा प्रकासित भवन भवन के॥ रा
जा रंक पनी परपन के॥ २९॥ दोहरा॥ चंद्रहास तन मध्य भगत न महा सुर

बलवान॥ अवर न कोउ त्रिलोक मैं इनके तेज समान॥५५॥ चौ० ई॥ कौस-
हलपुर अति अभिरामा॥ कोउ कहत सूरजपुर नामा॥ अगम अगाध मणिख-
चित रतन सव॥ पकसार षी रैन दिवस छव॥ चंद्रहास नृप भगत गुपाला॥
गो ब्राह्मण हित वैस वचाला॥ विषयानाम अनुवन आके वर॥ दिवस मान
महा सुंदर रवर॥ गुन अपार सत सील पतिव्रत॥ निसदिन पति सेवत मन हु-
रषत॥ भगत तरोउ रानी भूपाला॥ गुन अपार सत सील विसाला॥ निहचैं वस
कीनो नंदलाला॥ अवर ध्यान न हिकारत भुपाला॥५६॥ दो०॥ गहत निहार पा-
रथ कहे सुनहो श्रीभगवान॥ तिह भूपत हय वांधियो जिह बल कोउ न समा-
न॥५७॥ चौ० ई॥ अैसा गत रेषो कहूं नांही॥ रनह यगहि वांधो पुर मांही॥ पोरे
दिवस जतन महि रहे॥ कहु कैसें कारज निरवहे॥ कठन वोर इन गहो तुरंगा
दै हैं नहु भगतन के संगा॥ तासों वीत न जाइ मष अवसर॥ भंग होइ जन नृप युधि-
ष्ठिर॥ तव कैसें कीजै नंदलाला॥ विनसत जुध धरम भूपाला॥ वेग करहु ल-
गसधुक करुणा जुन॥ सूरन की मैं जनत परम हुन॥५८॥ जै॥ म० ३०॥ च॥ दो०॥ स-
नराजा न व यह वचन पारथ कहे मुरारि॥ नभ मग आवत रक पुरुष देखो
नैन निहार॥५९॥ चौ० ई॥ वैस वरूप वैन कर लीनो॥ हरि गुन गान करत नर-
सभीतो॥ आयो निकट देवरिष जान्यो॥ हरसे कमल नारद पहिचानो॥ नमस्का-
र हित कलोप रसर॥ भोग आनंद मान पारथ हर॥ पाइ धनंजय परिव पग लागो
श्री सल प्रस्तु मनन लन अनुरागो॥ कहो विशेष पति त्रिभुवन लाला॥ प्रकले-
इ नारद लै वाना॥ चंद्रहास की जनम कथा सव॥ अवन सुनन इ नारद रिषि तें

ज॰ अ॰
भा॰
२८८

श्रव॥ ७५॥ अर्जुन उवाच॥ दोहरा॥ चंद्रहास के जनम की कथा कहौ रिषि देव। हा
पजो रथ अर्जुन कह्यो कृपा कार इहि रमेव॥ ७८॥ जैमन उवाच॥ सोरठा॥ कहि मै
मन कुरुराज नारद पहि इह कुलविजै॥ बोले रिषि सिर नाज विद्यमान श्री कृष्ण
के॥ ७९॥ नारद उवाच॥ चौपई॥ कहि नारद सुन विजै मै श्रवन धर॥ चंद्रहास की
जनम कथा वर॥ रूप के गुन भुनि निश्चय मिनन पारा॥ परन होहि न गुनिन विस्तारा॥
गुन सन कहन सकत न हि कोऊ॥ जानन एक रमापन जोऊ॥ इन थोरे हैं जे
नइ कारा॥ जनम कथा रूप अंमन पारा॥ कथा कहन लागे बहु बारा॥ चंद्रहा
स गुन विविध प्रकारा॥ जो नर एक कथा सुन इहु गे काना॥ तो न होइ संग्राम विधाना
५॥ दोहरा॥ जो संग्राम किये न रूप न ल मरे सोंसन सुध होइ॥ तीन लोक जन चपि त्र
रहि जीत न सकै न हि कोइ॥ ५०॥ चौपई॥ विष्णु भगत न सुनि न रूप बलवाना॥ महा दे
ग सी सुर निधाना॥ समुझ बांध न बरन महि आवै॥ कोटि न निरषक कोउ धीरु न पा
वै॥ जो नर पकिया नु ररे हेठ इहु गे॥ रूप का बल पार थ पेष इहु गे॥ श्रवन सुरन न हि न
प न समाना॥ न हि जीत न हि जपपम भगवाना॥ तीन लोक मिल आवहि सोई॥ न
प कों जीत न सकै न हि कोई॥ जो अनमन इहु सो इन माषा॥ त्रुमरीच मकर वैविन
माषा॥ ५१॥ दोहरा॥ हरि विन उइह षव चेन कोस भसे वा इन होइ॥ जोउ वरे मा
भाग र भ तीन न जन न म्यो सोइ॥ ५२॥ चौपई॥ सुकृत जो ता न न रूप इहु तेजुम संगा॥ आ
इ लगे पग सह इन तुरंगा॥ सिरु होइ त बपन सुधि छिर॥ फिर गे है मन भाउ मित्र
धरि॥ नम रूक्त न रूपजन मकथा अव॥ तीन जाहि गे बहुत दिन स सन व॥ होहि
न होइ कछु वन इह कामा॥ जनमकथा सुन उन संग्रामा॥ भावे श्रय षम कथा सुन

579

लीजै॥ भावे प्रथम गुरु वंदन कीजै॥ जे विधि संतन कहु कीजै पारष॥ कहो
हृदे की वात न भा रंष॥५५॥ अर्जुनउवाच॥ दोहरा॥ सुन स्वामी पारष कहे प्रथ
मे कथा उचार॥ सो मन वच्यो सनेह अति सुधि षिरव सतगुर धार॥५६॥ चौपई॥
सुन नेकाज उच्चरन नकाला॥ कीर्तन कथा हर सनेह लाला॥ दान पुन्य कोवि
लमन कीजै॥ कंम्या दिन वंनी पन रीजै॥ तां ते प्रथमे कथा सुनावहु॥ नारद ला
मी विलम न लावहु॥ श्रवन श्रुतन कीनी मन जाकी॥ सुजस भजन म कथा कहु
नाकी॥ जनत करत है श्रीगिरिवरधर॥ नाम करत जगत रपत नृपिछर॥ जनतक
रावन को सार पहर॥ सहज लेहि हृदय किधौं नृहकर॥५७॥ दोहरा॥ पतत वीच
पारे हिव सकल स विरह कीला म॥ हम को चिंता कछु नहीं सिद्ध करै हरि काम
५८॥ चौपई॥ स्वामी मो पर करुणा कीजै॥ रूप की कथा सकल कहि दीजै॥ सुन
म हलां तक हेंवर रिह को॥ हमरे मन को संसय हरको॥ जिह के पुर को पहु सु
रपुन हुव॥ कथा सुनावहु तिह रूप की सब॥ करुना कर सुष लै प्रगटावहु
जनम ग्राह सब वरन सुनावहु॥ किये चरित्र सकल नृप जैसे॥ दिषवर कहो के
पा कर रेते से॥ जिह की वसमति सुमति संतन कीनी॥ ताकी कथा कहो रस भीनी॥
५९॥ जनमेजउवाच॥ दोहरा॥ सुनत जनमेजय राजन तव नारद भए कृपाल॥ प्रीत
निरष पारष हि यें बोले दिषतन काल॥६०॥ नारदउवाच॥ चौपई॥ सुन पार
पत्नरप कथा विसाला॥ जनमम हलां तक हों भूपाला॥ पावन परम सुधरमा
नरेसा॥ राज करत ककुल्स तिह देसा॥ संतन नाहि दुतीगहलाके॥ कोर
ढपाउ जतन करष्याके॥ वडु नेम सहो मजव कीने॥ लछमान हि जवरके

अ॰ ग्रं॰ रसीने॥ रूपकोंवरदीनोसववरिषवर॥ एकउडेहृहैलमरेवर॥ विप्रभ
भा॰ गतत नमनप्रणामकरा॥ राजनकोराज्ञ्यलिसरा॥ ८॥ दो॰ हा॰॥ निमकर्यन
२९२ काम्यतिवलीकीरतविमलप्रकास॥ निजसेवकभगवानकोकरैमात
पितनास॥ १॥ चौ॰ ६॥ यहकहिद्विजनिजभवनसिधारे॥ रूपहधर्मसग्रा
नंदनिजधारे॥ सुभगसमैभूपतिजियजाना॥ युवतीकोदीनोरिसदाना
गर्भभयोरानीकोतनछिन॥ नवदसमासभएपूरनदिन॥ मूलकालसुनक्ष
त्रजवभयो॥ निसकेसमेजनमसिसुलयो॥ रूपहधर्मजातककीसुलाप
गाररदेआत्मनवेदाय॥ विवकरजोरदेननीकीनी॥ रूपकोंद्विजनववधा
ईदीनी॥ १५॥ श्लोक॥ दो॰ हा॥ सुनहोस्वामीसिसुजनमसुकछनहोंपवनो
हि॥ जैसाहैगानेनमसीकहोकृपाकरमोहि॥ १६॥ द्विज उवाच॥ चौ॰ ६॥ जोतक
आगमद्विजहिविचारो॥ रूपहधर्मसोंवचनउचारो॥ प्रथमपादमूलो
नक्षत्रजव॥ यहवालकजनमग्रहजनम्योतव॥ प्रथमेकरैमातपितुनास
पुनकुलकीरनकरैप्रकास॥ ऐसेकरैगाराजपिताको॥ वंदहासनामा
सुभताको॥ सुनभूपतिचितामनभई॥ वचनद्विजनकेसुनसुधगई॥ पु
नरूपदरसनबहुरायो॥ सुहसमेसुतकोंसमझायो॥ १७॥ दो॰ हा॰॥ जय
पिहेरैराजकेकुलकावहैप्रकास॥ निगमकहतसंतनरहतहोतना
कमहिवास॥ १८॥ चौ॰ ६॥ धर्मग्रहलसफलसुझभयो॥ हहसमैहरिसु
तसुजरयो॥ हहयहसानरूपनजियकीनो॥ विपवनदानद्विजनकों
दीनो॥ प्रभुदिनरूपहियेअनुरागा॥ देरक्षनारिषिनपगलागा॥ द्विज

वरसकलग्रवनंरतभए॥ रेग्रसीसनिजग्राग्रमगए॥ तीनमासकावा
लभयोजब॥ कौनहलनरपचरुग्रायोजब॥ संगसेनलेमहांबिसाला॥
कहुंमरेसनरपकीकृविहाला॥ ९५॥ सो०॥ बैरीहुतासुधर्मकाकौन
हलभपाल॥ चढिग्रायोसंग्राममहिनहेसोरेसकराल॥ ९६॥ चौपई॥ रन
मेंनरपसुधर्मचढिगयो॥ कौनहलकेसनमुषभयो॥ इहुंहिसाकुधमौ
ग्रतिभारी॥ नरपसुधर्मकीचमुसंघारी॥ चंद्रहासकोपिताभयोहत॥ यौंही
पीरछाविभुवनपत॥ चंद्रहासकीमातहुमोजब॥ हुतसौंग्रोनिसरासी
कौंतब॥ सतीभईरानीभरतारसंग॥ ग्रगनबीचजाग्रोग्रपनोग्रंग॥ ननढि
नकौंनहलभपाला॥ ग्राताकेरीदेसकराला॥ ९७॥ सो०॥ पुनतुरतग्रपने
कौंचलोकौंनहलबलवान॥ इछतुढिकौंदेचलोदेषककुमरराजान॥ ९८
चौ०॥ इछतुढिकौंदेसकराला॥ दीनोकौंनहलभपाला॥ घाकोनिजमं
त्रीकरगयो॥ नरपग्रपनेपुरग्रापतभयो॥ बालवलीदासीकोनामा॥ बाल
कलेराग्रोनिजधामा॥ दासीमनमहिमंत्रविचारा॥ मनयहबालकके
रैसंघारा॥ चंद्रहासकोगुपतकस्योतन॥ गोरइडारचलीतजपुरवन॥ ग
ईतिहांमहोहोनरिषीश्वर॥ हर्षभईहविनिरषतपीश्वर॥ ९९॥ सो०॥ दासी
रिषियनकौंकह्योसर्वतहत्यारीबाल॥ इछतुद्धपापीभयोराजादेसक
राल॥ १००॥ सो०॥ सतीभईसिरझ्यानपितबालककाहतकस्यौ॥ कौनहु
रिषकुसलानचंद्रहासलमरीसरन॥ १०१॥ चौ०॥ चंद्रहासतसुघनिर
घरिषीश्वर॥ भएपुहितमनसकलतपीश्वर॥ भईप्रसन्नरिषिपनकीवा

म॰ अ॰
भा॰
२९६

मा॥ निरषोसिसु सरूप अभिरामा॥ बालक कों वड करी असीसा॥ प
सिसु को रूलक जगदीसा॥ दासी टहल सिसुन की करई॥ पाउ सबु धरे प
न अनुसरई॥ सेवा करे नर रेहि छनें॥ बालक कह रन करे दछ में॥ तीन वर्ष
को इनो बालन व॥ सिसु रूप परिधरि पाकरें सब॥ ९२॥ दो॰॥ बालक
बलि दासी भई विधा गल यह आइ॥ नाही दुष सो मरगई सिसु सो भी रूल स
हाइ॥ ९३॥ चौ॰॥ ई॥ तेहि रक्रांत बालन नसो हे॥ मोनर ष व च बोल न मन मो
हे॥ बाल निरष सब रिषि सुषपावहि॥ रिषजू बनी सिसु गोद खिलावहि
हि॥ प्रतिपालहि हि जिय परुइ भाउ धर॥ जेंइ दास तनन मप सेव कहर॥ जेअ
न कहे सुनहु भूपाला॥ बालक परम भगत नंदलाला॥ दिन को अति
प्रताप दिन मणि छव॥ निस ससि क्रांत कला पूरन सब॥ महागोर सो
भा अंग नवन नवन॥ प्रियलागल सभ काहू के मन॥ ९४॥ दो॰॥ निरषक
रावहि लोग लले केउ करावहि गान॥ केऊ भोजन धंचवहि केउ देहि पर
आन॥ ९५॥ चौ॰॥ ई॥ कवहि अग्र मरासि सलेजावहि॥ अति प्रसु दिन देर
मकरावहि॥ बालक परम अनिरूपा सापन चन॥ तातें प्रियलागन सव
के मन॥ सभ रिषि निरषि दया वड करहीं॥ बालक जीन प्रीनन जिय धरहीं
बाल रिषिन आज्ञा महि रहई॥ जो रिषि कहें सोइ मुष कहई॥ गुरु रुष जि पा
करिहैं पवन पालक॥ रिषि क्रांत तंदरतन बालक॥ जब रिषि जांहि कर
नइसनाना॥ बालक टहल विशेष विधाना॥ ९६॥ दो॰॥ गड बाधे
बैले चलै सिसु रिषि यन के संग॥ टहल करत निसभर की बालक ह

583

देउ मंग॥७७॥चौपई॥केउ भिवंते आइ रिषन जव॥बालक बोले जाहि
सापत मुब॥बाल रिषन को पाउ उगावै॥वचन सभन के मन न गहावै॥म
वरिष गो छल करहि परसर॥नव पद बालक लगे श्रवन पर॥रहे स
भन को आता कारी॥हरि सेवक सिर लनन विचारी॥मैं मैं रिषी प्रस उ
होन मन॥बालक विनन हिर हैं एक छिन॥धार रकार हो चंद्रहास कों
विस्नु भगत आनम प्रकास कौं॥७८॥दोहा॥जैसु नजन नये कहै नारद वि
जैसु नार॥दुष्टबुधन पर करि नक्रु षिप विवंले आर॥७९॥चौपई॥दुष्टबु
हि रिषि पवन पग लागा॥ग्रह ले चलो हि पंथ अनुरागा॥चंद्रहास को रि
षन बुलायो॥पावहि एकर पार वलायो॥आपन भये वेग न पहारे॥न
पनरह भोजन विविध प्रकारे॥षटरस सिद्ध रसोई कीनी॥भंडारी नृप
कौं सव धरीनी॥नृपति रिषिन बलि कयो उठ द्रुवल॥कणा धार भोजन की
मे चल॥उठे रिषी वैठे रसोई पर॥वेगा यो मधु चंद्रहास वर॥८०॥दोहा॥वि
मकर पाक परोस ई दुष्टबुद्ध भूपाल॥रिषि भोजन नन वले वई प्रथम हि
वाव हि वाल॥८१॥चौपई॥निरखा रहे रिष चंद्रहास मुष॥विसरग यो भोज
न उपजो सुष॥विस्नु भगत बालक अनुपम लखे न॥रिषि घन मन भावन न
हेरउन॥दुष्टबुद्धि कों रिष सभ रे षहि॥मुसक हि पुन सिर नकों मुष पेषहि
हास करन रिष रूप न निहारे॥दुष्टबुद्धि मन मांहि विचारे॥षान न हीं भोज
न रिष रुच सों॥हीन वचन रुप कहे सकुच सों॥कौन न अवला मुकप
हि परी॥लेक्रुन भोजन हांसी करी॥८२॥दोहा॥मैं मैं रिष प्रसुरि नहिं पं

ज॰ग्र॰ निरषत पलन अरु बाल ॥ हसत परसपर निरषहि जसं से हृदै भुवाल ॥
भा॰ ८३ ॥ चौ० ॥ ई ॥ इह सुत हित चिंता वस भयो ॥ यह विचार मन मैं ठहरयो ॥ मंडु
२९८ ले तुरगा यह हलोत सब ॥ भोजन पाइ उठहि रिषिवर जब ॥ ले अहार स
भ उठे रिषीश्वर ॥ भए कृपानुल सकल तपीश्वर ॥ भूपत बहुत वेनती
कीनी ॥ तिलक लंवोलर हृ नारी नी ॥ पुन मंत्री मुष वचन उचारे ॥ कहो
कृपाकर प्रभ हृ हमारे ॥ या बालक पर कृपा लसारी ॥ याको नाम कहो ब
लिहारी ॥ ८४ ॥ दो० ॥ मात पिता याको कवन कवन गोत्र इह बाल ॥ जि
ह पर तुम री अन दया सो मुहि कहो कृपाल ॥ ८५ ॥ रिषीश्वर उवाच ॥ चौ०
ई ॥ बोले रिषी सुनहु भूपाला ॥ या बालक की सुष निधि भाला ॥ शिव पला
गत है दिषवत सभन कों ॥ निरषत मोहलेत है मन कों ॥ बालक विस्तुभ
गत अभिरामा ॥ नहि जानत हि याको कुल नामा ॥ मात पिता याको नहि जा
नहि ॥ राजन कारा जा पहिचानहि ॥ भोगेगा यह राज तुसारा ॥ हली ले
बाल तु अपारा ॥ लेवेगा सभ देस तुमारा ॥ राज करेगा विविध प्रका
रा ॥ ८६ ॥ दो० ॥ भूपति तुम हि प्रसन्न है प्रतिपालउ यह बाल ॥ है है
तुमरे देस का राजन को भूपाल ॥ ८७ ॥ चौ० ई ॥ सुनस मस मंत्री मुष भाको
इह सुत भाइ है है महि राओ ॥ इह सुत रहु मन मांहि विचारो ॥ मारन को उ
पाइ जिप पासो ॥ इस्पइ यह मंत्र कस्तो मन मांही ॥ वचन रिषिन के मिथ्या
नाही ॥ लोभ राज मन कीनो मन मैं ॥ या बालक कों मारों वन मैं ॥ यह वि
चार निहचै जिय कीनो ॥ भाउ विरोध पाप चित लीनो ॥ जन मे नाम है के मे

मनछलि ॥ संधुमरिहैनिवारइछुनिमलि ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ इछबुद्धिजिपना
नहींरिषवचमिआनाहि ॥ लोभनकाइवालसौं वैरकलोमननांहि ॥ ८९
चौ० ॥ नवराजाजोइप्रुरुषइछमन ॥ तिहजियनहींविवेकप्रहमन ॥
जयपिरिषवचसमग्रमानहि ॥ विलुविग्रवचभेदनस्रानहि ॥ जयपि
इछबुद्धिमंत्रीषल ॥ मनवहरायोसिद्धमारोंछल ॥ विषयाविषसंग्र
लेकरजाना ॥ राजभोगसुषलोभलुभाना ॥ मोग्रविवेकीनरअतानी ॥ पा
पबुद्धिजिनजिपउहरानी ॥ जिनपुरुषद्दविवेकउरमांही ॥ हरषसो
गतिनकेकछुनाही ॥ ९० ॥ दोहा ॥ कुसंगसर्पसौंजानहीतिनकेभगत
विचार ॥ कारलेनहैआलजिमकरननपंगीकार ॥ ९१ ॥ चौ० ॥ नुवति
नकोंराघसीश्रमानहि ॥ हरसनकियेलेनहरहानहि ॥ भोगकियेवेबी
रजहरई ॥ तनपनहानपराक्रमकरई ॥ संतनरेषेचरितनारके ॥ महारा
षसीजिपविचारके ॥ भगतनकोमिथ्यावचनांही ॥ तनकननहींइछम
नमाही ॥ जयपिमाननसतनरिषवचन ॥ वैरभावप्रनकरतनइछमन
षलछभाउनहिमानहियेंते ॥ बुराकरतेंहैंभलाकियेते ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ र
करितनाररसछिपोकमलासनपहिजाइ ॥ पहम्रनर्थकीनोतिनाय
गमहम्मगउपजाय ॥ ९३ ॥ चौ० ॥ म्रगकोंकरनइछननछाला ॥ उचन
नषीलमकोंयहवाला ॥ जोलमकरतविवेकविचारा ॥ म्रगमरकों
षलजीभमंझारा ॥ कारलेनतिहजीभजगनतनव ॥ वचनहीनतनवहोनउ
छसव ॥ तवषलकोजसंतनइषावन ॥ भगतंजगतमहिवडसपावन

न॰ग्र॰ त्रास करन साधन मन मांही ॥ कतप हकाज कलोल मनाही ॥ नव हिवि
भा॰ नाम हउ उनर हीनो ॥ सवन नार हरिष महा प्रबीनो ॥ ९४ ॥ अथ उद्धव ॥ दोहरा
२९५ जो नारद पग महदूली इछ न रसना मांहि ॥ साधु इछ महि अंनरा नवक
कु हो ना नाहि ॥ ९५ ॥ चौपई ॥ जोक लरी हो न जीभ षल ॥ कार लेन ताको
जग अतिबल ॥ इछ साधन व कोन पछानत ॥ बोले विन कै सं जग जान
त ॥ साधु इछ न वहो न रोउ सम ॥ यह विचार निय जान कसो हम ॥ रस
नाही न हो न षल जोऊ ॥ बुध भलाल षस कन न कोऊ ॥ सहनसील मन
हो न रोउ जब ॥ अंतरा न नहि हो लक कल नव ॥ इछ जग न महि साधु इछा\
वन ॥ तांतें चोर नरक दुष पावन ॥ ९६ ॥ दोहरा ॥ रसना साधु सुधा वसत
है न परम सुष लोग ॥ इछ जीभ महि विष वसत न हों पग मरन हि जोग
९७ ॥ तै मनउवाच ॥ चौपई ॥ सुन न जन मे मान पद न श्रवन धर ॥ इछ तभाउ\
न मिर न जन न मभर ॥ इछ बुद्धि रिष वचस मनजान्यो ॥ तो पुन वैर भाव जि
य जान्यो ॥ जघपि भयो हरस साध संग ॥ मिट्यो न इछ भाव षल के अंग ॥
कलप गन सों वैर क सो मन ॥ सांत न भई साध के दरसन ॥ जैसा भाअन
र ज्यो भुरारी ॥ तैसी वसत ना हि मध पटारी ॥ इछ देह महि गरल निवासा
साधु उरु सुष महि सुधा प्रकासा ॥ ९८ ॥ दोहरा ॥ इछ पुरुष अरु साधु कों\
निहवै एक सभाइ ॥ हि न सों हू ध पियाइ निह मो विष पुनप्रगटाइ ॥ ९९ ॥
चौपई ॥ जैसें साली मे अंकुर मल ॥ वरष न एक भाउ सम षल जल ॥ गिर
धर पर नर न न उपजावत ॥ सीप मांहि मुकता प्रगटावत ॥ कदली मां

हिकसुरद्रोहनवव॥ सुनितूंरपरमौंकपरजव॥ सोइतूंरश्रवनगरसु
छगरव॥ नाहीसोंश्वलिगरलपसारव॥ सुनितूंरजिमश्रंनरनाही॥ नि
महिविषसनसकलउरमांही॥ दुष्टपाउमहिहोनदुष्टमन॥ साधुवपुष
महिहोनभगनरव॥ ९॥ दोहा॥ मौंतिविषपनकेवचनहतनदुष्टबुद्धि
सनमान॥ वैरसओहरिभगनसोंजानतरूपश्रतान॥ ९॥ जैमंनउवाच॥ चौ
पई॥ जैमनकहैंहनदुभपाला॥ जोनरदुष्टबुद्धिविकराला॥ तिनसाधु
करनमनभावन॥ रकश्रुषनेरसमुषकरगावन॥ छिदककहतनरको
हकोबव॥ श्रवनसहहसपारहनहेनव॥ नीचकरमकाहकोंरेषहि॥
नेश्रश्रनेकपारनवपेषहि॥ सुपविनश्रर्पनकरहिलोगसंग॥ हैमहद
भुमवलपारनश्रुंग॥ दुष्टनकेलछनहैंऐसें॥ जनमेजासुनलीजद्दै
सें॥ २॥ चा॥ रदउवाच॥ दोहा॥ दुष्टबुद्धिजयपिसनेवचनविरषसभमार
नेयपमंत्रकसोहरेवालककरोंसंहार॥ २॥ चौपई॥ भूपनजियमतिसें
सोभयो॥ मंत्रीकोंबुलाइनवलयो॥ नृपनससिवसोंवचनउचारे॥ रिषहंमा
नेसुननेवहमारे॥ सम्बवचनद्विजभाषनऐसें॥ कहोविचारकोंश्रवनेसें
जिहविधपहवालकहतहोई॥ वेगउपाउकरीजेसोई॥ कह्योबुद्धरासु
नेलीजे॥ सोहदशानवालहहनकीजे॥ वेगबुलाइलियेचंडाला॥ तिनकों
श्राज्ञाकरीभवाला॥ ४॥ दोहा॥ चंडालनसोंनृपकह्योपकरहुरिषकोवा
ल॥ ताकोवनमहिहनकरहुसमनवलेतनकाल॥ ५॥ जैमंनउवाच॥ चौ
पई॥ जैमुनकहेहनदुभपाला॥ देषनफिरनवालचंडाला॥ वालककहर

जै.मु. नसमैनहिंपावहिं॥ कवडरउनग्राग्रम महिंमावहिं॥ चंद्रहाससेव
भा. कमडुनाथा॥ निसदिनवसतरिषनकेसाथा॥ रिषवडुभएवसते
२९९ वालपर॥ हिनसोंरिषकेपरेवालकर॥ सालिग्रामवालकोंदीनो॥
चंद्रहाससमाधेपरलीनो॥ कलससरूपवालमियजान्यो॥ सालग्रामकों
हररिदयमान्यो॥ ७ दो० ॥ हाटसग्रकररनामजिहरिषनपदायोवाल
कन्यो भगवनशपनरुमहिंकैहेवगेभुवाल॥ ५॥ चौ०॥ महांप्रकास
भयोवालकमन॥ निरषतसालिग्रामकेदरसन॥ गुरुउपदेसहृदैठहृ
रायो॥ भगवभाउजियप्रेमवढायो॥ प्रतमाहसतकमलमहिंनिस
दिन॥ हियतेंध्यानटरैनहिंइकछिन॥ वेवलचलतहुवतथुहमाग
न॥ कवहुनसालग्रामसिहलागन॥ प्रतमाकोंमानेभगवाना॥ मानेंव
सहृवालकेग्राना॥ जिनवालनसोंविरचितषानिन॥ आपोमहांघेल
वेकेहिन॥ ५ दो० ॥ वालकषेलकरैतहांगुठलेपाथरसाथ॥ सुंदर
रपाथरनिरषिदियोचंद्रहासकेहाथ॥ ६ ॥ चौ० ॥ सकलवालकनवच
नउचारे॥ चंद्रहाससहुनमीनहमारे॥ यहपाथरसुंदरधुततुमरेकर॥ वि
नयहोहिंइसकेसुंदरवर॥ हमसोंकहोकहांतुमलीनो॥ सामवरनतु
मकोंकिनदीनो॥ याकोफोरदुगुवलेकीजे॥ सांटवालकनकोंसवदी
जे॥ चंद्रहासकोंवचनकहेतव॥ यहगुठलायवरिषनदियोमुझ॥ नहि
फोरोंहमरायहप्राना॥ तुमसमुझानतानतनहिंताना॥ ५ दो० ॥ क
रीनकीजतवचलोचंद्रहासतनकाल॥ यकरलियोनववालकोंठा

589

देहु लेचंगाल॥ ११॥ चौ० ॥ गहि हि सिसु हत्थ हि हरषु पहि आपो॥ मंत्री नि-
रषु महां हरषु पायो॥ चंगाल न पुनि वचन उचारा॥ वेगि संहारहु सुतु ह-
मारा॥ बालक कों रथ पर वैठावहु॥ निर्जन बौर जहां लै जावहु॥ तिह कों
जाइ नास सिसु कीजै॥ काट अंगुरी कर पर लीजै॥ ले आवहु अंगुरि नि-
षुरु पासा॥ होइ प्रतीत भयो रिपु नासा॥ हम कों देहों द्रव्य अपारा॥ वेगि
करहु बालक संहारा॥ १२॥ जै दवग व दो हरा॥ सुन भूपन सिसु लेच-
ले भय पकारी वन माहि॥ बालक हह रजनग गावंही सोक करी पक कुनी हि
११॥ चौ० ॥ चंद्रहास हरि के गुन गावे॥ मनमहि कछु त्रास न हि आवे॥ व-
चन कहे चंगाल परसर॥ यह सिसु महां पुरुष सेवक हरि॥ बालक वि-
स्थु रूप लष लीजै॥ तांतें यह हम मान हि कीजै॥ अंगुरि काट देहि नृपाल के
वन महि छाड चलो यह बालक॥ सिंह आइ ग्रहे हां वडर हही॥ सो पालि सि-
कों मूर्छित करही॥ एक चंगाल वचन यह कहे है॥ सुन सभ अवर मौन गह-
रहे॥ ८॥ दो० ॥ अवर इछ माने नही कहें करहि सिसु नास॥ जो जीवन
बालक तन छिन्न यह मकरै विनास॥ ८॥ चौ० ॥ जो हम सिसु जीवन न-
मनांही॥ प्रगट होइ कवहूं पुर मांही॥ तो मंत्री परवार हमारा॥ मम छिन वक-
रै सकल संहारा॥ यह विचार मन महि कीनो सव॥ रषपतें लियो उकार-
वालनव॥ चंद्रहासन वसिमरन कीना॥ नंदलाल वरनन चितन दीना॥
श्रीगुपाल त्रिभुवन पत स्वामी॥ सकल हृदन के अंतरजामी॥ परमातमा
जगन गुरु देवा॥ शिव ब्रह्मादिक करहि तम सेवा॥ १९॥ दो० ॥ सभ ठर वा

नं॰ ग्रं॰ पकग्रानमामहिमापरमअपार॥ चंडालनकेहदेअमरक्षाकरीसं
भा॰ ह्मार॥७॥चौपई॥ पहवचकहिसिसुध्यानलगायो॥ सालग्रामलेगुरु
२९८ महिपायो॥ वासुदेवसभकेघटमांही॥ व्यापकसकलभेदककुनाही
चंडालनमनम्नानभयोनव॥ चंदहासकेचरनपरेसव॥ श्रंगुरिकादहन
कीमनकीना॥ श्रवरभावजिपलेनजरीना॥ लागेकरनपरसरवाना
नोहमसिसहीकरतेचाला॥ नोहमहोतमहांहमारे॥ पांचपापजग
मेंग्रतिभारे॥८॥दोहरा॥ पांचपापपक्षनिकहहतहेमहांघोरविकराल
तेनहिकीजेपरसपरकहहनवचनचंडाल॥९॥चौपई॥ बालकहान
ब्रह्महमावर॥ गुरुतल्पीमदपानसुवर्नहर॥ श्रेसेपापकरैनरकोई॥
होरुनरकपापतनिहहोई॥ कुमविष्टाहुनरकवकुनदुष॥ जनमज
नमपावेनककवैहुष॥ चंडालहुमनदटपहकीना॥ दुहभावनिपतें
नमरीना॥ श्रंगुरिकादनममनठहरायो॥ पकरभगनकोंधरनगिरायो॥
१०॥दोहरा॥ हनवरिंदहदिहिपकरायोपहलोवनेनवान॥ रामदेउगाका
लपरश्रुंगहीनहैगात॥११॥चौपई॥ श्रंगभंगकोराजनजोगा॥ जैसेकरो
हसेनहिलोगा॥ श्रीपतिसिसपरकहनाकीमी॥ करपरघरश्रंगुरिर
चलीनी॥ हतपारश्रंगुरितिहवाला॥ नौतनकादलईतिहकाला॥ नेम
बालभयकारीवनमैं॥ चंदहासग्रानंदनमनमें॥ लागेबालकपगचं
गला॥ श्रपनेभवनगयेतनकाला॥ बालकउमगकुलगुनगावै॥
महाकवचरकुलरिकावै॥१२॥जै॥ मई॥ च॥दोहरा॥ सनजनमेंजा

रूपनवरसिंहहरभगानहुभाउ॥ श्रुष्ठमेपकेयनकोयहहाबन
सोध्याउ॥२२॥ इतिश्रीभागवतपर्वतोत्तमस्कंधेपंचमध्यान॥ कविहृदकनर
रनमपोवाबनध्याउ प्रमान॥५२॥ चौपई॥ हनजनमेजारूपनमहांवर
चैंहहासनवनमनसेवकहर॥ गहवरवनश्रुतिभयउपाना॥ विचरे
नहोंवालहसाना॥ मुदितउस्तुतरहहरगुनगावै॥ कीर्तनसोंदिनरैन
विनावै॥ कबहूंनिर्तकरैनरवरगन॥ प्रेमपगनगरगनहमनहरख
न॥ हुवसिहनारमौनछगभए॥ सवरउचारननेंरहगए॥ बालकध
नहुवमोहेवगमृग॥ चलआएसभमुदितबालहिग॥ र॥ दोहा॥ हु
धासरसफलखावहीवगमुखमेलहिबाल॥ हृधरेहिमुखवालके
मृगीमुदितमनघाल॥५॥ चौपई॥ पुनहुवनपहुपंछीचलश्रावहि॥ पं
धनिगाउनीरवरखावहि॥ वनकेजीवसकलहुवनमोहे॥ हरखसोक
वालकनहिपोहे॥ जैसुनकहैतनहद्कुतराजा॥ हरराखनभगतनकी
लाजा॥ रूपनकुलिंरवडोश्रुधेरहत॥ मनमहिकसोप्रवेसहथीवि
न॥ कीसगाउकाघहभूपनवर॥ उहुतुहमंत्रीकाग्रतुचर॥ वरखवर
धभैरपद्वावन॥ मनकरकैवडप्रीनदहावन॥ र॥ दोहा॥ श्रापनम
पोक्कुलिंरनवमृगपाछेवनमांहि॥ हलहलसवालकररहेमनधंध
मकक्कुनाहि॥६॥ चौपई॥ गावतभगातउत्सवसारकरी॥ धुनकुलिंरके
भुवननपरी॥ हलसहलसमुखनामउचारन॥ हरखहिपेंसुरसिधरउ
कारन॥ हनकुलिंरकीनोविचारमन॥ वालकशावदपहुआमोश्रुवन॥

अ॰ श्रु॰ न॥ नंही ओर भूपन चलगयो॥ निरखो सिसु अचर्ज मन भयो॥ खगम
भा॰ ग सकल वाल ढिग आवै॥ फलजल लिये ताहि हित ल्यावै॥ इहरनच
२९८ ननकु इक्की नेचर॥ वालक ऊपर रहे छाउ कर॥ ५॥ दो॰॥ महा तेजसी
सिसु निरख वचन कहे भूपाल॥ मात पिता तुमरा कवन कवन नाम
तुम वाल॥ ६॥ चौपाई॥ वालक सों सुन वच राजा॥ कहु सिसु वन आए
किह काजा॥ सभ हवाल मत मुझ भाषहु नावहु॥ वंस आपना कहु प्रगटा
वहु॥ कवन नो हि इग हवर वन आयो॥ किह हू षन तुम वन हि पठायो॥
श्रेसें वच सुन के नृप पालक॥ उत्तर दियो [illegible] सुदि तम न वालक॥ मात
पिता अपना नहि जानों॥ वंस आपने कोन पछानहु॥ जानों यह ब्रनमा
मुझ हाया॥ जिह प्रसाद हम भयो सनाथा॥ ७॥ दो॰॥ रछा सों विरचि
रहे रछक कहे उन साम॥ हरि विन कछु चाहों नही वे इहा समुझ नाम॥
८॥ चौपाई॥ वालक कहे सुन हु भूपाला॥ हम हु वन आपलो इह काला॥ इ
रविन अवर नही मन आसा॥ निसदिन मोहि भगत की प्यासा॥ सिसु व
चन सुन भयो मन हरषत॥ इहै विचार करयो दृप वीपत॥ यह वालक
वन महि इह अवसर॥ सुन हि नृप हि आपन की नाहर॥ मै मांग लपाउ
न हरि पांही॥ सो प्रभ मुझ दई वो वन मांही॥ वालक कै से आरम हों वन॥ सुं
न न हि न श्रु हि दियो सोम मवन॥ ९॥ दो॰॥ पावन हम आगे कवड्ढ रेखो
सभौ नकान॥ नहां आइ आपन भयो रछ्या श्री भगवान॥ १०॥ चौपाई॥ प्रग
ट कसो आपना सुन गिरधर॥ मोकों दीन दयाल करुनाकर॥ वनमहि

प्रगट कलो इह बाल ॥ प्रभु रूप रह्यो पाकी कृ नंद लाल ॥ मन बच क्रम यह मरो
यह नाना ॥ मन वांछित फल दियो विधाना ॥ अब चहा ईली नृप बालक ॥
निज पुर चल अभयो अपालक ॥ चलत बीच मग भूप विचारे ॥ संतन कह
अहो न हमारे ॥ महा तेजसी विलभ गनवर ॥ मैं साहन री नाम प्रभु कोंहर ॥
सो॰ हा॰ ॥ बालक ले निज नगर हगयो प्रभु रिभयो कुलिंद ॥ हहस मे प्रभु रूप दीन
हरि सुत नव रभगन गुविंद ॥ २ ॥ चौ॰ ई ॥ नृप परिवार अनंद तन भयो ॥ सुपस
रूह उ पस्मो डुषगयो ॥ ग्रह ग्रह गावत मंगल चारा ॥ सिषर वजत नपच नर
अपारा ॥ हि नवर भिगम पढैं नृप द्वारहि ॥ देअसी सजपस बरडवारहि ॥ न
रनारि नमिल देत वधायो ॥ ले कर भेट सकल पुर आयो ॥ वंदी जन नप्रभु रि
तन सगावहि ॥ मन वांछित नर पतें वर पावहि ॥ निरत करहि अपसरा सु
रितमन ॥ दान दियो कुलिंद नृप अनगन ॥ ३ ॥ सो॰ हा॰ ॥ गो कंचन पटरत
न मणि मुक्ता लव अपार ॥ नृप कुलिंद सभहि जन को दयो दान हित धार
४ ॥ चौ॰ ई ॥ लोग कहै नृप निस नातो हरि ॥ हहस मै सुत दियो कृपा करि
बडे भाग भूपन के भए ॥ इह अवसर महि सुत प्रगट ए ॥ दीस गाउ के जेउ वो
धरी ॥ भेर थान लिह थ्यागे धरी ॥ दई असीस चिरथ बालक हुव ॥ कर श्याम
मनिज ग्राम गए सभ ॥ सिह प्रनिपालहि विविध प्रकारा ॥ भोजन षटरस
सव सन अपारा ॥ पांच बरस का बाल भयो जब ॥ मन विचार करियो त
रेसतव ॥ ५ ॥ सो॰ हा॰ ॥ मौंजी बंधन कर्म अब करौं बालक अब जोय ॥ करौं जपा
विधवेर की भली कहै सब लोग ॥ ६ ॥ चौ॰ ई ॥ नृप मन न साज तो पवीत की

अ॰भु॰ करीसमग्रीवेरीनकी॥ बोललिएब्राह्मनषरकरमी॥ सुविधावंतव
भा॰ रमहांसुधरमी॥ सुभनछत्रसुभद्रारीदिवसगन॥ सिद्धजग्गोपवीतस
२९९ सोतन॥ विधवतदाननदिजनन्हपकीनो॥ गोसहस्रसरसविप्रन्हदीनो
गावतनारिसुमंगलचारा॥ बाजेबजनअनेकप्रकारा॥ बंदीजनहरष\
तजसगावहिं॥ निरतकरतनतरतनपनरिझावहिं॥ ५॥ दोहरा॥ ब्राह्मनबं
दीजननदिननरपदीनोबहुदान॥ हरषनहैनाचककचलेमनवांछितप
लमान॥ ५॥ चौपई॥ बहुतकालबीततनवगयो॥ सातवरषकाबालक
भयो॥ चंद्रहासहरषतमनतनिसदिन॥ श्रीगुपालसिमरतहियछिन
छिन॥ विनहरिनामआननहिंराषै॥ रसनानामरामहियचाषै॥ नरना\
रिनकौंहियसिमरावै॥ कतिवचनकहिलोगनसमझावै॥ अनरका\
रसीदानविधाना॥ संध्यादिकनीरपयसनाना॥ नवकासिसुपुरके
लोप्रवेसा॥ सभपुरमाननक्रतिउपदेसा॥ ६॥ दोहरा॥ विप्रउचार
नविगमधुनग्रहग्रहपरमउलास॥ नवकोसिसुप्रापतभयोपुर
महिधर्मप्रकास॥ ७॥ चौपई॥ अनरकारसीसभपुरधारै॥ नरनुवनी\
बदेसमरुवारै॥ जिहग्रहविनेसुगनउजियारा॥ तिहपुरुषनकौंकरै॥
प्रकारा॥ उनकाकोबचबेरहटावै॥ पासुसिमरनसुविधसमझावै॥ स
भपुरलोगनकौंप्रियलागै॥ अंत्रनवचनकहैअनुरागै॥ मंत्रीप्रजाकहै
भूपालक॥ नगरपुनीतकसोरनवालक॥ भूपलोगतेउकरैविम
लमन॥ सभपुरसिमरनकरतरमापन॥ ७॥ दोहरा॥ जनतहोमअनउ

रसकलकरनदेनवडूरान॥ धूपदीपषटजाकरनवालककवचनपमा
न॥२१॥ चौ० ॥ सुनरूपहसभगतसुननाना॥ सदाकहनसुषहरकीवा
ना॥ जहवैठेहरिकथाचलावै॥ हरिसिमरनविनयवरनभावै॥ गोष्टस
वैठकरैजिनसंगा॥ तिनकोंसुषउपजनसभअंगा॥ उठनवदेहिसभन
त्रिपलागै॥ प्रजनसभसिहसुमनवनावै॥ हिअवचनकहिपर्महसावै
॥२२॥ दो० ॥ सुनरूपहरेविचारकिपतुजसकरनसभलोग॥ विद्यादेन
प्रहलादहैसभगतसिहजोग॥२३॥ चौ० ॥ यहविचारकीनोभूपमन
न॥ विद्यागुरूवुलायोब्राह्मन॥ वालककहिपोविप्रकेहाथा॥ वेगपढाव
हुउनहविसाथा॥ सभविद्याहीजेइहवालक॥ हमपाधारहिमवरनन
कालक॥ सिसुकोंहिजनिजग्रहलेगयो॥ निरषसुरूपअनंदसुभयो॥ म
हांवैठेवालकचटसाला॥ तहवैठावोहोतनभूपाला॥ रूपहतनकोंपारीलि
षदीनी॥ हरषतहैकरुणाहिजकीनी॥२४॥ दो० ॥ वालकहहनेनगुरवच
नपढेनमनकरप्रीत॥ रामनामअक्षरहोरसनारहेप्रतीत॥२५॥ चौ० ॥
विद्यागुरुहिजवंचनउचारे॥ वंरहासतअनतानहमारे॥ पढतहिरामउ
ननकीरीला॥ निसदिनहैअक्षरपरनीला॥ विद्यासभचाहियेरूपनसुन
सभनहिंसीषोहियंप्रीतमन॥ जुगअक्षरतमरेकिहकामा॥ तुमसीष
हविद्यासंग्रामा॥ ग्रारचनेजहांगदसपाजा॥ नहहैअक्षरसेनकाजा॥
विद्यासकलपढहुसमजोगा॥ राजनीतपावहिसुषलोगा॥२६॥ दो० ॥
विद्यासभरूपसुतनकोंपढनकहीअक्षरतिसाथ॥ राजनीतसंग्रामविधसीष

597

नं. प्र
भा.
९..

इद्विविध प्रकारा ॥२८॥ वंदूंहासरुदोव ॥ चौपई ॥ वंदंहासनवविवकर
जोरे ॥ विनतीकरतलम्हनडुगुरुमोरे ॥ सम्मवस्तुश्रीकलसकोनामा ॥
विद्यासकलप्रवरकिहकामा ॥ रामनामप्रक्करसमहोऊ ॥ इनसम
विद्याप्रवरनकोऊ ॥ तिनलमभाषनहोकिहकामा ॥ पहनजोगना
हिनक्कनिराजा ॥ रामनामलैप्रुजवरनडुकन ॥ इहेविचारडुइहन
भलीमन ॥ यहहोकलनामकेप्रक्कर ॥ आवनकामप्रंनकेप्रवसर ॥२९
चौपई ॥ रामनामप्रक्करहोऊसारा ॥ आवनकामप्रंनकीवारा ॥ इतिरस
समरुजानहिकोई ॥ जाकेपढेप्रुक्कनरहोई ॥ इन्नाप्रवरसकलनग
बंधन ॥ कलनामप्रवकोरनिकंदन ॥ जीवनप्रुपहोनकल्याना ॥ प्रुक
नफलसिमरनभगवाना ॥ हैप्रक्करसभकोंनिसतारो ॥ इतिसिमरन
प्रहलादउधारो ॥ अजामलगनकाजिहतारी ॥ कलनामप्रनगनप्र
नुसारी ॥२॥ दोहरा ॥ ग्रसोग्राहगजराजहैकलिप्रुहिविसरोनाम ॥ इह
कनविलमनकलोछिनप्रुकतापोहनसाम ॥२१॥ चौपई ॥ हैप्रक्कर
कनमोहिकुरावडु ॥ सोविधमोकोंकहिसमझावडु ॥ जपननामहरि
सिवसनकादिक ॥ हरिहरजपउधरेसनकादिक ॥ रामनामजपनरेप्र
पाया ॥ बरननहोनग्रंथविसतारा ॥ कलिहरिनामविवर्जितग्रुरुप्रुऊ ॥ घ
हननमोंहमसोंचकहोंतऊ ॥ यहकहिहरिगुनगावनलागा ॥ ऊचीसुर
करमनप्रनुरागा ॥ गावनगीतप्रुजसनेहलाला ॥ सुनप्रनसवमो
हीवरसाला ॥२२॥ दोहरा ॥ सभपतितिधांननवालकनविद्याईविस

र॥ चंद्रहास द्विग जो र कर डाहे रहहि तथा र॥ २३॥ चौपई॥ चंद्रहास
मोहे सभ बालक॥ रास भए सुन पुन तत कालक॥ निरषरहे रूप सुत
पुष की छबि॥ आज्ञाकारी होत भए सभ॥ अवर पठन सभ पंडीत जरी
ना॥ मन ले कमल चरन रंग भीना॥ लागे सिमरन करन गुपाला॥ जे-
न कथे बालक चटसाला॥ सभ मिल मन की क्रांति हम अवसर॥ देख
हु रहम पठहि प्रीत कर॥ चंद्रहास के संग हम होवहि॥ रामनाम-
न पसभ हू घघो वहि॥ २४॥ दोहरा॥ विप्र रिदे अचरज भयो निरष
बालकन भोन॥ सकल पठन तें रहे गए मन महि उपजी सोन॥ २५
चौपई॥ चंद्रहास को विप्र बुलायो॥ बंध पकर के रूप पहि आयो
अपना सुत लीजे भूपाल क॥ सकल बिगार दिये इन बालक॥ नि
स दिन पहहहरि को गुन गावै॥ विद्या बीच न मन ठहरावै॥ करे अला
प उच्च सुर सों जब॥ रीझ सभ के होहि बालक सब॥ मोह लिये ते लोक
एक छिन॥ भाव न अवर न राम नाम बिन॥ सभ सिसु पठने तें र-
हे गए॥ पत्रि पालन जा के बस भए॥ २६॥ दोहरा॥ द्रोहिन के वच अ-
वन सुन क्रोधन भयो नरेस॥ तुम अपना हि जनें लियो देन भयो-
उपदेस॥ २७॥ चौपई॥ सुन ले गयो रकांत ठौर नृप॥ लकुरी लीनी
हाथ नराधिप॥ लागा सुनन डरावन नरपत॥ सीष हमारी सुन ऊ-
इछमन॥ कनलमपठऊन कुल की रीता॥ सीषन नहीं राज की नी
ना॥ पुत्र विद्या ना आपन होई॥ कोरउ पाउ करै जिन कोई॥ विद्यापट

भे·ग्रं· नक्ताहि देषमानउ ॥ कलिलमदिरे विवेकन आनउ ॥ विद्याविन
भा· श्रावहु किह कामा ॥ छत्रिधर्म सीषहु संग्रामा ॥ २९॥ सोरठा ॥ हमराह
३·१ नसकहा इकैपरहु नहीं कुलरीत ॥ तुमसीषहु संग्राम हैं सकुरसि
मरनप्रीत ॥ ८०॥ चौपई ॥ है अक्षर हरि केतुमसिमरन ॥ तुमनिन
सोंअतिकरन प्रीतमन ॥ छत्रिधर्म ब्रह्मणतुम नाही ॥ समझ देष
वालकमनमांही ॥ तुगब्रह्मरमा ननसभकोई ॥ वेपढ़ राजनीतन
हिहोई ॥ रपकुलिंदसुतकों समझावत ॥ बहु प्रकार हष्टांत दिषा
वत ॥ षरगुरुवणि हत गर्भ हिरहितुत ॥ हरिपद मांगत हैं ध्रुसेसुत ॥
८१॥ सोरठा ॥ गांदगुरुवणी कहत पांध्रुसो सुतहरिदेह ॥ सहत सील
संतोष तुन धीरधरन समनेह ॥ ८२॥ चौपई ॥ होतनरंग निगर्भसहि
तजव ॥ ध्रुसोसुत मांगहिहरिपैतव ॥ पावनरनमतिहितसकरेतग
हौरतकबहु नचरनछिसेमग ॥ ह्वै है नव सिंहणी गर्भ तुत ॥ श्रीपत
पदहिमांगत ध्रुसोसुत ॥ महांबली गजजूथ विदारे ॥ महासूरवनक
बहुनहारे ॥ नवग्र गात गर्भतणी होई ॥ मंदकर्न मांगत सुतसोई ॥ पु
हवत्सभक्षनकरिहैसभ ॥ ध्रुसा सुतनत्तु फकों दीजे प्रभ ॥ ८३॥ सोरठा ॥
होइ ब्रह्मणी गर्भ तुत हरिपद हि मांगत नात ॥ बहु गावक सुतदीजि
येमोकों त्रिभुवननात ॥ ८४॥ चौपई ॥ रूपवसीनवगुरुवणहोई ॥ ध्रुसा
सुत मांगत निपसोई ॥ गणिमराहरिसुतन्नुफदीजे ॥ कमलापत नकर
णाष्टुफकीजे ॥ अतिउदार संदरविमलछवि ॥ प्रणापुराविद्याजानैह

वे॥आनेसकलराजनकीनीना॥चलेसुमारगकुलकीरीना॥ऐसेव
चनकुलिंदसुनाए॥चंद्रहासकौंकहिसमझाए॥वेदवचनभाखेभूपा
लक॥हरखसोकउपजोनहिबालक॥५०॥दो॥इतिश्रीभारथपद्मलो
खंडेअश्वमेधपर्वभाषा॥कविहरिकृतनरहरदासपोथाचंद्रहासप्रसंग॥५३॥चौपई॥
मैपुनकहिंदपनसुनडुमपारथ॥नारदकथाकहतअतिपारथ॥सुन
कुलिंदसुखबचनउचारे॥विघापढलेनानहमारे॥राजनीतकछुसीसंग्रा
मा॥हैप्रभुहमरेकिहकामा॥नहीधिकारकारछिपितमाला॥कुलकी
रीतनजुद्धनहिताता॥तुमराजसभसेलाहदयवउरातन॥सुकरुणहमभपोष
वेससमरुमन॥तुमकौंकछुधर्मप्रमाना॥हैप्रभुरनतनहुनडुनकाना
॥दो॥॥हैप्रभुरजोतुमपवडुपर्मग्रहलीमार॥राजनसुननकौंचाहि
येसनकरहिसंहार॥५॥चंद्रहासउवाच॥चौपई॥कहहतचंद्रहाससुनना
ना॥तुमसौंकहौंसमयहवाना॥हैप्रभुरमुरुपपढेविसाला॥तातेस
घामघोनंदलाला॥सघाहमारामघोकलमब॥होइसत्रुतेमित्रजगत
मभ॥इनसमविघाप्रबरनकोई॥हैप्रभुरमारंगतहोई॥हैपढहोउ
मलविघाकौ॥जिहपरकृपारेतहरिताकौ॥सिखनथालरवेदपुरा
ना॥सभपढयपकततावविधनाना॥६॥दो॥॥अंगीकारनहरिकरै
तोपढिहोकिहकाम॥जोसहारथीपनकरैमनपावेविसराम॥७॥
चौपई॥जाकेसदासहारउपाला॥ताकौंसत्रुकवनभूपाला॥अहसिंद
नवनिहलासिउन॥हैप्रभुरसिमरनकीनोजिन॥अंगीकारकरतनि

ज॰ श्रु॰ रथरजव ॥ भगतप्रतापप्रकासहोतलव ॥ ज्ञानदर्वेहोतजिनके
भा॰ वर ॥ मनवचक्रमजेऊस्मिरनहर ॥ सहजेंहीविद्यासभआवत
३०२ मनवांछतफलसभन्हषपावत ॥ विद्याकवनचातुरीताके ॥ नीति
पहारत्तुहारतजाके ॥ ५ ॥ मं श्री उवाच ॥ दो॰ हरा ॥ कहिमंत्रीराजासनइ
कहुवचनमनदिजोग ॥ कसभगतवरतानतमकरैकुमारघ
लोग ॥ १ ॥ चौपई ॥ अबकापरसितकमोप्रवेसा ॥ सकलनगरकीजे
उपदेसा ॥ इहबुद्धिजिनहरिनहिंध्यायो ॥ तिनपुरुषनकोंतानहि
हायो ॥ जोनरहोतअधमअग्यानी ॥ तिनहिंजपायोसारंगपानी ॥ सि
शनगरकीभईधर्मबुत ॥ यहबालकहरिभगतमहाद्रुत ॥ पुरुष
हि कलभजनप्रगटायो ॥ दिदेसभनहरिजसउहरायो ॥ जउपुरुष
नकोंचेतनकीनो ॥ तुमरातनहरिभगतप्रवीनो ॥ ७ ॥ दो॰ हरा ॥ सुत
दुल्सपनयहतातनतुमसभपुरकियोकल्यान ॥ तुमराकुलसभसोंत
तोमनवचक्रमनिषजान ॥ ८ ॥ चौपई ॥ मंत्रीकहेसुनउराजाना ॥ बा
लकतुमग्रहकुलसमाना ॥ यहबालककीसेवाकीजे ॥ इमराबचन
मानरूपलीजै ॥ यहसितनहींहुपावनजोगा ॥ इनसभकियेकुमार
पलोगा ॥ सबिबवचनसुनरूपपछताना ॥ अपनेरिदेविचालोला
ना ॥ हेप्रसचतनकेंचलगायो ॥ क्राहरियोभयनेमुककनायो ॥ चंद्रहास
मनमांहिविचारा ॥ समकहतहैपिताहमारा ॥ ९ ॥ दो॰ हरा ॥ चंद्रहासहरि
भक्तवररेमोहहेविचार ॥ समकहतहैपितासुकविद्यापढनविचा

र॥१०॥चौ॰दई॥भगवतनसुषनैंफूलिप्रगटाने॥पढतजोगनिद्वेंनि
घटाने॥पिताववनमेरननहिंमोगा॥वेदपढनग्रसलसभलोगा
पितुश्रापालेचलोहर्षमन॥श्रापनभयोहारगुरुतनछिन॥प्रभु
दिनहृदेफूलसगुनगावत॥हरिसिमरनविनकछुनसुहावत॥शोर
ननिरषश्रवनेंरतभयो॥चंद्रहासजवदरसनदयो॥गुरुकोंनमस्का
रसिसकीनो॥हिजग्रसीरवादवड्दीनो॥१९॥दो॰॥पारीलिषदि
जभाउसांदईभगतकेहाय॥सिवहतनग्रतनप्रथमलिषउनग्र
त्तुतमहुनाप॥१४॥चौ॰दई॥नापाछेहिवनिगमग्रपारा॥लिषदीने
सिसविविधप्रकारा॥चंद्रहासग्रभ्यासकियोग्रन॥शीघहिविद्या
पढ्योविमलमन॥चारदिवसमहिंपढ्यौचारफ्कत॥षटसास्त्रग्रव
रसपुराननुन॥चौदहविद्यासभपढलीनी॥श्रीफूलभगतविलम
नहिंकीनी॥ग्रबग्रसहहपनालफहारन॥नेगलफंगग्रईसरमारन
कुहकवानविद्यासंग्रामा॥सकलपढीवालकग्रभिरामा॥१३॥दो॰॥
मोनकसिमनवेदविधग्रागमविविधप्रकार॥सास्त्रफ्कथाकनं\
नवपढतननलागीवार॥१४॥चौ॰दई॥पढेविसर्जनग्रावाहनधन॥ग्र
वरसाकसीसकलधुदगुन॥महलग्रषाडादंडपेलनो॥नेजालाजीग्र
सुफेरनो॥गजग्रसवारीग्ररुग्रषेटहत॥विद्याविविधपढोहरष
नचित॥जेतकविद्यापीष्पवीपर॥सभपढलीनीशीघ्रभगतहर
संध्यादिकजपतपनपंणविध॥स्नानध्यानपढसकलकरीसिध॥\

ग॰ग्रं॰ सोकछु विचारवी गुपालहि ॥ सकल पढी बालकनन कालहि ॥ ५ ॥
भा॰ दोहा ॥ गुरुमुष कहत विलंब है पढत न लागे बार ॥ बालक पढ पं
२०३ डित भयो विद्या विविध प्रकार ॥ ६ ॥ चौपई ॥ अचरज भयो निरषत्तन
ब्रह्मन ॥ वेगपढी विद्या बालकगन ॥ मुष तें कहत सो पढ आई ॥ बा
लक पढ्यो कलसकी माई ॥ आगे पढ्यो हुतो किधों बालक ॥ सुनत नहि
पढत उठै ननकालक ॥ गुरु मन मांहि अचंरज भयो ॥ हाथ जोर आगे
चलगयो ॥ यों कहत बहुत बेनती कीनी ॥ तो कों हम नव हूं सिषदीनी ॥
पढ्यो पढत नहि तुम भवन हमारे ॥ विनय करी मुरूपिता तुम्हारे ॥ ७ ॥ दो
हा ॥ तव तुम कों भूपन पढ्यो पढन हमारे गेह ॥ मुझ औ तें सजि यमा वि
यो कृपा करी हरि तेह ॥ ८ ॥ चौपई ॥ हम थे सैं मन मपहि ठहरायो ॥ हरिह
हमारा रूप न कलायो ॥ हम हैं विप्र सदा ग्ररषीपन ॥ तुम कों निरषम
यो हरषत मन ॥ रूप हुत न मम गह रूप रच पढायो ॥ हमरा सकल दरिद्र
मिरायो ॥ देषी अब रतसारी सीना ॥ तुम नप ढकू विद्या करप्रीता ॥ तब
हम मरहौं चिंत वसभयो ॥ तुम कों लेभूपन पहिगयो ॥ तुम कों बहुत
लालसमरायो ॥ बहुर पढन तुम मम ग्रह आयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ अबतु
म पढ भूरत भयो शास्त्र वेद पुरान ॥ मुरूरी ते गुरु दछना उचित नि
गम विधदान ॥ १० ॥ चौपई ॥ वंदहा सगुरु कों लिय साथा ॥ आय नृप पह
प्रफुलित गाता ॥ नमस्कार नृप हिम कों कीनो ॥ विप्र असीरवाद नृप
दीनो ॥ उत्तम आसन सुष वचन उचारे ॥ कुसल रूप नृप तात तुम्हारे ॥ म

हांसी नृपहि वे कों कीनी ॥ विद्या सकल पान कर लीनी ॥ सुख तें कहत
विलम्ब न लागे ॥ सिख यौं पढ्यौ पढ्यौ किधौं आगे ॥ राजा सुतन न अवनं
दन भयो ॥ सुष सम दुहु पजे दुष गयो ॥ ५५ ॥ दो० ॥ सुतन समेत न लागो च
रन शो हृत के भूपाल ॥ द्विज पाई गुहर कुना चलत न भयो नन काल ॥ ५६ ॥
चौ० ॥ सुजन सवट्यो जग चंद्रहास को ॥ विलम्ब भगत यान नमय का सको ॥
सकल पुरी मह्हि धर्म दृढायो ॥ अनरकार मीसम न वतायो ॥ दुमन चढ़
फल गत ज्ञान न वरनी ॥ चंद्रहास के आवन वरनी ॥ गिरम हिर तन नउ
पजने लागे ॥ मंगल भये अमंगल भागे ॥ आज्ञाकारि दिगंप्रव दिगपाला
सलिता पवन रंद्र वरुणाला ॥ ५७ ॥ दो० ॥ धर न अकास पानी पवन रं
द्र अगन नमराइ ॥ आज्ञाकारी रहें सभ सिख के सहज सुभाइ ॥ ५८ ॥ चौ
पई ॥ नृप कुलिंद जिय वात विचारी ॥ वालक भयो राज्य अधिकारी ॥ श्रीप
तिसहा सहाय कज्ञाको ॥ राजदेउ मनवच क्रम ताको ॥ वीस गाम का
दृमहौं अथपपत ॥ जीवत देउ राज सुत हरषत ॥ हृदय अब स्याप ईहमा
सी ॥ राजदेउ वालक हितकारी ॥ नृप तन ढिन ज्योतकी बुलायो ॥ सुभ
दिन लगन सुहृत पायो ॥ वीसगाउ के सुकु नेउ जन ॥ लिये बुलाइ न
पत हरषत मन ॥ ५९ ॥ दो० ॥ अंब्रत वेला सोध के कुवर पतो सिर वाल
सिंहासन बैठाय कै राजतिलक दियो भाल ॥ ६० ॥ चौ० ॥ चंद्रहास सि
र छत्र फुलावत ॥ नगर लोग मंगल सुभ गावत ॥ प्रथमे कियो कुलिं
द प्रणामा ॥ विलम्ब भगत बालक अभिरामा ॥ अवर सभ मल लोग प

भ॰सु॰ गलागे॥ क्रूर वीर मन ननन त्रागे॥ दुंदुभि भेर अनेक प्रकारा॥
भा॰ बाजन धुन पंच शब्द अपारा॥ ग्रह ग्रह भयो अनंद महा अब॥ गावत
१०५ गीत नारनर हरषत॥ हार पार आंगन ग्रह द्वार॥ बास अरगजा म
गछिरकाए॥ २२॥ सो॰ रा॰॥ श्रुति सिद्धन वनि पतहां ग्रह ग्रह किये विधि
वेस॥ चंद्रहास राजा भए धर्म प्रकास सो देस॥ ५५॥ चौ॰ १॥ कंचन कल
स भवन सभ सोहे॥ जगमगात कोट रवि को है॥ ग्रह ग्रह ध्वजा पता
का राजत॥ चामर तोरन द्वार विराजत॥ राउ रंक सभ एक समा
न॥ पुर महि वदो हरष कल्याना॥ निर वैरी सभ जीव भए पुर॥ आध
आध जंजाल गए दूर॥ क्रूर कपट पुर महि दुर गयो॥ नवका चंद्रहा
स नृप भयो॥ जो ककु ढलि सतजुग की नीता॥ तैसी सम पुरी महि रीती
॥ २९॥ सो॰ रा॰॥ चंद्रहास के राज महि कछु न सोग वियोग॥ प्रेम भग
त कर वस किया सुखी किये पुरलोग॥ २॥ चौ॰ १॥ चंद्रहास ढिग ह
रि निवराजत॥ निमष भगत की गैल न त्यागत॥ सालिग्राम रिषेजी
हिय राखा॥ सो निसदिन बालक के पासा॥ जो ककु बाल कमन न मह
धारे॥ सो कारज हरि जी तुरत सवारे॥ मन बांछत फल देजउ राई॥ हरि
भी कामधेनु की न्याई॥ चंद्रहास हरि भगत महावर॥ धर्म नीत रे प्रजा
हेत कर॥ प्रेम मगन है निरत करे नव॥ पाछे लागा क्रम फिरे नव
र॥ २॥ सो॰ रा॰॥ निसदिन रछक बाल को सदा सहाइ गुपाल॥ भगत अ
धीन रहै सदा दुहकन भय भंजन रछपाल॥ ३॥ चौ॰ १॥ जीवन दियो कुलि

गराजसुतन ॥ बीसगाउकामयोभूपडुत ॥ ग्रहग्रहसकलउछाह
भयोतव ॥ आनीभेरवीसग्रामडुसव ॥ परसहिपांउचंदहासके ॥ क
सभगतसुरनप्रकासके ॥ भलेलोगश्रेष्ठसुपरधाना ॥ भेटदेहिनि
मराजविधाना ॥ गवगंधर्वअपसरांनाचत ॥ पावतदानजोइमन
वांछत ॥ भाटद्वारकुलकीरतगावत ॥ जिनपरमणिसुकलापह
गावत ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ चोवाचंदनअगरगजासकलसरसमहिमर ॥ ग्रह
ग्रहमंगलगावहीवाजतहैपचसवद ॥ २४ ॥ चौपई ॥ जिनपकरतनतु
लिंदकरलीनै ॥ सुनसुनरूसभगतसुतमोरे ॥ हहुअवसादेहम
ईसुरू ॥ बीसगाउकाराजदियोतरू ॥ सोजानोतैसेंअवकीजै ॥ अ
वरहमांतअवनसुनलीजै ॥ हमकोंराजइछुतुधरीनो ॥ बीसगा
उकारपमुरूकीनो ॥ इछुतुउमेजीवलचाना ॥ देसककन्तकाहिअ
सथाना ॥ वहीहमाराहैइच्छवीपत ॥ बीसगाउदीनेमुरूहरखत ॥ २५
दोहरा ॥ वर्षवर्षलिहरूपतकोंभेटदेहिहमआइ ॥ अवहमराजके
मेरियोसुनकुवचनविनलाइ ॥ २६ ॥ चौपई ॥ हमरावचनअबैसुन
लीजै ॥ वर्षभेटनिहिरूपकोंदीजै ॥ जोथिरहैहैराजतुम्हारा ॥ वर
घवरषपरसडूरूपहारा ॥ जोतुमराजहोइहैअचल ॥ इछतुइमें
सीलोवडूघल ॥ रूपतोघविनराजननहोई ॥ जोहमकहैंकरोविथ
सोई ॥ जोथिररहैजोहिवकुराई ॥ वरषभेटलेमिलनरूपआई ॥ ऐसेंसंव
वनकलिंदकेहेतव ॥ उमरदीनोचंदहासतव ॥ २७ ॥ दोहरा ॥ करि

स॰ प्र॰ नारदअग्रजैमस्तुनइपहवबकहे कलिंद ॥ जमरहीनो पिताको
भा॰ हरिसिकैभगतनगुविंद ॥ ३९ ॥ चंद्रहासउवाच ॥ चौपई ॥ चंद्रहासमुष
३॰५ वचनउचारे ॥ सुनहुअवनदेपिताहमारे ॥ इष्टवुद्धकोइरनहिकी\
जै ॥ हमराबचनमानसनलीजै ॥ निसदिनसिमरनकरहुस्यामधन
इष्टवुद्धकोइरनकरहुमन ॥ श्रीगिरधरनसहाइकजाको ॥ कवहु
नहोतत्रासजिपताकों ॥ पिताजोघआज्ञापुनकीनी ॥ सजमेनाइक
रकरलीनी ॥ सूरवीरबहुतनरेअपारा ॥ चंद्रहासजिपमंत्रविचारा ॥
३९ ॥ दोहरा ॥ चंद्रहासविनतीकरीवहुरपितापहिंजाइ ॥ इष्टवु
द्धतैंनाइरहुसिमरहुश्रीजदुराइ ॥ ४० ॥ चौपई ॥ कहैचंद्रहासह\
नताता ॥ कुकपहुदेविचारीवाता ॥ इष्टवुद्धकेगाउइकासी ॥ हरि
नहिसिमरनतुद्धिविनासी ॥ पितातुम्हारीआज्ञापावों ॥ वेगनाइ\
तिनहरिसिमरावों ॥ आज्ञाकरीकुलिंदभुवाला ॥ वालकचढचलि
योततकाला ॥ गाउइकासीहेरलियेछिन ॥ रछ्यककृष्णभगतकोनि
सदिन ॥ भीतरवेदीभजापरस्पर ॥ मंत्रविचारतमिलनहुअवसर ॥
४१ ॥ दोहरा ॥ सकलग्रजाभीतरमिलीकरतपरस्परवात ॥ चंद्रहास
हरिभक्तकोंमिलेहोतकुसलात ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ चंद्रहासकाहूनइ
खावै ॥ निसदिनहरिपेंकृष्णगुनगावे ॥ गगनपरनजिहआज्ञाकारी
किपोभजनकरवसगिरधारी ॥ इष्टवुद्धिनृपअपमहुघमत ॥ रैन
दिवसजिहहदेपापरत ॥ तिहतैंकवहुनहीकुसलाता ॥ चंद्रहासपर

न भगवाना॥ सकल प्रजा को भजन वतावन॥ कलि कहि कहि कर-
सा न हठावन॥ आज्ञाकारी श्रीपत जा को॥ अपनाभूप करहि हम
ताको॥ ७३॥ दो० हरा॥ जिय तव जानै हरि भजन सु येसु करत रे जोर॥ क-
लवंद जिन वसकलो न्प करि हैं हम सोर॥ ७४॥ चौपई॥ सकल प्र-
जा पह मंत्र विचालो॥ मिले आय आनंद रजिय पालो॥ सम मिलु चंद-
हास पग लागे॥ दीनी भेट हिये अनुरागे॥ साष भेट सह सगन सेना
कनक कवंच रंग जगा हस्त भेना॥ अंकुस कनक जमी तियन झालर॥ धुजा
अंबारी जगमगात वर॥ इक रक गज हौ अश्व रकावन॥ रतन जटि-
त अग्र सवाव सुहावन॥ दिए एक सौ भेट निसाना॥ वसन वधर न अंव-
र पहराना॥ ७५॥ दो० हरा॥ एक अश्व तरप कनक पट मणि गण रतन-
अपार॥ पुक नाहल वहले भरी भूषन विविध प्रकार॥ ७६॥ चौपई॥
चंदन रच मणि जटित अपारा॥ तिन पर प्रजा भई असवारा॥ कुंभी
सु रप्रजा लिए साथा॥ गांड रका सीकि पे सनाथा॥ अपने वस्त की नेस
भ ग्रामा॥ लागे जपन सकल हरि नामा॥ पुन वालक निज धाम सिधाये
सत आवन कुलिह सन पाये॥ आगे लेन वसो नाहीं छिन॥ प्रजा संग
ले अतिहि हरषत मन॥ पित आवत हरि भगत विहारा॥ रपलैंड तव
वरत सिर धारा॥ ७७॥ दो० हरा॥ लियो चवाइ चंडोल पर हरषत हिये
कुलिह॥ पुन की नीप र रहनापित कों भगत सु विंद॥ ७८॥ चौपई॥ न
गन पांड वाल कभी आरा॥ दावी वह पित की मरजादा॥ आज्ञाकारी

गे·ग्र· रहैदासवत॥ जिमजनमरगनहिपरसरामगत॥ परसरामपितु
भा· वचनमानलिय॥ मातागुरुधातासंहारकिय॥ पिताप्रसन्नकलो
२·८ वहुमनतन॥ वहुरोंलिएजिवाइतातिहिछिन॥ मोंरसरघकीआ
ज्ञामानी॥ कलोगवनवनसारंगपानी॥ राजत्यागउदयानसियाये
पितावचनमनमहिठहराये॥ ५४॥ दोहरा॥ चंदहासजैसेंसंरहै पितु
कीआज्ञामांहि॥ सुविपावनअतिहरिभगतहरषसोककछुनाहि
५॥ चौ॰ ई॥ चंदहासहरिभगतमहाउनि॥ सवजीतआपोकीरतजुत
देषतभईसकलपुरवाला॥ महाशोरससिवदनविसाला॥ जिनति
पपुषमपंकजहूंकीछव॥ जोहीनिरषरूपवालकसव॥ कोटअनंग
नसमसरजाकी॥ मोहीनारनिरषछवताकी॥ व्राह्मनवेदउचारन
लागे॥ देतअसीसहियेंअनुरागे॥ जेतकहोतप्रजानरनारी॥ सभनआ
नआरतीउतारी॥ ५५॥ दोहरा॥ दीपकद्वतेफुलेलवरमधवालीघनसा
र॥ वहुप्रकारसनआरतीसाषपुरनरनार॥ ५२॥ चौ॰ ई॥ नगरनार
नरमिलेअपारा॥ प्रजाकीनीविविधप्रकारा॥ प्रजाविचारकरतति
हवालक॥ कवनभेदसोंजेइहकालक॥ उतमवलभवनमहिजोई
रपकोंभेदसोंनियेसोई॥ जोईवस्तुरपकोंप्रियलागै॥ सोइदेहिमन
नअनुरागे॥ पुरषप्रधानएकतिनमहिवर॥ कह्योप्रजाप्रतिहितकर
अवनधर॥ याबालकनिपअवरनभावत॥ रामनामविनकछुनहि
हावत॥ ५६॥ दोहरा॥ रामनामकोभेदलेमिलहैंनरपततजोग॥ पही

मंत्रउदहराइचितमिलनचलेसभलोग॥५४॥जैसपउगाच॥चौपई॥
मुनमनमेआनंदपतअवनपर॥भेटरीतिप्रतरामनामवर॥सुनि
कनचंद्रहासभोहरषत॥अधिकप्रसन्नप्रजापरनरपत॥सुधाव
चनमुषनंदपनउचारे॥सुनहुकानदेप्रजाहमारे॥हमरीवानमान
पालीजै॥हरिनामसिमरनतिनकीजै॥देहधनिमसकलप्रानी
कौं॥जपलीजैसारंगपानीकौं॥जलनरंगतुरदउदाजैसें॥छिनभं
गुरदेवमानहुतैसें॥५५॥दोहरा॥जगमैंकोउनअमरहैहोनसरी
रविनास॥तांतेसिमरहुरमापतिनितहिहृदंइजनमजास॥५६॥चौ
पई॥चितसतनवपुषवारनहिलागै॥तांतेसिमरहुहरिदुषभागै॥
आवागवनमिटैनवतिनकी॥सेवाकीजैहरिभगतननकी॥जगमहि
सफलजननमतिहहोई॥हरिचरननलावैचितजोई॥वेदकर्मजप
तपसंजमव्रत॥सहहोतनवचनपरमरत॥साधुपाउजनवही
नेभयो॥साधुसंगतेंध्रमविरगयो॥सवदसापकाजिपढहरावै
पारसपरसहेमहैजावै॥५७॥दोहरा॥जैसेंसीपसमुद्रमहिस्वाती
जलकीआस॥वृंदपरतमुकतापवतसंतनमसवदप्रकास॥५८॥
चौपई॥आससीपकीसांतभईतव॥चितसोहितकरमुषपसार
जव॥सादरसनकौंढूंढतजैसें॥पावहुवेगपरमपदतैसें॥जि
नकेरिदेआसलषलेंही॥शीघ्रसाधदरसनतिहदेंही॥स्वातिवंद
जिमसाधवचनसुष॥परतसीपमहिमंदजानमुष॥साधकपा

न.पु. ग्यानप्रकासन॥सम्भरमहिग्रानमग्रामासन॥पांचनन्नकोय
भा. गयायोग्रभ॥प्रथमैसिषरचौजिनजउसभ॥५२॥दोहा॥अयनीस
३.० मावीचनवआसेपीभगवान॥सकलजीवचेननकिपचौटीकुल्य
समान॥९०॥चौपई॥वहुरप्रजाम्रुषवचनउचारे॥सुनहुअवनदे
भगनहमारे॥हमरेहूदेसदेहमिरावहु॥करुणाकरहमकोंसमका
वहु॥नमभाषोहरिसभहटमांही॥कननगमाहिविलोकननाही
आपमांहिधरनहरिहोई॥तोवाहरहूंदेनहिकोई॥जोइसहीकेम
धनंदलाला॥अननदौरकनफिरनभुवाला॥होइदिपालरूपाभु
वकीजे॥हमकोंसमभननांनकहिदीजे॥९१॥वंद्रायनछंद॥दोहा॥सु
नहुप्रजाधरनपुरुषसभहैसनाकेवास॥लषचुरासीजूनमहिजनह
नहमोनप्रकास॥९२॥चौपई॥सुनहुप्रमाहरिसभघटमांही॥सकल
रूपभेरककुनाही॥अवररयोग्रहूंकूनकेगुन॥लषोनपरनपक
नभरषिमृति॥जिमससिगेकननैहैवादरनभ॥तिमग्रहहमेवकर
ननलषननप्रभ॥वीचग्रहहैकूनकोअंनराला॥तातेंलषनसकनअनंद
लाला॥इककइककेहैपलोविषपरस॥सुनरागपनलोभमदहांफस
मेरीमेरीकरनभ्रमायो॥भगनभाउहरकवहूनध्यायो॥९३॥दोहा
इककइककेहेफसरह्योजिनकामनभवमांह॥अंनरालतिनआनमा
कवहुविलोकहुनाह॥९४॥चौपई॥ब्रह्मएकमनहकप्रपारा॥वांप्यो
मोहसमुनअरुदारा॥नवलगब्रह्मनचीननकोई॥नवलगसापसं

गनहिहोई ॥ संतनथापकिपोमनश्रुपवस ॥ वांछलकवइंनाहिवि
षपरस ॥ संतनसवदमिनमनठहरायो ॥ ग्यानमअत्यस्वादनिनपायो ॥
मगनभएग्यानमरसमांही ॥ मिथ्यारुतअत्यभेदकछुनाही ॥ जवघट
मंहमेवमिटगई ॥ तानगुदरष्यिनचिनभई ॥ ९५ ॥ दोहरा ॥ जीववस्तुदरो
रूपकहै अंतरालकछुनाहि ॥ अहंमेवजवमिटगईलद्दभयोजगमां
हि ॥ ९६ ॥ चौपई ॥ जिनकामनविषयनभरमायो ॥ लनसारायनसौंलप
टायो ॥ दीपकलानलहैदेप्रकासो ॥ जिनहिग्यानमासानअभासो ॥ जि
हवहदीपलानइतिहोई ॥ लवलपहचाननसोई ॥ कुंभमांहिदीप\
कहैजैसें ॥ दैप्रकासवाहरकौंकेसें ॥ वलभवनकीरश्यपरेनव ॥ वाह
रदीपप्रकासहोइजव ॥ मानभंगजिनकाजगभयो ॥ अल्पलानजिन
नेंदुरगयो ॥ ९७ ॥ दोहरा ॥ जिनकामनक्रूराश्रमनमुइंकारकेवीच ॥ ग्या
नमरामनचीकरें करमधरमकेनीच ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ गगनवधरनमहि
अंतरगैसें ॥ वाहरवीचपटलहैं तैसें ॥ मोंहीजीवद्रव्यपहिचानउ ॥ मा
यापरमेंमालहिमानउ ॥ तोतेंजीवअल्पहैकहहीं ॥ जोनरमामावस
दैरहहीं ॥ जिनजिपनलवलानठहराना ॥ जिनकेवलमनग्यानमगोना
९९ ॥ दोहरा ॥ जीवद्रव्यअंतरनहींमनवचक्रमनिपजान ॥ मायाकेस
नवंधनेंजगहैकहहनवखान ॥ १०० ॥ जैमडगाच ॥ चौपई ॥ जैमुनकहैहेतन
रूपधवीपन ॥ पहवचभावेरिविपारपप्रन ॥ वंदहासकहिप्रगास
मावन ॥ हिनसोंमारगमुकवलावन ॥ अल्पजीवमहिअंतरगैसें ॥ सा

जै. ग्रं. धसंगबिनमिटतनकैसें॥तांतेंसाधसंगनितकीजै॥निसदि
भा. नहरिसिमरनबिनरीजै॥कीर्तनसुनहुरामगुनगावहु॥साध
१९८ समागमसोंमनलावहु॥तबअंतरतउपजेंघटमांही॥ज्ञानप्रका
सकहुषहुरमांही॥२०॥दोहा॥परमबिवेकबिचारकरउपज
तज्ञानप्रकास॥सहजेआपनहोतहैश्रीहरिभगतनिवास॥२१
चौपई॥ओंओंकरैभगतअभ्यासा॥मैंमैंअंतरगतहैनासा॥जी
वब्रह्मअंतरनहिराषै॥ओंओंफलभगतरसचाषै॥अवरक
लपनासभमिटजाई॥जोमनपरेफलमसरनाई॥हरिभगतन
कोआज्ञाकारी॥मनवचक्रमजिनतजोअप्रारी॥ब्रह्मजीवको
भिनहीजान्यो॥सतगुरुशब्दतनपहचान्यो॥जिनजिपतनीश्र
वरसभअभ्यासा॥जपकीनोवसहदिजिमदासा॥२२॥दोहा॥बाल
ककहैप्रज्ञातनहुजोचाहोकल्यान॥सिमरनकीजैफलकोज
बलगघटमहिप्रान॥२४॥चौपई॥मानसजनमअमोलकपा
वन॥जगमहिआइफलनहिआवन॥बिषयास्वादमहांसुष
मानत॥अज्ञानीनरनहिजिपजानत॥हनदापापनमांहलभावे
षटरससवादस्वादलचावे॥बीतजातनंचलआयुरक्खुन॥निफ
लजनमतिहहोतभजनबिन॥जबलगयहवपुबिनसोनाही॥
तबलगहरसिमरहुमनमांही॥हमराबचनमानकरलीजै॥
हरिसिमरनमहिबिलमनकीजै॥२५॥जैपनउछीच॥दोहा॥जैवु

न ग्रनमे जैकहे है तिनड कथा रेकान ॥ भजन न वतायो प्रजा कौं वंद
हासराजान ॥ ७९ ॥ सो रठा ॥ सिमरा वन भगवान पर उपकारी
सुंतनग ॥ सकल तिषन की षान दरस परस किल विष मिटहि ॥
७७ ॥ नारद उवाच ॥ चौपई ॥ नारद कथा कहै पारषत न ॥ प्रजा प्र
बोधन वंद हास प्रन ॥ तन ड प्रजा हरि सिमरन कीजै ॥ साध संग
कर सभ ड षधी जै ॥ चंचल आप्र हटन है छिन छिन ॥ तातें सिमर
हु राम रैन दिन ॥ अह निस हरन माल नित स्वासा ॥ जब लक व हो त
सरीर विनासा ॥ जब लग वृद्ध अरोग न तन प्रान ॥ तब लग सिमर
लेहु भगवाना ॥ स्वास विषे विस वास न आनहु ॥ छिन भंगुर यह
तन जिय जानहु ॥ ७८ ॥ दोहरा ॥ जब लग तन नै मै यह पवन तन बलग
करहु उपाय ॥ सेवा संतन की करहु हरघ हियें धर भाउ ॥ ७९ ॥ चौपई
प्रान जात कछु वार न लागै ॥ तातें हरि सिमरहु भ्रम भागै ॥ यह अव
सर पुन वहुर न पावहु ॥ सेवहु साध कृपा गुन गावहु ॥ मन म हि व
स ज्ञान हचराषहु ॥ सम कहो प्रष अमन न भाषहु ॥ जिह देही के वा
रवार रस ॥ विसरग रह हरि विषय लोभ फस ॥ श्राम तप रग्र ह नव
त्तु च केसा ॥ सपन धान मन मोहि प्रवेसा ॥ आछादन निमर लगि रह
श्यामा ॥ रस सहारे ना महि अभिरामा ॥ ८० ॥ दोहरा ॥ मन राजा अहंकार न
मविवस साकर रत अभमान ॥ हरि न हि सिमरत गर्व वस काम क्रोध
अज्ञान ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ लगमें रत न वरे षल भाने ॥ आप समान कोऊ

जै॰ ग्र॰ नहिजानै ॥ इंद्रीविषयमोहलपटाना ॥ यौंजानैहमहीभगवाना ॥ ज्ञा
भा॰ नविहीनतुरतगढमांही ॥ रूपरागदसचौरलहांही ॥ ताहीगढको
१०९ सतुघ्रपारा ॥ समझननहीकरनहैकारा ॥ जिहगढकेफूटेद्वारेसुख
कैसंकरैसतुघ्रपनेवस ॥ पांचचोरनितकरतविकारा ॥ फोरतसदा
रपतभंडारा ॥ ८२ ॥ दो ॥ रा ॥ रपतविवेकीवसकरैपांचचोरगढमांहि ॥
गढफूटतदसचौरतेंतखपसंसपनाहि ॥ ८३ ॥ चौ ॥ ई ॥ निहरूपकोगढभ
गनभयोग्रस ॥ पांचचोरजिननाहिकियेवस ॥ निहरूपकोजगकरत
धकारा ॥ करिहैंकलनविज्ञानविसारा ॥ गढफूटासबबलवाना ॥ रूपज्ञा
ननहिकरतप्रमाना ॥ जिनगुरुषनहरिभजननकीना ॥ ग्रहंकारव
सननवीना ॥ हषदार्ड्सधुकौनहिआयो ॥ लोभमोहवसजनमग
वायो ॥ जिनगुरुषनसिमरतोपदमापन ॥ भईविमलधीसदाधर्मरत ॥
८४ ॥ चं ॥ द्रा ॥ स ॥ वा ॥ च ॥ दो ॥ रा ॥ सनदुरप्रमाजगम्राइकैजिननहिनाथोगु
र ॥ करमीजनसिरकौंधनमइष्यंजनकीवार ॥ ८५ ॥ चौ ॥ ई ॥ ग्रंग्रनरु
चीयहसागुरुनर ॥ लियैकिरतसउपेउपरीकर ॥ उदरचलीग्रंगुरी
ग्रहंकर ॥ पीचसकननहिधरुम्मीचित ॥ सकोचेतनातककुताही ॥
रधोनातग्रंग्रवकरमांही ॥ ताबसकोनहिवलधनरूपा ॥ गुरुकेसवद
तुरुधकसरूपा ॥ ग्रंग्रनगरलहेप्रकाकेतन ॥ साधरूपाविननहिस
पभ्रमन ॥ संतनसेवकरतनहिजौलग ॥ मनप्रतापमिटतनहि
जौलग ॥ ८६ ॥ दो ॥ रा ॥ सतसंगतजिनकौंभयोमिथ्याज्ञानीरेह ॥ धमवि

नसोतनतुधर्मईयहसुंदरनविषरेह ॥४७॥ चौपई ॥ लेवेवीचअंगुरी
कोंनव ॥ सतसंगतनजियतानहोतनमव ॥ सुंदरनरूपीआयुरज्ञानन ॥
तमविचारज्ञासजियमानन ॥ सुधासरूपआरवलपाई ॥ कोंनभज
हिहरयतनवहिंमाई ॥ सतसंगतनतेंज्ञानप्रकासा ॥ नानाहुधाभाउवि
धनासा ॥ सुधारूपचंचलआउरयहू ॥ सिमरहुश्रीहरिवेगजानवहि ॥
संतसंगहुविधासभहरई ॥ विनसेतिमरविमलबुधकरई ॥४८॥ दोहरा ॥
सुनहुकथाइमअकृतिकहनहरिकोंपुरुषप्रनाद ॥ आदथेततनहिपाव
हींशिवविरिंचिसनकाद ॥४९॥ चौपई ॥ कहतेश्रीकृस्नविरंकारा ॥ ली
लाहितकीनेअवतारा ॥ मायारचीनअपनेकाजा ॥ कीडतमितजगतहू
रिसाजा ॥ सुमरीमायागाचनचावन ॥ करचरित्रप्रभमोहिदिखावन ॥ मैं
नृपसभामांहिनपहरयतन ॥ नाचतआगेनटीविविधगतन ॥ नृपतनकेम
नवढ्योउलासा ॥ सभामध्यउपजेरसहासा ॥ नृपनरनीकोंसेनवलाई ॥
हासकरहुपुरुषनसोंआई ॥५०॥ दोहरा ॥ जोरसमसानृपहईनटीलई
उरधार ॥ सभावीचवैठेसुरूपगिपालेहुउतार ॥५१॥ चौपई ॥ नृपकी
सेननटीउरधारी ॥ सकलनरनकीपागउतारी ॥ सभामांहिजोपुरुषप
धाना ॥ सिरनांगेतनकहसेरजाना ॥ मैंमैंनपतनअनंदनहसे ॥ मैंमैंन
दीआइनरथमे ॥ लीनीपागउतारसभनकी ॥ उगउगसांगदिषावनमन
नकी ॥ हसनहारलमहीभगवाना ॥ मायादासीनहीसमाना ॥ सक
लसिष्टलमउतपतकरी ॥ सभमोहीमायाबुधहरी ॥५२॥ दोहरा ॥ रचनन

ग्रं॰ ग्रं॰ रनीमाया प्रभ सभ जग पाग रही ॥ हरन हेत ग्यानं र जिप्र डन पल जग
भा॰ न करी ॥ २३ ॥ चौपई ॥ भगतन मोहि सके न हि माया ॥ जिन लम कों मन
३१९ बच कर ध्याया ॥ ताकी पाग रहै सिर ग्रन चल ॥ कुहन सकल माया न र
नी छल ॥ ब्रह्म गत जिन र ब्योरि देवर ॥ अंतर की गत हो रस हद कर ॥
अंतर हकर्न हर जिन कीनो ॥ ग्रगन कुंडन न मैं रच लीनो ॥ काम क्रोध लो
भ किये ईंधन ॥ जब निल करी बासना नीछन ॥ रसा जारि किये श्रेगुण
घट ॥ सोहं ग्यान मकरी परम हित ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ ब्रह्म ग्यान ते नर कर
हि जिह हिय ग्यान प्रकास ॥ ब्रह्म अगन सों जार ही जनम मरन की आ
स ॥ २५ ॥ चौपई ॥ सोहं सबद निवास भयो जन ॥ रह प्रकार जिन होय
कियो मन ॥ सम सबद हिय मैं ठहरायो ॥ मध र च सब संकल्प गायो
म सब रस अगन बुझी हिय रें जब ॥ उपजो हर ते लड़ सालिक तब ॥ ब्रह्म
मत लेम मतन पाई ॥ मिट गई अहंकार विषमाई ॥ तब तान आतमाप
छाना ॥ सभ जग पक हि ब्रह्म समाना ॥ ब्रह्म ग्यान निह उदर भयो हिय ॥
रह प्रकार जिन हहे मन किय ॥ २६ ॥ दोहरा ॥ ब्रह्म गत जिन कियो नहि
अवर रहावै ग्यान ॥ सो बन हारा भ्रम का करगरै अस मान ॥ २७ ॥ चौपई ॥
दे ध्यो न हीं प्रकाश कहा चिन ॥ संत अरा ध्यो न ही ग्रह मन ॥ दान वनार
करन उपदेसा ॥ रग प ग्यान मन मां हि कलेसा ॥ अवर अगन कों ग्यान
दहा वै ॥ मन अपने मह हि सांत न आवै ॥ मा या पाग गयो भार पछिन छि
न ॥ ते रंभी नर हर सिमरन बिन ॥ तां ते प्रजा तन ड ग्रब न न धर ॥ गन

नहिपावहुबिनसिमरनहरि ॥ जिनमषउत्यक्तिपोषहरमांही ॥
मायापाप्योमारननाही ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ मायाकरताकालहैसोभग
मनकादास ॥ श्रवचलपगियासीसलिहजिनकेतानप्रगास ॥ ९९
मैअनउवाच ॥ चौपई ॥ सुनहोजननमेआइषबीपन ॥ यहबचकहे
फलनिगमनप्रत ॥ ओगुरुभजहिसदासविधाना ॥ हमतिनभग
तनहाथबिकाना ॥ चंद्रहासभाषेबचऐसें ॥ सकलप्रजाकीनीति
नमैसें ॥ सभकोंग्यानमतानदृढायो ॥ नारायणकोभजनबतायो ॥
साधसंगकीयहबडिआई ॥ नारहिकीरभंगकीमाई ॥ प्रजालोक
ग्रालमरतभए ॥ उपज्योब्रह्मग्यानभ्रमगए ॥ १०० ॥ दोहा ॥ सकल
प्रजाकोंहरिभगतनमनदृढायोग्यान ॥ आपसारषेकरलिपसभसिम
रहिभगवान ॥ १ ॥ नारदउवाच ॥ चौपई ॥ नारदकहैकपापारषम
न ॥ चंद्रहासमंत्रीगुलारउन ॥ कनोबिनोदसविवकोनामा ॥ महा
प्रबीनधर्मकोधामा ॥ चंद्रहासबचकहेसविवप्रति ॥ यहकारज
कीजैमनहरषत ॥ इहुबुदकीओरसिधावहु ॥ बरसाणीभेटपठ्ठ
यावहु ॥ जोककुदेयापिलाहमासा ॥ भेटदीजियेतिसहिप्रकारा ॥
मानीचहियेग्रासानाना ॥ जातेहोइसकलकुसलाता ॥ २ ॥ सोरठा ॥
भेटकरीषीलाहिलिषेरकासीयामजे ॥ मनमहिउरपोनाहिनेस
भपठईहरिभगत ॥ २ ॥ चौपई ॥ कंचनकलससजटतहीरामन ॥ सिंच
सुगंधभरेसभग्रनगन ॥ म्रगमदग्राहितवासग्रपारा ॥ कंचनरत

जै॰ अ॰ न अनेक प्रकारा॥ भूषन बसन सकर भरलीने॥ गज रथ अश्व सुकार
भा॰ भसंग कीने॥ दीने संग अनेक पदाता॥ चढो विदा ह्वै सचिव प्रभाता॥
३११ इंद्रबुद्धि भूपन आन हां॥ आपन भयो सचिव पुर महां॥ जाइ निवास
बाग मह कीनो॥ प्रथम मेलन मंजन करलीनो॥ ७॥ दोहा॥ सालिग्रा
म सेवा करी हरि सिमरन चितदीन॥ तिलक भाल उर माल सज चक्र
चिह्न तन कीन॥ ५॥ चौपई॥ बरनो टक लीनो हरषत मन॥ पहरे बस
न सुगंध सीचतन॥ तम संबंर नस भअंग लगायो॥ वैस्नव भेष वषिव
नायो॥ चलो कुदिन पुर किपो प्रवेसा॥ भोजापन जहां द्वार नरेसा॥
भीतर पठयो द्वारपाल कों॥ समाचार कहि हरपी पाल कों॥ द्वार क
रपकों मार सनायो॥ चंद्रहास रूप सचिव पठायो॥ चंद्रहास ज्ञानह
कुलिंद सुवन॥ मंत्री पको भेद वरसे चवन॥ ८॥ दोहा॥ द्वारपाल के वच
न सुन आता की नी रार॥ चंद्रहास के सचिव कों भीतर लियो बुलार॥ २
चौपई॥ वेगगयो भीतर विनोट मन व॥ नृपकों कियो प्रणाम प्रथम नव
निरष सचिव कों नृपको प्रेम न॥ चिह्न चक्र वैसनवी भेष तन॥ लच्छन हे
मन लकके मैसें॥ भेद्य धारयो यो यह मैसें॥ भेस धर तन नरसन सखे जि
ह॥ सुधगं गोरक सुंग चिह्न निह॥ ब रेसग न कहि सुरूप हिआयो॥ इं
द्रबुद्धि मन क्रोध बढ़ायो॥ नव नृप उमम भेट विहारी॥ सुदिन भयो
जिय तैं दिसहारी॥ ९॥ दोहा॥ भेर निरष अव रज भयो वलत अनेक प्र
कार॥ इंद्रबुद्धि विसमै महां मन मह करत विचार॥ ११॥ चौपई॥ इंद्र

तुह्य मन मांहि विचारत ॥ इतनी भेद दई कुलिंद कंत ॥ वीसगांउ कों
मुकंड सदीने ॥ ऐसे रतन कहां लै लीने ॥ कंवरन इतनी भेद पठाई ॥ य
ह संपदा कहां सों पाई ॥ भयो कुलिंद वडा भूपाला ॥ मो तैं पठई भेट विसा
ला ॥ इह सुत हृदय पइह पापमन ॥ देषन सकल अंबर की संपन ॥ इह न
की सुधाउ ऐसे मन ॥ उदे अंबर की देषन रतनन ॥ ५ ॥ दो हा ॥ भेट देष के
इह सुत पइप मोहि येँ विरोध ॥ धन वहुता भो दाम सउ जकह इह नांन
विनोद ॥ ६ ॥ विरोद उवाच ॥ चौपई ॥ कहै विनोद इह इस सुदि तन ॥ रूप कु
लिंद को पुत्र महां गुन ॥ चंद्रहास ताकौ वर नामा ॥ अति ग्रताप रत सूर से
ग्रामा ॥ गांउ मवासमार निहलीने ॥ लोग सकल अपने वस कीने ॥ भेट
दई तिन विविध प्रकार ॥ ते सभ पठई नीत महा राज ॥ अपने रहे हैं क
छु न राषी ॥ चंद्रहास धन को नहि कांषी ॥ लीनी भेट सुइ इस सुदि सभ
मन महि राष्यो इह भाउ तव ॥ ७ ॥ दो हा ॥ भूपत कह्यौ विनोद कों आ
इ कर कछु विश्राम ॥ हीनी ठौर विचार कै इत तो तु कीनो धाम ॥ ८ ॥ मै ग्रंथ उ
वाच ॥ चौपई ॥ भूपत रसोईदार बुलायो ॥ षट रस भोजन सिद्ध करायो ॥
पाक रसोई सिद्ध भई जब ॥ रूप विनोद कों हूत पठ्यो तव ॥ होत दिवस
न हां एकादसि ब्रत ॥ इह सुदि धारत नन पापमत ॥ हूत विनोद सहु दिग ज
स गयो ॥ हाथ जोर के ठाढा भयो ॥ वचन विचार कहै विनोद सुन ॥ भोजन
करउ बुलावत छिन पन ॥ मंत्री कह्यो हूत सुन लीजै ॥ हम राउ मरन
प कों दीजै ॥ ९ ॥ दो हा ॥ हूत जाइ फिर यह वचन कहो आपने राज ॥ ह

ज॰ अ॰ मभोजननलेवैनहीव्रतरकादसीआज॥२॥चौपई॥ वंदहासहमरा
भा॰ भूपतवर॥मनवचक्रमनसेवकहैहर॥आजदिवसताकेव्रीतम
३१२ भनि॥निराहारउपवासकरतव्रत॥एकादसीमहाव्रतकरहीं॥देत
परंपरनिगमउचरहीं॥हमरेनृपकोइकसोग्रामा॥रहदिनअगनअ
रननहिंधामा॥आजदिवससिमरनभगवाना॥प्रजाभईसभआनमं\
वाना॥वंदहासहरिभगतनरेसा॥सभहीव्रतमतानउपदेसा॥२०॥दो
हा॥हमनहिलेवहिआजदिनभोजननतुमरेगेह॥आनरसोईकरहिंगे
कहोनृपनसोंएह॥२१॥चौपई॥आजदिवसजोउलेतअहारा॥तेनरभो
गहिनरकअपारा॥हमसमानभोजनवहमानहु॥धानपुष्टहिमअ\
निउषमानहु॥मोंतेंहोतसंगदुष्टनको॥महाकलेसहोनहैमनको॥ते
नरपावनघोरनरकगत॥जनममरनदुषलहतअष्टमत॥दुष्टबुद्धि
नृपसोंकहिजाई॥मोहमतमकोंकथासुनाई॥उनरलेनहतफिरगयो
सभहमोंननृपकोंकहिदयो॥२०॥सैमनउवाच॥दोहा॥तैसुनकहिंस
नहोनृपनहलकहोवचमार॥जोविनोदभाषेवचनकहेसकलअगरा
र॥२२॥चौपई॥हनवचननृपसनेश्रवनजव॥भोजनकियोहेंदंको
धानव॥दुष्टबुद्धिपुषवचनउचारे॥यहहकुलिहपादासहमारे॥अवउ
नअपनामतनउहरायो॥मंत्रीकोअरुदिगहिपठायो॥गरवकरनअ\
तिमत्रिवमूदमन॥भोजनखाननअरुजयहहहरषन॥यहनोराजजोग
नहिवाना॥बहुरकरनकुलिंदकोनाना॥किपअपनेवसगामसवासा

622

नेसभक्तनेहमारेदासा॥ ४४॥ दो॰ ॥ सुनकलिंदकासुरूकवहिदेषो\
सुमोनकान॥ नेकहृनेउनपनभपामहासुरवलवान॥ ४४॥ चौ॰ ई॥ ने
भोगनहैंइनहमारा॥ लेऊछीनसकलइकवारा॥ आनाकरीविनोदउ
लायो॥ विराकीङनिजदासपठायो॥ तापाछेनृपक्रोधवढ्योमन॥ मंत्रि
बुलायोकुउधिसुमनछिन॥ ताकोसकलसनोंतसुनायो॥ पुनधैसेंव
चकहिसमझायो॥ सुनहुसविवकलिंदसुजदासा॥ ताकेउरहइकसुन
हिप्रकासा॥ ४५॥ दो॰ ॥ वेदहासनिहनामहै पनकाकरैविनास॥ जि
नकामंत्रीभेदलेश्रापामसथलिजास॥ ४६॥ चौ॰ ई॥ सुनकुलिंदगहकै
संभयो॥ इननाइपकहांनेलयो॥ पुरुकोंभेदपवीइननीजिन॥ अधि\
कहोइगीलछभवनलिन॥ उनतेंलेउसकलसंपनहरि॥ सरवसलेऊं
दीनहंउकरि॥ पहकुलिंदपादासहपारा॥ संतनइलीनभौनसंझारा॥
इनपहवालकहांनेलिपा॥ राषोभवननामनिजकिपा॥ कहिकुउहकै
मेश्रवकीजै॥ हृदेविचारमंत्रकहिदीजै॥ ४७॥ कुवुइगवा॥ दो॰ ॥ क\
हिकुउहभूपनसुनोपुरुषौहसनासुभाउ॥ सिसुकुलिंदपायोकहूंसुन
कीयोप्रगदाइ॥ ४८॥ चौ॰ ई॥ नृपकुलिंदप्रतिपाल्पावालक॥ दियोनिल
ककीनोभूपालक॥ वीसगाउकाराजदियोजिन॥ वडउरइकासीग्राम\
लिपेलिन॥ नमप्रतिकहइनमवासकिएवस॥ नेसभनुमरेग्रामलिए
घस॥ वलकरलूहेग्रामतुमारे॥ सोइभेदपठईतुमहारे॥ उननेंक\
नकलछवकपाई॥ अपनीकरतुमढिगहिपठाई॥ सुनकुलिंदस्र

623

रा॰ प्र॰ निवली कहावै ॥ जेन वान निनह हरिगुन गावै ॥ ४५ ॥ दो॰ ॥ कुतुपक
भा॰ हैन्पड छत्र धहम यौंतु निपोकान ॥ बालकन नमध हरषगनरता
२११ स्तुवलवान ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ आज्ञाकारी धरन ग्रकासा ॥ सपनगवस
कीनो जिमरासा ॥ निसदिन कीर्तन कथा हि धेरन ॥ हरिसिमरन हित
धर्म विमल मन ॥ जाके उर महि सकल नारि नर ॥ ब्रत इकादसी धारन
हठकर ॥ जो नृम भेद न लेन हरष कर ॥ जाही किन चढ थाव न लमप
र ॥ बरन धरम पुर मांहि वहायो ॥ सकल प्रजा कों हरिसिमरायो ॥ बल
नवेदम गगो ब्राह्मण हित ॥ सत्रु मित्र जिह सम इंद्रीजित ॥ ४७ ॥ दो॰ ॥
महापराक्रम सूरमा रणाविन नजेन क्रोध ॥ जाके वलसम अगनम
हि धवरन ही को जोध ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ इछबुद्ध मंत्री पदवचन सुन ॥ उपजो
क्रोध सी सकर को धन ॥ बहुरस विब्रन लिवचन उचारे ॥ कहो मंत्रन
मेन वह मारे ॥ गाढ हमारे उनह रलीने ॥ सबकों दंड लेनवल कीने ॥ जा
सों कहो कवन विध कीजै ॥ हृदै विचार सम कहदीजै ॥ जिह विध मोहि
राजथिर होई ॥ मंत्री मंत्र बलावह सोई ॥ बचसुन कुबुध विचार कीज्ञम
न ॥ इछबुद्धि सों कहन रहवचन ॥ ४९ ॥ जैम नउवा ॥ दोहा ॥ जैसुनक
हि सुन होन रपन मन वचक्रम करतार ॥ इछबुद्धि कों कुबुध पद हवच
न कहे हुपगतार ॥ ५० ॥ चौपाई ॥ कहे कुबुद्ध सुन इन्द्र पकाना ॥ मो मनपह
विचार वहु ठाना ॥ सेना साज चढ तनल काला ॥ पकर रहि जारकु लिंद
धु वाला ॥ सुनइ समेन बांध कै लीजै ॥ सर वस हरअ पने वस कीजै

इछनुकुचवदेइनगारा॥ चतुरंगनिसेनादलभारा॥ आनकूकहुर
करतइछमन॥ महाक्रोधचितमहिंपापरत॥ इछनुडिकाढनम्र\
मिरामा॥ मदनसिंहताकोवरनामा॥२३॥ दोहरा॥ मदनसिंहकोपित
कहोलमपुरकरइनिवास॥ हमकुलिंदकोतनसहतवोधलाइतम
पास॥२४॥ चौपई॥ विषयानामसतनारूपकेठर॥ जोवनवंतरूपसुंदर
वर॥ गवनकरतपितकोंदेखोजव॥ चलआईकेन्यापितढिगतव॥\
ववनकहेइछिमाहतनामा॥ तुमसोंकहोंजपारपवाना॥ आसारी
नेमोहिकरोपत॥ तुमनभयोभूपतमनहरषत॥ मदनसिंहकोभूप
दुलायो॥ कहिहलांनतनकोंसमझायो॥ मनवांछतविषयावररीजे
पाकारजकोविलमनकीजे॥२५॥ दोहरा॥ जोवरकंन्याउषकहेसोरी
नेभरतार॥ विलमनकीजेमदनछिनकीजेवेदव्यचार॥२६॥ चौपई॥ जो
कछुहमपठवोंग्राताकर॥ तेसंकीजेतनहुप्रववनधर॥ सोसमतलचाला
पितुमाने॥ पितकेवचनवेदपरमाने॥ यहकहिचलोवजेववजाई॥
सातदिवसमगचलोरिसाई॥ पहुच्योभूमीचंद्रहासकी॥ विसुभगत
आनमप्रकासकी॥ चंदनपुरुपहुच्योततकाला॥ सुनियोचंद्रहासभु
पाला॥ सजसेनासनमुषउठधायो॥ पितासमेतमिलनकोंआयो॥\
२७॥ दोहरा॥ चंद्रहासनृपपितसहितमिलोउछकोंआर॥ बहुप्रकारस
ग्याकरीभेटसपाईराइ॥२८॥ जैमनउदीव॥ चौपई॥ जैसुतनकेहैतनहुभ
पनवर॥ चंद्रहासतेअसीभगनहुर॥ काहूसोंमनरोसनकरई॥ सतुमि

म॰ पु॰ ३मपनाजियधरई॥ आइमिलोसेनालियेंसंगा॥ पिनासहुलहुरष
भा॰ नस्रंगअंगा॥ उमगउमगविलहरिपुरनगावल॥ रामकृस्नविनऋवर
३१८ नभाषन॥ इहवुद्धत्रपरजमनभयो॥ निरषवालकोंसुषदुरगयो॥ चं
द्रहासकीनिरषमहाछव॥ वदनसरदससिअंगहविरसव॥ ३९॥ दो
हा॥ चंद्रहासकोंदेषिकैचिंतावटीभुवाल॥ मोहममारावनविषैवही
देषियेवाल॥ ४०॥ चौपई॥ इहत्रुदस्रुपवचनउचारे॥ सुनकुलिंदहम
दासतुमारे॥ यहवालकहमकवहुनदेष्यो॥ सुम्योनश्रवननैननविषे
यो॥ यहसिसुकवनठौरतमलीनो॥ सुनकरराजसिंहासनदीनो॥
कहोसुनांमकवनयहवालक॥ जिहकोंतमकीनोभूपालक॥ सांचक
होनिपकपटनराषहु॥ सत्यवचनमुषआगेभाषहु॥ मोचाहोअपनी
कुसलाता॥ हमसोंकहोनपापरपवाता॥ ४१॥ दोहा॥ पापरूपसुनइकुलिं
दकोंप्रक्षोवलसुजान॥ कस्योकुलिंदहसांनसभपापीकेविदमान॥ ४२
कुलिंदउवाच॥ चौपई॥ कहैकुलिंदसुनहुभूपालक॥ हमवीरजतेंनभयो
नवालक॥ एकदिनहमअषेरहतगयो॥ जाइसघनवनआपनभयो॥ का
लीम्रगपाछेहमधायो॥ सोजनचारनहांचलआयो॥ पुनम्रगआगेचल्यो
महांवन॥ धुनहहिदिनामसुनीमुरुष्ववचनन॥ तहीओररषहांकोमैंनव॥ दे
ष्योपहवालकअररधनछव॥ पसुपंछीवादेकरमोरे॥ अहिफणछायररहे
चहुओरे॥ ४३॥ दोहा॥ पुरुषसुनांनप्रक्षोनवहिवालकभयोकपाल॥ स
वहसांनपोसोंकह्योसोसुरुकहोंभुवाल॥ ४४॥ चौपई॥ वालकतेंप्रक्षीह

मचाला॥ कवन भाग लम को पिहमाला॥ गहवर वन गा पोव मके सं
कहोहतांत सकल गुरु तेसें॥ तन बाल कवोलोन न मकाला॥ गुरु कोंव
नसाए वंगला॥ नासक रन कोंर पत पवायो॥ नेह मछाउ गए तम रा
यो॥ घरसंग्रुरि गुरु चरन विसाला॥ लईकार रकहित भूपाला॥ गुरु
सिहतंहर रूप निहारा॥ रचापरी मन ज्ञान विचारा॥ ५५॥ दो॰॥ रघ
परलिया चरार गुरु मन महि कियो विचार॥ मांगत पाह मगुरु निज सो
गुरु दियो गुरार॥ ५६॥ चौ॰॥ गुरु मन महि यह वचउ ठहरायो॥ तनक
रश्रपने गृह लेआयो॥ मौंजी वंधन करन वेधविध॥ पाठ पढाइ करी वि
धा सिध॥ नवमें सिहगुर कियो प्रवेसा॥ सभ कों दियो निगम उपदेसा॥ उरम
जिन गुरुघन कीहोत उछमन॥ सिह प्रकार मन भईपरमरत॥ उरम
हि भारग धर्म चलायो॥ विलभगत घरतान टकायो॥ गायत्री संध्याइस
नाना॥ सभ गुरु करत प्रम ग्रहरराना॥ ५७॥ दो॰॥ कोउ नजानत नगर
गुरु प्रकारसीउपास॥ सकल करत निरहार व्रत वाढोधर्म प्रकास॥
५८॥ चौ॰॥ व्रत रकारसी करत नारिनर॥ अगन प्रकासन करत कोउ
घर॥ धरन अश्व गगन तन देन श्रनाना॥ वरषाकरत सुदिन समराना॥ नर
वर लागे देन अमित फल॥ नदी भरवही विमल सुधाजल॥ गांइ न दूध
हेनवछलागी॥ पुरजन सव बालक अनुरागी॥ वरनन सकत जीभ वा
लक गुन॥ सम वरनी रंहीजी नीपुन॥ परम पुनीत साधु यह बालक
मो गुरु कहियो राज भूपालक॥ ५९॥ दो॰॥ यह जोहमरा हतनपन

ज्ञ॰ श्री॰ सोहै तुम पास सम ॥ कीजै कृपा अनंद सों पुर महि करहु निवास ॥ ५१ ॥ जैम
भा॰ नइश्राव ॥ चौपई ॥ जै मुनि कहै सुनहु रघुवीपन ॥ वंइ हांस की कथा विमल
२१५ श्रन ॥ रघुकुल रिकेमृवन सुने जव ॥ इहवु दिनिपसोचवहोनग ॥ वा
लक वही राइजिय जाम्यो ॥ मन वच क्रम सह रूप हिचाम्यो ॥ रघुवन रिपिन के
सम्म प्रमाने ॥ हरिजन के वेश्रसनन वषाने ॥ हरन हो नवचन रिषि यन के ॥
रर नन किये कोर ननननन के ॥ श्रवसिसु भयो राजश्रपकारी ॥ सुनि पल
महां सूरवलभारी ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ नास करन वन सुरूप जो नव यह वाल
क हीन ॥ भोर परक सौ ग्राम भ्रव हार सव वर्ष प्रवीन ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ रकस
म सुरूप हम रन इ पाना ॥ हम रे वीर अनैं ग्रग राना ॥ ग्रेमी ग्रयुनाभ ईन
नाको ॥ सुरूप सुनत सभ न गजान न नाको ॥ ना का सुषहु मरेछो नाही ॥ क
रन विचार इछ मन मांही ॥ सुन नैवहु कुलिं रसुषपायो ॥ जघपि सिस
हि विरानाम्यो ॥ वन नैग हलायो रहु वालक ॥ दीनो निलकक सोम
पालक ॥ मन महि करन विचार इहमन ॥ सोवि धकरों होइ वालक हन
पइ ॥ नार रइ ओंच ॥ दोहा ॥ नार र पार पसों क है सुन मुर्ह ने रे कान ॥ वंर
हाम कों रे षके न पमन विंलामान ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ इह वुह कीनो विचा
रमन ॥ पह वालक कौं नास करों नन ॥ पिनासमेन करों इनघाला ॥ पि
रह मराज हो रकुसलाला ॥ सुन विचार कीनो मन मांही ॥ इह अवसर
मारन नहि नांही ॥ श्रव रन के संग से न अपारा ॥ हम तैं श्रपकच मरर
लभारा ॥ जो हम रन कों मार लेक अव ॥ पर न इंरह न होन चपसव ॥ वि

अभावप्रभुषकपरहरेश्रत ॥ वचनकहेंरूपहंसवालकप्रत ॥ ५४ ॥ दोहरा
इष्टबुद्धहंसकैकहीचंद्रहाससोंबात ॥ अवकीजैविसरामनिजभवन
आइकैतात ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ इष्टबुद्धिकहिहैहंससैंऐसें ॥ अंधकूपरमाकाम
नजैसें ॥ तापरजोअहइष्टपगधरई ॥ परेकूपतहनिहचेंमरई ॥ अंतरअ
ग्रसीतप्रभुषभाषे ॥ बोलेपिहकपरजियराषे ॥ मिसरीलेपनकरनग
रलजिम ॥ अंतहकरनइष्टजानऊतनिम ॥ हसिकेंश्रीसाकरीमगनप्रत
अंतरभयोविकारइष्टमन ॥ चंद्रहाससोंवैरभाडचित ॥ अंतरकपट
करतवाहरहित ॥ ५६ ॥ सोरठा ॥ जैप्रभुनकहिमनहोत्पतभगनगयो
निजधाम ॥ हरषसोगमनमैंनकछुगुनगावतवनसाम ॥ ५७ ॥ इति
श्री भा१षपठिणे अषसे पञ्चाया ॥ कविरहकनपरनभपोबोवअध्या
उप्रमान ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ जैप्रभुनकहैंमनइष्टपवीपत ॥ नारइकपाकइ
तअर्जुनप्रत ॥ सुनिरूपवचसिसुधामगयोजव ॥ पितासहइतजग
मगनमहांछव ॥ पीछेरूपतकछुइष्टबुलायो ॥ ताकोसकलहलांत
सुनायो ॥ सुनइकछुइष्टबहीघइवालक ॥ जोरिषकपोहोइभूपाल
क ॥ नवप्रभुरुहाघरिपोचंद्रलन ॥ नासकरनलेगएसहनवन ॥ श्री
सामेरक्षाइवनगए ॥ भरनवषनरिषिनकेभये ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥ भयोच
पतसोंगाइकायहवालकवलवान ॥ यहसकेकोनिरषइषलागत
हैतनवान ॥ १ ॥ चौपई ॥ अवमैंहनीरिषिनसोंवाता ॥ वनमैंपकोक
रनकोंकाना ॥ सुफहीनोचंद्रलनहाथा ॥ काहदूआरमनुकोमाषा

म॰ग्रं॰ आतामेरद्वारवनआए॥पगकीकोरअंगुरीलाए॥अववबहसतुदेष
भा॰ दुषलागे॥धरतोनमाइधीरसुबभागे॥मासकरनकोगुरुपदपोनव॥
३१९ दीनहोलवालकअधीननव॥अवअनिवलीभयोइहवालक॥आमव\
कसौकोभपालक॥३॥दो॰हरा॥आवाभाजनहोइसबकीजेछेदअनेक॥
जवपरपकवासनभयाकरसकहीनहिपक॥४॥चौ॰ई॥मडप्रथमछे
दिपैथैसें॥उपजनहीहनकरियेजैसें॥पीछेपुनछेघोनहिजाई॥कउन
पातपरपककीजाई॥जैसेंउदेहोइविषनरवर॥लीजेप्रथमडपाउसु
भगकर॥नउवांपेनवनिहवलहोई॥नाहिउपाइसकैनहिकोई॥नाको
तोरसकैनडरदवल॥जइपपालनागीभोअविचल॥सुनहुकुत्तुपवा
लकभोजैसें॥मंत्रवताउहोइहनकैसें॥५॥दो॰हरा॥चंडालहुपरपंचकर\
वालककलोनद्वान॥नीचनआतामानंहीनपकैसेंकुसलान॥६॥चौ॰ई
नीचनआतामानतहैंतन॥लोहमकैसंभएकहांप्रन॥मोचंडालकरत
सिखवाना॥लोकनवननकउनपहवाना॥जवलगनासहोइनहिवा\
लक॥तवलगहमकैसोभपालक॥मंत्रवताउकुत्तुधगुरुसोई॥जिह\
प्रकारवालकहनहोई॥हबुनहोतमपेपहवाना॥वालकअपहोन
कुसलाना॥अपनेमनमहिकरोविचारा॥नेपिरहैहैरानहमारा॥
७॥दो॰हरा॥कुतुदउवाच॥कहैहकुत्तुपरानासुनहुसोकनिवारहुचित॥
सितपववहिजमपापमकांप्रनहोइनमित्र॥८॥चौ॰ई॥सिखपढा
इमंत्रसुनलीजै॥नासकरहिचिंतानहिकीजै॥यहकुलिदभपन\

तुम किया ॥ निस दिन षान न ल्या रा दियो ॥ ताका सुन नृप मई न न ज्वाला
तुम कों सोइ व ता ऊं ज्वाला ॥ पत्री लिष दीजै बालक कर ॥ व चन व षान इ
पित्र भाउ धर ॥ मदन सिंह कों लिषि ये मै सें ॥ जो हम पंच कहों न पलै सें ॥ ए
दोहरा ॥ मदन सिंह कों कहइ इरम ताम करा इर हवाल ॥ जो यह श्रम हम
किए तो तुम पिर भूपाल ॥ ४ ॥ चौपई ॥ मदन सिंह कों लिषइ यह वचन ॥ प
हसइ हनक रिये मन छिन ॥ ताप के कुलि रंग हली जै ॥ बांध हाथ दल न के
दीजै ॥ सुन के पुपे होन निरवल नन ॥ बांध लेहि न व सो कन न जइ मन ॥ न
पकों मंत्र कुवइ वतायो ॥ सुन नरिंद जिय पुलिस षपायो ॥ लिषी पत्र
का मदन सिंह पति ॥ यह कारज कीजै मन हरषति ॥ सुन सम दन आता पि
तुमावै ॥ पिता वचन नहि मेटन पावै ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ सबल सत्रु हम ता पही\
पत्री लापो जोइ ॥ पारबती पति कंव जो या कों दीजै सोइ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ हमनै
श्रुधक बली यह मानइ ॥ मन बच क्रम मम मन पहिचानइ ॥ हम मेरे कों उमार स
भलीवै ॥ प्रजा लोक अपने वस कीने ॥ हम ता राज होइ अविचल नव ॥ ना
सकराअं पह सइलव ॥ न न छिन पा बालक विषदीजै ॥ वेग हमन करइ वि
लमन कीजै ॥ छात्र इन हीं करइ रिपु ज्वाला ॥ सम मान लीजै पुरुषाला ॥ लि
षपत्री हरि भगत कुलापो ॥ हरिगुन गावत तिस बल आयो ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ इ
धुगुद्धि षल बचक है है यह पतिया लेजाइ ॥ मदन सिंह कर दीनि ये समा
वार पुन ल्याउ ॥ ८ ॥ चौपई ॥ क सो भगत सों वैर भाउ षल ॥ तुषमी गावो ल
नयंत रमन ॥ बालक कोजस करन भुपाला ॥ तुम सिसु भगत तन न मय गो

ज०श्री पाला ॥ यह कारज हम रावन कीजै ॥ यह पत्रिका मदन कों दीजै ॥ भग
भा० वन कर उमुद्रिका पठियां ॥ भाषउ जारकुसल की बतियां ॥ पाती महि
३१७ यह लिषो नरेसा ॥ मदनसिंह कों यह उपदेसा ॥ यह सब गुन रूप विसा
ला ॥ अति बलवान भगवन्त लाला ॥ ५ ॥ दो० ॥ ध्यान कीजै सत्रु पर वैर
वचन परमान ॥ इस अरि कों नहि छांडि यें विषधारी जै हान ॥ ८ ॥ चौ० ॥
जो कछु उष ह्रदै महि आयो ॥ लिषो सकल अपने मन भायो ॥ बारंबार
लिषी यह बाता ॥ विषरी जै कीजै यह घाता ॥ रथ तें उतरन न कालमं गायो
अथ जोन रथ पर वैठायो ॥ चंदन रथ मणि जुत कनक षचित बर ॥ ता पर वै
ठो जुरित भगवन्त हर ॥ रथ मन वेग पवन तें आगर ॥ मग मग गान कवि जो
न उजागर ॥ पत्री दई भगवन्त के हाथा ॥ है अनुचर री नेन्द पसाथा ॥ ५ ॥ दो०
रा ॥ कर प्रणाम पतियां लई हरष्यो भगवन्त गुपाल ॥ आज्ञा लीनी राइ तें च
लन भयो तिन काल ॥ ८ ॥ चौ० ॥ चंद हास सेवक भगवाना ॥ पाउं मित्र जि
ह एक समाना ॥ पत्री लै मलकु पर धारी ॥ मन महि पकरे ककि रिरधारी ॥ अ
पने मान पिता पहि गयो ॥ हाथ जोर के ठाढा भयो ॥ इष्ट बुद्धि गुरु कवि जि
उ रथ वचन ॥ आसा दे हमो हि मन हरषन ॥ ल्याई साज आरती माला ॥ कुंद
घ कंकुम अछत कुसलाला ॥ दधि गोरोचन रजनी श्रीफल ॥ कपरी पत्र आर
ती बनी कल ॥ ९ ॥ दो० ॥ माता रई थिरमी सब कुमलक च म्योलाल ॥ जहां जा
उ जै कारज महा होइ तुव कुसलात ॥ १० ॥ चौ० ॥ पुर के लोक सकल मिल आ
ए ॥ चिंत मानते बचन सुनाए ॥ लागे कहन परसपर बाता ॥ या कारन नाहि

नकुसलाला॥ पहजोपानीपवनभगलकर॥ दुष्टमंत्रकोउपकोहियं
धर॥ सभलोगनमिलदईअसीसा॥ जीवहुचंद्रहाससुगवीसा॥ पुनउ\
रकेन्नलपनमिलआए॥ देअसीसहुभवचनसुनाए॥ सदासहाइरामइस
बालक॥ जीतनसकैकोउभूपालक॥ २१॥ दो॰॥ कुलश्रीहतश्रापवद्धन
रानरीनतिनजोग॥ श्रीहनकहैकुलिंदकोदिदेकरइनहिसोग॥ २२॥ चौ
पई॥ मेधावतीकुलिंदकीनारी॥ लागेचंद्रहासमहतारी॥ लाईमेलसक
लपुरदारा॥ गावतभावतमंगलचारा॥ मानोंचलोविवाहकरनसुत॥
गानकरतमिलसभनारिनसुत॥ सुकनाहारतिथनकोंदीने॥ देअ
सीसउनहचकरलीने॥ कलोप्रणाममातपितगुरुसभ॥ हांकहिचोर
पचंद्रहासलव॥ मेधावतिपुनवचनवखाना॥ सुनकुलिंदवचनभ\
गतभगवाना॥ २३॥ दो॰॥ अंगअंगरक्षककहरीहुलसलवसारीगान॥ र
क्षकतुमरेवरनकेप्रथमेविधुवननाम॥ २४॥ चौपई॥ श्रीवारक्षकेनाम
गुल्यारा॥ भुजाजनाईनपीगमुरारा॥ गातसापरक्षककहरिदेवा॥ करतस
कलजगताकीसेवा॥ रक्षवक्षस्थलकरेरमोदर॥ रक्षककपरसमनाभल
मरेउर॥ रक्षानाभकरेपदमावत॥ हलपाटवपुजगयापधन॥ नेत्रशु
वननासकालस्यारी॥ रक्षककसरारामहितकारी॥ रक्षात्वमतनकरैउ
पाला॥ रक्षककसरातमहिनंदलाला॥ २५॥ दो॰॥ मानामेधावतीपुनव
वनकहेप्रगराइ॥ सुतसुनहोजवप्रथमतमचवजीतेसिपुआइ॥ २६
चौपई॥ तवरिपुजीतलक्षवक्षस्यानी॥ श्रवलावक्षगेतिपमनभानी॥ मा

ज॰अ॰ नकहैसतनमनवचक्रमकर॥सावद्दगेलमनारथाहदंर॥कुलवंती
भा॰ गुनरूपअपारा॥मानडगेहुंदरवरनारा॥आपसारषीप्रियासीलछन
३१८ थाहोगेप्रैसीच्चवमीसन॥मनअपनेमामोनिहचेंसुफ॥मानलेइसुन
सम्मकहोंलुफ॥वहुअसीसदेमानगईजव॥चंदहासवदचलोनहोन
व॥२७॥दो॰॥चंदनरथजोनरपरियोनिहचेगोचदवाल॥रामकलको
ध्यानधररथहांकोनलकाल॥२८॥चौ॰॥पवनवेगरथचालतुरंगा॥छा
इरिधेदरषनअंगअंगा॥नगरगांउदेषनसभजावे॥वनमलाउनिरष
नसुषपावे॥वसोमाइदेषनपुरसगरे॥कौनकहोनजंहीमगडगरे॥का
मनिरेषहिचंदहासजव॥मह्रिलहोहिनिरषवालकछव॥कामरू
पवालकअभिरामा॥निरषनभलमाइसुधपामा॥पुरुकेपुरुषनार
नुरआवहि॥चंदहासउरअकुपहिरावहि॥२९॥दो॰॥अद्दसुगंधफु
लेलइकपानभेटलेजांहि॥एकवेननीकारभगनलेजावहिगहमांहि॥
३॰॥चौपई॥इकल्यावहिफलविविधप्रकारा॥इकपहरावहिमोतिन
हारा॥इकनिधल्यावहिमुकटषचितमन॥भगनभाउवांछहिहरषत
मन॥जोभषनपहरावभगननन॥सोभअधकपावहिसोअभरन॥इ
कलिषवलसकुलेभलियावहि॥मुदितभगनकेतनपहरावहि॥व
लानारमारगरथआगे॥आहिनारिनरपाछेलागे॥नारआइकेसंग
लगावहि॥निरषभगननसुषसभसुषपावहि॥३१॥दो॰॥पालितग्रहन
हिनलेचलेमैसंकोउवरात॥मैसंनरनारीमुदितगानकरतसंगजात

२४॥ चौपई॥ आगे चले जांहि कोऊ पाछे॥ निरषत सषा वहि मन वांछे
सोभा निरषत पलन हि पावहि॥ मगन भए लागे संग जावहि॥ आगे
आइ इह सरो ग्रामा॥ जो वह फिर जैहैं निज धामा॥ सभ पऊ वाइ भगत को
जैसें॥ हरषत चलहि बराती जैसें॥ बिछुरन सकहि जाइ संग लागे॥ नि
रष भगत छुवि मन अनुरागे॥ सभ नर नार हुलार षभए॥ दरस परसस
भ अघ दूर गए॥ २५॥ जै मनउबीच॥ दो॥ हन राजा जे पुन कहै मगन भ
ए मन मांहि॥ कवि रहहु कन जो हर भगतन माको भय कहु नाहि॥ २६॥
चौपई॥ भगतन के सहाइ जदुनाथा॥ कहां करै सत्रु निहसाथा॥ भगत
न को अग्रताप हर करई॥ सारथ सिद्ध करै दुष हरई॥ मग महिं जो हरि
भगत निहारे॥ लैरज चरन सीस पर धारे॥ अंग अंग वालक अनंग छुव॥
देषत वस हो वैतियन रस व॥ हरि दिसि मरन निन करत भगत हरि॥ प्रापत
भयो दुहुं रूप के पुर॥ चहूं दिसि नगर वाग वन फूले॥ गुंज करत मधुकर
अन फूले॥ २७॥ सो॥ सभग सरोवर जल भरे फल दल फूल अनेक॥ दि
रम ध्याइ हन देषि कै वालक की फि विवेक॥ २८॥ चौपई॥ सुंदर गौर निरष
अरभुत छुव॥ रिदे विचारयो चंद हास नव॥ ऐसी ठौर करौ विश्रामा॥ जो
लगतेज मिटै अति श्रामा॥ रथ गाटा की नो हारे पर॥ तिसी ठौर वाके रोऊ
अनुचर॥ भीन रंग यो भगत मन हरषत॥ देष्यो एक तलाउ मध्य वन
प्रफुलत कमल तलाउ इक राजत॥ अरुन हुसाम सेत छुव छाजत॥ नर
वर नमित फलन के भारा॥ पत्र पुहुप फल विविध प्रकारा॥ २९॥ दो॥ रा

ग॰प्र॰ भा॰ ३१९ सुभगसरोवरहंसपिकचात्रकमोरचकोर॥सबहकरतहरषतहियें\
गुंजनअलिकलघोर॥३९॥मा॰रद्वद्धाच॥सोरठा॥भगतकियेइसभात
पारषकोंनारदकहत॥संतोषेभगवानषटरसभोजनफूलफल॥३९
नैमनउद्धाच॥चौपई॥नेत्रनकैहैतनउहपवीपन॥मज्जनकियेभगत\
मनहरषन॥तिलकरमसंध्यादिकनेऊ॥वंदहासकीनेसभनेऊ॥वहुर
रामकोंभोगलगायो॥षटरसभोजनहूंमनभायो॥ठौरसुहइछिनविर
षसुदितमन॥सोइरह्योजहांसेवकभगवन॥विषयाचंपकमालन
गेऊ॥देसनसषीसंगलियसोऊ॥नेकरचलीयंविकासेवा॥गावन\
गीतसुदितमनदेवा॥४०॥दो॰हरा॥सेवाकरउरकोंचलीमगमहिनिर
षोवाग॥विषयासोंसषियनकह्योहमरेमनअनुराग॥४१॥चौपई॥
विमलसरोवरपसुपंछीसव॥सुभगठौररमणीयमहांछव॥सभ\
सषियनइछापहकीनी॥विषयाकीआज्ञासुनलीनी॥सभचलगई\
वागहारेपर॥वाहादेषोरषपलंहरवर॥रथनिरषनविषयाअवरन
मन॥हीरारतननजरनसुकनामन॥निरषतरंगविसमताहोई॥राज
कुंवरआयोयहकोई॥विषयाहृदेविचारनलागी॥वैंपचदीमननव
अनुरागी॥४२॥दो॰हरा॥रथपरदेषनलागीसकलमाणकषचितअनेक॥वं
दनरथसुकनालगेकियेनजाइविवेक॥४३॥चौपई॥लागनकोउववे
वडभागी॥देषनकोंविषयाअनुरागी॥हमकोंउचतदेषहैसोई॥जि
हनरकोंयेसोरथहोई॥सषियनसहतवागमहिगई॥हासकरतपर

घनमनभई ॥ सभसखिवनमिलकरनविहारा ॥ बाह्योहदेश्रवनंदस्र
पारा ॥ सुरदस्रलक्षीगकरनपरसार ॥ सकलविविञरूपसंदरवर ॥
चंपकमालनहिपहरखनस्रन ॥ बचनउचारकहैविषयाप्रन ॥ ५५ ॥
चंपकमालाउवाच ॥ दोहरा ॥ सुनविषयाश्रवनमभई श्रवनजोवनवंत ।
पाणिग्रहणसुपनाकरउ मनभावोवरकंत ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ हिलिपवं
रमाबदननिहारा ॥ केसनिसाछबिश्रतिचमकारा ॥ मुकतमांगउडगा
नउलिराजन ॥ मृगछौनाहगलोलविराजन ॥ चंपकलीनासिकामहा
छबि ॥ बेसरमुकताजोतरहीफब ॥ ननकुतनकपोलिकनककचोरा ॥
बरननसकोंरूपछबिजोरा ॥ श्रधरसधरविद्रुमकीमाला ॥ बोलनव
चनश्रंम्रतसरसाला ॥ कुचश्रीफलउरमोतनहारा ॥ रोमावलीजमन
कीधारा ॥ ५६ ॥ दोहरा ॥ नाभकमलत्रिवलीरुचिरसोभमधुबामगाल
हलकमलश्रंगुरिनरुचिरनषनहूं सषिमाल ॥ ५७ ॥ चौपाई ॥ कटिक
रछीनसिंहउलिराजन ॥ रंभाजंघउरिहगनलाजन ॥ चरनकमलन
पुरजनकारा ॥ चंपकलीश्रंगुरिनषनारा ॥ सोभननषसिषकनकवर
ननन ॥ सोभाश्रमितनसकनककविवरन ॥ चंपकमालनश्रवनलकीनी ॥
विषयासभश्रवननन्हनलीनी ॥ सषिपवनमनमहिंवधोउलासा ॥ वि
षयाकोंकीजेरसहासा ॥ लेश्राईफूलनकेहारा ॥ हसनपरसपरकरनवि
हारा ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ विषयाकोमुषरावकेमांगवनावहिफूल ॥ श्राहरी
नवेटीरचीनिरषमिटनहगसूल ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ नोरकमलदलश्रंग

म.श्रु. वनावन॥ मंगलगीतब्याहकेगावत॥ करतचलीसभहासबिला-
भा. सा॥ फैलरहीसभमनहुलासा॥ निरख्योबिमलसरोवरतहां॥
१२० प्रफुलितनलगुंजेअलिमहां॥ अतिनिरमलीपछीरवअरधुनछव॥ पट
उतारकेनगनभईसभ॥ पंमनकरनसरोवरमांही॥ रच्योपरसर
हासनहांही॥ रीझपनपरसननिहअंगा॥ चलनसकनबिहवल
भोपंगा॥ ५०॥ दोहरा॥ परसभपोननकमकाजलआनंदअपार॥ भयो
बिमलनतमैलकोकीनीहरसिवार॥ ५१॥ चौपई॥ परसभपोजल
कोविषपावन॥ विमलभयोतनजकमलसुरतिनमन॥ मैलनिर
षकेंन्याननजनाई॥ तांमेंजलकीनीउजराई॥ करअंचुलभरनीरख
लावहि॥ सभमिलगगनओरछिरकावहि॥ उलटपरैहूंटेकमल
नपर॥ बरषाकरनहरषनिजजलधर॥ मेहवानचात्रकउठधाव-
हि॥ प्रमुदितहियेबूंदमुखपावहि॥ कंन्याननसुगंधबढ़ढरई॥ कस्तू-
रीचंदनजलपररई॥ ५२॥ अभैमंत्रबाच॥ अैसुनकहैसनहुनरपअवन
न॥ विषयाकेलकिपेहरषतमन॥ जलतेंनिकसबसनतनकीने॥
अंगअंगभूषनसमलीने॥ सकलसखीआईजलमांही॥ इकाईसीसं
गलईतहांही॥ लागीबिचरनरूपमहांछव॥ निरख्योएकतालउअव
रतब॥ तहांबिलोक्योएकपुरुषवर॥ नीरवसभपोवङ्रोभूपकर॥ सिं
हकोनसखावलवाना॥ तनबिसालछबरूपनिधाना॥ ५३॥ दोहरा॥
भुजअजाननतनविकटभुजजान्योभगतअपार॥ विषयाहेरेविचारकि

यपहीकरोंभरतार ॥५४॥ जै मनउ दोव ॥ चौ दई ॥ जनमेजयसोंभूपनक
हई ॥ पारषपत्रलिनारदउचरई ॥ विषयादेषोभगनमहोछव ॥ अपने
मनविचारकीनोतव ॥ गिकरजाइदेषोंतुषयाको ॥ लंदरतनप्रकास
भ्रतिताको ॥ नवउगवलीविचारनश्रेसें ॥ नूपुरवरनउनारोकेसें ॥ स
वदप्रकासनूपुरनहोई ॥ धुनसुनजागउठेजिनसोई ॥ दासीकोंआज्ञा
कीनीतव ॥ नूपुरपगनउतारलेइअव ॥५५॥ ना रदउ दोव ॥ दो हा ॥ न
नअनुनतवकन्यकानूपरलिपउतार ॥ मौंमरालनीहंसहितमौंपग
धरेविचार ॥५६॥ चौ दई ॥ कामाअवरमरालनीजैसें ॥ चलकैगईहंसदि
गलैसें ॥ आनतभगनदेषवेकेहित ॥ ठाढीविधमानहरषतचित ॥ वि
क्रवक्रतननिलकभालवर ॥ विसुभक्तनिशवससरपर ॥ सुरनमासी
सरहचंदसुष ॥ निरषनैनविषयापायोसुष ॥ कंठविराजतफूलनमा-
ला ॥ तापरगुंजनभवरविसाला ॥ दिव्यरूपअंगहैविसालसभ ॥ किधों
प्रकासकोटरविनमणिछव ॥५७॥ दो हा ॥ चंदहासकोंदेषकेविषयाकी
नविचार ॥ राजकुवरहद्दिभक्तकोंकमिहोंपहीभरतार ॥५८॥ चौ दई ॥ पि
तामोहिआज्ञादेगयो ॥ वरवैवेपतपापतभयो ॥ जाइकहोंगीप्रथम-
मातसों ॥ बहुरवषानोंमदनप्रातसों ॥ रीझवानकंन्यकाभईमन ॥ अपं
णकीनभगतकोंनिजतन ॥ विषयारीझतनीकुलसाजा ॥ कीनभगत
सोंअपनाकाजा ॥ ततमनधनकंन्याअरप्योसव ॥ चंदहासकोदर्सकीन
तव ॥ भगतवगुलपतिषागिरपरी ॥ लेउठाइविषयाकरधरी ॥५९॥ दो

रा॥ पत्री लीनी कमल काले राषी कर धार॥ कह आयो जै है कहां पठ लि
षकरौं विचार॥ ९८॥ चौ॰ ई॥ यौं विचार कंस्या मन मांही॥ पत्री पठन जो
गइ मन मांही॥ हरि मारे की हमा चढई॥ जो काहू की पति षिया पढई॥ नव वि
चार हे जो मन मांही॥ यह हमरा पन संसय नाही॥ पति यां बोल अंकप
हिचाने॥ अक्षर लिषन पिता के जाने॥ यह पतिया चिंता भई ताको॥ रुष
लिषारी जे विषया को॥ आज्ञा करी हमारे ताता॥ विषरी जे की जे अरि ता
ता॥ ९९॥ सो॰ रा॥ हमारे षल इहु मन लिषा पत्रिका मांहि॥ मदन सिंहरु
नहैं न करइ सकछा इहु नाहि॥ १००॥ चौ॰ ई॥ लिषी वनाइ मदन पत्र जै
सें॥ यह संकहा इहन हिं कैसें॥ या कारज कौं विलमन की जै॥ अरि प
हचान वेग विषरी जे॥ यह विषया चिंता बस भई॥ सुधबुध सकल भू
लि कै गई॥ नास है नयह पिता पठायो॥ सो मम पन की ज्ञान न भायो॥ अ
नि दुराचन मा पिता हमारा॥ मन वच क्रम निहचै हम नियारा॥ विषया सि
मरन की कुरुपाला॥ हमरा पन निवसहो इन काला॥ १०१॥ सो॰ रा॥ पुन वि
षया पानी पर्दी विषहे नैकी ठौर॥ मन महि ज्ञान विचारियो एक आंक
हो और॥ १०२॥ चौ॰ ई॥ अंजन नैन डला सोन षभर॥ मन महि ध्यान की कृ
सिमरन हरि॥ पानी महि अभ अंक बनावा॥ विषदेंवें विषया भाउ दिषावा
विषदें ने विषया उनमई॥ कंस्या की चिंता सब गई॥ करुणा की कृष्ण कमल
मुरारी॥ अपने भगतन को हितकारी॥ अंगीकार करहि हरि जाकों॥ विघ
न न लाग सकै को उता को॥ विषया वदूर लपेटी पाती॥ राषी वदूर भगत

की ह्वाली ॥ ९५ ॥ दो० ॥ यह हकार जब करत कंस का गई सहेली पास ॥ गुप
त वात राषी हृदें कह्यं करी न प्रकास ॥ ९६ ॥ जै ... चौपाई ॥ तब रा
जा कंस्या सब गई ॥ आयो चंद्रहास तब पर्भई ॥ भगवंत को जस रावन श्री
पत ॥ रह्या करत रैन दिन हृदें ध्यान ॥ रघुवंस वंसो भगवंत प्रभु दिन म
न ॥ हृदे भगवंत जसकर त सामध्यान ॥ तब विचार कीना बालक मन ॥ १
३ इह बुद्धि का तब यह मरन ॥ ताकों उचत भेद कहु री जै ॥ रूप तब त स
प्र सन्न कर लीजै ॥ तरक सत लै होवा न निकारै ॥ लै भेद ता कहो रूप द्वारे ॥ १
० ॥ दो० ॥ द्वारपाल निरष्यो भगवंत वक्र विक्रम भगवान ॥ भगवंत कह्यो
तब पर वरिया कहो रूप तन सों वान ॥ ९९ ॥ चौपाई ॥ मदन सिंह को कहु त
मजाई ॥ पठी तब मरे पितु आप काई ॥ तानहार घेन रूप के धाम्या ॥ तानहार पा
लक प्रभिराम्या ॥ एक दूसरे कों समझायो ॥ विस्तु भगवंत पठी लै आयो ॥
तप न द्वारपाल पा जो ऊ ॥ सकल हलोनत तन तभी सो ऊ ॥ प्रस्तुत भगवंत
श्रवन सुन लीनी ॥ तिन तुध ना इ मदन कों कीनी ॥ ताको ताउ तुभाउ
प्रधाना ॥ तिह रूप सन सों वचन वषाना ॥ १०० ॥ दो० ॥ सिंहासन नग
मणि षचित जगमग जोत अपार ॥ दास चवर सिर दारहीं ब्रह्म गावे ब
रुचार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ एक कंगेर ठाढे कुबीसव ॥ अति सूरे बलवान महा
कुब ॥ एक कंगेर गंधर्व छजाना ॥ एक कंगेर कीर्तन भगवाना ॥ मदन सिं
ह प्रति हाथ जोर कर ॥ वचन प्रधान कहै तिह अवसर ॥ द्वारकक
ह्यो तन ऊरूप लाना ॥ तुम सों कहों न पार पवाना ॥ वचन कहों हम

ज॰सु॰
भा॰
३२२

तुमसोंजैसें॥तुमरेपितसोंकहींननैसें॥तुमतोहोसेवकनंदला
ला॥सालवकतगुणमयभगतगुपाला॥५५॥दोहरा॥तुमगुणामयतुम
रापितासदाहिपेंपरमान॥हमकहिसकहिनतुमवचनहुइप्रबुध
विदमान॥५६॥चौपई॥हमरावचनग्रवनतुमनलीजै॥मनवचक्रम
निहचैंनियकीजै॥ताहादारभगवतनंदलाला॥जगतग्यानमारूपबि
साला॥हैसाग्यानब्रह्मकोरूपा॥प्रनितिंदररहुबपरैसरूपा॥मंदर
मुषससिकांतविराजै॥निरषतकोरमदनहुइनिलाजै॥सोपतविङ्क
चक्रग्रदधुनमन॥वदनप्रकासतहैंहर्षतनमन॥५७॥दोहरा॥जेगुन
ननमेजपकहैमरननहुभाउप्रधान॥वंदसरगुनग्रगननग्रहहिय
तेनपहिचान॥५८॥चौपई॥रनचारोंमंहिजोनप्रकासा॥सबमंहिग्या
नकलानिवासा॥होइप्रकासग्यानमामंहां॥चारोंजोननमसमर
नहां॥जिनकेनहींग्यानउजियारा॥रहिपवसग्रावरनंध्यारा॥तेग्य
ताननसंनग्रराधहि॥आपनचीरूहिनमनसाधहि॥तांतेतुमग्यान
मासरूपा॥ताते हारब्रह्मकोरूपा॥पहीलैठाढोहरवारा॥विसुभग
नतनसोभग्रपारा॥५९॥दोहरा॥ग्यानमरनिधारानतुमभगततुम्य
नवद्वार॥नांगेंपांइनउठचलोमहाग्रीनजियधार॥६०॥चौपई॥हारे
साउलंठगपोतव॥वेदहासकारसंकोड़तव॥निरषभगतकी
छवग्रभिरामा॥प्रणमेकलोमरनपरिणामा॥प्रथकीकुननमेज
पक्षिलपति॥इम्ररीमैंसुनिसुरूहरषति॥मरनसिंहनपडुहुड

भृत्यजन॥ सुनत कुलिंद का चंद्रहास सउं जन॥ इह प्रभु दुद्दलो बज्ञेन रिंस॥ ताके
हास समान कुलिंद॥ ताका सुतन सुमरत नपहिआयो॥ पानी दे कर समद
नपवायो॥ २७॥ दो० ॥ मरत न सिंह न हिहले न हिन रहे स्तो नां गे पांर॥ जे प्र
न स्वामी कृपा करउ मर मोहि सुनाइ॥ २८॥ चौ० ॥ जे प्रभु न कहै सुनि दय
पाला॥ उतर प्रश्न लेहु नन काला॥ चंद्रहास बालक है तो जब॥ श्राप
न भयो संग संतन तब॥ तब सुतान उपदेस कीन तिन॥ आतम चीन्ह
अभय भयो इन॥ हृदें प्रकासो ज्ञान मरामा॥ आपन भई भगत निह
कामा॥ तब ही ज्ञान मनन सपथाना॥ तो जन सेवक रन भगवाना॥ जो
हरि करहि भगतन की सेवा॥ होइ न्याइ सम देवी देवा॥ २९॥ दो० ॥ अप
ने भगतन कों सदा राम करहि नव सेव॥ तीन लोक निहरास वन प्रभु
हि देवी देव॥ ३०॥ चौ० ॥ प्रेम नेवरी सों वांधो हरि भगतन न भगत भाउ
हि पदहकर॥ क्रूर तनाहि न कोर जतन सों॥ हरि नहि माग करत भ
गतन कों॥ सहा सहाइ कहै अपने कों॥ देत अभय पद सुष तन मन कों
भगतन कों हरि आज्ञाकारी॥ रक्षा करन सदा हित पारी॥ कवन वाप
राम रतन कहावै॥ हरि भगतन हरि सी सनि वावै॥ रतन वातन अवचर्म
ककुनाही॥ समरूहे षभूपत मन मोही॥ ३१॥ सो० ॥ नि
नकाआर रहर करहि सुतन जनन मे अपराज॥ ऐसा कौन त्रलोक महि
भगतन करे अकाज॥ ३२॥ चौ० ॥ निरषमरत ज्ञान प्रकास कों॥ न
मत्कार कीन चंद्रहास कों॥ तेज भगत का सहन सकोमन॥ वैताधो लै

अ॰ध॰ मुर्धसिंहासन॥ मगमहँआदसुगंधसकलवर॥ आनीसाजआरती
भा॰ निजकर॥ पूजाकीनीविविधप्रकारा॥ धूपधूपनैवेदयअपारा॥ म
१२२ हनसिंहसुषवचनउचारे॥ नीकेहैंप्रभुरथमालसारे॥ ८४॥ दो॰॥ तुम
सारषेजहाँभगवानहाँसकलकुसलात॥ तुमरेदरसपरसभयेपा
वनहमरोगात॥ ८५॥ चौ॰॥ जैसुनकहैसुनहुरूपदीपत॥ पहव
चमहनकहेमनहर्षंत॥ चंदहासमुषवचनकहेउन॥ धन्यधन्यत
ममहनश्रवनसुन॥ वडूरधन्यपहवड़हसुसारी॥ निसदिनसिमर
नहोगिरधारी॥ सुफलभयोआवनाहमारा॥ परसोपावनदरसतु
म्हारा॥ तुमसादरसपरसशुषभयो॥ साधसंगतेंसभदुषगयो॥ भग
नहदतुमरीहटभई॥ देहवासनासभमिटगई॥ ८५॥ दो॰॥ उधम
नसाधसंगतेंग्यानमतानप्रकास॥ भक्तिविवेकहिवारवरहोतमिटत
मभवास॥ ८६॥ चौ॰॥ तुमसारषेसंतभवमांही॥ जगतउधारपधारैसेना
ही॥ वडभागहिसंतनसंगहोई॥ प्रापतविनकउपातनकोई॥ वेवटकौ
कापारउतारहि॥ तैसेंसाधकोटषलतारहि॥ हमपहिप्रापभोसंगतु
म्हारा॥ तपतमिटीभोकुसलहमारा॥ हमकोंतुमरेपितापठायो॥ पाती
लेहारेतुमआयो॥ पत्रीलिषीगुपततुमताना॥ लिषीविचारतुमरि
कछुवाना॥ ८७॥ दो॰॥ पातीपटदूरकांनहैआसामानहुतान॥ तान
दिहौंभारीकछुलिषीहोइगीवात॥ ८८॥ नारदउवाचअर्जुनप्रति॥ चौ॰॥
नारदकहैवचनपारथसुन॥ पत्रीवाचनकहैमदनसुन॥ प्रगटप

हैं गावपलिपालाला॥ सगरीसभाखैनैयहबाला॥ पालीसुपलपदेक
होहोई॥ अगरपंदीहनहैसभकोई॥ पत्रीषोलीमदनवीचनव॥ कुस
लसंदेसलिखेभूपनसभ॥ इहसुदरमलिखोमदनप्रति॥ यहकारज
कीजेमनहरषन॥ तुमपहिमैंपठयोइहबालक॥ विषयाइसहिदेइ
मनकालक॥ ७९॥ दोहा॥ मातपितातुमजानकुलककनपकेडवाल
अवरविचारनकीजियेदेविषयानंनकाल॥ ८०॥ चौपई॥ पत्रीमहिय
निलिखोलोमदन॥ यहबालकसुकतेंअतिबललतन॥ याहामोहिमा
ननपलीजै॥ याबालककोंविषयादीजै॥ पत्रीपढभोहरषमदनम
न॥ चललनवेरसुककह्योपितुवचन॥ जोविषयामांगैवांछनपन
सोहीजैननछिनमनहरषन॥ यहवरइछतुहमनभायो॥ पत्रीलि
षहमपासपठायो॥ मदनसिंहविषयाप्रतिकह्यो॥ तुमहीकोंपितु
यहवरलह्यो॥ ८१॥ दोहा॥ विषयाबोलीमदनप्रतजोपितुपठोभला
र॥ सोइवरोंगीइचलतुकमनवचक्रमजियधार॥ ८२॥ चौपई॥ विषया
मनआनंदनभई॥ सुषइपजोचिंताइरगई॥ मदनसिंहअतिभयोउ
हितमन॥ सुषअनगनतसमाननहीतन॥ धन्यइहसुपपिताहमारा
डलोइछमनतसभकुलमारा॥ जिनहरिभगतपठ्योकंन्यापन॥ तोंवेंम
हाधन्यरपक्षीमन॥ जैसीविषयाभगतसुराग॥ तैसाआपनभोभरता
रा॥ सुणपउरेकंन्याकेभए॥ कुलप्रकासकीनोअबगए॥ ८३॥ दोहा॥ जै
रईहरभगतकोंमदनसिंहसुभधाम॥ वेरहासहरषनहिपंनहां

भ॰ पु॰ क्रियोविश्राम॥४८॥ इतिश्रीभारथपर्वेते अश्वमेधआना॥ पंचदंश

भा॰ भाइषहदहकनरु। आ॥५५॥ जैमनउवाच॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनहु

१२७ कुरुनंदन॥ भगतकथाअघकोरनिकंदन॥ कुलशोहनहिजमहरनसु

लाए॥ नगरजोनकीसभवलआए॥ कलोपलोमममहरनवोलोनव॥

ओहनआरसुनहदहिजवरसभ॥ आताकरपठईहमनाना॥ पतिपाओं

फलिषीदहवाला॥ चंद्रहासविषयावरदीजै॥ याकारजकोंगहरनकी

जै॥ नमसभमिलकैलगनविचारहु॥ पुलककाहविलंवनिवारहु॥

दोहरा॥ नारदपारषसोंकहैसुनहुकथाचितलाइ॥ सकलनगरकेओ

तकीमिलेएककेआइ॥ चौपई॥ निरषरहेहिजचंद्रहासकों॥ विस्नभ

गतआनमप्रकासकों॥ हरषहिजनशुभवचनउचारे॥ धनमहरनसु

तपिनाउलारे॥ यहवालकमरनजगरीसा॥ नमकुलनारेसोइकवी

सा॥ गुनानिधानविषयासीजैसें॥ विस्नभगतपायोपतवैसें॥ जाके

दरसपरसअघनासा॥ तिनतमरेग्रहहकमलानिवासा॥ कंन्याघरवरसु

लनकमाये॥ तिहप्रसादधेसोपतिपाये॥ दोहरा॥ काहेकोअवढहु

लगनमहरनसुनहुहिनधार॥ संतदरसतेंहोतहैमंगलचारअपार॥

चौपई॥ विस्नभगतकोदरसनहोई॥ तपदिनलगनशुहरनसोई॥ ग्र

हनछत्रमतिहिहैगोपाला॥ सोभगवानकेवसनंदलाला॥ हरिभगतन

केहृदेकलोले॥ रक्षाकरतसदासंगडोले॥ प्रेमनेवरीसोंवांधोहर

संतनराषोअपनेवसकर॥ संतसंगतेंचिंतनलागहि॥ दरसन

645

परस्सक्कोरवगृधागहि॥ हरिजनहरपकोनिधज्ञानहु॥ मनवचक्र
मनिधसमपक्कानहु॥५॥दो॰॥ हरिजनधुरुहरिपकहैभेदनज्ञान
हुकोइ॥ सावधानज्ञानमाक्कीमूरनवालकसोइ॥६॥चौ॰॥ मनहुम\
इनरपबुद्धिविसाला॥ यहकारजकीजेननकाला॥ गोधूलकासमै\
क्रनकीजे॥ कंमाधाहभगनकोंदीजे॥ यहवचसुनननमदनहरखनम
न॥ तिलकपगाइदियोकरअसन॥ फूलनमालदिजनकेहाथा॥ चंदन
श्रीफलअछुनसाथा॥ चंदहासहोनोजिहधामा॥ विप्रननहांकसोवि
सरामा॥ रूपश्रोहनचंदनलीनोकर॥ वरसोगुहिनभगनकेननपर॥
७॥दो॰॥ अछुनश्रीफलदियेकरउरपहराईमाल॥ शिवसुतनकोश्
गाकरीतिलकचढायोभाल॥८॥चौ॰॥ चंदहासमनहरखघनभयो॥ वि
घनकोश्रुतिमिश्रारररयो॥ सतहरेश्रोहनकोंदियोदाना॥ हीराकंचनर\
तनविधाना॥ सानवेरनबस्मिषपहरायो॥ कुलश्रोहनश्रुतिमिश्रारररपा\
यो॥ श्रुवरदिजनकोंदानदियोघन॥ चंदहासभूपनमनहरखन॥ जा
चकआइदानजोमाचहि॥ ननछिनपावहिंजोमनवांछहि॥ मांगध
सकलभएधनवाना॥ भरेकनककमलारनतनघमाना॥९॥दो॰॥ कीर\
नभईनगरीसकलहहवालनरनार॥ हमोनचकति॥ रेषोनहगर
नसुरकोउदार॥१०॥चौ॰॥ जाचककरनपरसरखाना॥ इनसमगु
वरनहीकोउदाना॥ अपनेसाथककूनहिंलायो॥ रननाइअकहां
नेंपायो॥ जोजैसीमनसाकरआवत॥ सोतैसोननछिनफलपावत॥

जै॰ग्रं॰ नहंनहंभगतनपसारनहाया॥लावनवलसोउकरसाया॥जोजा
भा॰ चकनिपसोंहोजावै॥मनवांछतफलसमकोऊपावै॥११॥दो॰॥प
३२५ हहलांमसवमरनकोलोगनभाषोजाइ॥चंदेहासनपहकरनहैरुका
सोंग्रगदाइ॥१२॥चौ॰॥चंदहासपहुंत्रलिउदारनृप॥ग्रेसोग्रवरनको
इनसाधिप॥साधनग्रामोदछषछजाना॥देनकहांमनवांछतदाना॥
जोजैसीमनसाकरजावै॥सोतैसोततछिनफलपावै॥पहलोग्रलि
ग्रवर्नेजिपवाना॥हृदैविचारकरहूनृपलाला॥नृपकंन्याहोनीप
हकैसें॥हमहिसलांनसुनावहूतैसें॥वडरपत्रिकापठकीजैसिध
लिषीहोइनिनग्रघचरककुविध॥१३॥दो॰॥चंदहासकोजानकुल
रद्दलेहूनृपताल॥ननमभ्रमयाकीकवनकवननामपितुमात॥
१४॥सो॰॥कैसेंलिषोराजानवडरकादपत्रीपठहू॥हृदैविचार
हूलानउचितहोइसोकीजिये॥१५॥जैमनउवाच॥चौ॰॥कहिजैमन
सुननृपहितधारी॥पुनपितुपतिधांमदनतिकारी॥सकलसभा
मिलवैठीजहां॥नृपपातीवाचीपुनतहां॥नृपतलिषीछिनचित
मनकीजै॥याबालककोंविषधारीजै॥जोवाहतहोकुसलहमारा
विषधारेहूनकरहूविचारा॥जोचाहोकारजथिरहोई॥जोसुफलि
ओकरहूतमसोई॥तोहमराजनहोहोमदन॥तोहमरीग्रासाधार
हूमन॥१६॥मदनउवाच॥दो॰॥मदनकहैसुनहोसभाग्रेसोकहोराजा
न॥कंन्यायाकोंदीजियेयहसाडचलवान॥१७॥चौ॰॥हमरेपिनाष्टा

श्रुयहजानहु ॥ पाकौंमहाबलीपहिचानहु ॥ मनलेवैयहराजमो\
हिघस ॥ कंमारेइकरौंअपनेवस ॥ रुपविचारकीनामनमाही ॥ पाली
हैपववयोमुरुपाही ॥ जोपितुआतापुत्रनमानै ॥ परेनरकनिहवैजिय\
जानै ॥ दानकरतजोवरजरहावै ॥ सोनरघोरनरकगतपावै ॥ तैसेंम
हानरकमैपरई ॥ पितावचनहतषंडनकरई ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ जोइह्वाभ
गवंतकीवातवनतहैसोइ ॥ इहकनदासीनहिपरतजोहरिकरहित
होइ ॥ १९ ॥ चौपई ॥ बालकपजोपिताविचारकर ॥ कंमालीनीपितु
मायेधर ॥ पितुआतातुमेरियैकेसें ॥ चारोंवेदकहतहैंऐसें ॥ वेदक
हैंसोईकीजेवाता ॥ तांतेहोइसकलकुसलाता ॥ यहविचारकरउ
कोमहननव ॥ अपनेसंगलेचलोसभासव ॥ सभचलगएभगतजिह
धामा ॥ कीनपरसपरइहनप्रणामा ॥ प्रथमपहनमुखवचनउचारे ॥ मु
नस्कतिवंहहासहरिआरे ॥ २० ॥ दोहरा ॥ हमरेपितुतुमकौंपकोपान
मित्रजियधार ॥ कंमाअसुरपीतोहिकौंकुलकीग्लानिसमार ॥ २१ ॥ चौपा
ई ॥ सेनाहईनतुमरेसाथा ॥ पुनकछुइयनहीनसंगाथा ॥ तुमनोरा
नकरतहोभारी ॥ कहोतछुतुमकहांनिकारी ॥ कवनतुम्हाराकुल\
पितुमाता ॥ हमसोंकहोजथारथवाता ॥ जनमभूमहेकवननिहारी
भाषहुतावहुभगतमुरारी ॥ अपनागोत्रकहुंववतावहु ॥ हमरेह
हेसंरेहमितावहु ॥ सबहमतांतहमकहोकृपाकर ॥ तुमनोपरमप\
वित्रभगतहर ॥ २२ ॥ चौपई ॥ दोहरा ॥ ऐसेवचनसुमरनकेसनज

नमेजनपरात॥ चंद्रहासमहरिभगवनहनवोलोमदइग्रुसकाइ॥ ४१॥ चंद्रहा
सउवाच॥ चौपई॥ चंद्रहासग्रुपवचनउचारे॥ सुनइमदननलमनपलइमा
रे॥ कुलकुइंवइमकक्रूनजानइ॥ मातपितामुपनानपक्कानइ॥ जाकें
एककूलकुसलामा॥ स्हाकरोंमनमाकोधामा॥ सदासहाइकरनइम
साथा॥ मातपिताश्रीनमथइहाथा॥ हमराहाथकुहइननिहकाई॥ हाथ
परलसुकनाद्धैजाई॥ माटीपरसैकंचनहोई॥ सुफ्रवाहिवेकरनइ\
रिसोई॥ ४४॥ दोहरा॥ नहजनहइदेषोंदइभरहइरदीसेसभतोर॥ मनवच
क्रमजिपजानहोइरिविनकोउनग्रोर॥ ४५॥ चौपई॥ जिनकाअंगीका
रकरनइर॥ तेफिरभषचाहिनकाहूडर॥ सकलजगतसोंमित्रभाउति
न॥ शत्रुनश्रवनासीसिमलोजिन॥ इक्कासोंविचरहिसवकाजा॥ का
हूसोंनहिवैरसमाजा॥ जिनभगवननसिमलोनेंदलाला॥ समदृष्टीति
ननमोनंजाला॥ हमनोसकलव्रह्मपहिचानें॥ तमरेजियकीतुम\
हीजानो॥ हमरेसदासहाइगुपाला॥ जोप्रभुअखिलभवनप्रतपाला
४६॥ नारदउवाच॥ दोहरा॥ कहिनारदग्रर्जुनमदनइभगवनकैंहैपहवे\
न॥ सतसंगतनेंमदनकोंभयोज्ञानहियछैन॥ ४७॥ सोरठा॥ चंद्रहास\
कोंराइमदनजान्योज्ञानमा॥ सावधानजइराइमनवचक्रमजान्यो\
हियें॥ ४८॥ मैनमनउवाच॥ चौपई॥ मैंप्रुनकैहैसुनइभपाला॥ वसतएकउ
लिपोमंतराला॥ तेपरमदनसिंहकोगहियो॥ केवलएकग्रानमाथ
पो॥ एकस्वरूपभयेदोजनव॥ मदनग्रपारग्रनंदभयोतव॥ मरनप\

कग्रस्यपहिचान्यो॥ हुनिपभाउमनमांहिमिरान्यो॥ मदनसिंहमनमां
हिविचारा॥ धम्मइहइधपिताहमारा॥ जिनपहवरविषपाकोंदीना॥
कुलथापनाकलारपकीना॥ २५॥ दो॥ पित्रश्राज्ञाहमकोंइचिनवेग
करोंयहकाज॥ चरनलागकेउठचल्यो रचोब्याहकोसाज॥ २६॥ चौ०॥ म
दनसिंहग्रपनेगृहश्रायो॥ सबकुटुंबकोंवचनसुनायो॥ श्राज्ञाकरीनि
सानबजावहु॥ द्वारद्वारमंदरपुरछावहु॥ सकलबजंत्रबजावनलागे
सुनतनरनारनरमनग्रनुरागे॥ विषपामहाग्रनंदतभई॥ सुचवपत्र्योति
माहुरगई॥ जोमैंवांछ्यालागवीचपल॥ सोप्रभुहिदीनग्रंथविकाहरषत॥ ग्र
वगुहिउचनभेटलेजावहु॥ देवीकीपूजाकरश्रावहु॥ २॥ दो॥ धूप\
दीपनैवेदलैसखीलईसबसाथ॥ मंगलगावनउठचलीमानजग्रारतीहा
थ॥ २७॥ चौ०॥ गोपलिकासमवेचलगई॥ द्वारअंबकाजापनभई॥ पूजाकी
नीविविधप्रकारा॥ ननछिनफिरग्राईपित्रद्वारा॥ ग्राज्ञाकीनीमदन\
सिंहतब॥ छिरकहुगंधगलीबजारसब॥ धुजापताकाकलसबनाव
हु॥ दुंदुभढोलमृदंगबजावहु॥ रतनखचितमणिमंदरजहां॥ ब्याहम
रंभकीकदलपतहां॥ रचीनहांकंचनकीधरनी॥ जगमगालछवजालन
वरनी॥ २८॥ दो॥ कनकखंभमणिगणखचितरोपणकियेविसाल
ब्याहरच्योहरषतहियेंमदनसिंहभूपाल॥ २९॥ चौ०॥ भईइकठसुहा\
गवनारी॥ कंचनकलसलियेसिरधारी॥ ग्राईसकलनीरनिर्मलभर
गानकरनकंग्रागजपरचढ॥ हरषतहियेंकुसुमबरषावहि॥ मंगल\

जै·अ· गीतबाहकेगावहि॥सुबतिनषोडसकीन्हसिंगारा॥डरपहरेसु
भा· कनाहलहारा॥भूषनहूरपरहिपरमांही॥तिनकोंवद्दरउत्रावङ्क
२२० माही॥मौतनभूषनरेतमरतनतिन॥हीरामणकंचनमाहीङ्किन
रुप॥दोहरा॥गोपलकासमेभईवेदीरचीवनाइ॥रतनखंभसाजेत
हांवेदधुनघगराइ॥२८॥चौपई॥कस्तूरीकुंकुमकपूरजल॥बिष
पामजनकीन्हनबिमल॥बस्त्रकलसेभसाजभूषनतन॥वेदीप
रवारीहरषवमन॥नीरसुगंधसिंचविधनाना॥चंद्रहासकीमा
रसनाना॥नवतुकूलपहरेउरमाला॥हरषनचंद्रहासभूपाला॥
मुदितमानवेदीपरत्रायो॥बिप्रनवेदबिमलजसगायो॥कुलश्रो
हतताहेवेदीपर॥तिनगहिलीनोवेगतुहनकर॥२५॥दोहरा॥भग
महापथगहकमकाहोउएकेठेकीन॥परवैठीरखीसुहथगुणनिध
होउपवीन॥२७॥चौपई॥वेदीपरहोदसविधाना॥वैठेश्रोरतहांदिह
मनाना॥बलमणकरपावकमोतिलहून॥जोरीग्रंचरगांवमुदित
चित॥वेदीनिकटफिरनहोउलागे॥सबघसमुदइपत्रोदुषभागे॥श्रो
हनरक्योचंद्रहासकों॥कहोत्रापनाकुलप्रकासकों॥तुमतोविस्ठ
भगतनिहकामा॥कहोगोत्रपुनपितुमाताना॥प्रकृतउचनत्राहके
ग्रवसर॥वेदबचनधनपालभगतहर॥२८॥दोहरा॥छनतजनमेजा
हसिकरोचंद्रहासभूपाल॥सुनयोहमपुरनगोउकुलहैसमलनं
दलाल॥३०॥चौपई॥मातपितापरपितापितामा॥सभहमरेमानहु

धेनसामा ॥ मेत्रावलीमानअवज्ञानद ॥ रूपनकुलिंदपिलापद्दिचा
नद ॥ जिनहमरीरक्षाकीनीनित ॥ सोगुणालममनानपिनाविन ॥
वंदहासपदगोत्रवखाना ॥ सनदिजवरहोएसविधाना ॥ लागेपदनवे
दविधजैसें ॥ भूरनभयोव्याहविधजैसें ॥ वडरदिजनगुणवचनउचा
रे ॥ सुनऊमदनतुमनरूपनहमारे ॥ ४१ ॥ विप्रउवाच ॥ दोहरा ॥ तुमपरेम
हप्रगष्टोमदनश्रीभगवानसजान ॥ सफलभयोकुलगोत्रतुमअवर
धनपितुमात ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ ओहनकहेमदनसुनलीजे ॥ अवककु
दानवहनकोंदीजे ॥ पहवेरीकरुछेत्रसमाना ॥ तुमकोंउचनदेऊंप्र
वहाना ॥ मदनसिंहदानसुनवहीना ॥ वेदवचनसंपूरनकीना ॥ हैम
नडुरदसेनमदमाने ॥ कनकअंगदमदगंधतुचाने ॥ अश्वअयुतहैदिये
संगाथा ॥ करभअयुतरकहीनोसाथा ॥ चंदनरथहैदियेसहसभर ॥
वीरहीरमनिरतनपदंबर ॥ ४३ ॥ दोहरा ॥ कंचनमणित्रकनारतनव
सनअनेकप्रकार ॥ गोसहससुरससंगदईदासीदासअपार ॥ ४४ ॥ चौपई
विनधकरीपुनमदनजोरकर ॥ तबहीनहमतुम्हेंभगतहर ॥ ककु
महीनहमविस्वभगतनतुक ॥ वहणासमर्पीजपासकनतुक ॥ कंन्या
दानकरतहैजोई ॥ विधवनदानदेतहैसोई ॥ सोदेवेगापिताहमारा ॥
सुनऊभगतनहमदासतुम्हारा ॥ दासीजानऊवहहनहमारी ॥ सदाकरे
गीरहलतुम्हारी ॥ मैंग्रानमासमर्पणकीना ॥ अर्पणासीससमर्पता
हीना ॥ ४५ ॥ दोहरा ॥ दुष्यमेदजोमैंकरीतउहोनविदमान ॥ उनदीनानि

ग्र॰ भा॰ १२८

जसीसगुरुमनवचक्रमजिपज्ञान॥४९॥चौपई॥हमरेग्रहहृषगग्रो
ग्रवतारा॥चंद्रहाससाध्योनगुरारा॥मैंहूकरहूजोसीसहमारा॥ले
गरहुउपानमंत्रारा॥तासोंषेलकरहूचौगाना॥तौपहभेदनलहूकछुस
माना॥जपिकरौंगुमेरभेरहम॥भक्तविपमानवङ्दरणासम॥सा
धसेवनैंचारपदारथ॥सिद्धहोतस्वारथपरमारथ॥हरिकाभगतह
छावमजोई॥छोरनरककलिहपावनहोई॥५०॥दोहा॥जैमुनकहिसु
नहोन्रपतभक्तकथापरवीन॥ततमनधनसर्वसमपरनचंद्रहास
कौंदीन॥५१॥चौपई॥भगतधसत्रमदनपरभयो॥कीडन्नलिंगनधु
जगरलयो॥दरनभयोव्याहकुसलाता॥सुदिनहिंधैंविषयाकीमा
ता॥सुतातनमातात्रहलेगई॥फलनलेफवक्काववतमई॥कुसुमफरे
धामहासुवासा॥तहहवैवेविषयाहरिदासा॥विषयाविनयकरीतिह
अवसर॥कीजैहासविलासभगतहर॥चंद्रहासनिजभगतउदारा
हरिविषयाप्रतिवचनउचारा॥५२॥चंद्रहासउवाचविषयासों॥दोहा
चंद्रहासयहवचकहैसुनविषयावरनार॥प्रथमेसुनलेमोवच
नपाछेकरहिविहार॥५३॥चौपई॥प्रथमेतुमकोंधर्महढावों॥प
तिव्रतनतिपकीरीतनवतावों॥जोविषयातुमहमरीनारा॥तोसबकी
जैवेरअवारा॥एकादसीव्रतदहव्रतपारो॥दानपुन्यमनधर्मविचा
रो॥कीर्तनकथाविषेमनलावहु॥पतिसेवहूनिसदिनहरिध्याव
हु॥पतिव्रतनतिपकेधर्मजोइसव॥विषयाकोंसमकहैभगतनतव॥

आपसमारषीलियकरलीनी ॥ चंद्रहासकरुणावहुकीनी ॥५५॥ दो० रा
धर्मपतिव्रतहरिभजनभगवनदरसप्रोनार ॥ कुलमरजादामहिसुतरि
नलागेकरतविचार ॥५६॥ जै अ नउची ॥ सो० ॥ चंद्रहासराजानआ\
पसारषीत्रियकरी ॥ तनजनमेजयकानपतिसोंवचविषयाकहे ॥
प५७वि ष पउ ॥ व चौपई ॥ वचनकहेविषयावरनारी ॥ तनमेरेप्रभ
भगतविहारी ॥ भागवडेतुमसेपतिपायो ॥ तातेंसुरवतछकनकमा
यो ॥ जिहदिनगईअंविकाद्वारे ॥ तादिनतेंवडभागहमारे ॥ तषियन\
जिपउपसोग्रउरागा ॥ उनसुफकह्योदेषहैंवागा ॥ सवचलगईवा
गकेद्वारा ॥ पल्लौनहींरथदहछलारा ॥ प्रथमेसरमंजनकीनाअनुफ
लापाछेहमदरसभयोलछफ ॥ निरषसरदससिवदनछलारा ॥ मन
उपनीपहकरोंभतारा ॥५८॥ दो० रा ॥ वगलल्लुसारेवीचबैंपातीलि
रीनिहार ॥ सोमैंलईउगायकरपटजिपकीनविचार ॥५९॥ चौ० ॥ प
ह्रीपहहरिसिमरनकीना ॥ घहपतिमैंमाचेपरलीना ॥ सोपिछ\
पवपकरनकोजाना ॥ रछ्याकीजैत्रिभुवननाता ॥ इहसुउहसिव
पवोमरनव्रति ॥ याकोंविषदीजैकीजैहति ॥ करुनाकीनीश्रीम
गवाना ॥ हमरेहियेंदीनवडूनाना ॥ नवमैंअंजननैननिकालो ॥ ह
रिसिमरनकरश्रींकसवालो ॥ पहमापतिकीकरुणाभई ॥ विषहं
तेंविषयाह्वैगई ॥६०॥ दो० रा ॥ पाछीजोरविषयाकहेकडूतोंन\
पतिमोहि ॥ कवनसुवजान्नरुपयपवोनामकरनकोंतोहि ॥६१॥ चं

अ॰ श्री॰ हा॥२३॥ चौपाई॥ बिषयालुमन कीषहु मामा॥ सुनहु हनोंन कहौं
भा॰ बिआला॥ बिन श्रीराम भवन हि जानैं॥ मित्र सत्रु होइ सम पहि चा
१२५ नैं॥ इमि रागी उदास पितु माता॥ सकल इमारे त्रिभुवन नाता॥ कहौं
हनोंन सुनहु भवनन धर॥ इम वन आइ पलोरक भ्रवसर॥ सर्पसिं
हु बनम हि भयकारी॥ लागे रक्षा करन हमारी॥ कुसल कृपा तें पसु
पंछी नव॥ मित्र भाउ कर भ्रनपाल हि सब॥५५॥ दोहा॥ निसदिन मैं
हरि गुन मगों करों उच्चसु रसान॥ इक दिन चढ़ो श्रवेर हनन पसु
लिंद उधान॥५६॥ चौपाई॥ न्यपतन कुलिंद सुनी धुन काना॥ चल भ्राये
हमरे भ्रसयाना॥ सुन कर सत्रु हि श्रुनिपालन लागा॥ रक्षा करी हि
यंभ्र ब्रागा॥ उन भ्रापना रान मत्तु हि दीना॥ बीस गाउ का भ्रपिपन
कीना॥ गाउ इकासील भ्रम रिपि नाके॥ बल कर मैं लीने हरि ताके॥ भे
द पढी धुन इहइ बुद्धि कों॥ कनकलकु बढ़ हि पभ्रमु इकों॥५७॥ दो
हा॥ भेद निरषभ्रो पतन भयो दुष बुद्ध भूपाल॥ बैर भाउ जियधार
कै चढ भ्रायो नन काल॥५८॥ चौपाई॥ हम तब मपितुकों नाइ मिस्योन
व॥ पिता सुमेन सान से नासव॥ बद्धन भे भ्रागे लेपरी॥ जगकर
मोरवे नलीकरी॥ ननकि नहम कों न्यपनतुलावा॥ पढी लिषहन
पास पगावा॥ लिषो नुककु रपके मन माना॥ यह हनोंन हम कहु
न जाना॥ मोक कुरक्षा प्रीनें रलालहि॥ मैं संकरन भयो नन काल
हि॥ जो जिह समे कीइच्छा हतहरि॥ तिह चैं होइ सोइ लिह भ्रवसर॥ ८८

दोहरा ॥ दुषसुष आपन जिह समै सो इहो न जिह काल ॥ रहक नरारी
नहि हरत जो इक्यानेह लाल ॥ ९२ ॥ चौपई ॥ अब इह समै वही वन आई ॥ जे
सैं ही इक्यानइ राई ॥ आगे सो इहोइ गी बाना ॥ जो बिपरची जगत के नाना
इष सुष समै पाइ चलआवै ॥ भगवत बिन कोउ नाहि मिटावै ॥ बीत गई
निस भयो बिहाना ॥ ऐसे करत परसपर याना ॥ बिषया साजन आरनी सा
ई ॥ उको भगवत सुषजपत कऊाई ॥ सोऊ है हरि भगवत नारनर ॥ बिषयाइ
परी भगत कृपाकर ॥ ९४ ॥ जैमनउवाच ॥ दोहरा ॥ आत्ता की नीम रहन अन
न वासि धभई रसोइ ॥ मजन करा इहर भगवत करबर रसभोजन सोइ ॥ ९५
चौपई ॥ भोजन करके लोग उठे नब ॥ मिलक नवोल नोष कीने सब ॥ भू
षन बसन सभन पहिराए ॥ ताहे पहरजोउ जिह भाए ॥ पूरन इक्याम
ई सभन की ॥ रूपत भई अभलाषा मन की ॥ चंद्रहास अरु मदन परसपर
मौतन प्रीत बढी उर अंतर ॥ बिसरि निरकपल बिकुरहि नाही ॥ धर्म प्री
न उपजी मन मांही ॥ नित प्रति करन पुन्य अहदाना ॥ संध्या सिमरन बे
द विधाना ॥ ९६ ॥ नारदउवाच ॥ दोहरा ॥ मार रपारपसों कहे सुनऊ कथा
हरिदास ॥ भगत कृपा तें मदन कों ग्यान भयो प्रकास ॥ ९७ ॥ चौपई ॥ भ
म अनाज देन बहु लागी ॥ हृदय देन बहु गोम्र तु रागी ॥ बन लागे बहु
हेन फूल फल ॥ न हियां उमग वही बिमल सुजल ॥ सकल नगर मति
धर्म प्रकासा ॥ काम क्रोध दुःख तभी नासा ॥ अब रइकादसी धारन हठ
कर ॥ सब पुर बालक हह नारनर ॥ जोकोउ करत अब ताकै से ॥ ताकों

सं॰ग्रं॰ भा॰ ३३॰

हंउ देत विपथै सें ॥ मारन कुसुम भ्रम सों हूं निह ॥ कियो हो इ पुरषों
श्रवगुन ज्रिह ॥ ८८ ॥ दो॰ ह ॥ निस दिन हास विलास सों बीतन गयो बहु
काल ॥ विसुपुरी समपुर कसो चंद्रहास भूपाल ॥ ८९ ॥ चौ॰ ॥ ६ ॥ मदन
हि मदन विचार कीन तब ॥ पिता कों पत्री लिषों उचन अब ॥ कुलशोह
न कों मदन बुलावा ॥ लिषी पत्रिका ग हरन लावा ॥ लिखो मदन पति
या मध जैसें ॥ वरन सुनाय न हों वचन सें ॥ प्रथमे लिषी सकल कुसलाता
बहुरि हनन लिषी सब बाता ॥ सुनहु हनन उछुधराजा ॥ भयो मग
न विषया को काजा ॥ हम लिषपठवा वीच पानि जिम ॥ ननछिन हम
कारज कीना तिम ॥ ९० ॥ दो॰ ह ॥ धन्य धन्य रूप इछ्रुप धन्य तुमे पितु
मात ॥ विसु भगन वरप बोल मविषया हिन कुसलात ॥ ९१ ॥ चौ॰ ॥ ६ ॥ जै
सें पितु आज्ञा तुम कीनी ॥ तैसी हम माथे धर लीनी ॥ तुम सुंदर वरप
ठ्यो हरि भगन ॥ सो विषया मन सुदिन कीन्ह पन ॥ जैसी पी विषया वर
नारी ॥ तैसा पायो भगन भतारी ॥ वहुर मदन वहु लिषी विनय कर ॥
लिष सौंपी पत्रिका हृनकर ॥ ले पत्रिका हन चल गयो ॥ बहुत नकाल न
हांत्रा पत भयो ॥ पुहचो जा रपुरी चंद्रावति ॥ नहां उछ्रुधर पन उछ्रुम
न ॥ ९२ ॥ दो॰ ह ॥ हन प्रवेस कियो नगर चल आयो न्रप द्वार ॥ मिलो पवरि
या सौं प्रथम हरषन करी जुहार ॥ ९३ ॥ चौ॰ ॥ ६ ॥ ठाढा जाइ हन न्रप द्वारे
द्वारपाल प्रति वचन उचारे ॥ द्वारक कहो न्रप न सों जाई ॥ मदन सिंह प
त्रिका पठाई ॥ सुनत नप वरि पाउ ठके धावा ॥ न्रप कों सकल समांन सुनाँ

657

गा॥ सुनत नृप नंद भयो भूपाला॥ कह्यो इन सामंतन काला॥ इह
सुइ मन कीन विचारा॥ इना हो इगा शत्रु इमारा॥ लिषी हो इगी सक
ल मइन विध॥ आज्ञा इमरी मानकरी सिध॥५४॥ दोहरा॥ हारत्र लायो
इन कों चंदन छिर के बीर॥ इन निरषन पठ्ठ छत्तु पवि इवल भयो
अधीर॥५५॥ सोरठा॥ सुनि अव चर्न भो राज पत्री ले पुन वचक है॥ इमरे
पुर महि काज भयो कवन के इन कह॥५६॥ चौपई॥ कहे इन सुन
हो वच राजा॥ भयो लहै कंन्या को काजा॥ चंद्रहास को लम हि पठ
वा॥ पत्री निमन भला वर पावा॥ लम पत्री पढई निह हाथा॥ विषया
या ह भयो लिह साथा॥ कंन्या वाडुह भगन कों दीनी॥ मदन सिंह कीन
न जग कीनी॥ सुन राजा विसमै ह्वै गयो॥ एक मकूर न सूझि न भयो॥
हृदे चिंत वन भो भूपन जब॥ पनि पांपदी मदन की लेनव॥५७॥ दो
हरा॥ पढि पत्री चिंता वढी नृप पक्ष्यो पुन हल॥ पुति काक हो इन लोन
सभ मो लन भयो क भल॥५८॥ चौपई॥ इन कहै सुन हो नृप वाला॥ लम
री पुरी परम कुसलाला॥ नव को पुर प्रवेस किय वालक॥ नौतन चर
ग रख्यो भूपालक॥ ग्रह ग्रह होन सजन सनेर नेहन॥ पर्म वढ्यो अन
भय विकेहन॥ उप्पहान अनसा पहि लोगा॥ भयो अनंद विन सगो
लोगा॥ लम लन मदन दान वहु दीना॥ वेद विधान सजन सजन गलीना
मदन सिंह अरु चंद्रहास की॥ प्रीत वढी आनन प्रकास की॥५९॥ दो
रा॥ विक्रुरत नाहि न एक छिन वढी परसपर प्रीत॥ मदन सिंह ह

658

अ.ग्र. रिभगतसोंसदामगनरसरीन॥८०॥चौपई॥वचनसुनतनलपहहरे\
भा. रिसायो॥हनवंतसंगलपहिरायो॥क्रोधनस्पासाकरीनरिस॥वां
२२१ पडूसहितकुटुंबकलिंस॥बांधाकुलिंहसहलपरिवारा॥लेउ
रेसभहूपमंझारा॥कंउनसासनादेतरैनदिन॥गाउघसोटलिये
माहीछिन॥देसासनाकहनवचराजा॥तुमहिविगासोहमरोका
जा॥हमराअरिलुतकरप्रतिपाला॥कीन्हवडूरताकोभूपाला॥८१
दो०॥हमरासत्रूसवलतुमस्तुनकरपालोवाल॥तुमरासवप
रवारसोंनासकरौतनकाल॥८२॥चौपई॥यहविपाधसभतुमतें
होई॥जोतुमकीन्हकरैनहिकोई॥वीसगाउहमतेंतुमपाए॥तेस
वचरसवडूनतमखाए॥तिनताहंउरेड्मोकोंग्रव॥यहस्पासा
करउक्रोन्पनतव॥वैठ्याबीरसकोंनचिंतपन॥मंत्रीकुतव\
तुसाघोतनछिन॥सुनहोमंत्रीवचनहमारा॥मरनभयोकुल\
वीचअंगारा॥वहनव्याहसत्रूसोंकीनो॥आनवूकमोकोंडुघरी\
नो॥८३॥दो०॥मरनसिंहमतिमंरसुकयहगनम्योकुलनास॥\
विघपाव्याहीसत्रुसोंकहिसमकावनगाय॥८४॥चौपई॥नासहोर
गारानहमारा॥सत्रूसवलवाहियेमारा॥तपपितांरकम्मकाहोई
वनावड़वाला॥सविवजोरकरववनउचारे॥चिंतविचारहूत
पतहमारे॥वलडूआपनेनगरसंभारा॥नासकरैंअवसत्रुतस्पा

रा॥८५॥दो॰ रा॥ ऐसा मंत्र बनाइ गाहो इसतु का ग्यान॥ चिंत निवार
हु न्रप नहि प होइ सकल कुसलान॥८६॥चौ॰ ई॥ राजा बलो बजा
इ निसाना॥ चिंत भान निज प्रुरु रसपाना॥ बांध कुलिं रस हित पर
वारा॥ संग ले चल्यो तुष्ट हमारा॥ ता का राज अवर कों दीना॥ मन म
हि न्रप न विवेक न कीना॥ देहि कुलिं रसा सना भारी॥ लो हि मेल
मन कर हितु धारी॥ नास करौं गात्र नसमे न तुरु॥ कन तुम पत
पालो सत्र सुरु॥ कनितु मका कुर मंदर सा भे॥ हम कों सागरा आप
भये राजे॥८७॥दो॰ रा॥ हरि मंदिर रसा जे जिन ऊका दी लिये बुलार
तिन कों दीनी सासना दर्व गए कन षाइ॥८८॥चौ॰ ई॥ देषो इन कु
लिं रक हां कीना॥ सुन सुअवर आपन कर लीना॥ वहु रों भयो मं
न विकराला॥ राज हीन सुन कीन भुपाला॥ पुन भे देरे सचिव प
ठायो॥ तिन हम रे प्रह भोजन न षायो॥ कह है नेतागो हम त्र नधारा॥
दिन इका दसी को निरधारा॥ इन नो अपना सभ मन साना॥ नौन
न भगत न भप महा राना॥ हम इकादसी सुनी न काना॥ इन तो नौत
न मन न कहराना॥८९॥दो॰ रा॥ अपिष्ठान रहे रान का औरन जाने
को इ॥ औरर दर्ई तन आपनी महा मन्न मंदहो इ॥९०॥चौ॰ ई॥ वहुर
बुडिन की मागी दीना॥ बिड्डकिये वेसव की दीना॥ अन इकाद
सी नौत न कीना॥ हम मत ल्याउ अवर मन लीना॥ प हनो हो मो रा

661

नं·ग्रं· सहमारा ॥ नीलचलाई अवरशकारा ॥ उडविराना कीन अपना
भा· लाको कीनी राजपापना ॥ कहि कै ऐसे वचन नरिंदा ॥ वड्डरहेन
२२२ सासना कुलिंदा ॥ उव समेन संघार करों मुरु ॥ मम भयेन हिन्रम
मानन सुरु ॥ ९ ॥ दो० ॥ जै सुन कहि हनहोन्दपनकरीशी उतारा
३ ॥ रूपकों नजधिवकाचढ्यो जीवर लिय उलाइ ॥ १२ ॥ चौ० ॥ ई ॥ चढ्यो
पालकी परभूपाला ॥ चलन कहार भए ननकाला ॥ तिनपरको
फोरा इलहांहीं ॥ कति कों वेग चलन लुमनाही ॥ रोउ पुष भोजन
लेम कीना ॥ चलनीवे रकरन बलछीना ॥ करन भयो आज्ञा हम्मा
रा ॥ करइक कहारन वसन उहारा ॥ तिनकों वढ्ढन सासना दीनी ॥
चल इन वेग विलम कत कीनी ॥ वेग चल इम सउ संघारो ॥ लुमरा
लोघ करों रिपु मारों ॥ १३ ॥ दो० ॥ जीवर बोले रूप सनन इहम कों
मार डनाह ॥ वेग पालकी ले चलहि दुषपायो मनमांह ॥ १४ ॥ चौ० ॥ तो
गवने वेग कहारम गमहि मिलियो नागर एक ॥ तिनवच कहे उ
वार उइ उवरमन मंदयन ॥ १५ ॥ ना० ॥ कोव ॥ चौ० ॥ ई ॥ बोलो नागरो
नो भूपन वर ॥ मैं पारख कल मे इम्मपर ॥ मोई लेनपाइ अम सार
मैं लाको ननकरन वहारा ॥ नवत्रष निरष इरलन रनारी ॥ मन ग्र
हि कार है वपुष हमारी ॥ भव लौरक्षा करी जननसों ॥ अवरी जेन
परो समरनकों ॥ वहि लोई कीनो चलवाना ॥ भनि उरास से वक भ

गवाना॥ मदनसिंहसोंमंत्रविचारा॥ फोरवजानाविप्रनिकारा॥
२४॥ दो० ॥ दानदेनलिनहिजनकोंमनमहिकरनउदास॥ मैंभा
गनवडहांतेजबधनभयोविनास॥ २५॥ चौ० ॥ नागवचनसुन
विप्रमानरूप॥ वड्डरभ्रीवरनकुम्भोवराधिप॥ चलडगीउँक्रेन
वेरनलावड्ड॥ वेगमोहिलिजपुरपडचावडु॥ कतिलाइनाकहा
रवलाए॥ ननहिंनगरनिकटलेआए॥ नृपकेपुरमहिसुखसो
अवाजा॥ आपोवलीइयट्ठधराजा॥ सभहिजवलेमिलनकोंआ
गे॥ वेदउचारकरनसुखलागे॥ नदगंधर्वहुननउठधाए॥ नाचन
गानकरनमनभाए॥ २६॥ दो० ॥ कुंकुमछिरकेवसननपहि
रेसभनवनाइ॥ निकटजाइकेसभनमिलदईअसीसाराइ॥ २७॥
चौ० ॥ वड्डरकहैंनृपवनमेरधामा॥ प्रगटभएप्रभुरनउवनसामा॥
नृपसुमरेहैहैकल्याना॥ कसोजमानभगतभगवाना॥ कंन्याकों
ऐसापवतीना॥ कुलआपनाकुलारपकीना॥ पुनऊमसकलन
गरमिलारा॥ भगतदरसदेषप्रजाइधारा॥ ब्रह्मननदगंधर्वन
मिलसव॥ नृपकोंऐसेंवचनकहेतव॥ आगेपावककजरलअ
पारा॥ इनवचहनह्यनरूपरजारा॥ २८॥ दो० ॥ पहवचकहि
कोयोनृपतदलडआसाकीज॥ पकरडऊमरेवापहैमारकर
इवलहीन॥ १॥ चौ० ॥ इनवांफलेपीछेपरे॥ गंधवभागेअतिनि
पडरे॥ कडंगिरीपगिपाकडंपोपी॥ भागेअग्रजांहिसंतोषी

663

न॰ प्र॰ विप्रतानद्विजवरतनसीने ॥ नरगंधर्वकोपसमलीने ॥ क्रकद्रक
भा॰ कीनेसकलबजंना ॥ जेकवनहरिलंनविलंना ॥ एकनकेकरदेति
३३२ नमाणा ॥ एकनकेकरदेपगहाथा ॥ काउहिदेसभसिरनागेकर ॥
पुषवीरतनआयेअपनेघर ॥ ४ ॥ दोहा ॥ इहविधुपभूपनलवहिकी
ज्ञाउरीप्रवेस ॥ महाक्रोधजियधारकेउतरेहारनरेस ॥ १ ॥ चौपई ॥
हारककिपोत्रणमनपतको ॥ दईवधाईइहपतिनकों ॥ धनद्
हवृधसभैकुलनारा ॥ कीन्हजमानाभगनजुरारा ॥ हारपालपर
कुण्योराद्रनव ॥ हाथपाउकीनेचूरनसव ॥ रंगमहलमें वैठेजाई
नविचसमेतहियेंदुषपाई ॥ कंन्यान्याईकनकपालभर ॥ ताकेवी
चप्रकासदीपधर ॥ तामधिग्रहहगंधप्रपारा ॥ गावनगीनसवमं
गलचारा ॥ ४ ॥ दोहा ॥ तिनकंन्यासोंनृपतनवअक्षो वचनउचार
कहांवालतुमग्रहदिनमनषोडसकियेसिंगार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ तुमरु
पपढोभगनजुरारा ॥ कंन्याकेनमिलभरतारा ॥ धन्यनृपतनग्र
पनाकुलतारा ॥ भलोमंत्रयहहृदेविचारा ॥ आजजमाइगीविध
घानिजगृह ॥ संवरवोधहिभगनसाधनिहृ ॥ हमनाकोलेग्रहप
ठचावहि ॥ गावतगीनवहुरफिरआवहि ॥ इहविधुपतनंसुंनत
रहो ॥ कंन्याजानककुनहिकहो ॥ यहलोजोगसासनानांही ॥ ध
लविचाररदेषोमनमांही ॥ ५ ॥ दोहा ॥ नारदपारथसोंकहैसुनहु
कथाहृदधार ॥ मदनचलापितुमिलनकोंसंगलेभगनजुरार ॥ ७ ॥

चौपई॥ होअश्वारूढरूपनपगलागे॥ रूपजितपक्रोधबोलअनुरागे।
भूपवचनसोंआदरकीना॥ मनमहिदुषभाउपरलीना॥ भगनने
असहिसकोनराजन॥ विराकीनहरिभगननहींछिन॥ मदनसिं
हअपनेविगराधा॥ बुराभलानृपककुनभाषा॥ चंदहासगोनिज
असथाना॥ राषानृपनमदनविरमाना॥ दुष्टबुधजितपबहोक्रोध
अल॥ बोल्योवचनरिसायमानप्रल॥ ५॥ दोहरा॥ मैंतुनजनमेंमेंकहै
हुनदुकथाश्कनपार॥ दुष्टबुद्धषलमदनकोंकीनाबहुतप्रकार
र॥ चौपई॥ मदनसिंहअज्ञानमंदमन॥ षोपोराजकियोनहिरिउ
हन॥ रेदुरातनमाकुलअसनासा॥ हृम्योनअरिकीआउपहासा॥ अ
मप्रगधोकुलवीचअंगारा॥ पितकोसनुकियोनसंघारा॥ उलट
नाहिवहत्योईकीआ॥ तोनैंमोहिमहाडषदीना॥ होबहुदरदएहैं
आगे॥ तुमकोंनिरषमोहिदुषलागे॥ वनकाआपमोहितजदी
ना॥ निकसोवेगविवेकनकीना॥ ५॥ दोहरा॥ मदनसिंहहसिपि
ताकोंवचनकहेतनकाल॥ हमराहृषनककुनहींहतनहअव
नभूपाल॥ ६॥ चौपई॥ नारदकहेहुतनदकुंतीहुत॥ मदनकहैपि
तसोंवचअरधुत॥ सनवचनमायेतुमनाना॥ तुनमानेआनापि
तुमाना॥ पितावचनसुनरामगयेवन॥ नजपपयेनाइकतिडप
वनन॥ मैंनहिनाकेरासमाना॥ विनमीकहेहोसुनहुनृपकाना
रामचेदजवचनमहिगए॥ केकईवचसुनपितपवदए॥ ७॥ दोह

रा॥ हमहूं बनकों जाउ गाआ ताता तुमरी आन॥ जिह हृषन हमबा
न पठइ सोइ बलावो बात॥१३॥ चौपई॥ कि हम अनाथो कों बनहि पठा
वइ॥ सोइ पाप मोकहि सम आवइ॥ यह अभलाषर हैं जिय माही॥
कि हम पाप धराव नमाही॥ गुर सों कहो न पारण बाना॥ कवन
पाप पठवइ बन लाला॥ जिन नाहो इअ गुन को पारा॥ तिन का का
हों बनहि मैं आरा॥ हम तो अपने हृदे पछाना॥ अपना हृषन कोउ
न जाना॥ हम तुमरी आज्ञा सिर मानी॥ जो तुम लिखो सोइ विध
ठानी॥१४॥ दोहरा॥ जो तुम पठी महि लिखो सोइ करी हम बान॥
हम कों हृषन क कुन हीं आज्ञा मानी आन॥१४॥ चौपई॥ एक अबला
परी बीच गुरु॥ सन इ अब बनन्ह पसो इ कहों तुरू॥ हम कुलि रकों
तुपनहि करी॥ जानों यहै हृकत्रुरूपरी॥ सो कुलिंदषा तुम रेसा
था॥ कलित्तम पठयो पत्रि संवाना॥ आ इसमै चहिये संग ताता
सो घट तुम नहि कीनी वाता॥ वंइ हास एकला पठायो॥ मेरे रूप
रहो षलगायो॥ तुम लिष पठयो बिलमन कीजै॥ घावासक
कौं बिषपारीजै॥१५॥ दोहरा॥ नाहि बिलोकइ रूप अवन नहि मह
इ पितु मान॥ बिषपारीजै बाल को आज्ञा हमरी आन॥१५॥ चौपई॥
मो तुम लिखो कियो मैं तैसें॥ विषपा आह वेर विध जैसें॥ तुम लि
षपठयो बिलमनि वारइ॥ लगन महूरत कोउ न विचारइ॥ मैं से
ही कीना तुरु कामा॥ जिमन तुम लिखो इषठ उधराजा॥ मैं तो गहर

नकियोपकछिन॥ विषयाआहकियानाहीदिन॥ गुरुतुमकोपो
यहैजीयधर॥ तुछदानमैंहीनआहपर॥ अलपदानमैंदीनातुमइर॥
अवतुमवढ़तहेकुअपनेकर॥ १८॥ दोहरा॥ अवरीजैनरपदानवडूतुम
सवहैजगमांहि॥ हमपरदूषनकछुनंहीक्रोधकरउकछुनाहि॥ १९
चौपई॥ जोदीजैतनमनधनप्राना॥ यहसभतुछभगनविरमाना॥ स
वैसनरपतभगनकोंदीजै॥ यहकारनकोंविलमनकीजै॥ महांतुम
सवाहैजगमांही॥ अनघलापकलषमिटनांही॥ आगेतुछदानमैं
हीना॥ पीषीअनानघरनकीना॥ करहूदानजोरकुतुसारी॥ कृपा
करहुनरपरकहमारी॥ ऐसेवचनमरनभाषेजव॥ तुननअलोष
लकोनचमनसव॥ २०॥ दोहरा॥ नारदपारषसोंकहै तुनडकथाहि
तधार॥ इहतुधहतेननहींअरवरभयोसंगार॥ २१॥ चौपई॥ क्रोधव
चनरपकहेमरनघलि॥ कीनासभकुलनासमंदमति॥ सभकोंकी
नवहुतदुगकारा॥ अनभपूतअषवचनउचारा॥ जोकुलकेयोह
तअधकारी॥ जाहूहलनिहलेकहहकारी॥ वेगहनतवोहितगहिला
ए॥ तिनसोंओहनवचअगराए॥ कुलनासकहुतमरनहमारा॥ १
तिनमनमांहिनकीऊविचारा॥ दीनीषहनहमारेदासा॥ सवजग
महिकीनोउपहासा॥ २२॥ दोहरा॥ कुलओहनहमपरातुमहिमरन
मवरओनोहि॥ कंन्यावैरीकोंदईआलामेदीमोहि॥ २३॥ सोरठा॥ तउ
पाव॥ चौपई॥ कहिओहनमकतठनडनरेसा॥ जैसेंतुमलिषपोसंदे

नं॰ श्रं॰
भा॰
२२५

सा॥ मदन किधो नैसी विपकला॥ पत्री बीच लिख्यो जिमराजा॥ आ
तानम मैरी इन नाही॥ कीनजो लिख्यो पत्री मांही॥ मदन मोहि पठि
कावचाई॥ वडल दौरन्म मलिख्योवनाई॥ तिह बालक कों विषयादी
जै॥ पत्री देषत विलमन कीजै॥ २४॥ चौपई॥ जिनके निस दिन रक्षक
हरी॥ तिनसों विघन सकल कोउ करी॥ भक्तवत्सल रिषि के सगुपाला
सदा करत भगतन प्रतपाला॥ केस भंग कर सकै न कोई॥ जिह रक्षक
पदमापत होई॥ जदपि सकल नर हिये पारा॥ वारू कामा समर्थ तनपारा
२५॥ दोहरा॥ हारिओं हिसद्दसवल जिन सहाइ सतपुरारि॥ षलवित न
नमन करत कछु ग्यौरे अपमगवार॥ २६॥ चौपई॥ जदपि सुर हिरेत
कन जिनने॥ तदपि सुरिस्राव हिग्ररि तिनने॥ सकले ओं हि भंग वल
हारी॥ जिन कारक क पकसुरारी॥ भगत फिरहि तिरभपन जग मांही
हरषसोक उपजत जिय नाही॥ वंदहास निज भगत सुपाला॥ दुष्टु
ष्ठि अति दुष दुवाला॥ कीना मंतर हि पद्दलास सों॥ नासक रोंगा वर
हासकों॥ करत नहदै विवेक विचारा॥ महापतन अधरम हमारा॥
२७॥ चौपई॥ जैसु तन मन नमै मय क है पह जिय रदविषराज॥ पीके
सबकों हनों मदनपकों कहकाज॥ २८॥ चौपई॥ मन मदि हि नृपन दुष
ताराषै॥ सुषतें वचन मिष्ट ना भाषै॥ मदनसिंह के साप भगत हरि
रपहारे आपलिहय वसर॥ दुहन नृपन कों कीन प्रणामा॥ तिक
रनाह कीना षिआमा॥ सागन कर भूपन वद्दम सुषसों॥ अंत हकर

नजरगयोदुषसों॥ तीनोमिलवैठेरकनाहर॥ तिनमहिचंदहा
सहंहरबर॥ कुसभगनराजनकोराजा॥ अमिलरूपसबनेसिर
ताजा॥१९॥ दोहा॥ प्रजालोकअरुछत्रकोजआवहिमिलवेकाज॥
प्रथममिलहिहरिभगनकौंजानहिराजनराज॥२०॥ चौपाई॥ चंदहस
समुरधुनहंरखुव॥ निरषजरीक्कातीषलकीनव॥ गुरुवैठेइन
वद्योप्रनापा॥ दुहुंदिशिजिपमहासंतापा॥ सदोनपरनभगनको
तेजा॥ कहिनसकनकछुजरनकलेजा॥ कहुंवसमेतकलिंर
तुलावा॥ हंगोवांधउलदलरकावा॥ मारकरीहीचोडुपभारी॥ द
पानपरनडरुअविचारी॥ मदनचरहुभगनरहेमोनपर॥ सोजडव
होभवनविसाकर॥२१॥ दोहा॥ जैसुनजनमेजेकहैहेनडककथाहे
कान॥ मदनसिंहअरुहरिभगनगहअपनेअसथान॥२२॥ चौपाई॥
तापाक्केरुपवचनकहेनव॥ कहकुअबहसतकहपठवोंअव॥ खे
सीवांतेंकहनपरस्पर॥ आपनभयोहतनिरअवसर॥ कौनहल
रपपवीपत्रिका॥ वनिपालनकिचपर्मक्कविका॥ पातीहतनरपन
करदीनी॥ डहुंधमाध्येंधरलीनी॥ पातीपरीडहमनकाला॥ अैसो
लिष्योहलांनधुवाला॥ केन्याजीवनवंनहमारी॥ मांगनहेपतिह
क्काचारी॥२३॥ दोहा॥ रामकुवरसमकलेअरेमहांलरवलवान॥ ले
मपवहीजेमदनकोंअैसोलिष्योरजान॥२४॥ चौपाई॥ डहुंधप्राने
हनभयो॥ पत्रीपढनसोकडरगयो॥ जोमैंवांकनयासबवाला॥ सो

जै॰ भू॰ भा॰ ३३९

रथनाईसहज्ञविधाना॥कौनहूलघुरमदनपठायो॥नापाकेग्रसिवे
गमराऊ॥मदनसिंहकोपितावुलायो॥सकलहमांनभायसमुझायो
कौनहूलघुरमदनसिधारऊ॥अवहीचलहुविलंबनिवारहू॥पिल
श्रीबासोंमदनसिधायो॥रथचढचल्योकुलमनभायो॥सुंदररथ\
मणिगणचमकारा॥पवनवेगहयचलतअपारा॥३५॥नारदउवाच
दोहरा॥कुंतलपुरसुतनकोंपठयो इहबुद्धभूपाल॥वैरस्योहरिभग
नसोंजिहरक्षकनंदलाल॥३६॥नारदअर्जुनसोंकहैसुनहुकपाध\
रभाउ॥अश्वमेधकेजग्यकोषटपंचासमअध्याउ॥५६॥इतिश्रीभारथप
र्वणिअश्वमेधपर्वणिभाषा॥षटपंचासमअध्याउ॥५६॥हरिहरकेनरहरनाम॥ ॥जै
मैमनउवाच॥चौपई॥जैमनकहैसुनहूनृपपहमन॥मदनपठा
रथयोबलहरषवन॥चंद्रहासकोवेगवुलायो॥दैसुरदरसनिजदिग
वैठायो॥हितसोंमलककदमनकीना॥मनमांहिवैरभाउधरलीना
वहुविधप्रजाकरीअपारा॥पुत्रसुनहूरकवचनहमारा॥हमरे
कुलकीग्रेसीरीता॥सोतुमकहौंसुनहूधरप्रीता॥जोआहैकन्यका\
हमारी॥प्रथमेहमैजगमहतारी॥दोहरा॥एपरीपमैवेपलेमार\
ग्रंविकाद्वार॥मनवांछतफलपावहीजोसेवैहितधार॥५॥चौपई॥चं
द्रहासकहिसुनतनपरेवितन॥हमरेहहदेविषसेवानित॥सदाकरतहौं
कुलसप्रणामा॥अवरदेवसोंनहिमुहकामा॥एकदेवहरिकीमन
मांहीं॥अवरदेवजावोंमैंनाहीं॥अरुजोतुमरीआज्ञाऐसें॥जोतुम\

कहो करो मैं तै सें ॥ जह लग कहो नहां चल जावें ॥ इन्हा करत्रंवि
क्षा मन वों ॥ जहां नहां ग्यान मा विराजन ॥ व्यापक सकल गैर रब्ब
छाजत ॥ ३ ॥ दो ॥ ६ ॥ इहभुत इह भाष वचन लह तइ भगत निहसोग ॥ वी
नह मारे गोत्र कीउ चतन कारन ते लम मजोग ॥ ४ ॥ सो ॥ ८ ॥ जो लग करह
समान वार दिवस की ग्रव पल लम ॥ जा इ श्रंवि का स्थान संध्याकों प्र
जा करइ ॥ ५ ॥ चौ ॥ ६ ॥ जेसुव कहै हन इकु कहमाला ॥ भगत सम सुरकी
मानी वाला ॥ न पश्चात रहियो विविध प्रकारा ॥ वंदह्यासनि जमव
न सिधारा ॥ पाछे नर पवं गलय लाय ॥ देसासना वचन लम भजाए ॥
मत्र भए लम मन तवौ रानी ॥ कलह मरी आतात हिमावी ॥ इम रास
सु हियो लम रेकर ॥ नास करत्न पढ पो वन गह वर ॥ लम वालक कों
लज वन गाए ॥ का रश्यां ग्रती मो पह लाए ॥ ९ ॥ दो ॥ ८ ॥ सो इस सुग्रवर
पभ यो मो सुग्री भरतार ॥ वह हथन लम मनवमि है ग्रव निहकरइ संवा
द ॥ १ ॥ चौ ॥ ६ ॥ ग्रव वह वालक भयो प्रपाला ॥ वइ रों लम महावडी वंश
ला ॥ सो हम वग सो लम रोञ्जो गुन ॥ जोवह वालक नास करइ पुन
जाइ पुरुह षहस देवी हारा ॥ गुपत वैवि घेभवन मे जारा ॥ नरख्यावे सं
धाम वमांही ॥ तासों लम वोलइ कछु नाही ॥ ताकों वेगपकरवे लीं
जै ॥ तन छिनछे रह कहस की जै ॥ जो लम वइ रखे रकार आवइ ॥ म
नवचक्रम करश्रुति इष पावइ ॥ ६ ॥ दो ॥ ६ ॥ जो लम सुग्रवकी वार
पुन हलन कीन ग्रतिमोहि ॥ तो मारो चंगल सम वीजन का जेता रि

अ·श्रु ९॥ चौपई॥ जो तुम सत हू नन हू माता॥ तो तुम हूंवों सहतपरवा
भा· रा॥ कुल समेत तिहि भी तजु नावों॥ नरनारी जमपुरी पठावों॥
३३२ मुहु जो हम रास हू मारा॥ वां हरेहु तुम मुई भंडारा॥ दिन चौथे का
रज करलीजै॥ संध्याम मैं नास प्रति कीजै॥ राष हूह हे गुपत पन घह
वाला॥ निहवें करहु सतु कों ताना॥ त्रप्रकल्पो जनम नेजम पछिलप
ति॥ उन रहीजै प्रनमन हहरषति॥१०॥ दोहा॥ जनमे जानरपग्रह
ई कहु जै मन सम फार॥ कंन्यादी की कवन कौं कुंनल पुरके राइ
॥११॥ चौपई॥ जै गुन कहे सन नहु नपकाना॥ मनन व चकम वचन हू नै
स विधाना॥ जो लम परको त्रप्रकहैं अब॥ करविलार सन नाव
नेहों सव॥ कौन हूहल राजा वलवाना॥ हरभयो सेननन की हाना
ननन किये स्रव होइ न नाके॥ इक कंन्या जनमी फिर वाके॥ चंपक
मालन राषो नामा॥ गुन निधान नन छवि गुभिरामा॥ अस्रभसगु
न सुपने हेवे नरप॥ मन महि गुनि डरपाइ नराधिप॥१२॥ दोहा॥ नन
परसी मन रेष ही निसा सुपन के मांहि॥ तां तें नरप विं नावही धीर
न पावहि नाहि॥१२॥ चौपई॥ कुंनल नरप रकहूं नतु लावा॥ ताकों स
कल हूतां न सुनावा॥ गालव रिषी वसे वन मांही॥ हूनवेग चलजा
इ न हांही॥ जानन हैं व हस सुपन केल छन॥ गालव गुनि वर महां वि
चछन॥ रिषपहि हू कलेहु सव वाता॥ पहस सुपने नाहिन कुसला
ता॥ होहि कला चित त्रमन विनासा॥ तोहरि भजों न जों सम आसा॥ गा

लवकुसधीकमलकोंदासा॥ कहैसभकोअर्थप्रकासा॥५॥ सोरठा॥ अर्थ
सुभकाकहैसुनिमारगसुकक्रवनाइ॥ ताकोंलाबहुविनयकरहनन
हांचलजाइ॥५॥ चौपाई॥ इहालेकरहनसिधायो॥ गालवरिषकेआश्र
मआयो॥ सुभगठौरगंगानरजहां॥ कुटीमांहिवैठोरिषतहां॥ हायपजो
रवचहनकहैसब॥ इवकुंनलपुररिधीचसोनव॥ ननछिनरिषकुं
नलपुरआयो॥ नगरवीचआररवडपायो॥ गालवरिषरपग्रहलेग
यो॥ सिंहासनग्रवहासनदयो॥ सजआरतीआपनपधरी॥ पूपदी
पसेवाबहुकरी॥६॥ सोरठा॥ कुंनलनपनोओरिषहिविधवनप
मकीन॥ विनयकरीवहुरोंनपतसुनरिषमहांप्रवीन॥७॥ चौपाई॥
निसपुलिसुनभसुपनमैंदेखो॥ ननआपनासीसविनपेखो॥ सीसर
हिनदेखोकायातन॥ तातेंमहाचिंतवाढीमन॥ पहविचारसुननिप
ढहरायो॥ तुमकोंहनपगाइबुलायो॥ सुनिवरमोपैकरुणाकीजै॥८
सुपनआयलछनकहिदीजै॥ आपअरिष्टसुपनकोंजोई॥ प्रगुरुकों
सकलसुनावडसोई॥ दूसरैभाखोअलरकपति॥ सोइकहोमोकोंरि
षहरवन॥९॥ सोरठा॥ सुपनाआपअरिष्टजोमोकोंतोइसुनाइ॥ भाखो
मोरुअलर्ककोंदूसरोप्रपगराइ॥९॥ नारदउवाच॥ सोरठा॥ पहवव
कहिमगराइनारदपारपसोंकहहन॥ गालवभयोकृपालआपअरं
पोसुपनको॥१०॥ गालवउवाच॥ चौपाई॥ गालवकहैसुनहुनृपवीप
न॥ दूसरैभाखोअलरकप्रत॥ सपनाआपअरिष्टजेउसव॥ बरन

स॰ग्रं॰
भा॰
१३८

सुनावोतोहिसकलसुष॥जोसुपनेमैंसीसनदेषे॥मनक्रापावि
नसिरअवरेषे॥एकपक्षमहिसोनरमरई॥जीवनकीआसानहि
करई॥जोनरपरमविवेकीहोई॥श्रीगुपालभजलेवैसोई॥अवर
सुनहुलक्षनेभूपाला॥जैसेषगवैसहिजिहभाला॥४४॥दो॰॥गा॰॥वार
सवीलकपोलजोइनपंक्तिनमहिकोइ॥सुपनेवैसहिभालजिहप
कमासमृतहोइ॥४४॥चौ॰॥जोनरयहसुपनानिसदेषै॥अंधकार
गगनेनरपेषै॥आंधीपवनसवदभयकारा॥भमतदेषैहैकागआ
पारा॥सवदषगनमथिसुनैअकासा॥सोनरमृतकहोइरसमा
सा॥जाग्रतअंगविमलकवताकी॥सुपनेवीचमलिनदुतजाकी
सामसरीरलिंगअतिभारी॥कर्मचंडालकरैहितधारी॥सुभगय
मैजाग्रतसवधाना॥सुपनेअवरअकीर्तिविधाना॥४३॥दो॰॥सो॰॥सो
नरमृतकौपावईअवधनाहनौमास॥होइविवेकीहरषमैजोलग
हरमहिवास॥४५॥चौ॰॥जोनरयहसुपनानिसदेषै॥अपनीदेह
कहवसपेषै॥रक्तभरीअरुभरीपाकतन॥अतिदुरगंधदेहहरपै
मन॥जोनरयहसुपनानिसपावै॥अवमासनिहचैमरजावै॥सुपन
अवस्थाकौनहलसन॥हरकोंसिमरजोहिसभश्रोगन॥कवहूंलेन
अस्थलहिंवावै॥वहरोगवपुसकमपैनावै॥कवहूंसिरजांगाअवलो
कै॥यहसुपनासभअसुभविलोकै॥४५॥दो॰॥सो॰॥सपनमासलग
नीवईपुत्रनपावैमृतमसोर॥श्रीपतिकोसिमरनकरैपुरुषविवेकीजो

672

673

ई ॥२१॥ चौपई ॥ वहुरो कहौं सुपन के लछन ॥ सुनकौं मनहलनरपन
विचछन ॥ नरनै अपने के सनिहारै ॥ असुभ होइ सो सुपन हिहारै ॥ द्वा
दीम ह्लभ समसनर होई ॥ कालेसाम विलोके जोई ॥ पोहै सेन विकार इथे
गारा ॥ अष्टमास सोई होइ छ्वं तारा ॥ जल निध वडुन आपवि वारै ॥ रूप
वीच अपना लनतजारै ॥ कहीनर राखे हैं गयागे ॥ उहरू सिर पर वै उवना
गे ॥२२॥ दोहरा ॥ पांचमास लगते मरै मन वचक्रम जिपनान ॥ होइवि
वेकी पुरुष जो भजनलेवै भगवान ॥२५॥ नारद उवाच ॥ सोरठा ॥ सुम
कथा यह अरिष्ट कौ लछन अति रिष कहत ॥ कथा सुधार समिष्टक
हि नारद सुन पांडु सुत ॥२४॥ गालव उवाच ॥ चौपई ॥ कहि गालव सुन
कौं मनहलनरप ॥ दिलकौं निश्चल राषन राधिप ॥ जो सुपने मह देषत र
निहारै ॥ विहा कंचन कोंन निहारै ॥ रूपे अरु सोने इन जैसी ॥ सर्प लि
लकी विलोकै जैसी ॥ चारमास लग जीवै सोई ॥ ता पाछे ताकी मृत हो
ई ॥ सुपने मांहि आन निसदेषै ॥ अति विकराल रिछ पुनि पेषै ॥ रूक
रश्च रू वानर सों लरै ॥ निजवपु का न देषन डरै ॥२६॥ दोहरा ॥ सुपने न
नमहि नष पुभरे देव सुपने मांहि ॥ तीनमास लग सो मरै निहचें जीवत
नाहि ॥२७॥ चौपई ॥ जो अह पत्नी कौं न हिरै वै ॥ अरध नारका कौं न हि पेषै
हैवं रमन भरिष्ठन आवहि ॥ द्वादस मास नेम तन पावहि ॥ नि[illegible]
लपन रूप विकारा ॥ लौवे तन अस्थूल अपारा ॥ कारे के सब रूप सा
मतन ॥ हीर हसमनुष छुरपा तन भव ॥ नीछन मसह गुरु तनु निन हा

४२

674

न॰ मे॰ या ॥ दिषियन कालमार षेमाया ॥ वैसेंसुकर परश्रमवारा ॥ लेस\
भा॰ वयाकोंकरहि प्रहारा ॥ २२ ॥ दो ॥ रा ॥ भागे तिनकों देषके परनगिरे\
२२१९ उरपाइ ॥ वहुपीछा नहि छाड़ हौ आगे भागा जाइ ॥ २३ ॥ चौ ॥ ई ॥ वह
मारे यह करै उकारा ॥ तिह हँ मास होइ संथारा ॥ गालव कहै सुन
हु भूपाला ॥ सुपना केलहु नतन काला ॥ अरुण वसन अपवापर
सामा ॥ अपने तनपहरे अभरामा ॥ रहु नहिसा आप चलजावै ॥ सोन
र एक मास सहन पावै ॥ निज पति विंव केलहु तमांही ॥ निरषे सी सक
वैंधपर नाही ॥ सोनर एक पक्ष महि मरई ॥ होइ सो पहुदिरि सिमरन क
रई ॥ २४ ॥ दो ॥ रा ॥ जो दिन वेती सुवनि सों करे सुपन महि भोग ॥ तन
पर छी हरन सला पवेन आवे सोग ॥ २५ ॥ चौ ॥ ई ॥ उ सहि तारसों जल
अनाजन नर ॥ भछन करे सुपन के अवसर ॥ जो निहपर लेवे अपने क
र ॥ आउ दिवस लग जाइ सोइ मर ॥ तिनकों नादिसरूप निहारे ॥ परेक
हुं पह हाथ हमारे ॥ या ही सें छीड वनआवे ॥ काम षीन मनमांहि वरा
वै ॥ दिन कील स्या रही हिं यें वड ॥ निसकों सुवमी सुपन मिलीन हइ ॥ प\
हरे वसन अरु तन अरु स्यामा ॥ मृगनैनी उनकु व अभिरामा ॥ २६ ॥ दो ॥ रा ॥\
तिन तिय को यह नरकहै क्षीण कीजे काम ॥ धजा मेल कारले चले तिस
हि सुरूव कों वाम ॥ २७ ॥ चौ ॥ ई ॥ चले मांहि होउ दिसर रहु न ॥ गानकरनउ
निहसन सुरित मन ॥ जो कैसे सुपना कोउ पावै ॥ पलछिन मरै दे\
गम दिजावै ॥ सुकरासुकर पर चढि धावै ॥ गाव नरहु न हिसा सिधा\

वै ॥ जोश्रीसाध्रुपनापावैनर ॥ ऊठेनसोपानाइनवहिमर ॥ ध्रुनकोनरह
लध्रुपनेमांही ॥ ननपरसिरनमदेषतनांही ॥ जिहलनक्कापाम्रिरविन
होई ॥ एकपक्कमनपावैसोई ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ एकपक्किमहिनासनमपन
वचक्रमनियमान ॥ श्रीरङपाइककूनहीमनसिमरहुभगवान ॥ ५९ ॥
चौपई ॥ आपश्रुरिछनपनकोजोई ॥ गालवकहोनपनप्रनसोई ॥ पुनक
विकेतिपवच्यो इलासा ॥ ध्रुपनपनाथवककहोयकासा ॥ मनलीनोभि
पश्ररपश्रवरको ॥ वरननवैपससारंगधरको ॥ लोगनहिमनकीनोसन
वाना ॥ पहश्रुरुभनकहोविधाना ॥ ध्रुपश्रकश्रध्रुपतपनैहैसोऊ ॥ प्रग
टहनावनहोंकहिसोऊ ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ सोवनध्रुपननुदेषहीसुषीदुषी
नरनार ॥ ताकेलक्कनध्रुपश्रध्रुपतुधननकहनविचार ॥ ५२ ॥ ध्रु
पध्रुपश्रलक्कन ॥ चौपई ॥ प्रथमेध्रुपध्रुपनाहनलीने ॥ सकलगुनी
ननिहचेकीने ॥ गोसालानीरपकोंपरसे ॥ राजाकोऊदेषलाहरसे ॥
मिरनमिलेघ्रुनकोंदेषे ॥ वडेपोलहारपरवनपेषे ॥ श्रीरमलीनपा
नीनरजावै ॥ वहुनसत्रुजीनेघरआवै ॥ वेसाकेद्वारेडवजावै ॥ पुनश्रव
देषीकौरसिपावै ॥ विद्यालेपकरेश्रुपनेनन ॥ रोवैमनकमधोजावेम
न ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ ग्रामसभक्कनजानजोदरसेनिसनारनर ॥ दुषीहोइ
कल्यानध्रुविघेधनधापनकरै ॥ ५४ ॥ ध्रुपश्रध्रुपध्रुपनवनैना ॥ दोहा ॥
कहोंअध्रुपनपनाहनक्कजोदरसेइहभांत ॥ रोगीमनकोंपावईदुषी
दुषीहैजात ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ नगनसंदेषेअपनेमन ॥ रजकलसंवरप

675

मं॰ग्र॰ हृदैलन॥ विहूलविंगमनकालिमहरसै॥ मलवूडैहावानलपर
भा॰ सै॥ फांसीसमवलिषेंकोउदेषै॥ कोकाहूकोमारतपेषै॥ कोउदाहवे
३५॰ मारनधावै॥ महिषअंदषरपरचढधावै॥ अचीगाहरलेंमनदाई
कैपावककैजलपरपरई॥ यहसबपनोनिसकोकोअपावै॥ तोमी\
मरैसबषीधनजावै॥ ८५॥ दो॰॥ मारतजेहैचरनसोंहूकरसब\
नेमांहि॥ निगलजारनिहमानतनमहतमग्रषवाहुषपांहि॥ ८६॥ चौ
पई॥ निरषेदीपकजोनयनासी॥ लरावेलपीवेलषनासी॥ पकजु
वैलोहालिलपावै॥ कसेरूपमहिजलसोंनावै॥ यहसुपनानिस
पाइनारनर॥ सुषीहोइरहुविपाजावेमर॥ सोवनसुरसभसपनग्र
मिलाषे॥ काहूकेआगेनहिभाषे॥ जोनरपरमविवेकीहोई॥ यह
विधकरैआपथिनसोई॥ उठकेआनकरेइसनाना॥ तिलकंचन\
देवेद्विजदाना॥ ८७॥ दो॰॥ अनतनदेवनकीपढैविधवनकारहै
धन॥ यहप्रकारमिटहैकछुअशुभसमकीहान॥ ८८॥ चौपई॥ शुन
आपथिनं॥ जोनरअशुभसमनिसिपावै॥ करेआपथिमहोसुषि\
रावै॥ सतनकोमेटिसकैनहिकोई॥ ननकिषेंडुषपंदिनहोई॥ दैन
विह … नेंदिरवसै॥ जाग्रनरहैडुरिनसवनसै॥ अपवाधिवइगी
केमंदिर॥ सिमरनकरैहोइडुषकंदर॥ इहडपचारमिटैसपनाडु\
ष॥ जानग्रमंगलहोनमहांसुष॥ यहमनरतनदामकोजानहु॥
इहकनसकलगुनीजनमानहु॥ ८९॥ इतिरतनदामग्रंथः॥ मा\

677

५९॥ गा॥ उ उच॥ चौपई॥ सुनकौ नहलन रूप सहसाना॥ हरि सिमर
इ जौलौ ब्रहम पाना॥ जब लग तव मना हि न बिनसे तन॥ हरि कौं सि
मर इ ना रव सइ वन॥ मन अभ्यास जोग का कीजै॥ सो इंद्र समान
नि पलीजै॥ जा का व्यर घर मांहि प्रकासा॥ जैसो है भूपाल प्रकासा॥
व्यापक ब्रह्म सकल तन नैसें॥ पारून पर सम कलन रूप जैसें॥ वा
स कुवास एक रस नैसें॥ भिन्न भाव जानन नहि कैसें॥ बास कुबास
एक रस जाके॥ सम ना भाउ सभन सों ताके॥ ९०॥ दो॥ हा॥ जैसें व्याप
क ब्रह्म है सब नीच महि सोइ॥ नहीं वदन घर ब्रह्म है जौं जल प्रति
बिंब जोइ॥ ९१॥ चौपई॥ पर बिन ब्रह्म अनेक दिषावत॥ जौं जल इ
रेन चंद दुलावत॥ जो जल नपन कलस महि डारै॥ ता मैं ससि प्रति
बिंब निहारै॥ तो ससि को सीतल सुभाव नित॥ इस न सीतन नहि हो
न चंद विन॥ घट जो कुंभ भगन न न होई॥ ससि कों बिघन न लाग
न कोई॥ ससि जैसी ध्रुव गगन विराजन॥ तैसें ब्रह्म सब घट महि राग
न॥ ९२॥ दो॥ हा॥ तैसें घट लनन बिन सई ज्ञान महो इन नास॥ मान इमी
रन बसन नम पह रन नौतन बास॥ ९३॥ चौपई॥ ऐसो परमातमा म
गन भ्रम॥ तिह रूप भज इन जइ विषयास भ॥ रूप व्याप [illegible] महि
बसपांव दस॥ कर इ जोग साधन बन महि बस॥ इंद्रिय रस तें अम
र हाव इ॥ मन बस कर ज्ञान मरस पाव इ॥ मन थुर रहे इंद्रिय न
साथा॥ ता की बरन सकना वों गाथा॥ जो कहु करतौ है इंद्री रस॥ ति

गं·ग्रं· नकौं कछु स्वाद नहि रस कस ॥ जोलप है घट मंदिर मांही ॥ स्वाद
भा· भोगता जान इलाही ॥ ९४ ॥ दोहरा ॥ रस वारी लह पवन कौं तिनतें
१५२ आप विचार ॥ नहि वारी अनि पवन लख भूपन कौं सुख सार ॥ ९५ ॥
चौपई ॥ उर मंदर रस मन कहा रास ॥ तिन कौं कछू न सुख दुख रस
कस ॥ मारी को सुख पवन न होई ॥ सुख भोगन मंद रस्न पञोई ॥ म
न तें जीव करम करम भयो ॥ वस लाल स्वाद जान दुरग यो ॥ रस कीवा
स्वामी वक रे नव ॥ रस इंद्री सव थान होन नव ॥ इंद्रिय पाछे मन च
लआई ॥ मन पाछे बुध हान सिपाई ॥ पह मीनो अह बुध मन सा ता
नहि अकार इन कौ किन जाना ॥ ९६ ॥ दोहरा ॥ सुन इन्द्र पन मन जीउ
उन उर नी सवी मान ॥ इन कौ रूप न रंग कछु नहि अकार जिय मा
न ॥ ९७ ॥ सोरठा ॥ अलख कह मन गता हि ता को रूप न रेख कछु ॥ तां तें
अनरता हि पहलीनो है आनमा ॥ ९८ ॥ कौ[illegible]व ॥ दोहरा ॥ अप
मकल्यो रिषब उस रक वद्ध रक है लमलीन लीन भए लम एक तें सो
कहू रिषी प्रवीन ॥ ९९ ॥ गाला व उका व ॥ चौपई ॥ गाल व कहे सुन इक कौं
म हल ॥ एक को अस रमर ह्यो मल पल ॥ इंद्रिन के रस वस परमायो ॥
तां तें अलख लीन करणा यो ॥ अप मद अस आन मद है एक को ॥ इच्छा सो पुन
भये अनेको ॥ ता का सुन रहे छीन न रेसा ॥ मन व वक्म पर ष्कलिउप
देसा ॥ पावक अह रोहिका पकावे ॥ तिह कर सव रस अवर सुन पावे ॥
॥ दोहरा ॥ सुन वह सव रह रहे कहै भीनर पावक को र ॥ कर तल सव

हउवाच॥दोहा॥कहिनाररुपारषउनहुंपहुबचरिषगराइ
कौनहुलषनिरिषकहुनउनहुंश्रवनविनलाइ॥७९॥गारुडउ
वाचचौपई॥उनरामाउपनेभयकारी॥तेउदरसहिजिनभगनवि
सारी॥जिनकेमनउपजोनहिग्याना॥नहिसिमरोहिनसोभगवा
ना॥सतगुरुकीसेवानहिकीनी॥साधसंगमिलसीषनलीनी॥जिन
गुरुसबदनहिरदैधारो॥कबहूंनहरिसिमरनचितलायो॥सुक
तउपाउनकियोजाहिनर॥तनकोआपीअपागयोमर॥जिननहि
करीदेवतननसेवा॥नहिप्रजाकीनीगुरदेवा॥५०॥दोहा॥जिनकब
हूंसिमरोनहींभगवानहोइकिपनाहि॥देवचरनसूरजभगवानन
हिपूज्योभवमांहि॥५१॥चौपई॥जिनकेभवनहरिपितुमाता॥ताकी
सेवकरीनहिताता॥अभ्यागतकीकरीनसेवा॥नहींअराधेदेवीदे
वा॥वेदबचनपारगतनजदीना॥अपनेमनतरंगमनलीना॥ऐसेपा
पीभवभ्रगताने॥पावतसपनेभ्रमभइराने॥इहभावमधिदिवस
बिलावहि॥भयकारीसपनेनिसपावहि॥नहोउपाउकरनसवंता
को॥नहिसिमरतमनपतपरमाको॥५२॥दोहा॥पुरुषबिबेकीहो
इजोमनमहिकरैविचार॥समग्यानलछनसपनतनछिनभजेसु
सार॥५३॥चौपई॥पुरुषबिबेकवानहैजोऊ॥जोगसाधनासाधनसो
ऊ॥तेनरकरतजोगअभ्यासा॥होतगुरुसबदहरदेपरकासा॥पनदेव
करसेवनबमवासा॥करतसकलसंकल्पबिनासा॥निसदिनप्रीत

गे·ग्रं· आतमा लागी॥ इंद्री जीतनी दलन मागी॥ लिहू प्रहमन जपको
भा· उरनाही॥ मरमा ते आतम रस मांही॥ तिन कों नहि व्यापत स्वप
३५१ ने उर॥ हरिरस मन जो धरे ध्यान पर॥ ५४॥ दो॰॥ तां तें कौंन हल
ह्व नहु लेम जो सुपने बीच॥ तन पर सिर देखत न हीं एक पल छ
मसीच॥ ५५॥ चौ॰॥ एक पलक्ष रपतो हि विनासा॥ तां तें करउ
जोग अभ्यासा॥ भाग उरा जवेग बनजा वहु॥ सिमरन करहु गुरु
मग पावहु॥ विनसत सकल तिमर अज्ञाना॥ केवल हृदे प्रका
सत ज्ञाना॥ मन अभिलाषा जोग मिटावत॥ इंद्री जीत सांत चित आ
वत॥ तां तें होत सकल दुष नासा॥ समता आतम ज्ञान प्रकासा
होत जोग साधन तें सभ सुष॥ कबहू नहीं व्यापत सुपने दुष॥ ५६
दो॰॥ पची होत न नहि भव विषे पावत पद निरवान॥ सदा सु
षी कबहू न दुष ऐसो जोग रजान॥ ५७॥ चौ॰॥ जो नर अति म
तिमंद गवारा॥ सुपना पार न करहि विचारा॥ अरु भ सुपने दे
षत निस मांही॥ मन मह ज्ञान विचारत नाही॥ मेरी मेरी करत रे
नदिन॥ सिमरत नाहि श्रीराम एक छिन॥ विषयन के लालच ल
लचाने॥ रूप न दारा रस लोभ लुभाने॥ सुपने कीन हि करत अनीता
पाप अकार्य पार बनीता॥ हरि नहि सेव करत नहि दाना॥ अ
सिर व गुमान न अज्ञाना॥ ५८॥ दो॰॥ सुपना सुहभ विलोक के
हरि नहि भजन गवार॥ आगुरवी तो अपरस बजन मग पज गहार

दसहु अवनपर करमा को रस सोइ॥१८॥ चौपई॥ वेपावक पवनसा-
सलिपेंकरा॥भयो सन हुव हुच हरणपर॥सोपावकसरमा कहा-
यो॥चलो नुरुकों हू देरिसायो॥वहुरससवनजकी नोसाजा॥वैको-
सिंहासनन नसाजा॥हलकरवोलो परनगुनाजा॥छेतीकाउरम
सभकाजा॥जहांनामकिरसान धरायो॥हलनन जकै पजंक पवनभा-
यो॥वहुरकहायो नामप्रजापत॥तनप्रजंकपवन करी अवरगत
१९॥दोहरा॥वहुरों पुत्र कहाय ले वैठो आसन आस॥पिथ्र कहायो ना-
सन वउपमो ता नप्रगास॥२०॥चौपई॥होतो वहीपकपावकनव
तिसहीं धारे भेषअवरसव॥जहां भेसधा रयो है जैसा॥ताको नामभ-
यो तहु तैसा॥गालवकौलहु हलपतिकहई॥तैसें वलस्पकनगत्र
हुई॥मनतुपजी वभेषवहु धारे॥तानवानसोई आरविचारे॥वंही
रसवसभेषअनेका॥आरहूअंतत्र समैहै एका॥जडलातुहिता न-
है जहां॥व्रतप्रभाउ जानतिपनहां॥२१॥दोहरा॥जडलातुहितजहां-
नहीं तहां आनमापका॥तु लिपभावन वहीं मिरे करै साधसंग रेक
२२॥चौपई॥मन नक्षतिकौं हु हलभूपाला॥एकसमै हरिगपपाला
सुतदेवकी लेन के काजहि॥तहां करी प्रजावल राजहि॥वहु प्रका
रसेवा वलकीनी॥हलवंदमान जिपलीनी॥वलपरभएप्रसव
मुरारी॥हरषत है हरिवचन उचारी॥सुफले मांगले हुवौं हुतफ
ल॥जोतुम रेमन अभलाषा वल॥दीजे साधसंग हरमोकों॥तिम

भ·सु· रतरहौंरैनदिननतोकौं ॥ २४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दो० ॥ कुलकमें
भा· बलिराजप्रतिमैंअवदानसवधान ॥ तुममांगनरहौसाधसंगमोका
३४२ इंद्रराजान ॥ २२ ॥ बलिरुवाच ॥ चौ० ६ ॥ सुनबलिराजवचनउच्चा
रे ॥ सनमकहइनतुमसबहमारे ॥ तुमसाधनकोमंगलरचापन ॥ स
धनहिसकलनकोजनुमरीगन ॥ जनवसुरुप्रादिजनमजगलीना
हमततमवारसीननहिकीना ॥ देहधरतविनसततपुनप्रानी ॥ कि
नहूंतुमपरीतधनहिजानी ॥ आदिअंतकेवीचसतनहहीं ॥ मैंप्र
बलोकेसाधभगतवर ॥ करुनाकरतिनसवरतनापो ॥ इमस
प्रहैंमोहिकुन्नापो ॥ २५ ॥ दो० ॥ तेसाधतमरेभगतमोपरभय
कृपाल ॥ सुरहींयमहिटरसारयोतुमकोंश्रीनंदलाल ॥ २६ ॥ चौ० ६
तबनरकमीकहुहमहिलखारी ॥ कवनठौरतुमवासमुरारी ॥ त्व
मरीभगतमिलेजबमोकों ॥ अवरहिबनाइदियोहरिमोकों ॥ साधप्र
सादतुमहिहमपायो ॥ हटकरहिपैंभरोसोआयो ॥ तांतेंसाधुसंग
मांग्योप्रभुजू ॥ मनवचक्रमकरसमकहोंतुम ॥ बलिपरभएप्रसन्न
गुपाला ॥ रहहुकनकभवनबलीनंदलाला ॥ गालवतानरपतिविस्कवि
भाख्यो ॥ कौनकहलग्रंथनरसचाख्यो ॥ ३० ॥ गालवउवाच ॥ दो० ॥ सुन
होकौंनकहलरपनसाधवचनसभसार ॥ होहिदियालबनावंही
सर्वानमापुरार ॥ ३१ ॥ चौ० ६ ॥ जिनकाहुनमैंभगनविकासा ॥ मध
नकिएहैतोनप्रकासा ॥ तैसेंसाधवचनधारकूविन ॥ मधव

683

किये है जोग पंथ रहित ॥ जब हि काछ कौं अगन जरावै ॥ जा वर रूप
सोंन है जावै ॥ मैं विकार साधन के रसन ॥ भसम होत हिन सोंप-
न परसन ॥ जब हि विकार वासना जारै ॥ इंद्री विष पासार निवारै ॥
तब ज्ञान उपजै निरह हिय पर ॥ प्रेम दाम सों लेत बांधहरि ॥ ८५ ॥ सोर-
ठा ॥ प्रेम मगन की दाम सों भगवन बंधो ग्रपाल ॥ रटकरता जो ह-
रै मन हरै रहि कतन प्रभु नंदलाल ॥ ८६ ॥ चौपई ॥ संत सबद हर रहि हिय गहरा-
यो ॥ ज्ञान नरंतउ नव मकर पायो ॥ उर अंतर जागत न ते उनि तउन-
उपज्यो नव विचार विमल मन ॥ साधु सबद ग्राहत जिन कीन्हा ॥ स-
भग्यान मान गन जिय चीन्हा ॥ कहि वल साधु संग गुहि दीजै ॥ करुना-
सिंधु कृपा गुहि कीजै ॥ साधु संग तें होइ सकल सुष ॥ होत परम मंग-
ल विनसत दुष ॥ जुगन जुग री जै साधु संग सुरु ॥ सरन परे की लाज क-
रत गुरु ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ गाल व कहि तन होन पन जिन के हरे विचार
ते कहूं न साधु संग न मिन सरीर उपार ॥ ८८ ॥ चौपई ॥ यह मन वन रूप बन-
गई र समाना ॥ काया वन मा को अस थाना ॥ तिह वन कौं दावानल ला-
गी ॥ कं कनक काम क्रोध अनुरागी ॥ तस्कर मोह लोभ हैं कारा ॥ आरे दे न-
स ववारं वारा ॥ मन कुंजर था तिह वन मांही ॥ जरने लागो बीच नहांही
नव ह लीन लहूं ठ न लागा ॥ उपज्यो ज्ञान गरव जिय भागा ॥ नहह कसो-
न सरोवर पायो ॥ पावन कीन जलल रूप न अन्हायो ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ नर निक-
सो चाहै नहीं पायो सुष विश्राम ॥ साधन नाके वचन सुन ज्ञान जायो ग्रा

गो॰ ग्रं॰ भा॰ २७८

नमराम ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ इनमनमलमांनसरोवरपायो ॥ विषयावनकोंस्रग
नमरायो ॥ वनमत्रगयोमांनउपजीमन ॥ गालवभाषनकोंनहलहून ॥
कोंनररूपीदेहभयोमन ॥ मनरागरुद्रवनणोईधन ॥ कामक्रोधमाया
दावानल ॥ कायावनहिमरावमस्रनिवल ॥ मनहस्तीहूंदनपायोमनल
मांनभईइषगयोसवैदल ॥ ७८ ॥ दो॰ ॥ मनलरूपीसाधनरहरसमनवप
रसोमनमाइ ॥ तानप्रकासभयोहियेनिमझनिएकसभाइ ॥ ७९ ॥ चौप
ई ॥ मनतकथासभवेरप्रराना ॥ श्रवननहारकरनरसपाना ॥ वैननि
हारउघजोईआवै ॥ सकलवोरभगवनदरसावै ॥ ग्रानाउमीरनलैवैना
सा ॥ मुषवैहरजमकरैप्रकासा ॥ रसनारसग्रंवनउपजायो ॥ मोजल
सरवरमांनसमायो ॥ मनहस्तीसोनीरमांनवर ॥ साधनहियोबनार
रूपाकर ॥ मंनसवरकरिमलमहिपसो ॥ वनकोंविषमाम्योपरह
सो ॥ ८० ॥ दो॰ ॥ विषयावनतनवनपसोमांनसरोवरमांहि ॥ मुषपा
योस्रवगननहांविकसोवाहननाहि ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ लीनभयोग्रंव्रनम
लपायो ॥ तानउदितभ्रमतिमरमिटायो ॥ दिषियनदावाग्रनलग्रपा
रा ॥ मिनरायोसकलोसंसारा ॥ मनलिवलागरहीहरिचरनन ॥ साधन
केउपदेससनवग्रवन ॥ जेमुनकहैमुनहइरुपवीपन ॥ नारदकथाके
हनग्रर्जुनघन ॥ गालवकरुषकहिकोंनहलसों ॥ जोगवचनभावेउप
वलसों ॥ मुनेग्रवननमूपन परभाउ ॥ प्ररनभएसताचनपाउ ॥ ८२ ॥ दो
हा ॥ इति श्री भरपविलासमेपठाध्याय ॥ कविरहकनपरनभयो

मा ए चो ए स्थान ॥५२॥ गा ष उ षा च ॥ चौ ए ई ॥ कहि गालव सुन नरपत
श्रवन धर ॥ कहौं पुरातन कथा महा वर ॥ चार वेद हरि प्रगट किये
जब ॥ अस्तुत करी ब्रह्मन प्रभु कीनव ॥ तुम प्रभु मोर काढे सब धाना ॥ बी-
रज रूपी तुम भगवाना ॥ तुम बिन हम सर अवर न कोई ॥ आरत बंधन मध
हरि तुम सोई ॥ माया तुमरी विविध प्रकारा ॥ तिन ठगयो सगरो संसा-
रा ॥ तुमरी माया बगन सकत तिन ॥ तब तान उपज्यो जिन के मन ॥५॥ दो-
हा ॥ माया लागे आस जब करम करावै सोइ ॥ करम अहंकार ताहि होइ यह
सो बंधन तिहि होइ ॥५॥ चौपाई ॥ जो नर परम विवेकी होई ॥ करम सम-
पैं तुम पहि सोई ॥ ताको पाप पुन्य नहि लागे ॥ जनम मरन संसै सब भा-
गै ॥ जो नर कर्ता कर्म कहावै ॥ जनम मरन बंधन दुष पावै ॥ कारन है
कर्मन को कर्ता ॥ जो तुम विषे समर्पै धर्ता ॥ कर्म करै फल की नहि वां-
छा ॥ फल समर्पै सब रन कांछा ॥ सो नर भव सागर तर जावै ॥ जनम
मरन पुन तन न पावै ॥६॥ दोहा ॥ कर्म करै हर अर्पई फल मांगे कछु
नाहि ॥ ते लीके गर मलाक मों रहय नहीं तिन मांहि ॥७॥ चौपाई ॥ प्रथमे
जे इक कर्म रहन कीने ॥ श्रीपति विषे समर्पन हि कीने ॥ ते पुन कर्म काटही जै-
सें ॥ बरन हम नाव न होवि धनैसें ॥ बहुरो कर्मन फल अनुसरई ॥ तुमरे
विषे समर्पन करई ॥ इन कर्मन कों यह कारे तब ॥ जो कीने हरि अर्पन
तिन सब ॥ सफल कर्म कों निफल निवारहि ॥ निहफल कर्म सफ-
ल करि डारहि ॥ यह बच ब्रह्म तिन बषाने हरि प्रति ॥ ते हम तुम कों क

686

जं॰स्व॰ है महीपवन ॥५॥ सो॰ ॥ जैमन कहि सुनहो नपवन गालववचक्र कि
भा॰ सार ॥ कौन हलन पर्सों कहै हि तसों कहण धार ॥८॥ गालवउवाच ॥
२८५ चौपई ॥ गालव कहै तन हून पश्च वनन ॥ साधन सो जोगी जोगीवन
सो सिमरो हरि सो हि वताये ॥ जिह प्रकार हरि जोग न धाये ॥ हरिको
वस करलियो दास वस ॥ सोइ भजन मैं राजो नु मधन ॥ इक हरिकों
कर ध्याव हि जोगा ॥ इक गुनि भजनहि भिर हि मन सोगा ॥ वेद कहत
हरि सों घर वाला ॥ एक भजन हिरह विधन गनाला ॥ इक नर भज
हि जोग अभ्यासा ॥ करत मन वस तान प्रकासा ॥९॥ दो॰ ॥ प्रथ
म करम रेवक करत देह सुद्ध के हेत ॥ वहुर उ धाल प धाल कर
करत सरीर सुचेत ॥१०॥ चौपई ॥ पवन उदर घर कध नकरई ॥ जिह पा
छे कुंभक ग्रनुसरई ॥ पाछे वांधे मलह वारा ॥ भेद न स्पवन वक्र घर पा
रा ॥ वहुरों मान्तन करत अहारा ॥ मल हार कों करत विकारा ॥ पव
न वक्र वन नाभ चक्र पर ॥ ताकों भेद तने कजतन कर ॥ नाभ चक्र कों
भेद लेत तव ॥ हृदय पर कों आरंभ करत जव ॥ वहुरों रिदे चक्र पर गयो ॥ त
हां पवन इस्थित मन भयो ॥११॥ दो॰ ॥ रिदे कमल उलटा वहीं पवन नहे
वे नैं प्रार ॥ कमल करत सुधा वहुर माहत नक्र परजाइ ॥१२॥ चौपई ॥ कंठच
क्र गुन करत निवासा ॥ भेदत करत जोग अभ्यासा ॥ पंडत तेह ही के नव
द्वारा ॥ ताल चक्र व सकरत किवारा ॥ ताल चक्र कों भेद कियो वस ॥ अ
नेक नसों रोके द्वारे दस ॥ रोकत है इस द्वार ध्यान मित ॥ मन चलजावे प

बनस्तुचलत्विन॥बालचक्रजननमेघोजघ॥बसकीनीहैषहवा
रनव॥पाछेपुरबवायप्रबीनी॥सोनवगगनदिसाकरलीनी॥५५॥दो
हरा॥फेरहिमाहलहारदसबालचक्रकीग्रोर॥फिरउलटाइचलावही
ठाषहिक्रकुटीठौर॥५५॥चौपई॥दिकापवनक्रकुटीअस्थाना॥किवो\
त्रिवेनीकोअसनाना॥नासाग्रप्रनिरीछनलागा॥भोसबधानब्रह्म\
अमभागा॥ससकेग्रहजबसूर्जसमाना॥जमुनामलगंगावहरावा
निसदिनसदावंदग्रहनिरषत॥अविचलभपोनऔसलदनउत॥भ
योब्रह्ममहिलीनगयोभ्रम॥साभुपापीनाहिएकसम॥कंचनलोहद
कसमभयो॥मधुरकडुकरसरकहैगयो॥५६॥दोहरा॥उपनीसम
ताछांनरसनिरच्छोब्रह्मसरूप॥रूपवतायोगुरुसोंदेषीवस्तअनूप॥
५६॥गालवऋावा॥चौपई॥गालवकहैहमनोकौंकहल॥एकभजनहिद
हभांतमहांबल॥नासाग्रग्रनिहारतनिसदिन॥पाईनिरभपसांतहृ
देतिन॥एकतिरवीगुनिदहविधध्यावहि॥चिनचवनमहांनहांचलसाव
हि॥भाषदेवत्रिभुवनकीवामा॥कवहूनसोकसदाकुसलामा॥एकउ
पासीरामसरूपा॥तेनितभजहिचतुर्भुजरूपा॥हृदेकमलमहिदर
सनदेखो॥रूपसरूपहिएंमहिपेखो॥५७॥दोहरा॥वडूरतोउजोगीउ
रुषकरहिजोगअभ्यास॥मलहारवांधहिश्रपमविननहिकरतउ
दास॥५८॥चौपई॥परवपश्चिमपुषअनुसरई॥दष्यिनउतरपुनीत
मुकरई॥पहलेरेचकलहुसरीता॥पाछेपुरककरमनधीरा॥नापा

ने॰ग्र॰ हे कुंभकमनलावै ॥ मारुतनाभचक्रलेजावै ॥ बहुरोंपवनअरंध-
भा॰ करेजब ॥ हृदेकमलकीओरचलेतब ॥ ऊंडीकमलनाभकेमांही ॥ आ
२८९ ठपांषुरीनतिनहांहीं ॥ अंधाअषहैनाभकमलको ॥ सुधाकव
हूनहोतअचलको ॥ ९ ॥ दो॰हा ॥ नाभचक्रकोभेदकै कमलउदेकों
जाइ ॥ मारुतनीचेवलकरै लेवैकमलउगाइ ॥ १० ॥ चौपई ॥ हृदेक-
मलमहिपवनवसावै ॥ अष्टपांषुरीतबविगसावै ॥ नामधएकम
लोनसहसरल ॥ ताकोफिरजोगनसाधनवल ॥ ताकेमध्यरामको
वासा ॥ ररसेनाहिजोगअभ्यासा ॥ देषैरामरूपसबधाना ॥ अष्ट-
दलकमलवैनभगवाना ॥ वैजंतीमालाकोस्तुभमन ॥ वरहीसी
सगुपालसामघन ॥ कुंडलश्रवणपीतपटसोहै ॥ मुषमुरलीत्रि
भुवनभुनमोहै ॥ ११ ॥ सो॰रठा ॥ ऐसेंरूपहिकोंनिरषताहिसांतपरम-
र ॥ ध्यानकरतहृदकमलकोजेउभगतनउराइ ॥ १२ ॥ चौपई ॥ जेऊ
निरषतहैभगतगुपाला ॥ रूपवततभुजमोनविसाला ॥ नामहिली
नहोतहैजोई ॥ महाप्रकासताहितनहोई ॥ चौदहभवनदिषलिह
आवहि ॥ चितनवहिंजहांतहांचलजावहि ॥ होइरहैताकोहरिदा-
सा ॥ रोमरोमरविकोटप्रकासा ॥ ताकेश्रपरचरननलागहि ॥ पव
नअधारहिपेंअनुरागहि ॥ जोगमोहिजोपीनअभ्यासी ॥ प्रभुरितना-
हृदैसदाहुपरासी ॥ १३ ॥ दो॰हा ॥ करतपवनअभ्यासतेसूक्ष्मक
रनअहार ॥ वहुभोजनजलपानकीहोतदेहकोंभार ॥ १४ ॥ चौपई ॥

दृढजानैहैनाम्रतुसरई॥करनअभ्यासनाहिसुखनरई॥तिनकौंउ
हरमलउघहोई॥महाकष्टपावनहैसोई॥मलअहारपोरावइलेवै॥
जोनरजोगसाधनासेवै॥स्वरकनाडीपवनचढावै॥अवमलनाडी
उतरनयावै॥समैसमैसुषपाइअपारा॥स्वरनजोगलहइसहिप्रका
रा॥२३॥दोहरा॥स्वरनलिनकोजोगहैयहप्रकारतिनकीन॥वीरीह
लीसोंसकलएकवस्तजियचीन्ह॥२४॥कौहलवाव॥चौपई॥पुन
कौनहलववचनउचारे॥अतिसुचजैरिषहृदेहमारे॥ब्रह्मकहोन
मएकसमाना॥वीरीअरुहलीसमजाना॥गजकोतनअरुस्पलअपा
रा॥वीरीकोहैतनकअकारा॥औंसमसरदृढहैतनमांही॥यहव
चमोमनवहहरतमांही॥हमरेहृदेसंदेहमितावहु॥कहताकरस
भविधसमझावहु॥इनमहिएकवस्तकिमहोई॥उकतिसिधाइबता
वहुसोई॥२५॥दोहरा॥गालवकहितनहोरपनब्रह्मएकनिचजान
गजवीरीमहिरमरह्योनहनहएकसमान॥२६॥चौपई॥पिंडप्रका
सकियोब्रह्मजैसा॥कियोनिवासनाहिमधतैसा॥अगनिवासदाह
निमनाबहु॥तैसेंब्रह्मवासवहरमानहु॥दीरघदारअगनजारतन
वे॥वह्नप्रकासअगनउपजततव॥यहजोसूक्ष्मदारुतजरतहै॥न
हाप्रकाससबलपनिकसतहै॥तैसेंएकब्रह्मलतानीजिय॥नहहमैसो
तैसोनिवासकिय॥ब्रह्मएकतनन्रपकौंमहल॥पाउभेदसवहिरह्यो
संधुपल॥२॥दोहरा॥लघचौरासीतनमहिएकोब्रह्मनरेस॥महांत

म॰ग्रं॰
भा॰
३५०

होंनलषलरष्योहुरद्वरमांहिप्रवेस॥ ८८॥ चौ॰ ॥ एकोब्रह्मनन
चौरासी॥ घटघटमैंव्यापकसभरासी॥ सुषदुषनाकोकछूनहोई
सरनमैंसाषीजगसोई॥ सदाप्रकासदुदिननिसवासर॥ तिमर
हरनहुसरनहिसमसर॥ ताकोपापपुन्यनहिकोई॥ विमलप्रका
सप्रघंटिनजोई॥ ग्रैसेंरविप्रकासजगजाग्रत॥ पापपुन्यतिहक
छूनलागत॥ पुण्यवाप्रगनहोवकोऊकरई॥ पापवागोळेरनप्र
नुसरई॥ ८९॥ दो॰ ॥ रविप्रकासकोसुषनदुषपापपुन्यनहिहो
इ॥ तिपतनकछुप्रकासजिमसदाप्रघंटिनजोइ॥ ९०॥ चौ॰ ॥ दीप
प्रकासपवनमहिजैसें॥ देहीमध्यप्रानमानेसें॥ ग्रहमहिकोउक
रैमदपाना॥ कोउकरैसिमरनभगवाना॥ कोउकरैतिषभोगवि
लासा॥ कोउकरैकीर्तनपरकासा॥ दीपकपापपुन्यनहिलागै॥ को
धकरैनहिहितप्रनुरागे॥ दीपकसदाअलिप्तभवनमहि॥ दुषसुष
कछूनलागनमनमहि॥ दीपप्रकासभवनमहिजानहु॥ त्यौंतनमैं
प्रानमाप्रमानहु॥ ९१॥ दो॰ ॥ कायामंदिरकोधनीजोइकहावैग्राप
तिसहीकोंदुषसुषलगैजनममरनसंताप॥ ९२॥ चौ॰ ॥ साषीअन
प्रानमानानहु॥ दुषसुषकरनाकरमप्रमानहु॥ प्रानमनउकवहूं
नहिहोई॥ सदासुचेतअलेपकसोई॥ गालवकहैसुनहुएपवीपव
इकहिनवेरकहहुनभपहुरषन॥ एकपुरुषप्रैसेंहहुरपनहीं॥ ग्रंतर
ध्याननुरहिरसनमहीं॥ प्रत्यग्रगनमोकर्मजरावहि॥ गुरुवचसव

690

रहिसिमरससमावहि॥लीनहोनअवनहरदपुनमांही॥सिमरनसा
सहप्यानहिजांही॥२५॥दोहरा॥सोहंहंससमावंहीअंतरहिपअभा
स॥लीनभईसवरहिसुरतअबानमतानप्रकास॥२६॥चौपई॥वेउत
इउतसोतअरुआगत॥अंतरगतनखषकवडनमागत॥सिरगोअ
यमनतेंअंपिपारा॥विनरसनागुनकरतउचारा॥हिष्नासकाअ
गनिहारे॥ननसाधमनतानविचारे॥सोहंरामअआनमासोंजव॥स्वष
उपजोजगतस्मवेतनव॥हरिस्वरूपभोसमसंसारा॥त्रिगुणअली
नपाइस्वषसारा॥कवहूंनिरनकरैकवनावत॥रोवतकवडुसो
कउपजावत॥२६॥दोहरा॥सोहंब्रह्मनिवासकरसुषउपजोचित
चाइ॥हरषसोगलेंरहगयोसत्रुमित्रसमभाइ॥२७॥चौपई॥सापूपा
वीएकसमाना॥कंचनलोहएकसमजाना॥जोवहकर्मशुभअभ
भकरहीं॥कर्मफांसतेनेकनडरहीं॥भइवाधानहोतहैजेसें॥बोवा
उदेहोतनहितैसें॥करमषेतप्रकनसपरधाना॥सहतनिरंतरआ
नमधाना॥जिनसरीरकीसुरतविसारी॥कर्मअकर्मफांसकरडा
री॥सानध्यानतिनसकलभुलाना॥आपनभयोसहदविलाना॥२८॥
दोहरा॥आतमरामअबलमलपरमगगनभएलवलीन॥जाइसमावे
उनमनीपाईसुकलप्रवीन॥२९॥चौपई॥भसकिपेंइंहीरसघारा
ब्रह्मअग्रगनसोंजारविचारा॥सवदसुरतकरविंदउगाई॥दस
वेंद्वारआनठहराई॥विंदुगगनमहिअमिलनभई॥अहरएाकी

सं॰ग्रं॰ माई है गई ॥ तहं लखु सब रहम पोखु बरासा ॥ सो तन भई मन की सब मंसा
भा॰ सा ॥ तो तें अमर अजर पद पायो ॥ तिहं हरसन तें जग मुकतायो ॥ ४६ ॥
१७८ दोहरा ॥ नीर घरूपी हर सति न विचरत है जग मांहि ॥ ज्ञान मजल्य
पल्लानि पो तिहं चित न वै तहं मांहि ॥ ७ ॥ गाहाबंद कथा ॥ चौपई ॥ गालब
कहै सुनो कौन हल ॥ एक अभ्यास करत मन अविचल ॥ बिन गुरु
सब र जोग अभ्यासा ॥ पवन न रोक सकहि व्रत नासा ॥ पढवा रहे
ही महि रहई ॥ आशावार रकनि गमउचरई ॥ ऊपर नाभ ना हि वि
श्रामा ॥ आशावार ना कोव रनामा ॥ नाभ न लेउ पान अभ्यासा ॥ वह
न गुरु हरि सनि हि विष्याना ॥ वार नीसरीर हत ने हदेपर ॥ चलत पवा
र कंठ महि रथिर ॥ ४७ ॥ दोहरा ॥ गाल वा रहे पांचमी षष्ठी इस्थिर
भार ॥ यह सम आप करे दर महि जिहि कर व उठह राजु ॥ ४५ ॥ चौपई ॥
कुंठी वार की गंठ नाभ मध ॥ वार फिरत न न महि कर धस्रध ॥ मूंत
समैं षलना नगांठ जब ॥ न व न निकस जान प्राणी न व ॥ वाय स्रुफा
न गुरु की शोरा ॥ निकस जात न व हे फक फोरा ॥ न ले ना भ के नन है जो
ऊ ॥ ताके गप जा न फिर सोऊ ॥ प्राणवार जोउ व सत ना भि पर ॥ ऊम
ऊमे रह तन जत न परत अवसर ॥ अवर वार जोऊ चार षकारा ॥ न न न ज
गा न न लागत वारा ॥ ४६ ॥ दोहरा ॥ सो रहार रजा के निकर निकस जा
न तिहि हार ॥ प्राणवार हो प्राण सो रहत न रहेद पंकार ॥ ४४ ॥ चौपई ॥
तन न क कर रल न पन म हां व र ॥ जोग साधना करत न गुनीश्वर ॥ व

ह्वाइजबरोकरहावन॥जोबहिब्रह्मप्रकासहिपावन॥गुरुकेब-
चनजोगजोध्यावन॥षट्वारअपनेवसल्यावन॥तेपावनहैंब्रह्मके
इधाम॥पवननरोकोजाइमहाश्रम॥रोकपवनकोंसकैनकोई॥अ-
नकजतनमनवसनहिहोई॥चंचलमनकोंवेगनतापिप॥अनपेक्षा
पवनवहीवमनरप॥४७॥दो॰॥मनआगेइंद्रियसबलमोहलेब-
विरमाइ॥प्रथमइंद्रियनवसकरैपाछेजोगकमाइ॥४८॥चौ॰॥इंद्रि
यजीतसाधसंगभयो॥मनतरंगनिजवसह्वैगयो॥जिमजलहारेउ
डीविलाई॥तिमबनकीवासनामिटाई॥जिनदृष्टिधीकबसीनहि
कीनी॥मनकोंजीतोजियधरलीनी॥मनकोंजीतसकैनहिकोई॥
जोलगइंद्रियवसनहिहोई॥जोकोऊकहैपवनगहिराखो॥उलका
लझाडरसवाखो॥ताकेवचनअसमप्रमानहु॥रोकनपवनकेंब
जियजानहु॥४९॥दो॰॥पहमनजानहुपवनजिमजीतसकैन-
हिकोई॥जोमनजीतहिरपवनसनतोकारजसिधहोइ॥५०॥चौ॰॥
वपुमहिपंछीरोइरहतहैं॥इकतनपिंजरमांहिवसतहैं॥इकभोग
तइंद्रीरसखारा॥हंसरपगनिरलेपअनारा॥देहआनमाभोगरसो
ई॥हंसजोपरमातमहैजोई॥सोतस्वरूपसराआनंदमन॥लागनन-
हीताहिदुषदुषमन॥रोमांकारकठोरबिवासा॥आनमघगकोम
हाप्रकासा॥देहआतमाघगतिमकाघो॥इंद्रिनकेरससाद्दलभा
घो॥५१॥दो॰॥देहआतमादेखईपरमातमकोराज॥परमातमस

म. ग्र. चनानरईसुककरुदेहकेसान॥५॥ चौपाई॥ जीवग्यानमासहारिकी
भा. वस॥ विषयासारवारसालचफस॥ सुसानीहंकलउपजावन॥ मे
२५९ रीमेरीकहिद्वषपावन॥ कोउनमानलग्यापसमाना॥ कहनग्यापकें
हपत्रुधवाना॥ जोसमाननहिसुरजगलपर॥ हमहीहौं पंडितविद्या
धर॥ जीवग्यानमाग्रुविघाराना॥ ग्रहंमेवग्रोरेमरमाना॥ सोइग्रवि
द्याकेसीहैनरप॥ मैंवाररनभवीचनराधिप॥५५॥ दोहरा॥ वाररदे
षरिषावहीनभमहिविविधप्रकार॥ कारेपियरेग्रसनकविक
वइसेतरंगधार॥५५॥ चौपाई॥ कवयोंधीकवपवनफुलावन॥ क
बहुमेहवरनकवकावन॥ नभकोपहरसरूपगुनगांही॥ वीचपरा
हैपरतिहमांही॥ वाररकारनकियोप्रकासा॥ हिहनग्यावलगग
नप्रकासा॥ तिमजीवानमग्यानमजानइ॥ जहपिपकग्रहवासप्रमा
नइ॥ वीरग्रुविघापरग्रहंकारा॥ रविप्रकासदरभोग्रंपियारा॥५५॥
सो॥ ग्रहंमेवकापरपसोजीवग्यानमामाहि॥ जोपंडीदकहसरहि
ग्रहमहिदेषननाहि॥५६॥ गालावउकाच॥ चौपाई॥ रिषभाषेतनकोंन
हलरप॥ ग्रोलानीनप्रकारनराधिप॥ उतमप्रनकनिहमध्यमवि
प॥ सोउतमनिहरूसभगनहिय॥ उतमग्योलासोरानाना॥ कीर्नन
कयातनेसविधाना॥ हरिजसग्रवनवननेविनलाई॥ मनवचकमप्रम
नग्रुनवनजाई॥ नेइग्रुवनरेहरगसतवनरई॥ प्रग्रपरकमनहरिग्रुन
गुनई॥ उतमग्योलाकेपहलवन॥ नैसंतमनरपमहांविचवन॥५५

दोहरा॥ श्रोता हु लिप कलिश जो कथा हरनन की वार॥ तेन नरहूं अव
लोकई अवनन मन लेउ वार॥ ५९॥ चौपई॥ जिह तें सिद्ध हो हि सब का
जा॥ सो मन लनहु न ठौर अम काजा॥ कोउ न पथ पलि पोस ठहि पपर॥
अपविवैठो आरं कथा पर॥ जी जो घोला मध्य मजा न ऊ॥ ता केलव
वहूनहु वषान ऊ॥ कथा हरनन कों वैठो जाई॥ देह अवनन मन अवन
लघ्र माई॥ औरं अवनन मैन न को धाना॥ औरं अवन कक्षनि विविपव
काना॥ मन अमिलाषा विविप थकारा॥ धमनल फिर ततला कीनिरि
वारा॥ ५०॥ गा॰ लव उ॰ च॰ दोहरा॥ लमथ ओताउ मन मन पन सिमरन
कर हम वानि॥ अवपरही दिन पांच रस अपनाकर उदधार॥ ५९॥
चौपई॥ अपना ताअकि सी कोंही जे॥ जोग अभ्यास सार वन की जे॥ जो
मैं कही साधना तमयन॥ नै संलम साधहु ए घवीपन॥ पीत्र जा रसे
वहु वन वासा॥ कीजे न हां पवन अभ्यासा॥ जहं गगन महि वसतना
हि रक॥ लेउ ले लिहे पवन रपन विक॥ धुकत करत अवल हरि
तांना॥ वेग मिराव मन मन की ओंना॥ ५९॥ दोहरा॥ रनसतन धुव कथा मैं
सो सदगत कों पार॥ सरन परे की निमल जो मरे धुकते उजार॥ ६०॥ चौ
पई॥ लनपक्षन कैं नदहल भूपाला॥ अवल मवनजा वहु तन कोला॥
धुकत उपाउ कर हु नरपनो लग॥ पहु च्यो नहीं काल लन न जो लग॥ अ
ऊहो न का सिमरन जोई॥ लम कों मैं वतला पो सोई॥ कर हे जा
जोग अभ्यासा॥ तान त्याग की जे वनवासा॥ नहां सिमर हरि मन वि

ना॰ प्र॰ श्रामा॥ कारह्रप्रणामश्रानमारामा॥ यहकारनकोविलमनकी
भा॰ नै॥ हमरीसीयश्रवनसुवनीनै॥ ९१॥ ना रइद्री व॥ सो॰ रा॥ कहि
२४॰ नारदश्रर्जुनसुनद्दहविधगालवमान॥ कौनूहलनरपकोंक
रोमनववक्रमहिनुमान॥ ९२॥ चौ॰ ई॥ भयोविरक्तकुनूहलन
पकों॥ निहवेकरीजाउश्रववनकों॥ गालवतैंप्रबोधसुनपायो
मनवैरागनरपनकोंश्रायो॥ मनहुववदीजोगश्रभ्यासा॥ नश्यो
रानसुषभयोविरासा॥ गालवकीपूजाकरविधवत॥ रिषकेला
गोचरनमहीपत॥ कौनूहलकोहरविधोधम॥ गालवगयवन
किथोनिनश्राश्रम॥ नारदकहैंविनैसुनकाना॥ जोयहसुनैसु
पनश्राष्याना॥ ९३॥ सो॰ रा॥ जोश्रध्यायसुपनापढैसुनेहदेपरमा
द॥ कविरहकनवहपुरषनिसमपनेउरनहिपाद॥ ९४॥ जैम
द्री व॥ चौ॰ ई॥ जैमुनकहैंसुनदूरपवीपन॥ नारदकपाकहेगु
नैनपन॥ जोसंवादकुनूहलकेमन॥ रानस्पागश्रवहीजावोंव
न॥ श्रपनलिपउपजीयहवाना॥ हमरेसोनाहिनकोउमाना॥ जि
हकोंरहेहोरामसमाजा॥ श्रपमकरौकंस्याकोकाजा॥ चंपकमा
लनश्रतिसोवनवन॥ नाकोंरहोमनवांछनपन॥ ९५॥ सो॰ रा॥
कंन्यावरपापनकरौकुलभगनसुसान॥ रामसमर्पतानिहके
रेमैसिमरनभगवान॥ ९६॥ चौ॰ ई॥ चंपकमालनरपनवुला
ई॥ कहिसुतांनवहुविधसमफाई॥ मांगलेहुइहिनावांछनपन

697

लिये बुलाइ कुंवर रुपवीपन ॥ राजकुंवर नहां मिले अपारा ॥ म
हन आइ तिन नहीं मंझारा ॥ पूरक कपा कही नहिं पुनपुन ॥ कहिं जन
मेजम प्रतिजैमन सुन ॥ नहीं नृप नसु नजु रेअने का ॥ कंन्या मन महि
किपो विवेका ॥ जोउन पति वांक्यो कंन्या न व ॥ ठाढे रहे न रेस कुंवर
सव ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ कंन्या भाष्यो पिता कों शृत्नु मदनन पहिचान ॥ विष
या को जो पति दियो कै सापक्षु इ नान ॥ ९९ ॥ सोरठा ॥ कौन हलराजा
न मदन सिंह पति सह्जलै ॥ कहो वात नसु तान विषयादी वो कवनप
ति ॥ ९९ ॥ मदन सिंह उवाच ॥ चौपई ॥ कहह न मदन सुन हो भूपत वर ॥ वि
षया को पतन भयो भगत हृदय ॥ चंद्रहास नाको वर नामा ॥ गुन सागर
कृवि स्रुति अभिरामा ॥ दिव्य स्वरूप सु राजकुमारा ॥ समदरशी निज भ
गत सुरारा ॥ जाके हिरदे हरष न सोगा ॥ भए पुनीत दरस पुरलोगा ॥ पु
ष्परने जसीम हांवर ॥ कृत्री धर्म शाक्रमी रन ध चल ॥ गो ब्राह्मणार
क्षक पुन वाना ॥ सुन पावन त्रैलोक निधाना ॥ १०० ॥ दोहा ॥ निसदिन
हरिसिमरन करै अन इ कार रसी धार ॥ धर्म दृढ़ावे जह तहां आन मर
सम्भषमार ॥ १० ॥ चौपई ॥ मिलता है पहु सकल रजाना ॥ नहीं भगतन के
न षन समाना ॥ मदन भगत की अस्तुत कीनी ॥ चंपकमालन सब
सुन लीनी ॥ पुन कंन्या वच कहे पिता प्रति ॥ इन महि को उन वांछ
न होपति ॥ जह ताहे सभ राजकुमारा ॥ चंपकमालन वचन उचारा ॥
इन महि कोउ न करों भतारा ॥ वांछुंन ताहि न रिदा हमारा ॥ आपो

698

न॰भ्र॰ अपनेवलेगयेसब॥ पुनकंन्मापिनकोंभाषोनव॥ ५५॥ दो॰॥ म
भा॰ रनसिंहअरुजनकरीजाकीमनहोनान॥ सोवररीजेमोहिकोंम
१५१ नवचकमकुसलान॥ ७३॥ चौपई॥ कहिकोनरहलवचनमरनप्र
ति॥ पुरुरुपुरस्यावोवेगहरभगन॥ जोरकीकअपनावहनोई॥ श्री
ग्रंमाइस्यावहूलमसोई॥ अवहिजाउसपनसहरिहीजै॥ पाकार
नकोंगहरनकीजै॥ अरकदूनहीनगरमगमोही॥ चंरहासआन
इपुरुपांही॥ कीजैनहीभवनविश्रामा॥ स्यावहूभगनकरहूपह
कामा॥ कीजीसपनमहमरनसिंहनव॥ जोनस्याउपहपापलगहि
सब॥ ७४॥ दो॰॥ जोवहलोईस्याउनहिलगहिपहअपराध॥ चंर
हासकोंस्याउगाजोहरसेवकसाध॥ ७५॥ चौपई॥ अहअवानकीनाति
नहोई॥ रोहमित्रसोंकरिहेजोई॥ अरुनहिरपाहरेनहिग्रास॥ कं
माधनलेपुरवेआसा॥ जोनरवेननहेमरकोंमिन॥ पुनगोवेचन
करनरअहिन॥ हकवोरकेवेचनजोनर॥ भोजनकरननाइम
नकेघर॥ जोनरपुलकवेरजुरावन॥ परधनहरकेजनरवावन
हणानरावनहैरणावनकों॥ विरनहिकीनलेननिरधनसों॥ ७६॥
दो॰॥ परवीलेनहिकीनजोरेवस्पलहिगिराइ॥ वसमागपुन
वानहेवरनमहांकनगार॥ ७७॥ चौपई॥ मनमकनप्रमाविननहि
लावहि॥ आसावंननिरासपठावहि॥ पुनजाकेंग्रहमेंहेनारी॥
रकसोंवैरएकहितकारी॥ जेनरसाप्रभगनदुगावन॥ कहनक

कुसाषपापमनलावन ॥ कोउकिसीसोंवलुमंगावै ॥ जोन\
रकतुवीचतेंतुरावै ॥ विनहषनजोरोषलगावहि ॥ कंचनारि
जोपालतुरावहि ॥ जिनगुपकवहूंरामनभाषो ॥ तपसिकहार
विषयरससवाषो ॥ ४४ ॥ दो ॥ ह ॥ रनसभकोंअपराधफलमदन
कहैगुरुहोइ ॥ जोनहिंसाऊंभगतकोंविषपापमिहैजोइ ॥ ४९ ॥
चौ ॥ प ॥ ई ॥ सपनकरीहैमदनसिंहनव ॥ वीचपरीनिसमारगमहि
नव ॥ सोवनसपनअसगुनहिंदेषो ॥ नलकूंतनअपनातनपेषो
कुषीआगेफिरननिहालो ॥ देषोनिजगृहअगनधजालो ॥ पंकज
अपनासीसनिहालो ॥ देषोनिजकोंषरहिंसवालो ॥ तेलचोपरी
देहसपेषी ॥ सामववलपहरेतियदेषी ॥ देषोहथरपरतअपने\
गुष ॥ सपनविचारमदनउपजोदुष ॥ ५० ॥ दो ॥ ह ॥ भौरमयोवीती
निसामदनवल्योनियसोग ॥ यहजोदेषेअपसगुनवनेविषम
संजोग ॥ ५१ ॥ चौ ॥ प ॥ ई ॥ उहांभगतकोंकरोदुषरूप ॥ वलदीजेअवि\
काहोकहतभूप ॥ संध्यासमैतहांचलजावहु ॥ भक्तनरेपुनग्रहफिर
आवहु ॥ जोआहैहमरेकुलमांही ॥ पूजेवलअविकानहांही ॥ अह
जोवलिनहिंदेहैयाको ॥ भक्तनकरनअविकानाको ॥ वंरहास\
पुनवचनउचारे ॥ सुनहुदुषरूपनरपनहमारे ॥ इकहरिकोंनाथो
हमसीसा ॥ जोहैतीनलोककोईसा ॥ ५२ ॥ दो ॥ ह ॥ नहिविंताजिय
अवरकीजिननेरदीदेव ॥ त्रिभुवनपतिकोंकारकेकरोंकौनकी

700

नं॰ ग्रं॰ सेव॥ ८३॥ चौपई॥ तुमरे हित मानों यह बाता॥ मैं नहि तु करों जीव-
भा॰ कौ घाता॥ चंद्रहास हित प्रजा सब करहूं॥ जीव घात करते जिय डरहूं॥
१५२ चल्यो भगवान प्रजा लेहाथा॥ भूपती पंकज कमल लिय साथा॥ गोरो चन
हरदी कर धरा॥ वोता मग मर ग्रव रसं भूरा॥ बहु प्रकार फूलन-
की माला॥ संग ले चल्यो भगवन नंदलाला॥ सुंदर रथ चढ चल्यो भग
वान तब॥ रथ सुकी नली नड्ढ छत्र धनव॥ ८४॥ सो॰॥ भगवान च ढायो
म लिन रथ पक्यो चंद्रविकास्यान॥ इहत्रु दुम नरहट किया सुब मा
गे गाशान॥ ८५॥ चौपई॥ भगवान चल तन पाछें भूप तन तब॥ लियो क्षि-
गायन मदन हितु यो सब॥ वेदी पर गन रथ अग्रसुहीने॥ सकल सुकी
नहिं त्रु पलीने॥ भूषन वसन रतन चौहितु॥ विष यासों रिसाय स
भलिये॥ चंद्रहास सेवक भगवाना॥ प्रापत भयो निकट घुस्याना॥
हराखत सोग हिये उपजायो॥ मग महि हरि गुन गावत आयो॥ हरि हि-
हहु पसो मग आवत॥ मदन सिंह रथ पीछें चल्यावत॥ ८६॥ सो॰॥
मदन सिंह आयो निकट मिल्यो भगवन को आइ॥ कीन दंडवत प्र-
रिन मन लागो पांइ नधाइ॥ ८७॥ चौपई॥ पहो ऊधवति या नंदन प॥ कु-
सल के मस्क नविगस प॥ मदन सिंह सुष वचन उचारे॥ कहां चले
हो प्रभु हमारे॥ चंद्रहास कहि सुनो मदन हित॥ प्रजा न पिन पका-
यो नम पिन॥ यहां संग्र विकास को ग्रम षाना॥ नहां करों पूजा विधना
ना॥ सबतुलांन पुन मदन सुनायो॥ मैं सो मदन लेन तुम आयो॥ ३-

हां करौ मैं सपन अपारा ॥ देगसा उगहि भगत सुरारा ॥ ८८ ॥ दो
रा ॥ मदन कहै सुनहो भगत सपन करी बहु मोहि ॥ इसा लगै अपा
र सुरझो न हि पद बों लो हि ॥ ८९ ॥ चौ ॰ ई ॥ मगम हि दरसन भयो न
सारा ॥ चलहु बेगला बो न हि बारा ॥ कौंन इहलसों सपन करी सुझ ॥ द
रसन जो न दिखाइ भगत लहु ॥ तां तें इहमा लागहि मो कौं ॥ पद बों जो
न भगत इहमनो कों ॥ रूप कौंन इहल सुना मिरामा ॥ चंपक माल नवम
को नामा ॥ पल तां कहु तहै रूआचारी ॥ तिन बहु स्नेह तन सुनी अस्यारी
मगन भई सुन हुअ सब लेया रा ॥ विरह कियै सभ राम कुमारा ॥ ९० ॥ दो
हा ॥ तुम हि कीन पलिकै मकाम न ब चक्रमनि पद्मान ॥ जाउ उहां
तुम मैं कसों से बचे बचुस पान ॥ ९१ ॥ मदन सिंह युक्त ब ॥ चौ ॰ ई ॥ मदन
कहै सुन भगत सुद्रवन धर ॥ हां थंभ विका कास भमो पर ॥ जिमजिम
हे धन हां तुम दरसन ॥ लागत इसा सपन मोहि तन ॥ इरा र घरी मे
घर मो कों ॥ इमया रथ सो भन बरनो कों ॥ अदल बदल रघ किसो
पर सर ॥ कुंतल पुर चव बचमो भगत इर ॥ ना र इ बचन कसो पार
घग्रत ॥ रक्षा करन भगत त्रिभुवन पत ॥ ता कों वि उनन लागै को
ई ॥ रछ कमि ह परमा पत होई ॥ ९२ ॥ दो हा ॥ पद पो भगत विवाह प
र कुंतल पुर कों ओर ॥ मदन चलो इआलि पैं जहां थंभ विका कौ र ॥
९३ ॥ चौ ॰ ई ॥ चं इहा स कुंतल पुर आयो ॥ मदन थंभ विका अस्थल पा
यो ॥ पहु चो निकट थंभ विका स्थाना ॥ रथ तें उतर पलो सुध बाना ॥ चं

ग्र·प्र· रनमगमरसवद्दगंधवर॥मदनसिंहभइलियोपाउकर॥रि
भा· कुयाग्रवागहपरसर॥ग्रारपरेहोउमदनचरनतर॥मदनसिंह
२५२ मूर्छितपोपरनी॥मनविहवलगनजाइनवरनी॥चंदनादिश्रा
नोउसाधा॥इरनपाउगिरपसोहाधा॥९५॥दो॥ गा॥मनकलागो
धरनपरश्रोगानचलोग्रपार॥नैननासिकाश्रवननैनरुधरभलो
निहवार॥९६॥चौ॥ ई॥भयोसुचेनमदनसरीरजव॥कहलगमधु
षलेनउभ्रोनव॥मदनसिंहकीनोविचारमन॥भुरेहोनश्रपसगु
नमोहितन॥श्रपनेहदेविचारीवाला॥निहचेहोइमोहिमनवाला॥
नेमैंसुधेपरपकल्याना॥जौवेचंरहासराजाना॥वेपकमालनग्रह
विषधासें॥सुबविलसैहरिभगतमधासों॥यहविचारउवचलो
मदनउन॥मनमहिसिमरनकरनहलगुन॥९७॥दो॥ गा॥मदनसिं
हकेसीसपरउलूवैठोग्राइ॥रूपरचीलम्रसवदकरतोतेंग्रतिडर
पाइ॥९८॥चौ॥ ई॥सीसनदेषनपरकोहीपर॥ग्रपनीमरतजानीनिह
चैकर॥चंरहासपवधोमुरूलाला॥मनवधकमनकरनकोवाला
हमरापिताइरानमपापी॥संतनवांछैकालसंतापी॥जोपितुहोइ
भगतभगवाना॥ग्रपगासीसग्ररपमैंदीना।निमितभगतसुकृत
करलेऊं॥मनवांछालेंसवहेऊं॥९९॥दो॥ गा॥श्रवहमवांछतहीं
रिहैविषपापतिकल्यान॥जुगजुगकरैविलासजगग्रवलभ
गतभगवान॥१००॥चौ॥ ई॥भोगेगायहश्रपसगुननफल॥यहक

हिवलोग्रंथविकाग्रसघल ॥ आपनभयोजाइनलनकाला ॥ आगेग
हेकुलेवंगला ॥ तिनगहिहाथवरीरणकीना ॥ ननछिनइदहकरा
करलीना ॥ जोविपरचीजगतकेनाना ॥ तिहवेसोरवचननहैवाला ॥
इहांचरित्रहोतघहभयो ॥ इहांभगवतकुंतलछुरमयो ॥ वंइहासखा
पतभोतहां ॥ इतोन्रपतकौतूहलजहां ॥ ५० ॥ दोहरा ॥ हरिकीभारछप
दिलोग्रसवमेपग्राणभा ॥ कविरदकगपररवभपेप्रापगुरुका नजान ॥ ५१
मैमनउदाच ॥ चौपई ॥ गैसुनकहेतवरूपभपाला ॥ वंइहासकीक
पाविसाला ॥ वारहवणाकहतपारपवत ॥ सुनतहोतग्रन्थेनवि
घहरघत ॥ कौतूहलपुरभगतनगयोजव ॥ तमसोजाइवागभीत
रतव ॥ रजनीवसोवागतिहमांही ॥ सोइरसोहरभगवतहांही ॥ कौ
तूहलराजेग्रपनेघर ॥ रेसोतपवनिसाकेग्रवसर ॥ संदरउत्तषभ
वनरकरेसो ॥ महाप्रकासरनमहिपेखो ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ राजकुवरसं
दरतवरवैसवभगतगुपाल ॥ भवनमांहिआपनभयोतिरखो
लपनधुवाल ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ एकोतपनदीवन्रपतासों ॥ कौनतामग्र
योहकहांसों ॥ आगेतेइनवचनप्रकासा ॥ मैंहांन्रपतकसकोहासा
पुनकौतूहलआयतभयो ॥ पुत्रीकोवलांनकहिदयो ॥ तपनवी
वरेखोहमसोई ॥ मरनकहिगयोहेनरजोई ॥ मैंतिनउरमह
कुसलनिहासो ॥ भागवडेमनमांहिविचासो ॥ इहांकागकेवीच
भगतहरि ॥ आगतभयोतजसनावनहरि ॥ २ ॥ दोहरा ॥ इकोवे

अ॰ श्री गमज्ञनकियासंध्यासिमरनकीन॥भोगलगायोकृस्नकों रघुवर
भा॰ वलोप्रवीन॥५॥चौ॰॥६॥चंदहासपुरकियोप्रवेसा॥सुनतभयोमन
२५८ मुदितनरेसा॥ ललकितनरूपआगेउठधायो॥मिल्योभगतसोंसुष
जियपायो॥आदरदेनरूपगृहलेगयो॥चंपकमालनमुनिसुषमयो
हरिसोंमांगनचीपतिजैसो॥मनवचक्रमपायोवरतैसो॥कुंकुम
मृगमदकनककलसभर॥आलोनलकिनभगतसीसपर॥पुन
कौनतहलप्रजाकीनी॥साजआरतीनिजकरलीनी॥५॥सो॰२॥आ
दरकियोअपारकौनतहलहरिभगतको॥मनवचक्रमहितधार
वैठायोपरजंकपर॥८॥चौ॰॥६॥कुलकोहरिजनभूपालतुलाए॥पंडित
लोगसकलचलआए॥लगनविचाल्योसुभगमहूरत॥कंचनखंभ
करीभंडपरत॥वेदीरचीनिगमधुनकीनी॥कंन्यादानभगतकरदी
नी॥वेदीपरफेरीदैपनजन॥हाथहाथपररापमुदितमन॥अंबर
गांठजोरतिपहरपवन॥भयोसंपूरनकारजविपवन॥राजसमर्पणा
कियोन्रूपननव॥चंदहासकरमनसवदियोसव॥५॥दो॰॥हयगज
रथकंचनरतनमुकताभरेभंडार॥राजासवसर्वसदियोष्टुष्टीराज
अपार॥५॥चौ॰॥६॥पुनकौनतहलविवकरजोरे॥विनतीहमरीसुन
प्रभुमोरे॥राजसमरपीतुमसमाना॥जोमैंदईभगतभगवाना॥सु
धहींभोगइराजमहींसव॥वचनहमारेसुनहुभगतअव॥आ
युहमारीरहीअलपदिन॥कह्योहलतांतसुपनमाहीकिन॥अव

मैं आइ करौं वनवासा॥ मोपर कृपा करहु हरिदासा॥ गालवऋ
षि सुफलानद भयो॥ साधन जोग अरंभ वनायो॥ ९॥ दोहा॥ राज
तिलक दियो भगत को कनक छत्र वर सीस॥ कौलहल वन कों ग
यो निमिल भगत जगदीस॥ ९॥ चौपाई॥ कौलहल न पवन कों गयो॥
वंदहा सद पवीपत भयो॥ सकल रंगो तके पोहल जेक॥ भगत वला
इ लियेस भलेक॥ तिन कों दियो भगत वड्वाना॥ हय गज रथ कं
चन विधनाना॥ इक इक दिज कौं दियो उमंगा॥ इक इक पर इक गज
एक तरंगा॥ सवा भार कंचन का दीना॥ साल वोल इक इक दिज
अलीना॥ वैरी जन आवत कप हिराय॥ सभन दान मन वांछत पाय
१०॥ दोहा॥ चंपक मालन सों कहे वचन भगत प्रगटाय॥ एकवार
मैं जाउंगा जहां इष्ट उपराय॥ १०॥ चौपाई॥ नवका मैं कुंतलपुर आ
यो॥ सकल रेकी आगतान हिलायो॥ वेद वचन मैं करौं प्रमाना॥ पि
ल अहस स्वरा एक समाना॥ एक निसा तह वसो भगत हरि॥ प्रात
भए उठ चलो विदा कर॥ चंपक मालन कों धीरज दे॥ चलो संग च
तुरंग चमूले॥ भगत भयो गजपर असवारा॥ वग्गे वजंत्र अनेक
प्रकारा॥ कंचन छत्र सीस छव पावन॥ चमर ढार सिर चमर दुरा
वन॥ ११॥ दोहा॥ कौलहल राजान को गुरु कछु राज को साज॥ सक
ल समग्री लै चलो साथ भगत महाराज॥ ११॥ चौपाई॥ हय गज रथ
सुरे वलवाना॥ वाजनत दुंदुभ भेर निसाना॥ वजन वोल सहनाइ

न॰ मु॰ अपार॥ अगनन बाजे बिबिध प्रकार॥ सकल पुरी के मि करत
भा॰ पैजव॥ हनन बजंत्र सब इकठ्ठे द्विजन व॥ इपुदिलहु दे म हा लुछमा
१५५ ना॥ आगम मदन सिंह को जाना॥ भयो हो इ गाया हमदन को॥
रूपन हमनबं पकमाल न सों॥ मारा है गा सत्रु हमारा॥ परस नग
यो अंबिका हारा॥ ५॥ दो॰॥ इछत्रु पपट्ट जान जिपमन महिम
यो अब नेर॥ रहकन पहजानन न हो आर रठरी नेर नेर॥ २८॥ चौ॰
ई॥ भयो कुलाहल नगर निकट नव॥ मंत्री सों षल वचन कहे व
व॥ समाचार ल्याव इकठ्ठ मआई॥ सकल हमान कहो नम आई॥
मंत्री गयो वेग फिर आयो॥ इछत्रु द्वि कों भाष तहु कायो॥ यह लो
है रूप नो द्विज माना॥ बंरहा सभूपन बिख्याना॥ कंम्या हो नी कौं न
हलरूप॥ राजतिलक दे क्रियो नराधिप॥ आयो सोइ बजंत्र बजा
वत॥ इछत्रु द्विविस वास न आवत॥ ५॥ दो॰॥ मंत्री पर क्रोध त
भयो इछत्रु द्विराजान॥ बंरहा सग यो काल को देवी के अस थान॥
५॥ चौ॰॥ मदन सिंह कौं तलप र मों ही॥ दिव स चार कागयो ल
हां ही॥ मंत्री सों वच कहि रूप मो लो॥ आपन भयो भगन पुरमें लो
इन लो आइ रूपन द्वारे पर॥ पलो रूपन के चरन सीस धर॥ बंर
हा सन दि लको इछ मन॥ आमो मदन भगत संतन मन॥ इछ भग
न सों वचन उचारे॥ तुम मत्रो गयो अंब का द्वारे॥ ९॥ दो॰॥ बंरहा
सन तुम लोग यो भवन अंबिका नात॥ फिर आयो तन काल तुम हे

वाकीनमात ॥ ४५ ॥ चंद्रहासप्रसंग ॥ चौपई ॥ सुनहुमसतरानवंहीमैं
गयो ॥ मगमहिहरसमदनकाभयो ॥ मदनसिंहबहुविनतिकरी
सुकुरु ॥ देवीहारनमानटेउसुरू ॥ कौंलहहलनरपमुजहिपठायो ॥ क
रिबहुसपनलेनतसुयो ॥ मैंजैहोंदुर्गाग्रस्थाना ॥ षत्रामातक
होंविधनाना ॥ मदनग्रंथिकाहारगयोचल ॥ हमकोंपठयोउरी
कुलहल ॥ चंद्रहासकोनिरषवहनरप ॥ ननमनजरवरगयोन
राधिप ॥ ४६ ॥ दोहरा ॥ सुनहलोनपहलानकाविसमैभयोनुप
ल ॥ माहीछिनहनमदनकोंप्रापतभएचंडाल ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ गा
हेरपहिगदसचंडाला ॥ दईवधाईसभनप्रपाला ॥ समरासुरि
नमपुरपठईना ॥ लैकरषडगहकरसकीना ॥ जेपुनकहेहलव
हुभूपनवर ॥ होहकीनयासाषभगतहर ॥ नपपरपंचसभभयोश
गदअव ॥ मर्छितहेगिरपरापरननव ॥ पागडतारधरनपरउरी
करनविलापमहींभयकारी ॥ ४८ ॥ दोहरा ॥ रूपषनतहैपापहि
नग्रवरोंहेनसंताप ॥ रक्ताक्षीनेंहलालकीउसदपरतहैयाप ॥
४९ ॥ चौपई ॥ लालविरहलषविहवलभयो ॥ स्यानग्रंथिकाकेमग
गयो ॥ कचीभुजाकिपोगुणकारा ॥ पगमहिहोवतकरतपुकारा
वपुषमलीनभस्मकरकेसा ॥ वलोग्रंथिकाभवननरेसा ॥ रूप
भयानकजातनचीन्हा ॥ नषसिषस्यामवरनतनकीना ॥ करमव
कारतहांचलगयो ॥ प्रेतग्रस्थलीप्रापतभयो ॥ भूतप्रेतलारेष

गं॰ पु॰ नलागे॥ कोऊ निरषत नलन डरभागे॥ १७॥ जैसै बइठाव॥ दोहरा॥
भा॰ जैसुन कहि तुन हो लपत भूल इरै षल है ष॥ भूत इ जैसे भजन गइ
१५९ रै तिन तैं इ छ विसेष॥ १९॥ चौपाई॥ भूत प्रेत नरक न वन मांही॥ नि
रषइ ह्रकों इरे तह्नांही॥ एक प्रेत बोल्यो तिह अवसर॥ हे षह्गनाव
न पइ पापी वर॥ हमको जगत कहत हैं प्रेता॥ वडो प्रेत पइ मूढ
अचेता॥ रुदन विलाप करत पह गावत॥ अधमी दुष्ट बुद्ध वि
ललावत॥ अवर प्रेत बोल्यो तिह मांही॥ हमतें बडा होइ इह नां
ही॥ कहां भयो जो पाप प्रीतम मन॥ हमतें वडा रेमानसतन॥ २०॥
दोहरा॥ प्रेत लोनहु मरी भई हमसे पापी नाहि॥ पइ पापीन रदेह
धरविचरत है जग मांहि॥ २१॥ चौपाई॥ तन बोली इक नीप्रेत प्रेत
रह ले है अरधुनत तु मरी गत॥ मानस रेह कषोत महरनकौ॥ अति
अपराध भलो तन जिनको॥ इस पापी तें प्रेत भले हैं॥ इनहरि भग
तइ पाइ छले हैं॥ पाकी जनम पर्मत इ छमति॥ कवहूं न सेवे सा
धु पापरत॥ जनइकारसी कव हूं नराषी॥ हरिनाम मुष तें नहि
भाषो॥ सदा वैर वैसनव के साथा॥ भज्यो न कवहूं अनाथन नाथा॥ २
२॥ दोहरा॥ विसुभगन सों हो हइ रचक लवलकि पेअनेक॥ इन पापी
मन मंह रषल कियो नहइ दय विवेक॥ २३॥ चौपाई॥ पुनइक भूत कही
यह वाता॥ सुनहू प्रेत तुम हम रे भ्राता॥ चार पापकी वेद तुम भारी॥
तां तें प्रेत भो न तुम पारी॥ गुरु तन लपी अरु त्याग तुम मद्वा पर॥ सुरापान

708

करहेमत्तुराद ॥ वाटोंअवतमक्तिपेअन्याई ॥ तांतेंप्रेतजोनतमपाई
इनपापीअघकिपेअनेका ॥ कवडनमनमैंकियोविवेका ॥ अवरपे
नवोल्योतिहअवसर ॥ समकहतहैहमतेंपहवर ॥ १० ॥ सो० ॥ इस
पापीकेहरसतेंहमावहैअपार ॥ भागगयेसभगेहतजमनमहिकी
नविचार ॥ ११ ॥ चौपई ॥ धनप्रेतसभग्रहतजभागे ॥ इहपापीकेगुण
नहिलागे ॥ करीभुजाउकारनगयो ॥ हारयोंविकाअपतभयो ॥ ना
रहकहैकथातनग्रजुन ॥ दैसवपानप्रीतमजनतरकमयन ॥ रेकोप
इनलाहितनकाला ॥ निरषगिरपल्योधरनधुवाला ॥ अपनाग्रुष
धरनीपरमारन ॥ हरनकरनसुरसिवरपकारन ॥ तनकामल
कलेअपनेकर ॥ कालीमाघलगावतहितपर ॥ १२ ॥ सो० ॥ मदन
सिंहकाहधरलेनपतलगावतगात ॥ हहअवस्थाकेसमेहियोम
हादुषनात ॥ १३ ॥ चौपई ॥ मदनसिंहमहिहेषनकोई ॥ सकलअवता
मुक्तेंहोई ॥ चंदहाससेवकभगवाना ॥ तिहसोंवैरमोहिजियजा
ना ॥ मोहिहियाणाकष्टभगतहरि ॥ किथोहमारापलोमदनपर ॥ मो
परपंचभगतसोंकीना ॥ ग्रपमेहाथचंडालनदीना ॥ लेवनगयेकर
नसंघारा ॥ तहांभगतकोंकुमतिहारा ॥ १४ ॥ सो० ॥ बहुरोंभगतकु
लिंहनहहगयोभयोभूपाल ॥ तुनमैंपदवीपदनपछिइसविषदेत
नकाल ॥ १५ ॥ चौपई ॥ ताहीविधतेंविषयाभई ॥ अंकअवरविधना
लिषगई ॥ तहांभगतविषयापतभयो ॥ मदनसिंहकाराजकरदयो

न॰ सु॰
भा॰
२५०

710

सुनमें मूढ तिरेन बिवासो ॥ नास करन का जिय मन धासो ॥ देवी हा
रप वे चंडाला ॥ नास करन कों भगत गुपाला ॥ पाछे मोहि भगत पठ
दीना ॥ विपनाउ लर मरन हुन कीना ॥ ऐसा करै सु पावै जैसा ॥ सुब
रप तन न हि जग मुक जैसा ॥ २० ॥ दो॰ ॥ १ ॥ हो हु कीन हरि भगत सों मैं
पापी निप ज्ञान ॥ तां तें रिस कर मरन कों हुन कीना भगवान ॥ २० ॥ चौ
पई ॥ लेआव बहु सुबचं रहास कों ॥ कुमा करा वडु लम सरास कों ॥ बिसु भ
गत के चरन सीस धर ॥ कुमा करा वडु वडु त बिनै कर ॥ फेर हेड रप
इ रस लै रंगा ॥ दिये नु मरन हला सुकसंगा ॥ जाके हित सुऊ वैरप सो
हर ॥ ताकों ल्याव बहुरहों पांइ पर ॥ कों ओ मोह भगत को ताता ॥ ताकों
तज ड होरक्कासलाता ॥ दीजइ फेर गांउ सभ वाके ॥ मैं ही छीन लियो जो
उ ताके ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ १ ॥ गाउ छीन न लिये जो करी ज हि फेर कुलिंर ॥ छु
मा करा वहु पांइ पर तात भगत गोविंद ॥ ४० ॥ चौपई ॥ हरष लोक न हि
चंदहास कों ॥ बिसु भगत ज्ञान म प्रकास कों ॥ राम चंद कों व स की ज्ञा
निन ॥ भगत जिवावै मरन एक छिन ॥ श्री सु भगत पहिरन पग ताको
लिव पनि पांइ लंत सम कापो ॥ दुष्ट तुपछल पइ कीना तव ॥ दस दु
करै रक ठे कीने सव ॥ से ड सो देवी बिरमाना ॥ रोवत इछ रिर्हं सब
लोना ॥ करत बिलाप कज चलत रहे रत ॥ कनिष्ठ नहम री जोरत न हैरत ॥ ४१
दो॰ ॥ १ ॥ सेवक रन कों ब्रं बिका लप ज्ञाए रहहु तौर ॥ छुत्रि प मरण को
समाउ बन फउ रत जोर ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ गैं यो हम री लिपें ज्ञान सुरि

तिनरछ्याउठकरोसूरवर॥ भोजननहेतनसारीमाना॥ लगहितुला
वनउठचलनाना॥ सुवलीदीवचलेलुभमनावइ॥ हासबिलासकरइ
लषपावइ॥ हनसुबेरकौंमित्रसुधारे॥ उठचलमोहितुलावनहारे
वइनवेरसोवनभईलोकों॥ उठहीजेररमनमनमोकों॥ तनकोंकं
उलगावनपुनषन॥ लोगनगरकेगयेसकलहन॥ ४३॥ दो०॥ तन
धाइपुरलोगसबहाहाकारकरंत॥ मातविलापकरतीचलीनारक
रनहाकंत॥ ४४॥ चौ०॥ ई॥ विषपाकंउलगावैधाना॥ रोवैवइनकैरे
विलपाना॥ इहतुधमनभपोसुचेना॥ कवहींमर्छितकवहींगुवे
ना॥ सकलनगरकेलोगनारनर॥ रुदनकरनप्राणनिहप्रवसर
मदनसिंहकोंदेषनलागे॥ हाहाकारकरनलषमागे॥ मातइहीव
हनमदनकी॥ मर्छितपरीसंभारननकी॥ वषनवहीरनवहनकि
देविन॥ मरेतोरसकलसिंगारनन॥ ४५॥ दो०॥ विश्वररहेकवस
भनकेहधररहोलपराइ॥ मर्छितहैपरनीगिरहिवारवाररइपषा
ई॥ ४६॥ चौ०॥ ई॥ तुनषुनकंउमदनकेलागहि॥ रोवनकवइंरोसन
मागहि॥ हयरकीवकैग्रंगलगावहि॥ हैतचेनवइरोंसुरकावहि
विषपाकहैकहांगयेधाना॥ तमअतिसुरजगनविधाना॥ कामभ
गनसोंकियोहमारा॥ विश्वरीकुचीलतवैठनवारा॥ लेआवैकोदकल
सभगनको॥ मोहमकहोंविनतकरपनसों॥ जोपतिचहोकुसलके
ननको॥ हेइजिवाइजाइमदनकों॥ ४७॥ दो०॥ मदनसिंहपनव

भे॰ सु॰ चक्रमहि हो न भगत को दास ॥ इह पिता के पाप कर ग्राम भयो वि-
भा॰ नास ॥ ५४ ॥ चौ॰ ॥ कहां विगा लो मरन भगत को ॥ मागकियो षल
१५८ पिता पितासों ॥ पषवं र हा सको लीना ॥ तांतें राम मरन हल कीना ॥ व
हणोई हि न पितानमो लिन ॥ गुरु गत्री मतुन नास भयो लिन ॥ हम रा
पति न न मय से वक हरि ॥ सोई जी वे मरन रूपा करि ॥ चंद्र हास के वस
भगवाना ॥ मरन जिया वे सत सम माना ॥ देवी देव सधीन भगत के ॥ म
न वच क्रम व स हैं सुरुप तिके ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ मल भोजन लेवों न कछु
मोल गजी पनग्रान ॥ विषपाली मोवे मपइ धरन गिरी सुर ठान ॥ ५६
चौ॰ ॥ त्रिलिङ षमरन सिंहकी नारा ॥ रोवत पीटत करन पुकारा ॥ दे
रषत्रते कलापसंग ॥ लपटा पले मरन सिंह अंग ॥ लेप न हपिर किये
सुपने तन ॥ करत विलाप संताप विकल मन ॥ कहां गये होल्ल म्हम
रे पति ॥ तुम विन हम रा कोन पहुं जगत ॥ भरता बिन जीवन किह का
मा ॥ विधवा धर्म कठन जग वामा ॥ तो हिला पत न प्रगन नरावो ॥ क
ति कों तुम पाछे इ षपावो ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ अपने सुतन टेक्रिती कों जो करि
है प्रतिपाल ॥ तुम पाछे मैं ना रहों सुगन न जरों न तकाल ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ य
ह वच कहि तिय विसमै भई ॥ तन न सहत मुर्छित है गई ॥ रोवत दुष
न मरन की नारा ॥ पीटत वदन करत विलपारा ॥ इह सुध कों कर
न प्रकारा ॥ तुम मतो वडे पतत हमारा ॥ श्री हरि भगत सों वैर रचायो
तों तें हरि हम रा हनन वावो ॥ रे पतिन सन अधम गुनामी ॥ भगतन की

महिमा नहि जानी ॥ संतन को रहु कनंर लाला ॥ संकर हर करतनत
काला ॥ ५४ ॥ दोहरा ॥ रेघलि घलि नद्द रानमा किधो भगत सों होइ ॥ नैसात
गकीना ग्रगहु प्रापत भयो न तोहि ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ ग्रपना दुषग्रीधनि नवि
चारत ॥ भगतन के हित वीत्रु व मारत ॥ भमि नमि तही नो दुषसाधन ॥ हि
हयविवेक की क्रन हिराजत ॥ प्रथम भगत कर हिघो चंगलन ॥ इघा
परी लिनतत नग्राएवन ॥ तांतें तम सो भले चंगला ॥ जिनतत नहि घोभ
गतनंर लाला ॥ पुनहि रभगत भयो हपवी पत ॥ तवलुम किघन वि
चारदु हमत ॥ पुनपत्री लिष भगत पठायो ॥ गरल देवकों मनठहरा
यो ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ विषहू तें विष पाभई करुणा करी ग्रपाल ॥ तो प्रनलो
समफी नहीं दुहक्रु क्रिभपाल ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ बहुरों तम यहि मन ठहरा
यो ॥ हार ग्रंविका भगत पठायो ॥ प्रथम मे ग्रागे पठे चंगला ॥ ग्रावे भ
गतहि नक्रतनकाला ॥ डलरहि हनभयो हूनतलारा ॥ श्रीपत भगतन
कारघवारा ॥ पगहि मराजीवन विनताला ॥ ललसंगग्रगनतराकों
गाला ॥ लिपग्रह रवहराम रैगीसापहि ॥ हमासकल तुग्रारे मापहि
राजन मित्र कीने तम पापा ॥ राज गयो पुन भयो संतापा ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ ग्र
गतजर हिमीहम सकल मरन नसिंह केसाघ ॥ वैर किघो तम भगत
सों राजन ग्रायो हाघ ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ वंरहा सके पांइ परो ग्रवं ॥ हूषन कि
येहु मारले हूसव ॥ मरन जिपावै भगत भले यतत ॥ नहि लोविघाव
नायहि मजरन ॥ पहि वचक हिमह्रिं तहै गई ॥ परनगिरी विहूघलतत

ग्रं· सु· नभई॥ कवहूं नहूं तिनकव सतु पञावै॥ विषयातन नमीलिय कुषपा\
भा· वै॥ वारेहरन करत न सभ लोगा॥ नरनारि निकेमन वहूलोगा॥ प
३५९ र्की कुडीउ कोराजापुन॥ हेरकुदोरेलोग अवन सन॥ ५९॥ सो॰ ९॥ रा
ननननसोंपापनभयोप्रुकप्रहृ॰कोलान॥ जो सुलहूं हरन कुलवि
षेवंसप्रकारपजाल॥ ६०॥ चौ॰ ई॥ नरक जोनमहिं पिनरप्रपारा
तनदैहै तिनकरे उधारा॥ कोऊ पुएप्ऐसोवहूकरई॥ जिहृयसा
हसगराकुलनरई॥ गपाजारपुनपिंडभरावै॥ कुलरकीसहुभ
गनपहूचावै॥ हतविनसोभनपावनराजा॥ फीकी लागनसेनस\
माजा॥ हृपगजरपकेवनसभसाजा॥ हतविनसुषसंपतनकिह\
काजा॥ ६१॥ सो॰ ९॥ सुतुहृमारेसवलप्रतिहुनपावहिंपहवान॥ ले
वहिरानकिनाइसवप्रवावली हुनमान॥ ६२॥ चौ॰ ई॥ हेषहूलोग
कहांहूैगयो॥ हमरापापहहृप्रनभयो॥ कुसभगानजोंवैररचायो
पुनपुनमारनमनहहरायो॥ रहुकजाकोकुसवंर निन॥ ताही
सोमैं होइकीनविन॥ जानवूझसलरनिजहाथ्या॥ किथोवहीहता
अपनोमाथा॥ लेग्रावइहरभगनरहोंप्रव॥ लागांवरनहुमाउरो
षसव॥ वंरहासजिपहूषनसोमा॥ करुणाकरैमिटैहुविवोगा॥
६३॥ सो॰ ९॥ श्रेसंववकहृनहिनपनभगनहरसहिपप्रार॥ वंर
हासकों हेषनपवरनपलोलपनाइ॥ ६४॥ चौ॰ ई॥ नपपुनपुन
हरिभगनवरनपर॥ वारवारलागनविननीकर॥ हमरेहूषन\

सकलनिवारहू॥जपहरिसेवकबिरहसंभारहू॥विषयारिदेरविं
नप्रनमारी॥ध्यानवियोगमहांदुषियारी॥इहविधपविननीवहुक\
रई॥पुनपुनभगनचरनसिरधरई॥मदनसिंहकीलिपहलना\
पा॥भगनचरनपरधारनमाषा॥चारोंवरननगरकेजेऊभगन
फोंदलागेसभनेऊ॥१५॥दो॰॥कृपाकरहुहरिकेभगनतुममन
हरषनसोग॥इसहपनमरेसमसकलनहिकछुहरषवियोग॥
१६॥चौपई॥विषयावचनकेहेतनहोयति॥ध्यानासानदेऊसुफहर
षनि॥सोनकरहुध्यानासवपाना॥तेहमदुषिननजोगीयाना॥इ
हृतुहृदुवपहोचरनपर॥हमकहुहमारेदोषभगनहर॥सहरपि
नाहोउपकसमाना॥कीजेकृपाभगनभगवाना॥अपनाकर्मआप
हमपायो॥कलभगनसोंदोहरखायो॥मदनसिंहकोंदीजेग्याना॥क
र,ताकरकीजेसवविधाना॥१७॥दो॰॥करुनाकीजेहरिभगनलष्प
वमकियोगुपाल॥ग्यानदीजियेमदनकोंकृपाकयेननकाल॥१८॥
चौपई॥मदनसिंहमहिदोषनकोई॥सकलग्यवनासुफलेंहोई॥सु
नहमराहहरिभगनजिवावहू॥ग्यानाकरसुफनापकरावहू॥वार\
वारचरननसिरधरई॥इहविधपविननीवहुकरई॥वहुरप्रेमजन
मेजयपकीना॥इमरहेसुविरानप्रवीना॥इहविधरयासहुभगनका
सदाइहमनधहपतिनका॥कहिहरिदिनासुइसहतमासो॥क\
सविवेकनहदेविधासो॥१९॥दो॰॥जोयाकृपाभगनकासोकन

न॰ अ॰ नस्योगुरार ॥ हमरेजिपसंसेपसोजेगुनरेहुलिवार ॥ २० ॥ इतिश्री भा
भा॰ रणपदंसलोक्ष्मथमेधग्रामान ॥ कहिरहकनपद्धनभदगुनहाबध्याइग्रा
३९॰ न ॥ ५२ ॥ जैमनइवाच ॥ चौपई ॥ कहिहिजैमनहनग्रवनमहीपन ॥ ना
रदमुनिभाषनपारथप्रन ॥ सकोप्रग्रनपनजमप्रकसो ॥ सकल
हतोनहनावोंनकसों ॥ मरननसिंहनिरहोषहमोहरि ॥ ग्रपनेमन
महिपहविचारकरि ॥ इछतुइहरिभगनतइषापो ॥ मोंनेहरिलाको
नहियाषा ॥ मोग्रपमेंषलकरोविनासा ॥ मोनहिहैवैगाषलवासा
लागोसहमरगपोनलछिन ॥ मोइषग्रापनषपोनषलनन ॥ ५० ॥ दो
हरा ॥ किपेकपरछलभगनसोंइछतुइहराजान ॥ वडइषलारकइ
हपहहरिनहमोयहमान ॥ ५१ ॥ चौपई ॥ पुरषनहलपर्मभैजेक ॥ स
नसमानलिहहिननहिकोक ॥ पावनजेइषहैइपका ॥ हनविने
इपहोनग्रनेका ॥ पुत्रमुपनेइषपितनिसरिन ॥ ग्रापमुपइषहोन
पकछिन ॥ निरहषनहरिमरनसंघासो ॥ पितइषलागेकसवि
वासो ॥ भगनपनापवहावनकेहिन ॥ मांलेगिरधरमहनकियोह
त ॥ नारदकपाकहनपतिग्रर्जुन ॥ हनतग्रवनपारषहरषलमन
इछतुपवइकरनविलापा ॥ हननतारनरवयोसंतापा ॥ सदाप्र
सप्रभगनमनमोही ॥ हरषसोगइपजनजियनाही ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ चं
दहासहरभगनकेनिसरिनहरपग्रनंद ॥ हर्षसोकव्यापेनकछुग
तणवननंदनंद ॥ ५३ ॥ चंद्रहासकथा ॥ चौपई ॥ चंद्रहासहसवतनइषा

717

रे ॥ सुनहु अब वचन देस सखर हमारे ॥ हमसा नहि परा होषन कोई ॥ लिखा
लला रहोन है सोई ॥ पाजग महि शरीर धासो जिन ॥ दुष सुष कर्म
भुगावत है तिन ॥ आपत होन कष्ट निह काला ॥ सो नहि टरत कछु
ह भणाला ॥ सुष शापत हैं है जिह अवसर ॥ सोइ वचन न है मन वच
क्रम कार ॥ कष्ट काल महि सुषन हि होई ॥ कोटि उपाउ करै जिन को
ई ॥ २ ॥ दो० ॥ कष्ट समै सुष होत न हि दुष न होत सुष काल ॥ जिन
कोउ षसुष सम नहीं ते नर ऊद्ध भुवाल ॥ ५ ॥ चौ० ॥ चिंता हटन के
रै दुष लागै ॥ संपत समै शुरित अनुरागै ॥ कोटि कामना मन उपजा
वत ॥ दुष सुष समै पार चल आवत ॥ होवनहार होन है सोई ॥ जो द
ह्या गिरधर की होई ॥ तांतें मन मैं सोग न कीजै ॥ तान दता पहट य
सुषतीजै ॥ दुष अनुदमाग दमन सोगा ॥ काल उपर बवन न तसंजो
गा ॥ नवग्रह निरजर अरुन जहूं वसाभ ॥ निसदिन सकल धमन नपा
रगनभ ॥ ९ ॥ दो० ॥ ताके रथ नभ महि चलन काल पोहि मिलजो
हि ॥ समै पाइ सत सिराह रथ मारग बीच मिला हि ॥ ६ ॥ चौ० ॥ करति
विरोध परसपर जोऊ ॥ चंदर राहु रथ अष्ट कन दोऊ ॥ होन विरोध का
लजि ह अवसर ॥ सत्रु दोउ मग मिलन परसपर ॥ तांतें भयो उपद्रव
भारी ॥ सकल लोग नव होन दुषारी ॥ वनज विसार करन सव रा
ना ॥ जतहो मन पवेद विधाना ॥ तोलग सव जग होत विहाला ॥ जो
लग होत विरोधी काला ॥ समै विनीते कुर कहि रथ तिन ॥ सभ ज

718

ने॰ग्र॰ गरुडपावनताहीछिन ॥११॥ दोहरा ॥ मैंउ षटुष संसारमैं काल
भा॰ वनतहैंग्राइ ॥ समैमदनकी परुवनी विंतनिवारी राइ ॥१२॥ चौपई ॥
३९१ भगवनरूपनकोतानदहायो ॥ वारवारबहुविधसमभायो ॥ भीत
रभवनगयोहरिरासा ॥ जहांपरुसोतनमदनविनासा ॥ हसेहूकी
एकठेकराए ॥ ततछिनभीतरभवनमंगाए ॥ अंगअंगसोंजोरलि
येसव ॥ विद्यमानग्रंवकापसोतव ॥ पुनविरहदुषदुष्टदुहवल
मासोसीससिलापरथलिवल ॥ ताहीसमैदुष्टमरिगयो ॥ नपन
प्रानतत्तमदनकभयो ॥१३॥ दोहरा ॥ शसोआगेग्रंविकाहोतभयोव
डसोग ॥ हाहाकारपुकारहीठाढेपुरकेलोग ॥१४॥ चौपई ॥ उठाम
किपोभगतभगवाना ॥ गढेदेवीकेविरमाना ॥ पूजापाठकीनरु
विधाना ॥ लायेवेलुगंधविधनाना ॥ धूपदीपसेवाविधवतकर
कोदोमयोभगतइकपगपर ॥ लागेसुत्तमकरनअपारा ॥ मात
मानसुहिभगतसुरारा ॥ मातलोकतमपठईगुपालहि ॥ आताक
रीतुमैनरलालहि ॥ हरिभगतनकीरछाकीजै ॥ संकटसाधहर
करदीजै ॥१५॥ दोहरा ॥ आताकीनीक्रमलतुफरछाकीजैसाध ॥ सु
रूभगतनतखदीजियेकीजैदूरउपाध ॥१६॥ चौपई ॥ हरितुममांहि
भेदकछुनाही ॥ दुष्टनकोंहंतीछिनमांही ॥ जिहपरकोपकरततंदर
लाला ॥ तिहकोंतुमछेदततनकाला ॥ रछासहतकरतसभका
मा ॥ आताकरततगोइजडराना ॥ तुमकोतीनभवनकीरानी ॥ मन

वेद्धन फल देन भवानी॥ सहसनाम मुष सहस बषाना॥ नम
साक्षात रूप हरि धारा॥ संष चक्र ग्रह गदा परम धरा॥ चतुर्भुजी\
करलिये सस्त्र धरा॥९०॥ दो॰ रा॥ श्रीपत ग्रप ने रूप काम सरि पो सम
मोहि॥ निहचैं जानो मानन्तु कनिहहरि सेवक मोहि॥ ९१॥ चौ॰ ई॥ नम
सों कारन भयो हमारा॥ तों मैं की जै परउपकारा॥ हरि सों कहहु मस
कुच जिय रहहू॥ तजुबल प्रभु सों कहह कहहू॥ तुम सों कहो तजहु प
ह काजा॥ प्रभु नारद ईसम हि नइ राजा॥ तुम हरकी मायावर दानी
आपर ही सभ जगत भवानी॥ मदन जिपाइ दीजि ये प्रभु कौं॥ स्वा
रथ यही हमारा तुम सों॥ ग्रस्तन करत रैन सभ गई॥ प्रातम हर
न देरा भई॥ ९२॥ दो॰ रा॥ ठाढ़ा एक पांइ पर सकल रैन हरि दास॥ मा
न विचारा सो हर यत न वज न बर वकियो प्रकास॥ ९॥ चौ॰ ई॥ हृदय वि
चार कियो नव माना॥ यह हर भगत न जगत विषाना॥ ठाढ़ा सत वनि
स एक पांउ पर॥ जिन सिमरन करत बस कीना हरा॥ वंद हास पर क
पा सुरारी॥ निहकामी सेवक गिरधारी॥ जो पह कल्क कलस सों कहइ
ई॥ मन बांछत पावै जो चहई॥ जिन नोइन प्रभु कसों श्रम कीना॥ ग्र
न हं लीवर प्रभु कन हि दीना॥ से षमा इजो करत विस्तु शति॥ मदन\
जिवाइ देन हरि हरषत॥ ९॥ दो॰ रा॥ निहकामी यह हरि भगत मांग
त नाहि सुरार॥ तत छिन देत जिवाइ हर कोट मदन इकवार॥ ९४॥
चौ॰ ई॥ हम रे हार क बचन कीना॥ रैन सकल प्रभु कसों मन दीना॥ मैं

जै॰ग्र॰ अबलौबोलीनहिवासौं॥कृस्नभगवनआदिमधभासौं।अबजोह
भा॰ मकरलीनहिकाजा॥भगवनकरावैकहिमनुराजा॥सोसोपरको
२९२ पहिलनसामा॥कीननमोरभगवनकोकामा॥तिहहरकेआगुध
गुहिहाथा॥दियेकृपाकरगुहिजगनाथा॥संषचक्रगुरुगदाप
दमकर॥अरुविमलदीनामोकोंहर॥२५॥दो०॥सोहरिभगवनन\
वससदानिसदिनरहतअधीन॥भगवनहैमननक्रोधकरलेवैआ
गुपकीन॥२६॥चौ० ई॥नवबलचलेनकछूहमारा॥दुर्गामनम
हिकियोविचारा॥हमरीविनैसत्रुनवहाया॥कारननिरदं
ऊमकेमाया॥मोतैकरौंभगवनकेकाजा॥वेगतोषलेवोंमइरा\
जा॥देवीत्रलयमुहूरलकालहि॥दरसनदीनाभगवनगुपालहि॥अ
तककंमभ्रिमलहाथवर॥संषचक्रलियेंगदापदमकर॥चंद
हासखडुकियोपुनामा॥हरषनहियेंभगवननिहकामा॥२७॥दो०
खडुप्रसन्नदेवीभईनिरषभगवनखड्भांन॥चंदहासनिजहरभग\
वनमहालेनरविक्रांन॥२८॥श्री॥चौ० ई॥देवीकहैभगवनसुन
अवनन॥कलितमघअपरीनाअपवेनन॥लमअमकियोदुष्ट
मकेहित॥दुष्टवधषलपननप्रष्टमन॥अजहूंछेहोंगीतिहमा
या॥देवोंगीजोगनकेहाथा॥पापीकेतननकरहिप्रहारा॥देषावों
गीकष्टअपारा॥इहिभगवननसोंवैरकियोजिन॥मनवचक्रमनि
हचैमारोंतिन॥कियोकपटछलकृस्नभगवनसों॥शीघ्रकरोंगीका

सपतिनकों ॥ २२ ॥ चंद्रहासउवाच ॥ दोहरा ॥ सुनमातामनभाउफल
मैसोजाकेहीय ॥ मैसोआपनहोइलिहजोपरबांछनजीय ॥ २३ ॥ चौ
पई ॥ बांछोसभकोभलाअंबिका ॥ आइसकलभ्रमनामचंडिका ॥
चंद्रहासकेबचनहरेपर ॥ देवीभईप्रसनभगतनपर ॥ निहकामीनि
रवैरभगतहर ॥ भईसंतनछमातधन्यवर ॥ उपमकियोभगवती
ननछिन ॥ प्रथमभगतकोतोषकियोमन ॥ दसैहूकण्ककैकिये
नव ॥ अंगप्रंगसोंजोरलियेसव ॥ जलकीदेलेशुषपरमारे ॥ आ
लापरेनननैनउघारे ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ मदनउकोसरमीनदेनन
किनराजकुमार ॥ भगतप्रतापवद्योनहीलोगकरतजैकार ॥ २५ ॥
चौपई ॥ कृपाकरीकालकाभवानी ॥ बातेचंद्रहासकीमानी ॥ वद्ध
रजिवायोउछत्रद्विकों ॥ भगतेहेनआनमाहदकों ॥ मदनउद्धत
हीकियोप्रणामा ॥ चंद्रहाससेवकभगवाना ॥ नमस्कारदुर्गाकों
कीना ॥ पुनप्रणाममातापितनदीना ॥ विषयाकंवलगायोआना ॥
नारिमदनकीमनकुसलीना ॥ लोगसकलआनंदतभए ॥ करत
भगतनजसदुषमिटगए ॥ २६ ॥ देवउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनसुतभगत
गुपालनमदीनोहैराजसव ॥ आतातीनेरसलाल उछत्रद्धवलह
नकरों ॥ २७ ॥ उछत्रद्धउवाच ॥ चौपई ॥ उछत्रद्धवलवचनकहेतव ॥ हे
नमातामैंनमोवेरश्रव ॥ कुसलभगतकासंगभयोसुफ ॥ पालक
पाकरसमकहोंनफ ॥ प्रपनाकुनवकियोमैंपायो ॥ विसभगत

अ॰ प्र॰ सोंवैररचायो॥ रंलोरपतननगनकीमामा॥ चलेविहाकरअनुरि
भा॰ नवाना॥ रघपअरूढद्वैतुरमहिआए॥ नरनारिनसुभमंगलगाए
२९३ वाजनवैहैपचनरअपारा॥ पुरमहिभपोभगनजैकारा॥ २२॥ दोहा॥
चरनपसोहरिभगनकेरानीसहनपुपाल॥ हमसुनापजान्योनहीं
तुमसरूपनंदलाल॥ २५॥ चौपाई॥ हमसभराजसमर्पौतुमकों॥
करहुसनाथकृपाकरहमकों॥ तुमभपनहमदासतुम्हारे॥ तुम
हरसनअनुग्रमिटेहमारे॥ चंरहासपुनवचनउचारा॥ कहांकरोंगा
राजतुम्हारा॥ विषयारससतनभजोंमुरारी॥ जिहप्रभुरक्षाकरीह
मारी॥ जोतुमचलहुवेरमगवाला॥ हमद्वैहैतुमरेभूपाला॥ २६॥ दो
हा॥ मैंनहिवांछोंराजतुमभोगहुसहहनअनेर॥ हमकोंसेरअनाज
कोपदुचावैनंदनंदन॥ २६॥ चौपाई॥ राजनरककामूलनरेसा॥ सम्मआ
नजिपकुलिउपदेसा॥ यहदेहीमाटीकोभाजन॥ हूटनबारनलागे
राजन॥ तैसेंयहदेहीजगजानहु॥ विनहरिभजनसकलदुषमानहु
मानसजनमनहोतदुपुनपुन॥ तातेंभजियेहरुसरूपनहुन॥ माटी
एकसकलभाजनकी॥ जनकभांतजाभाजनजनकी॥ ज्यापोअपनेभा
गअषमकह॥ जीयजंतषलअंधमीनकह॥ २७॥ दोहा॥ सवननमा
टीपकसेगहननहारपुनएक॥ अपनेअपनेभागहैंरावेविधनविवे
क॥ २८॥ चौपाई॥ तनहुउहहपथापुरकीगत॥ छिनछिनछटरत
मानतहियाटत॥ तैसीराषीअंजुलजलभर॥ टरगयोसकलनरंच

रह्यो कर ॥ बान धनुष लै क्रूर तजै सें ॥ आवन वार न लागन लै सें ॥ मैं
हीन रन ग्राग्रन र सभ की ॥ सफल लै फलागी लिवहूर की ॥ साउम
कीसलिलाउ भगवन जिम ॥ प्रवल प्रवाह गिरन लण्ण डुमलिम ॥ लै
सैं जो वन वान प्रवल नर ॥ पाप करन जो वन के मरकर ॥ ४९ ॥ दोहा
चंदरहास पुन यौं कह्यो जो वन करो न गुराज ॥ नीतर हत किल विषव
द हि हो हि न हरन काज ॥ ५० ॥ चौपई ॥ इह सुत धपुन वचन उचारे ॥ सुन
हु प्रवचन रे भगवन प्रयारे ॥ इम ध्यप हरा जसम भर्यो तो कों ॥ अपनी नीत र
हा वद्रू मो कों ॥ जो तम कहो सो उहम करऊ ॥ तमरी ग्या ना मा थे धर
ऊ ॥ मैं अपराध किये अति भारी ॥ छमिये मोहि भगवन गिरधारी ॥ मैं न
हि जानो मरम तुमारा ॥ तुम साखात रूप अवतारा ॥ यौं हि कहत
है वेद पुराना ॥ पितासमतर रो ऊप कसमाना ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ राजन नमित
सु पहत भई किये कपट छल रोह ॥ रावली जिये हर भगवन लाज हमारी
तोह ॥ ५२ ॥ सोरठा ॥ तन छिन भयो रिपाल चंद्रहास निरवैर मन ॥ कीजै
सु के सनाथ जो तमरी इछा स तर ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ इह सुत दयाला की नीत
व ॥ सुन हो सकल हलां न लोग सव ॥ जे तक प्र रमहि वसत नारि नर ॥ पि
ल ग्राप सभ हार भगत हर ॥ ग्राम न के चौधरी बुलाए ॥ लोग परगने के
सभ आए ॥ प्रजा सम सत एकठे भए ॥ सभ मिल चंद्रहास पहि गए ॥ किए
प्रणाम भगवन गिरधारी ॥ तुम भूपत हम प्रजा तुमारी ॥ बोलो
भगत सुन हु सभ लोगा ॥ बिन सहि गे तुम रे सभ सोगा ॥ ५४ ॥ दोहरा

प्रे॰भ॰ सेवा हरि माथे धरइ सकल प्रज्ञान रनाउ ॥ धारइ ब्रत एकादसी
भा॰ सिमरइ सदा मुरारि ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ कीजै सदा पुन्य सुरदाना ॥ संध्यादि
३९८ कनी दुध अस नाना ॥ देवकर्म पितरकर्म विधाना ॥ गायत्री षटकर्म प्र
धाना ॥ चरनोदक हरि का नित पीजै ॥ हजा गोग्रास प्रमाणकी कीजै ॥ जो ध
म करइ सकल पहकाजा ॥ लोहम महां दिलद्यारे राजा ॥ पावइ गे स्नु
विविध प्रकारा ॥ सुनली जे हरंत हमारा ॥ संतन संत सालग्राम सुहिरदे न
तो मैं सुहितसी स परलीना ॥ ५६ ॥ दोहरा ॥ सालग्राम सुरूप कृपाकर गुरु
नरि पोरत वचन ॥ लिह प्रसाद सुफकियो वस सिमरन करम भगवान
५७ ॥ चौपई ॥ महां न हां सुरूप संकर परी ॥ ननद्धि नपरमापन सभह
री ॥ हम कों रप करहि पो चें डालन ॥ नासकर न हिन लेआ एवन ॥ रक्षा
की नीत हां सुरारी ॥ दीक्षा न विपत्ता सभ रारी ॥ बहु रोइ ह्उ पहपवी
पन ॥ विषहरी जे कहि प को मरन पन ॥ महां करी रक्षा न हुराई ॥ विष
हते विषया हम पाई ॥ बहुर सुब का हार पताये ॥ नासकर न हि तव
दत्ताये ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ महां हमरी रक्षा करी भक्तवछल नंदलाल ॥
पुत्री हई विवाह सुत कौं न हलम पाल ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ देवी हार मरन भो
नासा ॥ पिनु हृष न निह भयो विनासा ॥ सालग्राम मोजन सब उबराये ॥
सेवा करी परम पद पाये ॥ मों ते सालग्राम कहम से बहु ॥ हजा न वि
नइ जन न तें ले बहु ॥ निलप्र लिचर नोरक कहि तजन को ॥ रंइ न कर
नइ रन जमनि न सों ॥ हरि वंदन लागो जिह अंगा ॥ चिह्न चक्र तन

किंधेउमंगा॥ तेउनमकेसिरतालबजावहिं॥ हैहैंगुरुपरमपद
पावहिं॥ ५१॥ दो०॥ अलरकारसीकाधरे निरतकोरअपराध॥ तो
तेंपाकोहरहगहें॥ मिरहिसकलअघबाध॥ ५२॥ चौपई॥ भोजनपा
करसोईसिधजब॥ प्रथमेअरपइसालग्रामसब॥ बिनअरपेजो
लेनअहारा॥ सोउपाककृमिबिबिधप्रकारा॥ बिनपहरेपहुअर
पितजोई॥ चरमसमानहोतहैसोई॥ मलअररपेबिनमटसमजान
हु॥ बेरबबनपहसमप्रमानहु॥ तातेंताघोपकारसिअन॥ की
जैसदाकलसोंमनरत॥ पातेंहोतसदासहाइहरि॥ कीरतहोत
तीनलोकनवर॥ ५३॥ दो०॥ साधुसंगकीजैसदा हृदयकमल
सोंप्रीत॥ चंरहासकहिहनोलमबिषयासवबिपरीत॥ ५४॥ चौ
पई॥ बिषयासवमहिंभजनबिनासा॥ तातेंहोतरंडजमत्रासा॥ न
नमपरनइषप्रनप्रनहोई॥ नरकफलबिषयासवसोई॥ गुरुक
हिताननवतायोजैसें॥ गोलमलोगकरइसभतैसें॥ गोलमपशुसा
होइहमराजा॥ नातरमोहिराजकतकाजा॥ प्रजालोगवोलेति
हअवसर॥ हमसभतुमरेदासभगतहर॥ लागेचरनहिएंधरमा
उ॥ अघमेघसावकोंप्रभाउ॥ ५५॥ दो०॥ इतिश्रीभारथपर्वतीसअध्याये
पक्षमा॥ ५॥ सा ८ कों प्रभाव है ८ हकनप्रताना॥ ८०॥ जैमनउवा
च॥ चौपई॥ जैमुनकहैसुनहुरिषवीपत॥ गारदबचपहकहै
बिजैमत॥ प्रथमकियोरिषकोंपारपनत॥ सालग्रामकीविधपा

726

न॰ प्र॰ भा॰ १९५

घटसम॥ तुमभाखो वसभपटरारी॥ सालिग्राम सेवा हित का
री॥ सिला महातम मोहि सुनावहु॥ हमरे हृदे संदेह मिटावहु॥
वडफल सालग्राम की सेवा॥ कैसे वस होते हरि देवा॥ जे सुनक\
है होइ सविधाना॥ शंभु तनक्या सुनहु सुपकाना॥ ५८॥ दो॰॥ साल
ग्राम महिमा अमित कहि न सकों वस मोहि॥ कहि नारद सुन पांडु
सुतन अल्प कहत हों तोहि॥ ५९॥ चौ॰॥ हरन फल कहि सकत न को
ई॥ तुमसों अलप सुनावों सोई॥ पूजा सालग्राम की का फल॥ सेव
त रहत भगत हरि अविचल॥ नित प्रति सिलाहि ष्टनि हृष्वावे॥ ताके
हृदे कलस गहरावे॥ भोजन करे कलस को भागा॥ तो हरि फिरे पीव
नि हलागा॥ नेन निरख हिय मैं ददराखे॥ सो हरि भगत सुधारस चा
खे॥ प्रेम मग्न सिलां बांधन ते हे हरि॥ अवरन को ठगगन नि हसम सरि॥
दोहा॥ संख लिखे करता रहीं सालिग्राम पर नीर॥ सब दुरकर हि न व
घे रले आन धरहि बलवीर॥ ६०॥ चौ॰॥ तिन के नास होंहि कलवि
घन॥ जे सेंम्र गन जरा बनल रणा वन॥ तिन के वाज हि प्रगट वि
साना॥ प्रापत होंहि सुकल अस पाना॥ छेदा सब टप रेति हृश\
वनन॥ जनम जनम को पाप मिटहि तन॥ सालग्राम चरन हि ले
हाथ॥ पातक को दूर हि निहम साथ॥ कसम चस सुमो को वनहि
तकर॥ टरत विकार होत शीतम हर॥ सभजन गसिमरन श्री\
गिरधारी॥ हरि सिमरन मसिला अघ धकारी॥ ६१॥ दोहा॥ तिलक

उसीरनभालपरचंकचिह्नतनकीन॥ तिनजमकारकछुनहीं\
तिहतनकमलअधीन॥ ९॥ चौ०॥ सोनरऔरनकेअघहरई॥ सालग्राम
हृनानोकरई॥ जोनरलेतपारमनतनहित॥ सालग्रामकोचरनोद
कनित॥ तीनलोकमहिवरतप्रमाण॥ सहाअसअमिरतनमता\
पा॥ अवसम्रहतिनकेउरमांही॥ फूलभक्तवांछतमनमांही॥ नि
रखतसालिग्रामइसनाना॥ विधवतअमाकरतविधाना॥ तिहकौ
फलअमवरनतनावों॥ लमरेहुरेसंदेहमिटावों॥ २॥ दो०॥ कहि
मारदतनपारषोसिलामहातमसेह॥ सोलमनहाअयसुरुवरन
तवावोंतोहि॥ ५॥ चौ०॥ दानकरतहैनेमधारनर॥ रकगुनतेंद
सगुनाफलतवर॥ तिहतेंहोतसतगुनाफलतब॥ तिहसोंनरपरस
तपरागजब॥ पुनप्रागतेंदसगुनहोई॥ गंगासागरसंगमजोई॥ ति
हतेंदसगुनपुनहोतनतह॥ परसोतमकुरुषेत्रतिह॥ जगपहि
तसकुरुषेत्रअपारा॥ दानफलनहैविविधप्रकारा॥ सोकुरुषेत्रतेंदान
तीरपवर॥ दानकियेफलहोतअपकनर॥ २॥ दो०॥ तिहतेंहोवैसो\
गुनाफलपापतअभिराम॥ जिनपुरुषनकेसीसपरसेवासालगरा
म॥ १०॥ चौ०॥ पुनकहेवनीरपयअहताके॥ सालिग्रामप्रभावइनाके॥ \
तिहअवनवरणकोटमेनीसा॥ सालिग्रामसेवाजिहसीसा॥ तेनिरभ
यडोलतजगमांही॥ जमकारतिनकोंकछुनाही॥ जगतहकला\
रयहोतदरसतिह॥ सालिग्रामकाध्यानधरेजिह॥ तानपरारय

न॰ श्रु॰ तिनहूंपायो॥ भावसहितसेवामनलायो॥ आनमदेवाभये-
भा॰ तेजनर॥ जीवनमुकतनकृपाकीनीहर॥ ११॥ दो॰ ॥ आपनरैस-
१९९ भक्कलसहनअवरउधारनलोग॥ विचरनसदाअवनिमैं विन
सगपसभलाग॥ १२॥ चौपई॥ सालग्रामजाकेउरधाजन॥ विध-
वनसंपुरविषेविराजन॥ जवहिचरणोसेवकमगमांही॥ ता
कोपरसैपवननहांही॥ पवनपवित्रहोनतिहअवसर॥ लोग
कृतारथकरनपरसपर॥ मारुतपरसकियोजाकोमग॥ कि-
येकृतारथलोकसकलजग॥ तिनपुहपनचढ़ावनउधारे॥
पावनकियेमहाहत्यारे॥ सालग्रामहोतेसेवकहर॥ भयोसु
पावनपवनछुवननवर॥ १३॥ दो॰ ॥ तिहमारुतमारगचलन
परसकियोजिहगात॥ कियेकृतारथलोगलेजेउअधमवि
ख्यान॥ १४॥ चौपई॥ जोनरसालग्रामपरसनतिन॥ कोउनवरन
सकतमताकीछिन॥ नारदकहैहलनउचचपारथ॥ सालग्रामपु
रषनसवसारथ॥ जाकीचरणनअगमअपारा॥ तुमसोंकहीअ
लपविस्तारा॥ सुफसोंविधवनकहीपितामा॥ वरषजाजगसा
लगरामा॥ सालग्रामनैवेरशजकर॥ लेवोसोरप्रसादप्रेमधर॥
कर्मसमर्पैश्रीभगवाना॥ सुकतनकरेसेवाविधनाना॥ १५॥ दो॰ ॥
सालग्रामकेतोयसोंस्नपनहोनप्रसंग॥ तीनलोकनपावही
अहरषीनवखंड॥ १६॥ चौपई॥ सिंचननीरमूलदुमजैसें॥ हरन

होतसाखादलतैसें॥सालग्रामजवभोगलगावत॥तवहींलीन-
लोकरूपतावत॥ताचेसालग्रामकेआगे॥गानकरततनमनग्र
हुआगे॥पाकेलागफिरैश्रीकृसलिन॥ताकीरक्षाकरतरैनदि
न॥आपद्रुकलश्रवरोंनिसतारहि॥सालग्रामपाखेजोधारहिं॥जो
नरसालग्रामसविधाना॥गायत्रीजपजपेविधाना॥१७॥दोहा॥जे
सेंभुगतकपासकोंछिनमहिलेतनसाइ॥भस्महोततिमग्रहसक
लेसालग्रामगुनगाइ॥१८॥चौपाई॥जोनरसालग्रामसविधाना॥ल
पलाजापकरैविधनाना॥ताकोकुलसौमीनउधारत॥औपनवेग
हुरगलिहिंशरन॥अरपिहोतलिहपिलरपापरत॥इकवैसवकु
लग्रगरकरीगत॥जिहकुलतहिवैसवप्रगटानो॥सोकुलमहनक
हींसमजानो॥जीवतहींतिहभईनरकगत॥पगलीवोजगजम्मग्र
हुमत॥सालग्रामप्रमानितकीजै॥पारपषवनहूनछविनदीजै॥
१९॥दोहा॥अंतसमैकीवेरजोचरनोदकप्रुषलेत॥ताकोतनछिन
रमापतसुकपरारपरेत॥२०॥चौपाई॥जपपिहोतअधपप्रजानी॥वे
गउधारलेतचक्रपानी॥अंतसमैकफकंठविरोधत॥नहिकरसक
तपानचरनोदक॥तवछिरकतचरनोदकलिहलत॥निरखहरु
तनमभपकिंकरमन॥रहांतौरहमरीजाहिनग्रव॥चरनोदककछि
रकोषलतनसब॥पुनकुहुंबलिहहरसिमरावहिं॥चरनोदकगु
षनिलकलगावहिं॥चरनोदककहरिसिमरनजहां॥श्रावनलेत

म·ग्र कुसगननहां॥२५॥दो॰॥चरनोदकसुषनामहरषसंतसमेजो
भा· लेन॥तिनपहिंग्रावनविघ्नगणजमकिंकरनजदेन॥२६॥चौ॰॥
२९० जमकिंकरवचकहनपरस्पर॥वत्रोयहग्रज्ञामलमहांवर॥इ
मकोंइहांनिरादरभयो॥रामनामहनवलकुरगयो॥पतिनसुह
षकोंगनपइचावै॥संतसमैंजोहरिगुनगावै॥इकचरनोदकसु
षरनामहरि॥निरषतभागगएजममनडर॥चरनोदकसंगनो
ननपारष॥सिद्धकरनसारषपरमारष॥पाकोहुनकहिसक
नकोई॥जमकोंकहीसकलपसुकसोई॥२२॥दो॰॥जोकोसुहष
कथाकहैसालग्रामविदमान॥तिहश्रवननवहधनपरैपावैप
दनिरबान॥२७॥चौ॰॥सर्वधर्मफलकैनरकोई॥आपनमाहिसुक
नपरहोई॥हरिमंदरदरसनजोजावै॥सोनरचारपदारथपावै॥
नितहिंनमेंचरनोदकलेई॥तिलकषसादभालपरदेई॥सबसव
मीरषकोफलताको॥मननदानपुण्यफलवाको॥सालिग्रामकों
तिलकलगाकर॥मेंमेंआपनहोतसरगवर॥साधसंगलगजान
सुधमनर॥उधरतसालग्राममहरसनकर॥२५॥दो॰॥पलनसुह
थसनसंगमिलपरसनसालिगराम॥हरजननग्रावनलेननितहन
हिजमगणकोकाम॥२८॥चौ॰॥जिहयहसालग्रामकीसेवा॥ति
हहरसबतीरथसबदेवा॥ग्रहतुलसीदुममंदिरजाके॥पत्रनिर
तसुवविनसनताके॥जोनिततुलसीपाननिहारै॥उधरैग्रापसक

लक्षुलतावै॥ मंजरिहीनतुलसकामांही॥ मनक्रमवचहरिवस
ननहांही॥ जोनरश्रवलोकैमंजरितिन॥ तासौंकरतकुसमनतन
हितन॥ चरवेसालिग्राममंजरिकर॥ तुलसीदलसंयुक्तभाउपर॥ २४
दोहरा॥ सालग्रामधरजोतुलसमहिपुहुपकुलावैजोइ॥ कोटजनमश्रक
तानफलताकेसमनहिहोइ॥ २५ चौपई॥ जोनरसालग्रामतिनसेवै
पुष्पहोइपुनजननमनलेवै॥ अंतसमैतिहपुहपविमाना॥ पठवत
अपनेगणभगवाना॥ वैसवकोनिवासहैजहां॥ तौरहैतनताकोंह
रितहां॥ कहिनारदपारथसुनलीजै॥ मनवचक्रमनिहचैपहकी
जै॥ सालिग्राममहिमाविधपुफकों॥ सोकहिभाषसुनाईतुमकों
कहीपितामाविविधप्रकारा॥ हमतुमसोंकहिअलपविचारा॥ २६
दोहरा॥ पूजाफलवहुतेकहेअंथेमुकेअपार॥ अलपकहेहमतोहिकों
कियोनवहुविस्तार॥ २७॥ चौपई॥ जोनरसालग्रामजसगावै॥ तनेप
हैमनअनंदवढावै॥ तिनकोंप्रापतहोइभगतहर॥ कोटजनमकेपा
पजांहिजर॥ सालग्रामकोजससुनपारथ॥ सिद्धभयेतुमरेसभवा
रथ॥ जैसुनभाषतजननमेजयपति॥ हनकुकपानरपश्रवनसुपावन
वहुरोंकहिहोंप्रथमप्रसंगा॥ कुसलतजसहरषतअंगअंगा॥ वर्नैन
कहोंहिपंथरभाउ॥ पूरनपकासतोप्रभाउ॥ २८॥ दोहरा॥ इतिश्रीभारथ
पर्वणोअश्वमेधपर्वभाषा॥ पकाहतोप्रभावपतेहकनरहनमान॥ २८॥ जै
मनउदाव॥ चौपई॥ जैसुनजननमेजापनकहई॥ पारथप्रतिनारदउवा

ज.श्री. रई॥ सहरसभामपचंद्रहासलव॥ श्रीसेवचनविवेककहेसब॥ इ
भा. श्वरहउववचरननलागा॥ प्रजासहनमनकोभ्रमभागा॥ हीनव\
१९८ चनसुषनपनउचारे॥ चंद्रहासहमरासनउचारे॥ हमसोंवचनक\
हेतुमजैसें॥ प्रजासमेतकरेहमतैसें॥ सुदिनप्रजापहकहनपरस
र॥ महांसुकषपहभूपभगतहर॥ ५॥ दो० ॥ हमहिहरावलभननह
रिपुमकरनकेहेत॥ पहहमराकल्यानकन जोश्रीसीसुपरेत॥ ५ चे
२हा ३ वा॥ चौ० ॥ चंद्रहासवचउचरेजैसें॥ जोमेंकहहूकरोतुम
तैसें॥ जोतुमपरेयहआगेकोधन॥ सोसभदेउवारहितभगवन॥ प
नम्मनर्थकोभवनतुल्यारे॥ दानकरउतुमनमितसुरारे॥ प्रजाभ
गतवचकिपेप्रमाना॥ सर्वसलेकैकरमहराना॥ जोआगेधनसंग्र
हकीना॥ ताभारंचनसबनजरीना॥ १॥ दो० ॥ प्रजानादिनरजोरक
रवचनकहतभैदीन॥ हमकोंकरडसनाथप्रवतुमहोभगतप्रवीन
७॥ चौ० ॥ भयोसुप्रसनचंद्रहासनव॥ कृपादृष्टकीनीऊपरसव॥ से
वासातयाअमकीदीनी॥ सकलप्रजामाथेपरलीनी॥ प्रजाकरिसभ\
आपसमाना॥ करुणाकरीआपभगवाना॥ बरननकीरपंगगतजै
सें॥ कीनीप्रजाआपसमतैसें॥ नैनिधसंपतभईसभनके॥ पूरनभए
मनोरथमनके॥ कंचनसकलग्रहनपरभए॥ इषदरिहसभकेमिट
गए॥ ५ दो० ॥ ग्रहग्रहमहंउनसबभपोकीमैनकणाग्रविंद॥ इह
वुपनरपसोंकहेपनपवनरूपतकुलिंद॥ ८॥ चौ० ॥ इहछतुदपनवच

नउचारे॥धनकुलिंदवडभागउसारे॥बननैंआन्योहलविराना
महाप्रवीनरूपभगवाना॥तेमञ्चपनाकुलसगलउधारो॥यकरौं
प्रजालोगविसतारो॥इछ्छदहलाम्योकुलिंदपग॥धन्यधन्यतेम
निसतास्योजग॥अपनेसुतनैंहोननयहदुष॥जोतेमशापनभयो
गयोदुष॥तेमपरअनकरुनाकीनीप्रभ॥तेमप्रसादतैंलोगनरेस
भ॥५६॥हो॥६॥जैमनउवाच॥जैमुनजनमेजेकहैसुनउकथाहेकान॥
बचनकहैयहप्रजासोंचंदहासराजान॥५॥चौ०ई॥चंदहासजोव
चनवषाने॥तेसबप्रजासमकरमाने॥सभगमकूरतहियहुला
सों॥राजतिलकदियचंदहासकों॥चमरछत्रसभसीसबनायो
अरधनसिंहासनबैठायो॥शुभदिवीश्वरसभगुरिआए॥देअसीस
मनअनंदबढाए॥टीकाकियोभगतकेभाला॥कीआदषपवीकोभ
पाला॥पुरमहिहोनभयोजेकारा॥गावननारिसुमंगलचारा॥५॥दो
रा॥दुंदंभबजहिअनेकनबअनहर्षतसभलोग॥चंदहासराजाभ
योमिटेप्रजाअप्रयसोग॥७॥चौ०ई॥बेदउचारकरतभैब्रहमन॥दीना
दानसभनकोंताहिछिन॥सुर्गलोकपुहपबरषपालहि॥कीर्तनकर
लभगतचंदलालहि॥चंदहासकीआभूपनवर॥अवरभूपनहि
रनकेसमसर॥मदनसिंहकोंमंत्रीकीना॥कृपाधारअपनाकरली
ना॥पुनकुलिंदकेपगलपटायो॥हमरेनमितकष्टतैंपायो॥मोप
रछ्याकीजिपेताता॥होनीहोनसुबननतीवाना॥८॥दो०॥तोतेंइ

जे॰ ग्रं॰ षष्टषत्पिरनंहींसिमरनसारगुपाल॥ रहहकनतिनउरकौनकी
भा॰ निहसहाइनेरलाल॥ ५४॥ चौ॰ ॥ई॥ अवनमराजकरोपितुमाई॥ मन
३९९ महिधरमकहलवहराई॥ कीजेराजआपनेदेसा॥ अधिकगामसों
नमहिनरेसा॥ आनाहीनीभगनगुविंदा॥ गयोआपनेदेसकुलिंद
उनयसवहकेउ छत्रछिवर॥ कह्योभगनअवभजङसारहहर॥ ह
रअवस्थाभईजनतारी॥ सिमरङभगनमलगिरधारी॥ हरिसिम
रनहीनीतिहराना॥ वंदहासेवकभगवाना॥ ५५॥ से॰ ॥ नउ॥ ची॥
दोहरा॥ जनजनतनमेजानपतनिनपरभगनकृपाल॥ समदृष्टी
निरवैरजनपीरजउदिविसाल॥ ५६॥ चौ॰ ॥ई॥ क्रोधनहीहिपहरिभ
गननके॥ निरवैरीनिरमलनवमनके॥ वैरकरतहैसंतनसाथा
ताकोश्रीपतकेदनमाथा॥ उराभलाश्रुषभगननकहही॥ निसदि
नसदासंतमनरहही॥ भगननकेदुषसहनसकनहै दि॥ नासकर
नछिनसंननकेअरि॥ मिलेऊतेगोलोगअपारा॥ आनाकीनीभगन
पुरारा॥ सालग्रामसेवामनलावङ॥ भलीवसनलेभोगलगावङ॥ ५७
दोहरा॥ सहकपावकरसङपदसेवङसालिगराम॥ ब्रह्मचर्जदरीय
वसध्यानधरङचनसाम॥ ५८॥ चौ॰ ॥ई॥ पित्रिकर्मसंध्यातैकाला॥ चल
ङवेदमगभनङगुपाला॥ गायत्रीषटकर्मविधाना॥ सरधासहत
देहद्विजदाना॥ पडववकहिप्रानाकीनीनव॥ आपोअपनेधामजा
इसव॥ कीरसंगङरहोनमधुपनिम॥ वंदहाससभप्रजाकरीनिम

भगवत प्रसाद संत समभय ॥ कोटजनम के किलविष गय ॥ अपने अप
ने भवन सिधारे ॥ चंद्रहास रूप सभ निसतारे ॥ ७ ॥ दो० ॥ कहि नारद
नारद सुनउ इतनु मम ग्याणा मोहि ॥ चंद्रहास का जनम मैं सकल सुना
यो तोहि ॥ ८ ॥ चौ० ॥ अर्जुन नारद के पग लागा ॥ भगत कथा सुन सुन
अनुरागा ॥ नारद रिषि सुर पुरकों गयो ॥ हरिगुन गावत प्रमुदित
भयो ॥ कहि जैमुन रुपजनमे जयमुन ॥ श्रव कथा वषानत हों सुन
चंद्रहास जिम गयो तुरंगा ॥ तव इश्रवन रेसोइ प्रसंगा ॥ तिनतस प्र
गटि त्र्य श्रवनुधिष्टिर ॥ आपत भयो तहं चंद्रहास पुर ॥ ९ ॥ दो० ॥ पकलो
मारतुरंग कों विषया सुन हरिदास ॥ मन तक्रि नस्ला यो पितापै हिय
म हि वघ्यो इतुलास ॥ १० ॥ चौ० ॥ निरषत चंद्रहास भो हरषत ॥ अति वि
चित्र हय तन नग रखुत गत ॥ हेआ पड़पहाय भगतन न व ॥ श्रवनुधिष्ट
रा इलआनव ॥ है धर्मजन कोसा रथि अर्जुन ॥ भगत अनंदत भयो अ
वन सुन ॥ भगत मानत पतिवचन इचारे ॥ आनि दिव सहद भाग हमारे ॥
पहतुरंग आयो इम हाथा ॥ निहचैं दरस होइ जगदनाथा ॥ जंहां होर
गावि नयन हांहरि ॥ सम मान पर मन वच क्रम करि ॥ ११ ॥ दो० ॥ अ
र्जुन अर हरषी कलस हि मंत्र नालन हिकोइ ॥ जहां हो रगा इंद सुनत र
रि निहचै संग होइ ॥ १२ ॥ चौ० ॥ नीके राषतुरंग मनाला ॥ जिह प्रसाद
दरस हि जगनाला ॥ तषपा वहि गे महा विसाला ॥ दरस विलोकहि
गे नंदलाला ॥ अर्जुन संग सदा जदुनाथा ॥ पहक करोंमैं पारथ साथा

म.पु.
भा.
५३.

ऐसें न्रप कहिंगे अर्जुन सों ॥ सुषपाव हिंगे श्रीपति मन सों ॥ श्रद्धा करें
सरन कीरत मैं ॥ होहि प्रसन्न कमल नैन मन मैं ॥ श्रीपति सुष पाव
हिंगे जैसें ॥ रन महि मोष करेंगा तैसें ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ नीके राषन्न संग
कों विष्या सुनहु हरिदास ॥ यों कहू लेखा पन भयो हनन कहन अग्रन पा
स ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ हन सुना ईन्रप कों वाला ॥ आयो विजै संग जगमा
ला ॥ चतुरंगनी सेन सजि साथा ॥ बैठे अग्र ग्री परष साथा ॥ हनव
चन सुन भगत सुरिन मन ॥ उद्यम कियो नृह करिहों रन ॥ सुष
देव कों कियो प्रणामा ॥ सेन चलो लै हिल संग्रामा ॥ अनगन सेना
मिली अपारा ॥ बजन बजे अनेक प्रकारा ॥ चोड्स वरष हि केव
डी वर ॥ तन सिंगार कर चले नृद्र पर ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ हय गज रथ पा
र कान करग नेनजों हि अनेक ॥ जैसें उडगन गगन महि कसो न
जाइ विवेक ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ बारु कण सुपात है जैसें ॥ गनी जात न नहि
सेना तैसें ॥ उदपत हरजैसे रण धरनी ॥ तैसें चमु जात न नहि वरनी
ह हपरी अर्जुन कों सेना ॥ धारष करे कमल प्रतिबैना ॥ सुन इक
पाकर अब नासन हर ॥ चंद्रहास सो पो सेना वर ॥ हिषि पन सक
ल सूर भपाला ॥ सेना चतुरंगनी विसाला ॥ धर्म जन के मष महि दिन
घोरे ॥ हरन का जकर रह प्रभमोरे ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ महासूर रव्रमरा भग
ल चंद्रहास राजान ॥ इन कों कैसें जीतियै करुणा करभगवान ॥ ५
८ ॥ चौपई ॥ सुन पारथ पट्ट भगत हमारा ॥ चंद्रहास सेवक अघ्रुकणा

रा ॥ जो पद् रन करई संग्रामा ॥ इन सों जुद्ध न लछमन कामा ॥ इन
कों जीत सकै न हि कोई ॥ जो त्रैलोक एक ह्वै होई ॥ इन आगे बल ल
छमन हारा ॥ जीत सकै न हि मन न अपारा ॥ हम पुन जीत सकै न भ
गत कों ॥ आन मनाना दिय सकल कों ॥ सेवा कर मो कों वस कीना
उर तें इन तत जान न हीना ॥ २५ ॥ दो० ॥ भगत हृदै कों फेर हों घेर
कहैं हों आप ॥ रूपत जुधिष्ठिर जन तकों प्रन करौं प्रताप ॥ २६ ॥ चौ
पई ॥ मन न मह हि चिंतन कीजै पारथ ॥ सिद्ध करौं धर्म ज को स्वारथ ॥
न हि जकेगा चंद्रहास रण ॥ फेर लेउगा मैं उनका मन न ॥ नही चलावै
मुक्स तन मुख सर ॥ आइ परेगा सु रूप वरन न पर ॥ जब हि सुनेगा हृ
मरो नामा ॥ आइ मिलेगा तज संग्रामा ॥ जद्यपि उनके कृपि धर्म मन
ले वों रिदे छिनाइ ताहि छिन ॥ तिहिं का भीव दह भगत हमारा ॥ सेवा व
इकी विविध प्रकारा ॥ २७ ॥ दो० ॥ जै मन न कहि सुन न हो रूपत पद् व
वक है गुपाल ॥ सेन सहत तत आयो तवै चंद्रहास भूपाल ॥ २८ ॥ चौ० ई ॥
चंद्रहास सुन भगत गुपाला ॥ तरुन देह छव महा विसाला ॥ तैसें ह
धारा जन रन कीना ॥ तप कर हरि कों वस कर लीना ॥ तिलक संख च
क्र हु भगवाना ॥ निस दिन रिदे कमल को ध्याना ॥ तुलसी मलक कं
ठ विराजै ॥ गौर विमल तन अति छवि छाजै ॥ रूप देख अर्जुन के रथ
पर ॥ वै देह मरे इक हेव हरि ॥ रिषि न सरूप वताओ जैसो ॥ सावधान
निरखो हम तैसो ॥ २९ ॥ दो० ॥ जिहि कों बाल प्रजंत हम रिदे लगाव

म॰ सू॰ नध्यान॥ सो अर्जुन को सारथी वे तो श्री भगवान॥ ३४॥ चौपई॥
भा॰ चंद्रहास निज अनंत वहायो॥ दरसन इष्टदेव को पायो॥ जो स्वरू
३७८ प नप रिखि निबतायो॥ सो इह रूप नवकुल इखायो॥ संष चक्र अरु
गदा पदम कर॥ कौस्तुभ मणि उर अलि कुंडल वर॥ सो भन वैजंती
उरमाला॥ मोर पछ सिर वर इह विसाला॥ रूप चतुर्भुज धार कृस्न
उन॥ बैठे है रथ सारथि अर्जुन॥ बैठे रूप अनूप धार द्वव॥ पारथ
के रथ अग्र कृस्न व॥ ३५॥ दोहरा॥ जैसु नसों इक्षो इसजन मेज
पराजान॥ रूप चतुर्भुज परविजै रथ बैठे भगवान॥ ३६॥ चौपई॥ जो
स्वरूप दुर्लभ मुनकादिक॥ धीमन फिरतई सब ब्रह्मादिक॥ इंद्र आद
सुरस कल रिषीस्वर॥ अैसा दरसन चंद्रहास हर॥ कैसं रिषी कहां प्र
काश कर॥ मन को संभ्रम अंक हिसो वर॥ जैसु नकहै है अवतरदूभरर
प॥ जो नुमइक्षो अश्वन राघिप॥ चंद्रहास रणमहि आयो जब॥ नि
रषविचार किचो हि यह रितब॥ अर्जुन जीन सकै न भगन कों॥ जो
मंगला वे सकल जगन कों॥ ३७॥ दोहरा॥ अर्जुन जीन सकै नहीं चंद्र
हास राजान॥ रूप चतुर्भुज धरयो इह रिप इह विचार निप जान॥ ३८॥ चौ
पई॥ कलो चाहिये पततनु युधिष्टिर॥ यह विचार कीना उर गिरधर॥ देउ
भगन कों दरसन सोई॥ जिह सों नरपत सांन मन होई॥ जो नरपति षटव
नायो रूपा॥ कृस्न चतुर्भुज वर्नै अनूपा॥ दरसन सो इ भगन कों दीना॥
चंद्रहास का मन वस कीना॥ आमो भगन सभी भगवाना॥ जोतुडरि

घनबलापो ध्याना॥ रघपकोंहांकनिकरचलग्रायो॥ इहदेवकारर
सनपायो॥ ३५॥ सो॰ रा॥ रघपतेंउनलोभगनलवहरिकोंकियोप्रणाम
करैदंडवतमगनहैमनपायोविस्राम॥ ५०॥ चौ॰ ई॥ ननहुधमल
गईमपाला॥ नवरघपतेंउनसोधुविपाला॥ रपकोंधुजभरकलसउ
ठायो॥ मुदिनभगनकोंकंबलगायो॥ आनंदरनहगनीरवहायो॥ सिं
वहधाजनकोलपमायो॥ वंदहासकोंकह्योवचनहरि॥ भगतब
रूहोरघविजपर॥ रघग्ररूढ्योवंदहासनव॥ ठाढोजहांवप
ग्रपनीसव॥ श्रीकसमहिरदेमहिरालो॥ सुषतेंवचनकहूनहि
भाष्यो॥ ५०॥ सो॰ रा॥ जैसुनकहिहुनहोनरघन पारघकियोविचार॥
पुनरघपरवावाभगनहिपिघनलहुइप्रकार॥ ५८॥ चौ॰ ई॥ जिनवि
लकैकतुभेरनहीनी॥ पुनग्रस्तुनइरिकीनहिकीनी॥ हरिपगप
रसनभाषैवैना॥ ठाढामाइग्र्यापनीसैना॥ संसाउपनपलोश्रर्जुन
मन॥ ववनकहैपारघप्रलिभगवन॥ मिलइधनंजपवंदहास
कों॥ ग्रुरुसेवकग्राननवकासकों॥ नवग्ररजुनगुषववनउचारे॥
हनऊप्रवनदेप्रभुहमारे॥ प्रघमरपनलमपगसिरधारा॥ पुन
ठाढानिजवपमफारा॥ ५१॥ सो॰ रा॥ सनपुषवाहेजोरदलरिरेन
रकीवान॥ रहरनप्रवसरमिलोंहमकुत्रीपर्मलजात॥ ५५॥ चौ॰
ई॥ हरिसोंवचनकहैपुनपारघ॥ सुमपधमोहिकह्योमध्यभारघ
कहीहोइक्रोधमागेरन॥ नरकजोनभोगनसोउन्नगन॥ ग्रबकह

740

ग॰ श्र॰ तेहो मिलन रूप जाई ॥ कृपा नाथ मो कहु समझाई ॥ पुन बोले श्री कृ
भा॰ स्न वि नै भ्रलि ॥ गुरु को चंद्रहास श्रील मञ्जलि ॥ मन वच क्रम निज रू
३७२ प हमारा ॥ निसदिन गुरु कों हिय मैं धारा ॥ भगतन की माला हमरे
गर ॥ सब कामे रूचंद्रहास वर ॥ ७५ ॥ दो॰ ॥ याको मिलन अथास
है यह निरवैरी रूप ॥ चंद्रहास लन मय भगवज्ञान द्रढ हम ता रूप ॥ ७६
श्री कृ॰ उ॰ चौ॰ ॥ अर्जुन अति यह बचन कहे हरि ॥ तुने श्रवन
रूप चंद्रहास वर ॥ हों कब लो पार पर पन वही ॥ श्रीपति आज्ञा ताही
नीत वही ॥ विषम ताव हो ऊ जब भए ॥ द्रस्सन परम सुखेर मिटगए ॥ चं
द्रहास ह्रस वचन उचारे ॥ तुन पारथ निज सखा गुसारे ॥ हम मोइ हां
गुरु हित आपे ॥ अब कहो की जै सतगुरु सकायो ॥ अर्जुन बचन क
है तत काला ॥ हम तुम मध्य गुरु षचंद्र लाला ॥ ७७ ॥ दो॰ ॥ यह बा
तें कर परसपर किये अलिंगन गात ॥ चंद्रहास गुरु फालगुन दोऊ भ
गत जग तात ॥ ७८ ॥ चौ॰ ॥ चंद्रहास अरु पारथ दोऊ ॥ लागे आइ कृ
स्न पग सोऊ ॥ धन्य धन्य मुषते भाखो हरि ॥ चंद्रहास आपनी भगत
वर ॥ चंद्रहास निज भगत हमारा ॥ तन मन धन गुरु कृष्ण पर वारा ॥
वड्डर भगत गुरु षवचन उचारे ॥ आज दिवस बड भाग हमारे ॥ हम कों
प्रभ सनाथ करलीनो ॥ करुणा कर निज द्रस्सन दीनो ॥ धर्म जने
मष मह दिय गधारा ॥ कृपा करी अपना निसतारा ॥ ७९ ॥ दो॰ ॥ चांदें
अलिवर स्तु कुली धर्मराइ को तात ॥ ताके सदा सहाइ निन निसदिन

त्रिभुवननाथ॥५०॥चौपई॥हमसेउधरेन्नतउसारा॥दससोहगरह
स्त्रिपुरखघ्रनासा॥महाभाग्यप्रभजोतुमकीनो॥भारमहीउतारसभ
लीनो॥धरनीभारउतारनकाजा॥तुमचरित्रकीनेजडुराजा॥पहु
इक्षापीप्रभहमारी॥कौरवनासकरोंबलभारी॥भीषमादिसभ
नासकियेरन॥संसयउपजायोधर्मजमन॥तुमरेमनप्रभुपहस
भसारच॥करोंजतनमिसभगतकुमारच॥५१॥दोहरा॥आपकतहां
तुसर्वपधद्रहहतुमरावास॥अच्छजातहैचलतहांजहांहरिम
गतनिवास॥५२॥चौपई॥भगततनभवजलतारनकाजा॥पहुतमि
भेतैरोजडुराजा॥धर्मतातनतेंपतककरायो॥निरहपनकोंदोषलगा
यो॥आपकतुमहिसर्वभगवाना॥जलथलसभद्रहमोंहिसमा
ना॥भवसागरतेंकाहलियोप्रभ॥दियोकृपाकरनिजदरसन
तुक्र॥बालवेसप्रभुकसंतमिलाप॥तिनप्रभुफलतुमरेचिकवलाप॥कि
नकीकरुनातेंरूपभयो॥तुमसिमरनतेंसभदुषगयो॥५३॥दोहरा॥
संततनननकीकृपातेंदरसनदीनोमोहि॥भगतवत्सलनंदलालत
मकरसनाधलियमोहि॥५४॥चौपई॥जिनरूपरतुमसंतकृपाला
तिनकीरक्षाकरतगुपाला॥प्रथमेहमभवसपलोचंडाला॥ति
नतेंरक्षकरीनंदलाला॥उपजाईमनकृपामनउनके॥हततकि
योप्रभकाइहिवनके॥पुनतहरूपतकुलिंदपठायो॥सोप्रभ
वनतेंगहलेआयो॥महांप्रभदीनाराजसिंहासन॥तुमप्रंतर

ज॰मु॰ जामीखुतनासन॥ वहुरङ्कहतुपङ्कतपापीमन॥ नासकरनपढ
भा॰ योनिजभवतन॥ दो० ॥ जहांप्रगटाईकृष्णकाविषतैंविषपाकी
३०३ न॥ वहुरघंविकाहारमुरूपकोदूहमनहीन॥ ५९॥ चौ० ॥ ई॥ जहलम
हरेविचारलगायो॥ कौनहलघनगुरुहिपठायो॥ नहनपरुमा
किपोगुरुकोंपन॥ हारघंवकाभयोमरनहन॥ पुनउनकोंदीनेत
मघाना॥ भगतप्रतापकियोभगवाना॥ अहलहरक्षाकरीहमारी
भगतवत्सलतुमनामपुरारी॥ हरिपगलागउठेरोऊजब॥ प्रभसों
वचनकहेपारथतब॥ ऐसीकहलाकरीभगतपर॥ मनवचक्र
मकीनीतुमगिरधर॥ ५८॥ दो० ॥ चंडहासकोंकृपाकरकंठल
गायोनाथ॥ ताकीमहिमाकहकहोंकीनीभगतसनाथ॥ ५८॥ चौ०
ई॥ चंडहासगुनवचनउचारे॥ तुमनोप्रवनदेप्रभहमारे॥ कहांकहों
महिमापुषणारथ॥ जिहकेतुमरथकेहोसारथ॥ भारथवीचम
हाप्रणराषा॥ तीनलोकजाकोजसभाषा॥ जिनकेतुमहरिहाथ
विकानो॥ रहतअधीनदासवतमानो॥ तुमतोआत्माकारीनिसदि
न॥ सदासंगविकुंठोनहिरकछिन॥ पांडवप्रीतपकानहिपेंहर॥
नासकियेतुमसभदूनकेपुर॥ ६०॥ दो० ॥ तेतेंपारथभगतकीम
हिमाकहीनजाइ॥ प्रेमडोरिमैंबांधजिनवसकीनोजदुराइ॥ ६१॥
चौ० ॥ ई॥ धर्मराजद्विजतकेंलीमाला॥ पुनईहोपरीभगतजगकाला॥
सवकुलभीमनकुलसहदेवा॥ रनतुमवसकीनेहरिसेवा॥ जे

लकृपांइवकोपरवाना॥ इमनैहींसवकेवलहारा॥ यहकहि
चंद्रहासराजाना॥ खड्गरवीकलमपगलपराना॥ वड्डरभगतनशुध
बचनउचारे॥ चलहुनगरहमरासनत्यारे॥ कीनेपुरप्रवेसश्री
पतअब॥ चलहुसहितसेनापांइवसब॥ ६५॥ दो०॥ चलेकृपा
करनगरहरिपांडवसेनसमेत॥ पुरप्रवेसकीन्हप्रभुउतलो
भगतनिकेत॥ ६६॥ चौ० ई॥ हरसदेषविषयाग्रत्रागी॥ सोतिसस
हलहरिकेपगलागी॥ लाईसाजआरतीहाथा॥ पूजाकरतोषम
इनाथा॥ षटरसपाकसिद्धनवकीने॥ हिपहितपारकलसकोंदी
ने॥ चंद्रहासविषयालेसाथा॥ धालोकलसचरनपरनाथा॥ वारं
वारहीनताकरई॥ पुनपुनदोउकुलसपगपरई॥ हमकोंलिषोउ
धारकृपाकर॥ अंतरजामीभगतवत्सलहर॥ ६७॥ दो०॥ जिम
जिमईपतदीनताकरैकुसलविरमान॥ तिमतिमहृदेप्रसन्नह्वैलि
पलागहिभगवान॥ ६८॥ चौ०॥ पुनहरिवचनकहैपारथप्र
ति॥ देषहुअर्जुनचंद्रहासगत॥ दीनवचनसुषकहतविसाला
जपपिभयोमहाभूपाला॥ इष्टयुद्धसुकृतसेवकसाथा॥ वैरविको
कछुवलोनहाथा॥ इनसोंभगतत्रुतानहिभाखो॥ वैरभावमन
मैंनहिराखो॥ यहहमपरेभगतनकीरीता॥ काहूसोंनकरैविप
रीता॥ रागद्वेषतिनकेमनमैंनहि॥ सत्रुमित्रसमसरकरजानहि॥
६९॥ दो०॥ महासांतग्रणमैंरहैमुकुभगतनकीरीत॥ सत्रुनवांधे

सं·ग्रं· कहि त्रु राजिन गुरु विषे प्रतीत ॥९२॥ चौपई ॥ गुरु भगतन कों इ
भा· घनहि होई ॥ अवरन कों सुषउपजत सोई ॥ तनमनधन गुरु कों अ
२२५ रप्योतिन ॥ हमरे विषे प्रतीन करी जिन ॥ सत्रु मित्र तिनके रोकस
मसर ॥ भगतन की महिमा वरनी हर ॥ सुनपारथ अनंद भयो म
न ॥ वचन उचार कहे प्रतिभगवन ॥ रहस्य सों भारथ पतसम कीना ॥
लोगन मैं गुरु कों नसहीना ॥ करन सारथे धरन गिराए ॥ दुर्यो
धन से हरि सुर रखाए ॥९३॥ दोहरा ॥ श्रो लाचार जसार थे हनन कि
एरणजोध ॥ जिनकव हूं संग्राम मैं नमोन हि पर्तें क्रोध ॥९४॥ चौ
पई ॥ वड दरपिता मारे बल वाना ॥ महा सूर त्रैलोक निधाना ॥ भारत
मैं कीने हत ऐसे ॥ सूरन अस मात्र मानै से ॥ अवर सूर मे हने अने
का ॥ अनगन की नन मार विवेका ॥ ना सम ईक्षो हुती अकारा ॥ म
हा सूर वलवान अपारा ॥ राजन मित्र हम नास कियो सव ॥ ज्ञास मा
न जि परान तन्यो न व ॥ पाप मूल पहिचान राजमहु ष ॥ अंगीकार
न करहि ज्ञान तुष ॥९५॥ दोहरा ॥ श्री पत तुम उपदेस करा न बुधि
हिरहीन ॥ उन धर्मन कुलज्ञान को दोष धार जियलीन ॥१००॥ चौ
पई ॥ उन घर न हहरि तुम हि वताया ॥ धर्म सूत्र पहि पत कराया ॥
तिह तें वह गुनभयो सु पिकअव ॥ अवलोके तुम रे सेवक सव ॥
अहंमो होत नाहिं तुभगतन वर ॥ अवलोको तुम रे प्रसाद कर ॥
कहां गन पुरकहां भगतन त्यारे ॥ कौं करह रसन होत उदारे ॥ कु

लखइतेंपहूतलनभयो॥ताइलनरंगहमहिमछरयो॥ २८ ॥दो
हा॥ नवकाकुलानुरंगपहनवकेभगनछुरार॥नमरहरमाएक
पाकरहमकौंलिपोउपार॥ २५ ॥चौपई॥महाभारतकिपनमितह
मारे॥चंद्रहाससेभगननिहारे॥नपहमसीसहाइजहराना॥हर
नकरेहमारेकाना॥भगमनकोरसनमुरूभयो॥नमकहना
तेहुषमिरगयो॥तीनदिवसकैनलपरमांही॥सेनसहतहरिव
सेमहांही॥कौंसहलसहनरपनकुलिंदा॥वोललिपोनवभगन
गुविंदा॥हारेसानकलकेपगपर॥भपछपावननिरषहरसहर
२६॥दोहा॥उहछुहवइदिवसकोभयोइलोवमकाल॥ताकोन
हिप्रापनभयोररसनश्रीवंदलाल॥ २७ ॥चौपई॥विषपाचंपक
मालनहोऊ॥आसीभगनकलपगसोऊ॥चंद्रहासनरपजिपश्रनु
रागे॥प्रेमपुलकस्रानंदउषभागे॥श्रुतनदकहेरपचंदनवर॥म
लिमुकनालागीवइजालर॥भरकंचनसोसभकिपभेर॥उजल
वहनसमैलपेर॥चीरपरंवरश्रुतनपचीसा॥रपभरदिपेभेरत
गहीसा॥ २८ ॥दोहा॥हैसमश्रुतनलरंगवरभेरदिपेभगवान॥
ननमवपनसर्वसदिपोचंद्रहासराजान॥ २९ ॥चौपई॥चंद्रहासप
हभेरकरीजव॥हरिपसन्नहैवचनकहेतव॥चलहूभगलसं
गलेपरिवारा॥पुरकैलोगप्रजानरनारा॥चलहूहमारेसंगह
रहपुर॥सुषदेषहुसभमनयुधिष्ठिर॥धर्मनातकोसीसनिवा

मं. स्रं. वइ॥ बेगचलइवांकेतमुषणावइ॥ चंद्रहाससुनमुदितभयो
भा. मन॥ ३घमकरतभयोनाहीकिन॥ जेतककपारथसेनासबहो॥ द
१२५ ईरसोईभयपतनवहीं॥ ५५॥ दोहरा॥ पहराईसेनासकललेआनानं
दलाल॥ बुवमुकटभूषनदियेचंद्रहासभूपाल॥ ५५॥ इतिश्रीभा
षापर्वणिअश्वमेधपआग्या॥ हेसाबवीपभाउग्रहदहरकरनरंजान॥ १२
चौ० ६॥ मैस्रुनकहेंसुनहुकुरुराजा॥ चारोंदिसाफिरचलाबाजा॥
चलोतुरंगओरहंसनपुर॥ जहांरयोबरजनतनुपिहिर॥ हेराजा
रहिपोउरवाहर॥ रथचढचलोभगतपारथहर॥ चंद्रहाससति
सरथपार॥ चलतुरंगनीचमडलभार॥ आसाकरीविजैकोंगिर
धर॥ सागरलरकककरालवरिषवर॥ हाथजोरविनतीकरता
को॥ लावइजनतवीचतुमवाको॥ ५॥ दोहरा॥ आगपालेपारथच
लोगयोसमुद्रकेतीर॥ तहांवकरालबध्यानमहिमहिवोसोरि
धीर॥ ५॥ चौ० ६॥ ताहोविजैदिषीसुरआगे॥ जुगकरजोरदिये
मनुरागे॥ एकसमहूरतवीतगयोजब॥ ध्यानउगोसोवकराल
पतव॥ ताताषाग्रदैनकरजोरे॥ रिषविरचोपारथकीओरे॥ ब
वहिवेनतीकरीफालगुन॥ ससतनुधिहिरचलइतहांसुन॥ का
हेकूंलसहारकजहां॥ रूपाधारचलिपेरिषतहां॥ सुनवरसु
षेवचनउचारा॥ सुनहुसाधपदवचनहमारा॥ १॥ दोहरा॥ जो
रपकरनापनकानापहिस्त्रकोनार॥ कहोसुतहोकवनके

पिलग्रापनावनाइ॥ ५॥ चौपई॥ यहवचनकहिरिषयानलागापो
धुनग्रर्जुनगिरधरपहिग्रायो॥ वचनकहेवकदालभजेसें॥ हरि
प्रतिविमैकहेसवलैसें॥ धुनग्राताकीनीनेहलाला॥ प्रवगनप्र
रवलिघेनलकाला॥ उहानाइकैभीमपठावो॥ वकदालवगन
धुरहिपठावो॥ विहसारीनाचंदहासलव॥ सेनावलरंगचीसरस
व॥ हलिग्रस्वरथकरभग्रपारा॥ ग्ररुपदातकोग्रंतनपारा॥ ५॥ दो
हा॥ रामकुवरकुंवरजीवडेचंदहासकेसाथ॥ मलकसोभनिल
कलिहलसीमालाहाथ॥ ६॥ चौपई॥ चंदहासलपकेसंगसेना॥ उ
पमाकहीपरनककुवैना॥ महासरकुंजीवलवाना॥ सववैलव
सेवकभगवाना॥ वककविकसभग्रंगविराजत॥ तुलसीमालकं
ठकुवकाजत॥ सालग्रामसंपुटराजतगर॥ सोभतिलककवहा
हसग्रंगवर॥ सगरेचंदहाससपलागत॥ छवित्रिधर्मरवकोधनमा
गल॥ ग्रनगनसेनानिरखमहाछवि॥ पारथवचनकहेहरिसेंल
व॥ ७॥ दोहा॥ लखश्रीपतसेनाभगलसकलउपासकलोहि॥ श्री
गिरधरलखमलरूपातेंहरसनकीनामोहि॥ ८॥ चौपई॥ गवनतरहला
रहितलरंगा॥ चलीजातसेनासवसंगा॥ विषपाचंपकमालन
साथा॥ सखीसयुनरककचलीसंगाथा॥ रतनखचितकंचनवंगे
लपथ॥ मुदितवडचलीवचनमानहर॥ पालदेवकीग्रारिव
वतिजत॥ तिनकेहरसनकीकांक्षामन॥ ग्राहरुकमनीगुढ

न॰ग्र॰
भा॰
३०९

धारकन॥ देषनकीअभिलाषातनमन॥ षोडससहसएकसौ
नारा॥ तिनदेषनकीचाहअपारा॥४॥ दोहरा॥ कुंतीवहुरोंद्रोपदी
अरुअनुसुभद्रानीप॥ इनकादरसनहोइकवविषपासिमरनजी
प॥५॥ चौपई॥ ब्रह्मारुद्रमहेसनारिवर॥ नेउहोहिंगीनहांजनपर
सावित्रीगवरीइंद्रानी॥ इऊविलोकैंसारंगपानी॥ जीवअरुकले
आरसकलसुर॥ सकलनिहारहिंगीहलनअउर॥ पालेंअवरव\
उअमकामा॥ निनचलिदेषनहैंजउरामा॥ चलीजानहैचमवि
ताला॥ हृपकेचारोंदिसभूपाला॥ सुनहरिवचनकहेपारथ
प्रति॥ वंदहासमुकुकोदीनमअति॥६॥ जै मनउदय॥ दोहरा॥ जै
सुननननमेजैकहैसुनहकथाभूपाल॥ पारथआगेभगनकी\
अस्तुतकरीगुपाल॥७॥ चौपई॥ जनकीअस्तुतकरनचलेह
रि॥ चढदिसजीनचलोहयमथपर॥ पाछेचलेजादिसभरा\
ना॥ इक्कावारीगवननवाजा॥ जलनिधिनीरअनुरंगगपोज
व॥ जानभयोहयसमुदवीचनव॥ अर्जुनकेजिपचितनवरी\
झन॥ वचनउचारकहोभगवनघन॥ यहलोअलिअचर्जहैम
घो॥ सागरवीचअअवचलगयो॥ कहलाकीजैमीनंदलाला॥
हयकोंकाटलेहुननकाला॥८॥ दोहरा॥ यतनहोइअनुरंग\
विनकृपाकरहुनंदलाल॥ सिद्धमनोरथकीजियेमथपर्म\
अभूपाल॥९॥ श्रीभगवानुवाच॥ चौपई॥ कमलकहैअर्जुनसुनली

जै॥ वचनसत्यमानसत्तिपलीजै॥ सागरमहिराजानहिकोई
सोल्लुरंगलेवांधेसोई॥ पवनवेगरथभपतजेई॥ पाछेजांरथ्रु
षकेलेई॥ देषहिश्रुघनारगाकहां॥ चलेजांहिपाछेरथतहां॥
पवनवेगरथपांचमहांवर॥ संगचलेसोहइरथभीतरहर॥ वंद
हासप्रयुग्रहंसधज॥ गवरकेरनलतसथाचलर्पुज॥ ९५॥ दोहा
रा॥ हांकरियेपांचइहरथइरथडलंवनकीन॥ जलमहिप
कवराइरीनिरषीजातप्रवीन॥ ९९॥ चौ० ई॥ विरचलतरथवराव
रीमांही॥ हांकरियेरथचलेतहांही॥ तहहरिरेखोएकरिषीश्वर
महाप्रतापनवतेजतपीश्वर॥ वचनकहैपारथगिरधरप्रति॥ प
डमहारिषीश्वरश्रीपति॥ वकदालभरिषवरहैजहां॥ पांचोगादे
सनमुषतहां॥ वरकापातएकरिषहाथा॥ नितप्रतिलिपरहत
रिषमाथा॥ दिनप्रतिरथप्रश्रवतनिहश्रोरा॥ आपाकरतरिषी
नितईनोरा॥ ९८॥ दोहरा॥ छिरएकसोपातकोजोरिषकेकरमांहि॥
हरिश्रातासेंइहतवचनकहेरिषिपाहि॥ ९९॥ अथ त्रनडकाम॥ चौ०
ई॥ तवपारथप्रभुषवचनउचारे॥ सुनहुरिषीश्वरवचनहमारे॥ त
पमांडतलुमसागरमांही॥ सोश्रतिकठनडचलतयमांही॥ सोकि
हरकापातलियेंकर॥ वैठोडरपसरतजश्रोरेंकर॥ यहतपकठन
क्षाइरिषरीजै॥ पातेवरग्रहरुलरिषकीजै॥ एकाकीश्रमपावत
कतको॥ करइग्रहलभजइश्रीपतको॥ तववकदालभवचन

750

मे॰ मु॰ उधारा॥ सुमन कहो कहां नाम मल मोरा॥ ४९ ॥ दो॰॥ मैं अग्रजुग वहां सुन
मा॰ रिषी सेवक त्रिभुवन नाल॥ पाल पनैं लम गहर भल्लम नटखुगवनरु
२११ फवाल॥ ४०॥ चौ॰॥ मुनि वर लम अयपना वपुरे षडु॥ भपोवटे हरूप
निज पेषडु॥ ननक लबान हिर ही पारीरा॥ उपजन मनही लल्यारे पीरा
अवनन सें पघगन किपो धामा॥ जटाजूट मपघहि विसरामा॥ स
भनन महिप पीलका विचरन॥ कनश्रेसे अमकरन मुनी पन॥ क
नलुम सकर विषेकुस पाई॥ वपुष विरेह भई कसमाई॥ ननकीर
पसम भनी नपीषर॥ पाअमनें ग्रह हल भलो तिषि वर॥ ५१॥ वकराल
भउरा च॥ दो॰॥ पहवच मनवे ननभपो निरषे नेन उखार॥ कुलस
तामकिया मवहि रिषलषली नमुरार॥ ५५॥ चौ॰॥ वकराल भनिष
वचन उचारे॥ मुनपार पलम सलो मुरारे॥ पर्म ग्रह हल सार तुम मजा
मी॥ हम मलो वंधन मलपझामो॥ जिह हैं ननमम मरन वहूवारा॥ उप
ननहै वह विविध प्रकारा॥ ५३॥ दो॰॥ पर्म ग्रह ह लीलान समनल्ला
कवहन जाइ॥ नपसी गज समसों नमन डाही अपनी जाइ॥ ५४॥ चौ॰
ई॥ गजकों भोजन विविध प्रकारा॥ बलआवन गहकरन महारा॥
गाहा सहन संतोष विसव सर॥ ग्रह ग्रह गोलन फिरन नआलर॥ भक्त
न वल आन कोडरेई॥ भोजन मकर धन मांगन लेई॥ गाढा धीरजवान
कुलावन॥ लिह धसार करन्ना र रपावल॥ लिह पाकें कितने जन ष्माव
हि॥ आपसाषी मोर नन रूपता वहि॥ सकल धर्मे नें नपवरपारप॥ सि

हुकरत नला रथपरमारथ ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ जब ग्रहस्त बनी करै उपज
न मोह भ्रम ताह ॥ त्रय पुषै भयपन सुरुव सनहि पै चाहि पैं ताह ॥ ५६ ॥ चौपई ॥
स्वार इं हि पन मांगत छिन छिन ॥ कंइपना सकरत है निसदिन ॥ कोंने
न पन पहोत विनासा ॥ वडुरों संतन होइ प्रकासा ॥ कंमा तुव पौरुष पजा
वत ॥ सदा मोह वससिप दुष पावत ॥ सांत संतोष धर्म की हाना ॥ ग्रह नि
स विष पाहाण विकाना ॥ विनवन करत ध्याह सुन कीजै ॥ कवहूं क
हत कंम्यावरी जै ॥ सव निमित निसदिन जग डोलत ॥ कूरी साषउर
रहित बोलत ॥ ५७ ॥ दोहरा ॥ इम अग्यनर्ष कलपावई सुन राजा के हेत ॥ पा
प अगपनै सिर धरत करत विवेक न चेत ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ न मित कहूं दपा
प यह करई ॥ सभ दूषन अपनै सिर धरई ॥ जिन के निमित करत पह
पापा ॥ तिन को विपतन कछु संतापा ॥ घर मैं भारउ ताबत निसदिन
सदा दुषी तुष होत न रंक छिन ॥ जब ग्रह विषै पुरुष मरजाई ॥ तब ति
प होत महा दुष राई ॥ संतन अब रसु पीन होत न तव ॥ तिह विन महा क
ष्ट पावत सब ॥ ग्रहस्तो ग्रह महि नारजान मर ॥ दुष पावत कंम्या पन सु
न वर ॥ ५९ ॥ दोहरा ॥ अनित दुष पर्म ग्रहस्त का सुन पर्च्छन विवकान ॥ स
न रासा धन लोभ फस तन न तरी नो भगवान ॥ ६० ॥ चौपई ॥ भगन ग्रहस्ती
कामन निसदिन ॥ तोतै हरि सिमरत न हिरक छिन ॥ न पसी नित सि
मरत भगवाना ॥ निसदिन सव रस रत्त रसना ॥ करत ग्रहस्त प
हही विवेक कार ॥ ग्रह फंधन फस मान विसर हर ॥ जै पुन न कहि सुन नहो

म॰भ॰ हपवीपत॥ रिषभदेव वचन कहे पारषद्रत॥ पुन श्रुर्नि नमुख वचन
भा॰ उचारा॥ सालकभाउ हरे मैं पारा॥ मोन हि करद्द ग्रहल्ल दिढी सार॥ कु
९२८ हीसाजनपकरद्द नपी सार॥ ३४॥ दोहा॥ सरजनेजनलागहीनवद्द
कछनपार॥ सोछिदरकापानकरनजदीजे रिषराय॥ ३५॥ वकुहारभ
उवाच॥ सोरठा॥ नवकग्राउकेकाजकुरीसाजकनग्रमकरों॥ पानडो
हसभसाजवीनजांहिगेग्रुलपदिन॥ ३६॥ श्रुक्रुनउवाच॥ दोहरा॥ कहुव
कहालभनपकरनकिनवेवीनेकाल॥ जिननीवीनीग्रारजाकहोक्र
पाकरघाल॥ ३७॥ मैमनउवाच॥ चौपई॥ जैसुनकहिसनहोहपवीपत
श्रुर्नि नपहवचकहेहरवीपत॥ पुनवकहालभववनउचारे॥ सुनपार
पतमसलोपुरारे॥ अपनाग्रापुरहमनहिमानो॥ ककुवकतोसों
भाषवखानो॥ मार्कंडेग्रहलोमसपुनकी॥ पोकोंककनहीसुपउनकी
निजग्रापुरकीजोमितमोरे॥ ग्रागेप्रगटवषानोंतोरे॥ जैसुनकहैस
नउकुहराई॥ रिषभदेव वचन कहे प्रगटाई॥ ३८॥ वकहालभउवाच॥ सो
रठा॥ कहिवकहालभवचनसुनग्रापुकहहनहीहोनोहि॥ वीसविरंचप्र
लैभयेग्रांषनरेषनमोहि॥ ३९॥ चौपई॥ विपग्रापुरप्रमानसुनलीजे
मनवचक्रमनिहचैनिपकीजे॥ चारसहसजुगवरीनजववहीं॥ होत
एकदिनविधकोनवहीं॥ तिसपुनग्रैसीजानलेडमन॥ जेतादिन
नेतीरजनीगन॥ ग्रैसेतिसदिनतीसजांहिजव॥ एकमससवीननवि
धकीतव॥ ग्रैसेदारसमासजांहिगन॥ सोउरसाकाएकवरषभन

पूरन बरष होत जा ही दिन ॥ होत पान इक छिन तांहि छिन ॥२०॥ दो
हरा ॥ पूरन बरष विरंच को एक होत मिनि साथ ॥ छिन इक होत इकंपान मह
ओ इह मारे हाथ ॥२१॥ चौपई ॥ बरष एक सौ आहि जु हि लि नव ॥ बीतन नह
ष्ट होत नहीं होत लव ॥ सभ जग बिधि के उदर समावत ॥ सृष्टि सहनन बिध
हरि उर आवत ॥ बिधि की आउ बरष सो मेसें ॥ बीत जात बपुरहत न वै
सें ॥ जा दिन नास ब्रह्म को होई ॥ प्रलै काल जग जानहु सोई ॥ प्रलै काल ता
ही छिन आवै ॥ बिधि जग ले हरि उदर समावै ॥ हरि धरि देह अंगुष्ट प्रमाना
सो वृन वटपत्र लवरस पाना ॥२२॥ दोहरा ॥ पान ब्रह्म वट के उपर सेन कर
त न बखार ॥ होत छिन सौ पान मनु कह हाथ जो उदर समाय ॥२३॥ चौपई ॥ बट
वटपान मुहाथ हमारे ॥ परन होत न छिन सों मारे ॥ नव वात नहीं उब स तह म
त हीं ॥ राजन वट ब्रह्म को न हीं ॥ तह देषत हीं एक रूप तव ॥ देह अंगुष्ठ प्र
मान महां छव ॥ सैन किये कोमल पल्लव पर ॥ उर अंगुष्ठ मैं लै सुंदर वर
ता को कर ईं प्रनाम मुदित मन ॥ ओ उल्लेख वट पल्लव बीनन ॥२४॥ दोहरा
पान पुरातन को नमों सावड् जैनो नन पान ॥ अपने आश्रम पार कै वै ठ
रहीं कुसलान ॥२५॥ चौपई ॥ वर्ष एक सौ नास विधाना ॥ परन छिन सो ह
मरे पाना ॥ नव हम वट उर ब्रह्म वरसै हीं ॥ लोरपान इक बीतन न लैहीं ॥ पुम
न पकर न बीन बड़ काला ॥ सरार हीं एक वीर निराला ॥ गिरे बीस बिध
पुरु विरमाना ॥ समस कहन हीं वचन प्रमाना ॥ इतनी आयु रस भई हमा
री ॥ बिन आवत मन नसवा घुरारी ॥ अब एक हीं ग्र चर्म की वाता ॥ सुनहु

अ॰ श्र॰ श्रवणा करहीं विधाना ॥ ५३ ॥ दो॰ ॥ एक तुहिन जवगिर अहै ल्यायो
भा॰ मैं रकपान ॥ प्रलैकाल पाछै वहुर र्ग्रंगमा अजगमान ॥ ५४ ॥ चौ॰ ॥
१२५ सैन करत तन वव रपलव पर ॥ दिव्यक्रांत सुषम हिं अंगुष्ठ पर ॥ सहि-
विधसहित उदर मंझारा ॥ सो इधारत तन तन कन अपारा ॥ वटपलव-
पर करी तु सैना ॥ सो रूप अवपे ओ नै ना ॥ सो त्व रूप तुम रे रघुना-
थ ॥ सो तुम कत हों निहा लो पा रघ ॥ सैन करत निहुपर न हअवसर ॥ सो
वैठो तुम रघु निहचे हर ॥ सो सरूप देखो सविधाना ॥ तुम रघुपर रहर-
न भगवाना ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ जो सरूप वटपात पर तुम देखो निहवार ॥
सो वैठो रघु लो हि पर निहचै वही सुनार ॥ ५६ ॥ चौ॰ ॥ तुन रिष हरिष्व-
नि वचन उचारे ॥ तुन हु अवन रे प्रभ हमारे ॥ जव कव प्रलै काल कै अ-
वसर ॥ तुम सो वत न वर त्र ल्य पान पर ॥ पारत देह अंगुष्ठ प्रमाना ॥ अव-
नासी तुम पुरष प्रधाना ॥ जव हि करत तुम वर विश्रामा ॥ तव हम तु-
मकों करत प्रणामा ॥ मांगन ली पो तुम मैं कछु कव ॥ सकुमत तुम रा-
देह हो तन तव ॥ अव तुम प्र रत पुरुष प्रधाना ॥ सुफरी जै मन वांछ तदा-
ना ॥ ५७ ॥ दो॰ ॥ अपने कंवलगाइ तुफ हमरे जिय वहु प्यास ॥ अपका-
की नैक पा करे देह साध संग वास ॥ ५८ ॥ चौ॰ ॥ निरष रिषी मन प्रेम-
विसाला ॥ तव छिन भए प्रसन्न गुपाला ॥ रघपतें उनर परे न वलि रधर ॥
रिष कों कंवलगाइ लियो हर ॥ वक रात भषु तन वच न उचारे ॥ ग्यान रि-
व सव र भाग हमारे ॥ जप तप ध्यान सफल अव भयो ॥ करुणाकर-

तुमरे रसनरूपो॥ अबजुधिष्ठिर हूं के काजा॥ इहां पांडथारे अडुरा
जा॥ पांडु पुत्र है परउपकारी॥ मघ रचहु मसे लिये उधारी॥४९॥ दो॰॥ रा
श्री पत लिष्टी भल है वचन कहे प्रगराइ॥ हमरे भुरन तुम्ह पेरस ४
षो रिषिराइ॥ ५०॥ चौ॰॥ परकार जलम विचरहु लोगा॥ तुमरे हरस
मिरहि सभ सोगा॥ हरस परस मिटजाहि संतापा॥ तब छिन विनस
जांहि है तापा॥ बकदालभ तुम्ह मुरुष पुरातन॥ निह चेली नेम नमो व
चन॥ बलहू जत पर करुणा कीजै॥ धर्म सकल को हरसन दीजै॥ जैसु
न कहै तुन ह धर्म पाला॥ रिषपति पह वच कहे गुपाला॥ धर्मसु न हर्षत
भयो वचन सुन॥ बकदालभ प्रतिवाक कहै पुन॥५१॥ धर्म सुत व॥
हो॰॥ बकदालभ तुम्हरे षने गिरे विधाता बीस॥ करी रहन जल की
तुम भजन किषो जगदीस॥५२॥ चौ॰ई॥ रतनी बीती आयु तलारी॥
सागर बीच न करी सवारी॥ कबहू किसी सों गोष्ट न कीनी॥ बसोर कां
न कौर लषलीनी॥ देषो कहूं हमारो बाना॥ कहो रलांत सकल रिषराजा
गोष्ट करी हम ग्रथ की बाना॥ कहो कृपाकर प्रभु ऊ विध्याना॥ पुन रिष
प्रभु सें वचन उचारे॥ सुन हू प्रवन हे सषा मुरारे॥५३॥ बकदालभ उवाच॥
दो॰॥ कहि बकदालभ विजै सुनन तन कथ्या प्रभु के हेत॥ करी साजन हमक
हां करों आन काल न मलेल॥५४॥ चौ॰ई॥ बीस सहु हिणा की आयु रमैसें॥ बी
त गई हम रा हल लैसें॥ सीत उसल केहे लरे हसुष॥ करों न करी इ रों लागे
इ ष॥ विदपा मां हि मगन मन ताकों॥ सा मन न करी उचन हैं वाकों॥ पह

ग्र॰ ग्र॰
भा॰
१९०

रह्यो नाहिन हमरे मन ॥ नहीं विलास सलास कोउ रुकहिन ॥ निकसजा
नजो वह दरन आवै ॥ लोपह कुरी कान किहु आवै ॥ जिह अपने तन की
सुधपागी ॥ हरष सोक चिंता सव लागी ॥ ५५ ॥ दो० ॥ ग्यान सान जह हरि
ध्यान लिव तिन कों कुरी न जोग ॥ सिमरन पुरष अनाद कों तिन जि
यह हरष न सोग ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ धाम सील वरषा सम ताको ॥ विसर गई
तन की सुधजा कों ॥ नेम दसा न कहां लेक रहीं ॥ हर विन अवर आस
नहि धरई ॥ ग्रंथ लिखी रजा न वहि जैसें ॥ देह अनिस भगत विन तैसें
जिन दुह षन सुराज फल लीना ॥ वढ दरसु रंभ कुरी को कीना ॥ आस लि
तास पद हैं होऊ ॥ तिन कों हाथ न आवत कोऊ ॥ तातें कुरी करी नहि पा
रथ ॥ अलप अग्र लष अमहु निरारथ ॥ ५७ ॥ दो० ॥ सिमरन की जेक
सको नी लग घट मैं ग्यान ॥ तपसी कों तप उच नहें नाहिन कुरी प्रमान
५८ ॥ चौ० ॥ गोछ की सपछी सुभवाला ॥ नेसुन लेइ कहां विआला ॥ न
हिं उपजत हमरे को अभ्यासा ॥ कहा हसों न मिलन की आसा ॥ कउन कौर
वासा वन मांही ॥ आवन जान रहां कोउ नाही ॥ हनन हतावन की नहि
वोंका ॥ अवर न उपजत मन मैं कांछा ॥ इक दिन चले काल के अवसर
होषा गुरु सन छिद्र पान पर ॥ धर न छिद्र पात जब भयो ॥ तव हम चल
अस पव हरगयो ॥ ५९ ॥ दो० ॥ वरके कोमल पान पर देह ग्रंथ गुरु प्रमान
गुरमति हि लिखो ग्रंथ गुरु को सो पक्षी भगवान ॥ ६० ॥ चौ० ॥ तव हरि को गु
रु किये प्रनामा ॥ देह ग्रंथ गुरु रूप अभरामा ॥ जौ तन पान मोर मैं लीना

पावपुरान नकौं नजरीना ॥ बनब्रिन दसी कौ रतु नआयो ॥ नाभ कम
लतें ब्रह्म उपजायो ॥ सिष्टरचन कों फिर न इतार्ई ॥ क्षीरसमुद्र मधे अल
साई ॥ नाभ कमल तें कमल निकासा ॥ तिस कमलन तें दुहिता प्रकासा
तिदे भ्रहं हं कलन ब्रह्म वदायो ॥ अंबल हीं कहहै हम आयो ॥ ९१ ॥ दो० ॥ अंबल
हीं को दुहिता लव गयो सान वे आल ॥ पार न पायो ब्रह्म्य क कुफिर आयो
बहु काल ॥ ९२ ॥ चौपई ॥ बरष सहस्र क आयो गयो ॥ कव हूं मन ने स्थिर
न हि भयो ॥ जोल गया जिप विपग्रभ माना ॥ धम्मो भ पार हदे भ्रमाना
नव विधके त्रिपगर्व मिप्रोसभ ॥ नव अकासवानीकीनी प्रभ ॥ वानी
महि ह्रि सव रच्चारा ॥ तपवल सृष्टि रचहू बहु प्रकारा ॥ नगन हदाव
ठहमरी सेवा ॥ भ्रैसें कहो निरंजन देवा ॥ मुझ सेवा तें नभ्रवर बलावड
मोलम बंधन वसत्र षणावड ॥ ९३ ॥ दो० ॥ तेगर बहि गे सष्ट न म जोपु
फर क्षा कीन ॥ तिह तें अपकन रवसक डनघपिम हाप्रवीन ॥ ९४ ॥
सो० ॥ सब महि आपक जान सोलम सा नडु सष्ट सब ॥ मलि के स
प्रमान तैं सेंहीं नग हमर च्यो ॥ ९५ ॥ नैन नङ्ग्रा च ॥ चौपई ॥ भ्रेष्ठन कहें
लन हर पवी पन ॥ रिष पहवचन कहे भ्रनन पत ॥ दुहिता कमलतें
प्रगट भयो जब ॥ चार वेद हरि किये बखलनव ॥ भ्रतिसोभन लमरे सुख
चारों ॥ इक इक वेद एक मुख धारे ॥ चारों वेद कमल की वासा ॥ नगमार
न कौं किये प्रकासा ॥ प्रगट्यो विपसं जनतें न वही ॥ हिये रजो गुण
रपजो न वही ॥ पुन बानी प्रकास तें आई ॥ करहु विरंचन पसा ना आई

रा॰ उ॰ ८८॥ सो॰ ॥ बानी भई अकास की सुनी तुहि गारे कान ॥ तबहि रजोगु
भा॰ ण मिट गयो उपज्यो हिरदै ज्ञान ॥ ८३॥ चौ॰ ॥ हरि बिरंच कौं ग्याना की
१६८ नी ॥ सृष्टि रचन की बिधि कहि दीनी ॥ बिधि मस्तक धार्यो हरि हाथा ॥ अं
तरध्यान भयो जगनाथा ॥ हरि की ग्या ता ले बिरंच तब ॥ सृष्टि अनेक
प्रकार रची सब ॥ बहुर रजोगुण उपजन भयो ॥ माया प्रबल ज्ञान दुर
गयो ॥ मैं ही हों जग को करतारा ॥ मन उपज्यो अभिमान अपारा ॥ ८४॥
दो॰ ॥ ज्ञान दृष्टि जो प्रभु बिसर गयो बिधि सोइ ॥ माया प्रबल गुपा
ल की जीत सकै नहि कोइ ॥ ८५॥ चौ॰ ॥ सुनन पारषद ब्रह्मलोक सब सर
बस्यो पुरि तिन ले चार बेद कर ॥ आपन भयो हमारे अस्थल ॥ बचन कहे
मुकर सों अहंकार बल ॥ रे रे रिषि कहि बचन उचारे ॥ अति मद मत्त अ
ग्यान बिचारे ॥ रे रिषि ब्रह्म सागर जल मांही ॥ तप मांझो है आउ तहां
ही ॥ तप मनो मुफ वै बक्ता न होई ॥ दुहि तारा बार मुख हम हों सोई ॥ चार बे
द मुख करन निवासा ॥ मैं कीनी सब सृष्ट प्रकासा ॥ ८६॥ सो॰ ॥ कि तवे
तुम से सृष्टि उपजन होन बिनास ॥ तुम मनो कवन कहो मुफ हि कि
यो जल धम हि बास ॥ ८७॥ ब॰ ... चौ॰ ॥ कहै रिषी पारषद सु
नेकाना ॥ बचन बिरंच कहे अभिमाना ॥ मो कों उपज्यो अहंकारा ॥
बचन कहे तिन दुहि तारा ॥ रे बिधि दुष्ट रजोगुण मांही ॥ कलि कों
आप पछाण्यो नाही ॥ मुफ रे सन बिधि बढन बकासे ॥ सृष्ट सहित लेव
ढन बिनासे ॥ तैसे तं भी महा अज्ञानी ॥ भगवन की महिमा नहि जानी ॥

हरहोउहमरेहगआगे॥ तुमदेषतमुजकोंदुषलागे॥ ५१॥ दो॰॥
पहुवचकहिपरगटभयो अंधीपवनअंधार॥ हापहिहापवनसल
हीभयोमहागरवार॥ ५२॥ चौ०॥ होउजीपगअभमानवडोतम॥ पुरु
जिपकह्योवडोविधनैंहम॥ विधजिपकह्योवडमैंसवनैं॥ चारोंवेद
पालनुरुजधुनैं॥ पुरुजहविधमनगर्ववढायो॥ तवहितुहिणकों
पर्वतउठायो॥ वेगपवनलेचल्योअकासा॥ हमदोनोंमनउपज्योत्रा
सा॥ अंधकारनभसकलअभायो॥ होऊकोंअतितुषउपजायो॥ दास्यो
ब्रह्मलोकलेनहीं॥ अपुपुणाविरंचपानहीं॥ ५३॥ चौ०॥ द्वारकउवति
भाषीहमवाला॥ भीतरजावहुकहोविधाता॥ विधकोंहमरानामम
जावहु॥ सकलहलोंनभाषसमजावहु॥ द्वारपालतिरज्योवलतानन
भीतरगयोहसोअपनेमन॥ अपुपुविपहिजाइसुनायो॥ वोपुषध
लावाहरआयो॥ विधपुषद्वारपालकहिवाला॥ भीतरत्याउचतुर्मु
षपाला॥ ५४॥ दोहरा॥ द्वारकउवतिविधअपुपुषभाषेवचनउचार॥ चे
गलिपावहुचतुर्मुषजोइकादोविधद्वार॥ ५५॥ चौ०॥ द्वारपालआसा
लेआयो॥ दुहिणचतुर्मुषलेभीतरतुलायो॥ आवततुहिणविवायोमा
था॥ वकहालभइमविधकेसाथा॥ विघमानविधभएदोऊजव॥ अपु
पुषविधतिरषहसोनव॥ अपुवरनविधकह्योपहकवन॥ कवकुन
देष्योसुन्योपुरुजअवन॥ सपनतुरीविधहोइकदाचित॥ आयोरहोक
वनकारनहित॥ आवचकपुषवचनउचारे॥ तुमहोकवनरहोपग

ग्रं·प्र·
भा·
३८२

पारे॥८९॥दोहरा॥ आव प्रभु पाकहिं चलनु ग्रिष अप नाना मनमाइ॥ कह
नु मपग्रा पोकहां तें संग कवन उगराइ॥५०॥ चउपई॥ बौपई॥ चल
र्ग्ले विध ववन उचारे॥ मैं त्रया संग सिक्ख हमारे॥ सपन पुरी का तु
हि गाजा नप्रभु॥ संग रिषि सेवक सां चक हां लक॥ ग्रष्ट प्रभु ले दान उक्त
प्रकारा॥ दिखिय नवगे पतापतु साना॥ देष ह्न लोग सिष्य ग्रन गुरु कों
प्रापत भये हमारे उरकों॥ चारवरन प्रभ ग्रय कहां बल॥ सेवक संग द
सोवनावल॥ भली होइ गी सपनपुरी वह॥ महां श्रे सेगुरु देव सिक्ख र
इ॥९०॥दोहरा॥ श्री सेग रुश्रुत सिष्य कों ग्राइ निहार ह्न लोग॥ वासन सो
चाचार कोटइ ह लउ चन पह जोग॥९१॥ सोरठा॥ यह वच कहि प्रगराइ
तनननमेनपग्र ष्टप्रभ॥ लाघे हूनउ ठाइ वासनसोचाचार को॥९२॥ च
उपई॥ बौपई॥ कहि वक दाल भविजै तन ह्न कन॥ ग्रष्टप्रभेव
चकहै गर्व नुन॥ चलन प्रभु विध कोग्र मिमाना॥ उनरग पोउन के विर
माना॥ अष्टप्रभु जिय वढ्यो रजोगुण॥ कह्यो हूतन कों पठ्ठ ले हुउन॥ वा
सन सो चाचार हमारा॥ संग उठाइ चलहु भर भारा॥ जो न करहि विध
रहल हमारी॥ जो ही जैहइ न कों इष भारी॥ संगलतो ह पगन पहरा वह
दोक कों वह ह्या सहिपा वह॥९३॥ दोहरा॥ चलन प्रभुष ग्रह विधप्रकहि
रत हु पकलो आर॥ हम दोऊ विसमे भए महा ग्रासनि पपाइ॥९४॥ चौप
ई॥ अष्टप्रभुजि यवढ्यो रजोगुन॥ महा पवनग्रे पिपार भपो प्रन॥ द
मनी चोप्रनउ इंग्र कामा॥ भ्रमनगगन पापोव ह्वा नामा॥ सीनो ले जारे ह

मनहो॥ षोडसगुणविपक्षोघुरमहो॥ तीनोगणेहारस्वलनाके॥ नि
हकिपपहिषोडसगुणजाके॥ हारपालभीनरलपकीनी॥ षोडसगुण
विपञ्ञातारीनी॥ गहरनकरद्रुमाद्रुहरवारी॥ तीनोपीनरलेदहका\
री॥ ५५॥ दो॰॥ हारकहमकौंलेगयोषोडसगुणविपमांहि। निरषदु
हिणचक्रनभयोयहविपद्रगहेकाहि॥ ५८॥ चौ॰ ई॥ षोडसगुणविप
हृदयविचारयो॥ हमकौंयकहुहिणहरिधायो॥ यहहोडदुलपकहोनें
ग्राए॥ हरिनिहिचलयअनेकउपाए॥ रनकरकपरभेसवदलायो॥ जग\
महिमामविरंचकहायो॥ मैंत्रसासभजगकरनाग॥ यहहोंकपरी
हलधाग॥ हापपषारनमारीजहां॥ रनकौंबोरदीजियेनहां॥ तीनोड
सहीतोरवसावड॥ घुफरेषनअवहीलेजावड॥ ५६॥ दो॰॥ हमतीनों
कौंपकरकेहनचलेलेनाहि॥ षोडसगुणकेअतिवढोरजनमगुनति
यमांहि॥ ५६॥ चौ॰ ई॥ कहिवकदालभविजेपुवनसव॥ योपीपवन\
डकोवद्रुरोंपुन॥ हिनमणिकोमिहगयोप्रकासा॥ ग्रंधकारअलभयो
प्रकासा॥ लेगोपवनउजायसभनकौं॥ प्रापनभयोमहाउषननकौं॥\
रकहमदुनियचलगुंदपाना॥ ग्रहपुणनीसरोविधाना॥ चौथाषोड
सगुणविरंचसभ॥ भ्रमेप्रकासकहूपावानव॥ ग्रंनकालआएजवप्राना
सवहीकेनिपगर्दमिताना॥ ६०॥ दो॰॥ मनग्रभमानमिप्रोजवहिप
वनहियेनवगार॥ प्रह्मानहांवनीसगुणआरपरेनिहहार॥ ६१॥ चौ
॰ ई॥ निहविधकोपुनीनअतिलोगा॥ पुहषनारनिपसवनिहसोगा

ज॰ ग्रं॰ ॥पाछैपरहरिरेहरिमुषगाउ॥वरनवनीसतुहिणाजानहां॥आपन
भा॰ ॥भएआररहमनहां॥हमकोंनिरषवनीसवक्रनव॥हस्नोआपपुन
१९१ हसीसभासभ॥विपवतपुषजिपश्रलिश्रभमाना॥क्रोपनहमकों
ववनवषाना॥तुहिणाकहावद्धहमविरमाना॥नमस्रषनहि
आपपकाना॥१०॥होहरा॥नमआपेसभभेषधरकवननलारे
नाम॥समवचनसुरुसोंकहोकतिआपसुरुधाम॥१०॥चौपई॥न
वरनपुषनैवचपगराए॥हमहैंतुहिणादरसनमआए॥नवनी
सपुषजिपश्रभमाना।श्रतिक्रोपनहैवचनवषाना॥सुरुआगे
कोसकतनलारी॥तुहिणाकहावनहोश्रविचारी॥जाहनहोजग
वदेषनाषा॥मन्नभएनसंभारनआषा॥कहिणोरसपुषपुरुविर
माना॥श्रहवारपुषनडसमाना॥हमनोहैंजगएकविधाना॥श्र
वरमलकीहनीनवाना॥१९॥दोहरा॥हनपारपानवपहवचन
भाषेवरनवनीस॥जगरभयोश्रंपीपवनरक्षासोंजगदीस॥१
१॥चौपई॥उरेतुहिणासवपवनसंगाषा॥हमपुनउद्योनिवहिके
साषा॥चारश्रहूषोतसवनीसा॥उरेगगनरक्षानगदीसा॥श्रम
श्रोमपापोवद्धसोगा॥चौसठमुषकेश्रापेलोगा॥परमपुनीतश्रो
रवरजहां॥मषिपेलोगवसतसवनहां॥हमकोंनिरषकरतभ
पेहासा॥श्रैसेविधकहांभयेपरकासा॥जिननगरनकेश्रेष्ठरुएक
कैसेलोगवसतपुरतेऊ॥१५॥दोहरा॥जिननगरनकेपुछ्यपह

नेपुरसबदउजार॥ यहसुआपसभकपटकरिवेषदुहितानवधार॥
९४॥ चौपई॥ चौसबसुषेदुहितासुनपाए॥ हमरेऔरविधाताआए॥
ववनकहेचौसबसुषविधनव॥ मोपैलावइवेगदुहितासव॥ ले
गयेहमपावोंकोंनहीं॥ चौसबसुषबत्ततापावनहीं॥ हमैनिरषवचक
नहैगयो॥ चौसबसुषविधक्रोधनभयो॥ तुमतोसबसुषप्रदगवा
न॥ सुक्रआगेविधकोवसुधान॥ पाजगमहिहमपरकोविधाता॥ चौ
सबसुषहमजगविख्याता॥ ९५॥ दोहरा॥ काहमसोनकरावहींदइले
देहमनजोग॥ सेवकरैंयहसभनकीजेउहमारेलोग॥ ९६॥ जैपचउ
पाच॥ चौपई॥ जैसुनजनमेजयपइजाईं॥ पारथसोंवकरालभकहीं॥
चौसबसुषजिपत्रनयभमाना॥ आपीवइदूरपवनप्रगटाना॥ हम
षहोंपुनइइसुकाल्य॥ धमतगगनपापावइज्ञासा॥ दुहितासभन
सबइपमोसोगा॥ बइदोंआइपरेविधलोगा॥ इकसौअष्टचौसषु
षताके॥ डारेपवनहमहिपुरवाके॥ नहमफसनवनवागमहीं
कव॥ आनंदलोगवसहिपुरमैंसव॥ ९७॥ दोहरा॥ लागीहांसीकर
नसवहमरीऔरनिहार॥ यहविरंचआपकहांइवेकरनप्रकार॥
९८॥ चौपई॥ इकसौअष्टचौसषुनजहीं॥ आपतभएजाइहमनहीं॥
हमकोंनिरषलगपहनरवर॥ रक्तनैनकीनेतिहअवसर॥ क्रोध
नहैसुषववनउचारे॥ किनआपतुमलोकहमारे॥ हमहैंविधए
कोजगमांही॥ द्वैपहनेअवरविधनाही॥ इनसभविधकेभेषवना

अ॰ ग्र॰ प हमरे हार रहि षावन आए ॥ सुफल सुरलें इन बेगनि कारद ॥ पहक
भा॰ नकरद बिलंब निवारद ॥ दो॰ ॥ जैसु नक हि सुन हो रपनविप
३८५ उपन्मो सुभमान ॥ महांपवन सुग गयो बद्ध रद्द आसों भगवान ॥ चौ
पई ॥ ३ इपवनसों सकलविधाना ॥ उपन्मो कछु करन बिलपाना ॥ पव
नहारहीनेबिविपनहां ॥ हे सनषरपचास सुषनहो ॥ जाइपरेनिहविप
केलोग ॥ पवनभूमाइहिपोबहूसोग ॥ सकल भपेनाके बिरमाना ॥
कोधन हे उनवबनवबजमा ॥ वेषधारकहांसोंलमध्याये ॥ सुवनमसें
सभलेकरपाप ॥ रनके पगसंगलपहिरावह ॥ लोहमेलगरद्दष
हिषरा वद्द ॥ ३ ॥ दो॰ ॥ हेरानषष्ठपचासगुषविपउपन्मोईकार ॥
पगणेश्रीधीपवनपुनरक्षाकरीपुरार ॥ ४ ॥ चौपई ॥ पुनसभविप
रइवलेसुकामा ॥ मोंवधारसोंउइनकपामा ॥ पवनगारहीनेपुर
नहां ॥ पंचसनहारसमुषविपजहां ॥ जाइपरेविपकेआगेसभ ॥ को
धोलेकरषइगकुहिरानव ॥ उकोकरनसंग्रामकरनलगन ॥ इरप
नहमसभहारगरइन ॥ विपकेमुनिसुभिमानबयो मन ॥ श्रीधीपव
नउओनाहीक्षिन ॥ उइसकलविपगगनमंभारा ॥ मनलनपापोक
छसुपारा ॥ ५ ॥ दो॰ ॥ सीसनलेअपरचरनउइजांहिनभवीच ॥ महाक
छपापनभयोमानोपद्दगीमीच ॥ ६ ॥ चौपई ॥ नासहोवलागेसवभ्राना ॥
मिहोसभनकोमनसुभमाना ॥ सहसबदनसुखपापानहां ॥ पवनग
रहीनेहमनहां ॥ कहिषकरालभविजेहनदहकन ॥ निहविपकोस

रूपअनिरुप रघुनंदन ॥ सांतरूप सभ रहत नविकारा ॥ आरत्रु सुनगको कु
रतारा ॥ सहस बदन दसग सहस विराजन ॥ सहस भुज बन नासा तु बकान
न ॥ सहस चरन धुज सहस विसाला ॥ नग करतार सहस्र उसनि पाला ॥ ४ ॥ दो
हरा ॥ द्वारपाल हम सभ न कों लेगे विधविद मान ॥ नमस्कार उठ के स्रिको
शुक कों रिषपहवान ॥ ५ ॥ चौपई ॥ शुक सों पछो बचन विधाता ॥ कहो रि
षी तुम भ्रप नीवाता ॥ कलितुम उश्वो रिषन के संगा ॥ पायो कष्ट तुराम
न संगा ॥ विपसम इद भरे रजगुन सों ॥ तुम ताकवन कारन पारन सों ॥
रिष तुम गाव कराल भनामा ॥ आपन भयो हमारे धामा ॥ शुकरूप रपर
म अप्र तुय हकीना ॥ करुनाकरी दरस तुम दीना ॥ हमरी पुरी कृतारथ
भई ॥ आपआप सगरी मिट गई ॥ ६ ॥ दोहरा ॥ तुमरि षिपग धारे रहो हमरे
हैं अतिभाग ॥ शरीप विद्र भई सकल तुम परे हरा सन लाग ॥ ७ ॥ चौपई ॥ ने
शुन कहे है तुम नइ हन पहर षन ॥ बकराल भरिष कहै हि विज्ञे पन ॥ कहि बक
राल भ तुम इक काल गुन ॥ सहस मुषा बोले हम सों तुन ॥ आज दिवस
रिष भाग हमारे ॥ भए कृतारथ दरस तुम्हारे ॥ हम तो लोग सकल निस
नासो ॥ तुमरि षिरान दहों पग धासो ॥ कलितुम प्रभ्रो विधन के साथा ॥
महाभगत तुम श्री जदुनाथा ॥ तुम रूदे पतन विन से विधवीसा ॥ तुमरे दस
राध्यान जगदीसा ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ पओउ द्देशु कासकों आगे तुहि तप करन
रजनतम गुणा वाहो हिपेउ पस्रो अनिरुप भपान ॥ ९ ॥ चौपई ॥ इनको
गर्व मिटावन के हित ॥ ग्रेसी हरि रच्छा धारी चित ॥ तों तें पेह संजोग

अ·ग्र·
भा·
२८५

वनायो॥ अब तुहिं ताकों गगन उड़ायो॥ महांगरिष्ट बल्ल भो हो ई॥ म
ई अहं कलल रण सम सो ई॥ जद विधि बिरंच बल बाना॥ किधो गर्भ भ
येत्व समाना॥ यह तो विप गरिष्ट अति भारी॥ रुष्ट सज्जन कों रंच
धुरारी॥ गर्व होत जाके मन मांही॥ तृणसमान है ते उड़ जांही॥ २४॥ दो
हा॥ तृणसमान है उड़ चले मनकी क्रांबु अभिमान॥ रजत मधुलक्षता को
हियें भूल गयो भगवान॥ २४॥ चौपई॥ जमद नके संग डग्यो रिषी स
र॥ महाबुरा तन बज्जे न पीसवर॥ भयो अ सब्र समह सब्रुछ पाला॥ तुहि
ण सम न उपजी जिय बाला॥ कहे सह सब्रुछ तन तु तुहिणसम॥ तो
म हिय रजन नम गुणवा ख्योल ब॥ तो तैं जयतउ उबके अकासा॥ अ
मल गगन पायो मन त्रासा॥ अबल मरजन मगुन भाग डमन॥ सो त
भवन विसराम करहे तन॥ हरसि मरो मन पारो ध्याना॥ तो वैं विले
सह नभगवाना॥ २५॥ दोहा॥ यह वच सह सबर दनक हिय ने समन
विधकान॥ साध मिले अति हब भयो मिरगो मन अभिमान॥ २६॥ चौप
ई॥ तुहिण सम न धामो जिय ध्याना॥ पलक मूंद सिमरो भगवाना॥
उन रण यो मन तें सभ सोगा॥ आपन भयो वडूर निज लोगा॥ उनसो
ध्यान भयेव बेन सब॥ अब रज निरष पयो विसम पन व॥ हगउ बार
देषै सभ जो ई॥ यह पुर लोग हमारे अोई॥ आपकी च पुन मिले न को
ई॥ निज निज पुर आपन भै सो ई॥ नम भुभ मान तउ पसो लाना॥ औ
निह लोग गयो मन माना॥ २७॥ दोहा॥ तन अर्जुन हम सों तुहिण की

नाथाश्रुमधमान॥ ताकोमहद्वेदनन मिलंकिपोचरिलभगवान॥
८९॥ चौपई॥ मैप्रुनकहेंहैसनइन्तपक्षलिधर॥ पहवचकहेंहैविजेष
लिरिषवर॥ प्रुनश्रर्जुनभाओगिरधरप्रभ॥ वहोपुराननरिषयह
श्रीपत॥ पुनपारथदोऊकरजोरे॥ कहोक्रपाकररिषप्रभमोरे॥१
हषपुराननलमरिषदेवा॥ पुरुकोंउचमकरोंतपसेवा॥ तपदेष
नविनसेविपर्वासा॥ धलोसहसप्रषलमपगसीसा॥ तपकोंना
मोक्रलसमाना॥ तवसोंसेवकरोंविधनाना॥ ९॥ दोहरा॥ दर्सनदी
नेक्रपाकरवेगधर्मकेनाम॥ मनकलारथकीजियेहोइपरमकु
सलान॥ ९॥ चौपई॥ रिषकोंआताताकरीक्रसपुन॥ चलहमनप्रुरव
कहालभप्रुन॥ होयप्रसन्नउहांपगधारहु॥ दरसनदेसभकोंनिस
तारहु॥ श्रीपतिकीआतारिषमानी॥ गजप्रकोंमनसाउहरानी॥
सिवकापरचढारवकहालभ॥ अपनेसंगलेचलेजगतप्रभ॥ ताही
छिनहदपश्रापनमधो॥ वहोअनंदसोकहुरगधो॥ वसोवरंगरि
षेंधरमाउ॥ परमनीनसाउमोध्याउ॥ ९॥ दोहरा॥ इतिश्रीभारथपर्वलो
मशमेधमाध्याय॥ तीनसाठवां॥ ध्यायपहहहकतनद्दनत्ताव॥ ९॥ मैय
नउवाच॥ चौपई॥ मैपुनकहेंहैसनइपनवर॥ सहहनलरंगमरिष
समपहर॥ सेनामहाअनंदरनमई॥ दुपहदिनिरषविलइरगई॥ र
नवषविनसंग्रलववका नन॥ ताकेमधवकहालभगानम॥ चौ
दनरघमणिषविनविसाला॥ तापरस्रवरभुनमहलविसाला॥ वै

768

म॰ ग्रं॰
भा॰
३८९

बैठे नहीं पुरि निवंद नंदन ॥ अविनासी अवगत दुष कंदन ॥ इक्कासौं
पुनवलो नृरंगा ॥ चली नाइ सेना सप संगा ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ श्रमलहीं श्राप
नभयो जैप्र तमन पुरमांहि ॥ पाके चनरंगन चम गई सकल चलनां
हि ॥ ५ ॥ चौपई ॥ जैप्रतन पभारप महिमारा ॥ प्रणाकर अर्जुन कीन सं
गारा ॥ वंद भानलिह तलको नामा ॥ बालक वैसरूप अभरामा ॥ सो बा
लक प्रह को भपाला ॥ तिह माता को नाम द्रुसाला ॥ तिह दीना पारा जे
मानकों ॥ चलाहो रत्न पदेनमानकों ॥ हनन माको आन त्रनापो ॥ तप
रेनगर तुरंग मआपो ॥ तिह तुरंग के अर्जुन संगा ॥ साथ अमित सेना
चतुरंगा ॥ २ ॥ दोहरा ॥ चल आपो तमपरे नगर म धिचु युधिष्ठिर राइ ॥ जो म
इ तम पिता को अर्जुन संग सहाइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ हम परे यो है अपने नेना ॥
पारथ साथ प्रबल अति सेना ॥ तुम ता पितु भारथ महिमारा ॥ तुम पहि
न को रे शत्रु हमारा ॥ बालक तुन न पर्छित हैं न पो ॥ पुन संभारउ बका
हो भयो ॥ लागो मन न पहिकर न विचारा ॥ इन को हम रापिता संघारा ॥
तिस तुरंग जो परच दुआयो ॥ हम रानास करन को धायो ॥ हम हि न हो
इ मारे बिन ॥ हम रा बल आगे उन को लरना ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ पित रन हव
वत नि वलल नन तिह पर चढन न जोग ॥ आयो अव नगन न वपले विजे
ह सहि गे लोग ॥ ८ ॥ चौपई ॥ हम निर्बल वह अति बलवाना ॥ हम राव
लन हि विजै समाना ॥ जो हम न ऊन हो रन माई ॥ तिलविन ले उन कूं
सनाई ॥ रन कर जीन म कैन हि कोई ॥ तुह कि पेविन तुगन न होई ॥ प

नविचार कीनो मन मांही॥ पाछ जगमें अथिर कोऊ नाही॥ आगे पा
छै होइ नास तन॥ तातें मोहि उचित भजन॥ यह विचार कीना निह
अवसर॥ ऊंचो वड गिर पर लो धरन पर॥ ५॥ दोहा॥ ताही छिन मन भक
भयो बालक मागे ग्यान॥ ऐसें ही अवसर वमोर छा सों भगवान॥ ५॥ चौ
पई॥ मरत क भयो है मोह न माना॥ रोवत करत महा बिलपाना॥ पुत्र पी
रत बहु करत प्रकारा॥ कहत पयोंगी अगन मंझारा॥ हतन कों ले काली
परधारा॥ चली वच्यो मन सोग अपारा॥ एप बैठे हरि पारषन हो॥
हतले गई इसा लान हो॥ केस उद्यार किये मुष काला॥ डारे सब तन
मोर सिंगारा॥ वचन सोर कहि अर्जुन अवनी॥ पापी अधम महमो हमराप
री॥ ९॥ दोहा॥ रे पापी निरदै बिजे अधम राइ किय मोहि॥ पुत्र हमरा
हत कियो हत नेक लाज नहि तोहि॥ १०॥ चौपई॥ भारथ मैं मालो हमराप
त॥ वहर आर कीना बालक हतै॥ सो पो मोरच पवडइ संग॥ कियो कप
ट मिस पाइन रंग॥ पितु मरत सब आग मत हन बालक॥ भयकर मनक
भयो नन बालक॥ निज बल हीन जान प्रकलाला॥ तातें किये अपन
मन भाला॥ तुम अन बली कुल कोरासा॥ बालक हनन कियो नहि त्रा
सा॥ पत कों मार तांइ कीयो ग्रुक॥ धी हन आसा ते ऊमान ग्रुक॥ ११॥ दोहा
॥ मैं हत के संग जरों गी श्री पम के विरमान॥ निरहष न बालक इ
मोरे अधर मय प्रतान॥ १२॥ चौपई॥ तुम कों उचन न बहन बाल पर॥ १
लोग कहत हैं तुम हि भगन हर॥ अब मैं सो कड दीन हमो पन॥ पुत्र

अ॰ मु॰
भा॰
९८

दुषहीनकीनबालकहूंत॥पहवचकहिसरउचुकारत॥सुतकों
लेअपनेउरधारत॥करतविलापउठहूरेलाला॥प्रथमेअगनजराव
दूमाला॥पतिदुषसहोलअलिकठनाई॥तुमराडुषहतसहोनजा
ई॥जोजाननतथर्तुनहुतमारत॥तोपतिसोंतनअगनजरावत॥२४॥
दो॰॥उठहुमतरेमातकोंअगनवेगपरचंड॥कतिकोंसाधीमोन
तुमतपसिरमाताहंड॥८५॥चौ॰॥चहूतवेतनीकरीहुताला॥सुन
प्रभुभक्तवमलतंरलाला॥कैसुतरेहूजिवाइहमारा॥कैसुकरीजे
अगनअहारा॥सरनलयारीहीनदयाला॥संकरमोहदरदहतनका
ला॥हीनवंधकरुणाविधणीपत॥आरतुरुषअवनासीअवगत॥हू
मरेसुतकोंदीजेप्राना॥अबहीयहकीजेसविधाना॥तुमकोंसरनप
रेकीलाजा॥कीजेसिद्धहमारोकाजा॥५॥मैनउव॥दो॰॥जैसुनक
हिसुतहोतपवतकृपाअवतमनधार॥श्रीसेवचनगुपालकोंकहेदसा
लाचार॥८६॥चौ॰॥बोल्योविदेसेरघाउरधारी॥तुमलागनहैवहूतह
मारी॥मेपूतनोभारथमहिमारा॥हुवेपुर्वकीचोडपगारा॥जोसन
मुषभकरिसंग्रामा॥तिनकोंहोरसुरगविश्रामा॥जोइसरभारथम
हिमारा॥गतपाईतुमरेभरतारा॥तसपावोडैलोकअपारा॥सममा
नवचवेदउचारा॥हमजोआयेनगरतुम्हारे॥सेनाअनगनसंगह
मारे॥॥दो॰॥वैरभाउहमरेनहीचलआयेपहकाज॥अबसुमे
पकतगजपुरीकीकरनुविविहिरराज॥८८॥चौ॰॥भयकरतुमरा

सुनतइरपाना॥ कतकौंसलकभयोलजमाना॥ रहांनककुउहसं
ग्रामा॥ मिलनग्रारहरिकरतप्रणामा॥ नुदनडचनपसकेग्रब\
सर॥ होनकुलारपररसकरतहर॥ ग्रबहमरछाकरौंतसारी॥
विंलनकीजेबहनहमारी॥ बोलीबडुरउसालावारी॥ सुनहोविसे
महाइंकारी॥ पुरुपतीनग्रावतनहिमेरी॥ सुपरछाकरसकोनबे
री॥ ४९॥ दोहरा॥ मगनहोतलपसमामहि राषसकीवहिवार॥ कैसें\
रछाकरडुपुरुकहतनवबवनविचार॥ ५०॥ चौपई॥ नगनकरनहै\
डुपरसुलानव॥ सुमपांचोवाटेरेषनसव॥ पैंचवनवसनरेतनबङ्ग
वासा॥ सभमिलकरतपरसरहासा॥ सकीनराषग्रापनीनारी॥\
कैसेंरछाकरडुहमारी॥ ककुनससोलसारेहाथा॥ नवग्रापविभु
वनकेनाथा॥ डुपदसुतालांग्रंचरहसनननसों॥ गहिराखोबलकरमन
ननसों॥ तमोरसनपरभईनिरासा॥ करीएकश्रीपनकीग्रासा॥ ५१\
दोहरा॥ जोलगराखारसनपर डुपदसुतावलपार॥ तौलगहरे\
विचारकैग्रापनहीमुरार॥ ५२॥ चौपई॥ जबलगडुपदसुताककु
ग्रासा॥ तबलगहरिनंहिकियोनिवासा॥ रावारसनतमोग्रंच
रजव॥ डुपदसुतासिमलोगिरधरतव॥ जोडग्रापनासकलव
लहारा॥ ग्रबहारछेवलपंचभतारा॥ एककुसलकीग्रासहियेंधर॥ सि
मरनकियोवेगग्रापहर॥ कहैडुसालासमकहोंतउ॥ नहिप्र\
तीनंग्रावेतुमरीमुक॥ डुपदसुताविपदाजिनसरी॥ नेहरिरछा

772

स॰ ग्रं॰ करहि हमारी ॥ ४३ ॥ दो॰ ॥ जिनराखी सभसभामहि दुपदसुता की
भा॰ लाज ॥ सो हमारी रछ्याकरहि दुषभंजन जनराज ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ जैमन
१८८ ३ ॥ य ॥ जैप्रभु नकहेतुनद भूपाला ॥ यहबचप्रभु षसोंकहेहु दयाला ॥ ग्राह
ग्राहनवंही करपरी ॥ रछ्याकरहु हमारी गिरधर ॥ जगतगुरू देवन
कोदेवा ॥ अखिलभवनमहिं तुमरी सेवा ॥ तुमनाथनके नाथप्रभुतारी
परी आइ मैं सरनतुम्हारी ॥ भवनचतुर्दस के तुम नाइक ॥ संकरहू
रनहीनसुषदाइक ॥ भगतसुधीनकृपानिधस्वामी ॥ सकलघटनके
अंतरजामी ॥ ४५ ॥ दो॰ ॥ जैसें राखी द्रोपदी करुणासिंधु गुपाल ॥ जैसें
रछ्याकरहु प्रभु करहु कनप्रभु नंदलाल ॥ ४६ ॥ चौपई ॥ जैसें प्रभुनामलको
तारो ॥ भसमासुर तें ईस उवारो ॥ जैसें अंबरीकनिसतारो ॥ दुरबा
साको स्रापनिवारो ॥ जैसें गज ग्राह तें छुडायो ॥ ताके हितवाहन नत
मपायो ॥ जिहजिहसंकटमांहिदिविलासो ॥ ततछिनदुषताकोप्रभु
नासो ॥ भगतभ्रनेकनको दुषछीना ॥ संकटसमै भजनजिनकीना
जैसें रछ्याकरहु हमारी ॥ दीनवंधु मैं सरनतुम्हारी ॥ ४७ ॥ दो॰ ॥ सर
नसरनकहिहु मसहनलागीचरनगुपाल ॥ तुमबिनहमराको इन
हि रछ्याकरनंदलाल ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ हलोनैननैनीरदुसाला ॥ जिहसों
भी गेचरनगुपाला ॥ जिहतनलकौं नाम्रो हरिग्रैसें ॥ ग्ररदहरियोविवि
पवनतलजैसें ॥ ताषतावहहरिकैंदीनजुतन ॥ दीनहिवेगथानहमरे
हरन ॥ देषी दुषितदुसालानारी ॥ ततछिनभए प्रसनमुरारी ॥ धुनमरि

हरिउवाइलिषवालक॥ सुषपरकरपेसोननकालक॥ वालकके
आपलुरआना॥ उवलागोपगसिलुभगवाना॥ २९ दो० ॥ सुदिनउ
सालासुनसहितलगीचरनगोपाल॥ राजकिसीरेकरवलउकहना
करनंरलाल॥ २८॥ चौ० ई॥ ववसुनभयेप्रसन्नुगुपाला॥ सुनकोंदीजे
राजउसाला॥ सुनसभेनचलहोहसुनपुर॥ हरसनकीजेरुपननुधि
ष्ठिर॥ संगलेचलउप्रजानरनारी॥ जीजेआज्ञामातहमारी॥ पनसंघ
रनकरफिरआवउ॥ अपनाराजकरउसुषपावउ॥ आज्ञापेरीव
गरमंझारा॥ चलउनगनपुरीसवनरनारा॥ सुनसभप्रजाश्रवनंदन
भई॥ उपजोसुषविंताउरगई॥ ३०॥ मै म नउ प व॥ चौ० ई॥ जैसुनक
हिसुनहोरुपनजैपृनलिपसुनसाष॥ सकलप्रजालेउवचलीआ
ज्ञासोंजउनाष॥ ३१॥ चौ० ई॥ चलोसुरंगजनपरहरषन॥ संगचमूस
वसुरमहीपन॥ सभरुपवीचपवंजपराजन॥ श्रीकृसनसहितसउ
छवछाजन॥ चारोंदिसफिरचलोसुरंगा॥ रुपाजीनमहीपनसंगा
वचनउचारकहेववगिरधर॥ इसकोसिपनिहविंतभयोउव॥ सुर
नभयोभगनकोकाना॥ वरषप्रजंनचलोग्रहवाना॥ चारोंदिसकों
जीतचलोपर॥ ननमपहमरा भगनजुधिष्ठर॥ ३२॥ दो० हा॥ वरषप्रजे
नकवनकृपाकरीजुधिष्ठिरराइ॥ कोमलननप्रभुभगनकोसुनिय
मसहोनजाइ॥ ३३॥ चौ० ई॥ आज्ञाविधिहोपकेग्रवसर॥ ठाठारहोप
कंहीपगपर॥ निनप्रनसहसउरासीआसन॥ चरनपषारनसुनिह

जै॰ अ॰ ईतनमन ॥ तातानिमसहितहोमकरमनितन ॥ अगनवीवहोमनजो
भा॰ नितलहुन ॥ वरषप्रजंतनवइनअमणाणो ॥ भयोसफल हजीनहय
३८९ श्रायो ॥ जौनकरै श्रमसफलविधाना ॥ जिहसहारुअर्जुनसेधाना
श्रमकियउत्यवरषमहिपारथ ॥ तांतैसिद्धभयेसभखारथ ॥ २५ ॥
दो॰ ॥ चारोंहिसकेनपथवलजीनेविजैप्रधान ॥ भयोअनेरतन
थानहमकहतभएभगवान ॥ २८ ॥ जै मनउवाच ॥ चौ॰ ॥ जैसुनक
हैतनइभूपाला ॥ अैसैंवचनकहेनंदलाला ॥ नवपारथप्रभुकेपग
लागा ॥ बोलनवचनहियेअनुरागा ॥ यहजोचारोंहिसकेभूपा ॥ के
हयकरसिरमहाअनूपा ॥ चवरसीसउरमोतनमाला ॥ सभनपजी
तेहमनंदलाला ॥ कारनकरनस्वरूपउरारी ॥ भगतवछलसभरूप
तेभारी ॥ २ ॥ सो॰ ॥ करनकरनवनहारलमपषअरंभकियमोहि ।
वहहिसकेनपजीनलुकसजसवहायोमोहि ॥ २९ ॥ चौ॰ ॥ जोलम
रक्षाकरननखीपन ॥ मोपहिजीननजानेछिनपन ॥ एकसुपञ्या
सरभगतनलम ॥ छिनमहिहिरियोउइपगगनमम ॥ सुरथसुधना
वलीरनयुवल ॥ तिनसोंनहीजीननिलइकवल ॥ वइरवभुवाहन
वलभारी ॥ तिनतेंरक्षाकरीहमारी ॥ पुनतापरधुजअनिवलवाना
जिनकेवलनहिकोउसमाना ॥ वीरअत्यकेनहिकोउसमसर ॥ तिन
तेंलेहीमीकंन्याहर ॥ ३९ ॥ सो॰ ॥ यालपजंतनहिभगतहरिवंदहात
भपाल ॥ तिनतेंजीननकोसकैवसकीयोगोपाल ॥ ५ ॥ चौ॰ ॥ अैसें

भूपतनजीनगुणाला॥ संगलेचलेसोधर्मकीसाला॥ केरपतीनेकार
संग्रामा॥ कोउमिलेसहनेठनसामा॥ जिमजानाकीनाप्रभुनेसें॥
कारनभगवनसिहकियजैसे॥ वकरालभरिषनलधिनियामा॥ जि
हकेसवानसारीग्रामा॥ पुरुषपुरातननमुछ्रिषीश्वर॥ नपतनपह
रनमहानपीस्वर॥ तिनकोंनमलेचलेसंगाथा॥ भगवनभगवत्सुधी
नकेनाथा॥ ७३॥ दो०॥ जैसुवनननमेजैकहैसनवहुयवनरगतो
हि॥ श्रैसेवचनगुपालसों कहेपितामानोहि॥ ७४॥ चौ०॥ बोलेकस
पमनमपारथ॥ सिरकियेधर्मजनकेस्वारथ॥ सहितनसकौनमभ
गवनकोइष॥ तोनेहियोजुधिष्ठिरकोलष॥ धर्मजानहरवभगवनह
मारा॥ मैंभगवननेकवहूनन्यारा॥ मैहोंसदाप्रधीनभगवनको॥ नाहों
बलकहाबलेजगतको॥ साहारहोहारजिमदासा॥ ताकेसत्रुकरों
सभनासा॥ ममभगवननकोंकोइदुषावे॥ सोइहमारासत्रुकहावै॥ ७५
दो०॥ मैंग्रहहमरेभगवनमहिश्रंतरालनहिकोइ॥ जोभगवननदुष
देवहीमुकहिदुषावनसोइ॥ ७६॥ चौ०॥ जपतनपशुनाहानविधाना
मनहोमनीरथरसनाना॥ सास्त्ररस्मितनवेदपुराना॥ पढनसुनाव
नकपकथताना॥ गावननाचननंत्रवजावन॥ घरहरसननवहूमे
उवनावन॥ विकरननाइकवहूहमवाको॥ भगवनभाउसेवहिह
मताको॥ धर्मजानविपभगवनहमारा॥ तोतेमैंआधीननत्यारा॥ मैं
धर्मजनकेहाथविकानो॥ रहौंआधीनदासवनमानो॥ ७७॥ जैमनइ

776

गं॰ श्रु॰ वे॥ दो॰॥ तै प्रभु नकहि मनवहो न्हपन पारथ प्रति भगवान॥ जैसें वै
भा॰ न कहे प्रभु दिन नहिं नेवि तै मुषमान॥ ६९॥ चौ॰ई॥ शीघ्र हि चल लय एवं
६९॰ दलाला॥ साथ च मूसभ दिस भूपाला॥ छत्र चवर सिर प्रभु कह विराज
ते॥ नहि राजा समनरूप छवि छाजत॥ चोपचंदन अगर गजभीने॥ रंग रं
ग केश्र भरन कीने॥ मृगमद आर सकल सुगंध वर॥ सोभत गज मो
तन माला गर॥ हरषत हियें चले नन काला॥ धर्मजरेषत हियं नंद
लाला॥ रूपनी प्रीत हृदे जगवंदन॥ निरखो वेग धर्म कोनंदन॥ ७०॥
दो॰॥ एक बार बहुरन भयो नहिं दे ओज मनाल॥ देषन की हिय चा
ह हरि चले इनाइल जात॥ ७१॥ चौ॰ई॥ शीघ्र हि चल इक हे भगवाना
मिरषे हर्ष धर्म राजाना॥ चले जो हि मारग निस बासर॥ दिन कों च
लहि प्रभा सप्रभाकर॥ निस कों दीपक गंध प्रपारा॥ रूप नवासप्र
मे कप्रकारा॥ कहं कहें नने कवि श्रामा॥ चले जो हि मग नरूप प्रभमा
ना॥ पुनहरि वचन कहे हनपारथ॥ तुमसों कहिहों बात न पारथ
७२॥ दो॰॥ प्रबमें आगे जातहों हस्तिनपुर की ओर॥ देह इंच धाई धर्म
तनपग लागों कर जोर॥ ७३॥ चौ॰ई॥ तनकहु न चले कसल हस्तिनपुर॥
हरष प्रीत कव मिलै जुधिष्ठर॥ पीछे सकल छाड़के सेना॥ चले एक
ले श्रवन नैना॥ पहुंचे नाहीं छिन दिग गजपुर॥ बागवी च उतरे पर
मेश्वर॥ हस्तिनग्र आर कह्यो धर्मज सवन॥ उतरे आइ बाग महिं श्रीपत॥
हस्तिनपुर की राह निहारत॥ उतर परे हैं हरि निहुंगे रत॥ पीछे चला

तुरंगम सुपावन ॥ चलतुरंग नीसेन सब पावन ॥ ५५ ॥ दो० ॥ सुनत न\
युधिष्ठिर सुहित मन विनस गए सब सोग ॥ देहु बधाई धर्मसुत प\
नहु रषत सब लोग ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ दुंदुभ सबद सब बाजन लागे ॥ उपजो
सब संभ्रम सभ भागे ॥ दुपद सुता आरती लिये कर ॥ पर सन चली प्र
नाथ नाथ हर ॥ हरि हर सब की बाह हिये भर ॥ देषन चली द्रोपदी ह
रषत ॥ वर षट की आस दुजीमन ॥ विविध प्रकार किये सिंगा
रतन ॥ लषत व बक हे धर्म के कता ॥ सुन हो दुपद सुता सुक वाता ॥
मुंचरणां बतो हि सुकसाथा ॥ पतकं कताहम रेहाथा ॥ ५६ ॥ दो० ॥ ग
सराजन तके धर्म महि हम सुकतन सबधान ॥ उत हरि जन रे आगम
हि के सेवन बे विधान ॥ ५८ ॥ श्लो० ॥ रीउवाच ॥ चौपई ॥ कहे द्रोपदी सुन ह
षदी पत ॥ नत हो मन सोक रत पह जगत ॥ प्रहु जे उकरत पुन सुकृदा
ना ॥ प्रथम में तोष करत भगवाना ॥ पुजा कर तब पम महर मन वहीं ॥ दो
नहहु है है रपन न वहीं ॥ दान पुन सुपावन कि है काजा ॥ मवलग नो
बेन हि सन राजा ॥ नन दान को प्रकल रमापन ॥ तिह से वे विन होत न\
ही गत ॥ प्रथम हरि से वा करली जे ॥ जांउ न हां श्रा सामु कली जे ॥ ५५ ॥ दो
हा ॥ धन्य धन्य तुम द्रोपदी कह्यो धर्म भूपाल ॥ सान सुआर तील चल
उत्साव हत तोष गुपाल ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ बेग द्रोपदी चली तहांही ॥ आपन
भई जाग तिह मांही ॥ वेदे द्रुके रमापत नहां ही ॥ हसमुआरतीउ तारीत
हहीं ॥ हरषत भए जहां तइ तारी ॥ दुपद सुता कौ दई बधाई ॥ जीतव

अ॰ ग्रं॰ लीर्हिंसमर्जुनन्त्रायो॥ मनरुधर्मसुनतसफलकरायो॥ हूमहोंयहीवर
भा॰ महरलागी॥ भयोयुवनंदरविंनसमभागी॥ कहिहौंयहीसुनन्द्र हूगोपा
३९९ ला॥ कारनरूपनमहिनंदलाला॥ ५५॥ दो॰ ॥ करनकरावनहार
लमकरुणासिंधुगुपाल॥ सिद्धमनोरथकलोलमधर्मसूचभूपाल
५६॥ चौ॰ ॥ जेसुनरवाच॥ जैसुनकहे सुनहुभूपाला॥ गनवपुरमहि
आपनंदलाला॥ तुपरहनाथानेहरिसाथा॥ हरिपालोधर्मजपगमा
था॥ धर्मजानहरिकोंउनायकर॥ लीनलगाइकंठसोंधुजभर॥ सुष
मलकचूमनकियोहितसों॥ महायुवनंदभयोरुपविवसों॥ धर्मज
हरिकोंकियेप्रणामा॥ पायोसुषमननवनविश्रामा॥ अवरञातस
वहरिपगलागे॥ वढ्योयुवनंदहियेंयुनुरागे॥ ५९॥ दो॰ ॥ दईवधा
ईधर्मकोंयानंदमयभगवान॥ अर्जुनयायोजीतकेसकलरपत
वलवान॥ ६०॥ चौ॰ ॥ मूरनभयेलयारेकाजा॥ आयोफिरवातोंहि
सवाजा॥ वरषसंभरनरकभयोयुव॥ अर्जुनल्यायोरूपनजीतसव
आवैंसववरपहरसनुत्यारे॥ महावलीकुलकेउजियारे॥ पहुकेन
यनुमालनीलधुज॥ पावकसुतननसमेनहंसधुज॥ नारथसुधमा
वलीमुरुभगत॥ तिनकोंशापनभईपरमगत॥ सनमहिउनरेनि
नकेसीसा॥ कंवमालधारेउरईसा॥ ६१॥ दो॰ ॥ रूपनमोरधुजमहा
वलीतामरधजकेलाल॥ रिपयुपनातननविप्रकों कुसलकहीसव
वाल॥ ६२॥ चौ॰ ॥ वीरवयलरपकीकंमाउन॥ पिनसोंपतलियमो

गफालगुन॥ साका पाल समरा जनमाना॥ सुकुमार न साधो संगमा
ना॥ तिन हारु न संग्राम म चापो॥ तहां पार्थ हनु मं न तुलापो॥ नव जन
राज पलायन भयो॥ पुन नृ रंग कुंजल पुर गयो॥ चंद्रहास तिह भग
न प्रवीनो॥ नन मन धन सर्व समुहि हीनो॥ ९३॥ सो०॥ जनमक घाति
ह भगन की नारद मुनि प्रगटाय॥ सकल सुनाई विजै कों करुनाकर
हि नलाय॥ ९४॥ चौ०॥ चंद्रहास निज भगन हमारा॥ वसकी गोपहि वि
विध प्रकारा॥ आयो नृप रे दर्सन हित चल॥ श्रवरन पतन हिमन
पो केवल॥ बहुर लुरंग समुद्र महि गयो॥ सकल चमूमन प्रवराज
भयो॥ हम पीछे लागे नरंग कों॥ पांच सुरन पवली संगा कों॥ इक वि
नावरी सागर मांही॥ वक दाल भरि विष वसत तहां ही॥ महा पुरातन ति
छ तपसी धूत॥ तिन सेवीस रहिहि ताति ह निरखत॥ ९५॥ सो०॥ सो वक
दाल भरि विन रूप न आप हैं हम साय॥ तिन सन देषे वीस विधवत का
पल व हाय॥ ९६॥ चौ०॥ नृप न वज्रबाहन बलवान्या॥ सुनत पारथ वै
लोक बिधाना॥ तिन सों नृ हकियो हथभजन॥ पल्म करन लतमस्त
सरभुजन॥ कियो वज्रबाहन पिल इन ननव॥ न लिके निमनगयो पपा
लनव॥ नव कुलनाग किये वस काला॥ ल्यायो मणि बालक ननका
लो॥ तहां प्रवर सुवरन भयो॥ पारथ को सिर रथ हि लेगयो॥ तहां
आन्यो बालक सिर युध कर॥ जो लो आन पिता के तन पर॥ ९७॥ सो०॥ ग
सावधान अर्जुन भयो आप परे वट प्रान॥ वज्रबाहन करी सव

नं॰ सु॰ सेवासवधान॥२५॥चौपई॥सोइवचनसुनाहनमसुर्सेवनहेतन॥आयोतुमरे
भा॰ दरसिपावनतुमतन॥सुवरवडेभूपतविषावा॥सायोसापदीलतुमपंथामा॥
१९२ तुमरेसुषसुलापविसाला॥तांतेसववायपधूपाला॥पुनपर्मतकोंक
सोपुरारी॥यहनिहचेसुरुहरेविचारी॥भूमपोरिलपहुजसवको
सुक॥सुसुहउलेहगयोदपवीपन॥तीनलोकपुनभवनचलेरस॥
महालहांतुमववधोविमलजस॥२६॥युधिष्ठिरउवाच॥दोहरा॥रूपतजे
धिष्ठिरमनवचनकहेधमनंदलाल॥भगनवसलतुमपाविरदपा
पताजगोपाल॥२७॥मैत्रेयउवाच॥चौपई॥जैसुनकहिलनहोभूपतवर
पुरिजभपहहरिधर्मपरसर॥मिलवेनिमतउठेनंदनंदन॥उपमकि
योकुंतीकोवंदन॥हरमलककुंतीपगधालो॥मनवनकोदुषहेरनि
वालो॥कुंतीहरिसुषदेवनकीनो॥परमसुनेहहनमेंविनलीनो॥पुन
पगपरेदेवकीमाता॥हरषतहिपमकीकुसलाता॥पपमेकुंतीपय
लागेहर॥मनसुपवेमेंपहविचारकर॥२८॥दोहरा॥जननीतेकुंतीव
डीसुवरवहगपीमान॥तांतेयपुलाईरई हुतीभगनकीमान॥२९॥चौ
पई॥वहुरहुभद्राकेपगलागे॥कुसलसंदेसपछ्यअनुरागे॥फिरदोप
दीहरिविगइतउत॥एकवरसकीप्यासवडीचित॥पुनपतरापूव
हरसंधारी॥तिनकेपगलागेगिरधारी॥पुनहरभगतविदुरकेआ
यो॥अतिआदरदेकंठलगायो॥जैसोआदरहोतजोगतिह॥तैसो
आदरहिपोकुसलतिह॥वहुरोंभीमनकुलसहदेवा॥हरिपगलागे

करीबहुसेवा ॥ ७४ ॥ दोहरा ॥ निहपाकेश्री कलवलगपहकमनी
पाम ॥ आरतिसाजभीषमहुलासोषेश्रीहनसाम ॥ ७५ ॥ चौपई ॥ पट
रानितश्रवबनपाये ॥ हकमनिकेग्रहश्रीपतिआये ॥ वलआईस
भलहांलाहिछिन ॥ वर्षएककीहूतीआसमन ॥ रुकसैआगसहस
कोइसलिय ॥ हरिआरतबनगुदिनभईजिय ॥ सुनपाईहरषनसभना
रा ॥ रुकमनिगहहलियजुरीअपार ॥ रूपनननहोहिदेषहरिकोसुष ॥
प्रभुदिनहूदेसमानतनहीसुष ॥ सुनिश्रवधुनहरिकेसुषकीरूच ॥ री
करहीहगजोहिरानिसव ॥ ७५ ॥ सैषनउधावदोहरा ॥ सुनहूरूपनह
कमनिभवनसुवतीसुरीअपार ॥ सतभामाहांसीवचनहरिसोंकहे
विचार ॥ ७९ ॥ सतभामाउधावचौपई ॥ सतभामामुषवचनउचारे ॥ स
नहूश्रवनदेश्रभूहमारे ॥ कीनाजनसपरनकाजा ॥ आपोजीतवहूं
दिसवाजा ॥ किपोधर्मकोनतसनाषा ॥ वरषफिरेतुमहपकेसाषा
गुरुनुनवरलापोहैनारी ॥ प्रथमवसुवाहवमहतारी ॥ वीरत्रहार
पकीकंमाप्रन ॥ तुमप्रसारवहूवरीफालगुन ॥ तुमकूंप्रभुवारोंदि
सदेषी ॥ कहोसांचकवजाकहूंपेषी ॥ ७७ ॥ दोहरा ॥ सासीहोतीकंसग
हआहकरववरीनार ॥ भूपतनमोहेतेमहीतुमहिप्रहीरविचार ॥ ७८ ॥ चौ
पई ॥ गोकलतननतमममथुरामांही ॥ वरीकूवरीनारतहांही ॥ प्रववारों
दिसफिरआपोहर ॥ कनककुवजाकोंनहिलापोवर ॥ हासीश्रवरको
कमतहिपाई ॥ सोतुमघरलावनजउराई ॥ सतभामाकेवचनश्रवन

मे॰ मू॰ सेनासबधान ॥ २५ ॥ चौपई ॥ सोइवबसुबाहनस्वर्गसेनसहन ॥ स्वापोलमरे
भा॰ हमिमानसुन ॥ श्रवरवहेभूपलविष्यान ॥ साधोसाधजीलतुमधाम ॥
११५२ तुमरेप्रभुप्रतापविसाला ॥ तांतेंसवश्राएभूपाला ॥ पुनधर्मसुतकोंक
लोप्रतारी ॥ यहनिहचेप्रभुमहहेविचारी ॥ भूमभाररिलसमन्नसवको
श्रव ॥ सपुरइलंहनगयोएपवीपस ॥ तीनलोकपुनभवनचहुँस ॥
गईलनहोनुमबच्चोविमलजस ॥ २६ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहरा ॥ नृपलनु
धिष्ठिरसनववचनकहेधमनंदलाल ॥ भगनबसलतमराविरहरा
घलाजगोपाल ॥ २७ ॥ मैत्रेयउवाच ॥ चौपई ॥ जैसुनकहिसुनहोभूपलवर
पुरिनभपहहरिधर्मपरसर ॥ मिलवेनिमनउठेनंदनंदन ॥ प्रथमकि
योकुंतीकोंवंदन ॥ हरमतलककुंतीपगधालो ॥ मननननकोदुषदूंहनि
वालो ॥ कुंतीहरिमुषचंदवनकीनो ॥ परमप्रनंदहनमैंचितलीनो ॥ पुन
पगपरेदेवकीमाता ॥ हरषमहिपथकीकुसलाता ॥ प्रथमेकुंतीपग
लागेहर ॥ मनमअपनेमैंयहविचारकर ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ मनमीनेकुंतीव
हीअवरवहत्तापीमान ॥ तांतेंप्रथमनाईहरईदूतीभगनकीमान ॥ २९ ॥ चौ
पई ॥ वहुरहुभद्राकेपगलागे ॥ कुसलसंदेसपरछ्छअनुरागे ॥ फिरदौप
दीहरिहिगइनउन ॥ एकवारसकीप्रासवदीचिन ॥ पुनपुनराधुव
हरगंधारी ॥ तिनकेपगलागेगिरधारी ॥ पुनहरभगतविदुरकेश्रा
यो ॥ अतिआदरदेकंठलगायो ॥ जैसोआदरहोतजोगजिह ॥ तैसो
आदरदियोकलनिह ॥ बहुरोंभीमनकुलसहदेवा ॥ हरिपगलागे

करीबहुसेवा॥४४॥दोहरा॥जिहपाकेश्रीकलनचलगप्रतकमनी
पाम॥आरतिसाजभीघमहलाकोषेश्रीहुनसाम॥४५॥चौपई॥पर
रानिनश्रुवनवंपायो॥हकमनिकेग्रहश्रीपतिआयो॥बलराईस
भलहांलाहिकिन॥वर्षएककीहुनीपासमन॥रकसौआगसहस
कोऽस्सतिय॥हरिआरतवनतुहितभईजिय॥हुवपाईहरषतसभना
रा॥रुकमनिगृहहतियपलुरीश्रपारा॥लपनतनहेहिहिदेषहरिकोसुष॥
प्रभुहितहृदेसमानतहींसुष॥पतिश्रुदभुजहरिकेसुषकीअव॥सी
करहीदेगजोहितानिसव॥४६॥सैवइया॥दोहरा॥हुनहृदरपनह
कमनिभवननजुवलीजुरीअपार॥सतभामाहांसीवचनहरिसांकहै
विचार॥४७॥सतनामा घडशवा॥चौपई॥सतभामाप्रसषवचनउचारे॥प्र
गहुप्रवनदेप्रभुहमारे॥कीनाजनसमरनकाजा॥आपोजीनचहुं
दिसवाजा॥कियोधर्मकोजनसमाथा॥वरषफिरेतुमहृपकेसाथा
ग्रजुनवरलापोहैनारी॥प्रपमवसुवाहनमहतारी॥वीरबहन
पकीकंमाउन॥तुमप्रसारवहृवरीफालगुन॥तुमकुंप्रभुवारोहि
सरेखी॥कहोसांचकुवजाकहूंपेषी॥४८॥दोहरा॥हासीहोतीकेसग
हश्राहकरवरीनार॥भपलतमोहेतेमहीतुमहिमहीरविचार॥४९॥चौ
पई॥गोकलनंनतमुनमप्रतामांही॥वरीकुवरीनारनहांही॥प्रववारों
दिसफिरआयोहर॥कतकुवजाकोंनहिलायोवर॥हासीप्रवरको
कमतिहिपाई॥जोतुमघरल्यावतजडुराई॥सतभामाकेवचनप्रवन

सं॰ प्र॰
भा॰
३९१

पर॥ इह सतभामाओ हरस नहहु कोरस॥ हसी करत सतभामा प्रभु कसों॥ ले
आकरत नेक न हिल कसों॥ बालापन की बान विचारम॥ मेहि नदी
मेवहु रसं भारत॥ ७९॥ दोहा॥ अब पद अवसर मैं भई प्रभु पोत्र पर वा
र॥ सतभामा प्रभु कसों कहत दासी को भरतार॥ ८०॥ चौपाई॥ सतभामा प्र
भु हासक रत अब न॥ मो को कहत जोग दासी पन॥ रूप कंता को कह देत
न लो कों॥ देत अब ही रउ राहन मो कों॥ हम रेग द्द कुल वंसी वामा॥ क
लि कों ह्रू ब कहत न सतभामा॥ सो ला सहस रक सो पटरानी॥ अब हम
र का प्रथ प क प मानी॥ मेकं मासव प्रथ्वी प न की॥ सकल कुलीन
दास व न पन की॥ सकल राजपुत्री अभिरामा॥ ऐसी जुवती हम परे
धाम॥ ८१॥ दोहा॥ भीमसेन भाषे वचन सुन कृष्ण वन देकान॥ सतभा
मा प्रभु मसों कहत न सम वचन परमान॥ ८२॥ चौपाई॥ दासी जोग कह
त हैं प्रभु मकों॥ भली बात लागी यह सुरुकों॥ दास भाउ जिन के जिय
होई॥ प्रभु मरे जोग हो त है सोई॥ दासभाव की क्रा कुवजा मन॥ प्रभु प
हि अर्पन किये प्रान तन॥ प्रभु मदासमय प्रीव गिरधारी॥ तांतें वरी
कुबरी नारी॥ राजकन्यका निपट सजन प्रवनि॥ ते प्रभु मजोग नहीं
मा होपति॥ दासि भाव कर प्रभु म कों ध्यावन॥ सो तन न छिन प्रभु म रो
पर पावत॥ ८३॥ दोहा॥ दासभाव है सतो गुन प्रभु म कों व स कर ले
त॥ राजस गुन पावत प्रभु मे होम रान प्रभु म देत॥ ८४॥ चौपाई॥ दासी
जो हि जोग ठत स्वामा॥ कहे मपार्थ वचन सतभामा॥ प्रभु मलो दा

782

सग्रुधीनरमापन। कुलसरूपनहि रूपाविचारन॥ प्रगतलपकों
भाओकुलहीना॥ कंमादेहनरपनप्रवीना॥ सतभामापहसमव
तापो॥ स्वतनत्रुवनत्रुरूनिपठहरापो॥ इकसोझाउतहसवोरस
मिप॥ राजनतोहितहईप्रुहितहिप॥ मितनीरातसततानुमरेहर॥१
हीनीनहीमातपितहितकर॥ ८५ दोहा॥ किसहीनरपकीकंमकाव
लकरलीनीतोहि॥ किसहीनरपकीहतताकों हरलीनोमनमोहि॥ ८६
चौ० ई॥ सरथासोंनरपकिनहिनरीनी॥ ककंनुरुकहेकुलकरलीनी
प्रथमेहकमनिरूपविसाला॥ मातपितादीनीसिरपाला॥ आईपी
दुर्गापूजनकों॥ रथचढारभागधोलमताकों॥ सोलहसहसवरील
मनाता॥ प्रथमेनरकासुरकोंमारा॥ नरकासुरअपनेहितमानी॥ ले
तुमआहीतारंगपानी॥ प्रथमेनरकासुरकीनाहत॥ पाकेभयोसहस
वोडसपत॥ ८७ दोहा॥ किसहितनरीनीतोहिकोंहसिकंमापितमाइ॥
सत्राजितनातोवकोतिनसोंकियोडपाइ॥ ८८॥ चौ० ई॥ सत्राजितरवि
कोतपकीना॥ सुप्रसनहितमणाकरलीना॥ ताकोंमणारवदईकिपा
कर॥ लापापातिहसोंमांगीहर॥ सरपासोंतमकोंनहिदीनी॥ सिंह
रूपहैतमहनलीनी॥ सवजारववतमरोघतगापो॥ कहेकसमसत्रा
जितलापो॥ घहसवतमहैरेततकाला॥ पढवेचामवानकीसाला
तहतमकियोमहाविश्रामा॥ अट्ठवीसदिनताकेधामा॥ ८९ दोहा॥
जामवानकोंसुतकरलीनसकोतमनाहि॥ तहतमपालोतामवहु

भ॰ग्र॰ तिसीकंदरामांहि॥५०॥चौपाई॥जामवान मन महिं अनुरागा॥मणिकं
भा॰ ठालेलमपगलागा॥जामवती आही जिह काला॥मेसराम को धरनें
१९४ दलाला॥मणिकंमाला पो अपनेहर॥नहांलोहिपरपंचकियोहर॥
मणिदीनीलमसत्राजितकों॥विधमानसभकोधनविनसों॥सव
कोरननलमनेंवनआयो॥कृष्णनकोंदोषलगायो॥५१॥दोहरा॥लोग
नवहुतनधिकारियो सत्राजितकोंआइ॥कृसनिकों यहमणिकोलम
हिदोषधलोमजराइ॥५२॥चौपाई॥सत्राजितसननभामाग्रहमता॥ल
मकोंदीनी आहनिहीछिन॥रेनीकहीइन्नीअक्रूरजवा॥नहांनदीनी
वीआपनहर॥सत्राजितदीनीनहिविनसों॥लोकलाजकेहियेंअ
हिनसों॥मिञाहंदरकालिंदीसव॥कोउसयंवरजीनलईप्रभ॥केक
याकीहरिकेउवलकर॥किनहिनन्नपदीनीजिपहिमपर॥देननर
पकंमालनकजानन॥लमरावंसग्रहीरपञानन॥५३॥दोहरा॥वंसही
नलमकालसी कुलनलमरानहिकोइ॥कृपाहीनलमआरकेमुववकु
लीननहिहोइ॥५४॥चौपाई॥लमभगतननअधीननंदलाला॥लमरी
मानलपालगुपाला॥मातपितानहिकोउलत्यागा॥रूपनरेषवरन
आकारा॥लमकोंवुत्रीदेननराजा॥लमग्रहीरआवनउनलाजा॥
अगमअगाधअलषलमरीगन॥धम्मेकजिपनिनकेलमपन॥
हसिहसिकह्योधमसनभामा॥प्रियपलागनमुहियलिअमिरा
मा॥धमभीमनमलानविचारा॥निनसेवकलमपगनहमारा॥५५

दोहरा ॥ इति श्री भारथपर्व लोके अश्वमेधे पभाषायां ॥ चौहत्तरवां प्रसंग समाप्त

हकत कहेउ प्रमान ॥ ८७ ॥ दोहरा ॥ जनमेजय जब पुनि कहै हरन कथा
सुनाइ ॥ कैसे अर्जुन गजपुरी पहिलो युधिष्ठिर राइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ जैमुनि क
है सुनहु सुजाना ॥ कहिहों हरन कथा विधाना ॥ प्रथम मैं आये हरि हस्ति
नपुर ॥ हर्षवधाई नृप युधिष्ठिर ॥ सब सेना पीछे नज आयो ॥ भगवत है
नरकलोक कथायो ॥ श्रीपति वचन कहै धर्मराज ॥ विनैजीत नृप यौ स
भछिल पल ॥ महावली नृप आने संगा ॥ आयो हथपधी जी लत रंगा ॥ व
करालभरिषपुरुष धुरानी ॥ निरबीत विधि सिंह विरमाना ॥ २ ॥ दोहरा ॥
आइहरहेन प्रसल रिषहुम आगे बलजाउ ॥ बकहाल भयो अर्जुन सहइ नहर
धन गजपुर लाउ ॥ २ ॥ चौपई ॥ उपम किये चलन को गिरधर ॥ पुनि कौं
ती वचन कहै सुन इहर ॥ तुम पायो मन मैं श्रम भारी ॥ फिरे नव रंग साथ
गिरधारी ॥ तुम विश्राम करो इह लनपुर ॥ है इम महां सुख नृप युधिष्ठि
र ॥ भीमसेन कों आज्ञा कीजै ॥ चतुरंगनि सेना संग दीजै ॥ पुनि हरि वच
न कहै कुंती पर्व ॥ हम आगे चल जाउ नहीं कत ॥ अर्जुन मो भगवन को
पाला ॥ पुनि हम राह सब खासा खोला ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ पारथ हम रानि जसध
पि लो नव रंग मसाथ ॥ चारों दिस केजी नर पस बलायो संग साथ ॥
४ ॥ चौपई ॥ आयो जीत वसु दिस पारथ ॥ सिकलीन धर्मन को स्वारथ ॥
तात धर्म को भाला लागे ॥ आरहरहेउ जाउ तिह आगे ॥ चारों दिस रथ
वीजी मीनि हइ ॥ कौं नकसों सतकार उधनलिहइ ॥ ताही छिन उठ चलेर

मं॰ श्रं॰ पायन॥ निकसीचलतुरंगनिसेनाउल॥ एकतुपिछिरविनसेनास
भा॰ व॥ चलहिसकलआतांकीनीउभ॥ नुचलिजनतकोंतुचलिचलांछ्
३९५ अहरिवरसैनकीमनकांछा॥५॥दो०॥ ईडुधमेरनिसानवडुवाज
तधुनपचलतउर॥ सकलचलेंउचलावहीतुमलभघोभरपूर॥५॥चौ०
ई॥ राजमीतसाजीसभसेना॥ अलिखवकहीपरननहिवेना॥ पहर
चलेअनगनभूपाला॥ अभरनवसनवनाइविसाला॥ फैलरहीदस
दिसहिसुवासा॥ चलेपुरिजनरसनकीप्यासा॥ अईचंदजिमसभा
वनाई॥ पारथलेनचलेविगसाई॥ आगेपंडितवेदउचारा॥ कंन्याहृ
लीपरअसवारा॥६॥दो०॥ हरिदिहवरधिकरलिइगावतमंगल
चार॥ पारथकेअभिषेककहितचलीहिंपेहिलुधार॥६॥चौ०ई॥ प्रजु
दितवारवरननरनारी॥ चलेलेनपारथहितधारी॥ पुनआताकी
नीगिरपरलव॥ छिरकडुगंधगलीवजारसव॥ मगमदआरहतुगं
धसकलवर॥ छिरकडुनगरहारआंगनवर॥ धजापताकासक
लवनावडु॥ भूषनसकलसभनपरकावडु॥ गजहस्तीवडुविधसिं
गारडु॥ परममेलसिंधरतुधारडु॥ अंडुसधेदकनककेसाजडु॥ श्री
वरमेलहिमकवनवाजडु॥७॥दो०॥ मानकमुकताजालरडुसोभत
सीसगयंद॥ तिनपरअंवारीवनीजगमगातकुवहंद॥७॥चौ०ई॥ सु
भगचवरगजगाहविराजत॥ चलतमंदगतमनकुचवाजत॥ निर
तकरतनटअरधनलीने॥ गावतरसअंधवयवीने॥ वहुरोंकलस

हौ पद्दवाना ॥ कुंती हुन इ देवकी माना ॥ सुवली नवसन साज सिंगा
रा ॥ पदर इ हलवली सभनारा ॥ वीर अलकं स्याउ जलमन ॥ ताकौं
लगम स्याहरही जैसुन ॥ नो हिभगन की त्रिया महागुन ॥ विषया सुव
रवंपमालन पुन ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सभ वक हाल भरि षचरन मल कधार
इ नाइ ॥ पार पल्लापो जीम रूप लिन कौं देष इनाइ ॥ २ ॥ चौपई ॥ कहि
जै सुन सुन हो भूपन वर ॥ गजहलीली वे मंगाइ हर ॥ रनन षचमवर
कन कश्रंवारी ॥ सुकमा हलजग म गन किनारी ॥ पमह रहपरहवि
रवनाई ॥ तापर कुंती मानवहाई ॥ कुंती मध्य श्रंवारी गनन ॥ चारसषी
हिग ववरफुलावन ॥ पिलभगनी कौं स्याहरहीना ॥ श्रीपति परमसत्रु
ग्रह कीना ॥ लीन मंगाइ स्यवरगज माना ॥ तापर वहीं देवकी माना ॥ ८
दोहा ॥ हो कगजजो लेल तें मरमाने पुन गूढ ॥ कुंती जननी देवकीता
परभई ग्रहूढ ॥ ५ ॥ चौपई ॥ हकमनि स्याहर सकल सुवनी जन ॥ वहीं वं
सेल महा प्रभुहि नमन ॥ ते उचं डोल जरन ही रामन ॥ कहि नपरनह
महा हुव स्यमगन ॥ प्रथ्य कीन जनमे जपरपधन ॥ उमरदे इकपाक
रजै सुन ॥ कुंती कौ षभु ता ग्रषु कीनी ॥ हित करवहदन वणाई रीनी ॥ स्रप
नी माना कौं त्रिभुवनपन ॥ कुंती कौ षधना रई सन कल ॥ कलिनर
इ देवकी वराई ॥ जैमनप्रुनि सुक कइस पकाई ॥ १९ ॥ दोहा ॥ जै सुना
कहि सुन हो नरपन हरविचार पद्दवान ॥ देवकि ने कुंती वरी वइ
र भगन की मान ॥ ७ ॥ चौपई ॥ पुनलागन पी भगनी लाना ॥ जानी हरि

ग·सु· विसेषकरिमाला॥ वसीवहिक्रमवीचजानघभ॥ रूपमालालाइकउ-
भा· घमासव॥ जाकेहितपारषहरिकीना॥ राजतिलकधर्मजकोंदीना
१९९ तिहधर्मजकीरतजानेहरि॥ रीतीअथकवताईहृदकरि॥ इमघगजा-
कुंतीअसवारा॥ पालदेवकीकोगजभारा॥ सुभकुंजरपरचढीजसो-
मत॥ सभतेंकुंतीकोप्रतापअत॥ ९॥ दोहा॥ रुकमनआदइबनीसुक-
लपिवकाभईअरूढ॥ भीषमसुतनाकोंसुभपरसुपहरबलीगुनगूढ
९॥ चौपई॥ सजसिंगारषोडससनभामा॥ भूषनवसनसाजअभरामा
जामवतीकीनेसिंगारसभ॥ अंगअंगनतहांभईअवरछब॥ पुनसुल-
छमनाजगमगातउत॥ कालिंदीसोभाअतिअदभुत॥ हंसकीउप-
मामैंआगर॥ सजातिलवचित्रगुनसागर॥ मित्राकीछबअतिविसा-
लकी॥ आवेंपरतानीगुपालकी॥ रतनषचितचंडोलसभनके॥ गुक-
नाफालरपुंजमननके॥ १०॥ सोरठा॥ षोडससहसविचारअधकएक
सौआठतिय॥ पहसभहरिकीनारसजसिंगारप्रभुरिनचली॥ ११॥ चौ-
पई॥ प्रजाजोघितालेआरतिकर॥ कंचनथालबीचदीपकधर॥ न-
गमदसिंचफलेललकिवानी॥ दीपजलाइचलीमुसकानी॥ अछतहव-
हरदधहाथा॥ सकलसुगंधसमग्रीसाथा॥ सोभतबीचतीनगत-
गाजा॥ चलेनांरिअदधतछुवछाजा॥ कुंतीअहदेवकीजसोमत॥ ता-
परचढीजाइअतसोभत॥ १२॥ दोहा॥ आगेपंडितवेदधुनपाछेगंधव
गान॥ नटुवेनरववड्नाचहींसुभगसंगीतविधान॥ १३॥ चौपई॥ अर्धवं

इतनि कहि सभा सागर हरि॥ पारथ चलेन चले सो हिय हित धरि॥ जनमेजा
श्रुवन गैसुन समति॥ कहो कृपा कर कथा सुनीपन॥ पंकजन गो रवले
गिरधारी॥ प्रभु हित संग लीने नर नारी॥ पारथ आइ मिला हरि जैसें॥
कहो हमों न कृपा करै जैसें॥ जैसुन कहै सुन इट पबीपन॥ स्वते गव
हस मिय हरषन॥ हरि आगम सुन पारथ कानन॥ चतुरंगन सेना
साजी सब॥ ५५॥ सो॰॥ पारथ अपनी चमू की पंकन लई बनाइ॥ आगे
कीना अग्र स्वकों निज रूप कहे दिखराइ॥ ५५॥ चौ॰ई॥ आगे चला तुरंग समा
ई॥ पाछे बकराल भरि षराई॥ निज रूप केगज पंकत राजत॥ पीछे र
थश्र रथुन छुव क्रानन॥ निज रूप के वर रवने तुरंगा॥ चले परान सा
हित निज संगा॥ पारथ संग नर पम छुव पावत॥ रिषसि व कापा कें सब
आवत॥ वंद हास सरपसर भगत हर॥ नपत व सुवाह न सराव र॥ सुत न
घुम्र करन कोन रन॥ नपत है सधन अग्रि दल के इन॥ ५६॥ सो॰॥ वीर
ब्रह्म नप मोरध जग्र वरनी लधन राइ॥ पारथ बीच विराजही रवि
मणि क्रांतल लनाइ॥ ५६॥ चौ॰ई॥ चारों दिस के नपलिए साथा॥ बिजै भयो
सन सुषन इनाथा॥ स्तनें श्री गिरधर चल गयो॥ इतनें पारथ स न उ
धमयो॥ इह दिस आरज्ञ रीव इसेना॥ संख्या कही परत नहि बेना॥ ड
हूं ओर धुन भेर निसाना॥ कही जात नहि [illegible]ना॥ देषत भए स
कल भूपाला॥ स्या घोअरधन बम ग्रपाला॥ छुब्र सुकर सिर रवने षच
न मणा॥ उहित भये कि धों कोर कहिन मणा॥ ५७॥ सो॰॥ सुकर छुब्र म

रा· अ· सिरविप्रभारकैहैंगईकांता॥भूपनसभविसमैभएनिरषचसदृह\
भा· रिभांत॥१९॥चौपई॥जेनकपेपारपसंगराजा॥निरषचकलभैसेवस
९९८ माजा॥लगासमानइनकोंकरजाना॥मिरगोसभकेमनअभिमाना॥
लागेकहनपरसरवाता॥सेनाअमितधर्मकेताता॥अवनीघोरीव
पअपारा॥दिषिपतमहांबवलदलभारा॥श्रीपतअसेंहहेविचारा
राजनकेमेरेहंकारा॥मतयहन्नपअसेंसमफहिअर॥सेनाअवरन
हीकछुगनपर॥यहविचारहरिसेनचलाई॥निरषगर्वहृघोसवरा
ई॥२०॥दोहरा॥आंबेहरिपंजनकिपोराजनकोअभमान॥सालकरू
पीकरलिपछपाकरीभगवान॥२१॥चौपई॥धर्मचमररवकोरषका\
ला॥सरराहीकुवअवनिअकाला॥सभचरित्रकरतसदिषावे॥राज
नकोअभमानमिरावे॥जनपपसोंकाररघोनभ॥निरषअनंदद
भयेनपतसभ॥विमलवेदधुनहिमउच्चारा॥बाद्योरिदेअनंदअपा
रा॥प्रपमेसभरिषकेपगलागे॥दासनरेषकलषसमभागे॥छूला
करीहरेहितधारी॥भपदीपआरतीडमारी॥२२॥दोहरा॥जैसुनजन
मेजेकहेसंधमरिदेविचारा॥चापेदिसकेन्नपअरेतिनकोसेनअपा
र॥२३॥मैमवडवाव॥सोरठा॥प्रपमेकोंनअपारभईधर्मकीचमूकी॥
मवहिमिलेहितधारहितिपभावसभमिरगई॥२४॥चौपई॥जेसु
नकहैसनइउभरन्नप॥चारकुंरकेमिलेनराधिप॥देषन्नपनमि
पललविचारा॥इनकाहरकरोंहंकारा॥रजनमनपमागहिमद

अवसर॥ जोंतेंरिपुनाईप्रभुलाहू॥ सभभेसेनारकसमपहुंगई॥ अहंते
वसमभतेंसिरगई॥ हिलिपभाउतननएकुमभेपेसव॥ कृपाकरीकह
ताकीनीप्रभ॥ आपकसकलग्यानमागिरधर॥ होडसेनाकीनीरक
समसर॥ २५॥ दोहा॥ सभमनभईहैसांतमनकरुनाकरभगवान॥ रू
पतसभैहरखतनभएसिरगोसभअभमान॥ २८॥ चौपाई॥ सभमनकेभ
रिपुकसांतमन॥ सिरगयोरजततमगुननाही॥ छिन॥ सभनरपकहैप
रमरखवाला॥ सेनाप्रबलधर्मकेलाला॥ कौंनहोइरतिरहतेंजमही
पत॥ जिनकेश्रीपतसहाइसबन॥ जाकेहाथबेदधुननिलखन॥ ध
र्मजुधन्यकहतसबछिनपत॥ धर्मराजकीचमूबनाई॥ सभभवरी
बकीनेजदुराई॥ सेनासहहसरगुनीरिपावन॥ सभराजनकोगर्व
सिराबन॥ २९॥ दोहा॥ अर्जुनकीप्रभलानमितजनतसप्रहरनकाज॥
सेनाअधकरिषाबहीकृपाधारजदुराज॥ ३५॥ चौपाई॥ सभजगनंद
कीरहधुमाई॥ सेनाबढ़तनरहउन्याई॥ निमितयुधिष्टिरकेजै
कारा॥ श्रीपतश्रेसेंरचोप्रकारा॥ जैमुतनकहैततनोहोनरपवर॥ नि
लेपरसरग्यानविनेहर॥ राजनकोगमविवेककीरूपभ॥ हररह
वेबुधिग्रहतगधसभ॥ सुकलामणिपारयपहरनग्यत॥ ग्युवली
मनग्यारतीउमाररन॥ प्रभुहितग्यारलिमंगलगीता॥ करहिक
लोलवहीमनप्रीता॥ ३५॥ दोहा॥ हरग्याररजेबिजैकोग्यपत्रावे
जपसार॥ पारयपरवारसनकियेहीरातननयपार॥ ४०॥ चौपाई॥

म.भु. इहहिं सबाजनन भेर निसाना ॥ जै जै कार करन रागमाना ॥ इह देषाम
भा. परम जन रसन की ॥ बंदह कमल के पग परसन की ॥ चल आए धर्मसुन
३५८ सभ साथा ॥ मायो सभन कमल को माथा ॥ ता दे कहे नोर पंकज सषु
रतनाछर सु रहभीम बिदर सभ ॥ जै से रिष से नानर नारी ॥ आए कहे
संग गिरधारी ॥ हरि पारष सुनि बचन उचारा ॥ रतनाछर रूप बडा
रुष्यारा ॥ ४९ ॥ दो ॥ पारष सुध मे पग लगी रतनाछर के जाइ ॥ सुन
पाछे सभ न रूपन को ले ले नाम मिलाइ ॥ ५० ॥ चौ ॥ रतनाछर है चक्षु
बिहीना ॥ निह मिलाव बहु रूपन उ बीना ॥ कहो उचार रूपन के ना
मा ॥ या को नप सभ करहि प्रणामा ॥ कौरव कुल उजल सु भिरामा ॥
व सपहीव रतो हि [illegible] मा ॥ उस को उचन मान व हूरी जै ॥ मन नव ब
कम प्रसन्न करली जै ॥ इकडक नप मिलाव कृपा सों ॥ ता हि धर्म नाम
कहो प्रथम तासों ॥ ला यो नृपन जीन लम जे हैं ॥ रूप को आन मिलाव
इ तै ते ॥ ५१ ॥ दो ॥ जै सु वचन नप मे जै कहै सुन हू कपा भूपाल ॥ धर्मसु
न सों पहूँच कहै गिरवरधर निह काल ॥ ५२ ॥ चौ ॥ नव पार ष
पग परसो पितामा ॥ रतनाछर को किया प्रणामा ॥ प्रथम धर्मसुन चंद्र
हास को ॥ भुजन गहि आमो हि यहु लास को ॥ यह रूप कुल भगत सु
भिरामा ॥ बंद हा सपा को वरनामा ॥ मैं न हि जी सो यह भूपाला ॥ नन
म पनिज सेवक गोपाला ॥ जिन की रक्षा करी गुपाला ॥ बाल प्रजं
न करी उनपाला ॥ कौन हल पुर को पहराना ॥ महाबलिष्ट सुर

स्त्रिरताजा॥८५॥दोहा॥ धान्यपहूंकेतेजसमनअवरन्नपवननहिंको
इ॥न्नृणसमपाकेसोकवचनोहिंमिलनहैसोइ॥८८॥चौ०ई॥ घहन
पनिजसेवकहरिदेवा॥ मोकोंउचनकरौंपहसेवा॥ विलुपराघ
नभगालमहांवर॥ मिलनअनुनहिंलेहोन्नृपधुजमय॥ सुनहुपितामा
घहभूपाला॥ विषघातसुषमहिंभयोगुपाला॥ मनतरंगअ्रासाउप
माई॥ तेनरंगइनलियेमिटाई॥ जेसंअंतुलहरउपजावै॥ वहुरलहर
मलमांहिसमावै॥ मनकीलहरन्नृपनरइनजेसें॥ हियपरकवहू
नव्यापीकैसें॥८५॥दोहा॥ तुमकोंकरनप्रणामयअवसोभूपनवल
वान॥ बालवेसजिनवसकियोत्रिभुवनपतिवलवान॥८५॥चौ०ई॥
वहुरसुवनदेवनोपितामा॥ वीरव्रतव्रतनृपकरनप्रणामा॥ महावली
श्रुतिधीरजवाना॥ सोनृपतुमहिंमिलनराजाना॥ वहुरहंसधजमहा
वलीन्नृप॥ सोतुमकरनप्रणामनराधिप॥ विलुभगतयोहैतनजाके
हरषसुपत्रनामवरताके॥ मोकोंजीमोउवरोकज्ञोपा॥ रनमहि
कवहूनमोनहिंकोपा॥ तिनकेसिरहमघंदनकीने॥ तेसिवकहंदमा
लमहिंदीने॥८८॥दोहा॥ तिनकापितान्नृपहंसधजमहासूरअग्रभगवान्
सोइमिलनहैतोहिंसोतुमकोंकरनप्रणाम॥५०॥चौ०ई॥ पुनपहमि
लननाघधुजरामा॥ तातमोरधुजन्नृपसिरताजा॥ अईसरीरहिंयो
रनकेपितु॥ कलमअर्पहिंजकोंहरषनचित॥ सोन्नृपतुमकोंकरन
प्रणामा॥ सुनहुसुवनदेनामपितामा॥ वहुरकरनसुतनअसिवलवा

ग॰ ग्रं॰
भा॰
३५५

ना॥ महासुर त्रैलोकनिपाता॥ जेहनेहमहापराक्रमकीने। बालब
हिक्रमजोपप्रवीने॥ याकीउपमाकहांवषानो॥ बडावडरननेंसिंह
पहचानो॥ ५५॥ दो०॥ पनबालकहषकेतनमनमझहनहकीनसंग्राम
वानरसोंजोधेनरपतसोतुमकरनप्रणाम॥ ५६॥ चौ०॥ बडेबडेनर
पतभूपाला॥ यहबालकनिजभगतगुपाला॥ करनकाजपरकह
णाकीजे॥ कंठलगायबहुभुजभरलीजे॥ बडरथचढाइनसूरावर॥ वि
घमानकीनाथनराघर॥ विजैकयोलवनवचनपिलाया॥ हमरानी
तरस्सुमिराया॥ महाप्रतापवानस्रविसूरा॥ तीनलोकजानतप्रण
हरा॥ ५७॥ दो०॥ यहमणिपुरकोनरपतवबरपौत्रतस्यारोराम॥ जि
हमणिपुरमहिमनमिपोविस्वकर्माभुभसाज॥ ५८॥ चौ०॥ जिनवि
श्वकर्मरचीहारवलि॥ भवनसुहामारचेसुभगस्थलि॥ जाताकरीइ
मीनइराना॥ इकदिननपाहिरचोसुभसाना॥ विश्वकर्माचरमाहूंको
तन॥ मणिपुरमहिमनम्योप्रतापजुत॥ जिहमणिपुरकोनरपश्रुम
रामा॥ मिलनसुतनमकोंकरनप्रणामा॥ बडरमिलनतुमनरपत
नीलधुज॥ महिमापुरकोनरपस्रमानधुज॥ पुत्रीपतिपावककहैंजाके
महाप्रचंडपराक्रमताके॥ ५५॥ दो०॥ नेपावकश्रुतनीलधुजतु
मैमिलनराजान॥ जीतेश्वेतेनरपबलीकरहनामोंभगवान॥ ५९॥ चौ
०॥ तोवनासुनरपमिलनसहनसुन॥ महाबलीसुरापराक्रमजुत॥ प
हरपमावनतैंतुममाया॥ महासूरवरप्रतिकलहाया॥ पहप्रभुता

794

लमिलननहैहेसोई॥अस्वअकासलेचद्योजोई।चारोंदिसकेनरपस्र\
भिरामा॥सभजनमकरनग्रामापिनामा।यहपुनवकहालभरिष\
राई॥ताकेचरननलगहस्ममनाई।वज्ञेपुरानननरिवीदृपाना॥समुद
वीचपाकोअसथाना॥५५॥दोहा॥ बकहालभरिषहेषमेगिरेविधाता
वीस॥वटपलववलेकरविदेसिमरनथाजगरीस॥५५॥चौपई॥पुन
राष्ट्ररनपसनहुअवनपर॥सिरधारहुरिषकेचरननपर॥ग्रेसेरि
षमुहसुखेसेभूपत॥आनेकृपाकरीपरमापत॥जेपुनकहेंसुनहु\
रपक्रुनधर॥जोरपसापोजीनविजैवर॥जिनरपकिपोपराक
मजैसें॥वरनहनावोपारपनैसें॥जैसेंमिलनउचतनरपमाकों॥जै
सेंमिलपोपारपनाकों॥किपसलकारनपतधृतराष्ट्र॥ग्रपम\
धसोसिररिषचरननपर॥५६॥दोहा॥जैसोआररजोगजिहसोति
हहिपोविचार॥धृतराष्ट्ररनपभाउकरसंतोषेनरनार॥५६॥जैमकरा
व॥चौपई॥जैपुनकहेंसुनहुरपकाना॥कहोंकृपाहुजेसविपाना॥प
पमेरपमिलाइसभअर्जुन॥तनहुवहुरतिमिलीजुवलिमच॥\
कुंतीअरहहेवकीगंधारी॥पुननसुपतमानागिरधारी॥वारहुकेपग
पारपसागे॥प्रभुदिनभयोहिपैंअनुरागे॥चारोंहरषनहेईअसीसा
चिरजीवहुअर्जुनजगवीसा॥पांडवसापोजीननपनकों॥भयोअ
नंदसभनकेमनकों॥५७॥दोहा॥वीचपराणावर्षहकनुवतनके
मनमास॥पारथआयोजीननपसबहिपवयोहुलास॥५७॥चौपई॥

स॰सु॰ भा॰ ५॰॰

हरषनउनहृदेभईसभहारा॥ लागोडरलगाइलियोमाता॥ कुंतीमाता
कह्योधन्यलल॥ तुमकीनोसंग्रामसहतसपुत॥ मनवचक्रमजानी
पुत्रवाना॥ रक्षकसभनकुलकुसलाना॥ तुमराष्ठनसभषोवड
बालक॥ त्यागोजीनसकलभूपालक॥ धन्यमातपितवालसहाया
भलाकियोनिरवाहहमारा॥ ९८॥ सो॰॥ पुनगंधारीदेवकीलागो
नहृमनपाइ॥ करनपुनसराससबलरिहेअनंदवढाइ॥ ९९॥ चौ॰
॥ पुनरपन्नरेवढूनवलगाना॥ रिषकीमजाकरीविधाना॥ हर
षनभएसकलभूपाला॥ घमुरिनचलेजहांमषसाला॥ वैवेमहांध
र्मराजाना॥ जौनिलछूनहोमनविधनाना॥ चलेनहांकौन्रपमडम
गा॥ सभकेआगेकीनतरंगा॥ पाछेंचलीआरसभसेना॥ डपमा
कहीपरननहिंवैना॥ रिषइपन्रपतचलेपरभाउ॥ हपकउनपंच
सावधांधाउ॥ १०५॥ सो॰॥ इतिश्रीभारथपर्वणिअश्वमेधपर्वणा॥ पं
सा॰ ... जैमनउवाच॥ चौ॰॥ जैमुनकहै
तुमउभूपाला॥ उमगलरंगचल्योननकाला॥ होतीनहांजनसाला
बर॥ ताहेनहांधर्मकर्मनपर॥ नहांअनेकरिषीव्रवपावन॥ धर्मरा
नकोहोमकरावन॥ श्रुगनकुंडघरकोसमहाडुन॥ चहुंदिसचारों
द्वारकोननुन॥ द्वारद्वारपरहैहैखंभा॥ कनकमणीगणजरनअ
चंभा॥ तिहखंभनपरछत्रविराजत॥ घचनरननमणिअतिछव
कीमत॥ ॥ सो॰॥ नहांपटेवानीविमलछिनवरवेहडचार॥ नहांसा

मघं भारखे मान कछ घउन अपार ॥५॥ चौपई ॥ पुनि घर बं भए पला सब का
ए ॥ अगन कुंरखह विगड हराए ॥ अब अब्री कलस भे राजा नां ॥ आप न भ
येस भे तुभ साजन ॥ धर्म जनि रव अ वेद न भयो ॥ विसे नीन आर्वद्वध
न भयो ॥ तां तें धम्मधीन गिरधारी ॥ जिन घह राबी लाजन हमारी ॥ तैकैसो
है धर्म राज लहन ॥ घन कर्म सव धान महा इन ॥ काली मग कासिंग वि
राजन ॥ ह्रापरा हने मैं अवकाजन ॥६॥ दोहरा ॥ ललाप इवरवाम करा बस
कर्म पर राज ॥ जै सें आला वेरकी तैसो किपो समाज ॥७॥ चौपई ॥ पुनवि
रा न वेष पाहेम न वउत ॥ पर नाले लागे न हस वधन ॥ परनालन कर
छुत मे लन न हव ॥ वास अचार जन पढत निगम सव ॥ अव निलस भकर
एक समाना ॥ अगन आइदीदे न प्रमाना ॥ आप न भए सकल मघ साला
धम विजै कोकर दनभु वाला ॥ वकराल मरिघआ पन भयो ॥ निरवन्न वि
छिरमन विकस पो ॥८॥ दोहरा ॥ वकराल भके च रन पर धर्म जथा लो सी
स ॥ वहे भाग हम रेभए कृपा करी जगदीस ॥९॥ चौपई ॥ रिवन प कों अ
र्ध सन दीनो ॥ दूआ करी अ सन कर लीनो ॥ नरनारी सभ रिवपगलागे
ररसन परस हिये अनुरागे ॥ रिष आगम वैस्रुतिन अधिष्टिर ॥ मघह
रन किय धम सपाहर ॥ तिह पाछे आए सभ राजा ॥ चारों रिस कें न्प
सिरताजा ॥ सभ आवै हैं श्रीप तिसापा ॥ हरि धर्म न कों मापो मा पा ॥ ५
गल घनाप व बावन के हित ॥ श्रीपत घह विचार कीनो चित ॥१०॥ दोह
रा ॥ जै प्रुन कहिम नहोन्र पत आपन भए अरंग ॥ आपो मघ साला विघ

ज॰ ग्रं॰ पारथ सुत हल्ल प संग ॥५॥ चौपई ॥ सुग्रजन हैं केसी नंद लाला ॥ कहन प
भा॰ मैं ग्रनि हतन हु भुवाला ॥ आप चढ़ हरि तके सब छिन पन ॥ लाका मुजन
६०। लेमन हर्षन ॥ पारथ त्या पो जीन न्र पनसब ॥ तेन्र पत्न मरे पग पर स
नेत्र ब ॥ प्रथमे धुनगह चंद्र हासकों ॥ बो ले श्री पन हरे दुलासकों ॥ तन
दू धर्म राजन के राजा ॥ पहन्न पमो भगवन नमि रनाजा ॥ बाल प्रजं न भ
गवन मो की नी ॥ हम री सेव सीस धर लीनी ॥ ६ ॥ दोहरा ॥ राजा जी पहु भग
वमुकपा को मिलिये पाइ ॥ होउ हमारे भगवन नृप करह सुलिंग न स्वा
ई ॥ ७ ॥ चौपई ॥ लिखो भगवन कों युधिष्ठिर ॥ लीना कंठ लगाई धुज
न भर ॥ बहुर बभ्रुवाहन कों श्री पत ॥ लिखो धुजन नगह रत नमन हर षत
पहम लिसुरकों न्रप विधाता ॥ महावलीय सुनें न को ताता ॥ युधिष्ठिरप
हैं सुतन कंठ लगा यो ॥ धम्य धम्य कहि जिपद सुपायो ॥ सुषमलन कवस
न किय पहिन सों ॥ धर्मन्र पत्न स्यानंद नचित न सों ॥ तिह पाछे हम बकेत ध
जन गहि ॥ हरि धर्म सुतन कहो धम्य पह ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ कारन सुतन सुता स
बल रन जीते सम भराज ॥ जहां तहां संग्राम कर राखो तुम रावान ॥ ९ ॥ चौ
पई ॥ धर्म तात न भोसु लि हर्षत मन ॥ करन सुतन कों कियो सुलिंगन ॥ सुषम
लकतूमन किय पहिन कर ॥ धम्य धम्य सुष कहन युधिष्ठिर ॥ पुनह रास
न भर लियो नील धुज ॥ सुन धर्मन पह्नन्र पक्ष्मा न धुम ॥ संग ल्यायो
श्रनि वली न मा ता ॥ पाव कनाम जगत विख्याता ॥ जिन तम री सम से
न न राई ॥ कारन सुता मम मिल दूलिन धाई ॥ यह दर हंस धुजन्न पधुमत

हहर॥ सुनवहुधर्मकेलालनसुवनपर॥ ५९॥ दोहरा॥ जाकेसुतनहपरैभगा
नहरिपदसुपद्मानाम॥ महाबलीयहहैसधुनमिलहोकरनप्रणाम॥ ६०
चौपई॥ बहुरोंसुनहुधर्मकेलाला॥ पहनामरथजनरूपविशाला॥ गईकुं
गनिनकेपितुदियो॥ हमरेविधिनवेदनकियो॥ सोनरपतमकोंकरन
प्रणामा॥ महाबलिपुस्रगुनअभिरामा॥ बहुरौंवीरब्रह्मभूपाला॥ धुजगह
लियोनेदकेलाला॥ हहनरपध्रुवलिग्याररघुकरियो॥ मननननबचपुरतापुण्य
कियो॥ आहहरईपृथ्वीपारथकों॥ प्रभुदिनहियेंपिहहसारथकों॥ ६१॥ दो
हरा॥ याकोलेहुपत्नानकेवीरव्रतधनरूपनाम॥ पृथ्वीदीनीविप्रनेकोंसो
उमकरनप्रणाम॥ ६२॥ चौपई॥ पुनजैधनकोंलालनलियोहर॥ लेजासो
धर्मजवरननपर॥ बहुरोंहरिदासनवध्रुवसालहि॥ लियोमिलाइधर्म
भूपालहि॥ पुनहरिलोवनासनरपलायो॥ हरषतधर्मजकंठलगायो॥
पुनपहगाहेसकलमहीपत॥ धर्मजनलायोजीनवबीयत॥ सबनरपत
मकोंकरनप्रणामा॥ आतातेहूकरहिविश्रामा॥ सागनकरीधर्मकेला
ला॥ रामनवसोंपहुंचीकुसलाला॥ ६३॥ दोहरा॥ आयविराजेनरपतसबमध
सालाकेमांहि॥ कियेकतारथकुलसभनिश्चयमिथ्यानाहि॥ ६४॥ चौप
ई॥ अहधनरचीजनतकीसाला॥ जोजननतीनप्रमंनविसाला॥ तहांकंच
नकेथंभअपारा॥ मणिमुक्ताफालरविसनारा॥ तहांचुरासीसहस
रिखीसर॥ अरुरआपवहुसुनीनपीसर॥ रक्षाभोजनदेनसभनकों
रूपतनुधिष्ठिरहहरषनमनसों॥ गोसहसनितकरनसुदाना॥ नाग्र

ज्ञा·प्र पीवपुरत्रूपविधाना॥ तीनलोकषषरनीसहभारा॥ कंचनभूषनव
भा· हनसुनारा॥ ४९॥ दो॰ हा॰॥ छुद्रघुकरवरसुद्रिका कुंडलमुकुरकंठमा
८०२ ल॥ नितधनधनहनसुनारसमयहराधनभूपाल॥ ५०॥ चौ॰ ई॥ कन
कसिंगषुरत्रूपवनाबन॥ नामुपीवसाजनमनभावन॥ राषनसा
मनमितगोदाना॥ जेसंग्राताबेदविधाना॥ जोरिषवसनसुरसरी
नरपर॥ वीससहसवेऊनुरेगनपर॥ नेपाककसभवेदग्रचारा॥
सदानिगमधुनकरनउचारा॥ जिनबांधोर्ककनन्दपहाषा॥ ने
नेरिघरहनसहानरपसाथा॥ पाकरसोईलेहिनृपनिसो॥ चारोंबेद
पढननिनहिनसों॥ ५१॥ दो॰ हा॰॥ तीनपहरनृपधर्मको ज्ञसकर्मपर
नान॥ दानदेनप्रपमेहिजनपाहे भोजनछान॥ ५२॥ चौ॰ ई॥ चौसठ
सहसमुवरतिषिबुलमन॥ होनसोइकरलेनसुदिनमन॥ फिरनसु
कुश्रनिप्रसुदिनगाना॥ रिषनकहीधर्मजपतिवाना॥ पवचलहो
रपभीमहमारे॥ पाकरसोईनमिननसचारे॥ हमसोंकहहनउनाबल
कीने॥ वेगचलउभोजनकरलीजे॥ हमघलनसभरक्षाचारी॥ सं
ध्यासिमरनकेहितकारी॥ कोउकरननर्पणतिहकाला॥ कोउसंध्या
दिककर्मभुवाला॥ ५३॥ दो॰ हा॰॥ पकरउबाबहिगंगमहि कहैं भषो
रसनान॥ हमतरपनसमउठबलहिहोइनकर्मरमान॥ ५४॥ चौ॰ ई॥
धर्मजउठरिविचनपगलागा॥ किपोलोषमनसंभ्रमभागा॥ धु
र्मजकह्योबुलाइबिभेषन॥ रिषनबुलाइलेहुलमनितपन॥ धर्म

तातबुत भीम वुलायो ॥ सकल हलांन भाष समझायो ॥ गालवरि
षवनमांहिबसत है ॥ तिहदेषनग्यानन सत है ॥ कह्यो भीम सों
नृपनयुधिष्ठिर ॥ गालवरिषत्र्याव हू ह्मलन पुर ॥ चलापवन सुतउ
ठन तकाला ॥ पुन आज्ञा की भी गोपाला ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ भीमसेन तन नहि
नगयो गालव के ग्रसथान ॥ हाथ जोर स्यल्लन करी कीतो रिषविहमा
न ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ कौनो जनत अरंभ युधिष्ठिर ॥ नाम हि विधमानवे वेहर
महांन्नु रे त्रैलोक युद्धि तमन ॥ वाहन तमहि दीजियेद रसन ॥ नहां चल
हु रिष करुना कीजै ॥ वेगकृपा करदरसन दीजै ॥ तवगालव रिषवच
न उचारे ॥ कवननाम पितृन पन तस्यारे ॥ कह्यो भीम सुन ग्रवनरि
षीश्वर ॥ धर्मराज पितृ नृपन युधिष्ठिर ॥ पुनरिष कह्यो धर्म सुत काके
पुरु कछ भीमनाम कहां ताको ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ मम पिता है धर्म को भीम
कह्यो अगगहार ॥ समनाहि के कवन को पुनहक्को रिषराइ ॥ ५७ ॥ चौपई
मम पिता संतोष धर्मानहु ॥ मनवचक्रमनिहचें जियमानहु ॥ पुन
रिष भाषे वचन कृपातन ॥ सम वचन तम कहे पवन सुतन ॥ हमवै
ठे संतोष धारमन ॥ कं हम लग्याहार नगनतन ॥ ठोरहकोंतसांनम
नपाई ॥ आनमराम ध्यानमनलाई ॥ इहां जनतपरराज रसोई ॥ षटरस
भोजनपापनहोई ॥ नहां तालतावदेश्रपारा ॥ भलेजाइनलवतानव
विचारा ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ भूपनग्रह भोजन नकियेत्रस्लावदनग्रपार ॥ ग
नमवावदही मानहे भलन नत्रब विचार ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ श्रीपति को पद

ज·ग्र· वचनप्रमाना॥ जे जगमांहि भगवन भगवाना॥ नही वहावनद
भा· लासोई॥ हम रे भगवन कहावत जेई॥ वहुर जीव कासे रघुना
८०२ ना॥ उधम करत आवहि हम भसाना॥ कछु पावहि कछु हान वि
धाना॥ मन संतोष विचारहि ज्ञाना॥ तीते वढे भरजन लमउनवि
न॥ वरन वलौं जस सोंराषत हिन॥ जो हरि भगवन करहिं कछु
दाना॥ ले ले दै ले कौं कल्याना॥ १३॥ दोहरा॥ राजन कौं वल लक्ष्मी
राजस गुन तिह भाइ॥ पुन्य करत राजस विषै लोगुन कौं दिष
राइ॥ १२॥ चौपई॥ पुष्प मे फल वांछा मन धरहीं॥ पाछें दान पुन्य
ग्रत करही॥ पुन्य करत अपनी वांछा हित॥ कोट कामना वांछ
न है हित॥ मन महि धारत है अभिमाना॥ तातें निफल होत सम
दाना॥ ले ले दै ले कौं दुष होई॥ जान वूझ कत ली जे सोई॥ विपवत
दान करत है जेऊ॥ हिपाश्रापना भोगत तेऊ॥ १४॥ दोहरा॥ राजस
दानजु करत नेउ जनम राजसी पांहि॥ राज लरग है अवत रे भूप
न के गृहमांहि॥ १५॥ चौपई॥ जिन दूदान राजस को कीनो॥ राजस
मनम वहु रत उनलीनो॥ हस्ती राजस जनम भयकारा॥ गर्व सहित
मन सजत सिंगारा॥ जिह विध दान करत है जैसा॥ अवतार जनम
धर भोगहि तैसा॥ दाता कौं श्राप न भई यह गत॥ दान लेन हारे स
माहत॥ वे हम तवपुन फ्रर तनना को॥ हृदय प्रकास न विगसत ता
को॥ धरमपति ग्रहवत्यो संतापा॥ ताके कहे लगे न हि पापा॥ १५॥ चौ

मसेनसुनवचनहमारे ॥ जाउनहीं हमतूपकेद्वारे ॥ कंदमूल
परमूनवहराखो ॥ पहुमुहारसालकजिपजाखो ॥ रुपगृहमोजन
बीरखांडखुल ॥ लापनेलालसावटनविन ॥ वटीलालससंतोषवि
हाना ॥ भटकतफिरतहारजिमस्वाना ॥ संतोषीहसीजिमहोई ॥ वा
हारहतइकांतहिसोई ॥ भोगमिलनतिहभांनभांनवर ॥ कालानित
संतोषहियेधर ॥ २८ ॥ दोहा ॥ तैसेसंतोषीपुरुषहुदेविवेकविचार
ताकीसेवाजगकरतमहाधीनउरधार ॥ २९ ॥ तातेमेंसंतोषसोंसु
रूपायोविसराम ॥ जहांधर्मसुतनकीसभाहमपाकहोप्रनाम ॥ ३० ॥
सोरठा ॥ रिषसोंवचनविचारवहुरकहतभोपवनसुत ॥ अग्रसे
पकुतनतारषटसावधांपभाउपद ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीभारथपईलो
अर्थभेदप्रथमाध्याय ॥ ३ ॥ छंदसाटवोंध्याउटटटहकन्नूरनमान ॥ ३२ ॥ चौपई
मैंसुनकहैसवनहुमपवनवर ॥ विवेकरीसुनभीमजोरकर ॥ समव
वनतमरिहैविचारा ॥ तनसकेगुनइसहिप्रकारा ॥ धर्मवानसा
नसलियनांही ॥ सदाहमसमिमरतमनमांही ॥ सदाधर्मरतसमउ
चारत ॥ असतवानमनमैंनहिधारत ॥ मारहर्षलैजतनरखायो ॥
श्रीपतितहांसहारकहायो ॥ नहप्रथवीपतन्नरैयनेका ॥ जिनका
कियोनजाइविवेका ॥ दोहा ॥ धर्मवानकेजतनपरजरैअनेकभु
वाल ॥ कोउजीतनसाघोविजैकोजहरसनंदलाल ॥ चौपई ॥ तहां
नरैत्रैलोकभुवाला ॥ सावेसुरनरलोगपपाला ॥ महादेवगवरीसं

ज॰प्र॰ गाथा॥ आयो ध्रुव हितास चितै साथा॥ मदुचा बाई रानी संग लीने॥ आ
भा॰ एगण गंधर्व अपछरी ने॥ अत्र अंगिरा सपत रिषीश्वर॥ तहां मुनेश्वर
४॰४ मुनी तपीश्वर॥ आए दुरबासा नारद मुन॥ सनकादिक भृगु बाल
मीक मुन॥ विश्वामित्र वसिष्ठ परासर॥ बेदब्यास सुकदेव महां
बर॥४॥ दोहरा॥ कोट तितीस सुरे तहां अमर संग लिये नार॥ आ
ये लोकपपाल के कुसल बरन चित धार॥७॥ चौपई॥ सात समुद्र
तहां चल गए॥ धर तन बंदन हरि मन भए॥ गुरू नौ सोन दान बेस
लिता॥ आई देह धार गंगा लता॥ तुरे तहां जमवरन कुबेरा॥ अष्ट
कोट गिर कनक सुमेरा॥ आए नवग्रह चंद सूरज तुल॥ चारव
किव गंध्रप गुरदेव न॥ आये सेषनाग बल गाढे॥ मघसाला के
आगे ठाढे॥ पितर चतुर ईस लोग तुरे सब॥ रस रसन परसन हे तन
गन सभ॥५ दोहरा॥ रंभा आद सुरअपसरा निरतत विविध प्रकार
रस रसन परसन कुसल के हित सब आई धार॥८॥ चौपई॥ लछमी स
हत कुसल तहां आए॥ षोड स सहस नार संग लाए॥ छपन कोट जा
दव वल वाना॥ तुरे तहां सब रूप तत्र धाना॥ आप तहां तस कल सु
घन तहां॥ नंदलाल कोट रस रसन तहां॥ रस सपरस मिट न हुस भणाण
हर होत मनन के संताषा॥ सुन गाल वक्ष म भगत गुपाला॥ अत्रक
र तै है श्री नंदलाला॥ नाम जुधिष्ठर तपकों कीछा॥ अपना भगत
मान न मसरीना॥१॥ दोहरा॥ भीमक है गाल वसुन दूध उवलि ये नन

कोल ॥ हरसन परसन प्रुरि नमन रहे कन प्रभुनें दलाल ॥ ८ ॥ चौ-
पई ॥ भीम वचन सुन रिषि हरषन चित ॥ नाही छिन उ गवन्यो धार-
हित ॥ प्रापत भयो वेग हस्तनपुर ॥ श्रवन प्रार रर रपोत्न पन सुपिछ-
र ॥ परस्यो ररसन भीनें दलाला ॥ पुरि नम भयो निरषन मषसाला ॥
सुगन कुंर कोठे ररचीवर ॥ किय विलार नीन जो जन पर ॥ नहुता
देहैं प्रापपुपाला ॥ सुवरच नृर्रिस के भूपाला ॥ चारों दिस सुभ भीन
वनाई ॥ चित्रसाल वहु भांत चिताई ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ चित्रसाल महि लि-
षे वर मृग पंषी वहु भांत ॥ नगम मगन प्रतिछुवचनी को रसर की
कांत ॥ १० ॥ चौपई ॥ जीस सहंस रिषीस्वर तहां ॥ करत उचार वेद धुनव
हां ॥ निम करम अरु होम करावहि ॥ पाकरसोई नृप संग पावहि ॥
चौसठ सहंस अग्न रिषि जोऊ ॥ पाक पाइ सिमरत हरि तेऊ ॥ अपनी र-
छ्यासों विचरत निन ॥ निन कर्मी जिन को हरिसों हित ॥ सभयान न-
रीच मृग्र मिलवर ॥ उनरपरी किन ने जो जन पर ॥ कोउ नवरन स-
कत मिनलाकी ॥ प्राभाको रसर रमम जाकी ॥ ११ ॥ दक्म निद्र्य रनार-
का नेऊ ॥ षोउस सस हस स्रवनें दितनेऊ ॥ वडुरस भयरा प्रारिनु वलिम-
न ॥ गावहि गुन गोविंद प्रुरि नमन ॥ विष पाअ रुवंप कमाल नवुन
चित्रांगन सुभ गावन हरि गुन ॥ पारषतें नवरान करायो ॥ नृपस-
भ जीन विजैग हप्रायो ॥ गजगाप नपर कंचन दाना ॥ दान किये
अर्जुन विधनाना ॥ पारषकों कहि पन नृपिष्टिर ॥ पुन पुन कंवल

ज॰भु॰ गा बन धुजभर ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ बहुर धर्म कहि कृस कों सुदिन युधि
भा॰ ष्ठिर राज ॥ पांडव सेवक ज्ञान हरि किये समरन काज ॥ ७ ॥ चौपई ॥
५॰५ अव सर ज्ञान रिषी सब आए ॥ कृस नाम सुन गदृह नन पाए ॥ एक
मत है धर्म धुवाला ॥ कोर जतन फल र रस गुपाला ॥ इंद्र लोक ब्रह्म
लोक पयाला ॥ ज्ञापन भए जनकी साला ॥ काम धेनु माहन डगन
रवि ॥ धन युधिष्ठिर हन आए सब ॥ कृपा कृस की धर्म ज्ञान पर ॥
श्रवण सि इन वनि धत्रुला र हर ॥ जाटी करी धर्म के द्वारा ॥ दान करन
रथ विविध प्रकारा ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कलपवृक्ष हरि ज्ञान बोधो धर्म जन
द्वार पर ॥ वेदन मग गम रसान छिरको सुरमगग्रह सकल ॥ ८ ॥ दो
हा ॥ की चर्ण इमग ग्रग जान हर नह परमन वास ॥ इसलन धरके
मारन र सब के हृदे इलास ॥ ९ ॥ चौपई ॥ निकस षट्नी लिय द्वारहार
पर ॥ सुतन गंधभर कलस लिये कर ॥ हरषत नव वसन माल सिंगा
रा ॥ ननप हरे पर विविध प्रकारा ॥ निकस हि आइ रूपन मग मोही
छिरकहि जिन परवास नहांही ॥ हास विलास परसपर करही ॥ ध
मधन रपनाहिं उचरही ॥ हरषत हृदे हों छिमपाला ॥ धन्य धन्य क
हि कृपा गुपाला ॥ सुरकी नावे कुंठ समाना ॥ ऐसे कहै सकल राजाना
॥ ५ ॥ दोहा ॥ सुक सुरी गन सुरभयो सोसभ कहैं नरिंद ॥ जनमसफल
हमरे भए देषो रस सुविंद ॥ १० ॥ चौपई ॥ मगमर उसकर कमल लि
ये कर ॥ हरषत छिरकन लोक पर सर ॥ हास विलास करत मन भा

वन॥ अनुदिनद्दियेंगुलालउडावन॥ बाजनलपंचनरसअपारा॥
अवनगनबाजेविविधप्रकारा॥ फरहरहीधुनअवनिअकासा॥ व
ढोसभनकेहरेदुलासा॥ अनिदुलाससवाढोहलनपुर॥ धनधन
सभकहनजुधिष्ठिर॥ धनधर्मकानलह्वलभारी॥ विस्मभगनसोभा
ह्रषकारी॥ ५॥ दो॥ रा॥ ईदसवारसभरेवलानवयहस्वारिगनतेस॥ इ
वीसानेस्वारहरिवगजनुरकीडूपवेस॥ ५॥ चौ॥ ई॥ नृपरेलहांअवनगव
अवनीसा॥ तेनीसहंससेसानछबीसा॥ जैसाएकनृपिथिरराजा॥
तैसेअवरपतनृपरेसिरताजा॥ अवरजपतकोअंतनपारा॥ अगनतभू
पतनृपरेअपारा॥ कनकपुकटसिरचवरदुरावत॥ महाप्रतापपवा
नछबपावत॥ देषइककपाग्नीनंदलालहि॥ सभनावतसिरधरम
भुवालहि॥ महाबलीसरेअतिजोधा॥ जिनरनकबहूंनमोनक्रोधा॥
५५॥ दो॥ रा॥ भूपतनृपरेअनेकनहहरसनहिननहराज॥ जीतेविनजा
येवहुतहेषनमनसमाज॥ ५५॥ चौ॥ ई॥ दिपीपरमपुनीनृपरेअपारा॥ व
नेरंगनिसेनानहिपारा॥ तिनकापाकरककछिनमैंहोई॥ हकनवां
टहीनेरपसोई॥ जोधर्मजनपसोपेजिनकों॥ सोसवकछुपहुचाव
तेतिनकों॥ पाकरसोइवसनअभरननित॥ इकइककोंनपदेतसु
हितचित॥ जोनपसोपेजिसहिरजाना॥ तेतिनपरनिसदिनसवि
धाना॥ षवरदारहैभीमसभनपर॥ आदरकरतसभनकोंहित
कर॥ ५७॥ दो॥ रा॥ मनकोईनपभावईहमकोंपङ्ओनाहि॥ कांतैनि

श्री·मु· सहितपवनलनषवरलेनसंवपांहि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ इकहिनधर्म
भा· नसभष्टपवीपन ॥ किपेइककवरकांनलहरषन ॥ एककोरकि
७·९ पोपाकसभनको ॥ ननक्षिनलीनतुलाइरपनकों ॥ पंकजजोर
सकलवैराग ॥ मनवांछतभोजननवहुपाए ॥ षीरआदिरसषट
परकारा ॥ सुदिननरैसनकीअमहारा ॥ वचनकहेहरिधर्मजकों
नव ॥ प्रजाकरहुतरंगमकीअव ॥ स्यावहुअघजनकीसाला ॥ सु
नहरषतधर्मनभूपाला ॥ २६ ॥ दोहरा ॥ अस्यापननवग्रहकरहुअ
गनकुंडपरजाइ ॥ ननक्षिनलीनमंगायहपआगासोंजहुराइ ॥ २७
चौपाई ॥ स्यावअघजनतकीसाला ॥ उवेअधानरिषीननकाला ॥ हरि
आतालेगएकुंडपर ॥ अस्यापनकीनेनवग्रहवर ॥ रूतिमंत्रनकी
धुनउपजाई ॥ सुनमननसोंतरंगमआई ॥ इक्सचारीवरषप्रमा
ना ॥ किलोतरंगनहांमनमाना ॥ सोइतुरंगमअतिबलवाना ॥ अग
नकुंडकीदिगलहराना ॥ वेदमंत्रकरवाहनभयो ॥ निरषधर्मसुतनंद
प्रमगयो ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ वहुप्रकारप्रजाकरीरिषनहिपेपरहेत
इरसनकोंआपनपनहरषतनिपनसमेत ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ सभभूपन
हयकेपगलागे ॥ देहहकुनाहिपअजुरागे ॥ वचनकहैंसभनृपन
परसार ॥ धन्यधन्यहैंनृपनुपिहर ॥ सभनृपदेहिअसीसविवेतु
न ॥ सफलजनतपहकरहुधर्मसुतन ॥ देअसीससभनृपनसुधारे ॥ क
हैंसकलवडभागहमारे ॥ ननमप्रजेतनयहहसुषपायो ॥ करलाक

सिहहरिहरससहिसावो॥२८॥दोहा॥निनवअनिरहैनक्रमसकोमुहृगं
गामुसनान॥ करहिहरसससमरिषनकोह्मरेभागग्रथान॥२॥चौ
पई॥देषहुपलनिमिलपरमापन॥सावधानवाटेमनहृरषन॥त
हांभगनवहभगनवनुधिष्टिर॥जिनकेनिनअज्ञाताकारीहृर॥तांतें
धमधर्मकोनाना॥धमधमपाकोपितसमाना॥वहुरयुधिष्टिरस
कलरिषीवर॥लिपेतुलाइतहांविनतीकर॥रेहुअसीसवेदधुन
कीजै॥रहहबरंगहप्थिनकरलीजै॥वकदालभनेंआरिरिषीश्वर
ववनकहहवभयेपरमनपीश्वर॥२६॥दोहा॥अतसंपरननभयोत
पनहांवैठेनंदलाल॥मनववचक्रमगिपआनिधेंचिंतनकरइत
वाल॥२१॥चौपई॥अैसावलीवरंगवत्याग॥ताहाअगनवकुंडकेहा
ग॥तांतेंयहमानोनिहचैकर॥वमरामणपकीनाहृतफलहर॥व
हुरयुधिष्टिरवचनउचारे॥समकहहवलुमप्रभुहमारे॥लगहिलीन
दिनपापजापर॥तांतेंहमरेत्रिपउपजतडर॥वेसंतरकेहपसाथि
धाना॥ताहाकहनासोंभगवाना॥मत्रपुरीषसवरमनकरई॥त
वहिमतसमहिहृषवपरई॥२८॥दोहा॥तांतेंहमरीलाजनमक
पाकरहुरिषराइ॥विगममंत्रकरतानदेतीनेग्रमहदाइ॥२९॥चौ
पई॥कहैरिषीनपवितनकीजे॥परमापनिचरननचितदीजे॥अ
तमलहैश्रीनंदलाला॥सोहरतमरेससाधुवाला॥रिषनअमीर
वादवहुदीना॥वेदमंत्रपढइथिनकीना॥इपकीपआकरीरिष

809

न॰ प्रु॰
भा॰
५०२

नैनन ॥ एक दिवस पढ निगम मंत्र सब ॥ उपजी सांस न्नु रंगम
के मन ॥ अगन कुंड पर बहरा पोतन ॥ द्वितिय दिवस सभ न्नु रेम
हीपन ॥ पूजन कौं न्नु रंग मन हरषत ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ पररछत न्नु
रंग कौं दीनी सकल नरेस ॥ विद्यमान प्रजा करी जपावेद उप
देस ॥ ३० ॥ चौपई ॥ दिन तीसरे सकल न्नु व तीजन ॥ प्रजा हुप
की करी प्रुदित मन ॥ धूप दीप आरती उतारी ॥ सुभ मंगल आर
ति मिल नारी ॥ संपूरन प्रजा की जीजन ॥ पाक रसोई सिद्ध भई त
व ॥ वचन कहे नव कुल धरम प्रन ॥ पंकत एक करो रिष नरपत ॥
पाणो ग्रप ने पान रही जे ॥ रुप करुप कत भए ताकी जे ॥ एक हस
रे कुंड हनन पावे ॥ छट रस भोजन सुवरन चषावै ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ न्नुपत
रिषीस्वर सुरह सम रन्नु र वैठे रुकतौर ॥ रुप न्ना रष टरसन हां लेषु
छमेलहि कौर ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ अंनन ववे अनेक प्रकारा ॥ वरनन हो
न ग्रंथ विस्तारा ॥ इछाचारी भोजन कीना ॥ जो जिप भयो सो इलिह
लीना ॥ लोष सभन्न परिष प्रुह देवा ॥ कीनी नपाउ चित जिह सेवा
भोजन करस भउ ते प्रुदित मन ॥ प्रुष ते वोल चं रन चर्चित तन
बैसठ सहस रिषिन कों न्नुप प्रुन ॥ दीनी पहर टकु नाले वटु कन
रकरक पात्र कनक का ग्रदधन ॥ रकरप रक गमन एकत्र सु न्नु
न ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ सवा भार भर कनक को रकरक रिष कों दान ॥ दीन
सुपिवित्र प्रुदित मन वेर उकत परमान ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ चौसठ सह

सनिलीस्वरकोंरुप॥हीनीयहहरखनावरापिप॥वीसमहसुग्रव 810
रस्थिमेक॥सहारहलधर्मजसंगलेक॥जिनकंकनवांधोरुपहा
षा॥भोमनवलेनसहारुपसाषा॥तिनकोंदानश्रधकरुपदीना॥
कहिमुषसलहिनकरलीना॥सुभ्रमग्रगवसहिहोमहिगेजव
पहराबैंगेराजननकोंनव॥जैसीवलउचनरुपजाको॥जैसीपह
रावहिगेनाको॥४५॥दो०हा॥जवहिसुभ्रमग्रगवीविधहोमहिगें
धुनसाम॥नवसभभूपनकरहिगेपर्मजकोंपरनाम॥४६॥चौ०पा
ई॥भेटदेहिगेंपर्मजकोंनव॥चारोंदिसकेमहीपालसव॥नाषाक्षे
नमहलनभूपाला॥पहरावैगासकलभुपाला॥तिहपाछेदेपाकस
भनकों॥सकलरिषनकोअरुराजनको॥विनैकरैगापर्मलाल
सुन॥जेउत्पुरैनहांनपनरिषीसुन॥धन्यकहैंगेभागहमारे॥भएछ
मारुपहरसनलमारे॥काहमकीनलुमहिवरराजा॥नहीप्रयोग
नसुहिश्रवाजा॥४७॥दो०हा॥तुमश्रापसभकृपाकरहमरेजनस
माज॥हमनुमभयेसनाघसमहरसपरसजइराज॥४८॥चौ०पाई॥
जैसुनकहैंसुवनइभूपनवर॥भावैहैंयहवचनयुधिष्ठिर॥अभ्रम
गनमहिहोमहिगेजवं॥विनैकरैगापर्मलालनव॥प्रथमपर्मन
हवचनउचरई॥पाछेरुपननिवर्तनकरई॥तुमपिनरनपरक
पामुरारी॥प्रनसफलकरहैगिरधारी॥इहवाताभोअगनकुंरुप
र॥करननलहुरीषकहनाहर॥करततेवेरधुनरिषधरभाइ॥ना

गे॰ ग्रं॰ उसपतसोहरनध्याउ ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ इति श्री भा रथ्रप वृत्ति ग्रन्थ श्रेप
भा॰ श्रीधान ॥ कवि हरि कृत परनमधो साठ सपत परमान ॥ ४९ ॥ जैमन उवा
५०८ च ॥ चौपई ॥ जैपुनकहै सुनहु भूपाला ॥ जनकपावरमहोविसा
ला ॥ भगतनकानसराखनश्रीपत ॥ धारेभेषअनेकरूपअत ॥
भगतवछलभगतनहितकारी ॥ धर्मजनकेरछकगिरधारी ॥ जि
हजिहकोहभाउहैजैसो ॥ आदरदेतनतहांतिहतैसो ॥ गंगातरचै
ठेरिषजहां ॥ गोषुकरतसदाहरितहां ॥ जहांकछुधारीवरराजत
तहहरिभजनकहतसुषसाजत ॥ ५ ॥ दोहा ॥ जहांहोहिनरपत
सुतहांहरिवैसाधरूप ॥ मोषकरतहैसभनकोंनिहचेसमस
रूप ॥ ५ ॥ चौपई ॥ जहांरसोईघरेरससाजत ॥ तहहरिरतिनसवियो
नविराजत ॥ वीससहससषिषस्कनिधुनतहां ॥ वैठेसुनतनसदाह
रितहां ॥ तहांग्राहकलीअगनकुंडरपर ॥ दिषिपतनहीसदाकाटेहर
तहांकुंलीरेवकिकुंलीअहतज्ञमन ॥ विचरनतहांसदाजाहोप
त ॥ हकमनग्रारच्छछपटरानी ॥ राजतनतहांसदागिरधारी ॥ सो
लांसहसपकसोवामा ॥ तेजानहिहमपहिछनसामा ॥ १ ॥ दोहा
जैतकथ्रापजतपरतरनरलोगपपाल ॥ जैमानेहरिहमहिवे
सवपहिरूपविसाल ॥ ५ ॥ चौपई ॥ रूपतभएघरेरसकरभोग ॥
जैतकनतसालकेलोगा ॥ दिषिपतजहांतहांहरिराजत ॥ कंचनी
वसभठौरविराजत ॥ भूषणासविरगईसभनकी ॥ ग्रासाभईसं

ग्रसनमनकी॥ सबमिलबोलेंकरनपरनाम॥ तुषसमएहहमकों
दीनाहइ॥ भएक्रतारथलोगसकलकहि॥ बसेंजाइबैकुंठपुरीम
हि॥ नहांनहांदरसफलकोहोई॥ आपकठोरसकलहरसोई॥
५॥ दोहा॥ ऐसीपारीहैक्रपाधर्मजपरभगवान॥ ठाढारहेहलवधी
नतिनजहांतहांसबधान॥ ५॥ चौपई॥ दीनेजिनकोंदाहसमासा॥
देआइकुलतिनअगनतिरासा॥ नरागवेमनउछलतिनमलिहवि
शहतिरागवेमनहोमलमब॥ अहतिरानवेमनतिलतिनथ
ति॥ अगनकुंडमैंजारनहहरषति॥ बोलेसेसनागतिहअवसर॥
बचनहमारासुनलीजेहहर॥ हमरेतनउपजीयहबाला॥ अरपों
सुतापधर्मकेलाला॥ श्रीपतिमोकोंआसादीजै॥ याकारनकोंबिल
मनकीजै॥ ६॥ दोहा॥ कुलकयोपुनसेसपतिबलधर्मजहिराज
समानपुत्रीदेनकाअबयहपतसमान॥ ५॥ चौपई॥ पुनहरिकह्यो
सेससुनलीजै॥ उत्तममालीमेरअबदीजै॥ पाछेकरउसनाहह
राना॥ कारजकीजेबेदविधाना॥ ठाढाक्रतोभीमहारेपर॥ ताकों
लिपोतुलाइवेगहर॥ भलेतुरेकाजिपविचारकर॥ तेसातेसा
लाइभाइपर॥ रिषअहमपतनुरेअपार॥ होतरसोईविविधप्र
कार॥ हहलकरनराजनकीनारी॥ सुपकरनभोजनहितधारी॥
९॥ दोहा॥ भरतेउनकेनपतसभहहलकरनतबमान॥ एकपरो
सनपरघरेतकपठ्ठाचावनजान॥ १०॥ चौपई॥ धर्मनातजहहरपत

जै॰ग्र॰ सुनावर॥ धौवलचरनन दिषकेरचकार॥ तिलकतंबोलदक्षनानि
भी॰ बधन॥ देनदिषनकोंसुनिमनहरषत॥ वरषपककीनीक्रमबेसी
८॰९ आलावेदकरीविधवैसी॥ धर्मसुतुयज्ञनबधनभाषो॥ धन्यधा
नहमराजगारोषो॥ ल्यावोजीनसकलभूपाला॥ सोभनकरीजन
कीसाला॥ धन्यधन्यपदहभुमानसुधारी॥ सुमसारषेनपरडपकारी
॥११॥ सोरठा॥ चारोंदिसकेभूपतसुमजीनकिवेनेकार॥ धन्यनसारो
मातपिनसांचेसधामुरार॥ ११॥ चौपई॥ पारधकहेसुनदूभूपाला॥
धहन्नपजीवेसभनंदलाला॥ भगनतानहमकोंनसहीना॥ पद
कारनसभश्रीपतकीना॥ तुमरीभगतमानलीनीहर॥ समन्नप
जीतेनुमप्रसादकर॥ तुमराधर्मप्रगटसभभयो॥ तांतेसभकले
सहरगयो॥ चक्रनपतिग्रनतुपरहसाको॥ जीतेन्नपतसीलसत
पाको॥ जहनहहमकोंसुपदापरी॥ तहांसहाइद्रौपदीकरी॥ १२॥ सो
रठा॥ जबहमकोंअपदापरीकीनीतहांसहाइ॥ तहांद्रौपदीकृस्नकों
सिमरननहीनवलाइ॥ १३॥ चौपई॥ दुरजोधनपठयोदुरवासा॥ पां
डुसुतनकोकरइविनासा॥ आपदेनआवातातहीछिन॥ मांगोअं
वसीनकालदिन॥ तहांद्रौपदीहरिसिमरायो॥ आंतुरहस्वेनेतह
प्रगटायो॥ दुरवासादिषहरषतभयो॥ देअसीसनिजआश्रमगयो
आवावदुरहसरीयाया॥ दुरवासागिपक्रोधअपारा॥ तबहमरह
तेधवनमांही॥ वलआयादिषतानतहांही॥ १४॥ सोरठा॥ तबहमकों

चिंतावढीसुगनमरनमनकीक॥विषदेवेगआपहमकांनैभए\ 814
अधीन॥५५॥चौपई॥जहांद्रौपदीसिमरनकीका॥हरिपदपंकज\
सोंचितलीका॥नतहिनश्रीपतगापतभए॥हरसपरसहमरेउ
वगाए॥साकपत्रलवयुषमेलोहरु॥रुपतभएमनसकलरिषी\
श्वर॥हमकोंतहांकष्टलैंदालो॥दुरवासाकोश्रापनिवालो॥वहु
रींनगनकरनकेअवसर॥चीरकोदलेनभगादेहर॥ताकीदुपद
सुताकीलाजा॥वहुप्रवाहकीनजइराजा॥५५॥दोहरा॥द्रुवचषकप
टकेवलेनरेवलसहरसंध॥सभमिलकीनाधंत्रहरिनहांभार
थआरंभ॥५६॥चौपई॥दुपदसुताहमकोंनवराखो॥करहीनताकु
लव्रतमिभाखो॥प्रथकलोजनमेजपंडितपति॥उमरदीजेवुनि\
वरदर्षन॥दुपदसुताकीरक्षाजैसें॥हरिकीनीभाषहसुकजैसें॥
अलपवरकेनतेमिलेकिम॥जेमनयुविगुफभाषुकहोतिम॥जे
ऊनवचनकहेंतपसोंनव॥सुनहुअवनभाषोंहमतांनसव॥रक्षा
करीद्रौपदीकीहर॥नमसोंभाषहुतावोंरुपवर॥५९॥दोहरा॥ना
रदआपदियोहुताआतासोंजडराइ॥जिहगरहैहैद्रौपदीनहां\
दसरोनआर॥६०॥चौपई जोहमसरोजाइसाकेगृह॥वरषएकव
नवासहोतलिह॥नारदआपधारमनमांही॥एकहसरोनिरधन
मांही॥इकदिनकिसेविगेप्रतिभाखो॥धर्मजअयचजैनहिरा\
खो॥दुपदसुताअहतरुपतजुधिष्ठिर॥कामदषनिनकरतपरस

अ॰ मे॰ र॥ अर्जुन के मन संभ्रम भयो॥ धर्मलाल के मंदर गयो॥ पारथ पह
भा॰ निहवैं जिय धारा॥ आपस हौं रहे बांह कवारा॥ २५॥ दो॰॥ धर्मलाल
४१० के भवन महि द्रुपदी हौ पदी लाह॥ गयो न हां चल रहे मन हो ऊ देष
माह॥ २६॥ चौ॰॥ अर्जुन देषी द्रुपद सुता नव॥ रूप पगवां पलन नग
नगंग सव॥ पारथ निरष भयो अचरज मन॥ सम कह मन पेलो ग
यह वचन॥ कैसें रहै धर्म को लाला॥ निरषन नगन हौ पदी गाला॥
गौर रकों न एक सेजा पर॥ कैसें धर्म जन सकै धीर धर॥ बीन लोक म
हि नारन ऐसी॥ सुंदर अंग द्रौपदी जैसी॥ नगन भई अपनी नज
लाना॥ चांपन वरन युधिष्ठिर राजा॥ ५॥ दो॰॥ यह विचार जि
य उव चलौ विजै पाप मन धार॥ धर्म विजै को कषौ नव नार रव
वन विमार॥ २७॥ चौ॰॥ लागो चलन धनंजै वन जव॥ बहुर युधि
ष्ठिर वचन कहै नव॥ जब ही वर्ष संपूरन होई॥ फिर न महि रहै ए
के दिन सोई॥ गया विषे अरजुन वन महां॥ चर वैठो ऊपर निसर
हो॥ माघ न रहो रैन धर्म जन कहि॥ प्रात पषेस करो गनम तु रम महि॥
वैसें व चल न चला विजै वन॥ निस दिन भ्रमन फिरो वंचल मन॥ व
ष वरी न एक दिन रहो॥ नव धार षट पनेजिय कह्यो॥ २८॥ दो॰॥
चलन वे रमो सों कह्यो वचन धर्म के लाल॥ अर्जुन चिंन करीन वहि अ
रुप वर की वाल॥ २९॥ चौ॰॥ गया मांहि अतपव व दज महां॥ अर्जुन क
ह्यो जांउ चलन हां॥ अबै वरकी गेर सिधायो॥ नमकि न विजै न हां

बलआयो ॥ बहपरचदवैठोवलवाना ॥ पवनसिमरनकीना
भगवाना ॥ आग्रलश्रृंङ्गनिसावीतीजव ॥ उघपेउनरेहासहोज
नव ॥ गहेहेप्रजंकलिनअ्रग्रदभुत ॥ जगमगानक्कवस्रुलिप्रलापत्र
म ॥ किधेविछावननश्रुलिलंदरक्कव ॥ विपसिवरंहविविधआप
सव ॥ ५५ ॥ दो ॥ हरा ॥ नारदगनसनकादिविधनुरेगुणभैलोग ॥ नि
रखविजेग्रचरनभयोकोंनककवमोसंजोग ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ पारषदह
देविचारनलाना ॥ जोप्रलोगमहिगुणप्रधाना ॥ मेसभवदकेन
लेविराजन ॥ पुनयहहैप्रजंककछवछाजन ॥ रकपरवैठेहिगेवं
दलाला ॥ पुनहसरोप्रजंकविसाला ॥ तिहपरवैठेकोरहश्रव
सर ॥ भैसोकोवैठेहरिसमसर ॥ करनविचारविजेतिहकाला ॥
शाइगपतिहछिनहिगुपाला ॥ चहवैठेप्रभुइकप्रजंकपर ॥ प्र
फुलनआननहिपहर्षनहर ॥ ५९ ॥ दो ॥ हरा ॥ सभलागेश्रीपतिचरन
हरशिवब्रमपवनसाथि ॥ तीनलोककोगुणसवनारदविषसन
कादि ॥ ६० ॥ चौपई ॥ पुनविचारजियकरनविजयनव ॥ यहहस
रोप्रजंकमहांछव ॥ कोवैठेगाघहप्रजंकपर ॥ भैसाप्रवरनके
समानहर ॥ आईहुपहलतानिहकाला ॥ लागीप्राइचरननंदला
ला ॥ जवप्रातानाकीनीश्रीगिरधर ॥ वैठहोपरीयहप्रजंकपर ॥ वै
ठीइपहलतानिहअवसर ॥ सोहरराजनलसभैभमपर ॥ मान
मानकहिउवेसकलहर ॥ कीनासकलप्रणामसुहिनउर ॥ ६१

मे॰ श्रु॰ दोहा॥ अस्तुतन लागे करन सभ शिव बिरंचि इंद्रादि॥ रूपषारह
भा॰ हो तुम हि कहहु सभ एकनकार॥२१॥ चौपई॥ लषीन जाइ तुम रा
४११ म माला॥ तुम भगवती जगत विख्याता॥ जो नर भजहि तुम्है कर
घरा॥ मे ऊकर रघुमन मं दग बाता॥ मथ पितु न पनल मम हिहो ई॥ न
घ पितु मगन लखैन कोई॥ तुम अलिमनि नरहह न सभ नवें॥ कव
दुन हरन ध्यान हरिमन नवें॥ हरि बिन अवरन कोइ तुम्हारा॥ लोग
कहह न तुम पर्ग च भनारा॥ सम सरूप तुम्हारा जननी॥ तुम सीय हि
माग्र सुनि बरनी॥ २२॥ दोहा॥ पारघहत बिसमै पयो मन धम-
हिपो विसार॥ ब्रह्मादिक अस्तुत करहि ते न सार षीवनार॥ २४॥
चौपई॥ वि धस्तिवइं इम्रनं दनमन सो॥ बचन कहत तुम पएग
वनसों॥ तुम हहरि पर कोभार उतारा॥ भगतन कोतुम हि पोअ-
पारा॥ लोक तुरहहत सकल उतारो॥ धन धयुअपने धाम सिधा
रो॥ लोहम लोक सकल तुम पावहि॥ तुम बिन इक छिन कलप
बिताबहि॥ नव कहि हरि बंव हुं बितु धन घन॥ तुन ह सकल ब्र
ह्मादिक हरषन॥ महीभार तुहि सकल उतारा॥ एक रहत नकोर
बपरवारा॥ २५॥ दोहा॥ मे कौरव पर मम है मन बहपो अहंका
र॥ हम रे भगतन दुषा वले तिन कोंकरों संहार॥२६॥ चौपई॥ पुहकरा
वोंगालिह पांही॥ कहहि गेसभ आप समां ही॥ मंद हि गे कुरषेत मा
हरन॥ नासक रहि गे सेनाअन गन॥ मतनकहों हि छोह लीअ्रका रा॥

818

उतरे सकल महीको भारा॥ इंद्र पदस्थ तानव वचन उचारे॥ कहो नपा-
रथ प्रभु हमारे॥ करिहैं कौरव युद्ध परस्पर॥ होमहि जी तैं कहो कवन हर
व वचन कहे प्रभु सकार कमल पति॥ तेजीत हि गिले उद्धव वचन तब॥२५॥ सो॰॥
जिन कों तुम नहि उगस को करत हि जानन ग्रपार॥ तेजीत हि गे हरि क
ष्टो मन वच क्रम जिय धार॥२६॥ चौपई॥ तहां द्रोपदी वचन उचारा॥ हम
तो उगस सकल संसारा॥ एक जुधिष्टिर उगन सको पुहि॥ जिन परतम
दी करुणा अलि भ्रहि॥ जो ग्रहि जाउ धर्म के लाना॥ पांचो चरन न गहि
संधाना॥ सामो तन न षो ह्रस सिंगारा॥ हाउ भाउ हरि षरा उपारा॥ वचन
न न कातु मन चरन न पर॥ श्रवन न न चित न वचन हि षै ध्यान हर॥ हम जुधि
ष्टल कुल हार रही सब॥ उगन हि सको जुधिष्टिर कों प्रभु॥२७॥ सो॰॥
सकल क ष्टो तन द्रोपदी जो उगस को न न लो हि॥ जीते गारव धर्म सुत तम
मान वच मोहि॥२८॥ चौपई॥ तन द्रोपदी अनंद न भई॥ उपमो तव षिला
इ रग ई॥ वहुर कमल मुख वचन उचारे॥ पांडव तन हैं भगत हमारे॥ ह
म कों सदा विरह की लाजा॥ सिद्ध करों भगतन के काजा॥ यही मंत्र हरि
उहराघो मन॥ नास करों कौरव कुल मुनगन॥ पंचीर हरि हर द्रोपदि
सिर पर॥ करी पुकार आइलि हम्र वसर॥ जिह ह्वै रन को मन की चोर ह
र॥ तहां प्रभु कथो है दिये तन न कर॥२९॥ सो॰॥ महां गौर संग्राम की मंत्र की
वनें रलाल॥ तन न मोहि जिय उषब चो तन है है वस काल॥३०॥ चौ॰
पई॥ तब द्रोपदी कह्यो गिरधर सन॥ सांच कहत है यह त्रिभुवन पत॥ वि

जै.अ.
भा.
८१२

नग्रपरापजीपनहिमारहू॥ रछ्याकारउनकाहुषहारहू॥ पछुद्रोपदी-
कियोहसेहर॥ राषलेहुगाषगरछ्याकर॥ चक्रमहिमरकहिरहगिरा
वों॥ ताकेपीववहरगहिल्यावों॥ गहांपरेषगकेसुतभपर॥ उहांपहिरा
धोंतिहृदयपर॥ तिनपंछिनकीरछ्याहोई॥ इनकोंमारसकेनहिकोई॥
७२॥ सो॰॥ पहवचसुनकेउठचलेशिवविरंचसनकार॥ आपोआपने
ग्रहचलेविसुपनषुतईहार॥ ७४॥ चौपई॥ नित्तनितनआश्रमआपनभ
प॥ पारथमननसंभ्रमभिरगप॥ रथचहरपअर्जुनगनउरआपो॥ धर्मना
मकेपगलपटायो॥ न्टपकोंनाम्योंकुलसमाना॥ दुपदसुताकोंदेवी
माना॥ सहाअलिमद्रौपदीनारा॥ परसकियोनहिपांचभतारा॥ पार
थवचनकहेसुवतीवन॥ हमनहिंजानसकेंतुमरीगन॥ रछ्याक
रीषगनकीजैसें॥ हमरीरछ्याकीजैजैसें॥ ७५॥ सो॰॥ श्रवैवरकीजै
तुमसोंषगलिपउवाद॥ मोंहमरीरछ्याकरहुअपनीकरुनाधार॥ ७
६॥ चौपई॥ बोलीदुपदसुतावरनारी॥ रछकतुमरेगिरवरधारी॥ अ
वरहसरजुधिष्ठिरराजा॥ ताकेंधर्मसुफलसभकाजा॥ नवपारथम
नमांहिविचारा॥ रछककेहेहमरेपरवारा॥ दुपदसुताअरुन्टपजुधि
ष्ठिर॥ मनवचक्रमजिनवसकीनेहर॥ तैसुनभाषतजननमेंमेंप्रन॥ ले
महस्त्रावाप्रथमहीपन॥ रछ्याकरीद्रौपदीजैसें॥ तुमसोंकहीअल
पसुतजैसें॥ ७७॥ सो॰॥ सर्वकणासुनहोरूपनकहिजैसुनसभमसा
न॥ अर्जुनकामनकारचढिकियोजुधिष्ठिरताज॥ ७८॥ चौपई॥ धमधा

नकीनेमैकाजा॥ताकोजीमनरूपनरहरिमचारा॥पुनपारथसुषवच
नउचारे॥जीतेनरूपनप्रतापलसारे॥हरिसुरुदुपदहनाऽमनीको॥स
भरूपजीमनहनसतुकरीनो॥तुमनरूपधर्मधर्मकारूपा॥तुमतुमपाते
सनमसुरूपा॥दुपदहनाश्रुरूतुमप्रसारकरा॥जीतरिपेमोकोंसम
रूपहरू॥सुकहिधर्मकारनकरहोकत॥तुमहिजीतहीवेरूपजीप
त॥४९॥दो॰॥एकतोहियहहैपहीवसकीनेवंरलाल॥तुमहीसमा
नैंसकलजीवेंहैंभूपाल॥५०॥चौपाई॥जिनरूपपदहवोध्योहैवाना॥ते
सभसरसकलवरराजा॥सोहमजीतसकेनहिभूपत॥तुमकहता
वेंजीतेसुपित॥दुपदहनाश्रुहधर्मसुधिष्ठिर॥रछककहमजान्योरह
स्रवसर॥तुमंहीवसकीनोभगवाना॥कहहहमरीमनलछकमाना
तुमराहपवांध्योहैरूपजिन॥तवइश्रवनश्रवनामकहेंजिन॥प्रथ
मेवामनीलधुजकेहत॥गहिवांध्योतेरंगपहश्रेरधुत॥५१॥दो॰॥ता
कोमासोकर्नहतकहतासेंभगवान॥पुनपावकसेंग्रामहिबल
श्रापोबलवान॥५२॥चौपाई॥लागतश्रनलतमानतनीलधुज॥महाबली
स्ताश्रजानधुज॥कीनीसुषतेंश्रगनप्रकासा॥कीनीसेनासकलवि
नासा॥तहांकरीरछ्यानंदलाला॥पावककोंजीमोततकाला॥वहुरहं
सधुजश्रनवरराजा॥बलकरलिनश्ररकापोवाजा॥सरथदहपजात
नवाकेवर॥महाक्रूरहतवंदभगतनहर॥तिनसंग्रामकियोघनपा
री॥नासकरीवहुचमहमारी॥५३॥दो॰॥कर्नसुश्रहसुसुवसोंसुरका

गु. ग्रं. सोवहइवार ॥ धन्यकर्ये सुनराजजी कीनोजुद्दगुपार ॥ ५८ ॥ चौ ॥ ई ॥ क
भा. रननाननहांकिषोरनसरसोंछाइनकिषोधंगगन ॥ पिसुरिणवा
५१३ नकधोंहिडनाग ॥ खडिधर्मरणक्कवद्दुनहारा ॥ सिहजलमंइनथत
वलजोधा ॥ मनमेंक्कवद्दनजोनहिक्रोधा ॥ क्रुलभगनमधावनथदक
रमी ॥ गोत्राह्मणहितमहाहधरमी ॥ हरषत्सुधमानानहंसधज ॥
महावलीसरेगुणानधुज ॥ नजनखानेहेकुंठसिधाए ॥ तिनकेसिरसि
वइरपहिराए ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ महाझुजसतिनकाभयोहतेभगननंद\
लाल ॥ तिनकेमलकशिवकिधेमेरुसुंदरकीमाल ॥ ५६ ॥ चौ ॥ ई ॥ तिन
का विनाहंसधुजराजा ॥ साएहैंतिहजनसमाजा ॥ बडइरमोरधजन्न
परणधीरा ॥ हरिहिनदीनाथरईमरीरा ॥ क्रुलभगनविदेहयधुजाकी
उपमाकहिनसकोंसुखलाकी ॥ तिहनपछननानरधुजनामा ॥ विवि
धप्रकारकियोसंग्रामा ॥ महापराक्रमसमरप्रधाना ॥ साकावलनहिजा
नवखाना ॥ ऐसेमहावलीजीतेसव ॥ लमरीकरीसहाइक्रुलनव ॥ ५७ ॥
दोहरा ॥ ववनकहेंपुनविसैप्रलसुहितधर्मकेमान ॥ नपलवसुवाइ
मवलीताकीवर्नउवान ॥ ५८ ॥ चौ ॥ ई ॥ कैसेलमरासीसडनारा ॥ पुनके
सैननउपरधारा ॥ तिसैकहेंधर्मनहनलीमे ॥ होसवसुवाइननहिहो
मे ॥ पुरकोंआवहारसरीरीनो ॥ सुवतिनीलधनपहक्रुलकीनो ॥ नव
हमलालनीलधुजमारा ॥ पुनसवसेनकरीसंघारा ॥ नपननीलधु
जआइमिलोमव ॥ ज्वालाग्रहलनरूवलीनव ॥ ज्वालानामनीला\

धन कीलिय ॥ अपने आनन ते प्रकार लिय ॥ ५४ ॥ दो० ॥ ज्वाला करी
प्रकार बहु आनन आगे जाइ ॥ मिल्यो नील धुज बिजै को हमरा लाल न मरा
इ ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ आनन बचन कहे ज्वाला धन ॥ हमरा सुतन अर्जुन कीनो ह
ते ॥ पारथ महासूर बलवाना ॥ हमरा बलन हिमाहि समाना ॥ पुन ज्वा
लालिय क्रोधन भई ॥ तब ही चल गंगा पै गई ॥ गंगा कों यह बचन बिता
रा ॥ हमरा सुतन अर्जुन बल मारा ॥ तुम सुतन भीषम महा प्रबीनो ॥ पग त
म सुतन का बैर न लीनो ॥ क्रोधन भई सरसरी जब ही ॥ मो कौं श्राप दीन
यह तब ही ॥ ५६ ॥ दो० ॥ जिन हमरा सुतन हतन कियो रन महि छल जिय
धार ॥ ता को सिर सुतन के हुई दीनो श्राप अपार ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ श्राप बचन
श्रवन कर बेहिन ॥ यह बिचार उपजो हमरे चित ॥ मैं सुतन कों बहु बिधि
प्रकारा ॥ बिन रक्षन कीनो रखवारा ॥ हमरे सुतन महि होवन को ई ॥ होन
हार जो है है सो ई ॥ तब ही बन न अश्व भकी रीता ॥ समै बिना सब हर बि
परीता ॥ सम श्राप गंगा को कीनो ॥ हमरा सीस काट सुत लीनो ॥ बहु
र बभ्रुवाहन की माता ॥ मणि किय अगम न म ता वों गाता ॥ ५८ ॥ दो० ॥ ब
भ्रुवाहन गयो मणि कों लेन पयाल ॥ नागन सों संग्राम कर मणि
ल्यायो तन काल ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ ल्यायो बेग बभ्रुवाहन मणि ॥ हर रथ तन पा
रथ भयो अरि रण ॥ पुन नागन तुरा इ हमरा सिर ॥ राख्यो लै सत पुर हरी व
त फिर ॥ पुन बालक सागर महि गयो ॥ तरसां धन क्रोधन जिय भयो ॥
महा हीन भो बरुणाल पत तब ॥ दीने बेग हिया इ नाग सब ॥ तहां बभ्रुवा

ਸ੍ਰੀ ਗ੍ਰੰ॰ ਤਿਨ ਬਲ ਕੀਨਾ ॥ ਸਰਬ ਸਿੰਗਾਰ ਸੀਸ ਪਰ ਲੀਨਾ ॥ ਜੋ ਜੋ ਆਨ ਤ੍ਰਿ-
ਭਾ॰ ਮਾਰੇ ਤਿਨ ਪਰ ॥ ਆਗਿਆ ਦਿਯਤ ਪ੍ਰਭ ਜਨ ਕਹਨਾ ਸੋਂ ਹਿਤ ॥੯੫॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਬਹੁਰ
੫੨੮ ਜਿਵਾਈ ਤਿਨ ਸਭ ਕੀਨ ਪਰਾਕ੍ਰਮ ਬਾਲ ॥ ਕਰਨ ਕਰਾਵਨਹਾਰ ਸਭ
ਦਇਆ ਕਰਨ ਪ੍ਰਭ ਧੁਨਿ ਨੰਦਲਾਲ ॥੯੬॥ ਚੌਪਈ ॥ ਬਹੁਰੋ ਚੰਦ੍ਰਹਾਸ ਭੂਪਨਵਰ ॥
ਨਿਹਕਾਮੀ ਨਾਮ ਮਯ ਸੇਵਕ ਹਰਿ ॥ ਬਾਲ ਪ੍ਰਜੈ ਤਿਨ ਸੇਵ ਹਰਿ ਕੀਨੀ ॥ ਪ੍ਰ-
ਜਾਤਾ ਹਿ ਮਾਨ ਹਰਿ ਲੀਨੀ ॥ ਜਾਕੇ ਰਛਕ ਨਿਤ ਨੰਦਲਾਲਾ ॥ ਸਿਮਰਤ
ਕਮਲ ਨਿਗਮ ਕੀ ਚਾਲਾ ॥ ਰਾਜ ਲਿਯੋ ਹਮ ਕੋ ਰਜ ਨਨ ਕਰ ॥ ਤਿਨ ਕੋ ਪ੍ਰਜਾ
ਦਿਯੋ ਪਾਂਡਵਨ ਪਰ ॥ ਪ੍ਰਜਾ ਵੇਨ ਨੀ ਕਰੀ ਅਪਾਰਾ ॥ ਜਬ ਹਰਿ ਭਗਤ ਨਜ਼ੀਰ ਸਿਰ-
ਧਾਰਾ ॥ ਪ੍ਰਥਮ ਹਤਾ ਕਾ ਧਰਮ ਪ੍ਰਜਾ ਤਲਿ ਦੇਹ ਚਾਲ ਬਰ ਭਜਨ ਰਮਾਪਤਿ ॥੯-
੭॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਚੰਦ੍ਰਹਾਸ ਪ੍ਰਥਮੇ ਪ੍ਰਜਾ ਸਿਮਰਾਯੋ ਨੰਦਲਾਲ ॥ ਪ੍ਰਜਾ ਵੇਨ ਤੀ ਬਹੁ
ਕਰੀ ਪਾਛੇ ਭਯੋ ਧ੍ਰਬਾਲ ॥੯੮॥ ਚੌਪਈ ॥ ਐਸੇ ਹਰਿ ਭਗਤਨ ਜਗ ਪਰ ਸਨ ॥ ਤਪ
ਰਹਿ ਲੀਨ ਲੋਕ ਜਿਹ ਦਰਸਨ ॥ ਤੇ ਆਪਨ ਮੇਰੇ ਪਗ ਪਰਸਨ ॥ ਤਿਲੋਧਾਰ
ਕੀਜੈ ਨਾ ਦਰਸਨ ॥ ਕਰਨ ਵੰਨ ਕਮਲ ਸਵਿਧਾਨਾ ॥ ਧਨ ਕਰਨ ਤਿਨ ਸ੍ਰੀ ਭਗ-
ਵਾਨਾ ॥ ਸਫਲ ਭਯੋ ਮਨ ਪ੍ਰਭ ਯੋਨ ਤ੍ਯਾਰਾ ॥ ਸਮਸਮਾਨ ਜਿਯ ਬਚਨ ਹਮਾਰਾ ॥
ਤਿਨ ਪਾਰਥ ਸੁਖ ਬਚਨ ਉਚਾਰੇ ॥ ਰਛਕ ਹੋ ਤੁਮ ਤੀਨ ਹਮਾਰੇ ॥੯੯॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਪ
ਰਮਾਪਨ ਮੁਰ ਧਰਮ ਤਨ ਤੁ ਪਰ ਸੁਨਤਾ ਪਰਵੀਨ ॥ ਪ੍ਰਨਪਾਲਾ ਤਿਨ ਧਨ ਕ-
ਰਤ ਰਛਕ ਹਮਰੇ ਤੀਨ ॥੧੦੦॥ ਚੌਪਈ ॥ ਯਹ ਬਚ ਕਹਤ ਤਿਜੈ ਧਰਮ ਜ੍ਰਤਲਿ ॥
ਤਿਨ ਆਪਨ ਬਸ ਕਲ ਮਹੀਪਤ ॥ ਸਭ ਨ ਪ੍ਰਣਾਮ ਯੁਧਿਸ਼ਟਰ ਕੀਨਾ ॥ ਧ-
ਰਮ ਨਾਮ ਆਦਰ ਬਹੁ ਦੀਨਾ ॥ ਪ੍ਰਭੁ ਮਨ ਤਿਨ ਕਾਹਿ ਸਮੇਤਾ ॥ ਮੇਘ ਬਰਨ ਬਹੁ

रें सुष केला ॥ जो यह ना सतन पछतर यमसमसंग ॥ पुनश्रुत लाल सरयबु
हित श्रंग ॥ सालक जाह रंवन रूप तनील धुज ॥ पावक वडरोंतर पत हंसयु
त ॥ कुलवर रमधुक वंदे भानप्रुत ॥ लपर वयजु वाहन श्रावंर गुन ॥ ५ ॥ दो
हा ॥ पुनवलामरधज महावल भूपनत्रु रेयपार ॥ श्राइ युधिष्ठिरकोंस
भनरचसों किये जु हार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ लागन कही धर्म जो रेकर ॥ तुमश्रा
प हम श्रोर रूपाकर ॥ परन भाग हमारे भए ॥ तुमनादरसमपरमसुषगए
ए ॥ तुमसव श्रुधीपतनवलवाना ॥ श्राप कहुणासों भगवाना ॥ हमराज
त कुलारघवीजा ॥ करुणाकरतुमहरसतवरीजा ॥ जे नेपटे नरकथा
नु कोई ॥ रछुकलाकोथीपतहोई ॥ हरिकोंसिमरेहियधरभाउ ॥ पस्तन
श्राव साव वों ध्याउ ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इति श्री भा स्वपर्वलिष्य स्कंधे दसमे पंचाध्याय ५ ॥ क
थहन कनपरनमथोस्वरूपवध्याय समान ६९ ॥ जैमनरुवाच ॥ चौपई ॥ जैमुन
कहै सुनहु भूपाला ॥ हुनाश्रयश्च करनकोवाला ॥ साजवलीनवसात
सिंगारा ॥ पहश्रुभरनहूं विविधप्रकारा ॥ देवकिश्रुतकुंतीश्रुतजह
मत ॥ सतभामाहुकमनीजामवत ॥ सत्राभिचाश्रुतहेराप्रन ॥ कालिं
दी लछमनाश्रमहागुन ॥ श्राठों पटरानीगिरधारी ॥ सोलांसहसएक
सौ नारी ॥ वहूरसभरातुपरह्यसागुन ॥ वहुरोंसेनाचित्रांगनभन ॥
५ ॥ दोहा ॥ वीरचयसकीहतालनश्रुहउमरोंविनार ॥ रानीश्रुवरप्रभा
वती जो वना सकीनार ॥ ५ ॥ चौपई ॥ पुनउलूषतानारिश्रुवरसभ
मंगलगावहिंसुहितश्रंगसभ ॥ तीनलोककेजोरिषिराजा ॥ ज्यूरे

825

ने.प्र आइसभजनतससमाजा॥जेतकजुवतीहैजगमांही॥आइसुरीमनउ
भा. दिननहांही॥मुक्तुपारबनिसुरुउत्यानी॥सभसुरनारिसहङ्नरंग
८१५ ली॥रंभाआदिअपसरानाचत॥सुषपावतअपनेमनबांछत॥आई
सकलरिषनकीबाला॥गावतमंगलगीतबिसाला॥३॥दोहरा॥मी
नलोककीजुवतिजनचारबरनसबनार॥मषसालाप्रापतभई
अतिअनंदजियधार॥४॥चौपई॥कुपनकोटजादवकीनारी॥श्री
कस्नचलीहितधारी॥बिजयानामनारिसहदेवा॥हरषनचली
करनहरषसेवा॥उनकहिनिस्रवतीवरबामा॥नकुलनारिकोदै
पहनामा॥सभलियसतअधोडससिंगारा॥गावतहैंसभमंगलचारा॥
कंचनथाललियेंकरमांही॥दीपकजोतउघधरेतहांही॥चंदनमृग
मदगंधअपारा॥कुंकुमगोरोचनउनसारा॥५॥दोहरा॥दीपकलेच
लिजुवतिसभहयमजनचितचाइ॥मषसालाप्रापतभईजहांजुधि
ष्टिरराइ॥६॥चौपई॥कीनततजोजनपरमषसाला॥कनकषंभमणि
षचितबिसाला॥पावककुंडठेढजोजनपर॥निमहोमनहांकर
तजुधिष्टिर॥सोभतजनुनरकंकनगाहासा॥अंचरणांठहैपरीसापा॥
अगनकुंडपरहयमसविधाना॥ताहाआतसोंभगवाना॥आपतम
ईतिहांसभनारी॥धूपदीपआरतीउनारी॥चरचनअष्टलनादसंध
रा॥सभसुगंधमृगमदकरभरा॥७॥दोहरा॥सभलियलागाअग्रप
गइजनवेदविधान॥हाथफेरपरदछनादेतहियेंहितमान॥८॥चौ

पई॥ हाथजोरविनतीसभकरहीं॥ मांगनफलआसातजिधरहीं
न्रुगकरजोरकहतभईबाला॥ सुनहुतुरंगमहोहुदिपाला॥ पर
उनहींपावकमुषजोलग॥ सवरहुधारकरोनहिंमौलग॥ वहुरौंल
षुपुरीषनहिंकीजै॥ मषधर्मजपरनकरहीजै॥ प्रजाकरहुवली
सकलजनव॥ लागीआइचरनहरिकेसव॥ ९ दोहा॥ करतिजाइस
भभीमसौंहासीवचनउचार॥ चलनभईसभभवनकौंहरिआसातजिघ
धार॥ १०॥ चौपई॥ न्रुवतिनकौंपुनवचनकहैहहरि॥ भीमसेनठाढ़ा
द्वारेपर॥ हाथसरवोमिलसभनहांनारी॥ लागीदेनपवनसुतगारी
भीमविचारदेषअपनेमन॥ तीनलोककीमिलीन्रुवतिजन॥ जेतक
सुरिषनरपकीवाला॥ सभआईधर्मजमषसाला॥ वाहीलमहिराक
सीवामा॥ अतिविकरालदेहदुषसामा॥ दीरघदसनउदरअतिभारी
सामअधरअस्थूलविकारी॥ ११ दोहा॥ कुचदीरघअरुहहरुनमहा
भयानकरूप॥ जाकातुषसमकंदरानैनअंधकेकूप॥ १२ चौपई॥ अ
वनहिरदसमउदरसमनासा॥ दीरघदेहसमानअकासा॥ जंघेजाइ
देक्षसमजाकी॥ दीरघभुजाकुटिलकुवताकी॥ अतिदुरगंधभसो
मान्वोतन॥ ववनभयानकमहांनिठुरमन॥ मातावमनामजिनरा
षो॥ पुषमैंप्रगटचाहजिनभाषो॥ नितप्रतिहैमणकरतअहारा
आपसारषीआहीहारा॥ एकअवरकौंवरजतनारी॥ लजतभीमदे
हिजिनगारी॥ १३ दोहा॥ पुनवोलीइकअवरतियउनकौंमहकरा

827

मं॰ग्रं॰ र॥ भीमसेन हमरा वचन सुनहु श्रवन सुषपार॥ ५॥ चौपई॥ पहस
भा॰ भ सम पवन के नामा॥ हमरी सुनहु सम की बाता॥ ऐसी निप बाही
५१९ कि हकामा॥ देष न तुम कों भई न लाजा॥ जो तुम थाही जान बूझ
निप॥ ऐसी सुंदर नार सुरति न हिय॥ हम सों साज चले सिंगारा॥ गा
वे गीत सु मंगलचारा॥ जो ऐसी निप कों न न तुम मद र॥ तो कल न लज
न है तन ह कोर र॥ निप के वच सुन हम गिरधारी॥ नव हि भीम हिय
बात विचारी॥ ५॥ दोहा॥ हसी न मिल रन कों प को सीनी सी व गुपाल।
हम पुनकुल हमाउ श्रव वचन कहे नन काल॥ ९॥ चौपई॥ हम सों हा
सकसो न रलाला॥ हहतुम कों न हि जोग गुपाला॥ कृपा धार सुंदर रव
रनारी। तुमरी नीसम कों गिरधारी॥ देषहु पहपुहत बन की बामा॥ सम
वरनी तन कवं अभिरामा॥ छोर सम हम एक सौ अगन॥ अनुनाद का
ने श्रवन सुन॥ नारिस रूप बाह तुम लीनी॥ हम कों नार राक सी दीनी
दई अवर कों सुंदर दारा॥ निठुर गयो हरि हम री बारा॥ ५॥ दोहा॥ नद
कुल की नारी सकल पठी सी घरे तो हि॥ हसी कर न के निमित हरि गा
रि दिवा वढ को हि॥ ८॥ चौपई॥ अवरन कों सुंदर निप दीनी॥ हम पर रह
रि करुणा पह कीनी॥ दीनी मो हि राकसी नारी॥ रिदे न त्रास कियो गिर
धारी॥ त्राव न हो अब नहीं मन माला॥ भक्षन करे सकल पह बाला॥ तुम
री तुबन निकैरे सब नासा॥ सभ कों कैरपक हीया सा॥ कोर काम की पा
सन तुम्हारी॥ सो कैसें कर भि रे मुरारी॥ अब सभ काम न भई विनासा॥

नवंहीतुमकरहो ब्रजवासा ॥ ४९ ॥ दोहरा ॥ नंदबाबा धेनु चराइ गे गोप
सबनंदकेसाथ ॥ बनबनगोलनफिरइगे नंदलाल हरिनाथ ॥ ५० ॥ चौ
पई ॥ राजकाजकरहोगेमाग ॥ ब्रजबनिनंदसों पवत्र अनुराग ॥ वासक
सोगेगोकलमांही ॥ नंदपदतुमविसरइगेनाही ॥ नंदभवनकरहो
गेबासा ॥ मिटेनंदकबंधुपिपासा ॥ होवइगे श्रेसपरमपाला ॥ जैसें
श्रागेहुतेगुपाला ॥ बालबेसक्रीडातुमकीनी ॥ ब्रजबलमहइनंदहना
हीनी ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ हइहसमैपावोनंहीबालपनेकोखेल ॥ कंसुकिहर
नंदनिपननकीकरनकामरसकेल ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ बालपनेलेनेदधरा
मा ॥ ब्रजबनकरसकोसनहोकाना ॥ नंदपरतिपसोंहासबिलासा ॥ ब्र
जबहहेषककरहिगीत्रासा ॥ हइब्रजबस्याहेषलेप्यारी ॥ सभइरपहि
गीहमकीनारी ॥ वइरहेवकीमानलप्यारी ॥ षहरसभोजनदेनसुरारी
साउन्नलाइविइंवाकोंजब ॥ भइनकरैंदेवकीकोंग्रब ॥ नंदबलमइष
पावइविनमाता ॥ मानइसमहमारीवाता ॥ ५३ ॥ दोहरा ॥ कलिहिवि
इंवानेप्रपप्रपनीप्रुबलिमरार ॥ इकलिपदीजेमोहिकोंसगरीदेउकु
मार ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ भीमकहैसनकंसग्रवनपर ॥ इमनीसुंदरनिपन
मरेहर ॥ इनमहएकदीजियेमोकों ॥ करोंग्रसीसरैनदिनतोकों ॥ हइस
हेसपरेकुमलिहग्रवसर ॥ दईभीमकोंग्रानागिरधर ॥ इनमहिली
जैभीमएकलिय ॥ जैसीभावतहैतुमरेजिय ॥ नंदहिगदालेउकोभी
मकर ॥ नंदहीपहग्रापाहीलीहर ॥ इरपतभागचलीपहवाला ॥ सा

म॰ ग्र॰ योद्धेर भीम नन काला ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ भीम कहै सब नहो जु बलियाता क
भा॰ री ग्रपाल ॥ मो कौं दीनी दक विष कह नाक रनंद लाल ॥ ४५ ॥ चौपई ॥ ए
५५२ क निवास करइहम रे वर ॥ मान लेइ गया लकी नी हर ॥ ना नर स्याउ विरं
या को ग्रव ॥ नासकरैं गी इक छिन मो सव ॥ लघ मसब व वहन रिपा वह
सुफ कौं ॥ हित लों वचन कहत नहो लक कौं ॥ जो निष पावे हह देह मारे ॥ ले
मा वै लिहय ग्रपने हारे ॥ हरपौ सकल भीम ते वाना ॥ कह्यो सुकार निव
न ठन सामा ॥ इह वला इनेहम हि कुसवइ ॥ प्रेम न सों कनिहा सकरा
वइ ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ हम कौं ता वा छेरके भीम से न बल वान ॥ हरषन हैं ह
म सकल विष मुकलावइ भगवान ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ भीम सेन हसि कलमतु
लायो ॥ सम जु बलीनन कों सुक नायो ॥ हित निपे दिन पूजा हय भई ॥ नि
ष सेवा कर निज गृह गई ॥ दिन तीस राभयो मन हरषत ॥ उत म किये
जुधिष्ठिर नर षत ॥ ग्रानाकीनी पीन इराजा ॥ भयो ग्रवंद व ना वइ वा मा
न व वा ने प व नरा ग्रपारा ॥ ग्रगनन ना जा विविध प्रकारा ॥ स्वर्ग प पाल
वनंइ वना वन ॥ करन कलोल ग्रपन मन भावन ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ जुरे जन
ताला विवे रहइ रिस के राजा ना च ॥ लागे वाजन सभन के इंइ भभेर विसा
न ॥ ५० ॥ चौपई ॥ जहां जहां होत नतन को काजा ॥ तह तह ताते है नृपराजा ॥
वक रा लष रिष महां प्रवीनो ॥ सकल रिषन के ग्रागे कीनो ॥ हरषत च
ले कुंरकी ग्रोरा ॥ ताटो नहां नतन को रौरा ॥ बारबार न को प्रनाम करइ
र ॥ सभ कौं भोजन किया जुधिष्ठिर ॥ धर्म न किया प्रनाम रिषन कों

सुगकरमोरसुबंदनमनसों॥ बकदालपबचकहेकुसुमबन॥ प्रथम
प्रणामकियोमनहर्षन॥ २१॥ दोहा॥ प्रथमकरावडुअघकोसुखगंध
अस्नान॥ सिंचइसकलसुगंधबरवेदबचनपरमान॥ २१॥ चौ० ६॥ पु
नरिषबचनकहेतिहअवसर॥ त्यावडुप्रथमनीरगंगाधर॥ कंचनक
लसनारिसिरधरहीं॥ गावतजाहिगंगजलभरहीं॥ सीसउताररहीं\
लैआवहि॥ ताहीसोंहयमननकरावहि॥ बंदनसगामदसुगरसुपारा
धूपकरनवरविविधप्रकारा॥ कुंकुमगोरोचनउनसारा॥ सकलसु
गंधसुंदननहिपारा॥ मर्दनकियोसुगंधनुरंगा॥ नषसिषलेपनकिय
संगसुंगा॥ २२॥ दोहा॥ रिषकोदीपदवेदकीसुक्रुतमारहिआइ॥ करीआ
पिनासुसबकोंप्रभुहितहेतलगाइ॥ २४॥ चौ० ६॥ देप्रदक्षनाहयपगला\
गे॥ परफुल्लमननसुतुरागे॥ धर्मेसहयप्रतिवचनउचारा॥ सफल
गसुक्रकरहुहमारा॥ धरनकरहुहमारीआसा॥ जोरपधुमनकरहि
अपहासा॥ दुपदसुताउनवचनबषाना॥ जनसफलकीनाभगवाना
करुणाकरश्रीपतिपगधारे॥ भएमनोरथसिद्धहमारे॥ दुपदसुताश्रवि
कप्रोजुपिछिय॥ सबबचननमकप्रोमहावर॥ २५॥ दोहा॥ पतकीनपा
केनिमिनवेडाटेसविधान॥ सबकहतनहैबेदबचकरुणाकरभगवा
न॥ २६॥ चौ० ६॥ निहवेवेरकलसकेलासा॥ सुषनेश्रीपतिकियेप्रकासा॥
करननिगमबचकीप्रभपाला॥ डाटेसावधानवेरलाला॥ पहयच\
कहिहहरिकेपगलागा॥ धर्मजकेसंकाभ्रमभागा॥ कुसकहैसनहोम\

मे॰ ग्रं॰ पाला। दीन्हे असुभ कोरन नकाला॥ तापाछे प्रभु दिन नेह लाला। सभा
भा॰ नो रसन चलन न काला॥ गज तुरंक चौफेर फिरावहु। देप्र रह कनाउ
७१९ नले आवहु॥ १४॥ दो॰॥ कमल वचन सुन के करी आता पर्म सुचाल॥
फिर कले हु मीर भ सकल गज तुर मग न न काल॥ १५॥ चौ॰ ई॰॥ बहुरि
सपुरी सगं धफिर का वहु। ता पर उत्तम कुसल म विछावहु॥ असुभ कि
रे गा नगर रच हुं दिस॥ पाछे लाग हिं गे हर रिरि षमिस॥ नगन पारहै
रिषी जगन भय॥ देव हिं गे प्ररह कना धुर सभ॥ दन नगर चौफेर फि
र कमग॥ कुसम विछाइ करी छुवजगमग॥ आता करत भए नेह ला
ला। वजहि वजंत्र सकल भ पाला॥ वजहि निसान अवर पच मरा॥ नभ
पर सबद हरषो भरपुरा॥ १६॥ दो॰॥ सभ के वाजे वाजही ईडु भभेर निसा
न॥ सबद हरषो भरपुर नभ पृथ्वी सकल प्रमान॥ १७॥ चौ॰ ई॰॥ वेद मंत्र
भ मंत्र न की नो॥ अक्रुत डार रवसी कर लीनो॥ पुषच हुं दिस लोग नुरे सभ।
चलो नरंग मह रष मान सुभ॥ पुष मग्रर कुन धर्मन सुर हहरि॥ करी नरं
गम कौं हिय वहि लधरि॥ पीठ वर नपर हरि फेलोकर। चलो नरंग मह
र कनि रधर॥ बाजे इंड भभेर अपारा॥ अग गन वाजे विविध प्रकारा॥ कं
ना हसी पर असु सवारा। गावत गीत सु मंगल चारा॥ ५॥ दो॰॥ १॥ अंबर बां
धो धर्म सुतनु पर सुनाके साथ॥ आगे चलो नरंग निर्ह पाछे श्री जदु
नाथ॥ १८॥ चौ॰ ई॰॥ हरि के पाछे रथ न सुधिष्टिर॥ संग लिये इहीं पर दीवा
रिवर॥ तापाछे आवत सभ राजा॥ प्रभु हित कियें सुरसरि राजा॥ रिष

आवहिं वोधे रतु रंगा ॥ पहहि चतुर्विध वेद प्रसंगा ॥ त्रिपत भयो तु
न हु पक्षु तवानी ॥ वस्त्रो तु रंग महिप रुचमानी ॥ पीके रिषम्रहरूप
ततु हितमन ॥ वले जो हि न रनारि पग नगन ॥ समजु वली भरतार संग
तव ॥ करन्ना ईगंगा मज्जन सव ॥ ७३ ॥ सो० ॥ पहरे वसन कुसुंभ तिन क
न कपाल लिखहाथ ॥ नाम धरी पक चौ तुषी वार परे हि तमाथ ॥ ७४ ॥
चौ० ॥ गावत मन भावत पिल गीता ॥ बरषत कुसुम सुवंरन चीता ॥
हसन करू परकं मा जो ऊ ॥ गावत गीत सुमंगल ले ऊ ॥ इंदु पमेर निका
न वजनजव ॥ घर रहीं धुन ती न लोकन तव ॥ गजपुर के चडूगेर तु रंगा
वस्त्रो सकल भपत रिषसंगा ॥ देप्र दरू ना पुरन तकाला ॥ फिर आयो
तु रंग मध साला ॥ प्रगन कुंड परवा हा आई ॥ धर्मज कों सम देन वधा
ई ॥ ७५ ॥ दो० ॥ स्नान कीऊ धर्मज नहाँ गोरप कंचन चीर ॥ गजतु रंग व
डुकन न कमर हि येन रपत मन धीर ॥ ७६ ॥ चौ० ॥ बहु प्रकार वीने अपवा
सर ॥ धर्मता न पुन दस्त्रो चरन हर ॥ भई प्रभात सुने रन लोगा ॥ करन क
लो लस कल नि हसो गा ॥ हसन पुर सुगंध छिरकावत ॥ निन मग मौ
तन कुसुम विछावत ॥ फिर नसु इ क्षित रिष भपत वर ॥ फुलन पर
पग धरत सु हित डर ॥ नाही निकसन्नु वतिनि जहारा ॥ नव सिषव
वसन साज सिंगारा ॥ विचरत नलहों न पत रिष आवत ॥ तिन पर तिष
सुगंध वर षावत ॥ ७७ ॥ दो० ॥ त्रिप हृष मान तनन पत रिष फिरत
सुरक्षित न होइ ॥ सुकन पुरी भाषहि सकल गजपुर कहैं न कोइ ॥ ७८ ॥

अ॰श्व॰ चौ॰ ८ई॥ एक कलोल करहिं गंगापर॥ एक बाग महिं करहिं केलव
भा॰ र॥ एक फिरहिं देषत हल नपुर॥ एक कथा हरि सुनहिं सुरनउर॥
५९९ एक नतमाला मपरानन॥ एक सुनत नई छंदपुव बानन॥ इक धुन\
वेरसु नतहिं नबाटे॥ एक श्राइ नीरे देषनबाटे॥ एक रिषन सौं गोष्ठ\
करत निन॥ षेलन निनघलिर कघ्रषेद हन॥ इक चौपर षेलहिं राजा
ना॥ एक देइ पेल हिवलवाना॥ ५९॥ दो॰॥ इक कुलहा पनषेलहीं
मलश्रषाटे एक॥ एक हूरकन गेलहीं किये नजाइ विवेक॥ ५०॥ चौ
८ई॥ एक सदा निरषन रसन हर॥ दरलन दलउ नरहन ध्यान धर॥ दो
उ हल मैं भीमसेन पर॥ बाहारह नहार परहिं नकर॥ इनि परहरो\
भोजन के काला॥ लावन सप भुलाइ भूपाला॥ सकल रिषन कौं लेन बु
लाई॥ भीमसेन पह रहल उठाई॥ बहु नरहल है पार पपर नव॥ श्राद
र कर नर हनरानन सप॥ श्रभरन जहां सुनार बनावत॥ तिनकौं ना\
नाभांत बनावत॥ ५१॥ दो॰॥ गां इनके षुरसिंग मुन पष्ठ बनाव नजाहिं
नहीं पालगुन सुरित मन करत उमा रलताहिं॥ ५२॥ चौ॰ ८ई॥ पोवत जहां
मुकत मणि हारा॥ हीरा माल करत निपपारा॥ ग्रन्थ नतहां रहत निम
गना॥ करत शीघ्र ता होहिं नबाना॥ दरजी बसन बनावत जहां॥ सीव
तनी लसुषष पलत नहां॥ भांत भांत की बानक कहई॥ नहां इंदसुत ता
रा रहई॥ सजन नसम श्री सबवि धनाना॥ जहां तहां पारषसविधाना
देत लेत हैं जहां भंडारा॥ तहां विभै सों प्रकट विचारा॥ ५३॥ दो॰॥ नकुल\

834

अवरसहदेवअरुनसोधनमंत्रविचार॥ धर्मराइसहदेवसोंपूछतभव
बहिनुधार॥ ५४॥ चौ॰ ॥ ९ ॥ पूछतभयोधर्मकोनाना॥ कहुसहदेवउचत
कोबाना॥ प्रथमेकरोंअसुकोकाना॥ केप्रथमेपूछोसभराना॥ कहि
सहदेवधर्मसुनलीजे॥ प्रथमेअसुअगनअरुघदीजे॥ पाछेसेवहुसक
लनरेसा॥ सनमानअपहस्तलिउपदेसा॥ पुनपूछीनपकुंतीमाता॥ जन
नीकहहुवचनकुसलाता॥ प्रथमकरोंपूजाहमकाकी॥ हदेविचार
कहहुतुमताकी॥ ५५॥ दो॰॥ ९॥ कुंतीसुत॥ कुंतीवचकहनीधर्मसुन
हुअवनभूपाल॥ प्रथमेपूजाकीजियेहहकनम्रभुवंदलाल॥ ५६॥ चौ
॥ ९॥ सिंवहुप्रथमपलकोंनाना॥ जिहकररहरतहोतसभपाला॥ पूजा
हुवहरकरनकोवंदन॥ पितुभारपतिजिहकिपोषिकंदन॥ ताकीसेव
विविधवहकीजे॥ हमगावचनमानसनलीजे॥ पुनधर्मजतिपवाल
विचारी॥ तुमराववचनसममहतारी॥ रहोतुरेवहदिसकेराजा॥ प
हायलिछसरसिरताजा॥ पहहुषकेनहमागवालक॥ जोपाकोप
जोंतसकालक॥ ५७॥ दो॥ ९॥ होनविचारसभनकोजेनकहेभूपाल
सकलकहेंगेधर्मसुनपूजोअपनोवाल॥ ५८॥ चौ॥ ९॥ पहमातुमत
नहमरावालक॥ पाकोंउचलरहलभूपालक॥ तोषहोतसभराजन
मेसें॥ पूजाउचनकरोंहमनैसें॥ दुपदसुताहैग्रनिहरषतमन॥
नहोदेवकीकुंतीतकमन॥ पुहितसभनकेचरनपषारे॥ चरनोद
कमलकपरधारे॥ प्रभुहितलोघपपोमनलीनो॥ वहुरसुधितहिरदा

नै॰ प्र॰ रघुवीनो ॥ ४८ ॥ दोहरा ॥ पलनाषरपहि आइयो अवरगं धारीपाहि ॥
भा॰ हुपरस्तनाकों संगलेवरन नलागोनाहि ॥ ८० ॥ चौपई ॥ सहाजनकी
४२॰ रहलकरनहरि ॥ विधसंपुरककरनहियहिनधरि ॥ रचनमंडली
मनसालकी ॥ गौरकरन सभमहीपालकी ॥ पावककुंरदेरञ्जे
मनपर ॥ नहांकनकमणिषचनहचरधर ॥ अगनकुंडरचइकोण
विसाला ॥ तापरबंधाषहुरसाला ॥ तिनपरकणकछत्रसुकलाम
णि ॥ जगमगानआभाछनहिनमणि ॥ कुंडचनदिंसषचनसुनव
सों ॥ अरथुनछवभाषनअलिगनकों ॥ ८१ ॥ दोहरा ॥ हुलनपुरकेलो
गसभचावरचरनकीजान ॥ अतिहर्षनहियजनकीरहलकरनति
नरान ॥ ८२ ॥ चौपई ॥ जेईकरनकरजानननेनर ॥ सोहीनीनाकों
लिहअवसर ॥ जेनकहैंगनपुरकीनारा ॥ रहलकरनसभसाज
सिंगारा ॥ लीनवारनिलवसनवनावन ॥ करनसिंगारजोइमन
भावन ॥ रहलकरनसभमंगलगावन ॥ वरषनकुसुमअंबीरउ
गवन ॥ सकलभरेअरगजासुवासा ॥ छिरकनकरनपरसपरहा
सा ॥ भूषनहूहगिरनडरहारा ॥ लेनडगायनहीफिरद्वारा ॥ ८३ ॥ दोह
रा ॥ भूषनलेवाहेभषधर्मतानकेलोग ॥ ताकाहूरपरेधरनअव
रेरहनिहिलोग ॥ ८४ ॥ चौपई ॥ आसाधर्मतानकीअैसें ॥ नाटेलोग
करनविधजैसें ॥ भूषनहूरपरनधरनीपर ॥ ताकोंदेनअवर
निहअवसर ॥ मननिधकरहिसोचञ्जुवनीमन ॥ तांतेंदेनअध

836

षन कों लिन ॥ षल समथी जहां नहां हर ॥ रिषि षन सकल काजपर
नन फुर ॥ धर्म जान बिन कमल चरन सों ॥ निस दिन लाग रहै लिव मन
सों ॥ सेव करै हरि जिय पर भाउ ॥ फुरन उनह म रोज भाउ ॥ ९५ ॥ दोहा ॥
इति श्री भा० रथ पर्वणि श्रु च मेध प्रश्न आन ॥ कवित्त कन द रन भयो प्रभु कन न
न रमा न ॥ ९६ ॥ जैनन उवाच ॥ चौपई ॥ जैसुन कहै सुन नृप भूपन वर ॥ जैसे
सु कुन कियें जुधिष्ठिर ॥ कुसल सहार करन निसदिन लिह ॥ कोउ नवर
नसकन सुकुन लिह ॥ कुसल नाम सुन देव रिषीश्वर ॥ आए सकल सु
जी रहन पीस्वर ॥ आए सुरे आगनि नरिषराजा ॥ धर्मजान के जन समाजा
वालमीक व इगों रिषगालव ॥ अवर उद्दालक रिषि वक दालव ॥ वद
र अंगिरा संभु रिषी सुन ॥ सौरभ रिषि गौतम पवि सालगुन ॥ ॥ दोहा ॥ वि
श्वामित्र बसिष्ठ सुन बदर परासर मान ॥ सिंगी रिषि भृगु रिषी बरबाल
करिषि पहवान ॥ ९ ॥ चौपई ॥ कसइ पार बिलोमस रिषि सुन ॥ मांडेअव
रसु रिषी बसुन गुन ॥ सनक सनंदन रिषी अपारा ॥ बर्न न है अनंत पवि
लारा ॥ रिषर कला षसहस चौरासी ॥ सुरेश्वर अगनन बनवासी ॥ नृ
रे कोर सुभ इभपाला ॥ नृपन जुधिष्ठिर के मषसाला ॥ सभ राजन बच
कहै धर्म बलि ॥ प्रथमे प्रजा करइ रमापति ॥ पुन धर्म अबलि बचन क
है हरि ॥ एन इ ब्यास प्रथम रह अबसरि ॥ १ ॥ दोहा ॥ नृपन जुधिष्ठिर
ब्यास बलि बचन कहै हसमान ॥ जैसी प्रजा नृप कहो जैसी करो प्र
मान ॥ ४ ॥ चौपई ॥ ब्यास कहै सुन हो भूपाला ॥ प्रथमे प्रजा इसी बंदला

गी॰ग्रं॰ ली॥ ऊनपलककरतनाथ्येलोगा॥ सेवहूकुसऊवनतपजोगा॥ सु-
भा॰ नहुव्यासबोलेगिरधारी॥ प्रथमेहजाजोगनहसारी॥ हमरेसीसन
८२१ तकेकाना॥ संसेककुनकरोमुनिराजा॥ यहतोहमरेगृहकीवाना
करोश्रनापथर्मकेनाना॥ जहनहनिरखहिसकलरमाना॥ सकल-
समग्रीपरभगवाना॥ ५ दोहरा॥ जहांसमग्रीजनहकी करनलोगसभ
राज॥ जहांजहांसभनिरखंहीजादेहैं जहराज॥ ५१॥ चौपई॥ लोगकर
नमयकारजजहां॥ सभदेखहिहरिजादेनहां॥ श्रवनहोत्रहिजकर
नजहांही॥ तेसभकहैं कुलहमपांही॥ जहांलोगमिलकरहिविछा
वन॥ नमिलवैठवेहुवउपजावन॥ तेभाषहिहरिवीवहमारे॥ हम-
सेंकवहूंहोतनन्यारे॥ भाषहिवहुररसोईहारा॥ सदाहमारेवीचमु
रारा॥ मिलकरनेवोलहिजनभूपाला॥ देलवहांजादेनंदलाला॥ ५॥ दो
रा॥ जहांसमग्रीपनकोकंचनहरनसुनार॥ तेश्रेसंश्रवलोकहीहर
महीवीचमुरार॥ ६ चौपई॥ सवीसीवहिजहांश्रपारा॥ तेजानहिहरि
होतनन्यारा॥ पाउन्तपकरनेहैं जहो॥ तेजानेजादेहरिनहो॥ वेदमंत्र
धुनजिहश्रस्थाना॥ जहांकुलजादेसविधाना॥ तेजानहिहरिनिकट
हमारे॥ निसदिनहमरेवीचमुरारे॥ जहलिषगावहिमंगलचारा॥
तेजानहिहरिहमहिमंझारा॥ सभकोंहछुपरतहरिपासा॥ सभहिनकी
हरहिहरिश्रासा॥ ५ दोहरा॥ जुवतिनमैंजादेकहैं गावहुमंगलचा
र॥ हांसीनमिलवनावहीदेउनपनकोंगार॥ ५॥ चौपई॥ होमकरनहैंज

838

हांजवतिलछुत॥तेजानहिहरिहमहिवीचनित॥भीमसेनवाहाहा
रेपर॥तिहसोंहासकरननितप्रनहर॥भीमकहैहरिसदाहमारे॥हम
सोंकबहूंहोतनन्यारे॥अर्जुनसोंजाननमनमांही॥हमसोंहरिविछुर
तकबहूंनाही॥नकुलअवरसहदेवकहतयन॥हमसों हरनहोतसाम
यन॥मातदेवकीकुंतीहकमन॥अवरद्रोपदीसकलजुवतिजन॥१॥
दो॰हा॰॥ऐसेसेमनजानहीसदाकुसलहमपांहि॥हमसोंबातेंकरतनित
रकछिनविछुरतनाहि॥२॥चौपई॥गंगापुलिनदिषिनकोवासा
तिनसोंगोछडूकरनविलासा॥एजाननतहरियुगननमाई॥हमहीवी
चसदाचतुराई॥जेतकनहांजुरेभूपाला॥तेजानहिहमसंगगुपाला॥
मोनरपवेलतहैंअषेरहत॥तेजाननतहरिहमहीसोंहित॥यजात्रहसी
लोगविचारे॥तेजानहिहरिसदाहमारे॥भीजनसमेसदासविधाना॥न
होतहांआपकभगवाना॥३॥दो॰हा॰॥तहांसमग्रीमतकीनहजारेहरि
आप॥पांडुसुतनकीप्रीतहितकरतभगतपरताप॥४॥चौपई॥तहांति
रषेकोऊकुसलनहांही॥आपरह्योहरिसभहिनमांही॥सबकोउगिरधर
धरमुषदेषे॥हरिकीपीठकोऊनहिपेषे॥तहांतहांसनमुषसबधाना
भगतवछलत्रैलोकनिधाना॥पुनिश्रीपतिमुषवचनप्रकासा॥हम
धर्मसुतनप्रथमहिंयासा॥धर्ममोरभगतहितिहकामा॥मोकोंपोलखि
पोविनछामा॥पुनधर्मजहरिकेपगलागा॥विनतीकरीहियेंअनुरा
गा॥५॥दो॰हा॰॥मनवंछरप्रजाकरीधर्मतातभगवान॥प्रथमकोठ

ग·श्री· किधौ क्रमसकौ धरवरनन कौ आन ॥ ४७ ॥ चौपई ॥ धर्मनत्रप पत्र अह
भा· रलीनो ॥ मनमहि क्रमलचरन चितदीनो ॥ बहुरस्तुति करि हिय हुलास
८४२ सौं ॥ पूछो विप्र वरन वेदव्यासकौं ॥ पुनह रि कहि धर्मन सुनलीजै ॥ प
धर्म श्रवन प्रगट न सुष दीजै ॥ कीजै सिद्ध तरंग म काजा ॥ तापाछे पू
हि रिषराजा ॥ हरिको वचनमान चित लीना ॥ उकौ धर्मह्न नउ घमकी
ना ॥ धर्म ब्यास पनि वचन बषाना ॥ क्रूपाकरो होवो सविधाना ॥ ४८ ॥ दो
हा ॥ गादेह हरि हैपक्रॅंउपर ब्यावारन भोयास ॥ हावै धर्मपुवाल श्रवन प्र
गन ग्याउलीयास ॥ ४९ ॥ चौपई ॥ जीसस हंस रूषी स्वरमहां ॥ कांजी वेदसु
यारनन हां ॥ साहा ब्यास कहन सुषजवहीं ॥ श्रगन श्रुहार देन सुष
न वहीं ॥ जब हिव्यास सहा कहि लेवै ॥ नवन्रप श्रगन प्राइ तीरे वै ॥ व
हरि क्षीता देहारे पर ॥ वेदउ चार कहै हिपहि लपर ॥ चाररिषी स्वरम
हा प्रवीना ॥ तिनकौं द्वारपाल हरि कीना ॥ लोमस विश्वामित्र पारासर
धौंधौमार कंइति षिग्रनिवर ॥ ५० ॥ दोहा ॥ चार रिषी श्वरमहांवर ग्या
तिसभ कर लउ चार ॥ तांतैं विघ्न न न ग्रावहीं धर्मकाल के द्वार ॥ ५१ ॥ चौप
ई ॥ परसराम मांझे रिब होऊ ॥ वेदी पर ता के भय सोऊ ॥ वनमहि वसत
जोग अभ्यासी ॥ श्रवर उतो रिषि पवन गिरासी ॥ तेस भश्राप हैं मध सा
ला ॥ हरषत रसन हि तनंरलाला ॥ जन मे मेर क्रो जप मन प्रति ॥ हरे
संदेह निवारे सुनि पति ॥ जोग पवन अभ्यासी ग्रुसें ॥ पत्तविषे ग्राधे
कउकैसें ॥ पत्तविषे ग्रावन जिन ग्रासा ॥ तिनको हो न वसन धनग्या

सो॰ ॥ २१ ॥ दो॰ ॥ निराकार कौ ध्यान जन क्यौं आवत मन मांहि ॥ तिनके
होत निरास परै तेऊ कछु वांछत नांहि ॥ २२ ॥ जै मनउ छंद चौपई ॥ जैसुनक
है हनन द्वारा माना ॥ इन्नर कौं हनन होइ कामा ॥ सोहं ब्रह्म आतम जो जोऊ ॥ ति
नके हृदय रहत निज सोऊ ॥ यह निमि आप सम भनत हौं ॥ अपना इष्ट देव
ध्यावत हौं ॥ औसे रिषि आने मघसाला ॥ भगत प्रताप है नंद लाला ॥ त
हो आइ निरषे भगवाना ॥ जाका धरत हृदे मह ध्याना ॥ २३ ॥ दो॰ ॥ ध
र्म लाल तिहु रिषिन को लागन करी अपार ॥ भयो सुदित मनन सभन
को निरषो आगर अपार ॥ २४ ॥ चौपई ॥ यह चरित्र कीने नंदलाला ॥ किया
प्रताप धर्म भूपाला ॥ धर्मजहु पर हतना के साषा ॥ जस कंकण सो भन
हाषा ॥ कंचन पाच द्रौपदी कर नल ॥ नाम धर्म सिं धोसभ तिगं धजल ॥ जे
नक है हतगं धर पवी पर ॥ ते सभ सिंच पाच लीने भर ॥ जो तुम लता भूम
पर उनपन ॥ इल हरे सभ मध वना सपन ॥ औ सापाच हुपद तन पाक
र ॥ दल साषा सिंचत सौरभ वर ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ विहंतन हरकर वे निमिन
करन फिरत अभिषेक ॥ द्रुपद हतना अरु धर्म नरपह हृदे हुलल कीरेक ॥ २६
जै मनउ छंद चौपई ॥ जै सुनक है हतन हरषप घबीपत ॥ अपने पितरन को
प्रताप सुन ॥ वेद व्यास बलि श्री गिरधारी ॥ प्रभुदित नव वनक है हित का
री ॥ जौ सब जांहि सुहागन नारी ॥ कंचन कलस लेहि सिर धारी ॥ अंचरगां
ठ जोर पति साथा ॥ नल ड गारला वहि पर हाथा ॥ धनन तव जंव संग ले
गावहि ॥ हरषत हृदे सुमंगल गावहि ॥ २७ ॥ दो॰ ॥ गंगाजल भर लावही

841

मं.श्रु. धर्मकरे१सनान ॥ तुनराजासनवैठन्हपकरैवेदविधदान ॥ ५५ ॥ चौ
भा. पई ॥ प्रथमेयहहकारजकरिहैजव ॥ श्रुवश्रुगनपहिहोमकरहिजव
४२२ भ्राताकरनभधर्नेहलाला ॥ वजेवजंत्रसकलतनकाला ॥ कंन्यागजु
परहैश्रसवारा ॥ गावतगीतन्हमंगलचारा ॥ जलन्हगंधलेवहिकुस
लाधा ॥ द्वारतजांहिसांतिहितसाधा ॥ श्रैसेवचनकहतहरिगयो ॥ क
कमनिकेन्हदूधापनभयो ॥ कुंतीश्रुरुद्रोपदीयुधिष्ठिर ॥ रुकमनिभ
वनगएतिहश्रवसर ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ वसनवचित्रपहंवराल्यायोधर्मभु
वाल ॥ हाथजोरविनतीकरीपहिरोनृगलगुपाल ॥ १ ॥ चौपई ॥ कहता
सिंवनीरगंगावर ॥ मज्जनकीज्जारुकमनश्रुरुहरि ॥ परम्भुवनपहरेह
विसाला ॥ श्रुरुधनजोरीवनीरिसाला ॥ कुंतीलिपेइहनकेश्रुंचर ॥ जोरी
गांठवचित्रनिरंतर ॥ कुसहकसमेवीचलेमुदितमन ॥ वजतवजंत्रपढो
श्रुतिमुषतन ॥ पुनलेसुहृहरिगवरीईसा ॥ धर्मजपसोचरनपरसीसा ॥
सभहगंधश्रुलसीवमंगायो ॥ गौरीकोश्रुसनानकरायो ॥ ५७ ॥ दोहा ॥
भूषनवसनवनाइतनगौरीकीन्हसिंगार ॥ संकरउनमर्दनकरीवि
मलविभूतनसुधार ॥ ५८ ॥ चौपई ॥ श्राकधतूराधर्मजल्यायो ॥ सैलसुता
पतिश्रुतिमनभायो ॥ संकरकेउरनागविराजत ॥ जटासुकटसिरसु
तिकलवकानत ॥ श्रुरुधतचंदविराजतभाला ॥ सोभतकंठरुंडनकीमा
ला ॥ श्रुंवरकांधोपारवतीसंग ॥ वजतवजंत्रवसोप्रमुदितश्रुंग ॥ व
हुरविरंचसंतोषधर्मसुत ॥ सावित्रीसंगरूपमहाद्भुत ॥ वलरानन

त्रिपकरइसमनाना॥धूपदीपबसनबहुरबिपहाना॥३३॥दो०॥सावि
त्रीसोंतुहिनगिरिकोंगोरीगांठइहूकूल॥लीनोदेवलिपनसहनबलेमुदि
तयनसूल॥२५॥चौ०॥सिवबिरंचकोंधर्मधुरंवालहि॥बिनतीबहुत
करीतिहकालहि॥कृपाकरीकरुनाबहुकीजै॥इमराजनसफलक
रीजै॥संकरविपश्रुतिवचनबषाना॥मनवचक्रमसभधर्मरजाना
मधराजनसफलकिपनवही॥कृपाकरीश्रापहरिजनवही॥कोटजन
फलश्रीभगवाना॥सोतुमरीसहाइसवधाना॥पोषणभरणहारजो
करूणा॥सोउसहारकलमरेभषणा॥२५॥दो०॥जैसुवनकहिजनहोत्स्व
नपुनधर्मजअधपाल॥इंद्रालीनुवरंरकोंसंजोष्योनिहकाल॥२६॥चौ
०॥ग्रंथुतगंधसिंचविपनाना॥रूंपनतुहिनकिपोइसनाना॥पनवा
गांठवसिहुग्रहंपन॥वंदहासविपपाकेसंपुन॥भीमहिंइंद्रापरकोंधो
नव॥हेकरमालहसोश्रीपनलव॥ग्रंवरविजेसहभहसापा॥वोधोरि
पहरषतनिजहापा॥कर्णजसोंवांधोपरसेना॥प्रतिकूवकहीपरत
नहिवेना॥२५॥दो०॥मायासोंप्रगुप्रकोंअंबरवांधोजाइ॥कषासोंग्र
तुरहकोगोरीगांठवनाइ॥२६॥चौ०॥वहुरोंनकलनारअपनीसंग
गोरीअंचरगांठमुदितअंग॥तुमसहदेवसाष्यनिजवामा॥गोरीवसन
गांठअभरामा॥जोउढ्केरिवमुखधुवाला॥जिनकेसंगढकीनिजवाला
जिनमहिचोसउस्रूतरनपलवर॥अंचरवांधचलेतिहअवसर॥जेउ
नकलैसनढ्रपवीपत॥सुपजनकलसधरेसिरहर्षित॥प्रथमेकल

843

मे॰ श्री॰ सपलोसिरहकमनि॥ पाछेहरिषगुवलीहूंजन॥२४९॥दोहा॥
भा॰ जैसवकंचनकेकलसलियेतियनसिरधार॥ वजनवजंतचलीस
८२८ कलगावनमंगलचार॥८०॥ चौपई॥ तुवलीश्रुवरचलीवहुसाथा॥ कन
कथावलीवेतिनहाथा॥ चौमुषदीपजोतलिनमांही॥ चंदनश्रक्षतप
यनहांही॥ चलेवजावतधनपचवरा॥ धरनश्रुकासमवद्दभरहरा॥
कंम्यागजपरमंगलगावत॥ हासविलासकरतमनभावत॥ सभतिय
वसनसाजसिंगारा॥ गावनचलीसुमंगलचारा॥ सभवैसरसवनेहक
मनहर॥ कोंऊंश्रवरनहीकोउसमसर॥८५॥ दोहा॥ कोरकामश्रुवला
वंही हरिरुकमनकीश्रांन॥ सोभवनीनोलोककोंवनेश्रुरूपमभांत
८५॥ चौपई॥ प्रभुहितचलेसकलनरनारा॥ हमतपरसरकरतविहा
रा॥ नारदरिषिदेषीतिहश्रवसर॥ ववीश्रुरूपमरुवहरुकमनिहर॥ ना
रदमनभामापहिंगवो॥ ताकोसभहनांतकहिदयो॥ कलिवुमवेव
रहीगदहमाना॥ देषहुरुवरुकमनिजगमाना॥ सुरनररिषिवैलोग
नुरेसव॥ श्रंचरवांध्योहरिरुकमनितव॥ लेइकुलशुकीमाकाकर॥
श्रंचरवांध्योप्रभुहितहियेंधर॥८६॥ दोहा॥ नुरेरतहांप्रभुहितहियेंसुरन
रलोगपपाल॥ श्रोरीश्रंचरगांठहितरुकमनिसोंनंदलाल॥८८॥ चौप
ई॥ वैलोकनश्रेसीतियजाम्यो॥ रुकमनप्रियभगवानप्रमान्यो॥ श्रष्ट
नारकामहिपटरानी॥ भीषमसुतासकलजगजानी॥ हरिरुकमनि
कीवनीमहाछव॥ भषनवसनरहेश्रंगश्रंगफव॥ वद्दरननमकराहे

सुभ माना ॥ कहत लहमारे प्रिय भगवाना ॥ ऐसें कहत सकल भूपाला ॥
रुकमन अस्तिसील मवें रलाला ॥ रुकमनि कों अति आदर कीना ॥ सुप\
तमान भंग हरि कीना ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ लोग कहत हैं परसपर महा लहां पहता
न ॥ सत भामा सों हिये हित करत न त्रिभुवन लाल ॥ ७६ ॥ चौपई ॥ पर्म मान\
के पत समामा ॥ जुरे सकल रिषक्तर वड राजा ॥ रुकमनि लतमा स्पत कीमा
नी ॥ लो आदर हित पता रंग पानी ॥ इनी न उचन कमल कौं ऐसी ॥ लप सौं करी
हृषा ईजैसी ॥ रुकमनि कौ अधुना हरि कीनी ॥ चौरह भवन उगह करा ही
मी ॥ जो लग न र लिपगां अनुरावत ॥ को उ लतन न न हि कोमत न पावत ॥ रहां
समाज जुरे जै लोगा ॥ हिये मान रुकमन लम सो गा ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ अपप\
द कपरीक कुलमरे विधि विचार ॥ ऐसी उचनन पीनवहि जैसी करी उरा
र ॥ ७८ ॥ चौपई ॥ लमम हि घोर परी नहि कोऊ ॥ हरि कीनी ऐसी कृतजोऊ ॥
जदुकुल कें मान समसत भामा ॥ महा प्रवीन रूप अभरामा ॥ रुकमनि सा
मी राजकुमारी ॥ लो आदर दीना गिरधारी ॥ लमपित्र करत न आपसमा
ना ॥ अपना कुल हरि कों विसराना ॥ रहयहीर के पेतु चरावत ॥ चोर चो
र के माषन खावत ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ अपना कुल हरि हरकर पर कुल कीउ
प्रकास ॥ पटरानी रुकमन करी लो हि कियो उपहास ॥ ८० ॥ चौपई ॥ रुकम
नि कों प्रताप हरि कीना ॥ लम कों अति अपजस हरि दीना ॥ आगे चले\
मों हि रुकमन हरि ॥ पाछे सकल वजंत्र वमन तवर ॥ लि हनरके गृह\
लिपवहुहोई ॥ पुरुष विवेकी च हिये सोई ॥ अपने रिदे विचारै लाना ॥ स

जै॰प्र॰ भलिपदजानैएकसमाना॥ किपोनमनविवेकगिरधारी॥ मोहिनिरा
भा॰ दरहतकमनप्यारी॥ कुब्रधलोहकमनिकेसीसा॥ श्रंचरगांडओरजग
४२५ दीसा॥५५॥ दोहरा॥ कामीकिमिहरिभ्रनिरहहसेग्रुहृत्रइग्रसेलान॥ कौनहिव
हैप्रमापतिहिंवसकीनेजगजान॥५५॥ सतभामाकृष्णव॥ चौपई॥ नवस
नभामावचनवषाना॥ रिषिनमरानिपिमहमजाना॥ एकवानकीसान
वनावहू॥ हमरेवीचकलहडपजावहू॥ आपवीचलेहमहिलरावहू॥ आ
पहुसहूदुवलोगहुसावहू॥ हमनोनहीवावरीवाला॥ हमरेकहेलगे
मनकाला॥ मानतनहींतुमरीवातेंसभ॥ कुतनमसरगतैंत्यापायाजव॥ पर
दोहरा॥ जैसेंनवरतकमनीसोंतुमहिलरायोमोहि॥ तैसेंवहूरलरावहो
वचनसमनहितोहि॥५६॥ चौपई॥ श्रैसेंचेरकहतसभलोई॥ मंगलसये
वरीतिपहोई॥ करतेंजतदेतजहांहाना॥ वामअंगतिपकरतवधाना॥
गांवप्रसलवरीतिपसाषा॥ लांतैंपहकीनीजइनाषा॥ ओतुमकोंपहि
चानतनाहीं॥ तिनहिलरावोआपसमांही॥ तुमभाषेहमसोंपहवैना॥ स
मनवहिहेसोनिजनैना॥ हमहूंचलजानीकोंनहां॥ तुमलववेहरिहक
मनिमहां॥५७॥ दोहरा॥ जैसीतुमग्रुलनकरीहरिहकमनिकीआर॥ जो
श्रैसीजोरीवमीलवचोरोंपररार॥५८॥ चौपई॥ रिषजेसीउपमातुमकी
नी॥ हरिरुकमनिग्रधमावहूरीनी॥ देषोंगीग्रुपनेनैननजव॥ तुमम
वचनप्रमानकरोंतव॥ सोरोंगीअंचरनिजहाषा॥ वांधोंगीपरस्रपने
साषा॥ हरिरुकमनिपिवभूपतजाना॥ हममरापिवानत्रुकपहवाना॥ नों

बैं रुकमनि दई ईव डाई ॥ हम सों कीनी निपट रुखाई ॥ सतभामा जिय क्रो
ध बढायो ॥ हरि हम सों उपहास करायो ॥ ४७ ॥ मैनरचा ॥ दोहरा ॥ जेमनक
हि सुन हो रूपन जनमे जाइ कान ॥ सतभामा क्रोधन भई उपज्यो मन अभ
मान ॥ ४८ ॥ चौपई ॥ सतभामा उठ चली क्रोप कर ॥ आपन भईन हां रुकम
नि हर ॥ सतभामा वचन कहै रूसि अति ॥ भेद हम ए कन्त करी रमापति ॥ रुक
मनि कों प्रभु लाव दई दीनी ॥ जादव कुल की लाज न कीनी ॥ रुकमनि जानी
राजकुमारी ॥ तो आदर दीनो गिरधारी ॥ हम रा हृदय न कहो प्रकासा ॥ रुक
म सुत किये जगत उपहासा ॥ देख्यो नैन सुन्यो जो काना ॥ नारद वचन स
म मन माना ॥ ४९ ॥ दोहरा ॥ सतभामा के वचन सुन रूस हसे मन माहि ॥
मन करी सुनन तन वचन सु बोलहि कछु नाहि ॥ ५० ॥ चौपई ॥ वचन कहै
हरि सों रुकमनि तब ॥ कहति न समझौ नगही श्रीपति अब ॥ सतभामा तिस
वचन सुनायो ॥ तां तें उमगन मम हिरदे रपायो ॥ अब अब वरवो पदइ उनसा
था ॥ कति को डरपत हो जगनाथा ॥ जादव गे जब गृह सतभामा ॥ करै
अनादर लखमन सामा ॥ वह लख मकों सुत सों अति प्यारी ॥ निसदिन जा
के वस गिरधारी ॥ कीनो मम छवा सों संग्रामा ॥ कुहम निमित्त पको हर
भामा ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ नव के लोग नमे कहैं रही जित जग नाम ॥ सतभामा
के हित किये मम छवा सों संग्राम ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ नव श्रीपतिय वलो को नै
ना ॥ नारद हह सत वनावन वैना ॥ आनी हृदय जगत के माना ॥ पहलो
सभ नारद की वाना ॥ हसे रूस सुन वचन कहे हित ॥ सतभामा को तो

847

अ.ग्र. षकारनचित॥ तुमलोनारदकोपहिचानत॥ हांसीनिमतलराईजान
भा. त॥ हमतुमबीचकलहइपजावत॥ हमतुमबीचकलहउपजावत॥
४९९ आपहसनपुनलोगहसावत॥ तुमलोवेदवचनजानहुसभ॥ तुभमंग
लकोसमैहोइलव॥ ८३॥ दोहरा॥ जेवीजुवलीचाहियेवामअंगनिहका
ल॥ तासोंअंबरबांधियेवेदवचनप्रतपाल॥ ८४॥ चौपई॥ जानतहूकत
करीलराई॥ तिषकैकहेलरनतुमआई॥ उचनहरुकमनीकोंयहग्रब
हरे॥ पुनतुमसंगलडलवडोकयोहर॥ कौनतमीरिसकोंसतभामा॥ कै
सेवचनकहेधनसामा॥ निजमंचरलीनोजइनामा॥ बांधोपरसत
भामामामा॥ जुवतीरिदेअनंदतभई॥ वडोप्रमोदविंतडरगई॥ वज
नवजंत्रमहाकताकारा॥ गहतहहोतभयोजेकारा॥ ८५॥ अैलनइदव॥
दोहरा॥ जैपुनकहिमुनहोरूपतसतभामाकेसाथ॥ अंबरबांध्योक
मलेहरषतभ्रपनेहाथ॥ ८६॥ चौपई॥ ताहीछिननारदपुनगयो॥ जा
मवंतरहहुपानभयो॥ कहिनारदसनजामवतीवर॥ तुमरहहवैठ
रहीअहहप्रवसर॥ जुवतिनसहहतववेहरिजहां॥ तुमकतमानमानत
हिजहां॥ उनतुमकोंनहिलिपोवुलाई॥ हरिकीचीतोसोंनिठुराई॥ तु
मकहांचलरेषहिगीमुव॥ हरिरुकमनिसतभामाकीछव॥ सतभामाअ
रुरुकमनिमीता॥ भासोछवअदितजगदीता॥ ८७॥ दोहरा॥ रुकमनिसत
भामासहितअंबरबांधगुपाल॥ दिषरापोअैलोककोंजोमरतिषथ
पाल॥ ८८॥ चौपई॥ सभलोगनमिलवानविचारी॥ हैनहनीहरिकोंदि

सकारी ॥ रुकमनि हू जो सतभामा ॥ इनहो कसों हित नहुन सामा ॥
रिद्धु सुना सुपकों पहिचाना ॥ सो न हिरि पो मान भगवाना ॥ ऐसी इचित
नधी गिरधारी ॥ तुम राखि पो अनादर भारी ॥ तुप हरि की आगे पदरानी
पकसारषी सभ जग जानी ॥ तीनन मांहि भयो अंतराला ॥ इतीन पद हु
पासनं दलाला ॥ ९५ ॥ दोहरा ॥ वे वर ही हरमहि कहां लहां जाइ लमकाल ।
आपहि गुंच रगां वरे वांधइ संग गुपाल ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सुन पावहि स
भलोग जो मउ हां चल जाइ लुम ॥ इतीन आर रजोग सकल धूकार
करैं लुके ॥ ९८ ॥ चैमइ चौपई ॥ ऐसु वकहै सुन इष्ट पाला ॥ नारद व
चन सुवचन सुनवाला ॥ आमवती मन को पन भई ॥ माही किन हरिय
हि चलगई ॥ रुकमनि हूति सतभामा जहां ॥ आपन भई वेग चलन हां ॥ श्री
गिरधारी निरषहू से नव ॥ पीके रिष आवन देषो जव ॥ सापवती सुष
ववन वषाने ॥ अव मैं हरि जी के पहचाने ॥ अव मैं जानी श्री नंदलारी
ववनन के सांचे गिरधारी ॥ ९९ ॥ दोहरा ॥ वेद सुधारे तास हैं जगन का
हू न भगवान ॥ तिह तिगमन के ववन कों सुमही करन प्रमान ॥ ९६ ॥
वह इलिषहो वहि जिहनर के ह
सौ चौपई ॥ वेद कहू नय हवचन सुन इहर ॥ वहि लिष हो वहि जिह नर के
र ॥ सव सों वरतै एक समाना ॥ निगमन के वचकरै प्रमाना ॥ अव लो
के रक हषसभन कों ॥ भेरभाव राषे न हि मन सों ॥ सभ मंगल दि
नसमै हो इजव ॥ रेहै मान वडाई लिषनव ॥ अव रस मैलिषसम करमा
मै ॥ वेद ववन मन सम करमाने ॥ अव वह जनसम मय के काला ॥ नोहि

गे॰ग्रं॰ नमौ सीउ चनगुपाला॥२६॥दोहरा॥ग्रंथ रगो व ध्रसत ल्लमन रुकम
भा॰ निसौ रहे काल॥न हि सममसर जुवलीअ वर रुकमन वरी गुपाल॥२
८२२ ७॥चौपई॥जोरल परइ करुकमनि साथा॥ तुमको पद ह ध्रथाल जउ ना
था॥ नो लिघ ग्रवर नधिकुल गुपाला॥ करले वेद वचन ध्रतिपाला॥ वो
ध्यो ग्रंथ रसंग सनभामा॥ उचनन नो को पह हथन सामा॥ तुम राध्योजु
वलिनमहि भेरा॥ वचन ध्रमान किये नहि वेरा॥ हमद्या कौं लिघ धकस
माना॥ तुम निज वचन किये न ध्रमाना॥ हसि ग्रंथ रली वो गिरधारी
वो ध्यो साघ नाम वलि नारी॥२८॥दोहरा॥ नार रहि विना वेद हे समा वैवे
नवना इ॥ कालिंद्री के गरह गयो कहह ल लोल सम नाइ॥२९॥चौपई॥ जा
मवली सनभामा रुकमन॥ लिन काकिया ध्रनाप ससाम धन॥ लीन लोक
केहर रिधराना॥ जरे धर्म के जल न समाना॥ लीन जुवलि सौ पर वो ध्यो
हरि॥ तुम को लधन करीर हे ग्रवसर॥ रुकमनि सौ त्रिभुवन के नाला
जोर लगो उचन पी वाला॥ लिन जुवलि न कों दीना ग्रादर॥ ग्रवरस ध
न को किये निरादर॥ नार हे घलुम अपनै नैना॥ सममान ली जे गुरु वै
ना॥३०॥ कालिंद्री वच कहे कलस ध्रति॥ भला काम न हि किये जगमप
ति॥ लीन जुवलि कौं ग्रादर दीना॥ ग्रवर लिय न कौं अपन सकीना॥ तु
म कौं उचनन पह नगला ला॥ कोनी निपर रूप रकी वाला॥ हम ग्राकौं
है जुवली सममसर॥ कल तुम भेद किये हि य निरधर॥ हस कर कालिं
दी पर साथा॥ ग्रंथ रगो वद ई नि जहाथा॥ धुन नार रहि घकौं निरखो॥

प्रभ॥ हरिजानेरिषिकेचरित्रसभ॥ ८९॥ जैमिनउवाच॥ दोहा॥ जैमिनकहै
सुनहोन्रपतकालिंदीपहुचाइ॥ सुवरनाइकापैगयो पुनिनारदरिषरा
इ॥ ९०॥ चौपई॥ पुनिनारदसत्राजहिगयो॥ ताकोसभहतांतकहिदयो॥ सत्रां
कोंहरिपहिपहुचायो॥ पुनिनारदमित्रांगदह्यायो॥ ताकोसकलहतां
तसुनाई॥ मित्रांलेनंदलालमिलाई॥ पुनरिषगयोलक्ष्मनाकेगेह॥ सक
लसुनाईसोहतांतनिहेह॥ हिपलक्ष्मनाकोधडपजायो॥ चल्योताप्रप्रले
हरिहिवरायो॥ पुनिनारदन्यायोहंसदरबार॥ कह्योहतांतसकलनिहयु
वसर॥ ९१॥ दोहा॥ हंसरिषकेवचनसुनउपज्योक्रोधअपार॥ रिषलेप
हुचाईनहींजनहोतिपसहहनगुरार॥ ९२॥ चौपई॥ सबरिषलेपहुचाईनहो
मनतसमानहुनेहरिजहां॥ आगेंनुवतिनसोंगिरवरधर॥ जोरीगांवग्रु
तिनमिहयवसर॥ नारदलिरतनकारैपुनगावै॥ हरिसनमुषकरवैनव
मावै॥ हरिजानतजपहनारदकीकृत॥ यहकारजकियोहांसकरनहित
सवनुवतिनकोंदिसउपजाई॥ सकलग्यानगुजसापलटाई॥ हरिह
सिवचनकहैनारदप्रति॥ यहपरिहासकियोहमसोंकति॥ ९३॥ दोहा॥
कहैहसनारदसुनहुयहहनतनमहुतीजोग॥ गुरुकोंघ्योपदग्यानकसों
देषहसैसैलोग॥ ९४॥ चौपई॥ नारदकहैसुनहुगिरधारी॥ तुमकोसम
लरूपमुरारी॥ मायाकेगुनधरअवतारा॥ प्रगटभयेहोयासंसारा॥ तु
मअलिप्तप्रभुसबतेंन्यारा॥ रहम्यासोंबाहीसमटारा॥ धर्मरहहलसहलाव
नकेहित॥ तांतेंतुमऐसीकीनीकृत॥ लोगनकोंकीनोकल्याना॥ अव

गं॰ भु॰ नासीनुमयपुरुषपुरातना॥ स्वामीमोहिमेलसमभनिपजन॥ ममकोउक
भा॰ हैमेहकियभगवन॥ ८५॥ दोहरा॥ सकलनिपनकोनिरादरहिपोएक
७२८ कोमान॥ नवथैसेंभाषनजगतसुवभईएकसमान॥ ८६॥ जैमकरव
चौपई॥ जैसुनकहैहुनउभूपनवर॥ नुवनिनसापहासकरकेहर॥
चलेवनंतवनाइसुदितमन॥ पहुंचेतीरसुरसरीतनकछिन॥ चौसव
कलसनीरगंगाभर॥ हरषहोरमालियेसीसधर॥ आज्ञादूतीकुलिन
कीथैसें॥ लियेउवारकलसभरनेसें॥ अतिपावनसरहलकीवाना॥
ताकोवरत्रहंधनीनाना॥ नलत्रहंपलीभरनिजहाथा॥ कलसधसो
हकमनिकेमाथा॥ ८७॥ दोहरा॥ चौसवत्तुवतीकलसभरलियेसीसध
रधार॥ हासविलासचलीकरनगावनमंगलचार॥ ८८॥ चौपई॥ कल
सउठारचलीमगमहिंजव॥ नामधिहरिहकमनकीअतिकव॥ अ
हंधनीकहिंयोरुकमनअति॥ कनककवरननुवलमरुक्कमअति॥
सहनसकनफूलनकोहारा॥ नवपुजकलससीसलमधारा॥
गंगाजलसोंभरोकनकवट॥ हौरुरपीजिनहहरमाइकरट॥ पहुंवव
कहोवसिषनारनव॥ त्तमोत्तपहानिकरहद्दतीनव॥ त्तनवोलीपा
रवकीनारा॥ सम्मथ्यहंपतिवचनउचारा॥ ८९॥ दोहरा॥ त्तुनअहंपनी
तेमकरीरुकमनिसोंयहवान॥ भीषमसुतामहावलीजिहपनति
भुवनमान॥ ९०॥ चौपई॥ जिहकेपतिगोवर्धनपालो॥ सानहिवस
करतेनहिंटालो॥ रणसमानगिरकोंनहिंजाल्यो॥ गोपीग्वारग्गांर॥

लषमासो॥ हासोमन्द्रवाकोग्रभमाना॥ ऐसोरुकमनपतिभगवाना॥
बीरहहभवनउदरमहिमाके॥ उपजसमावनपुनहैवाके॥ रुकमनि
मौंतनधरनपुराना॥ जैसेंउरफूलनकोहारा॥ ९१॥ दो०॥ कलसउगाव
नत्रछतिहजिहश्रीकुलभतार॥ नितधारतहैउरविषेजोत्रिभुवनक
रतार॥ ९२॥ चौ०॥ जिहहरिभवनचतुर्दसधारे॥ सोश्रीपतनसपहुंतेम्हा
रे॥ जिहहरिकोंलेनितधारतनन॥ तांतेंमहाबलीयहरुकमन॥ सहन
सीलपतिव्रतहदजाको॥ भवरनजगमहितिपसमवाको॥ लछमी
रूपकुलकीचारा॥ तांतेंलछकलसकोधारा॥ पुनबोलीरुकमनगुनसा
गर॥ सुनहुलभहानारउजागर॥ समकेसापतिलेउरधारउ॥ मनमहि
ताकोभारविचारउ॥ ९३॥ दो०॥ जाकीतमनप्रस्तुतकरीताकाअंतनपार
सोहरिरहनग्रधीनतितलुमरेपतिकेद्वार॥ ९४॥ चौ०॥ सोकैसेहैंकुल
मुरारा॥ ताकेग्रघहलभवनकोभारा॥ ऐसाश्रीपतिप्रानतभारा॥ निहु
रिनसातगुवर्धनधारा॥ सोहरिसरासारथीग्रर्जुन॥ तुमपतिग्यातामा
हिसामन्द्रन॥ मानतविमेग्रापतेंभारी॥ ताकेनितग्रधीनगिरधारी॥ पा
रपहहेसराहरिध्याना॥ तांतेंपांडवग्रतिबलवाना॥ क्रियोगरिहग्राप
तेंश्रीपत॥ ताकोतमउरधारतनितप्रत॥ ९५॥ दो०॥ ऐसेंहासकर
बीसकलपुनग्रापमषसाल॥ जहहवाब्रहविकुंठपरयगधर्मभूपाल
९६॥ चौ०॥ प्रभुदिनसबहकरतनरनारा॥ लोगकरतसभजैजैकारा॥
राघेकलसउतारसीसतें॥ गावतमंगलजगतईसके॥ ग्रगनकुंडकी

नं॰ श्री॰
भा॰
५२९

853

सुभगगौरपर॥ छंभकंचनकेगाजनहैंवर॥ वांधोतिनकेसाषत
रंगा॥ इपसबधावक्रियेसभसंगा॥ आताकरनभएभगवाना॥ श्र
वधर्मजकीजेश्रुसनाना॥ श्रुतिवचकीजेहियधरभाइ॥ भयेसंघरन
सनरथाइ॥ ९०॥ दोहरा॥ इतिश्रीभारथपर्वणेश्रुषमेधपर्वणाः॥ कविदे
कनेहरूतवभयोहरूजैरधाद्रवमान॥ ८०॥ जैमनउवाच॥ चौपई॥ जैमुनकहै
सुनहुहपवीपत॥ श्रुपनेपितरनकोप्रनापश्चन॥ श्रुष्टहोमहिमध
मेधवाला॥ उपमकरनभयोननकाला॥ प्रथमेनपकीनाश्रुसना
ना॥ विगममंत्रविधवेदविधाना॥ पाइंवरननपहरविसाला॥ साभो
श्रुदिनचरनवंदलाला॥ प्रथमहिजनकोंभोजनदीना॥ इच्छावारी
पाकप्रवीना॥ क्रूलभीमश्रर्जुनमनहरषन॥ धोवननचरनदिषनके
विधवत॥ १॥ दोहरा॥ श्रुमितहानदियहिजनकोंश्रुदिनजुधिष्टिरप
त॥ वहुरश्रुगनकुंडपरहोमकरननभोमाइ॥ २॥ चौपई॥ जनमेजेसुक्को
जैमनवलि॥ नवरूपहरिश्रुघलभवनपति॥ सोइहिजनकेचरनपखा
रे॥ श्रुतिश्रुवर्जसुनहरेहमारे॥ जैमुनकहैसुनहुभपनवर॥ नृपनजु
धिष्टिरपरकहताहर॥ श्रीपतिभगनव्रतापवढावन॥ जनतरहल
परगहरनलावन॥ पांडुसुननकोभारउनारन॥ प्रभुदिनजनकेचर
नपखारन॥ सभदिषिधनपहसुषउपजावन॥ तिनकरहिजनकेचर
नकुहावन॥ ३॥ दोहरा॥ हिजवररेनश्रुसीससुभफलजनमभपाल
ताकेसहासहाइहैदहकनवधपवंदलाल॥ ४॥ चौपई॥ धर्मजजननसुक

लेके कान्हा ॥ हिंमपगधारलक्षीमट्टराम ॥ पुनदीनी दच्छनापुनिह

र ॥ इकइकआसप्तकोंहितहितधर ॥ इकगजइकरथइकतुरंग ॥

गो सहस्र इकविधवतसंगा ॥ एकभारकंचनकोंदीना ॥ कहिंपुष्प

लहितमनवरलीना ॥ इंसीसहितजचलेपुदितहिप ॥ पुष्ठतचंदनस

भनहाथलिय ॥ पुगनकुंदरपरइपषानहो ॥ आपनमपसकलरिषिन

हो ॥ ५ ॥ दो० ॥ पुरुकलहसमनहोमपरपुगनस्याइलीदेन ॥ नितगयमेर

कांदीपटनलोवहैसकरालेन ॥ ५ ॥ चौ० ॥ ६ ॥ पुनयपमैनववचकहैजीव

प्रनि ॥ हीनैग्रासप्रगनपुरुविपवन ॥ होवहिविपनप्रमरसपनै

सें ॥ प्रगनआइलीहीनेजेसें ॥ पुनरुपविनैकरीभ्रगकोंतव ॥ निह

विपहोहिप्रसन्नरेवसभ ॥ नैसेंग्रासप्रगनपुषदीजै ॥ कृपाकरीकह

लावहकीजै ॥ वकरालभरिषवालमीकपुन ॥ पडकरतमनपुदित

वेरधुन ॥ गौतमपग्रहवसिष्टकोंगिरधर ॥ हरषनवचनकहैंतिहअव

सर ॥ ५ ॥ दो० ॥ जनककराघोरामकोजेसंतमहितधार ॥ तैसेंहमपाज

तपहकीजैतिसीप्रकार ॥ ५ ॥ चौ० ॥ ६ ॥ धर्मशालपुनजुगकरजोरे ॥ कहो

ब्यासप्रविसिहनप्रभुमोरे ॥ महतजपतकीक्रालपमैसें ॥ इमराजनकर

इतमनैसें ॥ वहुतइरतहोंहविपुनिब्यासा ॥ कैसेंकोंप्रगनहपरग

सा ॥ आसकहैनपविंतनकीजै ॥ हरिपदपंकजसोंचितदीजै ॥ जपरा

पषआपेरविपोहरि ॥ भयोनजसअवरइइसमसर ॥ सकलसिरो

मणिजसलब्यागा ॥ महांताहेसवधानपुराता ॥ ४ ॥ दो० ॥ पवनसप

मे॰ग्र॰ नकामेहयहमघनमराजमनान॥ आगेभयोनहोरनमसमकह
भा॰ नहोंबात॥ ५॥ चौपई॥ यत्तवहुनहयचीपरभए॥ रामआदवहुन
८३॰ पकरगए॥ हौहिननमरेजनसमाना॥ जहांकादेषीपनसविधा
ना॥ देरवासकेवचननमनरूप॥ युदिनभयोमनमांहिनतविष
वचनकहनभयेनंदलालनव॥ लावहुविजेसरसरीकोंश्रव॥
श्रवनगंगामैंचलनगयो॥ हायजोरकेठाढोभयो॥ विनतीकरीवि
मेलनमाना॥ नुमहिनुलावतहैजगनाना॥ ५॥ दोहा॥ कृपाधार
मामचलहुजनलधर्मभूपाल॥ करहुक्कूनारपलोगसवआलाक
सीग्रपाल॥ ११॥ चौपई॥ सुनवहरसरीश्रवंहनभई॥ यनयुधिष्टिरप
हिचलगई॥ करप्रणामपलागीचरननहरि॥ अवलोकोसरसरीहष
भर॥ रूपअनेकक्रियेतिरवरधर॥ देषतनाहिभयोसंभ्रमकर॥ अव
रजभईनिरषयुपनेमन॥ आपरहेसभठौरसमवन॥ करननत
कृतनरतिपनहं॥ रिषिपनसकलठौरहरिनहं॥ धरमभागधर्म
जेभूपाला॥ अपनेवसकीनेनंदलाला॥ ५॥ दोहा॥ जलपलकरला
गनकानलरहलपरलोइ॥ आपरमोसभठौरमहिगनलपस
कैनकोइ॥ १५॥ चौपई॥ हरिताषनभगवनकीलाजा॥ कीनामिद
युधिष्टिरकाजा॥ गंगाकोंलागनवहुदीना॥ रपतयुधिष्टिरह
माकीना॥ पुनधर्मजपुत्रवचनउचारे॥ आजदिवसवडभागहमा
रे॥ मोपरकृपाकरीनहदाई॥ अवहहरनीहारेवलआई॥ नवग्रहम

रनवंन सुलाए॥ साव धाव ननन छि नचल सुआए॥ जाकों गौर रउ चनणी
महां॥ सो ग्रह ले वैरा पो नहां॥ ५॥ दोहरा॥ नवग्रह म्रनवंनकी विधव
नग्रहला कीन॥ स्नाता कारी ह्वै रहे सकल भये सुधीन॥ ८॥ चौपई॥ वद्दर
नक्षत्र सनाई कोंनव॥ वैताप निज गोर गौर सभ॥ निह ग्रह ह काजिह गो
रङ लोवल॥ ताको वैरा पोनिह मुख्यल॥ वीसस ह ह सदिषी सवधाना॥
वारवेद रस ग्रह पुराना॥ षट शालर सिम्हन ध्याआना॥ वेवेन हांप
हनस विधाना॥ स्रवलिनसह हनमकल तिष राजा॥ पुजा करत भए
सभ वाजा॥ वा हे ग्रछूल गंध लिपें कर॥ पूजनन ग्रवद्धि पें हरष न धर॥
९॥ दोहरा॥ तीन लोक वाजे वजे आता करी गुपाल॥ हपकों रई ग्रह
गोनु वलिनसों भूपाल॥ १०॥ चौपई॥ देपरद्धुनारिष ग्रहराजा॥ लेलगं
धवरवहि ननवाजा॥ पुनपग पर हिराषह पलाजा॥ कीजे सफल गु
पिह्रि रकाजा॥ स्रुषदेव पह मस परम हत॥ संपूरनकी जेकरतागु
ने॥ पुनआता कीनी मंदलाला॥ तनदूग्रवनरे सभ भूपाला॥ सभपव
मरवमंत्र वजावद॥ मनमहिरप ग्रनरहउ पजावद॥ सर्गलोक भलो
कपपाला॥ वजे वजंत्र ग्रनंत विसाला॥ ११॥ दोहरा॥ पुरिन भप भूपाल
सभ कहह नपरसारवात॥ महांत्रा हे सव धाव हर मुकत परीसाआन॥
१२॥ चौपई॥ पर्मजत्र ह पकामुक ह उताग॥ नवहीआ ताकरी गुराग
वैकमवं ह नग्रगरकमूरा॥ गोरो वनग्र रगजा संपूरा॥ सगमह स
कलसुगंध महावर॥ पर्मजधरली तात्र पनाकर॥ लेवर स्रोहपके

गे॰ श्रु॰ सुखमाला॥ इहरघवनहिं पें धर्म सुपाला॥ जललगंधसिंचोविधनाना
भा॰ किधविधवनहय कोष्टसनाना॥ समलहगंधलेपनहयकीना॥ दृ
४३१ धकोंलहमानकरलीना॥ ५१॥ दो॰॥ इहयकोंकरीघरहछनाडुघरल
नीअलरान॥ हाथजोरविनतीकरीकरडूसंपरनकाज॥ ५२॥ चौ॰॥ ई
हरघवनरिषिथुनिगमडचारहिं॥ वेदमंत्रपदस्वछनमारहिं॥ स्व
छनघरनस्वछकेअंगा॥ सौंमौंहोइश्रधीनलरंगा॥ लनधनवेदलरं
गमकाना॥ प्रभुहिनअंगकरेसविधाना॥ श्रगनकुंडपरशीलवहा
वै॥ निरभैहोइविकरहवलसावे॥ धर्मधवालद्रोपदीसाथा॥ घसकं
कोलासोभनहाथा॥ संवरमोहववियनहैसव॥ सवथरहछनारेलमहूं
कव॥ ५३॥ दो॰॥ जवंहीएकघरहछनाहूरनकरनभुवाल॥ जैनेका
डचारहीलोगसकलनिहकाल॥ ५४॥ चौ॰॥ वारहकीसघरहछनादी
नी॥ विधवतमभाइहघकीकीनी॥ पुनश्रीकलसहकमवीसाथा॥ लरमु
निरघतस्वहिजडनाथा॥ दीनीसभनघरहछनावाला॥ प्रभुहिनहिं
पेंलरनतिषवाजा॥ वारहकीसफिरेसभनहूं॥ ताहोजनलरंगमज
हूं॥ ५५॥ दो॰॥ धर्मलालमयूरदोपदीपुनकीनाजसनाम॥ एकलाख
गोहिजनकोंदईवेदविधदान॥ ५६॥ चौ॰॥ गजरथअश्वहिंवेवहुदी
ना॥ मणिमुकताहारकविधनाना॥ डुपदसुतासंगनरपतनृपहिं
वहुतेंआएअगनकुंडपर॥ विनतीकरीधर्मकेनाला॥ पावकसुन
रहमारीवाला॥ तीनलोकमैंथुहछनानरूप॥ तोतेलघकोंविननिक

858

सीमुरू ॥ भवज्ञानतु पहइ पत्त हमारा ॥ पत्त करत है आप मुरारा ॥ क
रहु प्रकास हो हूस विधाना ॥ अब पैं तुम मों अस्व प्रधाना ॥ २५ ॥ दो० ॥ श्री
सैंभ हुव कीजिये सवरन कैरल रंग ॥ रमउ नह पगे लै नही फरकावै
नहि अंग ॥ २८ ॥ चौ० ई ॥ सुगन कहै सुन वचन जुधिष्ठिर ॥ जनतलसा
रा करत आपहर ॥ मोंतें सभ होवो सविधाना ॥ हरकरहु विना राजा
ना ॥ जत करत है श्रीगिरधारी ॥ जिन जग षपुत राकरी हमारी ॥ ताका
अस्व करों हम ग्रासा ॥ देषहिगे सभ लोगन मासा ॥ तुम राजन सफ
लभो नवहीं ॥ कृपाधार स्यावे हरि जबहीं ॥ मोंतें हहै अवंद वहावहु ॥ नि
पवें संध्रम सकल मिसवहु ॥ २९ ॥ दो० ॥ जैमुन कहि सुन होनपप
तिज पितरन को दान ॥ जैसें वैसा वर किपो अस्व देव को पान ॥ ३० ॥
चौ० ई ॥ बालमीक अग्रहसपन स्सषीश्वर ॥ जनतकं कबामिन बांध्योक
र ॥ गोतम समा हरिषीश्वर जोऊ ॥ सभ रिष सावधाव पै तेऊ ॥ बकरा
लभतैं आइ रिषीश्वर ॥ जिगम इचार करन लागे वर ॥ पुन वसिष्ठ
स्रष पुरु करहसन ॥ कांशी वेर पृठल पन हर्षित ॥ सभ महि पुज रिषी
स्वर जेते ॥ ताके कुंड चलहिं समेते ॥ रूपन किपो हय वेर पंचकर ॥
वलो कुंड की गेर हेलधर ॥ ३१ ॥ दो० ॥ रिष अस्व छल पट मारही वेरमे
रके भाइ ॥ मौं मौं अस्व हरवत हिवें चलो कुंड इहि समाइ ॥ ३२ ॥ चौ० ई ॥
अस्व कुंड पर आप चलो नव ॥ विरचन जुधिष्ठिर सुरिन भयो नव ॥ पुन
धर्मज हृदि के पग लागा ॥ विनती करी हियें अनुरागा ॥ यह प्रभु सक

रा॰ मु॰ लछमणपलकलागा॥ घल्लकिपोलुमनामहमाग॥ श्रीपलबरवैठेषभं
भा॰ कपर॥ अगनकुंडकीदिगनिहअवसर॥ गिरधरजिनकीडोरनिहा
५३२ रै॥ करैसनाथलोगनिसनारै॥ हरिवौदेरदिधीश्वरगनत॥ कांडीवे
हपटलछवछाजत॥ ३३॥ दो॰॥ ऐसेरिषवादेभपेअगनकुंडपर
आइ॥ ताकीमपामहछतेंसकातुमविगसाइ॥ ३४॥ चौपाई॥ ऐसेरि
षधुनवेदउचारहि॥ पढनग्रछलहपकेतननमारहि॥ गादेवीचआ
पनेदलाला॥ चहंओररिषपानविसाला॥ अषिउपरांनविविधगा
देसभ॥ तिनकेपरेनरेसमहांछव॥ तिनउपरांनघरेलहुराजा॥ ति
नकेपाछेसेवसमाजा॥ तिनकेपरेनगरकेलोगा॥ ठाढेहूंइसुदिल
निहलोगा॥ ३५॥ दो॰॥ ठाढेसभकेमध्यहरसकलकरनकीभांत॥ द
हकनप्रभुनेंदलालछवकोरसरकीकांत॥ ३६॥ चौपाई॥ दकदकपंक
तरिषनरचावहि॥ उचरहिवेदलरंगलनावहि॥ सभमंत्रनकरअ
छतमारहि॥ जैजैमंगलसबरउचारहि॥ देअरछवानेफिरआवहि
पंकतजोररिषीउरलावहि॥ बालमीककेंआदरिषीश्वर॥ ईहीजिनह
दउधतपीश्वर॥ सभपत्रभमंत्रनकरनलेरंगा॥ अछतपटाररतहपश्वं
गा॥ पुनहपकोंप्ररछनाकरहीं॥ पुषतेंजैजैसबहउचरहीं॥ ३७॥ दो॰॥ ए
वहूरमारकेहेरिषीसकलरिषनकेसंग॥ वेदभेदपढिकेंरहेंपरद
छनातरंग॥ ३८॥ चौपाई॥ गौतममुआददनेरिषजेक॥ वेदउचारकरत
सभनेक॥ तिनतवमंत्रपटअछतमारत॥ पुषतेंजैजैसबदउचारत॥ पु

बहुप क्रौं प्रदछना देहीं॥ पढत मंत्र सुहृद करलेहीं॥ आरसु गलरि
दी धारतें सभ॥ पवैना करन भए हरि की नव॥ वेद मंत्र सुमिमंत्रन की
ना॥ अगन कुंड कों हृदय पवित्र दीना॥ करतीनी प्रदछना बाना॥ आपव
हुर सुवर रिषराजा॥ ३९॥ दो॰॥ हुरवासा तें आर लेआप रिषी अपार
हृदय कों हृदय प्रदछना धन धन करी इवार॥ ४०॥ चौ॰॥ सकल नमारहि अ
मि मंत्रन कर॥ जैजै सबद करै सभ हित धर॥ भगुरिष आर रिषी सारह
रषत॥ पूजा करी सुसकी विधवत॥ पढि कन मंत्र सुरछिन दीनी॥ जै
जैकार रिषी सर कीनी॥ जीव आरहत रपत रिषजेक॥ पूजा सुसकरन जै
जेक॥ स्रमभ मंत्रन किय वेद वचन सों॥ करी प्रदछन हरषत मन सों॥ सुछे
मसारन विविध प्रकारा॥ सकल करत रुचसों जैकारा॥ ४१॥ सो॰॥ गा
लवरिषन समेत पूजा करी सुरंग की॥ पुहित हिंयें परहेत दे प्रदछना
जैकरहिं॥ ४२॥ दो॰॥ आरद वसिष्ठ रिषी जेक पूजा करी सुरंग॥ बार
इकीस प्रदछना कीनी रिदेइ संग॥ ४३॥ चौ॰॥ वेदमंत्र पढ सुकृत मार
हि॥ जैजै मंगल सबद उचारहिं॥ विस्वामित्र रिषिन सों आप॥ वेदमंत्र हृद
पथ्रवन सुनाए॥ सुकृत दार प्रदछना दीनी॥ हृदय पूजा विधवत करली
नी॥ करत भये उन जैजैकारा॥ पढत निगम विधि विविध प्रकारा॥ आर
पनासर रिष आप पुन॥ हे प्रदछना करी वेद धुन॥ पढत सारहि सुकृत सह
पकेतन॥ जैजैकार करहिं हर्षत मन॥ ४४॥ दो॰॥ वकदालभ रिष
आहजे तेस्फति करहि उचार॥ हे प्रदछना अग्र कों पुहित करत जैकार॥

861

म॰ भा॰ ५५ ॥ चौपई ॥ पटस्यक्रुलनधारनहपगाना ॥ इपनावहिंहयकेमननसांना
भा॰ वड्डरउहालकनारदधामा ॥ सकलवेदधुनकरहिंप्रकासा ॥ सुक्रुलनधार
५२२ हिंप्रभिमंत्रनकरा ॥ जैजैकारकरैंहियहरिना ॥ आरण्यगिरारिषीसुनेका
५२ जिनकाकियोनजाइविवेका ॥ रजाकरनभपसभवाना ॥ भेदआदि
षजनसमाना ॥ देप्रदछनावारनकीसा ॥ पर्वनपनकोंदईअसीसा ॥ ५
६ ॥ दोहरा ॥ जैजैकारकरैंसकलजैतकसुरदिषराज ॥ सुक्रुलमारहिवेद
पदनानहदावहिंवाज ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ रिषनपढेस्कलिमंत्रविधाना ॥ हो
मभयोवहुरंगसवधाना ॥ हयवलसगनकुंडपरगयो ॥ सांनरूपदैकाल
भयो ॥ पुनहीजीप्रदछनागिरधारी ॥ वारदकीसफिलोहिनधारी ॥ वाम
भ्रोरहयकेकाटेहंहरि ॥ तीनलोककेनापक्रपाकरि ॥ पुनकीनीपूजास
पराना ॥ सभहनकरीप्रदछनावाना ॥ भीमसेनघ्रहसरविजैवर ॥ का
रप्रदछनाहयपनिहसुवसर ॥ ५८ ॥ दोहरा ॥ अर्जुनभीमप्रदछनादेनय
दक्रुतिरीन ॥ सांनभईनवग्रयमनकासादैनिहचीन ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ पु
नसहदेवनकुलदैभाई ॥ प्रभ्लोग्रयुतिरिदैहिनलाई ॥ ताहेभयेपरंछुकी
तेरा ॥ तासेकुंडहक्रुलपरतेरा ॥ सुगनप्रकासलीनकरमाना ॥ सुसुह
देकीनादहवलाना ॥ वेदवचनलगनमगनभयोमन ॥ तेजसुगनकोन
हिलागननन ॥ कोवावंदनविविधप्रकारा ॥ मगनमदसारदलगंधव
कारा ॥ पुनहयपरमनलहोपदनारी ॥ धपदीपआरतीउतारी ॥ ६० ॥ दोहरा
हुपदसुतावरविनकियोसवदलगंधतनवान ॥ हापपओरविनमी

करीकरहुसंहरनकाज ॥५५॥ चौपई ॥ पुनिकलकाकरश्रीगिरिवरधर
अपनाकरफेर्योहयमनपर ॥ हयपथनिवचनकहेजदुनाथा ॥ धर्म
तानकोंकरहुसनाथा ॥ सफलजनतधर्मनकाकीजै ॥ हमरावचनमा
नहिमलीजै ॥ पुनिनाकोंगनधापनहोई ॥ जोहमकह्योकरोक्रमसोई
ऐसेवचनकहेश्रीपतनतव ॥ सुअशरणामकियोहरिकोंतव ॥ पुनिह
यअपनालिंगनिकारा ॥ सघरिषिकरतभयेजैकारा ॥५६॥ दो० ॥ लिं
गनुसंगमहायमहिधर्मजलियहिमधार ॥ कुपरजलढारतभई
हुपटसत्तावरनार ॥५७॥ चौपई ॥ धर्मतानहयलिंगपधारा ॥ वरवत
करीसुगंधअपारा ॥ वंदनचर्चितकियोलिंगजव ॥ अफुलनअधधूपध्यो
मुंगअंगसभ ॥ अगनकुंडपरदहुनाकेहित ॥ पुरितनयरंगमपहधारी
चित ॥ पीछेबलेधर्मसुतनअरुहहरि ॥ फलिधुनकरीतिघनलिहअवसर
तीनलोकहहरखेनरनारा ॥ प्रमुदितसभनकियोजैकारा ॥ अगनकुं
डचौफेरसुरंगा ॥ करीवरहनातिहेउमंगा ॥५८॥ दो० ॥ तीनीअअवर
हुनाअगनकुंडचहुओर ॥ करपरणामसुधरनकोंपुनिताकोनिजओर
॥५९॥ चौपई ॥ बहुरोंरिषनवेदधुनकीनी ॥ तीनलोकसेवाकरलीनी ॥
पुनिहयपचल्योहरषहिपहिनधर ॥ पुनिधरहुनारईकुंडपर ॥ पीछेरि
षधुनवेदउचारहि ॥ निगममंत्रपढयज्ञनपारहि ॥ ताकेपाछेधर्म
सुतहहरि ॥ अपनीओरगयोपुनिहयपवर ॥ बहुरोंसवरभयोजैकारा ॥
॥ बहुरोंरिषनलिंगचर्योजव ॥ कीना
निरखकियोपुनिनिगमउचारा ॥

ਸੰ· ਬ੍ਰਿ·
ਭਾ·
੪੬੯

ਜੈ ਜੈ ਕਾਰਿ ਮਿਲੇ ਸਭ ॥੫੮॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਬਾਰ ਜੀਵ ਸ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਕੀ ਬਿਧਿ ਬਨ ਸ੍ਰਭਾ
ਸੀਨ ॥ ਦੇਵ ਰਖਨ ਦਈ ਪ੍ਰਗਟ ਕ੍ਰਿਤਾ ਚਲਾਇ ਰੰਗ ਪ੍ਰਬੀਨ ॥੫੯॥ ਚੌਪਈ ॥ ਜਿਹ ਸ੍ਰਬ
ਸਤ੍ਰ ਸੁਭਿ ਤਨ ਜੀਤ ਕੁਨਾਥਾ ॥ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਧਰਾ ਪਰ ਫੇਲੋ ਹਾਥਾ ॥ ਸਬ ਦੇਵਕ ਕਲਾਪ੍ਰ
ਬਕੀਜੈ ॥ ਧਰਮ ਜਨਮ ਜਨ ਸਫਲ ਕਰ ਲੀਜੈ ॥ ਤੁਮ ਸਬ ਪਾਨ ਬਲਨ ਮੋ ਬਾਸਾ ॥
ਪਾਛੇ ਚਲੇ ਤ੍ਰਿਦੀਬ ਰਾਜਾ ॥ ਤੁਮ ਸਬ ਦੇਹ ਧਰਮ ਜਪ ਸੰਗਾ ॥ ਜਿਲੋ ਕੁੰਡ ਚ-
ਤੁਰੰਗ ਰਿਤੁ ਰੰਗਾ ॥ ਕਰਤ ਮਾਂਹਿ ਸਭ ਜੈ ਜੈ ਕਾਰਾ ॥ ਤੁਮਰੀ ਗਾਵਹਿ ਮੰਗਲਾ-
ਚਾਰਾ ॥ ਪੁਨ ਸੁਖ ਦੈ ਸਭ ਦੇਹਿ ਅਸੀਸਾ ॥ ਧਰਮ ਜਲਾ ਜਗ ਰਾਖ ਜਗਦੀਸਾ ॥੬੦॥
ਦੋਹਰਾ ॥ ਦੇਵ ਪ੍ਰਗਟ ਕ੍ਰਿਤਾ ਕੁੰਡ ਕੌ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਧਰੋ ਸਬ ਪਾਨ ॥ ਬਹੁਰ ਸ੍ਰਬਾਗ ਤਾਮ
ਧੋ ਤੁਮ ਧਰ ਪਰਵੇਸ ਸਥਾਨ ॥੬੧॥ ਚੌਪਈ ॥ ਜੀਨ ਪ੍ਰਗਟ ਕ੍ਰਿਤਾ ਸਰਨ ਧਰੀ ॥ ਤੁਮਰੇ
ਧਧਰ ਮਨ ਸਾਜਿ ਧਧਰੀ ॥ ਸ੍ਰਿਗਨ ਕੁੰਡ ਮਹਿ ਕਰੋ ਪ੍ਰਵੇਸਾ ॥ ਸੁਖ ਪਾਵਹਿ
ਤੁਮ ਧਰਮ ਨਰੇਸਾ ॥ ਪੁਨ ਲਾਗੇ ਰਿਖ ਬੇਦ ਉਚਾਰਨ ॥ ਜੈ ਜੈ ਪਰਤ ਬਿਗਸ ਪੁ-
ਨ ਸ੍ਰਬ ਬਨਨ ॥ ਜੈ ਜੈ ਹੋਤ ਤੁਰੰਗ ਮਗਨ ਮਨ ॥ ਤਸ੍ਰਤਾਨ ਬਾਟ ਨਹੈ ਜਿਹ ਮ-
ਨ ॥ ਅੰਗ ਅੰਗ ਸ੍ਰਿਮਿ ਤਿਨ ਕੀ ਛਾ ॥ ਰਿਖਨ ਤੁਰੰਗ ਮਧ ਸਕਰ ਲੀਨਾ ॥ ਤਬ
ਤੁਰੰਗ ਤਧਮ ਕੀ ਨਾਮਨ ॥ ਸ੍ਰਿਗਨ ਕੁੰਡ ਮਹਿ ਹੋਮ ਕਰੋ ਤਨ ॥੬੨॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਸ੍ਰਿ-
ਸਟਿ ਧਰੋ ਸਬ ਪਾਨ ਮਨ ਚਲੋ ਸ੍ਰਿਗਨ ਕੀ ਓਰ ॥ ਬੇਗ ਜਾਇ ਤਾ ਤਾਮ ਧਰੋ ਨਿਕ
ਟ ਕੁੰਡ ਕੀ ਓਰ ॥੬੩॥ ਚੌਪਈ ॥ ਧਰਮ ਜਨਿ ਬਿਨ ਤੀਕ ਰਤਿ ਤੁਰਸੇਂ ਨਬ ॥ ਐਸੀ ਕਲਾ
ਕਾਰ ਤ੍ਰਿਗੀ ਧਨ ਸ੍ਰਬ ॥ ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਪ੍ਰਵੇਸ ਸ੍ਰਿਗਨ ਜਬ ਕਰਹੀ ॥ ਤਬ ਸੁਖ ਦੇਨ ਹਿਸ
ਬਰ ਤਬ ਰਹੀ ॥ ਕੁੰਡ ਰੀਝ ਜਬ ਪਰੇ ਤੁਰੰਗਾ ॥ ਤਬ ਚਹਿ ਫਰਕਾਏ ਕੋ ਤ ਅੰ-
ਗਾ ॥ ਜੋ ਸੁਖ ਸਬ ਰਕਤ ਫਰਕੇ ਤਨ ॥ ਪਰੇ ਜਨਮਾਨਤ ਸਾਮ ਪਵਨ ॥ ਜਾਂ ਤੇ ਕ

हो भगवन कों श्रीपत ॥ निहचय बसरज्वाला धारे श्रव ॥ करै प्रहाद्द बने
म प्रकासा ॥ नमष्कि न करै न रंग मग्रासा ॥ ९५ ॥ दो ॥ ना ॥ वैश्वानर प्रगटि ह
रि कह्यो ॥ की जै हम राकाज ॥ नन ष्कि न भच्छन की मिये पर्यन्त के काज
९६ ॥ चौ ॥ ई ॥ हरि वचन तन तभगवन निहकाला ॥ कीनी प्रलै काल की ज्वाला ।
पुन रिष हय प्रभिमंत्र न लागे ॥ भच्छन नग रहि पै अनुरागे ॥ जब सो भगवन
की घोर रुवंगा ॥ सावधान कीने सभ अंगा ॥ भीमसेन कों क्रम तुल्ला यो ।
गी हुन ष इग हाय गहु ल्यायो ॥ वारा किपो ता हुनी घोरा ॥ होमा न
हो कुंड परजोरा ॥ वह्हर बत्नु वाहन नहषकेन्ला ॥ जिन कों हरि करलयो
ह चेना ॥ ९७ ॥ दो ॥ ना ॥ वामघोर वारे किये होइ स्मरवालवान ॥ पनपह
घोरक वेकक होइ रहो सवधान ॥ ९८ ॥ चौ ॥ ई ॥ इउ रिष वालमीकवक
सालभ ॥ पुछ रिषीस्वर तुहि तउठेसम ॥ सो रिष रिष वसिष्ट गौतम पुन ।
इरवाला रिष श्रृक नारद पुन ॥ मारकंडे श्रंग रिष विभुगालवदर ॥ भ्रगु अंगि
राउडे परासर ॥ भगउ नि विश्वामित्र हहसति ॥ शुक्र अगस्ति रिषि विपुनिश्व
लिहर्षन ॥ लीवलोकवे पुछ रिषीस्वर ॥ उठ सकल मन पुहित ननपीस्वर ।
सभ रिष होय रहे त्सविधाना ॥ ताहे ले श्रा लापगवाला ॥ ९९ ॥ दो ॥ ना ॥ जीस
सहह सरिषी जे अवेद पढहि लिहि गैर ॥ निगाम वचन पुन सन चलो श्र
स्व भगवन की आर ॥ १०० ॥ चौ ॥ ई ॥ ताही समै प्रथम रागाना ॥ विधवन नहि पोहि
नन कों राना ॥ पुन हय कोंर पकरी प्रहछन ॥ दुपद हठना संग होइ
पुहिलमन ॥ पुन हय पकेसद्ध परकेसो कर ॥ वडन वेनली करी पुधिहि

ग्रं.मु. र॥ सुनसत्यामाविज्ञीसाधा॥ सुखवरहनपरफेलोहाथा॥ महादेवगव
भा. रीसंगाथा॥ फेलोहाथपलरंगममाथा॥ सुनहकनीसहमनंदलाला॥ फे
८६६ लोहाथपलरंगमभाला॥ ८८॥ दोहरा॥ सबीसहमसुनईहलेकारफेलो
हथभाल॥ सफलनतनपक्षोकरइआनाकरीगुपाल॥ ८९॥ जैमनइ
च॥ चौपई॥ जैसुनकेहैमनइभपलवर॥ जबहथसुखपरकरफेलो
हर॥ नवहिलरंगमसीसहलाधो॥ नवपरमापनिनकुलवलाधो॥
श्रीपतभक्तनवचननकुलपति॥ पहुपगकीलपभाषासमऋत॥
कनकोधमोलरंगसीसधव॥ देषकहोगुरुकोहनोनसव॥ कवत
वानहथपहदेविचारी॥ पगनरकेसोभाकोनिरधारी॥ हमरेहृदेसंदेह
मिटावहु॥ हथपहिपकीविपयगरहनावहु॥ ९०॥ नकुलउवाच॥ दोहरा
नकुलकसोपत्नीकसमवनितपमानवनसमभवान॥ अंतरजामीनामप
समकलजगतविख्यात॥ ९१॥ चौपई॥ नकुलवेनतीवचनकहेतव॥ कं
सआरहमनरिषीनरपतसव॥ जिहनमिमआचेमिरवाना॥ कहेहलतं
नमनइलहराजा॥ हथपचमैंउपमोपरहसाना॥ धननननमसुपना
करगाना॥ कहनहथसुरुअवारनसममसर॥ हथफेलोसुखहाथकृपा
कर॥ सतनगुनगेलाहापरमांही॥ मैसासनलकोउभोनाही॥ इनकेहथन
भईगनलमैसी॥ पैंनहिपावेंगागनलैसी॥ ९२॥ दोहरा॥ बहइहवैहैतरउ
रीनहवेफेरगिनांहि॥ मैंपइगोंमाठोरनिहमनचमनमनगुननाहि॥ ९३॥
चौपई॥ आगेजननकिपेजगमेंजिन॥ कलविनानोधेदेवनजिन॥ हथन

समेत स्वर्ग लेगए ॥ भोग भोगत ते गिरत पुन भए ॥ जत करत बहु फल के
काजा ॥ पावहि स्वर्ग समेत नहि बाजा ॥ धर्म जत परहरहि मति विधाना ॥ आरे
वियमान भगवाना ॥ धर्म तात के रात सफल हिन ॥ करत जत कीरह
लसुहित चित ॥ पाकों हरि श्रपनी गत दीनी ॥ हाथ फेर कहत वा वहकी
नी ॥१४॥ दो० ॥ जे जु हैं यह जत परहर सुन रूप नरनाह ॥ बांछत फ
ल पावो समन रमन परम सुनार ॥१५॥ चौ० ॥ भए सम मन के किल
विषनासा ॥ सफल भई सब मन की आसा ॥ धर्म ग्रंथ सुन मोछ काम
ना ॥ सिद्ध भई मन सकल भावना ॥ पावत सुकत पदारथ चारा ॥ कह
ना की नीलस पुरारा ॥ जो मन बांछत फल मांग्यो चित ॥ सोसो फल मन
छिन पायो तित ॥ मैं पावोंगा परम सुकत गत ॥ यह व वचक हत तरंगम
जगपत ॥१६॥ दो० ॥ सीसल रंग हलाइयो पायन मित्र मित पजाय ॥ लगमता
तत हो सकल विधन कुल कलक सो भगवान ॥१७॥ चौ० ॥ बहुर कहत है हे हू
पहि पहरति ॥ मोरह मारा तनबल गनपति ॥ मार सपावेगा पहत हां ॥ नब
स्वरूप कल को जहां ॥ जिन कान तनिकस कै जावै ॥ मार कल के विषे
समावै ॥ जंनम मरन लिह होइ विनासा ॥ बहुर न होइ गरभ महि वासा ॥
श्रागे भये जत के वाजा ॥ जो गत लिन पाई जतु राजा ॥ सो गत मैं पावों नहि
नैसी ॥ श्रवर हय जगत पाई अैसी ॥१८॥ दो० ॥ रूपत किये उतरे वकापा
ईहिर पुर ठौर ॥ सो गत मैं पावों नहीं जो गत पावत श्रीर ॥१९॥ चौ० ॥ उ
न जतन मैं न बहुते श्रीपत ॥ तातें उन पाई अैसी गत ॥ धर्म जत महि हि

च॰ सु॰ सिसबिधाना॥ दूरलवंनग्रापभगवाना॥ सिवदिवरंचत्रिपनतनहिकी
पा॰ नो॥ वहलोतरगुणमैंहैंलीनो॥ आपतभएलोकुडनकेलिन॥ फलके
८३९ नमितमनकीनेजिन॥ गुणाधरजनतनेईकरगए॥ तेहारघुरकोंआपत
भए॥ करतानतलरंगसमेला॥ तेआपतभएसुमरनिकेला॥८०॥ दोहरा
मैंवहगनपावोंनहीसुखकहतनमननमोहि॥ जनककरतहैधरमसुनतक
लमोगनककुनाहि॥८१॥ चौपई॥ धरमजनतकरतनिहकामा॥ संकल
पेगाकरभगवाना॥ सोप्रभुसरबगुननतेंन्यारा॥ सबनामीगनसुपरस
पारा॥ निहकामीरुपधरमभगवनहरि॥ सतपुरसमनसेगाहरकर॥ अ
तपुरनहरिलिवहिगेनव॥ सपतीगनपुजरहेवहिगेनव॥ सपतेनन
पुफलेहिसमाई॥ पावैंउनमगवननहिकाई॥ तांतेंसुखप्रनतहेसीसा॥
नकुलकहेंसुनप्रभुजगदीसा॥८२॥ दोहरा॥ जेपुनकहिसुनहोरुपत
भयोतिरेहतरंग॥ बसोसुगनकेकुंडपरअतिहरखलसोगसुंग॥८३॥ चौ
पई॥ वैसावरकोंकुलकहोनव॥ पहाप्रबलकीजेसबलाग्रव॥ हरिव
चसुननवगनवनिहकाला॥ कीनीप्रलैकालकीज्वाला॥ पुनिलागेसु
भिपंडनपुनिवर॥ पटसबकुलतडारनलरंगपर॥ अगनपरनकोंचलो
तरंगा॥ वेरमंडसवनतिहेडमगा॥ कुलभीमबलिवंचनवधाना॥ वर
गलिपेरहिवोसबिधाना॥ धमरिषवकरिवकरालभ॥ डतेमह
नरिषवीसमहसनव॥८४॥ दोहरा॥ वेरमंडपहमारहीरिषसुकत
हपसंग॥ अगनकुंडमहिपरनकोंहरषतवसोनतरंग॥८५॥ चौपई

धर्मरिधीआतमाहरिलीनी॥ हरिऐतहूंकहनारिषकीनी॥ रिधीमरोरे
हरिपकेकाना॥ निकसीहरिपधारसवधाना॥ निकसीहरिपअवननप
धधारा॥ सभलोगनकीनोजैकारा॥ हरिरिषिनिरपअवरजमनभए॥
हेषनहींविसमेहूंगए॥ भयोहरिधरनेंहरिपअस्वनन॥ धन्यधन्यसभक
हैंसामहन॥ ओतननेंभयोहरिपअस्वनव॥ निकटकुंरनवभयोका
ननव॥ ८६॥ होरा॥ कहनाकरहरिपवरहनपरकरफेलोदनसाम॥
हरिपनहिपेनरंगनवहरिकोंकिपोप्रणाम॥ ८७॥ चौपई॥ हरिप
लोहरिपअगननपंजान॥ पुहिनकिपोलोगनजैकारा॥ आसाकरनभ
पननदीसा॥ काहहुभीमनरंगमसीसा॥ भीमअसकासीसहलारा
सकलकवंधभयोवनमारा॥ असमीसहउगयोअकासा॥ हिअकों
नजगमगनअग्रसा॥ सीसससमायोहरजमहिलव॥ असकवंधक
हूरभयोसभ॥ निहकपरकोंहोमनलागे॥ हरिरिषनरपनहिपेअ
चुरागे॥ ८८॥ होरा॥ निहिअवसरत्रैलोकमहिहोनभयोजैकार॥ आ
परहीचौरहभवनमहासगंधअपार॥ ८९॥ चौपई॥ हरीसगंधम
महप्रकासभवर॥ हूररहोअलेंहसगंधकर॥ सातदीपनवषंडजग
नसभ॥ आपरहीसोभाजलथलनभ॥ नपनभयेसभलोगनगंधसों॥
स्यावरनंगमसभउमंगसों॥ पुन्यसंपूरनधर्मधुवाला॥ कीनासफ
लमंरकेलाला॥ पावककुंडहेहजोजनपर॥ सभकपरसोंअरर
सोभर॥ औंसोंहोमकरहिनरिषनव॥ धमनारनअसोंहनिकट

मे॰ श्रु॰ तथ॥१९॥दोहरा॥त्रिपत भए सभ वासकर भातदीपत नव षंड॥ जैसे का
भा॰ रजैसे सकल सुरराज्यो ब्रह्मंड॥२०॥चौपई॥कुलधर्म कों दई बडाई॥प
८३८ र्म अपलोचरनन सुराई॥दुरजोधन हैं पदी भई मन॥पालोसी सक
लकेचरनन॥पुन धर्मनसुष वचन उचारा॥सफल जनम भयो किधो
हमारा॥दई विधाई सपनन धर्म ब्रति॥जेतक धेतिष विविध मही पवि
भए ग्रथंन मानवै लोगा॥मंगल भए विनसे रोगा॥सुगनकुं दकों
दई परछून॥प्रसुरिलनहू देन सगुन हकमन॥२१॥दोहरा॥करष
रछुनाकुं दुजनतु परहुता असंगराज॥कहत नपरसरहर किधो सक
ल हमारो काज॥२२॥चौपई॥पतिह पाछे अनेक रथवी पत॥कीनी कुं
दपरछेना हरषत॥करतकुं दवंदना जोरकर॥आपनभयो जोदकों
छुन बर॥तीन बेर दीनी परदछुन॥सभनकुं दचो फेर मुदित मन॥कुं
ती सुत दोपदी जुधिष्टिर॥भीमसेन सहत विजे मुदित उर॥नकुल अव
रसहदेव विवछुन॥सकल परेभी पतके चरनन॥पुनकर जोर धर्म को
ताता॥विनती करी सुनहु जगताता॥२३॥दोहरा॥करन करावनहार
तुम जगत ईस महराज॥दकाली भरन किधो सुम सम धन कालकाम॥२४
चौपई॥गोसंग्यान कारोष मित पो॥गुरसुरता हयन तवगापो॥कपाक
रीदुरजन नम कीना॥जगत मोहि हम कों जस दीना॥कोटन जनम अघ
किये विनासा॥कीना सुरतन पुन्य प्रकासा॥तुम महरस नतें भए कलतार
या॥सिह भयेह मरे सम भलारस्या॥तीन लोक के हारि धरामा॥तिनका

ररसमधोनहुराजा॥ हेषेवेसव्हुधगतनत्लारे॥ लुमकहलावहभागह
मारे॥ ९८॥ दोहरा॥ लङ्गाराषीविररकीशुरूमलकलमनाम॥ भक्रवकुल
लुमकोंकहन समवचनतनरूाम॥ ९५॥ चौपई॥ पहवचकहनधर्मम\
पाला॥ लागेवङ्करचरननंदलाला॥ महाश्रनंदतमधोधर्मतन॥ कह\
नाकरीकृपालकृपानुत॥ धर्मनभोजनसिद्धकरायो॥ रिषनस्पनकों\
शुहितनिवायो॥ जितनेलोगनरेहलनपुर॥ सभकोंदियोश्रहारनुधि\
ष्टिर॥ राजाप्रजासकलनरनारा॥ धर्मनसभकोंदियोश्रहारा॥ ९९॥ दो
रा॥ वङ्करहितनकोंरहूनाहईनुपिछिरराइ॥ हनाकीनीवेरविधहर
थहितेंतषपाइ॥ ९९॥ चौपई॥ चौरासीसहहसमोऊमुनिवर॥ प्रथमेश्राइ
नरेपेमषपर॥ तिहउपरांनलाषइकश्रासन॥ धायेपेमषपरहरषत
मन॥ विधावानसकलषरकरमी॥ इंद्रीजितहरत्नुधहुधरमी॥ श्ररती
श्रुतनश्रवरश्रनेका॥ तिनकाकिधानन्नारविवेका॥ सबधर्मनकेकारन
श्रहारा॥ रिषवहितनकोश्रनेनपारा॥ चौरासीसहंसरिषमोऊ॥ वरेप\
धानसभनमैंतेऊ॥ १००॥ दोहरा॥ सहहसचुरासीरिषनमहि बीससहहसत्र
धान॥ मिनवांधोकरत्नपनके कंकनवेरविधान॥ १॥ चौपई॥ श्रोरिष\
वीससहहसप्रधाना॥ तिनकोंदियोन्त्रपनवङ्कदाना॥ इकइककोरिषन्त्रप
सानरिषोतव॥ लतनकूषवनरेवर्नतहांसव॥ एककलाषगोरईहूपषु
न॥ कंचनसिंगरूपषुरश्रग्रपुत॥ तावृपीठसंजुतसभवरनी॥ वङ्क
सहहसरीनीवयतहनी॥ दसगनहसरषदसलरंगवर॥ कंचननीस

871

भा॰ भ॰ भारदीनेभर॥ हृपगनरपग्रसवावसंगाषा॥ पर्मेज्ञहिपेवेरविपसा
भा॰ घा॥ ५ हो २ ॥ चौ॰ सठहिलग्रवरेजोकमुनिवरमहांप्रधान॥ एकसार
८२८ षीरदूनालिनकोंरईरजान॥ २७ चौ॰ ४ ई॥ गांइएकसौवेदविधाना॥ द्विार
एकसौश्रुतिवलवाना॥ इकसौरपषैपिकल्परंगा॥ एकभारकंचनतिह
संगा॥ इकइकरईरतनकीमाला॥ हरषतहियेंपर्मभूपाला॥ इकइक
रिषकोंपहनपहीना॥ कहिसुबहुलरिषवनसभलीना॥ पर्मेज्ञवढ़रि
षनपगलागा॥ विनतीकरीहियेंग्रनुरागा॥ तापाछेंपर्मनभूपाला॥ वै
ठोजहांग्रतकीसाला॥ ५ हो २ ॥ मणिमुकनाहलकोनहांपर्मजकिवो
श्रृंगार॥ जोचाहेलेवेसोईनपनकह्योहिंवधारष॥ चौ॰ ४ ई॥ मुकनारतन
जोईजिहभायो॥ मुदितमानतिहसोइउठायो॥ जोजोजिपमनसाधरग्रा
ए॥ सोईतिनकोंफलपाए॥ दीनाविधवनसनमुधिष्ठिर॥ किपेव
मत्रिरिषीश्वरमुनिवर॥ प्रथ्वीकिपोजनमेजेनपतव॥ पहकतोनमुफक
हेजेमनसव॥ पावकतेजगवलनिहकाला॥ कीनीवलेकालकीज्वाला॥
कैसेंग्रगमकुंरमधगपो॥ ग्रगनरहतनजासनमयो॥ ५ हो २ ॥ सु
मतहरकहनग्रगनमहिनजालोकनतार॥ नहिंगेलोवोलोनकहुमे
पनकहृप्रगदार॥ ५ ॥ चौ॰ ४ ई॥ संसैएकमुवरहमरेमन॥ कहोप्रगटहन
होरिषभुवनन॥ ग्रगननलोकनुरेगनमुरवर॥ हृपगनरयमुरतिष
रपकार्नर॥ कैसेंतिनकोंदियोग्रहारा॥ सभकोंपर्ममानइकवारा॥ वि
धाकिवेरिषनपनिहग्रवसर॥ जैमुनमुफलोंकहोहमपाकर॥ तापाछेकी

नाहरि जैसें ॥ पांडु सुतन सों भाषहु जैसें ॥ कहहु तात सब परिचय परथा
उ ॥ पूरब कहे कहत गो भाउ ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ इति श्री भागवत पुर्ण लिग्रघ मेप [illegible] ॥
दकुदहन ते प्रभाव प हरकंस वध नाम ॥ ८५ ॥ अथ नव अध्याय चौपई ॥ जैसु पूरब कहै
सनकदपधवीपन ॥ उग्रसेन सबके हित हों तमधन ॥ होम्यो सुगग नन्द रंग सा
पकों ॥ पनन बचन क्रम हरके प्रनापसों ॥ गाढे जहां सुपभगवाना ॥ नन्द लत
वंनकसम विधाना ॥ पवन पर्म को स्याप रखो हर ॥ श्रीपति सवदास हार
सुधिद्ध र ॥ फेलो हयपर हाथ रूप ाकर ॥ श्रवविदेह यपोलि हम्यवस
र ॥ लेजग्राग नकोन लसमजाम्यो ॥ तांलेंहय पलिपग्रासन माम्यो ॥ ५ ॥ दोहरा
नेज कसल कों ठौरस भ नहलन हरव्यो समार ॥ नेमनल रंगमसुगनकासम
सरलि पोपिलाइ ॥ ५ ॥ चौपई ॥ जो कछु क्रिपाव है नगलाला ॥ सुचरनक
होलकृपहवाला ॥ पुनरिषकरन उचारनिगमसभ ॥ वालमीक स्यादक
वकहोलभ ॥ वेदमंत्र हयवस करलीना ॥ तांतें सुमसवरनहि कीना ॥ र
क्षा श्री भगवन की जैसें ॥ हपहि पहर्व करीविधि जैसें ॥ सभ उर महिमा
पकति रधारी ॥ लिहतें कोउ औरन हिमारी ॥ जो हरि विकरत होन है सोई ॥ आ
तामें रसकलन हि कोई ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ जो रच्छा गिरधारि की सो इकर नहि
नमांहि ॥ करन करावन हार हरि तांतें सुचरनमनाहि ॥ ६ ॥ चौपई ॥ पुन
रपन्नप मकीविधि जैसें ॥ होतर सोईहकनरकै सें ॥ कैसें करनसमग्री
नितघलि ॥ सावनवी मनल लाबरसन ॥ नितहिं मनकरनेचौसव
विध ॥ तेलपाक कछीस करतसिध ॥ पुनचालनपाक पकसोपका ॥ नाका

मे॰ मु॰ किधानन्माइरविवेका ॥ नंदूलाहि सभसि हंग्रनामा ॥ निलप्रब्र बनत
भा॰ रसोईराजा ॥ पंचाय तन ग्रलि पावन मन कौं ॥ पुष्प हृद पकौं पाक समन
८३९ सौं ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ उज्वल षीर हिये रुचव तन्ना भावे हंस मान ॥ षट रस भोज
न रूप तन गृह हरि सिद्ध होत निलपान ॥ ८ ॥ चौपई ॥ रुर जनै ल्याय वरलोही
विपसौंराखी ढीच रसोई ॥ हां वे जो उपरोसनहारा ॥ जो लग ग्राप नले
नसहारा ॥ ताप रत्नुप हलनावर नारी ॥ वे वरसोइ परोसनहारी ॥ ५ ॥ सब
कौं वां कुल देलग्रहारा ॥ षटरस भोजन विविध प्रकारा ॥ प्रथम ग्रहा
र समन कौं है वै ॥ ताप ठै निज भोजन लेवै ॥ यह प्रकार भोजन सब क
रही ॥ पुष्प ठैं जैं जैं सब वरहउच रही ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ जो विप रवै प्रकाश नवर व
रनहि राजनर सोइ ॥ कुरम्यय वदरो नेऊजन तन ल्यावत सोइ ॥ ८ ॥ चौपई ॥
जै पुन कहे सुनह भूपन वर ॥ पकुत पाल मरम्य रूपाकर ॥ उजर ल
मकौं मैं भाष्यो सब ॥ लिहउ परां नकपाकरिहौं प्रभु ॥ हे रद्धनारि षीके
वेरप ॥ यह राय तुन सकल नराधिप ॥ उनपर्म जकी जो ग्रसनाना ॥ त
नइलत्तलप हरे विधनाना ॥ क्रूसवरन कौ ध्यान हिये पर ॥ रूप तन न त
फल मन सरीच हृदय ॥ नन मन धनसब समर्पणा कीना ॥ करसं कलपहाय
हरिदीना ॥ ९ ॥ दोहरा ॥ हरिकरमन सोनन्त फल पुहिल युधिष्ठिर राइ ॥
पुन सिंहासन धर्म सुत वैजो हिय वहषपाइ ॥ १० ॥ चौपई ॥ प्रथ्य मे धर्म
प्रनाकर रहति ॥ प्रभु दित नकी ने हिये हेलपति ॥ हरि कं कनवा ध्योर
पहाथा ॥ राख्यो हृदय धर्म के माथा ॥ यहराईजर सोन नमाता ॥ वंजर

करहवांधोभूपाला॥पुनहरिधर्मजकेपगलागा॥धकेवत्सलहिय
हरिअनुरागा॥धर्मतानवपगकमलपलोजव॥अचरजभएनिरषतिरिवि
रूपसभ॥तीनलोककेनुरेमहीपत॥तिनमहिकोउनसमसरथीप
ते॥११॥दोहरा॥धर्मतानकेचरनपरसिरनाओजगदीस॥ऐसोकोन
त्रिलोकमहिजोनहिनावैसीस॥१२॥चौपई॥सेससनागभेरसमगलगा
धो॥धर्मतानकेसोसीसनिवाधो॥कोउरूपछिररहभेरलेआवै॥आरथ
र्महनसीसनिवावै॥कोरपस्यावैभेरलतरंगा॥कोउस्यावैरपदह
रउमंगा॥कोउल्यावैकंचनमुकलामगा॥लागहिआरधर्महन
चरनन॥पुनआग्याताकीनीवंरलाला॥सवनहूधर्मजसरचनभूपा
ला॥जेतकलोगजनसपरआए॥तेसवअवचहिपेपहराए॥१३॥दोह
रा॥धर्मतानतुमजनपरआरगुरुदैलोइ॥भेरहीनिजेपसभनकों
जोजिहलाइकहोइ॥१४॥चौपई॥पुनधर्मजप्रतिवचनकहेहरि॥ह
नकुम्रवनरेमोउपजीउर॥कतुनभेरइनकोंदेहोंहम॥सभकोक
तेंसनाथहरुसम॥हनुमतकोंहरिआग्याकीनी॥तिनकोंसववविपव
तारहीनी॥सोमवेलहैद्रोणागिरपर॥ताकोलेआवोइहअवसर॥आ
ओरसअवचवतअघनासहि॥कोरमननमकेकलविघनासहि॥नत
तिनहनुमततहांचलगए॥द्रोणागिरपरआपतभए॥१५॥सोरठा॥सोम
वेलल्यावतहोंरसकाढोतनकाल॥लेअवचवापोसमभनकोंआता
सोंनंरलाल॥१६॥चौपई॥सोमवेलकाजलतिहअवसर॥अचयोम

अं॰ अ॰ भवग्रागणाभानीहर॥ यहीभेरदीनीजड्डगल्ला॥ पूरनकियेसभनकेका
भा॰ मा॥ जोजैसीमनसाधरआयो॥ तिहतैसोवांछलफलपायो॥ निरमलदे
८५० हीभईसभनकी॥ अभिलाखापूरनभईमनकी॥ दीनीअैसीभेरखापन
सभलोगनकोंदईपरमगन॥ यहदरयुधिष्ठिरतिहंपेंभाइधर॥ दीनीभे
रसभनकोंहितकर॥ २॥ सो॰॥ रूपलयुधिष्ठिरभेरदेलोखकियोसभ
लोग॥ जोजैसीलाइकहुतोसोदीनीतिहजोग॥ १५॥ चौ॰॥ ताकोंभेरउ
चतपीजैसी॥ ताकोंदईयुधिष्ठिरतैसी॥ काहूनपकोंखचतपुकरम
णि॥ काहूकोंकंडलहुवरहिनमणि॥ काहूकोंदियछत्रविसाला॥ कि
नहूकोंगजमोतनमाला॥ किनहूकोंपीचीकंकनकर॥ किनहूकोउ
हिकाजरदतवर॥ किनहूकोंदियसखविविधगन॥ किनहूकोंइकल
मनहरखत॥ आपजेउजगपरलोगा॥ सभकोदियोहुतोतिहिजोगा॥ १४
सो॰॥ धर्मनाजअपरनवसनदियेअनेकप्रकार॥ लोखरिखगामेस
कलवहुतनकरीमनुहार॥ १५॥ चौ॰॥ रिखभूपननसभभरपुरिलडर॥
लागेकरनसंकीर्तियुधिष्ठिर॥ पुनधर्मजमुखबचनउचारे॥ मनव
चक्रमहमरासलुलारे॥ तुमहमकोंकरलियोसनाथा॥ मोपरकृपा
करीजदुनाथा॥ आगेजतनभयेविसालवर॥ यहमखतुकनहीउरि
समसर॥ आगेजसनामकियोजैसा॥ यहमखश्रलपहोइनहिजैसा
महाप्रतापजतरघुराई॥ इकइकरिखवसिष्टकोंजाई॥ १६॥ सो॰॥ आ
गेनलवरेकियपतिनकामहांप्रताप॥ यथासकतयहजतहरिकियो

कृपाकरखापे ॥२२॥ चौपई ॥ आगेजनमभयेविखाना ॥ पतहमाराकिं
चितमाआ ॥ हमरेमनमकोजमसवरनक्रकल ॥ उपमाजोगमतकिय
रतुपत ॥ मुहहेविवेदिविवकरालभ ॥ जिनकोदेखतजनमकियेसभ
वरनकियेवरननपराक्रम ॥ तिनकेआगेजनतनछहप ॥ हमको
येवलहीनस्रनाथा ॥ कृसकृपाकरभयेसनाथा ॥ पहजोनतआ
पकीनाहर ॥ हमकौंजसतजगहीनकृपाकर ॥२३॥ दो० ॥ धर्मनामकी
विवैतनतिघरपभपरकृपाल ॥ सुघसभहंलागेकहनपमधर्म
भपाल ॥२४॥ चौपई ॥ ववनकहतभैहनहद्रपुधिष्टिर ॥ प्रपमेलोस
हाहठमपरीहर ॥ आगेजनतवहनकेभप ॥ सतजुगत्रेतामैंकरग
प ॥ वहुजनजनहोतेतिहकाला ॥ अवहापरकाअंतनधवाला ॥ धर्मवा
नसभलोगहोनतव ॥ कलजुगलागोआरम्भपतमुव ॥ अवसमसमेम
ललमकीना ॥ भवनचलहँग्रमैंजमलीना ॥ सफलजनममनुमपाअ
वभयो ॥ भनकासभसंग्रमविहगवो ॥२५॥ दो० ॥ पततकिपोकलि
आहलमपूरनधर्मभुवाल ॥ विघमावकाटेजहांरहकनपधुनंर
लाल ॥२६॥ चौपई ॥ सतजुगत्रेताहापरमांही ॥ ताहिनक[illegible]
पहहोतककुनाही ॥ ऐसेजनतभयेपाछेनव ॥ तैसेजनतसमावनहीं
अव ॥ कलजुगआरम्भंतअववहापर ॥ पततसितेमताकीकृतनुपिष्टिर
अनतसफलसंसेसभगवी ॥ कृपाधातिहहरिलमजसरपो ॥ रूपत
भपवोरहमवलंडा ॥ तीमलोकरूपतेनवर्षंडा ॥ महाप्रसन्नवैस

गो॰ कृ करलयो॥ तीमलोकनृपराजसभयो॥ ५२॥ दो॰ हा॰॥ सफलजगतके
भा॰ मराभयो हरिप्रभुकरी सहार॥ सावधान ठाढे भए कहत गोकर्ण
५५१ दुरार॥ ५५॥ चौपाई॥ बहुरयुधिष्ठिर वचन उचारे॥ सुनहुरिषीश्वर ब
चन हमारे॥ मैं नृपसों कंचन हि पोहाना॥ अपना करके वेद विधाना॥
सकल लक्ष्मी महल राजनकी॥ दरीद्रलीपर जनजहाजनकी॥ वेदव्या
समोकों कहि दीना॥ तो मैंने कछु हाथ नलीना॥ जनम मनोरह समन कि
येजब॥ करयोहित जबकोंमन हत नष्ट पतन भव॥ ले जाब इन्द्र सम पहर कंचन
सब॥ संध्याकरब नहिं हे उदासन भव॥ ५१॥ दो॰ हा॰॥ कंचन ले हित जव र
बले सेवक सब कोउ जाइ॥ जो न हित सकों उनायधनका राग नहि कि हे
जाइ॥ ५६॥ चौपाई॥ व्यास वचन में किये प्रमाना॥ कंचन जाइ उ हां ते आ
ना॥ तो इह व्यदान में कीना॥ अपना करनुप कों मैं दीना॥ यह तो है
सभहरवल लाना॥ कैसे फल है पुन्य हमाना॥ मैं तो कहूं जी तब हि स्या
मो॥ पराभू सम परजा रउ का पो॥ मोपच में संमान हि जाई॥ को ते सम
कहें ति छ नाई॥ मो सें कहें जप्यार पथाना॥ निहने होइ सकल कुस
लाना॥ २॥ रिषी छ र दत्त व॥ सो॰ हा॥ सुन इंद्र पत पावान कों संसा ले
इन माज॥ हम कों जाइ कीस धुव पारस राम हर इहां न॥ ५२॥ चौ॰ ई॥
ब्रह्मणलो वल हीन भिषारी॥ रूप वलवान महाधुनभारी॥ हमने
वहुदान कीव लीवी इन॥ विप्र नदा मकरी तिहि पुनजन॥ नरस्रिम
नई मरी न विहि भई॥ जप पिता र दकीन हुर ई॥ यह नर रूप जहत कर

नहिहीना ॥ सकोउ ताइसोइहमलीना ॥ सोइहपासोजोहमलयो ॥
रहोत्वहपवीपनकाभयो ॥ पाछेजोहपवीपनहोई ॥ सोसभहयलेन
हैसोई ॥ २२ ॥ दो० ॥ जेतककपनहैमहीपरहपवीपनकाजान । संसयह
रकरोत्नपनवेरववनपरमान ॥ २४ ॥ चौ० ॥ सफलदानरूपभयोल
त्यागा ॥ समसमावलेवचनहमारा ॥ सावधानठाहेजइराई ॥ सोधर्मजन
महासककहाई ॥ रकरूपराजकरेमनपावै ॥ सर्वसताहिग्यवरस्पषा
वै ॥ नृककत्तुसपहाउवभयपनकी ॥ विलसतहमोग्यनहर्षवंहीं ॥ ग्यव
घृवेवीपनलमरहकाला ॥ संसेहरकरद्दभपाला ॥ तमराजतस
फलराजाना ॥ जाटेजहांकलसविधाना ॥ २५ ॥ उप्पिह रेइका व ॥ रोहा
हपतोहैवलहीनग्यनकाहूं नपावनमान ॥ हपवीपनकौरवइलेइर
ओपनवलवान ॥ २६ ॥ चौ० ॥ पुनहमनिरधनहोनग्यपीना ॥ विंताव
ग्यात्नरङ्घहीना ॥ सगानहमराकोउहोतनव ॥ करतनिरादरलोक
निरघसव ॥ कहनाकीनीश्रीगिरधरघुन ॥ हपकौंग्यारहिघोइषीम
व ॥ श्रीपनग्यपनाविरहसंभालो ॥ हमराङ्घमनमांहिविचालो ॥ प्रप
मेहरिवलिभहपठायो ॥ कृपाकरीहलनपुरग्यायो ॥ पांचपंपहमकों
लेहीने ॥ २७ ॥ दो० ॥ हलग्यापुपसोंवलन
वहिपरवीलईउठार ॥ हरग्योपनतेंहलधरलीने ॥ पांचपषनवंहीरपे इरग्योपनग्रमपाइ ॥ २८
चौ० ॥ उवककहनाकरश्रीपनग्यायो ॥ पचनराजसतपहिरवाचो ॥ रकी
सौंकीनामहाभारथ ॥ सिहकिपेहमरेसभसारथ ॥ पुरस्थारनघुनप

ज·अु
भा·
५८२

हूबनाथो ॥ अुसुमे पवरन जनकराणा ॥ जिहूबसाद दरसन दलभ भयो ।
वरनपरस गुरु संकट गयो ॥ वडूलगौर अुपदाहू मपरी ॥ करुनाकर
गिरधर सभ हरी ॥ दरवासाको आपनि वालो ॥ लाणगहू मैंजरनउ\
वालो ॥ ३१॥ रोहूरा ॥ जहां कहां रक्या करी हूमरी श्री भगवान ॥ बिलम
न कीनो एक कछिन अुपना बिरद पछान ॥ ८१॥ चौपई ॥ करन कनावन
हार गुपाला ॥ कीनो जनत आप नंदलाला ॥ अुअु अुगन गरास कीनाजन\
व ॥ निकसो जनमल रंगन कोलव ॥ नमसमहि आइ समाना ॥ पम
सफल जन वही हूम जाना ॥ हानउत्र अुभकर्म सोदव ॥ भृंगी कारेक\
रनाको हर ॥ सफल होन जपनपत्रल सभही ॥ मान लेन रुचसों हूर
नवही ॥ करन अुदं हुनसो जोदराना ॥ सोन हिमान लेन भगवाना ॥ ८\
रोहूरा ॥ जनहोम जपनप करन सरपासों रुचमान ॥ हान करनहि\
पभाउ धर मान लेन भगवान ॥ ८२॥ चौपई ॥ जो नहि मान लेन जनदरा\
ना ॥ जनहोम नपनप किह काजा ॥ अुपना जनत आप हरकीना ॥ अुअु
समाइ आप महि लीना ॥ महारिषी अुररनपन मनै से ॥ दरसनपर
सपवे अुववैसे ॥ भृंगी कार करन हरिनाको ॥ सफल जनतत्र जनपन
पनाको ॥ जनपलगीपन सविधाना ॥ लेन देनहारो भगवाना ॥ धर्म
न वचन कहे परभाउ ॥ सोउ मनअसो पूरन ध्याउ ॥ ८३॥ रोहूरा ॥ इतिश्री भा
रथपर्वले अुअुमेप अध्यानाम ॥ रोहू सअसोध्याउपाद ॥ हूकन पूरन माना ॥ ४५ ॥ चौ
पई ॥ जैपुन कहे सन हृदय ववीपन ॥ सनन्रप वचन भखरूप हर्षन ॥\

रिधीसरीरोंपुनवचनउचारे॥ सुनहुधर्मसुतभगतनुसारे॥ कलिके
आदिनतनमपकीना॥ तीनलोकमहिसुमनसलीना॥ सफलभयोअ
मनतसरामाना॥ आदेजहांकलससविधाना॥ इहपीछेपुनजनतनहोई॥
कोइउपाइकरैजिनकोई॥ कलिमहिकंन्यादानमहांवर॥ पुन्यहोतइह
पकुतकेसमसर॥ ६ दोहरा॥ सरधासोंकलिविपसहितकरहिकन्यका
दान॥ कलिमहिश्रेष्ठपुन्यपहअश्वमेधपरमान॥ ४ चौपई॥ भाउर
हतकंन्याकोदाना॥ पुन्यनफलतधर्मकीहाना॥ संसाकरतजनमनके
देदे॥ कहिकंन्याउपजीअहमेरे॥ हमरीलक्षवक्षतलेमाई॥ चिंताकर
मनमैंपछताई॥ तोतेपुन्यफलननहितिनको॥ यहविचारउपजो
जिमजिनको॥ पितरहंइजेसेजगभरई॥ तिनसोंकोउश्राद्धनहिकरई॥
काहूकोपितरुधातामरई॥ ओनहिकर्मशीतश्रत्तसरई॥ ३ दोहरा॥ कपा
कर्मकीनानककुजगतिहकरतप्रकार॥ सुननिंदाअपनेअवनमन
महिकरतविचार॥ ८ चौपई॥ कपाकियेविनरहिनहिआवै॥ जग
महिलोगअकीरतपावै॥ सरधारहतआपनितकरई॥ ताकीलोग
अकीरतधरई॥ नहींपचवतअहारपितरनको॥ ओरइकरतहैअैसे
मनसों॥ पितरहंइपाकोउच्चरहीं॥ सरधारहतआपजेकरहीं॥ तैसे
हंइकन्यकादाना॥ जनमनतहींसंसाजिमपाना॥ कतमनमीकी
नाधनहाना॥ सुतादानदेजिमपछताना॥ ५ दोहरा॥ भावरहित
मोरेवहीआइकंन्यकादान॥ ताकोपुन्यनफलकछूमनवचक्रम

रा॰ उ॰ त्रिपत्राण॥९॥चौ०ई॥सात बरष की कंन्या होई॥आहहानदे वैलिह कौ
मा॰ ई॥ रहत कलना हृदे भाइ धर॥ लौ बहु हान पत के समसर॥ सरधास
५५२ हृन कंन्यकारा ना॥ पुत्र फल न नमो जनत समाना॥ कलजुग महि कंन्यादान
पतसम॥ समबचन मानहु मन बच क्रम॥ बहु रिषन बच कहे धर्म
ब्रति॥ कलजुग भार जनत किये विधवन॥ पुत्र कव्यो प्रमान भयो
प्रव॥ कलजुग पाक रत फल भयो सम॥५॥दो०हा॥ तुरु पराक्रम कुस
लवहि बरनहिंगे कलि मांहि॥ प्रवर बलि त्रैलोक महि इन के सम स
रनाहि॥८॥चौ०ई॥ तुम सार बाजत रहलोई॥ पाछे भयो न आगे होई
कलि महि बरनैंगे होऊ बाला॥ लव कुस तुह जनत जम ताला॥ उपमा
नोहि पतत की पानें॥ कलि के भार किये तुम तानें॥ तुमहीं पेसहा रज
इ राजा॥ तानें भयो संहर न काना॥ पहलो बालक कव नप्रच रजप्रत
कलजुग भार नतभो विधवत॥ कलजुग कोव रतानें बुधिष्ठिर॥ पू
बलेहु भाव वहिंगे सभ हर॥५॥श्री भगवोवाच॥दो०हा॥ कलजुग कहे हत
परपत्नन समकहत निवार॥ कलजुग महि अपराध बहु मत कि
पो नहि नार॥५॥चौ०ई॥ सुन धर्मज्ञ कलजुग के लछन॥ होवहिंगे स
भ लोग कपट मन॥ पतना मले वैन हि कोई॥ जदपि महा साधमन
होई॥ नन रहैंगे कलि की रीता॥ हरे अधर्म पाप मों प्रीता॥ बरनहिंगे
विषपन के मांही॥ गो ब्रह्म साख मने हि न नाही॥ कैगा ही न भगवान धर
नपर॥ उपमा वहिंगे को रजन न कर॥ होवहिंगे सभ नर पतन इषपन॥

पीरहिंगे सभ अज्ञा अघ छुअन ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ कपट हृदै सर धार हत\
सब मघहिं अलि अभमान ॥ भलान रे षम के किमी अलि अधर्म अज्ञा
न ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ सुनहि न वेद पुरान पंडितन कौं मानै नहीं ॥ हर जन सहु
नहिं न कान न हृदय भोर न नाचहीं ॥ ८ ॥ चौपई ॥ कीर्तन कथा सुनै न हि
काना ॥ नर वे वेल करहिं मरयामा ॥ वेस्या रखी नाम सी लोगा ॥ दिरे क
लप नाचिल पनसोगा ॥ वसन पहरन गभले कहावहिं ॥ कामन वि
वगन कान्हृहजावहिं ॥ कलमहि हैं न पतिव्रत नारी ॥ होवहिं गीस\
भतिच विभचारी ॥ परपुरुष हिं ड अपरिषावहिं ॥ पाप बुद्ध न\
हिने कलजावहिं ॥ परनर भोग हितन अपने पत ॥ पतसों वैर अव
रपुरुषनरत ॥ ८७ ॥ सोरठा ॥ हाव भाव पर पुरुष सौं मोहत करत सिंगा
र ॥ लाज रहत न गृह गृह फिरहिं ऐसी कलि की नार ॥ ८८ ॥ चौपई ॥ पुत्र ऐ
सेत हुन कलि मांही ॥ पुत्र पिता को मानै नाही ॥ पिता पुत्र तन न व हुक
रे तन ॥ तत पहर न डरू लन न चौतन ॥ रष्टी जिन डप जहिंगे नाता ॥ न
हिं मानहिंगे वव पितमाता ॥ तज रेवहिंगे कुल की रीता ॥ सदा पाप\
रत वुध विपरीता ॥ नित प्रत निंदा साध ड वरहीं ॥ द्विजन कौं उपमाव
हकरहीं ॥ नरपरत विभचार करनहित ॥ भलान का हकों वांछहि वि
त ॥ ८९ ॥ सोरठा ॥ भ्राता मानहिं नारकी तज रेवहिं पितमात ॥ कलजुग
महि सुन हो नृपत ऐसे जन वसहि तात ॥ ९० ॥ चौपई ॥ खेती वोवहिंगे\
ब्राह्मण तव ॥ चार वरन को दान लेहिं सव ॥ लेवहिंगे ग्रह सूतक हा

883

स॰ श्रु॰ रा॥ कृपा करम मन जनम नहि हि बिकारा॥ कलम हि ग्याप ग्रसी सब ला
भा॰ गे॥ श्रगन हो उ बिप बन न नहि जागे॥ द्वै संध्या षट करम न करहीं॥
४४५ सदा पाप बिंतन मैं रहहीं॥ कलम हि कपटी लोग अपारा॥ काहू के
नहि तनक बिचारा॥ ऊच नीच की सेवा करहीं॥ लोभ न मित न धर्म पर
हरहीं॥ ८५॥ दो॰ रा॥ न मित लोभ के लता कों अंग भंग पति देह॥ करहि
बिचार न पाप मन कं मार दे पन लेह॥ ८॥ चौ॰ पई॥ अंगी कार करहि बि
पवा को॥ हर देता न उपजै नहि ताको॥ तिय परन सलाके भोजन करह॥
लेहि नि संक न हियें भाउ पर॥ देव हि हु नीला सब निरादर॥ बाद गबा
वहि मन नम पदारथ॥ कुबहू नर पापर लउ रमांही॥ परकार न सहरे
नेउ नाही॥ श्राप सार पीविप्रु सब ग्रहमत॥ देव हि नहीं साध श्रभ्यागत
पवबंता कृताहो है ते न व॥ ताको सांचा करहि लोग सब॥ ८॥ दो॰ रा॥ सां
वे निरधन कोसकल कृता कहैं बषान॥ मात पिता ग्रह ध्यान सों बैर
करहि बलवान॥ ८॥ चौ॰ पई॥ साले ग्रहस सुरे सों प्रीता॥ इंद्रिय के बस
बुध बिपरीता॥ कलम हि उपज हि बहु तनउ पापा॥ पीरत हों हिलो
ग सब ब्यापा॥ कलम हि औगुन हों हि अपारा॥ बरनत न होत ग्रंथ बि
स्तारा॥ काल कहै सुन नव बचन हमारा॥ सफल मनतन्त्र पभ पोत्र ल्लारा॥
श्री सा उप नत्यारे सम सर॥ करन हि सकै को उ कलिजुग बसर॥ ऐसे
बचन कहे नंदलाला॥ बिदा किये सर रिषी भुवाला॥ ८३॥ दो॰ रा॥ क
र प्रणाम हरि कों चले सुर रिषि नर प निज धाम॥ अपने अपने ग्रह गए

लेखग्गा तुव साम ॥ २५ ॥ चौपई ॥ बदूरकलसुषवचनउचारा ॥ स
फलजतनरूपभयो बलसारा ॥ द्वापरजुगकोअंतभयोजब ॥ कलिका
आगमभयो तनइसब ॥ भेउमहाभारथकेलोगा ॥ सबबैकुंठगयेतज
सोगा ॥ हमपलमबदूरपिलेगेनहीं ॥ वरबैकुंठधामसुकजहीं ॥ हमह
पकारजतिकियोतनत्यारा ॥ एकरातनकारितिनउचारा ॥ पुनबैकुंठमों
हितुषरेकं तबतिलासभउनारकैलेकं ॥ २६ ॥ जनमेजयपरवीच ॥ सोरठा
जनमेजनयपूछौप्रश्नजैपुनकहोविचार ॥ सुनपहबचग्रबरजभ
योसंभ्रमरेदुनिवार ॥ २७ ॥ चौपई ॥ हमसचरभाष्योकनजैसें ॥ सोरि
तकौनकहोपुफलसें ॥ पांडुसुतननकेकारनश्रीपत ॥ कीनेसकल
हियेंहरषतमुन ॥ पुनकनश्रैसेवचनकहेहर ॥ भ्रमहृंतमयातिल
पुफसिरपर ॥ सोरितागुजडूनकसइतारा ॥ रक्षाकीनीविविध
प्रकारा ॥ सोरितकवनमोहिकहिहीजै ॥ जैमनसुनकहतपु
फकीनै ॥ हमरेहृदैसंदेहमिटावहु ॥ सबहतांतकहिहमपासुनावहु
२८ ॥ जैमनउवाच ॥ सोरठा ॥ जैपुनकहिसुनराधीपतमसरह्रियेमोलो
हि ॥ सकलहतांतकहोंतुम्हैसुनइश्रवचनहगमोहि ॥ २९ ॥ चौपई ॥ पू
रबजनममपितरलमरेरप ॥ पांचोभ्रातस्यातइतेनरापिप ॥ कासीकों
हिबसतबघरकरमी ॥ निसहदिसिमरतमहांसुपरमी ॥ कार्तिमा
सइनहटबअलधारे ॥ श्रावतजगन्नाथकेहारे ॥ श्रेसाइश्वबरज
गमांही ॥ जगन्नाथकार्तिकमहिमांही ॥ पांचोसरसमफलपावत

885

जं॰ भू॰ र॥ रनका गान सुनमरी फलहर॥ दुपद सुता आसुली होन लव॥

भा॰ विधवा दुनी धर्म पालन सब॥ २५॥ दो॰ ॥ जगन्नाथ पर श्रवन था

८८५ नित सिमरत भगवान॥ विधवा कर्म निगम कहत सब पालत हि

विमान॥ २६॥ चौ॰ ॥ तीरथ रहन करत विमाना॥ हेतेय थास कल

को राना॥ व्रत पालन रेवन की रीता॥ निस दिन हृदे कृस्न सों प्रीता॥

रिदेउ मगह हरि के गुन गावत॥ कीर्तन करत श्री कृस्न रिझावत॥ पांचो

आसुला पितर लहु सारे॥ आवहि जगन्नाथ के दारे॥ पांचो कासी ते

चल आवहि॥ दरसन परस बहुर ग्रह आवहि॥ बरष प्रजंत नेम

नि हकीना॥ जगन्नाथ चरनन चित दीना॥ २७॥ दो॰ ॥ कासी ते च

ल आवही पांचो कार्तिक मास॥ इतर हि आ रथ्यनें रसों ग्रह द्रौपदी

निवास॥ २८॥ चौ॰ ॥ पांचो दिन हरि कीरतन करहीं॥ जगन्नाथ के

गुन उच्चरहीं॥ दुपद सुता लिह याता कारी॥ पांचो विषेधी तिस म

धारी॥ हारे गै हैं जगन्नाथ के॥ हरखत हिय द्रौपदी साथ के॥ दिन

कों कीर्तन करे सुदित मन॥ सकल रैन पुन करहि जागरन॥ ज

गन्नाथ कों यति सु सब कर॥ फिर आवही द्रौपदी के घर॥ सुदित द्रौ

पदी पाक बनावे॥ पांचों आदर सहित जिमावे॥ २९॥ दो॰ ॥ पांचहू

की सेवा करे सुदित द्रौपदी नार॥ दासी निम ठाढी रहे हिये पंच रमहि

तधार॥ ३०॥ चौ॰ ॥ लागी लगन द्रौपदी के मन॥ इमतें मारन होत

एक छिन॥ दिन न साथ जावे हरि द्वारे॥ लोग लाम कछु जिय न वि

वारै ॥ कवहि नाचै कवहि रगुन गावै ॥ निस दिन औसी भांत विता\
वै ॥ लागी रहै हरिजन के संगा ॥ हरि सिमरन लागे मन रंगा ॥ यह पां
चो दिन विचरहि नहीं ॥ ता के सा पखै पखीन हीं ॥ निरष लोग सभ रि
है विचारन ॥ यह व्रत ली भई विभचारन ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ निंदा सगरी
नगर महि लोग करहि उपहास ॥ पांच हि दिनन सों त्रासली क्रीडाक
रन विलास ॥ २५ ॥ चौपई ॥ निंदा करन लोग सभ लागे ॥ पांचो को यह हि
नव हि भागे ॥ यह पांचो कासी हि मध्यांही ॥ उतरे हैं ताके ग्रह मांही
तिन सों यह करनी विभचारा ॥ व्राह्मण पांच एक यह नारा ॥ पांचो\
सों ताकी सम प्रीता ॥ विधवा तिय की मन विपरीता ॥ पांचो दिन\
कुवई व्रत ली ॥ निंदा लोग हतै निज भवनन ॥ हर्ष सोग उपजै कछु\
नाही ॥ हरि कीर्तन निरत करत रहाही ॥ २६ ॥ दोहरा ॥ इष्ठ लोग निंदा कर
हि यह सन पावहि कान ॥ जगन्नाथ के द्वार पर निरत करहि गुन गा
न ॥ २७ ॥ चौपई ॥ कार्तिक मास वतीत भयो जव ॥ भीषम के दिन पांच र
हे तव ॥ पांचो व्राह्मण हुव वीनारा ॥ सभन ग्रहि तन भीषम व्रत धारा ॥
जैषुन कहे हेव हरष श्रवनन ॥ पांचो व्रत पारे सभ पितरन ॥ जग
न्नाथ द्वारे पर ताके ॥ कीर्तन करहि हियै हित वाके ॥ पांचो रैन जाग\
रन कीडा ॥ हरिपद पंकज मैं चित दीना ॥ भीषम व्रत भाषन फल जैसे
मन वच क्रम धारे इन तैसे ॥ २८ ॥ दोहरा ॥ पांचो निसदिन द्वार पर हो
इ रहे सत विधान ॥ निरत गान जागरन कर तोषेषी भगवान ॥ २९ ॥ जो

गं·ग्रं· ५ई ॥ पपग्रावषमनप्रथमदिनकीना ॥ दिनदूसरेमनकरथिरलीना
भा· गोगोवरत्तलीपत्नीजेहिन ॥ चौथेदिनगोमह्लिपोलिन ॥ पंचामन
५५९ पंचमदिनलीना ॥ पांचोंमिलइहविषयबनकीना ॥ पावोनिसदिनरही
एकजारे ॥ विषयबनजगत्रायकेहारे ॥ निहकामनाभगतकीनीवर ॥
दैवसबरटरसवहीनाहूर ॥ लवद्वीपलिमनमांहिविचारा ॥ इनमोंकों
सघरीनखपारा ॥५०॥ हो॰२ सा॰॥ भगतकरीनिहकामनामांगलियोक
छुनाहि ॥ इनकोंदेहोंपरमसघहूसकहोमनमांहि ॥५१॥ चौ॰ ई ॥ इन
तोमोहिमदहांसघरीना ॥ कीनीभगतमोहघुफुलीना ॥ हमइनकों
सघरेऊजगतवर ॥ द्वैतसबत्र्यालाकीनीहर ॥ कंतीउदरस्तमनमलग्य
लेवट्ट ॥ मनवरवङ्कमकरघुरुकोंसेवऊ ॥ पांचबत्र्जलमहिकरोप्रका
सा ॥ पुरबोंगात्नुमरीसभ्यासा ॥ यहइतसलीजगतअधिरामा ॥ लेवे
मेनमतुपइरपधामा ॥ रूपभगवतीपाकोहोई ॥ पाकीगतलषसके
नकोई ॥५२॥ हो॰२ सा॰॥ रूपभगवतीकारमतिविचरेगाजगमांहि ॥ सो
गतीनसभकरेगीलिपतनहोरगीताहि ॥५३॥ चौ॰ ई ॥ तुमकहिहोपां
इवगृहवासा ॥ मैंजाइवकुलकरोंनिवासा ॥ सघदेहोंतुमविविध
प्रकारा ॥ कीरतकरेसकलसंसारा ॥ इमरीभगतकरीतुमहितधर
यहतुमरानिताहमरेसिरपर ॥ जादवकुलमहिहमवपुधारों ॥ प
हरिणतुमरातवहिउतारों ॥ षषोजागीयहदेहींअब ॥ हरिऐसी
याग्याकीनीतब ॥ आतलामानदेहतजगए ॥ पांडुरूपतनगृहहृगतपत

भय॥४८॥दोहरा॥दुष्टकष्टपषंडगनमेटेसकलकुंबीडरदसंझार॥
पांचकुग्रगरतहीकियोपांडवकुलमेंकार॥४९॥चौपई॥जनममलिछे
द्रोपदीनातिवर॥रूपभगवतीदुपदनारिहर॥पछोभपदरखवेदेहप
र॥महापराक्रमसूरभगतहर॥जादवकेकुलहरिअवतारे॥सवदु
षपांडुसुतनकेहरे॥जैसुतनकहैतिनदुराजाना॥प्ररवजनमयचेतय
गयाना॥वचनकहतभोहलधरयाति॥पहकाराजसभकियोरह
कुध्यनि॥पूरवजनमभगतलमकीनी॥दुमरीधीतमावपेंली
मी॥५०॥दोहरा॥पांचोधीयमदलतकियेपतममहिहरे॥परमीत॥की
तंनमिसमाचरतकियोमुकतुवेदकीरीत॥५१॥चौपई॥योलिलि
योलमधुकहिभगतनकर॥समकहतहांमनवचक्रमपर॥प्रकट
नकाथननमत्याग॥सोतिलमुकधनहंनडजाता॥पुनसपरेकोंग
लमकोंग्रल॥श्रीवैकुंठधाममहिहरषल॥हरिमुखवचनसुने
पर्मतमव॥चलेहरिकागेरक्षलव॥धातमतहलपर्वधमाला॥
लागेसकलचरणवंदलाला॥श्रीपतिहाताधुरकोंगको॥हयकन
ग्रंथसंपूरनभयो॥५२॥दोहरा॥जैमनकहिहितहोहरपनधुम्यपि
तामालेहि॥जेककुकियदरवजनमतमपतिभाजोलोर॥५३॥चौपई
जैमनकहिहतनहोभयनवर॥जोयहकथापवेहिपहितपर॥ह
नेमुवचनेमनवचक्रमकर॥तापरहोतप्रसन्नसहार॥ताकाफलव
रनोंहमलीजै॥जनमेजयपनिहचेनिपकीजे॥गोदसतलछकवैजोईहाना

889

भ.पु. पूजहि संग पुरखे हरि विधाना ॥ सा न होय धुव मन ते जोई ॥ सो फल पावै

भा. सम न हि होई ॥ अब सत ली रथ को असनाना ॥ सो फल या के नहीं समा

८५८ ना ॥ ५० ॥ सो० ॥ ना नुवली सों कुल षेत मटि हि लल चढ़ि है नहि कोइ ॥ को

टि कम्म कामा न रे या के सम न हि होइ ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ पितर गया पर वि

पय न भरई ॥ हरि पग जो है पद दान करई ॥ अश्वमेध या गु सम महा वर ॥

तो नर पवै हि पद हि तन पर ॥ लल छिन चार पदारथ पावै ॥ अश्वमेध ह

त मन विपना वे ॥ धर्म अर्थ पुन मोक्ष कामना ॥ तिह आप न ति हरि य

लन त्तमा ॥ अर्थ विति त नहु नेन र कोई ॥ तिहि वांछत फल आपन होई

पुजारी रथी वेग न तन पावै ॥ विदन विधारथी कहावै ॥ ५२ ॥ दो० ॥ धनअ

र्थी धन पावई जिस अर्थी मैं कार ॥ पाप नास वेहि तन है किल वित भि

हरि प्रकार ॥ ५३ ॥ चौ० ॥ लो गन को पवित्र अर्थ न हु नावै ॥ सो नर भुक्ति

परम पद पावै ॥ जो नर न तै संसर न हि न पर ॥ को रसन न घ के पाप जा

न हर ॥ गर्भ क्लन वहु रों नहि आवै ॥ जो नर अश्वमेध गुन गावै ॥ रे हरि गो

ण ग्रहण काल्मा ना ॥ हरि वकल तस्य व न हु नै नित पा ना ॥ पढ़ै सुनै हि न सों

नर सोई ॥ ता का पुन न सपढ़े तिह लोई ॥ आपन हो इ अवन म भगत न हर

न हि सम पसर ॥ ५४ ॥ दो० ॥ अश्वमेध कल न महा वर ॥

अवर पुन पा के न हि सम पसर ॥ तन सम युधिष्ठिर को दियो की नो भगत अना

लस चंद किय आप ॥ कल युग आदि अंत अव द्वापर ॥ अश्वमेध कन कि

य ॥ ५५ ॥ चौ० ॥ कल युग आदि गृत अव हापर ॥ भगत व कल पधु ही न र पा

को युधिष्ठिर ॥ करी सु हार नेर के लाला ॥ भगत व कल पधु ही नर पा

890

लो॥ पुनयैसो मयकरै न कोई॥ जदपि त्रीमलोकपतहोई॥ सतन\
पिहि रसफलभयो न व॥ सावधान काहे गिरधरजव॥ तीनलोक
सरिखरपयाए॥ करुणाकर श्रीकृसनुलाए॥ नागरनलकुवनर
हसवसर॥ सरनकीनो कृपाधारहर॥ ५५॥ दो॰॥ प्रगट भयो लिहु\
लोकमहि पनधर्मभुपाल॥ सरनकीनो कृपाकर रहकनप्रभुनंदर\
लाल॥ ५७॥ चौपई॥ रहकन कुवनलालपुरवासी॥ कुविधर्मनंदला
लउपासी॥ पिता रंगीलदास जिह नामा॥ जातचोपरा कुलयभिरामा
समै पायकवगयो सिपाही॥ हयकृत भाषा करीत हाही॥ प्रथमे
संस्कृत नैंनसुनलीनी॥ तापाछे भाषावरकीनी॥ चौपई दोहा सोरठ बा
नी॥ कृपाकरी कालिकाभवानी॥ अरथ धुनपलकवमो विसाला॥ क
रुणाकीनी श्रीनंदलाला॥ ५८॥ दो॰॥ सुनमनसमकेसुधमय भाषा
वकीरिसाला॥ हयकृतग्रंथ सकल किये रहकन प्रभुनंदलाल॥
५९॥ चौपई॥ जथाबुद्धि अनुसरी कि येवर्नेन हिय हर्षत॥ श्रुतम मे\
धगं भीरग्रंथ कवि हूती यलपमत॥ कटुककठ कनवलबुद्धि कछु
कपरबुधि हरलीनी॥ दीनदीनपखकर प्रवीनयो पीसुमकीनी॥
श्रीनंदलालकी कृपासों हयकृत की भाषाकरी॥ कवि रहकन छ\
मिय कवुधजनबढ़जहां चुककवर्नन परी॥ ६०॥ दो॰॥ श्रीबिश्वी भारथपर्व
तो मुबमेध भाष्या॥ रहकन भाजनिह जो दुक प्रनतान॥ ६१॥
इति श्री महाभारते अश्वमेध के पर्वणि धर्मनत ब्याख्यान श्री कृसन
दिजनत संपूर्णं॥ शुभं॥

मे॰ श्री॰ कवित्त॥ संवतनरपविक्रमगुनिरसनागइंदुभनिसावनकीशुक्ल
भा॰ माघमानमनमानलै॥ मालंपरपीवर्मेंश्रीवैद्यनाथथानवामक
८५८ रग्रामनामैंवैउलिषीगुभमानलै। अस्वमेधभाषाकीपुस्तकवना
इलिषीकरमीरीवासिरामनामडरग्रानलै॥ कायथकुलैकरा\
पनीकेपाठकरवेकोंपयापनलिषीभलनककमाठानलै॥॥ शुभं